तान्त्रिक साहित्य

विवरणात्मक ग्रन्थसूची

इस ग्रंथ के प्रणेता, पद्मविभूषण महामहोपाध्याय पण्डित गोपीनाथ कविराज का व्यक्तित्व भारतीय विद्या के अन्तारा‌ष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मनीषी और मर्मज्ञ के रूप में सुपरिचित है। आपके अनेक ग्रंथ और टीकाएं विभिन्न संस्थानों से प्रकाशित और सम्मानित है।

कुछ प्रमुख तिथियां

जन्म : 7 सितम्बर 1887 ई०

जन्म स्थान - धमराई (पूर्वी बंगाल)

शिक्षा : 1913 ई० एम० ए०

दीक्षा : 21 जनवरी, 1918

वृत्ति : प्रधानाचार्य क्वीन कालेज
वाराणसी (1924–1937 ई०)

उपाधियां : महामहोपाध्याय (1934 ई०)
डी०लिट्० (प्रयाग विश्वविद्यालय, 1947 ई०)
डी० लिट्० (हिन्दू विश्वविद्यालय 1954 ई०)
(राष्ट्रपति द्वारा स्वीकृत प्रमाण पत्र 1956 ई०)
डी० लिट्० (कलकत्ता विश्व-विद्यालय, 1964 ई०)
पद्मविभूषण (1964 ई०)
फलो (बर्दवान विश्वविद्यालय, (1964 ई०)
साहित्य-वाचस्पति (हिन्दी सा० सम्मेलन, 1965 ई०)

हिन्दी समिति ग्रन्थमाला—२००

[विवरणात्मक ग्रन्थसूची]

•

महामहोपाध्याय,

पं० श्री गोपीनाथ कविराज, एम. ए.; डी. लिट्, पद्मविभूषण

(भूतपूर्व प्रिंसिपल, गवर्नमेंट संस्कृत कालेज, वाराणसी)

•

राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन हिन्दी भवन,

महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ

तान्त्रिक साहित्य

मूल्य ३०.०० रुपये

मुद्रक
भार्गव भूषण प्रेस,
त्रिलोचन, वाराणसी
३७/४-७२

प्रकाशकीय

हमे सुख और सन्तोष है कि आज हिन्दी समिति ने अपना एक यज्ञ पूरा कर लिया। वस्तुत इस ग्रन्थ का प्रकाशन एक प्रकार का यज्ञ ही तो है। हमे अच्छी तरह याद है, जब आज से दशाधिक वर्ष पूर्व महामहोपाध्याय श्री कविराजजी से अनुरोध किया गया था कि आप हिन्दी-समिति के लिए एक ऐसे ग्रन्थ का प्रणयन कर दे जिससे तन्त्र मे तथा तन्त्र-साहित्य मे अभिरुचि रखनेवाले और इस विषय के जिज्ञासुओ के लिए आवश्यकीय पथ-निर्देश और सामग्री मिल जाय, तब उन्होने सहज भाव से, अपनी उदार और उदात्त प्रकृति के स्वरूप इस कार्य के लिए स्वीकृति दे दी थी। कविराजजी ने तो स्वीकृति दे दी थी, किन्तु उनका अत्यधिक व्यस्त जीवन और स्वाध्याय एव साधनामयी दिनचर्या देखते हुए शासन की ओर से यह व्यवस्था की गयी कि कोई योग्य लेखक उनके निकट बैठकर, उनकी सुविधा और निर्देश के अनुसार, यह लेख-कार्य सम्पन्न करे और उसी आवश्यकीय व्यवस्था के अनुसार आज जब यह ग्रन्थ एक प्रकार से पूर्ण हुआ है तो ऐसा लगा कि एक महत्त्वपूर्ण कार्य की सिद्धि और उपलब्धि हुई है।

वैदिक साहित्य के समान ही तान्त्रिक साहित्य भी बहुत विस्तृत और रहस्यपूर्ण है। यो तो दार्शनिक दृष्टि से दोनो का अन्तिम लक्ष्य—परम तत्व एक ही रूप मे अवगत होता है, केवल प्रारम्भ की साधन-प्रक्रिया कुछ भिन्न रहती है। एक विशेष आकर्षणवश पूरे देश मे तन्त्रशास्त्र का व्यापक प्रचार रहा है और रहस्यात्मक विद्या के रूपमे प्राचीन काल से ही न केवल भारत अपितु तिब्बत, मगोलिया, नेपाल, चीन, इण्डोनेशिया के निवासियो तथा आधुनिक पाश्चात्य विद्यानुरागियो के बीच भी ये तन्त्र-ग्रन्थ मनन-चिन्तन के रोचक आश्रय रहे है। इसलिए यह ग्रन्थराशि व्यापक रूप से लिखित, ताडपत्राकित एव मुद्रित रूपो मे निजी सग्रहो, राजभवनो, पुस्तकालयो मे सगृहीत रहती आयी है। किन्तु अब कालक्रम से ऐसे अनेकानेक ग्रन्थ विलुप्त होते जा रहे है। रहस्य या विधि की अनभिज्ञता और अशिक्षा के कारण इन ग्रन्थो की उपेक्षा भी होने लगी है। फलत अनेक ऐसे ग्रन्थरत्न कीड़ो के ग्रास बन गये, जीर्ण-शीर्ण हो गये, कुछ देश-देशान्तरो के सग्रहालयो की शोभा बढा रहे है। परिणाम यह हो रहा है कि तान्त्रिक विद्या के अनुशीलनकर्त्ता अभिलाषियो को ये ग्रन्थ न तो सुलभ हो पाते है न विषयवस्तु की कुछ जानकारी ही मिल पाती है।

सौभाग्यवश भारतवर्ष के अनुपम निगम-आगमरहस्यज्ञ, महामहोपाध्याय डाक्टर गोपीनाथजी कविराज प्राच्य-प्रतीच्य रहस्य-विद्याओ के मार्मिक ज्ञाता होने के साथ ही, तन्त्रविद्या के अनुभवी व्याख्याता माने जाते हैं और अपनी जराजीर्ण अवस्था मे भी जिज्ञासुओ का मार्ग दर्शन करते आ रहे हैं। देश-विदेश के दुर्लभ तन्त्र-ग्रन्थ-सग्रहो का परिशीलन, सशोधन, प्रकाशन और उपदेश आपके विद्याव्यसन का रोचक विषय रहा है। आपने अपने सुदीर्घ अनुसधान और स्वाध्याय के आधार पर प्रस्तुत ग्रन्थ की रचना कर हिन्दी समिति को गौरवान्वित किया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ कोश के रूप मे अकारादि क्रम मे निर्मित है, इसमें प्राय. भारत के निजी, सस्थागत, पुस्तकालयस्थ तन्त्र-ग्रन्थो के लिखित, मुद्रित या केवल उद्धरण रूप मे नाम मात्र चर्चित विवरणो का उल्लेख हुआ है और नेपाल दरबार पुस्तकालय, ब्रिटिश म्यूजियम सग्रहालय आदि मे तथा विदेशो मे सुरक्षित तन्त्र-ग्रन्थो का प्रकरणानुसार विषय-विवेचन भी किया गया है, जो इस कृति की अपनी विशेषता है।

अपने प्रदेश के मुख्य मन्त्री पण्डित कमलापति त्रिपाठीजी के भी हम विशेष रूप से कृतज्ञ हैं, जिन्होंने हमारे अनुरोध पर इस ग्रन्थ की भूमिका के स्वरूप दो शब्द लिखने का अनुग्रह किया है। अपने व्यस्त जीवन से कुछ क्षण निकाल कर उन्होंने जो विचार दिये हैं, वे उनके हिन्दी एव सस्कृत के प्रति प्रेम और भारतीय सस्कृति और निगमागम साहित्य के उन्नयन और प्रकाशन के प्रति उनकी उत्कृष्ट अभिरुचि के प्रतीक हैं। इस ग्रन्थ के मूल प्रेरणा-स्रोत आदरणीय डाक्टर सम्पूर्णानन्दजी और डा० रामप्रसाद त्रिपाठी रहे हैं, किन्तु इस योजना को सक्रिय बनाने मे हमारे मुख्य मन्त्री जी का विशेष योगदान रहा है, यह कहना अन्यथा न होगा।

सुविज्ञ जन इस ग्रन्थ की उपलब्धि के लिए पहले से ही उत्सुक रहे हैं। कतिपय अप्रत्याशिक कठिनाइयो के कारण इसके प्रकाशन मे पर्याप्त समय लग गया। प्रस्तुत स्वतन्त्रता रजत-जयन्ती वर्ष-समारोह के अवसर पर अपनी ग्रन्थमाला का यह २००वाँ ग्रन्थरत्न पाठको के समक्ष प्रस्तुत करते हुए समिति विशेष हर्ष का अनुभव करती है। आशा है, अभिलाषी विज्ञजन इसे प्राप्त कर आनन्दित होगे।

दीपावली, २०२९ वि
लखनऊ

काशीनाथ उपाध्याय भ्रमर
सचिव, हिन्दी समिति
उत्तर प्रदेश शासन.

आमुख

कविराजजी के इस ग्रन्थ पर भूमिका के रूप मे कोई टीका करने का अधिकार मुझे नही है। अच्छा हुआ होता कि किसी अधिकारी व्यक्ति से, जो तन्त्रशास्त्र का ज्ञाता हो, हम भूमिका लिखवाने की चेष्टा करते। फिर भी इस ग्रन्थ का प्रकाशन शीघ्र हो जाय, इसमे और अधिक विलम्ब न हो, इस कारण यह आवश्यक प्रतीत हुआ विद्वानो के सम्मुख यह ग्रन्थ प्रस्तुत हो जाय।

सस्कृत वाङमय मे तन्त्र-साहित्य का अपना एक अत्यन्त विशिष्ट स्थान है। यह साहित्य अत्यन्त विशाल

है । ऐसा लगता है, और इतिहास इसका साक्षी है, कि युग-युग से तन्त्र की पद्धति किसी न किसी रूप मे निरन्तर साधना के क्षेत्र मे अपना स्थान रखती चली आयी है । दु ख की वात है कि वाङमय् के इस अतिविशद साहित्य-भडार की ओर विशेप ध्यान नही दिया गया और साधकों, तपस्वियों तथा तान्त्रिक पूजा-पद्धति मे विश्वास रखनेवालो के सिवाय इस ओर किसी की दृष्टि नही गयी ।

विद्वानों मे वरावर यह विवाद चला आया है कि तान्त्रिक पद्धति वैदिक है अथवा अवैदिक । आगम मे तो विशेप स्थान इसे प्राप्त है ही, पर कुछ लोगो का मत है कि पुराणो को जिस प्रकार वैदिक आधार उपलब्ध है उस तरह तन्त्र को प्राप्त नही है । वहुत से विशिष्ट विद्वान इस मत से सहमत नही है और उनका विचार है कि वैदिक साहित्य भी तान्त्रिक विचारो से अछूता नही है । वेदो के सिवाय वौद्ध और जैन विचारधारा मे तान्त्रिक पद्धति का उदय हुआ स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है । हमारी सास्कृतिक परम्परा का आधार विशेष रूप से पुराण है और पुराणो मे तान्त्रिक विचारो का बृहद् रूप मे समावेश स्पष्ट दिखाई देता है । यह दुर्भाग्य की वात है कि आरम्भ से ही तन्त्र का साहित्य, तान्त्रिक विचारधारा, दर्शन, उसकी साधना, योगाचार, मन्त्रो की सिद्धि की पद्धति और पूजा का क्रम एक रहस्यमय ढग से अवतरित हुआ और गोपनीयता के आवरण में आरम्भ से ही ढँक गया । धीरे धीरे अज्ञान के वशीभूत यह व्यापक विचार फैला कि तान्त्रिक साधना का स्वरूप केवल जादू-टोना,

मारण, मोहन, और निम्न-स्तर पर कामनाओ की पूर्ति के लिए मन्त्रो की सिद्धि तक ही परिसीमित है। भूत-प्रेतो की सिद्धि, डाकिनियो, पिशाचिनियो की शक्ति की उपलब्धि तान्त्रिक पद्धति की विशेषता है। कदाचित् इसी कारण इस अत्यन्त विशिष्ट, उच्च और उज्ज्वल साधना का पथ विस्मृत होता चला गया और इस साहित्य की उपेक्षा होती चली गयी।

इस ओर विशेष रूप से ध्यान लोगो का तव आकृष्ट हुआ जब कतिपय विदेशी विद्वानो ने लेखनी उठायी और उनके अनुशीलन तथा अनुसधान के फलस्वरूप तथ्य सामने आये। कविराजजी का ग्रन्थ उन समस्त पहलुओं पर मौलिक प्रकाश डालता है और समस्त ग्रन्थो तथा सारे तान्त्रिक साहित्य का उल्लेख करके उन्होने विद्वन्मण्डली का ध्यान वेगपूर्वक आकृष्ट किया है। कविराजजी की वह पुस्तक जो 'तान्त्रिक वाङ्मय मे शाक्त दृष्टि' के शीर्षक से कुछ वर्ष पूर्व पटना मे राष्ट्र भाषा परिषद् की ओर से प्रकाशित हुई है, इस दिशा की जानकारी प्राप्त करने के लिए बहुमूल्य कृति है जिसका अध्ययन तन्त्र-साहित्य का गहरा रूप व्यक्त करता है।
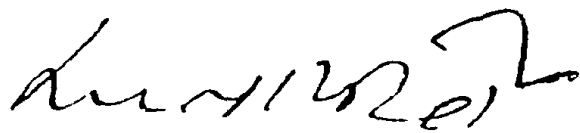
भारतीय वाङ्मय मे शाक्त दृष्टि सदा से रही है। इस दृष्टि से जिस शाक्त दर्शनका आविर्भाव हुआ है उसके प्रति मेरी स्वय परम श्रद्धा है। विशेष जानकारी तो मुझे उपलब्ध नही, किन्तु इस विषय मे रुचि रखनेवाले एक अति छोटे-से व्यक्ति के रूप मे थोडा-बहुत विचार करने पर मै तो इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि यह शाक्त

दर्शन जिस प्रकार अद्वैत की कल्पना की स्पष्ट परिभाषा करता है और धृष्टता न समझी जाय तो नम्रतापूर्वक कह सकता हूँ कि जो शकाएँ सम्मुख आती है उनका जैसा समाधान करता है वैसा और कही उपलब्ध नही होता । शाकर वेदान्त की महिमा अनोखी है। पर सबके लिए उसका बोधगम्य होना सरल नही है । भगवान् शंकराचार्य की तर्क शैली, विषय का निरूपण, उनकी दैवी दार्शनिक दृष्टि और निरपेक्ष सत्य को प्रतिभासित करने के लिए विचारों का अति उत्कृष्ट और ऊँचा धरातल सबको सुलभ नही हो पाता । उनका ज्ञान अतीन्द्रिय और अगोचर है और केवल अनुभवगम्य है। पर शाक्त दर्शन जिस प्रकार अद्वैत कल्पना का प्रतिपादन करता है वह सीधे हृदय को और बुद्धि को स्पर्श करता है और शकाओं का उस प्रकार उन्मूलन करता है जिससे मन आश्वस्त हो जाता है। निर्गुण, निर्विकल्प, विशुद्ध, विभु, चैतन्य शिव की चिति वह पराशक्ति है जो स्वय निर्विकार और साकार, स्वेच्छया तथा स्वतंत्र रूप से समस्त सृष्टि की स्थिति और लय का कारण है। वह गुणों से अतीत किन्तु गुणाश्रय भी है ।

सीधे शब्दों मे कहें तो कह सकते है कि चैतन्य शिव की चिति जब बहिर्मुख होती है तो वह 'शक्ति' है और जब अन्तर्मुख होती है तो स्वय 'शिव' है। फलत· शिव और शक्ति का रूप एक ही है जिसकी व्याख्या वाणी से करने पर दो शब्द प्रयुक्त हो जाते है। शाक्त दर्शन की यह कल्पना मेरे जैसे साधारण बुद्धि के प्राणी की सभी शकाओ का उन्मूलन कर देती है। इस

दर्शन के आधार पर योग-साधना की पद्धति का निर्माण हुआ है और तान्त्रिक पूजा-पद्धति इस साधना का सोपान है। यह कल्पना कि मूलाधार कुण्डलिनी के रूप मे बैठी महाशक्ति का सम्मिलन, चक्रो का भेदन करके अन्त मे मनुष्य मे ही निवसित शिव के साथ होता है वह यौगिक प्रक्रिया है जिसकी साधना महापुरुषो, साधको तथा योगियों द्वारा स्वय हुई है। तन्त्रो मे मन्त्रो का अपना बड़ा उत्कृष्ट स्थान है। मन्त्रो की सिद्धि साधक को उस उच्च स्तर पर ले जाती है जहाँ उसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष–समस्त पुरुपार्थचतुष्टय–को उपलब्ध कराने मे समर्थ होती है।

विशेप यौगिक प्रक्रिया, गोपनीय पूजा और साधना का पथ रहस्यमय तन्त्र-पद्धति की विशेषता है जिसका बड़ा भारी साहित्य-भडार उपलब्ध है। हमारी प्रार्थना और अनुरोध पर कविराजजी ने यह कृपा की। इसके लिए हम ही नही, भारतीय सस्कृति और साहित्य के प्रति आस्था रखनेवाले प्रत्येक व्यक्ति और विदेशी जिज्ञासु, जिन्हे हमारी विचार-निधि का ज्ञान प्राप्त करने की अभिलाषा रहती है, वे भी कविराजजी के प्रति कृतज्ञ होंगे और वाङ्मय के उस पक्ष की ओर अध्ययन और अनुशीलन की प्रेरणा प्राप्त करेगे जो अपना एक अपूर्व और अनूठा स्थान रखता है।

लखनऊ,
३१ अक्टूबर, १९७२

(कमलापति त्रिपाठी)
मुख्य मन्त्री, उत्तर प्रदेश

तन्त्रायिणे नम.

—यजुर्वेद

* * *
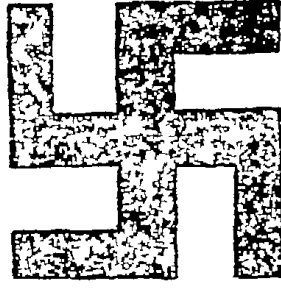
जयति स्वपरिस्पन्दानन्दान्दोलनलीलया ।
मन्त्र तत्त्व त्रितत्त्वात्म तन्त्रयन्नेत्रमैश्वरम् ॥

—क्षेमराज

* * *

अविगीता च प्रसिद्धिरागम॰ ।

—अभिनवगुप्त

* * *

न विद्या मातृकापरा ।

—स्वच्छन्दतन्त्र

* * *

आगत पञ्चवक्त्रात्तु गत च गिरिजानने ।
मतं च वासुदेवस्य तस्मादागममुच्यते ॥
गुरुशिष्यपदे स्थित्वा स्वय देव. सदाशिव ।
प्रश्नोत्तरपदैर्वाक्यैस्तन्त्रं समवतारयत् ॥

—महास्वच्छन्द

भूमिका

तान्त्रिक साधना का निगूढ रहस्य तो बहुत दूर रहा, साधारण तत्त्व भी अभी तक इस प्रकार आलोचित नही हुआ है कि सुगमता से लोगो को हृदयङ्गम हो सके। परम श्रद्धेय स्वर्गीय शिवचन्द्र विद्यार्णव ने स्वरचित तन्त्रतत्त्व के द्वारा तन्त्रो की ओर शिक्षित समाज का ध्यान आकृष्ट किया था। उनके पश्चात् उनकी प्रेरणा तथा आशीर्वाद से उनके अनुगत उच्चन्यायालयाधीशसर जान जार्ज उडरफ (Sir John George Woodroffe) महोदय तान्त्रिक साधना मे श्रद्धासम्पन्न हुए। उन्होने विभिन्न ग्रन्थो की रचना, कतिपय मूल ग्रन्थो के प्रकाशन तथा भाषान्तर सम्पादन द्वारा लोक-शिक्षा कार्य का व्रत लिया। उनके इस महान् उद्योग मे स्वामी प्रत्यगात्मानन्द ने, जिनका उस समय का नाम प्रमथनाथ मुखोपाध्याय था, उनके साथ जो सहयोग किया, वह अनुपम है।

भारतीय सस्कृति अथवा हिन्दू सस्कृति मे तान्त्रिक साधना का अत्यन्त उच्च स्थान है। किसी-किसी का मत है कि आर्यसस्कृतिमूलक प्राचीन सस्कृति के इतिहास मे जितने स्तर हैं उनके क्रम-विकास से ही ब्राह्मण सस्कृति तथा हिन्दू सस्कृति का आविर्भाव हुआ है। आर्य सस्कृति मे, उनके मतानुसार, वैदिक भावना के तुल्य अवैदिक भावना का भी स्थान रहा है। इसके अतिरिक्त आर्येतर सस्कृति का प्रभाव भी उसके ऊपर पडता रहा है। इसीलिए परवर्ती ब्राह्मण सस्कृति मे वैदिक, अवैदिक तथा अनार्य सस्कृति का भी प्रभाव पडा है। और तो और, विदेशीय सस्कृति ने भी रूपान्तरित होकर विभिन्न युगो मे भारतीय सस्कृति को कुछ-न-कुछ स्वाश भेट किया है। उनका विचार है कि सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि वैदिक धर्म मे चित् और जड के वीच कोई कृत्रिम भेद रेखा नही है। दोनो ही सम्मिलित होकर एक अखण्ड सत्ता की, जो चेतना का लक्ष्य है, अनुभूति मे सहायक होते हैं।

योग और तन्त्रशास्त्र मे इसी साधना की पुष्टि हुई है। योगसाधना के क्षेत्र मे मानव-प्रकृति की साधारण प्रवृत्ति के अनुसार आन्तर साधना का समन्वय हुआ है और तन्त्र-साधना मे वाह्य साधना का समन्वय हुआ है। तन्त्र वस्तुत योग से भी व्यापक है। वेदवाद

का पहला स्वरूप अलौकिक है। यह सीमा के भीतर पुष्ट हुआ। उसका दूसरा रूप लौकिक है, जिसका भाव समाज के प्रत्येक क्षेत्र मे व्याप्त है। इसीलिए श्रुति शब्द से वैदिक और तान्त्रिक दोनो श्रुतियो का ग्रहण होता है। दोनो ही प्रामाणिक तथा अपौरुषेय है। (अनिर्वाण, वेदमीमासा, खण्ड १)।

भारतीय सस्कृति तथा साधना की भली भाँति आलोचना करने के लिए यह आवश्यक है कि वैदिक साहित्य के तुल्य पौराणिक तथा तान्त्रिक साहित्य का भी पूर्ण रूप मे ग्रहण किया जाय। यह कहना अनावश्यक है कि पुराण तथा तन्त्र के प्रति वर्तमान शिक्षित समाज का औदासीन्य पूर्ण मात्रा मे लक्षित होता है। अवश्य इस औदासीन्य का कारण है, परन्तु वह कारण अल्पाधिक मात्रा मे वाह्य और अपरिहार्य है। इन कारणो मे प्रत्येक क्षेत्र मे अयोग्यता के कारण तथा जागतिक क्षुद्र भाव के सम्वन्ध से शुद्ध वस्तु मे भी मल का सचार हो जाता है। परन्तु गम्भीर दृष्टि से निरीक्षण करने पर पता चलता है कि दोनो साधनाओ का एक अनन्य विशिष्ट तात्पर्य है। जब तक इस तात्पर्य का ग्रहण न हो तव तक उस साधना को निष्फल समझना स्वाभाविक है। वह केवल निष्फल ही नही, हानिकारक भी हो सकती है। किसी भाव के साथ जैसे उसके गुण का अविच्छिन्न रूप से सम्वन्ध रहता है वैसे ही जागतिक क्षेत्र मे वहुत-से दोषो का भी सम्वन्ध रहता है। ये सव दोष आगन्तुक हैं, सासिद्धिक नही हैं। भाव का मूल्य निरूपण करते समय इन सव वर्जनीय दोषो को दूर कर भाव की स्वरूप योग्यता का निरूपण करना चाहिए। आदर्श ही लक्ष्य है। आचरण मे आदर्श की जो विकृति होती है वह हेय है।

पौराणिक साहित्य की ओर पार्जिटर (Pargiter) महोदय के समय से विद्वानो की दृष्टि अल्पाधिक मात्रा मे आकृष्ट हुई है। इस क्षेत्र मे कुछ कार्य भी हुआ है, यह सत्य है। वर्तमान समय में काशी-नरेश की कृपा से व्यापक रूप मे पौराणिक आलोचना का सूत्रपात हुआ है। तान्त्रिक साधना के विषय में भी उसी प्रकार आलोचना का सूत्रपात आवश्यक है।

परन्तु यह सहज कार्य नहीं है, क्योकि इस साधना का यथार्थ स्वरूप अत्यन्त गुह्य है। यद्यपि वर्तमान भारतवर्ष मे सर्वत्र ही तान्त्रिक साधना का अल्पाधिक प्रसार है और इसमे विभिन्न आचार और विभिन्न प्रकरण पद्धतियाँ भी परम्परा-क्रम से प्रचलित है तथापि गुह्य तत्त्व के विषय में परिज्ञान उतना अधिक है ऐसा प्रतीत नही होता।

तान्त्रिक साधना का सम्यक् ज्ञान तथा सर्वाङ्ग परिचय प्राप्त करने के लिए सवसे पहले तान्त्रिक साहित्य का परिज्ञान प्राप्त करना होगा। तान्त्रिक साहित्य का अति-

प्राचीन रूप हम लोगो के निकट अज्ञात है। वैदिक तथा उत्तर वैदिक साहित्य मे इसके विषय मे वहुत इङ्गितात्मक निदर्शन हैं एव उस समय के वहुत-से ग्रन्थो मे अनति प्राचीन तन्त्र तथा आगम शास्त्र के नाम और वचनो के उद्धरण दिखाई देते हैं, जिससे उस साधना का एक साधारण परिचय प्राप्त किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त बहुत-से तन्त्र और आगम के ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं, जिनमें अधिकाश अमुद्रित हैं, वे विभिन्न ग्रन्थागारो मे सुरक्षित हैं एव कुछ-कुछ मुद्रित भी हुए हैं।

तान्त्रिक साहित्य की विशालता

तान्त्रिक साहित्य के नाना प्रकार के श्रेणि-विभाग मृगेन्द्र तन्त्र मे उल्लिखित हैं—

परमेश्वर ने सृष्टिकाल मे जीवो के भोग और परापर मुक्तिरूप पुरुषार्थ की सिद्धि के लिए पञ्चस्रोतो में विभक्त निर्मल ज्ञान प्रकाशित किया था। ऊर्ध्व, पूर्व, दक्षिण, उत्तर और पश्चिम ये पाँच स्रोत प्रसिद्ध हैं। निष्कल शिव से अवबोध रूप ज्ञान पहले नाद के आकार मे प्रसृत होता है। तदनन्तर वह ज्ञान सदाशिवरूप भूमि मे आकर तन्त्र तथा शास्त्र के आकार को प्राप्त होता है। कामिक-आगम के अनुसार सदाशिव के ही प्रत्येक मुख से पाँच स्रोतो का निर्गम हुआ है। उनमें पहला लौकिक है, दूसरा वैदिक है, तीसरा आध्यात्मिक है, चौथा अतिमार्ग और पाँचवाँ मन्त्रात्मक है। मुख पाँच हैं, इसलिए स्रोतो की सख्या समष्टि रूप मे २५ है। लौकिक तन्त्र पाँच प्रकार के हैं। वैदिकादि प्रत्येक तन्त्र भी पाँच प्रकार के हैं। सर्वात्मशम्भु कृत सिद्धान्तदीपिका मे लौकिकादि विभागो का विवरण दिया गया है। मान्त्रिक तन्त्र पाँच प्रकार के हैं। वे क्रमश ऊर्ध्व आदि वक्त्रो के भेद से भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं। उनमें जो ऊर्ध्व मुख से उत्पन्न है, वह मुक्ति देने वाला सिद्धान्तागम है, जो पूर्वमुख से उत्पन्न है, वह सव प्रकार के विपो को हरने वाला गारुड तन्त्र है, जो उत्तर मुख से उद्‌भूत है, वह सवके वशीकरण के लिए उद्दिष्ट है, जो पश्चिम मुख से उत्पन्न है, वह भूतग्रह निवारक भूततन्त्र है और जो दक्षिण मुख से उद्‌गत है, वह शत्रुक्षयकर भैरव-तन्त्र है। यह सम्पूर्ण विवरण कामिकागम मे है। तान्त्रिक लोग कहते हैं कि नादरूप ज्ञान के अतिरिक्त शास्त्ररूप ज्ञान मे वेदादि अपर ज्ञान से सिद्धान्तज्ञान उत्कृष्ट है। सिद्धान्त-ज्ञान मे भी शिवज्ञान तथा रुद्रज्ञान मे परापर भेद है। शिवज्ञान में भी परापर भेद है और रुद्रज्ञान में भी वह समान रूप से विद्यमान है। इसका मूल है प्रवक्ता का क्रम।

यह शब्दज्ञानात्मक शास्त्र का भेद है। अववोधरूप ज्ञान मे भी वैचित्र्य है—शुद्ध मार्ग का ज्ञान, अशुद्ध मार्ग का ज्ञान, शिव का ज्ञान, सदाशिव का ज्ञान, पशु का ज्ञान इत्यादि। माया के प्रकाशकत्व भेद से बोध मे भी वैचित्र्य है। दीक्षा रूप जो ज्ञान है उसमे भी नाना प्रकार के भेद हैं—जैसे नैष्ठिक, भौतिक, निर्वीज, सवीज, शिवधर्मी, लोकधर्मी इत्यादि। इसीलिए स्वायम्भुव आगम मे कहा गया है कि शिवमुख से उत्पन्न ज्ञान स्वरूपत एक होने पर भी अर्थसम्बन्ध-भेद से विभिन्न प्रकार का है। इस दृष्टि से शिवज्ञान १० प्रकार का और रुद्रज्ञान १८ प्रकार का है। वक्ता के भेद से जैसे ज्ञान भिन्न होता है वैसे ही एक-वक्तृज्ञान भी श्रोता के भेद से भिन्न होता है। शिवागमो मे पारम्पर्य तीन हैं और रुद्रागमो मे दो हैं। इसीलिए १०×३=३० तथा १८×२=३६, दोनो को मिला कर कुल ६६ भेद हैं।

किरणागम के मतानुसार १० शिवागमो के भेद इस प्रकार हैं—

क्रम स०	आगमात्मक ज्ञान	प्रथम पाने वाले	२य पाने वाले	३य पाने वाले
१	कामिक	प्रणव	त्रिकल	हर
२	योगज	सुधा	भस्मसग	प्रभु
३	चिन्त्य	दीप्ताख्य	गोपति	अम्बिका
४	कारण	कारणाख्य	शर्व	प्रजापति
५	अजित	सुशिव	उमेश	अच्युत
६	सुदीप्त	ईश	त्रिमूर्ति	हुताशन
७	सूक्ष्म	सूक्ष्म	भव	प्रभञ्जन
८	सहस्र	काल	भीम	मन
९	सुप्रभेद	गणेश	अविघ्नेश	शशी
१०	अशुमान्	अशु	अग्र	रवि

इसी प्रकार किरणागम के अनुसार १८ रुद्रागमो के भेद इस प्रकार हैं —

क्रम स०	आगमात्मक ज्ञान	१म प्राप्तिकर्ता	२य प्राप्तिकर्ता
१	विजय	अनादि	परमेश्वर
२	परमेश्वर	श्रीरूप	उशना
३	नि श्वास	दशार्ण	शैलसभवा

क्रम सं०	आगमात्मक ज्ञान	१म प्राप्तिकर्ता	२य प्राप्तिकर्ता
४	प्रोद्गीत	शूली	कच
५	मुखविम्ब	प्रशान्त	दधीचि
६	सिद्धमत	विन्दु	चण्डेश्वर
७	सन्तान	शिवनिष्ठ	हसवाहन
८	नारसिंह	सौम्य	नृसिंह
९	चन्द्रहास	अनन्त	वृहस्पति
१०	भद्र	सर्वात्मा	वीरभद्र
११	स्वायभुव	निधन्	ब्रह्मा
१२	विरज	तेज	प्रजापति
१३	कौरव्य	ब्रह्मेश	नन्दिकेश्वर
१४	माकुट	शिव	ध्वजाश्रय
१५	किरण	देवपिता	सवर्तक
१६	ललित	आलय	भैरव
१७	आग्नेय	व्योम	हुतभुक्
१८	?	शिव	×

तन्त्रालोक की टीका जयरथी मे उद्धृत श्रीकण्ठीसहिता के अनुसार १० शिवागमो में कही-कही थोडा अन्तर दिखाई देता है। वहाँ 'कारण' के स्थान पर 'मकुट' तथा 'सुदीप्त' के स्थान पर 'दीप्त' लिखा गया है। 'कारण' एक प्रतिष्ठा तन्त्र है, जिसमे लगभग शतलक्ष श्लोक है। इसके वक्ता है रुद्र और श्रोता है ब्रह्मा। इसमे चार सहिताएँ है।

श्रीकण्ठी-मत के अनुसार ये १० आगम भेद-प्रतिपादक हैं। शक्ति ही शिव का मुख है। उसकी दो अवस्थाएँ होती हैं—एक उद्भव-उन्मुख और दूसरी उद्भूत अवस्था। उद्भव-उन्मुख के ईशान, तत्पुरुप और सद्योजात—इन तीन मुखो मे से प्रत्येक मुख से १।१ कुल ३, उद्भूत तीन में से ३, उन तीन मुखो मे दो के परस्पर मिलन से १।१ कुल ३ और तीन मुखो के परस्पर मिलन से १ सर्वसमष्टि मिलकर १०। ये सब भेदप्रधान शैव तन्त्र हैं। वामदेव और अघोर नाम के मुखो का उपयोग इनमे नही है। श्रीकण्ठी के अनुसार १८ रुद्रागम भेदाभेदप्रधान है। किरणागम की सूची मे जहाँ प्रोद्गीत है वहाँ श्रीकण्ठी के अनुसार मद्गीत समझना चाहिए। उसी प्रकार चन्द्रहास के स्थान पर चन्द्रांशु, भद्र के

स्थान पर वीरभद्र, विरज के स्थान पर विसर, कौरव्य के स्थान पर रौरव और माकुट के स्थान पर विमल समझना चाहिए। अन्यत्र मुखविम्ब के स्थान पर चन्द्रज्ञान मिलता है। कही-कही नारसिंह के स्थान पर विसर और सौरभेय के स्थान पर मकुट, सर्वोक्त और वातुल समझना चाहिए। ये सव परमेश्वर की भेदाभेदमय रुद्र अवस्था से उद्भूत हैं। इन १८ आगमो मे एकक दो है, द्विक तीन, त्रिक आठ, चतुष्क चार और पञ्चक एक है।

नेपाल दरवार लाइब्रेरी मे नि श्वासतन्त्रसहिता नाम की एक पुस्तक मिली थी। यह प्राचीन गुप्तलिपि मे लिखी गयी है, जो ईस्वी की आठवी शताब्दी मे प्रचलित थी। इस ग्रन्थ को जिन्होने देखा है वे कहते है कि इसमे पॉच विभाग है। प्रत्येक विभाग का नाम सूत्र है। उन सूत्रो के नाम इस प्रकार है—लौकिक धर्मसूत्र, मूलसूत्र, उत्तरसूत्र, नयसूत्र और गुह्यसूत्र। लौकिक धर्मसूत्र प्राय उपेक्षित रहा। उत्तरसूत्र मे अठारह प्राचीन शिवसूत्रो का नाम है। वास्तव मे ये सूत्र भिन्न-भिन्न आगमो के ही नाम हैं। ये सव आगम शिवतन्त्र के नाम से प्रसिद्ध थे। उनके नाम ये है—(१) विजय, (२) नि श्वास, (३) स्वायम्भुव, (४) वाथुल, (५) वीरभद्र, (६) रौरव, (७) माकुट, (८) विरस, (९) चन्द्रहास, (१०) ज्ञान (११) मुखविम्व, (१२) प्रोद्गीत, (१३) ललित, (१४) सिद्ध, (१५) सन्तान, (१६) सर्वोद्गीत, (१७) किरण और (१८) पारमेश्वर।[1]

ब्रह्मयामल मे भी १८ आगमो के नाम है—जैसे विरज, नि श्वास, स्वायभुव, वायुल, वीरभद्र, रौरव, मकुट, वीरेश, चन्द्रज्ञान, प्रोद्गीत, ललित, सिद्धसन्तान, सर्वोद्गीत किरण और पारमेश्वर। प्रतीत होता है कि २८ आगमो मे १८ आगम अधिकतर प्राचीन है, क्योकि ये सब ग्रन्थ ईस्वी अष्टम शताब्दी से भी वहुत पहले से प्रचलित थे। कुछ लोगो का कहना है कि ये सव आगम ग्रन्थ उत्तर भारत मे ही प्रचलित थे, क्योकि इनमे

१. विजय प्रथम ज्ञेय नि.श्वास तदनन्तरम्।
स्वायम्भुवमतञ्चैव वायुलं तदनन्तरम्॥
वीरभद्रमिति स्यात रौरवं माकुट तथा।
विरसं चन्द्रहासं च ज्ञान च मुखबिम्बकम्॥
प्रोद्गीतं ललितं चैव सिद्धं सन्तानमेव च।
सर्वोद्गीत च विज्ञेय किरण पारमेश्वरम्॥
Fol 24a
[नि श्वासतन्त्रसहिता नेपाल दरवार लाइब्रेरी मे सुरक्षित।]

अधिकाश स्थलो मे आर्यावर्त के ब्राह्मण ही शिवाचार्य के रूप मे, योग्य समझ कर, वृत होते थे। कामरूप, कश्मीर, कलिङ्ग, कोङ्कण, काञ्ची, कावेरी प्रभृति देशो के ब्राह्मणो की योग्यता अपेक्षाकृत न्यून मानी जाती थी। यह विवरण है १० शिवागमो तथा १८ रुद्रागमो के विषय मे।

इनके अतिरिक्त ६४ आगमो या ६४ तन्त्रो के नाम भी शास्त्रो मे यत्र तत्र मिलते है। श्रीकण्ठीसहिता मे ये सब अद्वैतभावप्रधान भैरवागम के नाम से प्रसिद्ध है। वामकेश्वरतन्त्र मे भी ६४ तन्त्रो का नामोल्लेख है। ऋजु-विमर्शिनी टीकाकार लक्ष्मण तथा अर्थ-रत्नावलीकार के मतो की आलोचना भी उसमे है। सेतुवन्ध मे भास्करराय ने इन सव की समालोचना की है और इनके विषय मे अपना मत भी व्यक्त किया है। श्री शङ्कराचार्य की सौन्दर्यलहरी मे भी ६४ तन्त्रो का उल्लेख है। टीकाकार लक्ष्मीधर के मत मे ये सव तन्त्र अवैदिक है। परन्तु भास्करराय ने सेतुवन्ध मे कहा है कि यह कहना ठीक नही है कि **ये सब तन्त्र अवैदिक** है। सर्वानन्द के सर्वोल्लास तन्त्र मे भी ६४ तन्त्रो के नाम दिये गये है। परन्तु यह सूची तोडलोत्तर के आधार पर वनी हुई है। महासिद्धिसार तन्त्र मे जगत् के तीन विभागो की कल्पना की गयी है—रथक्रान्ता, विष्णुक्रान्ता और अश्वक्रान्ता। प्रत्येक विभाग मे अपने-अपने दृष्टिकोण के अनुसार ६४ तन्त्र है।

नीचे इन ६४ तन्त्रो की भिन्न-भिन्न सूचियाँ दी जा रही है—(क) श्रीकण्ठीसहिता के अनुसार, (ख) लक्ष्मीधर सम्मत वामकेश्वर तन्त्र के अनुसार, (ग) भास्करराय सम्मत, (घ) सर्वोल्लास तन्त्र मे उद्धृत तोडलोत्तर तन्त्र के अनुसार तथा (ङ च छ) महासिद्धिसार तन्त्र के क्रान्ताभेद से तीन।

(क) श्रीकण्ठीसहिता के अनुसार **भैरवतन्त्र** (१ से ८ तक)—१ स्वच्छन्द तन्त्र, २ भैरव, ३ चण्ड, ४ क्रोध, ५ उन्मत्तभैरव, ६ असिताङ्गभैरव, ७ महोच्छुष्म और ८ कपालीश, **यामल तन्त्र** (९ से १६ तक)—९ ब्रह्मयामल, १० विष्णुयामल, ११ स्वच्छन्दयामल, १२ रुरुयामल, १३ (?), १४ अथर्वण, १५ रुद्र, १६ वेताल, **मततन्त्र** (१७ से २४ तक)—१७ रक्त, १८ लम्पट, १९ रश्मिमत, २० मत, २१ चालिका, २२ पिङ्गला, २३ उत्फुल्ल, २४ विश्वाद्य, **मङ्गलतन्त्र** (२५ से ३२ तक)—२५ पिचुभैरवी, २६ तन्त्रभैरवी, २७ तत, २८ ब्राह्मीकला, २९ विजया, ३० चन्द्रा, ३१ मङ्गला, ३२ सर्वमङ्गला, **चक्राष्टक** (३३ से ४० तक)—३३ मन्त्रचक्र, ३४ वर्णचक्र, ३५ शक्ति-चक्र, ३६ कलाचक्र, ३७ विन्दुचक्र, ३८ नादचक्र, ३९ गुह्यचक्र, ४० खचक्र, **वहुरूपतन्त्र** (४१ से ४८ तक)—४१ अन्धक, ४२ रुरुभेद, ४३ अज, ४४ मूल, ४५ वर्ण-

मण्ट ४६ विटङ्क, ४७ मात्रादन ४८ ज्वालिन वागीश (४९ से ५६ तक)—४९ भैरवी, ५० चित्रिका ५१ हंसा ५२ कदम्बिका ५३ हृल्लेखा, ५४ चन्द्रलेखा ५५. विद्युल्लेखा ५६ विद्युमन, शिखातन्त्र (५७ से ६४ तक)—५७ भैरवी, ५८ वीणा ५९ वीणामणि ६० सम्मोह ६१ डामर ६२ अथर्वक, ६३ कबन्ध और ६४ शिरश्छेद

(ख) लक्ष्मीधर सम्मत वामकेश्वर तन्त्रानुसार—१ महामाया, २ शम्बर, ३ योगिनीजालशम्बर, ४ तत्त्वशम्बर, ५ सिद्धभैरव, ६ वटुकभैरव, ७ कंकालभैरव, ८ कालभैरव, ९ कालाग्निभैरव १० योगिनीभैरव, ११ महाभैरव, १२ शक्तिभैरव, (बहुरूपाष्टक)—१३ ब्राह्मी, १४ माहेश्वरी १५ कौमारी, १६ वैष्णवी, १७ वाराही, १८ माहेन्द्री, १९ चामुण्डा, २० शिवदूती, यामलाष्टक (२१ से २८), २९ चन्द्रज्ञान ३० मालिनी विद्या, ३१ महासम्मोहन, ३२ वामजुष्ट, ३३ महादेव तंत्र, ३४ वातुल, ३५ वातुलोत्तर, ३६ कामिक, ३७ हृद्भेद, ३८ तन्त्रभेद, ३९ गुह्यतन्त्र ४० कलावाद, ४१ कलासार, ४२ कुण्डिकामत ४३ मतोत्तरमत, ४४ वीणाख्य ४५ त्रोतल, ४६ त्रोतलोत्तर ४७ पञ्चामृत, ४८ रूपभेद, ४९ भूतोड्डामर ५० कुलसार, ५१ कुलोड्डीश ५२ कुलचूडामणि, ५३ सर्वज्ञानोत्तर, ५४ महाकालीमत, ५५ अरुणेश, ५६ मोदिनीश, ५७ विकुण्ठेश्वर, ५८ पूर्वपक्ष, ५९ पश्चिमपक्ष, ६० उत्तरपक्ष ६१ निरुत्तर, ६२ विमल, ६३ विमलोत्थ, और ६४ देवीमत।

(ग) १ महामाया, २. शम्बर, ३ योगिनी, ४ जालशम्बर, ५ तत्त्वशम्बर, ६ भैरवाष्टक, बहुरूपाष्टक—७ ब्राह्मी, ८ माहेश्वरी ९ कौमारी १० वैष्णवी, ११ वाराही, १२ माहेन्द्री, १३ चामुण्डा, १४ शिवदूती, यामलाष्टक—१५ ब्रह्मयामल, १६ विष्णुयामल १७ रुद्रयामल, १८ लक्ष्मीयामल, १९ उमायामल, २० स्कन्दयामल, २१ गणेशयामल, २२ जयद्रथयामल, २३ चन्द्रज्ञान २४ वासुकि २५ महासम्मोहन, २६ महोच्छुष्म, २७ वातुल, २८ वातुलोत्तर, २९ हृद्भेद, ३० तन्त्रभेद, ३१ गुह्यतन्त्र ३२ कामिका ३३. कलावाद ३४ कलासार, ३५ कुण्डिकामत ३६ मतोत्तर, ३७ वीणाख्य, ३८ त्रोतल, ३९ त्रोतलोत्तर, ४० पञ्चामृत, ४१ रूपभेद, ४२ भूतोड्डामर, ४३ कुलसार ४४ कुलोड्डीश ४५ कुलचूडामणि, ४६ सर्वज्ञानोत्तर ४७ महाकालीमत ४८ महालक्ष्मीमत, ४९ सिद्धयोगेश्वरीमत, ५० कुब्जिकामत ५१ रूपिकामत, ५२ सर्ववीरमत, ५३ विमलामत ५४ पूर्वाम्नाय, ५५ पश्चिमाम्नाय, ५६ दक्षिणाम्नाय, ५७ उत्तरा-

म्नाय, ५८ ऊर्ध्वाम्नाय, ५९ वैशेषिक तन्त्र, ६० ज्ञानार्णव, ६१ वीरावली, ६२ अरुणेश, ६३ मोहिनीश, ६४ विशुद्धेश्वर।[१]

(घ) १ अक्षया, २ उड्डीश, ३ उत्तर, ४ उत्तम, ५ ऊर्ध्वाम्नाय, ६ काली, ७ कुमारी, ८ कुलार्णव, ९ कालिकाकुलसर्वस्व, १० कालिकाकल्प, ११ कुक्कुट, १२ कामधेनु, १३ कालीविलास, १४, कामाख्या, १५ कुब्जिका, १६ कुलचूडामणि, ७ गुप्तसाधन, १८ गणेश, १९ गन्धर्व, २० गौतमीय, २१ चिदम्बरनट, २२ चिन्तामणि, २३ ज्ञानार्णव, २४ ज्ञानदीप, २५ तोडल, २६ तारा, २७ तन्त्रमुक्तावली, २८ त्रिपुरासार, २९ निर्वाण, ३० नील, ३१ निरुत्तर, ३२ नारायणी, ३३ नित्या, ३४ फेत्कारिणी, ३५ बृहत्श्रीक्रम, ३६ भैरव, ३७ भूततन्त्र, ३८ भैरवीतन्त्र, ३९ भावचूडामणि, ४० मुण्डमाला, ४१ मालिनी, ४२ महामाया,

१ काश्मीर सिरीज आफ टेक्स्ट एण्ड स्टडीज No LXVI में प्रकाशित वामकेश्वरीमत पुस्तक में ६४ तन्त्रो का निम्नलिखित पाठ दिखाई देता है—

[१]महामाया [२]शम्बरं च [३]योगिनी [४]जालशम्बरम् ।
[५]तत्त्वशम्बरक चैव [६-१३]भैरवाष्टकमेव च ॥
[१४-२१]बहुरूपाष्टक [२२]ज्ञान [२३-३०]यामलाष्टकमेव च ।
[३१]चन्द्रज्ञानं [३२]वासुकिं च [३३]महासमोहन तथा ॥
[३४]महोच्छुष्म महादेव [३५]वाथुल च [३६]नयोत्तरम् ।
[३७]हृद्भेद [३८]मातृभेदं च [३९]गुह्यतन्त्र च [४०]कामिकम् ॥
[४१]कालपाद [४२]कालसार तथान्यत् [४३]कुब्जिकामतम् ।
[४४]तन्त्रोत्तर च [४५]वीणाख्य [४६]त्रोतल [४७]त्रोतलोत्तरम् ॥
[४८]पञ्चामृत [४९]रूपभेद [५०]भूतोड्डामरमेव च ।
[५१]कुलसार [५२]कुलोड्डीश [५३]कुलचूडामणि तथा ॥
[५४]सर्वज्ञानोत्तर देव [५५]महापिचुमतं तथा ।
[५६]महालक्ष्मीमत देव [५७]सिद्धयोगीश्वरीमतम् ॥
[५८]कुरूपिकामतं देव [५९]रूपिकामतमेव च ।
[६०]सर्ववीरमत देव [६१]विमलामतमेव च ॥
[६२]अरुणेशं [६३]मोदनेश [६४]विशुद्धेश्वरमेव च ।

पृष्ठ १६–१७ ।

४३ माया, ४४ मातृका, ४५ मातृभेद, ४६ योगिनीविजय, ४७ योनि, ४८ योगिनी-हृदय, ४९ योगिनी, ५० लिङ्गार्चन, ५१ लतार्चन, ५२ वाराही, ५३ वरदा, ५४ विज्ञापन, ५५ वीरभद्र, ५६ विश्वसार, ५७ वीर, ५८ वामकेश्वर, ५९ शिवसार, ६० सनत्कुमार, ६१ स्वतन्त्र, ६२ समय और ६३ हस।

(ङ) रथक्रान्ता के अनुसार—१ आकाशभैरव २ आचारचार, ३ इन्द्रजाल, ४. उड्डामरेश्वर, ५ एकजटा, ६ कंकालमालिनी, ७ कृकलासदीपिका, ८ कराल-भैरव, ९ कैवल्य, १० कुलसद्भाव, ११ कृत्तिसार, १२ कालभैरव, १३ कालोत्तम, १४ गरुड, १५ चिन्मय, १६ चीनाचार, १७ छायानील, १८ ज्ञानभैरव, १९ देवडामर, २० दक्षिणामूर्ति, २१ नवरत्नेश्वर, २२ नागार्जुन, २३ नारदीय, २४ पुरश्चरणचन्द्रिका, २५ पुरश्चरणरसोल्लास, २६ पञ्चदशी, २७ पिच्छिला, २८ प्रपञ्चसार, २९ परमेश्वर, ३०, वृहद्गौतमीय, ३१ वालाविलास, ३२ वृहद्योनि, ३३ ब्रह्मजाल, ३४ बीजचिन्तामणि, ३५ भूतभैरव, ३६ भूतडामर, ३७ मत्स्यसूक्त, ३८ महिषमर्दिनी, ३९, मातृकोदय, ४० महानील, ४१ मेरु, ४२ महानिर्वाण, ४३ महाकाल, ४४ महालक्ष्मी, ४५ यक्षिणी, ४६ योगस्वरोदय, ४७ योगसार, ४८ यक्षडामर, ४९ राजराजेश्वरी, ५० रेवती, ५१ वर्णोद्धृति, ५२ वर्णविलास, ५३ वासुदेवरहस्य, ५४ शक्तिकागमसर्वस्व, ५५ शक्तिसगम, ५६ शारदा, ५७ षोढा, ५८ षडाम्नाय, ५९ स्वरोदय, ६० सरस्वती, ६१ सारस, ६२ समोहन, ६३ सिद्धितद्धरि (?) और ६४ हस माहेश्वर।

(च) विष्णुक्रान्ता के अनुसार—१ उत्तर, २ काली, ३ कुलार्णव, ४ कुल-प्रकाश, ५ क्रियासार, ६ कुब्जिका, ७ कालीविलास, ८ कुलोड्डीश, ९ कुलामृत, १० कुमारी, ११ कामधेनु, १२ कामाख्या, १३ कुलचूडामणि, १४ गणेशविमर्शिनी, १५. गवाक्ष, १६ गन्धर्व, १७ चामुण्डा, १८ ज्ञानार्णव, १९ तन्त्रराज, २० तन्त्रा-न्तर २१ देव्यागम, २२ देवी (?), २३ देवप्रकाश, २४ नवरत्नेश्वर, २५ निबन्ध, २६ नित्या, २७ नील, २८ निरुत्तर, २९ फेत्कारी, ३० ब्रह्मयामल, ३१ वृहत्-श्रीक्रम, ३२ भावचूडामणि, ३३ भूतडामर, ३४ भैरव, ३५ भैरवी, ३६ मत्स्य-सूक्त, ३७ मुण्डमाला, ३८ मालिनी, ३९ महाकाल, ४० मालिनीविजय, ४१ मायातन्त्र, ४२ यामल, ४३ यन्त्रचिन्तामणि, ४४ योगिनीहृदय, ४५ योगिनी-तन्त्र, ४६ योनि, ४७ राधातन्त्र, ४८ रुद्रयामल, ४९ ललितातन्त्र, ५० विश्वसार, ५१ वाराही, ५२ विशुद्धेश्वर, ५३ श्रीक्रम, ५४ शिवागम, ५५ सुकुमुदिनी,

५६ सिद्धेश्वर, ५७ सिद्धसार, ५८ सिद्धसारस्वत, ५९ सिद्धियामल, ६० सनत्कुमार, ६१ समयाचार, ६२ समोहन, ६३ स्वतन्त्र तथा ६४ हस महेश्वर ।

(छ) अश्वक्रान्ता के अनुसार—१ उड्डामरेश्वर, २ क्रियासार, ३ काल, ४ कामिनी, ५ कामुकेश्वर, ६ कामरत्न, ७ कुरञ्ज, ८ गायत्री, ९ गुर्वर्चन, १० गोप्य, ११ गोपी, १२ गौरी, १३ गुप्त, १४ गुप्तसार, १५ गुप्तदीक्षा, १६ गोप-लीलामृन, १७ चूडामणि, १८ चीनतन्त्र, १९ जयराधामाधवतन्त्र, २० तत्त्व-चिन्तामणि, २१ तत्त्वसार, २२ तीक्ष्ण, २३ धूमावती, २४ वृहत्सार, २५ वृहत्-चीन, २६ वृहत्तोडल, २७ वृहन्निर्वाण, २८ वृहत्कङ्कालिनी, २९ वृहद्योगिनी, ३० विन्दुतन्त्र, ३१ वृहन्मोक्ष, ३२ वृहन्मालिनी, ३३ विन्दु, ३४ ब्रह्माण्ड, ३५ भूत-लिपि, ३६ भृतशुद्धि, ३७ भूतेश्वरी, ३८ भेरुण्डा, ३९ भुवनेश्वरी, ४० महावीर, ४१ मन्त्रचिन्तामणि, ४२ महानिरुत्तर, ४३ मोहन, ४४ मोहिनी, ४५ मद्गुली, ४६ माया, ४७ महामालिनी, ४८ मोक्ष, ४९ महामाया, ५० महायोगिनी, ५१ योगार्णव, ५२ यन्त्रचूडा(?), ५३. योगतन्त्र, ५४. लीलावती, ५५. विशुद्धेश्वर, ५६ विद्युल्लता, ५७. वर्णसार, ५८ शिवार्चन, ५९ शवर, ६० शूलिनी, ६१ शिवतन्त्र, ६२ सिद्धतन्त्र, ६३ सारात्सार तथा ६४ समीरण ।

ब्रह्मयामल के १९ वे अध्याय मे स्रोतभेदो का विवरण दिया गया है । उसमे तीन स्रोतो का निर्देश है—१ दक्षिणस्रोत (शङ्कर के दक्षिण मुख से उद्भूत), २ वामस्रोत और ३ मध्यस्रोत (शङ्कर के ऊर्ध्व मुख से उद्भूत) । ये तीन स्रोत वस्तुत शङ्कर की तीन धाराओ के ही नाम हैं । इनके अतिरिक्त भैरव स्रोत का भी वही उल्लेख मिलता हे । उससे भी तन्त्रो का उद्भव हुआ है । पीठो के अनुसार भी तन्त्रो का भेद कही-कही किया गया है । विद्यापीठ, मन्त्रपीठ, मुद्रापीठ और मण्डलपीठ—ये चार पीठ हैं । विद्यापीठ मे आठ भैरव और आठ यामल हैं । आठ भैरवो के नाम यो है—स्वच्छन्दभैरव, क्रोधभैरव, उन्मत्तभैरव, उग्रभैरव, कपालिभैरव, झङ्कारभैरव, शेखरभैरव और विजयभैरव । आठ यामलो के नाम यो हैं—रुद्रयामल, स्कन्दयामल, ब्रह्मयामल, विष्णुयामल, यमयामल, वायुयामल, कुवेरयामल और इन्द्रयामल । इस पीठ के तन्त्रो के नाम यो हैं–योगिनीजाल, योगिनीहृदय, मन्त्रमालिनी, अघोरेशी, लाकिनीकल्प इत्यादि । मन्त्रपीठ मे भी भैरवो के नाम हैं—वीरभैरव, चण्डभैरव, महाभैरव इत्यादि । मध्यस्रोत के तन्त्र यो वर्णित हैं–विजय, नि श्वास, स्वायभुव, वातुल, वीरभद्र, रौरव, माकुट और वीरेश । ये सव शिवागम हैं । इनमे भी ऊपर चन्द्रजाल, विश्व, प्रोद्गीत, ललित, सिद्धसन्तान, सर्वोद्गीत, किरण और पारमेश्वर हैं । यह कहने की आवश्यकता नही है कि ये सव रुद्रागमो के अन्तर्गत हैं ।

आम्नाय भेद से भी तन्त्रो का विभाग किया जाना प्रसिद्ध है। इसमे और दृष्टियाँ भी है। निःश्वास तन्त्र मे ५ सूत्रो की वात कही गयी है। पहला जो सूत्र है वह लौकिक धर्मविपयक है। शेप चार सूत्र मूलसूत्र, उत्तरसूत्र, नयसूत्र और गुह्यसूत्र के नाम से प्रसिद्ध हैं। उत्तरसूत्र मे १८ शैव (अर्थात् रुद्र) आगमो के नाम है।

जयद्रथयामल मे पता चलता है कि ये भैरव स्रोत के तन्त्र है (विद्यापीठ के)। इसमे चार पीठो की वाते वर्णित है। ३६ अध्यायो मे विद्यापीठ के तन्त्रो के नाम है। जैसे— सर्ववीरसमायोग, सिद्धयोगेश्वरीमत, पञ्चामृत, विश्वाद्य, योगनीजालशम्वर, विद्याभेद, शिरश्छेद तथा महासमोहन। इसमे आठ यामल है—ब्रह्म, विष्णु, स्कन्द, गौतमीय, रुद्र और हरि। मङ्गल आठ है—भैरवमङ्गल, चतुर्गर्भमङ्गल, शनिमङ्गल, सुमङ्गल, सर्व-मङ्गला, विजया, उग्रमङ्गला और सद्भावमङ्गला।

समोहन तन्त्र मे तान्त्रिक वाङ्मय का वहुत व्यापक परिचय मिलता है। उसमे भी वहुत-से पीठो की वाते वर्णित है। इस तन्त्र मे क्षेत्र-भेद से प्रचलित तन्त्रो की सख्या दी गयी है। इसमे कहा गया है कि चीन मे १०० मूल तन्त्र और ३७ उपतन्त्र हैं, द्रविड मे २० मूल तन्त्र और २५ उपतन्त्र है, केरल मे ६० मूल तन्त्र और ५०० उपतन्त्र है, कश्मीर मे १०० मूल तन्त्र और १० उपतन्त्र है एव गौड मे २७ मूल तन्त्र और १६ उपतन्त्र है। इसके पष्ठाध्याय मे शैव, वैष्णव, गाणपत्य और सौर भेद से तन्त्रादि की सख्या जैसी दिख-लायी गयी है वह नीचे दी जाती है।

	शैव	वैष्णव	गाणपत्य	सौर
तन्त्र	३२	७५	५०	३०
उपतन्त्र	३२५	२०५	२५	९६(?)
सहिता	१०	८	—	४
उपसहिता	—	—	—	४
अर्णव	५	१	—	२
यामल	२	१	—	२
डामर	३	२	१	२
उड्डाल	१	—	—	५,२(?)
उड्डीश	२	२	२	२
कल्प	८	२०	९	१०,३

	शैव	वैष्णव	गाणपत्य	सौर
उपसख्या	८	—	—	—
चूडामणि	२	८	३	५,३(?)
विमर्शिनी	२	—	२	३
सूक्त	५	—	—	—
चिन्तामणि	२	२	३	—
पुराण	९	५	२	५(?)
कक्षपुट	२	५	३	२
कल्पद्रुम	३	—	—	—
कामधेनु	२	—	—	—
तत्त्व	५	—	२	९(?)३(?)
तत्त्वबोधविमर्शिनी	—	३	—	—
अमृततर्पण	—	२	—	—
अवतार	२	—	—	२(?)
अमृत	—	—	२,५	३
सागर	—	—	३	३
दर्पण	—	—	—	—
चन्द्रयामल	—	—	—	—
पाचरात्र	—	—	—	—

उपास्यदेवता-भेद से तन्त्रभेद : दशमहाविद्या

प्रचलित तन्त्रसाहित्य के वहुत ग्रन्थ उपास्य देवताओ के भेद के अनुसार विभिन्न श्रेणियो मे विभक्त किये जा सकते हैं। बौद्ध और जैन तन्त्र साहित्य के विषय मे भी कुछ अशो मे यह वात सत्य है। किन्तु यहाँ उस साहित्य की आलोचना की आवश्यकता नही है। बौद्ध तन्त्र साहित्य अतिविशाल है। जैन तन्त्र साहित्य उसकी अपेक्षा अल्पकाय है। वाडवानलीय तन्त्र मे लिखा है ——

> योगिनी वज्रपूर्वा च पन्नगी नैर्ऋतेश्वरी ।
> अधराम्नायपीठस्था जैनमार्गप्रपजिता. ॥ (परश्चर्यार्णव पृ० ०२)

अर्थात् वज्रयोगिनी, पन्नगी तथा नैर्ऋतेश्वरी अधराम्नाय की देवियाँ हैं। महाकाल संहिता के अनुसार भीमा देवी भी अधराम्नाय की देवी है।

उपासना की दृष्टि से तान्त्रिक विभाग का दिग्दर्शन—नाना प्रकार से तान्त्रिक साहित्य का विभाग किया जाता है। उसका दिग्दर्शन पहले कराया जा चुका है। उपास्यभेद मे भी उसका विभाग किया जाता है। उपास्यो मे देवी के प्रकार भेद के अनुसार जो विभाग प्रचलित है उसमे महाविद्यानुसारी विभाग ही अधिक प्रसिद्ध है। उस दृष्टि से काली, तारा तथा श्रीविद्या के विषय मे कुछ विवरण देकर शेष महाविद्याओ के विषय मे सक्षेप मे लिखने का विचार है।

काली

महाविद्या-क्रम मे सबसे प्रथम काली का स्थान माना जाता है। तदनुसार काली के अर्चन तथा तत्त्व का अवलम्बन कर जितने सिद्धान्त तथा प्रयोग ग्रन्थ प्रसिद्ध हुए हैं उनमे से दो-चार का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है। कालीतत्त्व के विषय मे महाकालसंहिता अति उत्कृष्ट ग्रन्थ है। इसका आयतन अत्यन्त विशाल है, किन्तु यह अखण्ड रूप मे सर्वत्र उपलब्ध नही होता। नेपाल में इसका अपेक्षाकृत कुछ अधिक अंश उपलब्ध हैं। कालज्ञान कालीविषयक एक अच्छा ग्रन्थ है। कालोत्तर के नाम से इसका एक परिशिष्ट भी था। यह भी प्राचीन ग्रन्थ है, क्योकि कश्मीर के क्षेमराज ने साम्बपञ्चाशिका की टीका मे इसका उल्लेख किया है। हेमाद्रि, रघुनन्दन तथा कमलाकर भट्ट को भी इस ग्रन्थ का परिचय था। इस प्रकार के अन्यान्य ग्रन्थो मे कालीकुलक्रमार्चन (विमलबोध कृत), भद्रकालीचिन्तामणि, व्योमकेशसंहिता, कालीयामल, कालीकल्प, कालीसपर्याक्रमकल्पवल्ली, श्यामारहस्य (पूर्णानन्द कृत), कालीविलासतन्त्र, कालीकुलसर्वस्व, कालीतन्त्र, कालीपरा, कालिकार्णव, विश्वसारतन्त्र, कामेश्वरीतन्त्र, कुलचूडामणि, कौलावली, कालीकुल, कुलमूलावतार आदि ग्रन्थ विशेष रूप से अध्ययन योग्य हैं। काशीनाथ तर्कालङ्कार भट्टाचार्य कृत श्यामासपर्या भी अच्छा ग्रन्थ है। शक्तिसंगमतन्त्र का कालीखण्ड, कालिकार्चामुकुर, कालीकुलामृत प्रभृति ग्रन्थो की भी प्रसिद्धि कुछ कम नही है। आद्यानन्दन या नवमीसिंह कृत कुलमुक्तिकल्लोलिनी का प्रचार नेपाल मे अधिक है। स्तोत्रो मे महाकाल विरचित कर्पूरस्तव प्रसिद्ध है। उस पर बहुत-सी टीकाएँ हैं। कालीभुजङ्गप्रयात स्तोत्र की प्रसिद्धि भी कुछ कम नही है। भैरवीतन्त्र मे जो कालीमाहात्म्य प्रकाशित हुआ है, वह भी दर्शनीय है। इसविद्या के विषय मे कालिकोपनिषत् नामक एक उपनिषत्

भी है। कौल सम्प्रदाय के बहुत-से ग्रन्थ काली के विषय में प्रसिद्ध ही हैं। उन सबका यहाँ विवरण देना सभव नही है। विशेष जिज्ञासुओ के लिए कौलिकार्चनदीपिका, कुमारीतन्त्र, कुब्जिकातन्त्र, कुलार्णव आदि ग्रन्थो का निर्देश किया जा सकता हे। शारदातिलककार राघवभट्ट ने कालीतन्त्व नामक एक उत्कृष्ट ग्रन्थ की रचना की थी, जिसका प्रचार उत्तर प्रदेश के विभिन्न स्थानो में हुआ था।

दश महाविद्याओ के नाम, जैसे कि मुण्डमालातन्त्र मे हैं, प्रसिद्ध ही हैं। शक्तिसगम-तन्त्र मे भी यह नामावली दिखाई देती है। महाकालसहिता मे लिखा है कि विभिन्न देवता विभिन्न युगो मे फल प्रदान करते हैं, किन्तु चारो युगो में फल प्रदान की सामर्थ्य एकमात्र दश महाविद्याओ मे है। उनमे भी काली, तारा और सुन्दरी का विशेष उत्कर्ष है। त्रिशती मे लिखा है कि श्रीविद्या ही मोक्ष की कारणभूत एकमात्र विद्या है।[1]

कालीसाधना के विषय मे मुख्य ग्रन्थो के नाम ऊपर दिये जा चुके हैं। कालीतन्त्र में दक्षिणा काली का वर्णन इस प्रकार है—करालवदना मुक्तकेशी दिगम्बरा मुण्डमाला-विभूषिता चतुर्हस्ता—निम्न वामहस्त मे सद्यश्छिन्न मस्तक, ऊर्ध्ववाम हस्त मे खड्ग, निम्न दक्षिण हस्त मे वरमुद्रा तथा ऊर्ध्व दक्षिण हस्त में अभय मुद्रा। महामेघवत् श्यामला, स्मेराननना, शवरूप महादेव के हृदय पर स्थित, अष्टमी के चन्द्र के तुल्य अर्थात् अर्ध चन्द्र-तुल्य भालवती, शवकरो से विनिर्मित काञ्चीधारिणी, दोनो कर्णो मे अवतसरूप शव धारण की हुई, दाये और बाये दोनो ओष्ठ-प्रान्तो से रक्तधारा स्राविणी, घोरदष्ट्रा, महारावा, रक्तस्राविणी, मुण्डावलियो की माला को कण्ठ मे धारण करनेवाली।

काली के वामहस्त मे जो छिन्न मस्तक है, वह महामोह का प्रतिरूप है, यह बात रुद्रयामल मे लिखी हुई है। (द्रष्टव्य—रमानाथकृत कर्पूरस्तव-टीका)। काली त्रिनयना हैं। उनके ये तीन नेत्र अग्नि, सूर्य और चन्द्ररूप जानने चाहिए।

स्थानान्तर में काली का ध्यान इस प्रकार है—त्रिनयना, नितम्ब (कटि पश्चाद् भाग) मे जो काञ्ची है वह मृत काम, क्रोधादि रिपुओ के बाहुओ से निर्मित है। यहाँ बाहु शब्द से कूर्पर (कुहनी) से लेकर अगुलियो के अग्रभाग पर्यन्त बाहु अश समझना चाहिए। वह दिगम्बरा है। श्मशान तल्प मे महादेव रूपी शव के हृदय मे महाकाल के सहित सुरत में मग्न है। रगनाथ ने कहा है कि ये महाकाल देवी द्वारा ही सृष्टि के लिए उत्पादित किये

१ मोक्षैकहेतुर्विद्या श्रीश्रीविद्या नात्र सशय.॥११९॥—त्रिशती.

गये थे। यह विपरीत रमण का व्यापार है। परन्तु यह स्मरण रखना चाहिए कि यह काली दक्षिणा काली नही है, किन्तु महाकाली है। इस रमण का काल तीन अर्बुद छह वृन्द, पचास पद्मकोटियुग परिमित है। यह बात भी रुद्रयामल मे लिखी हुई है। जगत्सृष्टि का निदान यही है।

काली के विषय मे परातन्त्र नाम मे प्रसिद्ध एक प्राचीन तन्त्र ग्रन्थ है, जिसमें चार पटल है(ए व ५९५३)। उसमे लिखा है कि एक ही महाशक्ति पट्सिंहासनारूढ (अलग-अलग छह सिंहासनो में आरूढ) छह आम्नायो की देवी है। उसमे पूर्वाम्नाय की देवी का नाम है पूर्णेश्वरी, दक्षिणाम्नाय की देवी का नाम है विश्वेश्वरी, पश्चिमाम्नाय की देवी का नाम है कुब्जिका, उत्तराम्नाय की देवी का नाम काली है एव ऊर्ध्वाम्नाय की अधिष्ठात्री का नाम श्रीविद्या है। उस ग्रन्थ मे २ य पटल से ४र्थ पटल तक भगवती काली का ही क्रम निर्णीत है।

तारा

तारा की उपासना के विषय मे मुख्य ग्रन्थ ये हैं—तारातन्त्र (तारिणीतन्त्र), तारासूक्त, तोडलतन्त्र, तारार्णव, नीलतन्त्र, महानीलतन्त्र, नीलसरस्वतीतन्त्र, चीनाचार, तन्त्ररत्न, ताराशावरतन्त्र, तारोपनिषत्, एकजटीतन्त्र, एकजटाकल्प, ब्रह्मयामलस्थ महाचीनाचारक्रम, एकवीरतन्त्र, तारिणीनिर्णय आदि।

प्रकरण ग्रन्थो मे लक्ष्मणभट्ट कृत ताराप्रदीप, नरसिंह ठक्कुर कृत ताराभक्तिसुधार्णव, आगमाचार्य शङ्कर कृत तारारहस्य तथा उसकी वृत्ति, प्रकाशानन्द कृत ताराभक्तितरङ्गिणी, विमलानन्द कृत ताराभक्तितरङ्गिणी,काशीनाथ कृत ताराभक्तितरङ्गिणी, नित्यानन्द कृत[1] ताराकल्पलतापद्धति, श्रीविद्वदुपाध्याय कृत तारिणीपारिजात, महोग्रताराकल्प इत्यादि ग्रन्थ उल्लेख योग्य हैं। तारा-स्तोत्रो मे ताराकर्पूरस्तोत्र तथा तारासहस्रनाम विशेष रूप से उल्लेख योग्य हैं। इस सहस्रनामस्तोत्र पर विश्वेश्वर-पुत्र लक्ष्मीवर की व्याख्या है।

तान्त्रिक सम्प्रदाय मे यह प्रसिद्ध है कि तत्त्वदृष्टि से तारा परावाक्स्वरूपा है। यह पूर्णाहन्तामयी है। तान्त्रिक सम्प्रदाय मे यह भी प्रसिद्धि है कि वाम, दक्षिण तथा सिद्धान्त आचारो से सालोक्य मुक्ति हो सकती है, परन्तु सायुज्य मुक्ति नही होती। उसके लिए कुलाचार आवश्यक है। किन्तु इस विषय मे कही-कही मतभेद भी लक्षित होता है।

१इन नित्यानन्द का पूर्वाश्रम का नाम नारायण भट्ट था। ये श्रीनिवास भट्ट अथवा नित्यानन्दनाथ के शिष्य थे।

श्रीविद्या (षोडशी)

दश महाविद्याओ मे 'षोडशी' नाम श्रीविद्या या त्रिपुरसुन्दरी का ही वाचक है। त्रिपुरा, ललिता आदि नामो से एक ही विद्या (श्रीविद्या) वर्णित होती है। शक्तिसगम-तन्त्र के अनुसार सुन्दरी का नामान्तर भैरव, ललितेश्वर अथवा त्रिपुरभैरव है। महाशक्ति के अनन्त रूप हैं और नाम भी अनन्त है। परन्तु उनका परम रूप एक तथा अभिन्न है। त्रिपुरा के उपासक कहते है कि ब्रह्माजी तथा अन्यान्य देवगण त्रिपुरा के ही उपासक हैं। इनका परम स्वरूप इन्द्रिय तथा मन से अतीत है। एकमात्र मुक्तस्वरूप ही उसे जान सकते हैं। यह पूर्णाहन्तामय तुरीयरूपा हैं। इनका परम रूप वासनात्मक है अर्थात् मनोमय है और सूक्ष्मरूप मन्त्रात्मक है। वह श्रोत्र और वाग् इन्द्रियो का अगोचर है एव इनका स्थूल-रूप कर, चरण आदि से सम्पन्न है। यह नेत्र और करो का विषय है।

त्रिपुरा के उपासको मे सर्वत्र काम या मन्मथ का ही प्राधान्य है। वह विद्याप्रवर्तक होने के कारण विद्येश्वर है। भगवती की कृपा से विद्याप्रवर्तक काम के सदृश बारह विद्येश्वरो का पता चलता है। उनके नाम यो हैं—मनु, चन्द्र, कुवेर, लोपामुद्रा, मन्मथ, अगस्त्य, अग्नि, सूर्य, इन्द्र, स्कन्द, शिव और क्रोधभट्टारक अथवा दुर्वासा। इन लोगो को भगवती की कृपा से पृथक्-पृथक् फलो की प्राप्ति हुई है। इसीलिए इनको मुख्य प्रवर्तक मानते हैं। अन्यान्य वीज और मन्त्रो की भी उपासना पद्धति प्रचलित है। परन्तु प्राधान्य इन बारह विद्येश्वरो का ही है। इन विद्याप्रवर्तको मे अधिकाशो का सम्प्रदाय लुप्त हो गया है। केवल मन्मथ अथवा कामराज का सम्प्रदाय और कियदश मे लोपामुद्रा का सम्प्रदाय जीवित है। कामराजविद्या है कादि पञ्चदश वर्णात्मक (द्रष्टव्य तन्त्रराज और त्रिपुरोपनिषत्) काम, योनि, कमला, वज्रपाणि इत्यादि। लोपामुद्रा विद्या हादि पञ्चदश वर्णात्मक है। कामेश्वर के अङ्कस्थ कामेश्वरी के पूजाक्षेत्र में दोनो विद्याओ का उपयोग होता हैं। लोपामुद्रा अगस्त्य ऋषि की धर्मपत्नी थी। वह राज-कन्या थी। लोपामुद्रा को पिता के घर मे ही पराशक्ति के प्रति भक्ति का उद्रेक हो गया था। लोपामुद्रा के पिता त्रिपुरा की मुख्य शक्ति भगमालिनी देवी की उपासना करते थे। लोपामुद्रा वाल्यावस्था से ही पिता की सर्वविध सेवा करती थी। वह पिता की उपासना देख कर स्वय भी प्रभावित हो गयी थी। उनकी उपासना से प्रसन्न होकर देवी ने उनको वर दिया था, जिससे जगन्माता की सेवा करने का उन्हे अधिकार प्राप्त हुआ था। उन्होने त्रिपुराविद्या का उद्धार किया था। तव उन्हे विद्या के विषय मे ऋषित्व की प्राप्ति हुई (द्रष्टव्य त्रिपुरारहस्य माहात्म्य खण्ड,

अध्याय ५३)। अगस्त्य वैदिक ऋषि थे। वे पहले तान्त्रिक नही थे। इसलिए भगवती के ध्यान मे पदार्पण करने का भी उन्हे अधिकार प्राप्त नही हुआ था। परन्तु उन्होने अपनी पत्नी से दीक्षा ली। तदनन्तर वे भगवती की उपासना मे अधिकारसम्पन्न हुए। दुर्वासा सम्प्रदाय भी प्राय लुप्त-सा ही है।

श्री विद्या ही शक्तिचक्र की सम्राज्ञी है और ब्रह्मविद्यास्वरूपा आत्मशक्ति है। यह प्रसिद्धि है—

यत्रास्ति भोगो न च तत्र मोक्षो यत्रास्ति मोक्षो न च तत्र भोग.।
श्रीसुन्दरीसेवनतत्पराणा भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव ॥

श्रीविद्या केवल तन्त्रसिद्ध ही नही है, वेदानुमोदित भी है। ऋग्वेद के अन्तर्गत शाङ्खायन आरण्यक मे लिखा है—"तिस्र पुर त्रिपथ विश्व चर्षणी यत्रा (?) कथापरा सन्निविष्टा अधिष्ठायैनामजरा पुराणी महत्तरा महिमा देवतानाम्। कामो योनि कमला वज्रपाणि।" इत्यादि। श्री शङ्करमठो मे सर्वत्र श्रीविद्या की उपासना तथा श्रीचक्र का पूजन अभी भी प्रचलित है।

बारह विद्येश्वरो की बात पहले कही गयी है। तीन गुरु प्रधान हैं—मित्रीश, षष्ठीश और उड्डीश। ये लोग आचार्य हैं। ये सब शिवासक्त है और उपासना के प्रभाव से इन्होने महेश्वरपद प्राप्त किया है।

देवी के प्रधान स्थान तीन हैं—१ पूर्व सागर के तीर पर कामगिरि, २ मेरु के शिखर पर जालन्धर और ३ पश्चिम सागर के तीर पर पूर्णगिरि। ये त्रिकोण के तीन बिन्दु हैं और मध्य मे है उड्डीश। भारत मे देवी के द्वादश रूप प्रसिद्ध है—१ कामाक्षी (काञ्चीपुर मे), २ भ्रामरी (मलय गिरि मे), ३ कुमारी [कन्या] (केरल—मलाबार मे), ४ अम्बा (आनर्त—गुजरात में), ५ महालक्ष्मी (करवीर मे), ६ कालिका (मालव मे), ७ ललिता (प्रयाग मे), ८ विन्ध्यवासिनी (विन्ध्याचल में), ९. विशालाक्षी (वाराणसी में), १० मङ्गलचण्डी (गया मे), ११ सुन्दरी (वग मे) तथा १२ गुह्येश्वरी (नेपाल मे) (द्रष्टव्य ब्रह्माण्डपुराण ४।३९)।

त्रिपुरा की स्थूल मूर्ति है। प्रसिद्धि है कि अगस्त्य मुनि पीठो की यात्रा के सिलसिले में जीवो को दु खमग्न देख कर करुणावश विगलित हो उठे थे। तब उन्होने काञ्चीपुर में महाविष्णु को अपनी तपस्या से खूब प्रसन्न किया। अगस्त्य मुनि ने प्रसन्न हुए महाविष्णु से पूछा—'भगवन्, जगदुद्धार का उपाय क्या है ? महाविष्णु ने त्रिपुरा की स्थूल मूर्ति

ललिता का माहात्म्य उन्हें बतलाया अर्थात् सक्षेप मे भण्डासुरवध आदि का वर्णन किया। विस्तारपूर्वक उसे उन्हे सुनाने के लिए अपने अशभूत हयग्रीव मुनि को नियुक्त किया। तदुपरान्त हयग्रीव ने अगस्त्य को विस्तारपूर्वक भण्डासुर की कथा सुनायी। भण्डासुर तपोबल से शिवजी का वरदान प्राप्त कर १०५ ब्रह्माण्डो का अधिपति बन गया था।

श्रीविद्या का एक भेद कादि विद्या है, दूसरा भेद हादि विद्या है और तीसरा भेद कहादि विद्या है। श्रीविद्या कादि गायत्री का अतिगुप्त रूप है। यह अति गुप्त तत्त्व चारो वेदो मे है। जो गायत्री हम लोगो मे प्रचलित है उसका रूप स्पष्ट और अस्पष्ट है। उसके तीन पाद स्पष्ट है और चतुर्थ पाद अस्पष्ट है (परो रजसे सावदोम्)। गायत्री वेद का सार है और वेद चौदह विद्याओ का सार है। इन सब विद्याओ से शक्ति का ही परिज्ञान होता है। कादि विद्या अत्यन्त गोपनीय है। इसमे वाग्भवकूट, कामराजकूट तथा शक्तिकूट नामक तीनो कूट हैं। वाग्भवकूट में वर्ण सख्या अठारह है, कामराजकूट मे बाइस एव शक्तिकूट मे वर्ण सख्या अठारह है, सब का योग ५८ होता है। इसमे मात्रा सख्या का भी विचार है। वह यो है—वाग्भवकूट मे ७ मात्राएँ है, हृल्लेखा मे एक लव कम ४ मात्राएँ, कामराजकूट मे ७।। और हृल्लेखा मे एक लव कम ४ मात्राएँ एव शक्तिकूट मे ४।। मात्राएँ और हृल्लेखा मे १ लव कम ४ मात्राएँ हैं। हृल्लेखा की मात्रा सख्या यो है—हकार=ह, रकार, ई २, बिन्दु $\frac{1}{2}$=१२८ लव, शक्ति ४ लव, व्यापिनी २ लव, समना १ लव। सब मिलाकर १ लव कम ४ मात्राएँ हुई। यह भास्करराय का मत है। वाग्भवकूट मे वर्णसमूह (बिन्दुहीन) प्रलयाग्नि सदृश है। यह मूलाधार से अनाहत तक व्याप्त है। कामराजकूट में वर्णसमूह (बिन्दुहीन) कोटि सूर्यवत् अनाहत से आज्ञाचक्र तक व्याप्त है। शक्तिकूट मे वर्णसमूह (बिन्दुहीन) चन्द्रवत् आज्ञाचक्र से ललाट तक व्याप्त है। ये सब वर्ण माला में गुँथी मणियो के समान एक के ऊपर एक विराजमान हैं। सुषुम्णा के मूल मे तथा अग्रभाग मे दो अलग-अलग सहस्रदल कमल विद्यमान है, उनमे एक है रक्त वर्ण और ऊर्ध्वमुख एव दूसरा है श्वेत-वर्ण और अधोमुख। इन दोनो कमलो के मध्य मे अष्टदल से ३० कमल विद्यमान हैं।

व्यष्टिकूट तीन और समष्टिकूट एक है। व्यष्टि और समष्टि दोनो कूटो को मिला कर चार कूट हैं। इन चार कूटो मे चार बीज हैं, जो सृष्टि, स्थिति, सहार और अनाख्या के प्रतिपादक हैं। अनाख्या अनुग्रह तथा तिरोधान में अथवा पञ्चकृत्यो मे ही औदासीन्य अवलम्बन रूप अवस्था की वाचक है।

मूल विद्या पञ्चदशी है। कादि विद्या के उपासक रहे कामदेव और हादि विद्या की उपासिका रही लोपामुद्रा (द्रष्टव्य परशुरामकल्पसूत्र ३ और श्रीक्रम ३ पृ० १०१)। समोहनतन्त्र मे कहा गया है कि तारा-साधक कादि और हादि दोनो मतो के अधिष्ठाता हसतारा के अनुगत हैं। हसतारा महाविद्या महायोगेश्वर तथा कादियो की काली है, हादियो की सुन्दरी है और कहादियो के लिए हस है (द्रष्टव्य गार्लेण्ड आफ लेटरस् पृ० १५५)।

श्रीविद्यार्णव के मतानुसार कादिमत का नामान्तर मधुमतीमत है। यह त्रिपुरा की उपासना का प्रथम भेद है। द्वितीय मत है मालिनीमत, यही कादिमत है। कादिमत का स्वरूप जगत्चैतन्यरूपिणी मधुमती महादेवी के साथ तादात्म्य-लाभ करना है। कालीमत का स्वरूप है विश्वविग्रहा मालिनी महादेवी के साथ तादात्म्य लाभ करना। इन दोनो के विषय मे विस्तृत विवरण श्रीविद्यार्णव मे देखना चाहिए (१। ५०८, १। ९१०)। गौड सम्प्रदाय के मत से श्रेष्ठ मत कादि है, परन्तु कश्मीर और केरल के मत से त्रिपुरा और तारा श्रेष्ठ मत हैं (द्रष्टव्य शक्ति एण्ड शाक्त, २य सस्करण पृ० १५६, १५७)। कादियो की देवी काली है, हादियो की देवी त्रिपुरसुन्दरी है और कहादियो की देवी तारा अथवा नीलसरस्वती है।

त्रिपुरोपनिषद् और भावनोपनिषद् कादिमत के ग्रन्थ हैं। सभवत कौलोपनिषद् भी ऐसी ही है। इन पर भास्करराय की टीका है। त्रिपुरोपनिषद् के व्याख्याकार भास्करराय के उपोद्घात श्लोक के अनुसार यह उपनिषत् शाङ्खायन आरण्यक के अन्तर्गत है। हादिविद्या का प्रतिपादन त्रिपुरातापिनी उपनिषत् मे है। प्रसिद्धि है कि दुर्वासा मुनि त्रयोदशाक्षरा (१३ अक्षर वाली) हादिविद्या की उपासना करते थे। दुर्वासा विरचित ललितास्तवरत्न बम्बई से प्रकाशित हुआ है। एक हस्तलिखित पोथी मेरे दृष्टिगोचर हुई थी, जिसका नाम था परमशम्भुस्तुति। वह भी दुर्वासा विरचित ही है। इस ग्रन्थ के रचयिता का नाम क्रोधभट्टारक कहा गया है। मुझे उसमें निम्न लिखित प्रकरण दिखाई दिये थे। इस ग्रन्थ के प्रत्येक प्रकरण का नाम स्कन्धरश्मि प्रकरण रखा गया है। प्रकरणो के विषय यो हैं—क्रियाशक्ति स्कन्धरश्मि, कुण्डलिनी स्कन्धरश्मि, मातृका स्कन्धरश्मि, षडन्वयविवेक स्कन्धरश्मि, शम्भु०, पावक ध्यानयोग, परमशिव-महाविभूति विषयक, अन्तर्याग विशेषोपचार परामर्शन स्कन्धरश्मि इत्यादि। इस स्तुति में एक श्लोक यो है—

अक्रान्तं ब्रह्मतत्त्व निजहृदयदरीलीनमात्मप्रकाशं
व्यक्तीकर्तुं स्वनित्याक्षरविदितमहामातृकात्व प्रपन्नः।

त्व विद्याम्नायविद्यासुविदितमहिमानन्तशक्तिप्रकाशः
तत्तद्वर्णात्मभेदैरुपदिशसि पदं श्रीगुरोस्तत्स्वरूपम् ।।

दुर्वासा का एक और स्तोत्र है। उसका नाम त्रिपुरामहिम्नस्तोत्र है। उस पर नित्यानन्दनाथ की टीका है।

श्रीविद्यार्णव के अनुसार कादि अथवा मधुमतीमत के मुख्य ग्रन्थ चार है,[1] अर्थात् तन्त्रराज, मातृकार्णव, योगिनीहृदय और त्रिपुरार्णव।

१ तन्त्रराज की वहुत टीकाएँ हैं। उनमे सुभगानन्दनाथ कृत मनोरमा प्रधान है। टीकाकार का नामान्तर है प्रपञ्चसारसिंहराजप्रकाश। उनका वास्तविक नाम श्रीकण्ठेश था। वे कश्मीर के एक राजकर्मचारी थे। १६६० वि० या १६०४ ई० मे उन्होने इस ग्रन्थ की टीका की। वे सेतुबन्ध तीर्थ यात्रा करने दक्षिण देश मे गये थे। इस प्रसङ्ग मे दक्षिण के किसी एक मण्डल के राजा नृसिंहराज से उनका परिचय हो गया था। नृसिहराज के आश्रय मे उन्ही के आदेश से उन्होने २२ प्रकाश पर्यन्त तन्त्रराज की यह टीका रची थी। शेष अश की टीका की पूर्ति उनके शिष्य प्रकाशानन्द ने की।

प्रेमनिधि पन्त कृत सुदर्शन नाम की टीका भी तन्त्रराज पर है। प्रसिद्धि है कि प्रेमनिधि ने अपने मृत पुत्र सुदर्शन की स्मृतिरक्षा के हेतु सुदर्शन नाम की टीका रची थी। परन्तु टीका देखने से पता चलता है कि इस टीका की रचयित्री प्रेमनिधि पन्त की तृतीया पत्नी प्राणमञ्जरी है। किसी-किसी ग्रन्थ की पुष्पिका से पता चलता है कि प्रेम-

१ मतान्तर में चार के स्थान पर नौ ग्रन्थ माने जाते हैं। यह मत तन्त्रराज की टीका मनोरमा का है। ये नौ ग्रन्थ यो हैं——चन्द्रज्ञान, सुन्दरीहृदय, नित्याषोडशिकार्णव, मातृकाहृदय, समोहन, वामकेश्वर, बहुरूपाष्टक, प्रस्ताव-चिन्तामणि और मेरुप्रस्तार। परन्तु यह अमूलक है, क्योकि सुन्दरीहृदय, योगिनीहृदय, नित्याषोडशिकार्णव या वामकेश्वर वस्तुतः पृथक् ग्रन्थ नहीं है। अशाशी के रूप में एक ही ग्रन्थ है। वहुरूपाष्टक किसी एक ग्रन्थ का नाम नहीं है। यह आठ ग्रन्थो की समष्टि का नाम है। ६४ तन्त्रो का उल्लेख सुन्दरीलहरी में जहाँ किया गया है वहाँ सभी टीकाकारो ने इस विषय को स्पष्ट कर दिया है। विशेषत. लक्ष्मीधर की टीका इसके लिए देखनी चाहिए। भास्करराय ने सेतुवन्ध में (६१ पृ०) कहा है——तन्त्रराज में जो नित्याहृदय की वात कही गयी है वह योगिनीहृदय का ही नामान्तर है, जो कि वामकेश्वरतन्त्र का उत्तरार्द्ध रूप है——"नित्याहृदयमित्येतत् तत्र उत्तरार्द्ध. सयोगिनीहृदय ससग"।

निधि ने ही स्वय इसकी रचना की थी। यह १८वीं शताब्दी का ग्रन्थ है। क्योंकि ग्रन्थकार का दूसरा ग्रन्थ शिवताण्डव-व्याख्यान मल्लादर्श १६४८ शकाब्द या १७२६ ई० में लिखा गया था। भास्करराय रचित भी एक टीका तन्त्रराज पर थी ऐसा भास्करराय के वरिवस्या-रहस्य आदि ग्रन्थो से ज्ञात होता है। तन्त्रराजोत्तर नाम मे इसका एक परिशिष्ट ग्रन्थ भी प्राचीन समय मे प्रसिद्ध था। ताराभक्तिसुधार्णव मे उसका उल्लेख है।

२ योगिनीहृदय तान्त्रिक रहस्य ग्रन्थों मे एक प्रधान ग्रन्थ है। यह पाँच अध्यायों मे पूर्ण है। यह वामकेश्वर तन्त्र का चतु शती रूप एक अश है। भास्करराय ने अपने भावनोपनिषद्-भाष्य मे (पृ० १२३) तथा तन्त्रराज के टीकाकारो ने भी इसे कादि के अन्तर्गत माना है। परन्तु वरिवस्यारहस्य मे (पृ० ६८) भास्करराय ने कहा है कि इसकी हादिमतानुकूल टीका भी है। योगिनीहृदय के सुन्दरी-हृदय, नित्याहृदय इत्यादि नामान्तर हैं।

परमानन्द तन्त्र अथवा परानन्द तन्त्र किसी-किसी के मतानुसार श्रीविद्योपासना के लिए एक विशिष्ट ग्रन्थ है। उस पर सौभाग्यानन्द-सन्दोह नाम की एक टीका थी, जिसका उल्लेख रामेश्वर कृत परशुरामकल्पसूत्रवृत्ति में (पृ० १३३) मिलता है। इस पर और भी टीकाएँ थी (द्रष्टव्य स० वि० २३९२०)।

परमानन्द तन्त्र के अनुसार निर्मित प्रधान और प्रसिद्ध ग्रन्थ सौभाग्यकल्पद्रुम है, जिसके रचयिता का नाम है माधवानन्दनाथ, जो यादवानन्दनाथके शिष्य थे। यह महाग्रन्थ विभिन्न खण्डो मे विभक्त था और काशी मे ही रचा गया था। इसका रचना-काल कल्यब्द ४९२३ है। ग्रन्थकार सेतुबन्ध रामेश्वर के निवासी थे। क्षेमानन्द कृत सौभाग्यकल्पलतिका, ज्ञात होता है, इसी कल्पद्रुम के आधार पर रची गयी थी।[1]

श्रीविद्या की उपासना के विषय मे अन्यान्य और ग्रन्थो के नाम नीचे दिये जा रहे हैं—

१ वामकेश्वरतन्त्र, इसका पूर्वभाग पूर्वचतु शती और उत्तर भाग उत्तरचतु शती कहलाता है। इसमे षोडशनित्याओं का वर्णन है। इस पर भास्करराय की सेतुबन्ध नाम की टीका है। प्राचीन ग्रन्थो की समालोचना से ज्ञात होता है कि वामकेश्वर-विवरण नाम से प्रसिद्ध जयरथ की भी एक टीका है। २ ज्ञानार्णव (२६ पटल), यह ग्रन्थ प्रकाशित हो

१ सौभाग्यकल्पलतिका में शिवानन्दयोगीन्द्र, त्रिपुरार्णव, ज्ञानार्णव प्रभृति नामो का उल्लेख दिखाई देता है।

गया है। ३, ४ श्रीक्रमसहिता और बृहत्-श्रीक्रमसहिता, ५ दक्षिणामूर्तिसहिता (६६ पटलो मे पूर्ण), ६ स्वच्छन्दतन्त्र—स्वच्छन्दसग्रह यह कश्मीर सस्कृत सीरीज मे प्रकाशित हो गया है। ७ कालोत्तरवासना, सौभाग्य-कल्पद्रुम मे इसका उल्लेख है। ८ श्रीपराक्रम, योगिनीहृदयदीपिका मे इसका उल्लेख है। ९ ललितार्चनचन्द्रिका (१७ अध्याय) सच्चिदानन्दनाथ कृत। १० सौभाग्यतन्त्रोत्तर, सौभाग्यकल्पद्रुम मे इसका उल्लेख है। ११ सौभाग्यरत्नाकर सच्चिदानन्दनाथ-शिष्य विद्यानन्दनाथ कृत, इसका भास्करराय कृत सौभाग्यभास्कर मे उल्लेख है। १२ सौभाग्यसुभगोदय अमृतानन्दनाथ कृत, इसका योगिनीहृदयदीपिका मे उल्लेख है। १३ शक्तिसगमतन्त्र—सुन्दरी खण्ड, १४ त्रिपुरारहस्य—ज्ञानखण्ड तथा माहात्म्यखण्ड—दोनो काशी से प्रकाशित है। इसका चर्याखण्ड भी है, परन्तु वह उपलब्ध नही है। १५ श्रीक्रमोत्तम, निज-प्रकाशानन्दनाथ मल्लिकार्जुन योगीन्द्र कृत। ग्रन्थकार की गुरु-परम्परा इस प्रकार है—प्रकाशानन्द, माधवेन्द्र सरस्वती तथा नृसिह। काशी मे स्वर्गीय अम्बिकादत्त व्यास जी के ग्रन्थागार मे मैंने इसकी एक प्रति देखी थी, जिसकी पृष्ठ सख्या ९७ तथा लिपिकाल १७३७ वि० अथवा १६८० ई० था। १६ सुभगार्चापारिजात, १७ सुभगार्चारत्न, १८ आज्ञावतार, १९ सकेतपादुका, २० चन्द्रपीठ, २१ सुन्दरीमहोदय शकरानन्द विरचित। ये ग्रन्थकार रामानन्दनाथ के शिष्य थे। (द्रष्टव्य नित्योत्सवनिबन्ध तथा काशीनाथ भट्ट कृत मन्त्रराजसमुच्चय)। ये शकरानन्द पूर्वाश्रम मे कविमण्डन शम्भु-भट्ट के नाम से प्रसिद्ध थे और सुप्रसिद्ध विद्वान् भाट्टदीपिका आदि ग्रन्थो के रचयिता उभय-मीमासानिष्णात खण्डदेव के शिष्य थे। इन्होने पूर्वाश्रम मे भाट्टदीपिका पर प्रभावली नाम की टीका लिखी थी। यह टीका १७६४ वि०या १७०७ ई० मे काशी में ही रची गयी थी। शम्भुभट्ट विशिष्ट धर्माचार्य भी रहे। रघुनाथ भट्ट के कालतत्त्व विवेचन पर उनकी सारसग्रह नाम की टीका प्रसिद्ध है। उनके सन्यास-गुरु परमहस परिव्राजकाचार्य रामानन्द सरस्वती दशनामी सन्यासी थे। सुन्दरीहृदय के अन्त मे शकरानन्द ने लिखा है—

> शङ्करानन्दनाथेन कविमण्डनशम्भुना ।
> कृतं ग्रन्थं गुरुप्रीत्यै भजन्तु समुपासका ॥

इससे स्पष्टतया प्रतीत होता है कि कविमण्डन शम्भुभट्ट का ही सन्यासाश्रम का नाम शकरानन्द है। प्रभावली मे भी उन्होने "सर्वाभीष्टपद नौमि श्रीरूप सुन्दर मह ।"

कह कर मङ्गलाचरण किया है। वे त्रिपुरा के उपासक थे इसमे कुछ भी सन्देह नही है। अपने पिता बालकृष्ण के विषय मे उन्होने कहा है—"वे वेद शास्त्रार्णव-पारदृश्वा थे, यज्ञादि कर्म कराने में अतिदक्ष तथा सदाशिव के अर्चन से शुद्धचित्त थे।" २२ हृदयामृत उमानन्द कृत। इसका रचनाकाल १७४२ ई० है। २३ नित्योत्सवनिबन्ध, यह भी उमानन्द कृत है और प्रकाशित भी हो चुका है। उमानन्द भास्करराय के शिष्य थे। निबन्ध अर्थात् नित्योत्सवनिबन्ध का रचनाकाल है ४८४६ कल्यब्द "रसार्णवकरिवेद" अर्थात् १७४५ ई०। उमानन्द का पूर्वाश्रम का नाम जगन्नाथ था। ये महाराष्ट्र ब्राह्मण थे। भोसलवंशीय राजा के सभासद थे। इनके पिता का नाम बालकृष्ण और माता का नाम लक्ष्म्यम्बा था। २४ लक्ष्मीतन्त्र इसमे सक्षेप मे त्रिपुरामाहात्म्य का वर्णन है। २५ ललितोपाख्यान, यह ब्रह्माण्डपुराण के उत्तरखण्ड से गृहीत है। सौभाग्यभास्कर में भी इसका उल्लेख है। यह ४० अध्यायो मे पूर्ण है। इसका निर्णयसागर प्रेस, बम्बई से प्रकाशन हो चुका है। इसमें सक्षेपत ललितामाहात्म्य का वर्णन है। २६ त्रिपुरासार-समुच्चय लालभट्ट कृत। इस पर सम्प्रदायदीपिका नाम की एक टीका है। २७ श्री-तत्त्वचिन्तामणि पूर्णानन्दपरमहस कृत। इसका रचना-काल १४९९ शकाब्द अथवा १५७७ ई० है। ये पूर्णानन्द स्वामी ब्रह्मानन्द के शिष्य थे। २८ शाक्तक्रम यह भी पूर्णानन्दपरमहस कृत है। २९ विरूपाक्षपञ्चाशिका, ३० कामकलाविलास पुण्यानन्द कृत। ये ग्रन्थकार हादिमत के उपासक थे (द्रष्टव्य एभेलेन की भूमिका)। इस पर चिद्वल्ली नाम की एक टीका है, जिसके रचयिता नटनानन्द हैं। यह विभिन्न स्थानो से प्रकाशित हो चुकी है। ३१ सौभाग्यचन्द्रोदय, ३२ वरिवस्यारहस्य, ३३. वरिवस्या-प्रकाश ३४ शाम्भवानन्दकल्पलता—ये चारो ग्रन्थ भास्करराय विरचित हैं। ३५ त्रिपुरासार, सर्वोल्लास तन्त्र मे इसका उल्लेख है। ३६ सकेतपद्धति, सौभाग्यभास्कर मे इसका उल्लेख है। ३७ सौभाग्यसुबोदय, इसका भी सौभाग्यभास्कर मे उल्लेख है। ३८ परापूजाक्रम, श्रीक्रमोत्तम चिदम्बरनट तथा सौभाग्यकल्पद्रुम मे इसका उल्लेख है।

श्रीविद्याविषयक साहित्य जैसा व्यापक है वैसा ही प्राचीन भी है क्योंकि श्रीविद्या की उपासना भी अति प्राचीन काल से विभिन्न कोटि के साधको मे चली आ रही है। इतिहास से पता चलता है कि देवलोक मे भी विभिन्न देवगण इसके उपासक थे। सिद्धो मे भी विभिन्न ऋषि, मुनि आदि इसी के उपासक थे। मनुष्य कोटि मे भी बड़े-बड़े साधक प्राचीन काल मे ही इस विद्या की साधना मे निरत रहे हैं। देवताओ मे इन्द्रादि विभिन्न

देवताओ के नामो का श्रीविद्या के साधक के रूप मे उल्लेख मिलता है। ऋषियो मे दुर्वासा, अगस्त्य, विश्वामित्र आदि ऋषियो के नाम श्रीविद्योपासक रूप से प्रसिद्ध हैं। मनुष्यो मे, वर्तमान युग मे, शकराचार्य के परम गुरु गौडपादाचार्य का नाम विशेषरूप से उल्लेख योग्य है। आचार्य गौडपाद ने इस विषय मे सुभगोदयस्तुति के नाम से ५२ श्लोको के एक स्तोत्र का निर्माण किया था, जिस पर श्री शकराचार्य की व्याख्या थी, ऐसी प्रसिद्धि है। आचार्य लक्ष्मीधर (सौन्दर्यलहरी के व्याख्याकार) ने भी इस पर एक टीका रची थी, ऐसा उन्होने स्वय उल्लेख किया है। आचार्य श्री गौडपाद का इस विषय का दूसरा ग्रन्थ श्रीविद्यारत्नसूत्र है। यह ग्रन्थ सूत्रात्मक है। इस पर श्रीशकरारण्य की एक व्याख्या भी है। दोनो काशी सरस्वतीभवन-ग्रन्थमाला से प्रकाशित हैं। श्री शकराचार्य त्रिशती-भाष्यकार के रूप से इस सम्प्रदाय मे प्रसिद्ध हैं। हस्तलिखित तान्त्रिक ग्रन्थो का अवलोकन करने पर यह प्रतीत होता है कि विभिन्न तान्त्रिक सम्प्रदाय अपनी-अपनी गुरु-परम्परा मे श्रीशकराचार्य का स्थान निर्देश करते हैं। इस प्रकार प्राचीन काल मे बडे-बडे आचार्य श्रीविद्या के उपासक थे और उन्होने इस विषय मे कुछ न कुछ लिखा भी था। इस सक्षिप्त भूमिका मे इस विषय की विस्तृत आलोचना अप्रासगिक होगी।

भुवनेश्वरी

भुवनेश्वरी की उपासना के विषय मे सर्वप्रधान ग्रन्थ है भुवनेश्वरीरहस्य (२६ पटल)। इसमे भुवनेश्वरी की अर्चन-पद्धति साङ्गोपाङ्ग वर्णित है। इसके निर्माता पृथ्वीधराचार्य थे। यह प्रसिद्धि है कि ये पृथ्वीधर गोविन्दभगवत्पाद-शिष्य भगवत्पाद श्रीशकराचार्य के साक्षात् शिष्य थे। इस ग्रन्थ की एक प्रति रायल एशियाटिक सोसाइटी बगाल के पुस्तकालय मे है। उक्त पुस्तक १६९४ मे लिखी गयी थी। उसमे पृथ्वीधर का शिष्यक्रम इस प्रकार प्रदर्शित है—ब्रह्मचैतन्य, शिवचैतन्य, आनन्दचैतन्य, देवचैतन्य, जनार्दनचैतन्य। ये शृङ्गेरी मठ से सम्बद्ध थे। यह परम्परा रायल एशियाटिक सोसाइटी, बगाल के पुस्तकालय मे न० ५८१ की बालार्चनविधि नामक पुस्तक मे है। इन्ही पृथ्वीधर द्वारा विरचित भुवनेश्वरीस्तोत्र जर्मनी मे है। (द्रष्टव्य वेबर १७७०,—लिपजिग १३७४ से १३७७ तक)। भुवनेश्वरी के विषय मे भुवनेश्वरी-तन्त्र तथा भुवनेश्वरी परिजात भी प्रामाणिक ग्रन्थ हैं।

भैरवी

भैरवी का रहस्य विशेष रूप से भैरवीतन्त्र से ज्ञात हो सकता है। भैरवीरहस्य तथा भैरवीसपर्याविधि भी प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इस विषय का सबसे विशिष्ट ग्रन्थ है भैरवी-यामल जिसके महत्त्व के सम्बन्ध में पुरश्चर्यार्णव आदि ग्रन्थों में उल्लेख है। भैरवी के प्रकार भेद बहुत हैं जैसे सिद्धिभैरवी, त्रिपुराभैरवी, चैतन्यभैरवी, भुवनेश्वरीभैरवी, कमलेश्वरीभैरवी, सम्पत्प्रदाभैरवी, कौलेशीभैरवी, कामेश्वरीभैरवी, षट्कूटाभैरवी, नित्याभैरवी, रुद्रभैरवी, भद्रभैरवी इत्यादि। सिद्धिभैरवी उत्तराम्नाय पीठ की देवी है त्रिपुराभैरवी ऊर्ध्वाम्नाय की देवी है, नित्याभैरवी पश्चिम सिंहासनारूढा है, जिसके उपासक स्वयं शिव हैं। भद्रभैरवी दक्षिण सिंहासन पर आरूढ है और विष्णु उसके उपासक है। त्रिपुराभैरवी चतुर्भुजा है। भैरवी का भैरव वटुक है। मुण्डमालातन्त्र के अनुसार भैरवी और नृसिंह अवतार अभिन्न हैं।

छिन्नमस्ता

छिन्नमस्ता के विषय में शक्तिसंगमतन्त्र का छिन्ना खण्ड देखना चाहिए।

धूमावती

धूमावती का भैरव काल भैरव है। देवियों में यह विधवा हैं। इसीलिए किसी किसी के मत में इनका भैरव नहीं है। यह अक्षय तृतीया के दिन प्रदोष काल में आविर्भूत हुई थी। धूमावती उत्तराम्नाय की देवी है और काकध्वज रथ में आरूढ है। यह वामना-वतार से अभिन्न हैं। इनके हाथ में सूप है और इनका चेहरा क्षुधा और पिपासा से कातर दिखाई देता हैं। शत्रु के मारण, मोहन और उच्चाटन के लिए धूमावती का उपयोग किया जाता है। प्राणतोषिणी तन्त्र में इनके आविर्भाव का वृत्तान्त वर्णित है।

वगला

वगला के विषय में मुख्य तन्त्र है शाङ्खायन तन्त्र (३० पटल), जो ईश्वर और क्रौञ्चभेदन का संवाद रूप है। काशी सरस्वतीभवन में इसकी एक सम्पूर्ण प्रति है। वगला त्रैलोक्यस्तम्भिनी विद्या है। पूर्वोत्तर शाङ्खायन तन्त्र 'षड्विद्यागम' नाम से प्रसिद्ध है। वगला के विषय में वगलाक्रमकल्पवल्ली नाम का एक अच्छा ग्रन्थ है। संमोहन तन्त्र में वगला के आविर्भाव का वर्णन है। सत्ययुग में जब चराचर के विनाश के लिए वातक्षोभ हुआ था तब विष्णु ने तपस्या से वगला को प्रसन्न किया। देवी प्रसन्न होकर सौराष्ट्र में प्रकट हुई थी।

मातङ्गी

मातङ्गी के नामान्तर सुमुखी अथवा उच्छिष्ट-चाण्डालिनी या महापिशाचिनी है। मातङ्गी के उपासको के लिए द्रष्टव्य ग्रन्थ ये है—कुलमणि गुप्त कृत मातङ्गी-क्रम, रामभट्ट कृत मातङ्गीपद्धति इत्यादि। ये शिवानन्द जगन्निवास गोस्वामी के पुत्र थे। यह पद्धति सिहसिद्धान्तविन्दु का एक अध्यायमात्र है। यह राजा देवसिह के राजत्वकाल मे लिखी गयी थी। ये देवसिह बुन्देलखण्ड के मधुकर शाह के प्रपौत्र थे। सुमुखीपूजापद्धति के नाम से प्रसिद्ध एक और ग्रन्थ है, जिसके रचयिता शकर (सुन्दरानन्द के शिष्य) थे। सुन्दरानन्द सुप्रसिद्ध विद्यारण्य स्वामी की अधस्तन शिष्य-परम्परा मे छठी पीढी मे थे। इसमे लिखा है कि गौडपाद के शिष्य गोविन्दपाद थे। उनके शिष्य आचार्य शकर थे। शकराचार्य के शिष्य विरूपाचार्य (विश्वरूपाचार्य) थे। विरूपाचार्य की शिष्य-परम्परा इस प्रकार है—शकर, बोधधन, ज्ञानधन, ज्ञानोत्तम, सिद्धगिरि, भारतीतीर्थ और विद्यारण्य। मातङ्गी के नाना भेद है। जैसे—उच्छिष्ट-मातङ्गी, राजमातङ्गी, सुमुखी, वश्यमातङ्गी, कर्णमातङ्गी इत्यादि। यह दक्षिण तथा पश्चिम आम्नाय की देवी है। ब्रह्मयामल मे लिखा है कि मतङ्ग मुनि की सुदीर्घ तपस्या से देवी ने प्रसन्न होकर उनकी कन्या के रूप मे जन्म लिया था।[1] मातङ्गी के भैरव का नाम है मतङ्ग अथवा सदाशिव।

कमला

दश महाविद्याओ मे दशमी महाविद्या कमला है। तन्त्रसार, शारदातिलक, शाक्त-प्रमोद आदि ग्रथो मे उनके स्वरूप का वर्णन इस प्रकार किया गया है—इनकी देहकान्ति सुवर्ण के तुल्य अति मनोहर है, शरीर पर सुन्दर रक्तवर्ण की कौशेय साडी शोभित है, सिर पर रत्नजटित किरीट, बाये दो हाथो मे दो मजुल कमल तथा दाहिने ऊर्ध्व हस्त मे अभय मुद्रा है। हिमाच्छन्न हिमगिरि शिखकार चार शुभ्र गज अपने शुण्डादण्डो से गृहीत सुवर्ण कलशो से इनका अभिषेक करते है। ये अरुण कमल पर आसीन है तथा मणिमाणिक्य के विविध प्रकार के आभरणो से विभूषित है।

१ तन्त्रवाङमय से यह पता चलता है कि कदम्बवन में मतङ्ग ऋषि तपस्या करते थे। वहाँ सुन्दरी अर्थात् त्रिपुरसुन्दरी के नेत्र से एक तेज निकला। काली ने उसी तेज से श्यामल रूप धारण किया और राजमातङ्गिनी के नाम से प्रसिद्ध हुई।

(द्रष्टव्य समोहन तन्त्र)

तान्त्रिक सम्प्रदाय-भेद

तान्त्रिक सम्प्रदाय शब्द से हम लोग प्रधानतः शाक्त सम्प्रदाय ही समझते हैं। किन्तु शिव और शक्ति मे घनिष्ठ सम्बन्ध रहने के कारण शैव सम्प्रदाय भी प्राचीन काल से ही तन्त्र-सम्प्रदाय के रूप में परिगणित होता आया है। काल-क्रम से तान्त्रिक सम्प्रदाय के साधन तथा सिद्धान्त गत कुछ वैशिष्ट्य वैष्णवादि-सम्प्रदायो मे भी लक्षित होने लगे। इसलिए पञ्चरात्र तथा सात्वत सम्प्रदाय भी तान्त्रिक नाम से परिचित हुए। इसीलिए आचार्य यामुन मुनि ने 'आगमप्रामाण्य" ग्रन्थ लिख कर आगमो मे वैदिकत्व प्रदर्शन करने का प्रयत्न किया, क्योकि यदि वे आगम न मानते तो आगम के वैदिकत्व प्रदर्शन का प्रयोजन ही क्या था। परन्तु इस ग्रन्थ मे हमने वैष्णव तन्त्र-साहित्य को साधारणतः अपनी आलोचना का विषय नही माना है।

लक्ष्मीधर ने सनत्कुमारसंहिता से वचन उद्धृत कर यह दिखाने की चेष्टा की थी कि मध्ययुग मे जिन विभिन्न तान्त्रिक सम्प्रदायो का प्रसार रहा, उनमे से एकमात्र समयाचारनिष्ठ शुभागमतत्त्ववेदी ब्रह्मवादी गण ही वैदिक थे। वे लोग भगवती की आभ्यन्तरिक पूजा करते थे। इस प्रसग मे पाँच शुभागमो के नाम भी प्रसिद्ध हैं। कुछ लोग समझते है कि ये ग्रन्थ पृथक्-पृथक् ग्रन्थ नही हैं किन्तु वेद का गुह्य अर्थ प्रकाशन करने वाले केवल व्याख्यानमात्र (टीकामात्र) है। ये सब वेदभाष्य सायणाचार्य से बहुत पहले प्रसिद्ध थे। सायण ने अपने वेद-भाष्य मे विभिन्न स्थलो पर उनका नाम-निर्देश पूर्वक उनके वचनों को उद्धृत किया है। सुना जाता है कि पण्डित अनन्तकृष्ण शास्त्री ने तैत्तिरीय आरण्यक पर वसिष्ठ कृत टीका की पुस्तक देखी थी।

समयाचार के अतिरिक्त विभिन्न आचार वाले सम्प्रदाय प्रायः सभी अवैदिक थे, ऐसा किसी-किसी का मत है। सनत्कुमारसंहिता मे इस प्रसङ्ग मे निम्नोक्त सम्प्रदायो के नाम उल्लिखित हुए हैं—(१) कौल, लक्ष्मीधर के अनुसार ये लोग आधार चक्र मे पूजन करते हैं। (२) क्षपणक प्रसिद्धि है कि ये लोग प्रत्यक्ष त्रिकोण मे पूजन करते हैं। यह सम्प्रदाय दिगम्बर सम्प्रदाय की एक शाखा है। चतुःशती के मतानुसार जो चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों की सूची दी गयी है उसमे 'पूर्व' से लेकर 'देवीमत' पर्यन्त जो तन्त्र-साहित्य प्रदर्शित है, वह इसी सम्प्रदाय से सम्बद्ध है। अर्थात् पूर्व, पश्चिम, दक्ष, उत्तर, निरुत्तर,

विमल, विमलोत्थ और देवीमत इसके अन्तर्गत है। (३) कापालिक, ये लोग प्रत्यक्ष त्रिकोण तथा आधार चक्र—दोनो का पूजन करते है। (४) दिगम्बर, ये भी कापालिको के तुल्य प्रत्यक्ष त्रिकोण तथा आधार चक्र का पूजन करते है। यह सम्प्रदाय कापालिक सम्प्रदाय का ही एक देश है। इन लोगो के सिद्धान्त का प्रतिपादक साहित्य ६४ तन्त्रो की पूर्वोक्त सूची के अन्तर्गत सर्वज्ञानोत्तर, महाकालीमत, अरुणेश, मोदिनीश और विकण्ठेश्वर तन्त्र हैं। (५) इतिहासक, ये लोग भैरवयामल के अनुसार उपासना करते है। (६) वामक, इस सम्प्रदाय के लोग वामकेश्वर तन्त्र का अनुसरण करने वाले है। लक्ष्मीधर के अनुसार ये सभी चक्रपूजक है और वाह्य पूजा मे अनुरक्त अवैदिक साधक है।

लक्ष्मीधर कहते है (सौन्दर्यलहरी की टीका श्लोक ३१) कि समयमार्ग वैदिक मत है। इसका प्रतिपादन पूर्व उल्लिखित 'शुभागमपञ्चक' मे है। इस पञ्चक मे वसिष्ठ-सहिता, सनकसहिता, शुकसहिता, सनन्दनसहिता और सनत्कुमारसहिता—ये पाँच सहि-ताएँ है। इन पर अवलम्बित जो आचार है वह समयाचार कहलाता है। जिन चतु-षष्टि (६४) तन्त्रो का उल्लेख सौन्दर्यलहरी मे है, वे इनसे भिन्न हैं। वे अवैदिक है, क्योकि वे कौल, कापालिक तथा वाममार्ग के हैं। चन्द्रकलाष्टक नाम से ख्यात जो आठ तन्त्र-ग्रन्थ है, उनमे भी श्रीविद्या का प्रतिपादन है। ये आठ विद्याएँ 'चन्द्रकला' नाम से प्रसिद्ध है। ज्योत्स्नावती, कुलार्णव, कुलेश्वरी, भुवनेश्वरी, बार्हस्पत्य और दुर्वासा भी इनके अन्तर्गत हैं। इन तन्त्रो मे त्रिवर्ण का भी अधिकार है और शूद्र का भी अधिकार है। परन्तु त्रिवर्ण का अधिकार है दक्षिण मार्ग मे और शूद्र का अधिकार है वाम मार्ग में। ६४ तन्त्रो मे केवल शूद्रादि का अर्थात् शूद्र और मूर्धाभिषिक्तादि अनुलोम और प्रतिलोम जातियो का अधिकार है, अतएव सिद्धान्त यह है कि चतुषष्टि (६४) तन्त्र कौलमार्गीय तथा अवैदिक है।

और भी एक वात ज्ञातव्य है। वह यह कि चतुषष्टि तन्त्रो में भी चन्द्रज्ञान नामक एक तन्त्र है, जिसमे षोडश नित्याओ का प्रतिपादन है, फिर भी वह कापालिक मत ही है, इसलिए हेय हे। चन्द्रकलाविद्याष्टक मे भी श्रीविद्या का प्रतिपादन है और शुभागमपञ्चक मे भी है। अर्थात् कौल, मिश्र तथा वैदिक तीनो मार्गों में श्रीविद्या की उपासना प्रचलित है। परन्तु उनमे भेद है। समयमत में षोडश नित्याएँ मूल विद्या के अन्तर्गत रूप में अर्थात् अङ्गरूप मे मानी जाती हैं, परन्तु चन्द्रज्ञान-विद्या में जो षोडश नित्याओ की चर्चा है वह प्रधान रूप मे है, किसी के अङ्गरूप में नही है।

वैदिक मत मे षोडश नित्याएँ श्रीचक्र मे अङ्ग रूप से अन्तर्भूत है। ये सब नित्याएँ अष्टवर्णात्मक है। इसीलिए अष्टदल कमल के अष्ट पत्रो में स्थित है और क्रम से अष्ट-कोण चक्र मे पूर्व कोण से लेकर एक-एक कोण मे दो-दो कर के अन्तर्भूत है, उनमे सोलह नित्याएँ है। षोडश नित्याएँ षोडश दलो मे तथा षोडश स्वर दो दशारो मे अन्तर्भूत है। सोलहो के भीतर पहली दो नित्याएँ त्रिकोण मे भी विन्दुरूप मे स्थित है, शेष चौदह नित्याए चौदह कोणो मे अन्तर्भूत है। मेखलात्रय और भूपुरत्रय वैन्दव और त्रिकोण में अन्तर्भूत है। इस अन्तर्भाव का नामान्तर है मेरुप्रस्तार। अतएव चन्द्रकलाविद्या चक्रविद्या की अङ्गभूत है।

सनन्दनसहिता मे कहा गया है कि ये षोडश नित्याएँ चन्द्रकला चक्रविद्या की अङ्ग-रूप है। ये षोडश नित्याएँ स्वरात्मक पञ्चदशाक्षरी मन्त्रगत एकारादिभूत अकार और विसर्गात्मक सकार के द्वारा सगृहीत होकर जीवकला के रूप में वैन्दवस्थान मे स्थित है और उसी के अन्तर्गत है। क से म पर्यन्त वर्ण पाशाङ्कुश वीज होकर अष्टार मे और दो दश कोणो मे अन्तर्भूत है, शेष सब वर्ण अर्थात् य से लेकर नौ वर्ण दो वार आवर्तित होकर चतुर्दशार के कोणो मे अन्तर्भूत है। शेष चार वर्ण चार शिवचक्रो मे अन्तर्भूत है। इस अन्तर्भाव का नाम है—कैलासप्रस्तार। इससे प्रतीत होता है कि सब नित्याएँ चक्रविद्या में अन्तर्भूत है अर्थात् अङ्गरूप है।

सनत्कुमारसहिता मे भी यह दिखलाया गया है कि षोडश नित्याएँ चक्रविद्या मे अङ्ग-भूत है। श्रीचक्र की अङ्गभूता नित्याएँ वशिन्यादि के साथ दो-दो मिल कर वैन्दव और त्रिकोण को छोड कर अष्टकोणो मे अन्तर्भूत है। मध्य मे त्रिपुरसुन्दरी विराजमान है। वशिन्यादि आठ है, नित्याएँ सोलह है, योगिनियाँ वारह है और गन्धाकर्षिणी आदि चार है। यहाँ एकमात्र शक्ति को छोड कर ४३ कोणो में ४३ देवताओं का अन्तर्भाव है, एक त्रिपुरसुन्दरी विन्दु स्थान के नीचे और गन्धाकर्षिणी आदि चार द्वारो मे स्थित है। इस प्रकार ज्ञात होता है कि नित्याएँ अङ्गरूपा है। इस प्रकार के अन्तर्भाव का नाम भू-प्रस्तार है।

वशिन्यादि आठ, योगिनियाँ वारह और गन्धाकर्षिणी आदि चार के नाम लक्ष्मीधर ने सौन्दर्यलहरी के १७ वें श्लोक की टीका मे दिये हैं।

चक्रलेखन मे जो तीन प्रस्तार हैं वे ही मेरुप्रस्तार आदि नामो से प्रसिद्ध है। उनमे मेरुप्रस्तार षोडश नित्याओ का तादात्म्य है, कैलासप्रस्तार मातृका-तादात्म्य

है और भू-प्रस्तार वशिन्यादि का तादात्म्य है। (द्रष्टव्य सौन्दर्यलहरी-टीका लक्ष्मीधरी श्लोक ११)।

अव तक जो कुछ कहा गया है, इससे कौलमत का किञ्चित् आभास अवगत होगा। परन्तु तान्त्रिक साहित्य का अवलोकन करने पर इस मत के विषय मे कही-कही विस्तृत विवरण भी मिलता है। तदनुसार ज्ञात होता है कि कौल मत पूर्व तथा उत्तर भेद से दो प्रकार का है। पूर्व कौल के मतानुसार भगवती परा सवित् आनन्दभैरवी के नाम से परिचित है। वह भगवान् या शिव अर्थात् आनन्दभैरव की शरीररूपा है। सूर्य और चन्द्र उसके दो स्तन हैं और आत्मा है नवात्मक शम्भु। शम्भु शब्द से यहाँ आनन्दभैरव समझने चाहिए, जिनके स्वरूप मे नव व्यूह एकीभूत होकर विद्यमान हैं। भैरव और भैरवी मे शेष-शेषिभाव है, अर्थात् भैरव है शेपी और भैरवी या शक्ति है शेष, अथवा भैरवी है शेपी और भैरव है शेष। यह समरस परानन्द है। यह शेषशेषि-भाव विशेप विचार से ग्रहण करने योग्य तत्त्व है। नव व्यूह ये हैं—(१) कालव्यूह—निमेषादि कल्पान्त से अवच्छिन्न काल है। सूर्य और चन्द्र कालावच्छेदक होने के कारण उसके अन्तर्गत हैं। (२) कुलव्यूह—अर्थात् नीलादि रूपव्यूह। (३) नामव्यूह—अर्थात् सञ्ज्ञास्कन्ध। (४) ज्ञानव्यूह—विज्ञानस्कन्ध, इसका नामान्तर है भागव्यूह, सभाग यानी सविकल्प और विभाग यानी निर्विकल्प। (५) चित्तव्यूह—अहङ्कार, चित्त, वुद्धि, महत् और मन ये पञ्च स्कन्धो के नामान्तर हैं। (६) नादव्यूह—राग, इच्छा, कृति और प्रयत्न-स्कन्ध। यह कहना अनुचित न होगा कि मातृका के चार रूप नादव्यूह के अन्तर्गत हैं। परा इत्यादि इसके अन्तर्गत है। परा अन्तकरण मे जो ऊह या तर्क सहित स्फुरित होती है। योगियो को केवल युक्तावस्था मे इसका परिचय प्राप्त होता है। कामकला विद्या मे इसे ही परा माहेश्वरी कहा गया है। यह परा वाक् जब अपेक्षाकृत स्पष्ट रूप मे प्रतिभासमान होती है तव उसका नाम होता है पश्यन्ती। तव यह त्रिमातृकात्मक होकर चक्ररूप धारण करती है—"स्पष्टा पश्यन्त्यादिमातृकात्मा चक्रता याता।" त्रिमातृका शब्द का अर्थ है त्रिखण्डयुक्ता पञ्चदशाक्षरी मातृका। यही चक्ररूप में परिणत होती है। इस पश्यन्ती वाक् का युक्तावस्था मे अतिसूक्ष्म रूप मे अनुभव किया जाता है। परा और पश्यन्ती इन दो वाको से मध्यमा वाक् का उदय होता है। इसके स्थूल और सूक्ष्म दो भेद हैं। वामा, ज्येष्ठा, रौद्री और अम्बिका इन चार शक्तियो की जो समष्टि अवस्था है वही सूक्ष्म मध्यमा है, इनकी जो व्यष्टि अवस्था है, वही स्थूल मध्यमा है। वामादि चार शक्तियाँ ही

श्रीचक्र के अन्तर्गत ऊर्ध्वमुख योनिस्वरूप है। इन नवव्यूहात्मक शक्तियो के कारण भगवती को नवात्मक कहते है। इसका प्रकार इस भाँति प्रदर्शित हो सकता है—
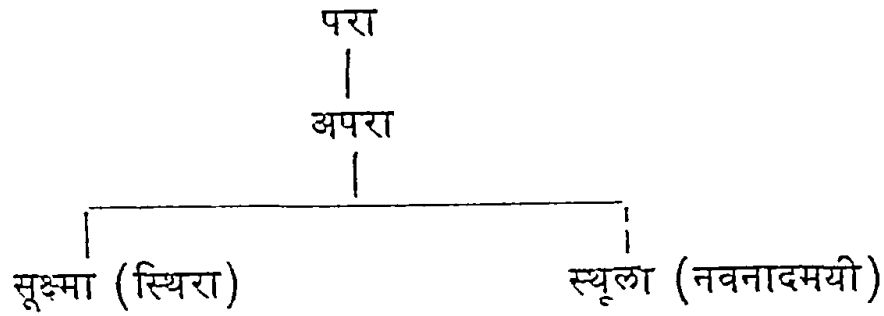
(७) विन्दुव्यूह—यह षट्चक्रसघ का ही नामान्तर है।

(८) कलाव्यूह—यह वर्णात्मक पचास कलाओ का समूह है।

(९) जीवव्यूह—यह भोक्तृवर्ग का नामान्तर है।

ये नौ व्यूह भोक्ता, भोग और भोग्य रूप से तीन प्रकार के है। भोक्ता है आत्मव्यूह, भोग ज्ञानव्यूह है एव भोग्य है कालव्यूहादि-समुदाय। सभी व्यूह जीवव्यूह के सर्वत्र अन्वय युक्त है। इसलिए सर्वत्र ऐक्य है। कालव्यूह अवच्छेद है, इससे वहाँ भी ऐक्य है। नाद और कला एक होने से परमेश्वर के नवव्यूह रूप है इसलिए भैरव और भैरवी के मध्य नौ प्रकार का ऐक्य माना गया है। यही कौल मत है। इसलिए कौल मत मे परमेश्वर नवात्मक है। कौलगण कहते है—

> नवव्यूहात्मको देवः परानन्दपरात्मक. ।
> नवात्मा भैरवो देवो भुक्तिमुक्तिप्रदायकः॥
> परानन्दपराशक्तिश्चिद्रूपानन्दभैरवी ।
> तयोर्यदा सामरस्य सृष्टिरुपत्पद्यते तदा॥

आनन्दभैरव और पराभैरव का तादात्म्य है। दोनो ही समरूप से नवात्मक है। ऐसी स्थिति मे शेपशेपिभाव की जो वात कही गयी है वह आपेक्षिक है। जब सृष्टि आदि में दोनो का प्रयत्न उत्पन्न होता है तब भैरवी की प्रधानता के कारण महाभैरवी, प्रधान, प्रकृति आदि शब्दो से अभिहित होती है। उनकी यह प्रधानता ही शेपित्व है। 'आनन्दभैरव तब अप्रधान, गौण, शेप हो जाते है। सबके उपसहार काल मे प्रकृति तन्मात्र मे अवस्थित होती है एव भैरवी स्वात्मा मे अन्तर्भूत होती है। तब भैरव शेपी और भैरवी शेप होती है। महाप्रकाल मे कार्य-कारण के उपसहार के बाद स्वय कारण रूप मे स्थिति होती है। पूर्व कौल मत का यही साराश है।

उत्तर कौल कहते हैं कि प्रधान ही जगत् का कर्ता है। प्रधान होने के कारण उस का शेषभाव नही होता, क्योंकि इस दृष्टि मे शिव नही है, वे पचतत्त्व के रूप में परिणत हो गये रहते हैं। मनस्तत्त्वादि के रूप मे प्रधानात्मिका शक्ति का ही परिणाम होता है। तत्त्ववर्ग स्वरूप-परिणाम है। शक्ति जब कार्यरूप समस्त प्रपच को अपने मे समेट कर कारण रूप मे अवस्थित होती है तव उसका नाम पडता है आधार कुण्डलिनी। यही सक्षेप मे पूर्व कौल मत से उत्तर कौल मत की विलक्षणता है।

समयियो का षट्चक्रपूजन नियत नही है। परन्तु सहस्रदल कमल मे पूजन नियत है। सहस्रदल कमल बैन्दव स्थान होने के कारण उसके मध्यवर्ती चन्द्रमण्डल का चतुरस्ररूप मे अनुसन्धान करना पडता है। उसके मध्य मे स्थित विन्दु का पञ्चविंशतत्त्वातीत षड्विंशात्मक अर्थात् शिवशक्तिमिलनात्मक सादाख्यरूप मे अनुसन्धान करना पडता है। इसीलिए समयीमत मे वाह्य आराधना नही है। षोडश कमल में षोडश उपचार रूप पूजाङ्गकला तो दूर की वात है। इसीलिए आधार से लेकर छह चक्रो का तादात्म्य त्रिकोणादि छह चक्रो के साथ माना जाता है। विन्दुस्थान चतुरस्र का तादात्म्य सहस्रदल कमल रूप मे है। विन्दु और शिव का तादात्म्य भी है। इसी प्रकार शिव और देह का तादात्म्य है। कुल तीन प्रकार के तादात्म्य हैं। चक्र और मन्त्र का ऐक्य है। इस प्रकार चार प्रकार के ऐक्य है उनका अनुसन्धान करना चाहिए। यही समयाराधन है। किसी-किसी के मत के अनुसार ऐक्य छह प्रकार के हैं। भगवत्तत्त्व नाद, विन्दु और कला से अतीत है, यह आगमरहस्य है। नाद से परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी का वोध होता है, जिनमे परा है त्रिकोण, पश्यन्ती है अष्टकोण चक्र, मध्यमा है दो दशार और वैखरी है चतुर्दशार। सव शिवचक्र इन्ही के अन्तर्गत हैं। चतुश्चक्रात्मक श्रीचक्र ही नाद है; विन्दु है मूलाधारादि छह चक्र तथा कलाए है ५० या ३६०। भगवती इन नाद, विन्दु और कलाओ से अतीत है। सहस्रदल कमल विन्दु से अतीत बैन्दव स्थान अथवा सुधासिन्धु या सरघा है। नादातीत तत्त्व है विन्दु के अन्त स्थित सुन्दरी (तुलनीय–दर्शा, दृष्टा, दर्शता इत्यादि) ५० वर्णात्मक ३६० सख्यक महाकाल रूप पञ्चदश कलातीत सादाख्य श्रीविद्या चित्कला ब्रह्मविद्या अथवा भगवती है। इसीलिए भगवत्तत्त्व नादविन्दुकलातीत है। इन नाद, विन्दु और कलाओ का परस्पर ऐक्यानुसन्धान छह प्रकार से होता है। ये छह प्रकार ऐक्यानुसन्धान द्वारा पूजन करने पर सादाख्य मे विलीन हो जाते हैं। तदनन्तर इन छह प्रकारो के ऐक्यानुसन्धान के प्रभाव से भगवती परा सवित् अकस्मात् मूलाधार और स्वाधिष्ठान चक्रो का भेदन कर मणिपूर मे प्रकट होती है।

अभ्यास के समय गुरुमुख से महाविद्या का ग्रहण कर ऋषि, देवता, छन्द आदि का स्मरण करते हुए गुरु द्वारा उपदिष्ट मार्ग से गुरूपदिष्ट मूल मन्त्र का शुष्क जप किया जाता है। तदुपरान्त आश्विन मास की शुक्ला महानवमी मे अर्थात् अष्टमी के निशीथ काल मे गुरु के चरणो का उपसग्रहण करना चाहिए। तब गुरु-हस्त तथा अपने मस्तक का सयोग होता है अर्थात् गुरु शिष्य के मस्तक पर हस्तन्यास करते है, फिर मन्त्र का उपदेश होता है, तब पट्चक्रो के पूजन प्रकार के उपदेश तथा छह प्रकार के ऐक्यानुसन्धान के उपदेश के प्रभाव से शैव महावेध होता है अर्थात् सादाख्य का प्रकाश होता है।

महावेध हो जाने के अनन्तर भगवती परासवित् मणिपूर मे प्रत्यक्ष होती है। तदनन्तर उनकी आराधना की जाती है। इस आराधना मे अर्घ्य, पाद्य आदि और भूषण-परिधान आदि पूजाङ्ग सब विद्यमान रहते है। इसके अनन्तर अनाहत मन्दिर मे अर्थात् हृदयमन्दिर में भगवती को धारण कर धूपदान से लेकर नैवेद्यादिदान तथा हस्तप्रक्षालनादि सम्पूर्ण कर्म करने चाहिए। तदुपरान्त विशुद्ध चक्र मे भगवती को सिंहासन पर बैठाकर सखियो के साथ सलापादि कराने के समय शुद्ध स्फटिकवत् मणियो से पूजन करना चाहिए। ये सब वस्तुत भौतिकादि नही है, किन्तु अपने षोडश दल के अन्तर्गत षोडश चन्द्रकलाएँ है। तदुपरान्त देवी को आज्ञाचक्र में आरोहण कराना पडता है। वहाँ कामेश्वरी को नीराजन आदि से प्रसन्न करना पडता है। इसके पश्चात् झटिति विद्युल्लता के तुल्य सहस्रदल मे भगवती का अनुप्रवेश होता है। उस समय वह सुधासमुद्र मे कल्पतरु—छायायुक्त मणिद्वीप में सरघा के भीतर सदाशिव के साथ विहार करने लगती है। उस समय तिरस्करिणी या परदा तानकर साधक मन्दिर मे स्वय वास करे। जब तक भगवती निकल कर फिर मूलाधार कुण्ड में प्रवेश न करे तब तक साधक को मन्दिर मे अवस्थान (निवास) करना चाहिए। यही समयियो का मत है।

परन्तु शङ्कर भगवान् का मत है कि चार प्रकार के ऐक्यानुसन्धानो के अनन्तर भगवती का साक्षात्कार मणिपूर में होता है। जिस रूप मे उनका आविर्भाव होता है उसका वर्णन 'क्वणत्काञ्ची' (सौ० ल० ७) इत्यादि श्लोक मे दिया गया है। इस रूप मे वह चतुर्भुजा है और उनकी चार भुजाओ में धनुष, बाण, पाश और अकुश ये चार आयुध है।

लक्ष्मीधर के मतानुसार छह प्रकार के ऐक्यानुसन्धानो के बाद मूलाधार और स्वाधिष्ठान चक्रो में भेद के अनन्तर मणिपूर में प्रसन्ना भगवती दशभुजायुक्त रूप में प्रकट होती है। इन दश भुजाओ मे वह धनुष, बाण, पाश, अकुश, वर, अभय, पुस्तक, अक्षमाला और

वीणा धारण किये रहती है। इस विषय मे एक वैकल्पिक मत भी है जिसके अनुसार उक्त भुजाओ मे पाश, अङ्कुश, पुण्ड्र, इक्षुचाप, पुष्पवाण, अक्षमाला, शुक, अभय और वर हैं। दो हाथ वक्ष स्थल पर वीणा के साथ रखे हुए है। ये दोनो मत लक्ष्मीधर के समत हैं।

कोई-कोई ऐसा कहते हैं कि समयियो का वाह्यपूजन निषिद्ध होने के कारण देवी को सूर्यमण्डल के अन्तर्गत समझ कर पूजन करना भी उनके लिए निषिद्ध ही है। परन्तु यह वात ठीक नही है। पिण्ड तथा व्रह्माण्ड के चन्द्र और सूर्य अभिन्न हैं, इसलिए चन्द्रकलाओ से जो अमृत-स्यन्दन होता है उससे सूर्य उज्जीवित रहते हैं, इसीलिए सूर्य का सम्पर्क होने पर भी चन्द्रकला विद्या के तेज का तिरोभाव नही होता। इसीलिए चन्द्र (सूर्य-?) मण्डल के अन्तर्गत रूप से चन्द्रकला विद्या का पूजन हो सकता है।

परन्तु यह जो निषेध-वाक्य है कि चन्द्रगत विम्वरूप से देवी का पूजन निषिद्ध है, उसका तात्पर्य है आज्ञाचक्र के ऊपर स्थित आन्तर चन्द्र के सहस्रदल कमल के अन्तर्गत चन्द्रकलामृत के निस्यन्द से उज्जीवन होता है। इसीलिए उसकी पूजा मे निर्वन्ध नही है। अतएव पिण्ड और व्रह्माण्ड के अभिन्न होने के कारण व्रह्माण्डस्थित चन्द्रमण्डल मे भी पूजा का निर्वन्ध नही है। अतएव हृदय-कमल मे ही देवी की आराधना करने से ऐहिक तथा आमुष्मिक फल का लाभ होता है। समयी की दृष्टि से आन्तर पूजा ही सर्वविध फल देनेवाली है।

भगवान् शङ्कर के पूजाक्रम मे आधार-कमल आदि नही है। आज्ञाचक्र से अवरोह-क्रम के द्वारा पूजा होती है। पहले आकाश, फिर वायु, उसके वाद अग्नि, फिर जल, तदनन्तर सर्वान्त में पृथिवी। इसीलिए मणिपूर के वाद स्वाधिष्ठान का निरूपण है। इसका तात्पर्य सवर्त अग्नि से दग्ध जगत् के उज्जीवन के अनन्तर उत्पत्ति-प्रदर्शन करना है। शुकसहिता मे इस विषय की विस्तृत आलोचना की गयी है।

कौल-धारा में अवान्तर विभाग भी हैं। तान्त्रिक साधना मे सभी लोग कौलधर्मी नही हैं। कौलसाहित्य में कुल-साधना का जो चित्र दिखाई देता है, कुलसाधना के विरोधियो ने अपनी रचनाओ मे उसका यथार्थ रूप न दिखला कर विकृत रूप दिखलाया है। कुलप्रदीप नामक ग्रन्थ में लिखा है कि जिन ग्रन्थो मे भगवान् सदाशिव ने कुलमार्ग का वर्णन किया है वे सभी ग्रन्थ कलियुग मे प्राय दुर्लभ हैं। इसीलिए कुल-साधना का रहस्य वहुत कम लोगो को ज्ञात है। उक्त ग्रन्थ में कहा गया है—

गुरोः कृपा यस्य भवेत्प्रभूता श्रीदेवतायाश्च महान् प्रसाद-
स्तस्यैव पुंस. कुलशास्त्रबोधस्तस्यात्र भक्तिर्न कदापनोद्या।
येषा दृढा भक्तिरिहास्ति शास्त्रे विदन्ति सम्यक् सकल रहस्य
प्राग् जन्मपुण्याद् विमला मनीषा ते निन्दका नास्य भवन्ति लोका॰ ॥
भिन्ना. पशुभ्यो निजगोपनार्थं निन्दन्ति केचित् कुलशास्त्रमेतत् ।
केचिच्च निन्दानिरता अबोधा दौष्टचेन ये ते निरये पतन्ति ॥

कुलाचार क्या है ? सेतुवन्धकार ने कहा है कि परशुरामकल्पसूत्र मे व्यवहार, देश आदि से 'परे तु शास्त्रानुशिष्टा' यहाँ तक जो आचार वर्णित हुआ है वही कुलाचार है। कौलज्ञान के श्रेष्ठत्व के विषय मे कहा जाता है कि शैव, वैष्णव, दौर्ग, गाणपत्य प्रभृति मन्त्रो से चित्तशुद्धि होने के अनन्तर कौल ज्ञान का उदय होता है। सेतुवन्ध मे उद्धृत कुलार्णव का वचन है—

सर्वेभ्यश्चोत्तमा वेदा वेदेभ्यो वैष्णव परम् ।
वैष्णवादुत्तमं शैव शैवाद् दक्षिणमुत्तमम् ॥
दक्षिणादुत्तम वाम वामात् सिद्धान्तमुत्तमम् ।
सिद्धान्तादुत्तमं कौलं कौलात्परतरं नहि ॥

इस मत के अनुसार वेदो से लेकर विभिन्न मतो मे कौलमत ही सर्वोत्तम मत है। इसके समर्थक वचन भी शास्त्र मे मिलते हैं—

पुराकृततपोदानयज्ञतीर्थजपव्रतैः ।
शुद्धचित्तस्य शान्तस्य धर्मिणो गुरुसेविनः ॥
अतिगुप्तस्य भक्तस्य कौलज्ञानं प्रकाशते ।

कौलो के विषय मे ऐसी प्रसिद्धि भी है कि—

अन्त शाक्ता वहि॰शैवा॰ सभामध्ये च वैष्णवा ।
नानारूपधरा कौला विचरन्ति महीतले ॥

इस प्रसङ्ग मे यह स्मरण रखना चाहिए कि इस मत का सब लोग अनुमोदन नही करते, क्योंकि त्रिकवादियों का वचन है—

वेदादिभ्यः परं शैवं शैवाद् वामं तु दक्षिणम् ।
दक्षिणात्परत कौल कौलात्परतर त्रिकम् ॥
(द्रष्टव्य—विज्ञान-भैरव की क्षेमराजकृत टीका, पृष्ठ ४)।

इस सिलसिले मे कौल साहित्य का सक्षेप मे कुछ परिचय दिया जाता है। कौल-सिद्धान्त तथा आचार के प्रतिपादक कतिपय ग्रन्थो के नाम—कुलार्णव, कुलचूडामणि, रुद्रयामल, भावचूडामणि, देवीयामल, कुलपञ्चामृत, उत्तरतन्त्र, कुलतन्त्र, कुलामृत, तन्त्रचूडामणि, कुलकमल, कुलगह्वर, कुलतत्त्वसार, कुलदीपिनी, कुलपञ्चाशिका, कुल-प्रकाश, कुलमत, कुलमूलावतार, कुलरत्नमातृका, कुलरत्नमाला, महारहस्य, मेरुतन्त्र, कुलरत्नावली, कुलशासन, कुलसग्रह, कुलसर्वस्व, कुलसार, कुलेश्वर, कुलावतार, कुलार्चनतन्त्र, कुलाम्नाय, कुलानन्दसहिता, कुलागम, कौलतन्त्र, कुलोत्तम, कुलोड्डीश, कौलिकार्चनदीपिका, आगमसार, वामकेश्वरतन्त्र, तन्त्रराज, शाभवीतन्त्र, गन्धर्वतन्त्र, परमानन्दतन्त्र, दक्षिणामूर्तिसहिता, श्रीतत्त्वचिन्तामणि, कुलप्रदीप (शिवानन्दकृत), रहस्यार्णव इत्यादि। नित्याषोडशिकार्णव के अन्तिम अश मे लिखा है कि कुलाचार-ज्ञान और गुरुपादुका के यजन के विना इस शास्त्र मे प्रवेश नही हो सकता।

लक्ष्मीधर ने सौन्दर्यलहरी की टीका मे विभिन्न स्थलो मे कौलो की अप्रामाणिक तथा अवैदिक कह कर निन्दा की है। परन्तु भास्करराय ने सेतुवन्ध-टीका मे कहा है—ये सव वाते या तो प्रतारणा हो या भ्रान्तिवश कही गयी हो। किसी-किसी तन्त्र मे कौलधर्म की जो निन्दा दीख पडती है उसका तात्पर्य तत्-तत् तन्त्रो की केवल स्तुति मे है—कौलो की निन्दा मे नही, क्योकि कौलग्रन्थ मे ही शिव का ऐसा वचन है—

पशुशास्त्राणि सर्वाणि मयैव कथितानि हि।
मूर्त्यन्तरं समासाद्य मोहनाय दुरात्मनाम्॥
महापापवशान्नृणां तेषु वाञ्छाभिजायते।
तेषा हि सद्गतिर्नास्ति कल्पकोटिशतैरपि॥

असली वात यह है कि कौल उपासना चरम भूमि की वात है। उसका अधिकारी अत्यन्त दुर्लभ है। इसीलिए अधिकारी होते हुए भी उसमे प्रवृत्त होने पर विरुद्धाचरण का दोष अवश्यभावी है। इसीलिए उसकी निन्दा की जाती है। अधिकारी होने पर भी अत्यन्त रहस्य विषय मे किसी की प्रवृत्ति न हो इसीलिए निन्दा की गयी है। कुलार्णव मे भी लिखा है—

कुलमार्गरतो देवि न मया निन्दित. क्वचित्।
आचाररहिता येऽत्र निन्दितास्ते न चेतरे॥

स्थानान्तर मे भी लिखा है—

कुलधर्ममिम ज्ञात्वा मुच्येयु सर्वमानवाः ।
इति मत्वा कुलेशानि मया लोके विगर्हितम् ।।

सर्वजनपूज्य महासिद्ध आचार्य अभिनव गुप्त तन्त्रप्रक्रिया और कुलप्रक्रिया दोनो मे सिद्ध थे । उनके दोनो प्रक्रियाओ के गुरु भी पृथक्-पृथक् थे । तन्त्रालोक में उन्होंने दोनो गुरुओ को पृथक्-पृथक् नमस्कार किया है । उनके कुलगुरु थे शम्भुनाथ । भगवती या दूती के साथ अभिनवगुप्त ने उन्हे नमस्कार किया है (द्रष्टव्य तन्त्रालोक १।२१) । इस प्रसङ्ग मे उन्होंने गुरु को 'जगदुद्धारपरायण' कहा है । इन शम्भुनाथ के गुरु थे सोम या सोमदेव । ये कुलमार्ग या अतिमार्ग के गुरु थे । यह मार्ग त्र्यम्बकधारा के नाम से प्रसिद्ध है । सोमदेव के गुरु का नाम सुमति था । (द्रष्टव्य, जयरथ कृत तन्त्रालोक की टीका १।२१३) शम्भुनाथ ने जालन्धर पीठ मे ख्याति प्राप्त की थी । किसी-किसी स्थान मे उन्हें सुमति का शिष्य भी कहा गया है । कुलमार्ग या अतिमार्ग 'अतिनय' के नाम से भी प्रसिद्ध है । यही कालीनय है । अर्धत्र्यम्बक मठ से इसका सम्बन्ध है । कुलमार्ग का आदि स्थान है कामरूप महापीठ । इसके प्रवर्तक थे मीनसिद्ध । मीनसिद्ध ही मत्स्येन्द्र के नाम से प्रसिद्ध हैं । इस विद्या का अवतरण-क्रम यो है—पहले भैरव, तदनन्तर भैरवी, भैरवी से सिद्धमीन अथवा मच्छन्दर अर्थात् मत्स्येन्द्रनाथ । यह मठ चतुर्थ है । इसीलिए मत्स्येन्द्रनाथ को तुरीयनाथ भी कहा जाता है । सुमतिनाथ का सम्बन्ध दक्षिण पीठ से था । पहले कहा जा चुका है कि परशुराम कुल-साधना के अति प्राचीन आचार्य हैं ।

वर्तमान युग में भट्टोजि दीक्षित ने तन्त्रप्रामाण्य का खण्डन करते हुए एक ग्रन्थ लिखा था, जिसमें कौलधर्म की भी निन्दा की गयी है । उनके गुरु अप्पय्य दीक्षित ने त्रिपुरा महोपनिषद् की व्याख्या में कौलमार्ग के ऊपर कटाक्षपात किया है ।

कौल सम्प्रदाय की एक शाखा का नाम सांसारिक कुलाम्नाय था । इसके प्रवर्तक थे अल्लट अथवा भावरक्त नाम के एक तपस्वी । ये विश्वरूप नामक एक पाशुपत साधु के शिष्य प्रशस्त के शिष्य अर्थात् विश्वरूप के प्रशिष्य थे । ये विश्वरूप पञ्चार्थ लाकुलाम्नाय के अन्तर्गत थे । प्रतीत होता है कि पाशुपत और कौल—इन दो सम्प्रदायो मे घनिष्ठ सम्बन्ध था । कौलाचार्य मत्स्येन्द्र के शिष्य गोरक्षनाथ का कही-कही पाशुपत कह कर सम्मान किया गया है । सिद्ध योगेश्वरी-मत की धारा नकुलेश से आविर्भूत होकर उनके शिष्य अनन्त और अनन्त के शिष्य गहनेश के द्वारा प्रवर्तित हुई । सिद्ध योगेश्वरी-मत

के विषय मे तन्त्रालोक मे ऐसा गुरुपरम्परा-क्रम मिलता है—भैरव—भैरवी—स्वच्छन्द—नाकुल—अनन्त—गहनेश। विश्वरूप अनन्तगोत्र थे (द्रष्टव्य, वी एस पाठक लिखित शैविज्म इन अर्ली मेडिवल इण्डिया १९५९ (Shaivism in Early Medieval India)।

कौल-साधना का क्रम इस प्रकार है—पहले शाक्ताभिषेक, तदनन्तर पूर्णाभिषेक, तदुपरान्त क्रमदीक्षाभिषेक इत्यादि।

कौल तथा समयी मार्ग के विषय मे कुछ कहा गया है। शैव मत के अनुयायियो मे पाशुपत, कालामुख आदि अवान्तर भेद वाले सम्प्रदाय प्राचीन काल मे थे। सोमसिद्धान्त, महाव्रतधारी, जगम, भट्ट, भैरव, रौद्र, वाम, सिद्धान्त प्रभृति सम्प्रदाय भी प्रचलित थे। कापालिक का नाम पहले ही दिया जा चुका है। यह जो भैरवधारा की बात कही गयी है, सम्भवत यह कौल सम्प्रदाय का ही नामान्तर है। पाशुपत सम्प्रदाय मे भी अवान्तर भेद है। कश्मीर मे प्रत्यभिज्ञा, स्पन्द, महार्थ, सहस प्रभृति भावधाराओ का परिचय सर्वत्र प्रसिद्ध ही है।

ऐसा ज्ञात होता है कि एक ओर पाशुपतो मे कोई-कोई न्यायदर्शन के अनुरागी थे—जैसे उद्योतकर (न्यायवार्तिककार)। शैवो में कोई-कोई वैशेषिक दर्शन के अनुरागी थे—जैसे व्योमशिवाचार्य (प्रशस्तपादभाष्य की टीका व्योमवती के रचयिता)। पाशुपतो में जो लोग न्यायदर्शन के पक्षपाती नही थे वे पञ्चार्थवादी थे। कापालिक सम्प्रदाय अति प्राचीन है, इसमे सन्देह नही, क्योकि मैत्री-उपनिषद् में कापालिको का उल्लेख मिलता है। परवर्ती काल मे मत्तविलास, मालतीमाधव, कर्पूरमञ्जरी, प्रवोधचन्द्रोदय, चण्डकौशिक प्रभृति ग्रन्थो मे कापालिको का थोडा-वहुत विवरण मिलता है। महाव्रतधारी सम्प्रदाय के साथ कापालिको का कुछ सम्वन्ध था तथा कालामुख या कालानन सम्प्रदाय से भी उनका सम्वन्ध था। विभिन्न पुराणो में तथा आगम-प्रामाण्य नामक ग्रन्थ मे इन लोगो का अत्यधिक परिचय मिलता है। सोमसिद्धान्त सम्प्रदाय का उल्लेख भी विभिन्न ग्रन्थो में है। ये लोग भी पार्वती से समालिङ्गित शङ्कर के उपासक थे। इनका मूलग्रन्थ सोमसिद्धान्त नाम से प्रसिद्ध है। कूर्मपुराण तथा ईशानशिवगुरुपद्धति मे इनका उल्लेख है। रौद्र सम्प्रदाय के सब उपासक हाथ मे त्रिशूल धारण करते थे। कोई-कोई पाशुपत भी ललाटपर, दोनो भुजाओ मे तथा नाम मे लिङ्ग (शिवलिङ्ग) धारण करते थे। जगम लोग हृदय मे त्रिशूल तथा मस्तक पर लिङ्ग धारण करते थे। भट्ट लोग दोनो भुजाओ में डमरू

तथा लिङ्ग चिह्न (शिवलिङ्ग चिह्न) भी धारण करते थे। कोई-कोई शैव साधक दोनो भुजाओ मे लिङ्ग धारण करते थे। श्रीकरभाष्य मे कूर्म-पुराण का वचन उद्धृत है। उससे पता चलता है कि पूर्वोक्त पाशुपत सभी तान्त्रिक थे, यह वात नही है। उनमे कोई-कोई वैदिक थे और कोई-कोई मिश्र भी थे। वैदिक लोग लिङ्ग, रुद्राक्ष आदि धारण करते थे। इसी प्रकार प्रत्येक सम्प्रदाय का कुछ-न-कुछ वैशिष्ट्य था। कौल सम्प्रदाय की सामारिक कुलाम्नायधारा के विपय मे पहले कुछ कहा जा चुका है। इस सम्प्रदाय के साथ पञ्चार्थ-पाशुपत सम्प्रदाय का सम्वन्ध था। तान्त्रिक और कुलमत मे जो भेद है वह प्रत्यभिज्ञा-हृदय तथा नेत्रतन्त्र से स्पष्ट प्रतीत होता है। दोनो से त्रिक का भेद है, यह भी स्पष्ट है। तन्त्र-मत में आत्मतत्त्व विश्वोत्तीर्ण (विश्वातीत) है, कुल-मत मे आत्मतत्त्व विश्वमय है एव त्रिकादि-दर्शनो के मतानुसार आत्मतत्त्व विश्वोत्तीर्ण (विश्वातीत) होने पर भी विश्वमय है। कुब्जिकामत, योगिनी-सम्प्रदाय, रहस्यधारा प्रभृति भिन्न भिन्न उपासनाओ के मार्ग योग-अनुभूति के सूक्ष्म वैचित्र्य का परिचय देते हैं। इस प्रसङ्ग मे तान्त्रिक-सम्प्रदाय भेद के विपय में अधिक विस्तार से लिखने की आवश्यकता प्रतीत नही होती।

हमने इस भूमिका मे तान्त्रिक साहित्य और सम्प्रदायो का सक्षिप्त पर्यालोचन किया है। यदि इसे दिग्दर्शनमात्र कहा जाय तो अनुचित न होगा। भविष्य मे कोई अनुसन्धित्सु विद्वान् विचार कर तान्त्रिक साहित्य के विषय मे आलोचना करना चाहेंगे तो तन्त्र-साहित्य की यह विवरणात्मक सूची उनके पथप्रदर्शन का कार्य करेगी। जो ग्रन्थ चिरकाल तक पाठको के समक्ष रहे किन्तु उनके रक्षण और प्रकाशन की सुव्यवस्था न होने के कारण वे वर्तमान समय मे ज्ञानपिपासुओ को सुलभ नही हो रहे हैं।

तान्त्रिक साहित्य की इस सूची के द्वारा हम तन्त्रसाहित्य के अमूल्य रत्नो की ओर विद्वानो की दृष्टि आकृष्ट करना चाहते हैं ताकि ये ग्रन्थ केवल भारत के ग्रन्थागारो मे ही रहकर कालप्रभाव से एक समय जीर्ण से जीर्णतम अवस्था को प्राप्त हो नष्ट न हो जाये।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व भारत के कतिपय प्रयत्नशील विद्याप्रेमियो के व्यक्तिगत प्रयत्नो से वहुत-से तन्त्रग्रन्थ प्रकाश में आये थे। इस प्रसङ्ग मे शिवचन्द्र विद्यार्णव, आर्थर एवेलन, ढाका के रसिकमोहन चट्टोपाध्याय, सुलभतन्त्र के प्रकाशक शरत्कुमार सेन, जीवानन्द विद्यासागर, आगमानुसन्धान समिति, कश्मीर सस्कृत सीरीज के अमूल्य ग्रन्थ-रत्न, त्रिवेन्द्रम् सस्कृत सीरीज के कतिपय ग्रन्थ, गायकवाड सस्कृत सीरीज वडोदा तथा

चौखम्बा सस्कृत सीरीज, वाराणसी के कुछ ग्रन्थ, गणेश कम्पनी मद्रास, एशियाटिक सोसायटी वगाल, मैसूर विश्वविद्यालय, पीताम्वरापीठ, दतिया, कल्याण मन्दिर, प्रयाग, वाणी-विलासप्रेस श्रीरङ्गम्, सस्कृत कालेज वाराणसी, वाराणसेय सस्कृत विश्वविद्यालय के योग-तन्त्र विभाग आदि सस्था तथा व्यक्तियो के नाम श्रद्धा तथा हर्ष के साथ स्मरण हो आते हैं।

शेषोक्त वाराणसेय सस्कृत विश्वविद्यालय का योग-तन्त्र विभाग केन्द्रीय सरकार, उत्तर प्रदेशीय सरकार तथा सस्कृत विश्वविद्यालय के अधिकारियो के विशेष प्रयत्न से १९६४ में स्थापित हुआ। इस विभाग का मुख्य उद्देश्य है लुप्तप्राय तन्त्र और योग साहित्य का जीर्णोद्धार करना। उद्देश्य अत्यन्त स्तुत्य एव महान् है इसमे सन्देह नही। इस उद्देश्य के अनुसार इस वीच के कतिपय वर्षो मे इस विभाग ने शिवानन्द तथा विद्यानन्द नाम के दो प्राचीन आचार्यों की टीका के साथ नित्याषोडशिकार्णव का प्रकाशन किया और उक्त ग्रन्थ के परिशिष्ट भाग मे कतिपय स्तोत्र-ग्रन्थो का समावेश भी किया है। तन्त्रसग्रह नामक एक प्राचीन तन्त्र ग्रन्थ भी उसी विभाग द्वारा प्रकाशित किया गया है। उसका प्रथम भाग देखने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ। उसमें विरूपाक्षपञ्चाशिका, साम्वपञ्चाशिका, त्रिपुरामहिम्नस्तोत्र, स्पन्दप्रदीपिका, अनुभवसूत्र तथा वातुल शुद्धाख्यतन्त्र ये दुर्लभ तन्त्रग्रन्थ प्रकाशित किये गये हैं। द्वितीय भाग मे निर्वाण-तन्त्र, तोडलतन्त्र, कामधेनुतन्त्र, फेत्कारिणीतन्त्र, ज्ञानसकलिनीतन्त्र तथा सटीक देवीकालोत्तरागम का प्रकाशन किया गया है। इस विभाग के और एक महत्त्वपूर्ण कार्य का उल्लेख करना इस प्रसग में आवश्यक प्रतीत होता है। वह कार्य है लुप्तागमसग्रह नामक ग्रन्थ का प्रकाशन। उक्त ग्रन्थ मे लुप्त तन्त्र और आगमो के जो वचन भिन्न-भिन्न तन्त्रो मे उद्धृत मिलते हैं उन्ही का सकलन किया गया है। वर्तमान समय मे गङ्गानाथ झा रिसर्च इस्टीटयूट, इलाहावाद एक दुर्लभ तन्त्रग्रन्थ का प्रकाशन कर रहा है। वह है महाकालसहिता। उस ग्रन्थ का कामकलाखण्ड भी शीघ्र ही प्रकाशित हो जायगा ऐसी आशा है। उसी सस्था ने उक्त सहिता के गुह्यकाली खण्ड की मातृका भी वहुत द्रव्य व्ययकर उपलव्ध कर ली है। आशा है वह ग्रन्थ भी यथासंभव शीघ्र ही पाठको के समुख प्राप्त होगा।

आज से कुछ वर्ष पूर्व १९६० ई० में उत्तरप्रदेश सरकार की हिन्दी समिति के द्वारा तन्त्र-साहित्य की एक विवरणात्मक सूची प्रस्तुत करने का कार्यभार मुझे सौंपा गया था।

कार्य कठिन तथा श्रमसापेक्ष था लेकिन दीर्घकाल के परिश्रम तथा धैर्य से मेरे परमस्नेह-भाजन तथा आशीर्वादभाजन प० श्री श्रीकृष्ण पन्त ने मेरे निर्देश तथा सहयोग से उसे प्रस्तुत कर प्रकाशनार्थ हिन्दीसमिति को अर्पित किया। दीर्घकाल तक उसका प्रकाशन रुका रहा। मुझे आशा न थी कि यह ग्रन्थ एक दिन प्रकाशित होकर सामने आयेगा। जिस समय इस कार्य मे मैंने हाथ लगाया था उस समय मेरा स्वास्थ्य अक्षुण्ण था किन्तु इस समय मेरा शरीर वार्धक्य तथा रोग से पूर्ववत् सबल नही है। श्री पन्तजी का अकुठ तथा परिश्रमपूर्ण सहयोग न होता तो, इस कार्य का पूर्ण होना सभव न था। मेरी अस्वस्थावस्था में इसका सम्पादन भी श्री पन्तजी ने ही किया, इसलिए मै श्री पन्तजी को हार्दिक आशीर्वाद देता हूँ। साथ ही मै अपने परमस्नेहभाजन शिष्य श्री श्रीहेमेन्द्रनाथ चक्रवर्ती को आशी-र्वाद प्रदान करता हूँ जिनके सहयोग से भूमिका लिखने मे शारीरिक असमर्थता रहते हुए भी किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न नही हुई। अन्त मे हिन्दी समिति के वर्तमान तथा भूतपूर्व सचिवो को एव श्री निशाकान्त पाठक को उनके निरन्तर सहयोग के लिए धन्यवाद प्रदान करता हूँ। शीघ्रतापूर्वक शुद्ध तथा सुन्दर छपाई के लिए भार्गव भूषण प्रेस के स्वामी श्री नरेन्द्र भार्गव को भी मै धन्यवाद प्रदान करता हूँ।

गोपीनाथ कविराज

तमिल साहित्य
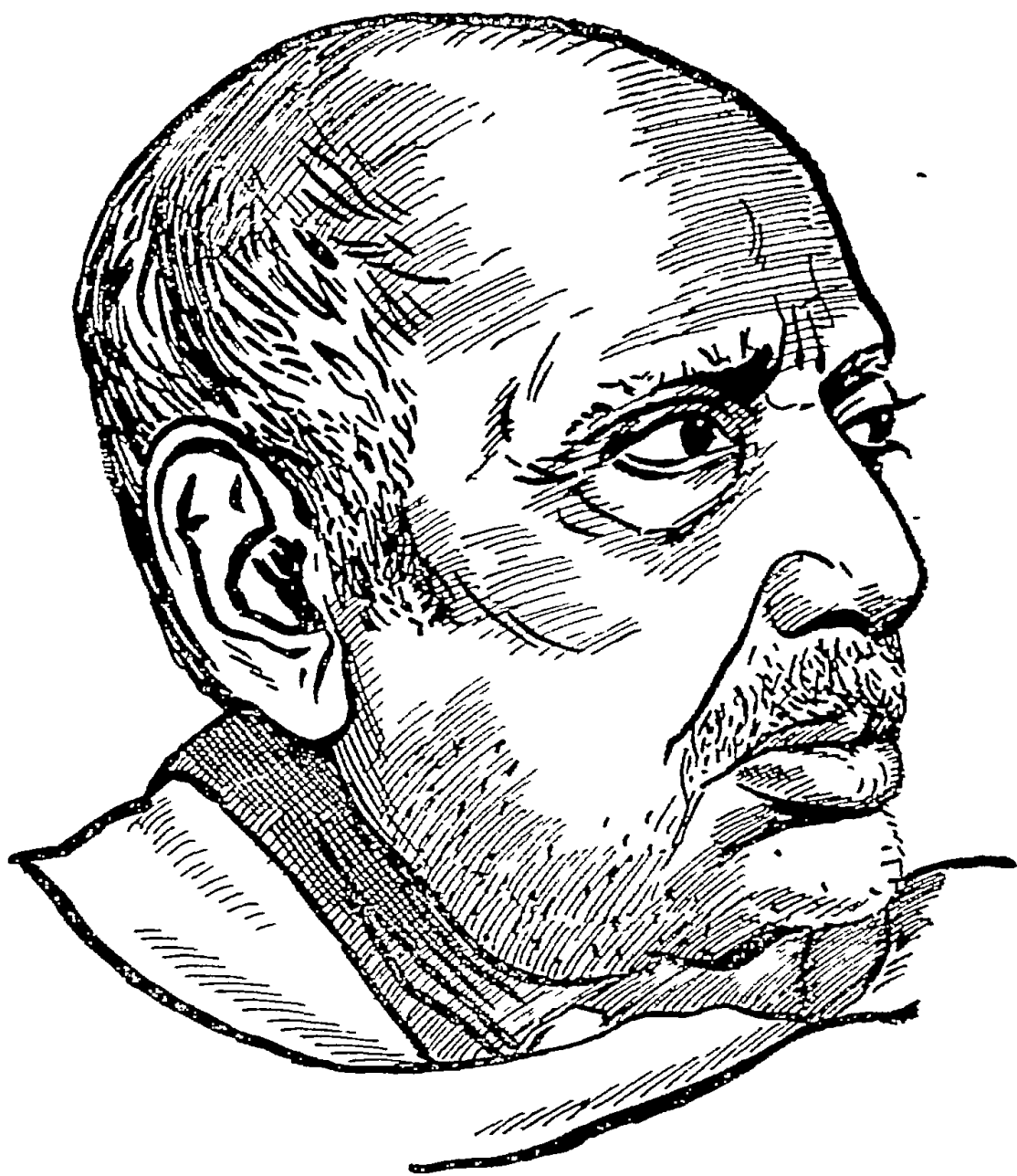
ग्रन्थ के प्रणेता

सङ्केत-सूची

१ इ० आ० (इण्डिया आफिस पुस्तकालय, लदन का मूचीपत्र)	कैटलाग आफ सस्कृत मेनुस्क्रिप्ट् इन लाइब्रेरी आफ इडिया आफिस।
२ ए० व० (एशियाटिक सोसाइटी वंगाल का सूचीपत्र)	डिस्क्रिप्टिव कैटलाग आफ स० मेनु० एशियाटिक सोसायटी आफ बगाल।
३ ने० द० (नेपाल दरवार पुस्तकालय का सूचीपत्र)	कैटलाग आफ पामलीफ एण्ड सेलेक्टेड पेपर मेनु० इन दरवार लाइब्रेरी, नेपाल।
४ नो० स० (सस्कृत पुस्तको पर म० म० हरप्रसाद शास्त्री के विवरण)	नोटिसेज आफ स० मेनु० सेकेंड सीरीज वाई म म हरप्रसाद शास्त्री।
५ रा० ला० (राजेन्द्रलाल मित्र के सस्कृत पुस्तको पर विवरण)	नोटिसेज आफ स० मेनु० वाई राजेन्द्र-लाल मित्र।
६. बी० कै० (बीकानेर पुस्तकालय का सूचीपत्र)	ए कैटलाग आफ स० मेनु० इन दी लाइब्रेरी आफ महाराजा, बीकानेर।
७ रा पु० (राजस्थान पुरातत्त्व ग्रन्थ-सूची)	राजस्थान पुरातत्त्वान्वेपण मन्दिर हस्तलिखित ग्रन्थसूची।
८ ट्रि० कै० (त्रिवेन्द्रम् पुस्तकालय का सूचीपत्र)	ए डिस्क्रिप्टिव कैटलाग आफ स० मेनु० इन क्यूरेटर्स आफिस लाइब्रेरी आफ त्रिवेन्द्रम्।
९ अ० व० (वडौदा पुस्तकालय का अकारादि सूचीपत्र)	एन अल्फावेटिकल लिस्ट आफ मेनु० इन ओरिएटल इस्टीटयूट, वडौदा।
१० म० द० (मद्रास राजकीय पुस्तकालय का सूचीपत्र)	ए डिस्क्रिप्टिव कैटलाग आफ दी स० मेनु० इन दी गवर्नमेण्ट ओ० मेनु० लाइब्रेरी, मद्रास।

११ व० प० (वगीय साहित्य परिपद् का सूचीपत्र)	डिस्क्रिप्टिव कैटलाग आफ स० मेनु० इन वगीय साहित्य परिपद्, कलकत्ता ।
१२ र० म० (रघुनाथ मदिर पुस्तकालय जम्मू का सूचीपत्र)	कैटलाग आफ दी स०मैनु० इन दी रघुनाथ टैम्पल् लाइब्रेरी महाराज आफ जम्मू ।
१३ तँ० म० (तजौर राजमहल पुस्तकालय का सूचीपत्र)	क्लासिफाइड इडेक्स—दी स० मेनु० इन पैलेस लाइब्रेरी आफ तजौर।
१४ डे० का० (डेकन कालेज पूना का सूचीपत्र)	ए कैटलाग आफ कलेक्टिव मेनु० डिपोजिटेड इन दी डेकन कालेज।
१५ ज० का० (जम्मू कश्मीर के महाराजा के निजी पुस्तकालय का सूचीपत्र)	डिस्क्रिप्टिव कैटलाग आफ स० मेनु० इन दी प्राइवेट लाइब्रेरी आफ महाराजा, जम्मू एण्ड कश्मीर ।
१६ क० का० (कलकत्ता सस्कृत कालेज पुस्तकालय का सूचीपत्र)	डिस्क्रिप्टिव कैटलाग आफ सस्कृत मेनु० डिपाजिटेड इन दी स० कालेज लाइब्रेरी, कलकत्ता ।
१७ स० वि० (सस्कृत विश्वविद्यालय पुस्तकालय वाराणसी का सूचीपत्र)	ए डिस्क्रिप्टिव कैटलाग आफ स० मेनु० डिपाजिटेड इन दी स० यूनीवर्सिटी लाइब्रेरी, वाराणसी।
१८ भ० रि० (भण्डारकर रिसर्च सस्थान पुस्तकालय पूना का सूचीपत्र)	डिस्क्रिप्टिव कैटलाग आफ स० मेनु० डिपाजिटेड इन भण्डारकर ओरियण्टल रिसर्च इस्टीट्यूट, पूना ।
१९ वि० रि० (विहार अनुसन्धान समिति का सस्कृत सूचीपत्र)	विहार रिसर्च सोसाइटी डिस्क्रिप्टिव कैटलाग आफ स० मेनु० ।
२० न्यू कैट्० कैट्०	न्यू कैटलागस कैटोलोगोरम् ।
२१ कैट्० कैट्०	कैटलागस कैटोलोगोरम्—एन अल्फाबेटिकल रजिस्टर आफ स० वर्क्स एड आथर्स, इन थ्री पार्ट्स ।
२२ ए० स० व० (एशियाटिक सोसाइटी बम्बई का सूचीपत्र)	

तान्त्रिक साहित्य

(विवरणात्मक ग्रन्थसूची)

अंशुमत् आगम

लिखित। नामान्तर—अशुमत्कल्प, अशुमद्भेद, अशुमत्तन्त्र और अशुमान्कल्प। २८ शैवागमो मे अन्यतम। इसमे मन्दिर-निर्माण, प्रतिमा-विज्ञान आदि विविध विषय वर्णित हैं। काश्यपमत, काश्यपशिल्प अथवा अशुमत्काश्यपीय इसी के शिल्पभाग हैं।

—न्यू कैट् कैट् १।१

किरणागम के अनुसार यह १० शिवागमो मे अन्यतम है। उसी के अनुसार इसके प्रथम श्रोता अशु, उनसे द्वितीय श्रोता अग्र और अग्र से तृतीय श्रोता रवि हैं। उन्ही के द्वारा इसका प्रचार हुआ। ऊपर जो २८ शैवागमो मे अन्यतम कहा गया है वह १० शिवागमो मे १८ भैरवागमो का योग करके कहा गया समझना चाहिए।

अकथहचक्र

लि०—(१) (क) श्लोक स० प्राय २०। पूर्ण (यह केवल ऋणधनचक्र रूप है)।
(ख) श्लोक स० लगभग ६२ पूर्ण।

—स० वि० (क) २४४८६, (ख) २४८२६

(२) —न्यू कैट् कैट् १।२

अकुलकालिकात्रिंशिका

रम्यदेवकृत

उल्लिखित—ग्रन्थकार द्वारा स्वरचित भावोपहारस्तोत्र-विवरण पृ० ३८ मे।

—न्यू कैट् कैट् १।७

अकुलकौलिकात्रिंशिका

रम्यदेवकृत

उ०—ग्रन्थकाररचित भावोपहारस्तोत्र-विवरण पृ० ८ मे।

—न्यू कैट् कैट् १।७

अकुलवीरतन्त्र

—प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

अकुलागममहातन्त्र

लि०—नामान्तर—योगसारसमुच्चय। कुछ लोगो ने योगसारसमुच्चय को अकुलागमतन्त्र के अन्तर्गत १० या ९ पटलो का पृथक् तन्त्रग्रन्थ माना है। कुछ का कहना है कि योगसारसमुच्चय अकुलागम का एक पटल है। यह 'अकुलागमे योगशास्त्रे योगसारसमुच्चयो नाम नवम पटल' अकुलागम के ९ म पटल की पुष्पिका (नो० स० १।१) से स्पष्ट है। किन्तु अकुलागम और योगसारसमुच्चय के पटलो मे प्रतिपादित विषयो का मिलान करने से यही निश्चय होता है कि ये दो ग्रन्थ नही, किन्तु एक के ही दो नाम हैं। योगसारसमुच्चय के आरभ मे दिये गये श्लोको से भी इसी निश्चय की पुष्टि होती है। "अकुलागमनामेद तत्तेऽह कथयाम्यथ। अय योग सर्वशास्त्रे विज्ञातव्यो वरानने। गुरुप्रसादाद् ज्ञातव्य रहस्य ह्यकुलागमे॥"

यह ग्रन्थ वहुत प्राचीन नही है। १७५८ वि० के आसपास का है, क्योकि म० रि० की पुस्तक का लिपि-काल १७५८ वि० है। इ०आ० २५६६ के अनुसार इसका लिपि-काल १६२९ वि० है।

(१) ईश्वर पार्वती सवाद, योग और योगियो की चर्या पर जिसका सव वर्ग और आश्रमो द्वारा अनुष्ठान किया जा सकता है। (क) १० पटलो मे पूर्ण, (ख) ९ पटलो मे पूर्ण। —इ० आ० (क) २५६५, (ख) २५६६

(२) नारद शिव सवादरूप, श्लोक स० १०००। इसमे प्रतिपादित विपय हैं—योग, ज्ञान आदि, कर्म और अकर्म आदि का निरूपण, विन्दुनिर्धारण आदि, वह्निमार्ग, धूममार्ग आदि का स्वरूप, तीन गुणो के विभाग आदि, स्थूल, सूक्ष्म आदि का निरूपण, षट्चक्र आदि का निरूपण, दीक्षा शब्द की व्युत्पत्ति, दीक्षा-माहात्म्य, आश्रम आदि का निरूपण इत्यादि। —नो० स० १।१

(३) —ए० वं० ६११३

(४) लिपि-काल १७५८। —म० रि०

(५) —न्यू कैट् कैट् १।७

अक्रमकल्लोलकारिका

रम्यदेव विरचित

उ०—ग्रन्थकार द्वारा स्वरचित भावोपहारस्तोत्र-विवरण पृ० ४ मे।

अक्षमालाशोधन

लि०—श्लोक स० लगभग ४८, पूर्ण।

—स. वि. २६११३

अक्षयातन्त्र

उ०—सर्वोल्लासतन्त्र, उल्लास २, श्लोक ९ मे।

अक्षरमालिका

लि०—वर्णों के आध्यात्मिक स्वरूप-रहस्य पर, फेत्कारिणीतन्त्रान्तर्गत।

—न्यू कैट् कैट् १।११

अक्षोभ्यतन्त्र

लि०—अक्षोभ्यतन्त्रे रात्रिपूजा।

—न्यू कैट् कैट् १।१२

अक्षोभ्यसंहिता

लि०—अक्षोभ्यसहितायां तारासहस्रनाम।

—न्यू कैट् कैट् १।१३

अखण्डकापालिक

लि०—श्लोक स० ३६, अपूर्ण।

—स वि २५५७४

अगस्त्यसंहिता

लि०-(१)—अगस्त्य सुतीक्ष्ण सवादरूप, श्लोक स० ७९५३। विषय—तामस प्रकृतियो की मुक्ति का उपाय, ईश्वर की साकारता मे प्रमाण, तपस्या का माहात्म्य, श्रीरामचन्द्रजी की आराधना आदि, तुलसी-माहात्म्य, नारदजी द्वारा पूजा विधि का निरूपण,

न्यास आदि का निरूपण, तप, सतोप, आस्तिकता, ईश्वराराधन, लज्जा, दान, मति, व्रत आदि मे से प्रत्येक का लक्षण, श्रीरामप्रतिमाविधान आदि, श्रीराम, गोपाल आदि की प्रतिष्ठा के वार, तिथि, समय आदि का निरूपण, श्रीरामजी के मन्त्र, पूजा, पुरश्चरण आदि का निरूपण, श्रीराम के स्तोत्र, कवच आदि।

—नो० म० ११

(२) (क) श्लोक स० १५००, अध्याय, १९ अपूर्ण, (ख) श्लोक स० १२००, अपूर्ण, (ग) श्लोक स० १६००, अध्याय ३२, अपूर्ण, (घ) श्लोक स० १४००, अध्याय २८, अपूर्ण। —अ व (क) ५७३७, (ख) ७९९१, (ग) ६६५४, (घ) १२७६०

(३) अध्याय ३२। —व० प० २७६

(४) पूर्ण। —रा० म० ५२९४

(५) (क) श्लोक स० २९७२, पूर्ण, (ख) श्लोक स० ३२१, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २५११४, (ख) २६११८

उ०—तारामक्तिसुधार्णव तथा तन्त्रसार मे।

अगस्त्यसूत्र

लि०—नामान्तर—शक्तिसूत्र या शाक्तसूत्र।

—न्यू कैट् कैट् १।२२

अग्निस्तम्भन

लि०—इन्द्रजाल, भुवनेश्वरीकक्षपुट से गृहीत।

—न्यू कैट्. कैट् १।३७

अघोरकल्प

लि०— —न्यू कैट्. कैट् १।४७

अघोरतन्त्र

लि०— —न्यू कैट्. कैट् १।४७

अघोरतन्त्रागम

लि०— —न्यू कैट् कैट् १।४७

अघोरनृसिंहकल्प

लि०— —न्यू कैट् कैट् १।४७

अघोरपञ्चाङ्ग

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत।

—न्यू कैट् कैट् १।४७

अघोरपत्रिका

लि०— —न्यू कैट् कैट् १।४७

अघोरपटल

लि०—श्लोक स० ७५, पूर्ण। —स० वि० २४४९४

अघोरपूजापद्धति

लि०—रुद्रयामलतन्त्र मे अघोरसहस्राख्यकल्प के अन्तर्गत, श्लोक स० १०२, पूर्ण।

—स० वि० २४४९५

अघोरयामलतन्त्र

लि०— —न्यू कैट् कैट् १।४७

अघोररुद्रमन्त्र

लि०—(१) कालाग्निरुद्रमन्त्र और सद्योजातमन्त्र के साथ, श्लोक स० ४५, पूर्ण।

—स० वि० २५४००

(२) —न्यू कैट् कैट् १।४७

अघोरविद्याप्रकरण

लि०—भैरवीतन्त्र से गृहीत। —न्यू कैट् कैट् १।४७

अघोरवीरनृसिंह

लि०— —न्यू कैट् कैट् १।४७

अघोरशिवपद्धति

लि०—शैवभूपण के अनुसार शैवाचार्योकी १८ पद्धतियो मे अन्यतम। अघोर-शिवाचार्य कृत।

—न्यू कैट् कैट् १।४९

अङ्कतन्त्र

लि०—(१) विश्वालयतन्त्रान्तर्गत । पत्रे १७, पूर्ण ।

—र० मं० २०५४

(२) —न्यू कैट् कैट् ११४२

अङ्कयन्त्र तथा अङ्कयन्त्रश्लोक, व्याख्यासहित

लि०—(क) श्रीहर्षकृत, श्लोक स० १२०, पूर्ण ।
(ख) श्लोक स० ९८, अपूर्ण ।

—स. वि (क) २६२१६, (ख) ३६२२८

अङ्कयन्त्रविधि

लि०—(१) श्रीसूर्यराम वाजपेयी के पुत्र श्रीरामचन्द्र के शिष्य श्रीहर्षविरचित । श्लोक स० ३००, अपूर्ण । नाना तन्त्रो का अवलोकन कर, गुरुमुख से उनका भलीभाँति अध्ययन कर ग्रन्थकार ने इसमे लोकोपकार के लिए अङ्को से बननेवाले ९ और १६ कोष्ठो के विविध यन्त्रो का प्रतिपादन किया है, जिनके धारण से वैदिक मार्ग मे आस्था रखनेवाले पुरुषो के स्वर्ग और अन्यान्य सभी हित पदार्थों की सिद्धि होती है । इसपर ग्रन्थकार की स्वरचित टीका है ।

ग्रन्थकार हर्ष का प्रेमनिधि ने शिवताण्डव की स्वरचित टीका मे उल्लेख किया है ।

—ए व ६५८४

(२) —न्यू कैट् कैट्. ११५०

अङ्कोलकल्प

लि०—(१) यह उन तान्त्रिक मन्त्रो का सग्रह है जो ओपधियो के उपयोग के समय काम मे लाये जाते है । मन्त्र सस्कृत मे है और उनकी प्रयोगविधि हिन्दी मे है ।

—वी० कै० १२४३

(२) —न्यू कैट् कैट् ११५०

अङ्कोलतैलविधि

लि०—उलूककल्प के साथ, श्लोक स० ८१, पूर्ण ।

—स० वि० २५३५७

अङ्गभैरव

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत ।

—न्यू कैट् कैट् १।५१

अङ्गलिङ्गप्रतिष्ठा

लि०—कामिकतन्त्र से गृहीत

—न्यू कैट्-कैट् १।५२

अङ्गिराकल्प या अङ्गिरःकल्प

लि०—(१) अङ्गिरा पिप्पलाद सवाद । श्लोक स० ८२८, पूर्ण । इसमे आसुरी देवी की पूजाविधि विस्तारपूर्वव वर्णित है ।

—ए० व० ६०६१

(२) श्लोक स० ८२८, पूर्ण । आङ्गिरस मन्त्र वहुत-से वर्णित हैं । उनमे आसुरी महामन्त्र सर्व कर्मो मे मुख्य है। पहले पहल ब्रह्मा ने उसका अङ्गिरा ऋषि के लिए उपदेश किया था । इसके अङ्गिरा ऋषि, अनुष्टुप् छन्द और सहारकारिणी आसुरी शक्ति देवता हैं ।

विपय—पिप्पलाद के साथ अङ्गिरा के सवाद द्वारा आसुरी महामन्त्र का निरूपण, आसुरी महामन्त्र के अर्थ आदि, उक्त मन्त्र के उद्धार आदि की विधि, कुण्ड आदि के लक्षण, उक्त मन्त्र के प्रयोग की विधि, आत्मपूजा-विधि, आसुरी महामन्त्र का माहात्म्य आदि, अशकुन होने पर भी उक्त मन्त्र के माहात्म्य से इष्टसिद्धि होती है, होमविधि, छह भावनाओ का निरूपण, महामन्त्रविधि, शत्रु को वश करने की विधि, विद्वेष करने की विधि, मारण आदि की विधि, शूद्र आदि को वश मे करने की विधि आदि —रा० ला० ४०४६ ।

अचिन्त्य आगम

उ०—शिवाग्रयोगीन्द्रज्ञान शिवाचार्य कृत शैवपरिभाषा तथा उमापति कृत शत-रत्नसग्रह मे।

सभवत यह १० शिवागमो मे अन्यतम चिन्त्यशिवागम से अभिन्न हो । श्रीकण्ठी तथा मृगेन्द्र की भूमिका मे इसका चिन्त्यागम के नाम से उल्लेख है। किरण के मतानुसार चिन्त्य का प्रथम ग्रहीता दीप्त, उससे २रा ग्रहणकर्ता गोपति और गोपति से ग्रहण करने वाली ३ री अम्विका है ।

सभवत कवीन्द्राचार्य सूचीपत्र १४७१ मे अचिन्त्याह्वयागम नाम से इसी का उल्लेख है।

अज आगम

६४ आगमो के अन्तर्गत वहुरूपाष्टक वर्ग मे अन्यतम।

अजडप्रमातृसिद्धि

लि०—(१) यह उत्पलदेवकृत तीन सिद्धियो मे अन्यतम काश्मीर शैव मत का ग्रन्थ है। अन्य दो सिद्धियो पर जैसे ग्रन्थकार की स्वरचित टीका है वैसे इसपर उनकी टीका नही है। —न्यू कैट् कैट् १।६३

(२) उत्पलदेव कृत, पूर्ण—डे का ४३३, ४३४, ४३५ सभी १८७५–७६ मे सगृहीत।

उ०—परमार्थसार की योगराजकृत टीका, प्रत्यभिज्ञाहृदय, शिवसूत्रविमर्शिनी तथा महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

अजपा

अजपाकल्प, अजपागायत्री, अजपागायत्रीकल्प, अजपागायत्रीपद्धति, अजपागायत्री-मन्त्र, अजपागायत्रीविधान, अजपागायत्रीविधि, अजपागायत्रीस्तोत्र, अजपाजप, अजपा-जपमन्त्र, अजपापद्धति, अजपामन्त्र, अजपाविधान, अजपाविधि, अजपासाधन, अजपा-स्तोत्र, अजपास्तोत्रविधि।

ये सव नाम एक ही विषय अजपा का प्रतिपादन करते है। वह है अजपामन्त्र (हस-मन्त्र–अह स) का अव्यक्त जप, जो कि अद्वैत उपासना का उन्नत स्तर है। पूर्वोक्त सव ग्रन्थ थोडा-वहुत अन्तर के साथ उसी मन्त्र के प्रतिपादक है।

—न्यू कैट् कैट् १।६३

अजपागायत्री

लि०—(१) इसमे अजपास्तुति आवश्यक पूर्वाङ्गविधि के साथ प्रतिपादित है।

—क० का० २

(२) इसमे अजपागायत्री महामन्त्र के ऋषि, छन्द, देवता, वीज, शक्ति तथा कीलक का प्रतिपादनपूर्वक उदित हो रहे करोडो सूर्यो के तुल्य भास्वर जगद्व्यापक शब्द-ब्रह्ममय हम का हृदयकमल रूपी नीड मे श्वासप्रश्वासरूप से निरन्तर चल रहा जप प्रति-पादित है। हसगायत्री का निरूपण कर सलोम विलोम अङ्ग न्यास आदि भी दरशाये गये है।

—म० द० ५८५२ से ५८६० तक

(३) (क) श्लोक स ६२, पूर्ण, (ख) श्लोक स० १२५, पूर्ण।

—स वि (क) २५१४८, (ख) २६१६१

(४) हसरहस्य से गृहीत।

—न्यू कैट् कैट् १।६३

अजपागायत्रीजपविधि

लि०—(१) (क) श्लोक स० ६०, पूर्ण, लिपिकाल १७८४ वि०, (ख) श्लोक स० ५०, अपूर्ण।

—स वि (क) २४९१९, (ख) २५५८४

[स वि मे ५ प्रतियाँ और हैं—स० २५७८९, २६५७२, २६६२५, २६६४५ तथा २६६९०]

(२) —न्यू कैट् कैट् १।६३, ६४

अजपातन्त्र

लि०—अजपातन्त्रान्तर्गत दत्तात्रेय-स्तोत्र।

—न्यू कैट् कैट्. १।६४

अजपापद्धति

लि०—(१) श्लोक स ७०, पूर्ण। —ए० ब० ६५२१

(२) श्लोक स० १५०। —अ० ब० ११७५७

(३) श्लोक स० लगभग ३८४, अपूर्ण। —स० वि० २४९९५

[ये तीनो भिन्न-भिन्न ग्रन्थ प्रतीत होते है]

अजित आगम

लि०—शैवागमो मे अन्यतम। इसकी पटल स० ६२ और श्लोक स० १०,००० है। (दे०, अजिततन्त्र, शैव) —न्यू कैट् कैट्. १।६९

यह १० शिवागमो मे अन्यतम है। किरणागम के अनुसार इसके प्रथम श्रोता है सुशिव, उनमे श्रवण करने वाले द्वितीय श्रोता उमेश है एव उनसे तृतीय श्रोता अच्युत है।

अजितमहातन्त्र

लि०—दे०, अजित आगम।

—न्यू कैट् कैट् १।६७

अज्ञानध्वान्तदीपिका (१)

लि०—(१) १० प्रकाशो मे पूर्ण। म० म० महेशनाथ-पुत्र सोमनाथ कृत। इसमे गणेश, दुर्गा, लक्ष्मी तथा विष्णु के मन्त्र प्रतिपादित हैं। शावर मन्त्र भी १० म प्रकाश मे वर्णित हैं। ग्रन्थकार ने अपने पिता का नाम 'महेश' लिखा है—"सोमनाथो महेशज ।" किन्तु पुष्पिका मे उनके पिता का नाम कही महेशनाथ और कही महेशानन्द कहा गया है।

—ए० व० ६२४१

(२) ९ प्रकाशो मे पूर्ण। महेशभट्ट-पुत्र सोमनाथ कृत।

—र० म० ४९६६

(३) श्लोक स० ३००, अपूर्ण। —अ० व० ११३४४

(४) सोमनाथभट्ट कृत, अपूर्ण।

—स० वि० २४३१४

(५) १० प्रकाशो मे पूर्ण। महेश्वरभट्ट-पुत्र सोमनाथ भट्ट कृत। किसी-किसी ने ग्रन्थकार के पिता का नाम महेशानन्द या महेशभट्ट भी कहा है।

—न्यू कैट् कैट् १।७०

अज्ञानध्वान्तदीपिका (२)

लि०—काशीनाथ विरचिता, श्लो० स० १२०, १ म पटलमात्र, अपूर्ण।

—अ० व० १०८२१

अथर्वकतन्त्र

६४ आगमो के अन्तर्गत शिखाष्टक वर्ग मे अन्यतम।

अथर्वतत्त्वनिरूपण

लि०—(१) श्लोक सं० ७५, पूर्ण। इसकी शैली उपनिषत् की भी है। इसके प्रारम्भ मे 'अथान्योपनिषत्' कहा गया है। इसमे प्रधान रूप से कुमारीपूजा का प्रतिपादन है। कुमारीपूजन से साधक सब सिद्धियो का अधिपति होता है एव अणिमा आदि विभूतियो का स्वामी होता है इत्यादि कुमारीपूजा का फल कहा गया है।

—ए० व० ६१३५

(२) यह उपनिषत् की तरह कहा गया है। —न० द्वी० ७

अद्वयसम्पत्ति

(हर्षदत्त-पुत्र ह्रस्वनाथ कृत)

उ०—विज्ञानभैरव की शिवोपाध्याय रचित टीका मे।

अद्वयोल्लास

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

अनुत्तरप्रकाशपञ्चाशिका

लि०—विद्यानाथ कृत। काश्मीर शैव मत का प्रतिपादक। डे० का० ४३६ (१८७५-७६ का सगृहीत), रिपोर्ट २८।

अनुत्तरब्रह्मतत्त्वरहस्य

लि०—नामान्तर—ऋष्यश्रृङ्गसहिता।

—तै० म० १७६२०, २१

अनुत्तरभट्टारक (भैरवस्तोत)

नामान्तर—अनुत्तरस्तोत्र विद्याधिपति कृत।

उ०—शिव उपाध्याय कृत विज्ञान भैरवटीका, महार्थमञ्जरीपरिमल तथा तन्त्रसार मे।

अनुत्तरसंविदर्चनाचर्चा

लि०—इसमे परम शिव की यथार्थता का प्रतिपादन है। इसकी श्लोक स० ४० है।

—ट्रि० कै० १०७४ (ग), १०७५ (ख),

यह काश्मीर शैव मत का प्रतिपादक है।

—न्यू कैट्. कैट् १।१५४

अनुष्ठानपद्धति

लि०—(१) श्लोक स० ३२००। इसमे विष्णु, शिव, नारायण, दुर्गा, सुब्रह्मण्य, गणपति और शास्ता की मन्त्र-विम्व मे पूजाविधि, मन्दिर-शुद्धि, कलश प्रकार, मन्दिर उत्सवविधि, अभिषेक, भूतवलि आदि का विवरण है।

—ट्रि० कै० ९१५

तक का विवरण, देवता, गुरु और मन्त्रो का अभेद से जप, नारियल, केले, पके आम आदि द्रव्यो से किये गये होमादि से साधना का उपाय कथन, नायिकासाधन रूप काम्यविधि का प्रतिपादन एव अन्नदाकवच। —रा० ला० ४५६

(२) (ख) श्लोक स० ५००, पटल १८। —अ० ब० १२२१८

अन्त्येष्टिप्रयोग

लि०—श्लोक स० ४००, अपूर्ण। यह अन्त्येष्टिप्रयोग जिसे निर्वाण दीक्षा प्राप्त हो गयी उसके लिए है। —अ० ब० ६७४३ (ख)

अन्नपूर्णाकल्प

लि०—रुद्रयामल से गृहीत। —कैट् कैट् १।१९

अन्नपूर्णाकल्पलता

लि०—व्रजराज विरचित।

—कैट् कैट् १।१९

अन्नपूर्णाकल्पवल्ली

लि०—शिवरामेन्द्र सरस्वती विरचित।

—कैट् कैट् १।१९

अन्नपूर्णापञ्चाङ्ग

लि०—श्लोक स० २४०, पूर्ण।

—स० वि० २५०६६

अन्नपूर्णापूजापद्धति

लि०—(क) श्लोक स० २००, पूर्ण, (ख) श्लोक स० ३७०, पूर्ण, (ग) श्लोक स० ३७५, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४४८७, (ख) २४९९२, (ग) २६१९४

अन्नपूर्णामहाविद्याकल्प

लि०—विश्वसारोद्धारतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० ५८, अपूर्ण।

—स० वि० २५१४०

अन्नपूर्णासहस्रनाम

लि०—(क) रुद्रयामल से गृहीत । —कैट् कैट् २।४
(ख) विश्वसारतन्त्र से गृहीत। —कैट् कैट्. १।२०

अन्नपूर्णेश्वरीपञ्चाङ्ग

लि०—रुद्रयामल से गृहीत

—कैट्. कैट्. २।४

अन्धकागम

६४ आगमो के अन्तर्गत वहुरूपाष्टक वर्ग मे अन्यतम।

अपराजिताकल्प

लि०—अथर्वणरहस्यान्तर्गत । श्लोक स० ८४, पूर्ण।

—सं० वि० २४४१८

अपराजिताप्रयोग

लि०—श्लोक स० लगमग ८०, पूर्ण।

—स० वि० २६१२५

अपराजिताविद्या

लि०—(१) श्लोक सं० ९०, अपूर्ण। —स० वि० २४०६३
(२) —कैट्. कैट्. २।४,३।५

अपेक्षार्थद्योतनिका

उ०—राघवभट्ट कृत पदार्थादर्श (शारदातिलक की टीका) मे।
—वी० कै० १३२४, १३२६।

अभिज्ञानरत्नावली

लि०—श्लोक सं० १०,२००, अपूर्ण। श्रीविष्ण्वानन्द-पुत्र श्रीरामानन्द मूसुर तर्कालङ्कार कृत। इनमे वडे-वडे ४ रत्न (अध्याय) है। चौथे के वहुत अधिक भाग के

साथ तीन पूरे हैं। पहले रत्न मे शक्ति की सर्वोत्कृष्टता, २ रे मे मन्त्र, कुण्ड, मण्डल और वास्तुयाग, ३ रे मे दीक्षा, पूजा, न्यास आदि और ४ थे मे पुरश्चरण, बलिदान और दिनचर्या प्रतिपादित है। यह एक बृहत्काय तान्त्रिक निबन्ध है। इसमे मुख्यत शक्तिपूजा प्रतिपादित है।

—ए० ब० ६२११

अभिधार्थचिन्तामणि

लि०—श्लोक स० ३१, पूर्ण। यह लक्ष्मीधर-पुत्र विश्वेश्वर कृत तारासहस्रनाम की व्याख्या है। दे०, तारासहस्रनामव्याख्या।

—र० म० ४९७२

अभिषेकदीक्षापद्धति

लि०—श्लोक स० ८८, पूर्ण।

—स० वि० २६५९२

अभिषेकपद्धति

लि०—(१) श्लोक स० १७०, अपूर्ण। इसमे मालासस्कार, कवचसस्कार, शाक्ताभिषेक और पूर्णाभिषेक की विधि वर्णित है।

—ए० ब० ६५२९

(२) श्लोक स० १७१, विषय पूर्ववत्।

—रा० ला० १५३६

(३) श्लोक स० १४४, पूर्ण।

—स० वि० २६१७४

अभिषेकविधि

लि०—(१) उत्तरतन्त्रान्तर्गत, श्रीराजराजेश्वरी सवाद। सर्वसिद्धिप्रद अभिषेक-पटल मात्र, पूर्ण।

—ए० ब० ६१४७

(२) प्रश्नीसहिता का ७ वाँ अध्याय, श्लोक स० १००।

—अ० ब० ११२४६ (बी)

(३) अपूर्ण। —त्रं० प० १०९९

(४) उत्तरा, तन्त्रान्तर्गत श्लोक, सं० २२४, अपूर्ण।

—स० वि० २४५४०, २४५५७

(५) —कैट् कैट् ११२६

अभेदकारिका या अभेदार्थकारिका

काश्मीर शैव मत का प्रतिपादक, सिद्धनाथ कृत।

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

अमनस्कयोगशास्त्र

लि०—(१) २ अध्यायो मे पूर्ण। रचनाकाल संवत् १९१८ वि० ईश्वर और वामदेव सवाद रूप, योगपरक। इसकी एक प्रति (III बी. १४) सोसाइटी के प्राचीन संग्रह मे स्वयबोध के नाम से अभिहित है जो शिवरहस्य का एक भाग कहा गया है। इसके दो अध्यायो मे लययोग और तत्त्वज्ञान का निरूपण है।

—ए० व० ६१२४

(२) इसका दूसरा नाम स्वयंबोध है।

—कैट्. कैट्. २१५

अमरनाथपटल

लि०—पटल ११ तक। भृङ्गीशसहिता के अन्तर्गत। इसमे अमरनाथ-यात्रा का माहात्म्य वर्णित है।

—रा० पु० ५७८१

अमृतेशतन्त्र

लि०—नामान्तर—मृत्युजिदमृतीशविधान तथा मृत्युजिद्भट्टार। जिसे हाल ने क्षेमराज द्वारा शिवसूत्रविमर्शिनी मे उद्धृत कहा है, संभवत यही है। यह २४ पटलो मे पूर्ण है।

इस प्रति मे इसका रचनाकाल ३२० ने० सं० (१२०० ई०) कहा गया है। किन्तु १०वी शताब्दी के क्षेमराज ने इनका उद्धरण दिया है, इसलिए यह उससे भी प्राचीन ठहरता है।

इसमे तन्त्रावताराधिकार, मन्त्रोद्धारविधि, यजनाधिकार, दीक्षाधिकार, अभिषेक-साधनाधिकार, स्थूलाधिकार, सूक्ष्माधिकार, कालवञ्चन, सदाशिवाधिकार, दक्षिण-

चक्राधिकार, उत्तरतन्त्राधिकार, कुलाम्नायाधिकार, सर्वविद्याधिकार, सर्वाधिकार, व्याप्त्यधिकार, पञ्चाधिकार, वश्याकर्षणाधिकार, राजरक्षाधिकार, इष्टपाताद्यधिकार, जीवाकर्षणाद्यधिकार, मन्त्रविचार, मन्त्रमाहात्म्य आदि विषय २४ पटलो मे वर्णित है ।

यह अमृतेश और भैरवमृत्युजित् को एक ही देव का पर और अपर स्वरूप के रूप मे प्रतिपादन करता है। (द्रष्टव्य ने० द० Vol I भूमिका पृ० ५७)

—ने० द० २८५ (ख), (पृ० ११, १२५)

अम्बास्तव

उ०—आनन्दलहरी की अरुणामोदिनी टीका मे ।

अम्बिकापूजन

लि०—श्लोक स० लगभग ४०, अपूर्ण ।

—स० वि० २६५१६

अयोध्यामाहात्म्य (१)

लि०—(१) श्लोक स० ५००, पूर्ण । यह रुद्रयामलान्तर्गत हरगौरी सवाद रूप है। इसमे १० अध्यायो मे अयोध्या का माहात्म्य प्रतिपादित है और मुख्य-मुख्य अनेक तीर्थो का अयोध्या मे अन्तर्भाव वतलाया गया है ।

—ए० ब० ५८८७

(२) रुद्रयामलान्तर्गत —कैट् कैट् ३।७

अयोध्यामाहात्म्य (२)

लि०—(क) स्कन्दपुराणान्तर्गत । —कैट् कैट् १।२९

(ख) पद्मपुराणान्तर्गत । —कैट् कैट् २।६

(ग) ब्रह्माण्डपुराणान्तर्गत । —कैट् कैट् ३।७

अरुणामोदिनी

लि०—आनन्द,लहरी (सौन्दर्यलहरी के प्रथमाश) पर कामेश्वरकृत टीका ।

—न्यू कैट् कैट् १।२७८

यह आनन्दलहरी की कामेश्वर मिश्र कृत व्याख्या है। कामेश्वर के पिता गङ्गाधर, माता नागमाम्बा और पितामह मल्लेश्वर थे। यह प्रकाशित हो चुकी है। प्रकाशक—गणेश एण्ड को प्राइवेट लिमिटेड मद्रास, सन् १९५७।

अरुणेश्वरतन्त्र

६४ तन्त्रों के अन्तर्गत। लक्ष्मीधर के मतानुसार यह कापालिक के एकदेशी दिगम्बर-मत का है।

उ०—वामकेश्वरतन्त्र मे दी गयी तन्त्र-सूची, कृष्ण विद्यावागीश भट्टाचार्य कृत तन्त्ररत्न तथा कवीन्द्राचार्यकृत ग्रन्थ-सूची मे।

अर्गलास्तोत्र-विवरण

लि०—पूर्ण, नारायणभट्ट कृत।

—र० म० ४९५८ (ख)

अर्चन-संग्रह

लि०—प्राणपति उपाध्याय कृत। श्लोक स० १२००, आदि और अन्त मे अपूर्ण। इसमे तान्त्रिक पूजा के विभिन्न अङ्गों के प्रमाण और पद्धति निर्दिष्ट हैं। इनमे प्रारम्भिक ४ विवेक हैं। उनमे से प्रथम मे गुरु आदि पर प्रकाश डाला गया है, द्वितीय मे दीक्षा के विविध भेदो का प्रदर्शन करते हुए दीक्षा पर प्रकाश डाला गया है, तृतीय मे पुरश्चरण और पुरश्चरणसम्बन्धी विधि वर्णित है एव ४र्थ मे स्नान, सन्ध्या आदि के साथ साङ्गोपाङ्ग पूजाविधि प्रतिपादित है।

—ए० व० ६२१२

अर्चनातिलक

लि०—(१) नृसिंह वाजपेयी विरचित, श्लोक स० ५७८१३ अध्यायो मे पूर्ण। इसमे विष्णु की षट्काल पूजा वर्णित है। यह वैखानसागमसमन्वी ग्रन्थ है।

—ट्रि० कै० ९१८

(२) नृसिंह अग्निचित् द्वारा पञ्चरात्र आगम के आधार पर रचित।

—न्यू कैट् कैट् १।२८१

अर्चनात्रिंशिका

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे ।

अर्चापद्धति

लि०—श्लोक स० १५०० ।

—अ० व० ३६४०

अर्जुनपारिजातव्याख्या

लि०—अपूर्ण, यह रामचन्द्र कवि विरचित अर्जुनपारिजात, अर्जुनार्चनकल्पलता अथवा अर्जुनार्चापारिजात की व्याख्या का अल्प अश है।

—ए० ब० ६५१२

अर्जुनार्चापारिजात

लि०—(१) श्लोक स० ३००, अपूर्ण, रामचन्द्र कवि कृत ।

—अ० व० ५३५८ ।

(२) इसमे कार्तवीर्यार्जुन की पूजा प्रतिपादित है। नामान्तर—अर्जुनार्चनकल्पलता ।

—कैट् कैट् १।३१

(३) (क) रामचन्द्र विरचित, श्लोक स० ७६८, प्रथम कुसुम से पञ्चम कुसुम पर्यन्त, अपूर्ण,

(ख) रामचन्द्र कृत, श्लोक सं० ५४०, प्रथम से पञ्चम कुसुम तक ।

—स० वि० (क) २५३४४, (ख) २५६१५

अर्जुनार्चापारिजातव्याख्या

लि०—श्लोक स० २०००, पूर्ण, यह रामचन्द्र कवि प्रणीत अर्जुनार्चापारिजात, अर्जुनपारिजात अथवा अर्जुनार्चनकल्पलता पर पद्माकर विरचित व्याख्या है।

—अ० व० १२२२५

अर्थदीपिनी

लि०—अरुणाचार्य कृत । शक्तिरहस्य से सगृहीत । श्लोक स० १०० ।

—अ० व० ९६५८ (क)

अर्थरत्नावली (१)

लि०—५ पटल तक, पूर्ण। यह चतु शती (शाक्ततन्त्र) पर विद्यानन्दनाथ विरचित टिप्पणी है। दे०, चतु शती।

—म० द० ५६१९–२१

उ०—भास्कर कृत सेतुवन्ध मे।

अर्थरत्नावली (२)

लि०—अपूर्ण। यह विमलस्वात्मशम्भु कृत वामकेश्वर तन्त्र की व्याख्या (टिप्पणी) है। श्लोक स० ६५०, अपूर्ण। दे०, वामकेश्वरतन्त्र।

—ट्रि० कै० १०४१ (ख)

अर्द्धनारीश्वरप्रयोग

लि०—वशीकरण-विधि पर, श्लोक स० १०, अपूर्ण।

—स० वि० २५७५७

अवतारभेदप्रकाशिका

लि०—काशीनाथ विरचित, श्लोक स० ३००, पूर्ण। इसमे वैष्णव और शैवो के भेद और उनके लक्षण वतलाते हुए महाविद्या आदि वहुत-सी देवी और देवताओ की उत्पत्ति, विष्णु के कुछ अवतार और उनकी पूजा आदि वर्णित है।

—ए० ब० ६२२१।

अवधूत सिद्धपाद (ग्रन्थकार)

उ०—योगराज रचित परमार्थसार की टीका मे।

अशेषकुलवल्लरी

लि०—कैवल्याश्रम रचित आनन्द-(सौन्दर्य-) लहरी की टीका मे।

अश्वारूढापूजाविधि

लि०—श्लोक स० लगभग ४०, अपूर्ण।

—स० वि० २५१९५

अश्वारूढामन्त्रप्रयोग

लि०—श्लोक म० ३२, पूर्ण। इसमे वगलामुखी के यन्त्र और मन्त्र का प्रयोग भी वर्णित है।

—स० वि० २३८९०

अष्टबन्धनप्रयोग

लि०—श्लोक स० ४००।

—अ० व० ६८३० (ग)

अष्टबन्धनग्रन्थ

लि०—(१) श्लोक स० ४४००। यह कामिक (ागम?)के अनुसार सदाशिवाचार्य कृत है।

—अ० व० ६८३७

(२) शैवागम से गृहीत, (२ प्रतिया)।

—न्यू कैट् कैट् १।३३०

अष्टबन्धनविधि

लि०—(१) (क) श्लोक स० ३२०, कामिक के अनुसार।
(ख) श्लोक स० २५००, विविध आगमो से सगृहीत।

—अ० ब० (क) ६८३० (घ), (ख) ६८३५

(२) (क) अनलागम से गृहीत
(ख) वातुलागम से ,,
(ग) सहस्रागम से ,,
(घ) सूक्ष्मतरङ्ग (शैवागम) से ,,

—न्यू कैट् कैट् १।३३०

अष्टाङ्गनिर्णयामृतचषक

लि०—(क) श्लोक स० ३९०, पूर्ण।

(ख) अमृतानन्द विरचित, श्लोक स० ३४०। यह अष्टाङ्गनिर्णयामृत पर चषक नाम की व्याख्या प्रतीत होती है।

—स० वि० (क) २३८६२, (ख) २५६१७

अष्टाङ्गनिर्णयामृत व्याख्यासहित

लि०—श्लोक स० ३५०। व्याख्याकार अमृतानन्द।

—अ० व० ३४२०

अष्टादश पीठ

लि०—(१) इसमे अठारह विभिन्न देवीनाम प्रतिपादित हैं जिनसे विभिन्न पवित्र स्थानो (पीठो) पर शक्ति देवी की पूजा की जाती है तथा जिनके स्मरणमात्र से उपासकों के पाप-ताप, दारिद्रय, अपमृत्यु आदि मिट जाते हैं ।

—म० द० ५५५९

(२) —न्यू कैट्० कैट्० १।३४०

अष्टादशाक्षरमहामन्त्रपद्धति

लि०—यह गोपालमन्त्रपरक है ।

—रा० पु० ५२२७

अष्टादशोत्तरशतश्लोकी

लि०—कृष्णनगर (नवद्वीप) निवासी महाराज श्री शिवचन्द्रकृत देवीस्तुति । ये शिवचन्द्र कृष्णनगर के भूतपूर्व महाराज सतीशचन्द्र राय के प्रपितामह (पर दादा) थे । श्लोक स० २६० ।

—रा० ला० ३८८

अष्टावक्रसंहिता

लि०—(१) द्वितीय प्रकरण के दो (१ ला और २ रा) अध्यायमात्र। अपूर्ण ।

—व० प० १०९७ ।

(२) द्वितीय प्रकरण के प्रथम दो उल्लास मात्र।

—न्यू कैट् कैट् १।३४६

उ०—प्राणतोषिणी, पृष्ठ २ में ।

असाध्यसाधनविधि

लि०—श्लोक स० लगभग ३८, पूर्ण ।

—स० वि० २५८१०

असिताङ्गभैरव

यह ६४ आगमो के अन्तर्गत भैरवाष्टक वर्ग मे अन्यतम है।

उ०—लक्ष्मीधर रचित सौन्दर्यलहरी टीका मे ।

असिताङ्गादियामल

लि०—फेत्कारिणीतन्त्र से गृहीत।

—कैट् कैट् १।३७

असितादेवीपूजाविधि

लि०—श्लोक स० २३०, पूर्ण।

—स० वि० २६४२१

आकाशभैरवकल्प

लि०—(१) प्रत्यक्ष सिद्धिप्रद उमामहेश्वर सवादरूप। श्लोकसख्या २०००। और ७८ अध्यायो मे पूर्ण। यह मन्त्रशास्त्र साङ्ग, सलक्षण, वेदसारभूत तथा सब जीव-जन्तुओ का अभीष्टप्रद और ज्ञानप्रदायक एव साधक-सुखदायी कहा गया है। देवी पार्वतीजी के महेश्वर से यह प्रार्थना करने पर कि हे दयानिधे, जो शास्त्र लोक मे अत्यन्त गुप्त हो, जो सब अभीष्टो को देने वाला हो और जो साधकश्रेष्ठो का हितकारी हो उसे आप कहने की कृपा करें—महेश्वर ने इसका उपदेश किया। इसके ७८ अध्यायो के मुख्य विषय ये हैं—उत्साह-प्रक्रम, यजनविधि, उत्साहाभिषेक, मन्त्र-यन्त्र प्रक्रम, चित्र-माला मन्त्र, वश्य और आकर्षण प्रयोग, मोहन एव द्रावण प्रयोग, स्तम्भन और विद्वेषण तथा प्रयोग, उच्चाटन-निग्रह प्रयोग, भोगप्रद विधि, आशुतार्क्षविधि, आशु गारुड प्रयोग, शिष्याचारविधि, शरभसालुवपक्षिराजकल्प, शरभेशाष्टकस्तोत्र आदि, रक्षाभिषेक-विधि, वलिविधान, मायाप्रयोगविधि, आचारविधि, मातृकावर्णन, भद्रकालीविधि, औषधविधि, शूलिनी दुर्गा कल्प, शूलिनोविधि, वीरभद्रकल्प, जगत्क्षोभण मालामन्त्र, त्रपाविधि, भैरवविधि, दिक्पालविधि, व्याधिकल्पन, मृत्युविधि, मन्मथविधि, चामुण्डा-विधि, मोहिनीविधि, द्राविणीविधि, शब्दाकर्षिणीप्रयोग, भाषासरस्वतीप्रयोग, महासर-स्वतीप्रयोग, महालक्ष्मीप्रयोग, मायाविधि, पुलिन्दिनीविधि, महाशान्त (न्ति ?) विधि, सक्षोभिणीविधि, धूमावतीविधि, धूमावतीप्रयोग, चित्र-विद्याविधि, देशिकस्तोत्र, दु स्वप्न-नाशन मन्त्रविधि, पाशविमोचनविधि, औषधमन्त्रविधि, कालमन्त्रविधि, षण्मुखमन्त्र-विधि, त्वरिताविधि, वडवानलभैरवविधि, ब्राह्मी प्रभृति सप्तमातृ विधि, नारसिंहीविधि एव शरभहृदय आदि।

—ने० द० ३।२४६ (ग)

(२) (क) श्लोक स० २४००, अध्याय ७८, उपदेशक शङ्कर।

(ख) श्लोक स० १०००, अध्याय ३६।

—अ० व० (क) ५६०१, (ख) १०६६८

(३) महाशैव तन्त्र से गृहीत। २० उपदेशो मे पूर्ण ।

—कैट् कैट् १।३८,२।९

(४) श्लोक स० १३७५, अध्याय १—४५ तक, महाशैवतन्त्रान्तर्गत। अपूर्ण।

—स० वि० २६३७८

उ०—प्राणतोषिणी मे।

आकाशभैरवतन्त्र

लि०—(१) (क) शिव-पार्वती सवादरूप, श्लोक स० ३९००, १३६ पटलो मे पूर्ण। इस ग्रन्थ मे मुख्य रूप से साम्राज्यलक्ष्मी की पूजा का वर्णन है। तदनन्तर राजप्रासाद किस प्रकार का वनाना चाहिए, किस प्रकार के गज और शस्त्रास्त्र उसमे रखने चाहिए, यह वर्णन है। २९ पटलो मे पुरलक्षण, उसके मार्ग, वाजार, और गृहो का सन्निवेश किस प्रकार का हो यह वर्णित है। प्राचीर के वीच मे राजा अपना महल वना कर प्राचीर के चौगिर्द जामाताओ, पुत्रो, वन्धु-वान्ववो और सम्वन्धियो के गृहो का निर्माण करावे। उसके चारो ओर अपने रथ के सचारयोग्य मार्ग वनावे। प्राचीर के ऊँचे फाटक के निर्माण के साथ-साथ राजमार्ग के चारो ओर पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण मे विभिन्न वाजारो का निर्माण करावे।

(ख) अपूर्ण।

(ग) पटल २१ से ३२ तक, अपूर्ण।

(घ) पटल १२३ से १३३ तक, अपूर्ण ।

(ङ) पटल १२९, अपूर्ण।

—तं म ६७०७ (क), ६७०८ (ख), ६७०९ (ग), ६७१० (घ), ६७१६ (ङ),

(२) यह इसी तन्त्र का उमामहेश्वरसवादात्मक २ रा भाग है। इसमे छोटे-छोटे ७२ अध्याय है। विभिन्न देवताओ की पूजा प्रतिपादित है। —तं० म० ६७१५

(३) शरभसहस्रनाममात्र। —कैट् कैट् १।३८

शरभकवचमात्र। —कैट् कैट् २।८

शरणपूजापद्धतिमात्र। —कैट् कैट् ३।९

(४) (क) नो स भाग (vol) ११ की भूमिका

(ख) नो स सेकण्ड सीरोज भाग (vol) २, पृष्ठ २०७, २०८

उ०—प्राणतोषिणी मे।

आकाशभैरवमन्त्र

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।६

आकाशभैरवपूजाविधि

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।६

आकाशभैरवागम

लि०—(१) गजशान्तिमात्र। —कैट् कैट् १।३८

(२) —न्यू कैट् कैट् २।६

आकाशभैरवीमन्त्र

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।६

आकुलागमतन्त्र

लि०— —दे० अकुलागमतन्त्र। —न्यू कैट् कैट्. २।६

आखुनाशकतन्त्र

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।७

आगमकल्प

लि०—गङ्गापूजा का प्रतिपादक। —न्यू कैट् कैट् २।११

आगमकल्पद्रुम

लि०—जगन्नाथ-पुत्र गोविन्द विरचित। रचनाकाल १४२४ शकाब्द (१५०२ ई०)।

उ०—(१) पुरश्चर्यार्णव, तन्त्रसार, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, आगमकल्पलता, मन्त्र-रत्नाकर, पूर्णाभिषेकदीपिका, लक्ष्मीधरकृत सौन्दर्यलहरीव्याख्या तथा ताराभक्ति-सुधार्णव मे।

आगमकल्पलता

लि०—(१) (क) श्लोक सं० लगभग ४३९६, पूर्ण।

(ख) श्लोक सं० १०५, केवल आरंभ के पन्ने मात्र। रचयिता यदुनाथ शर्मा। अपूर्ण। —र० म० (क) ४९१४, (ख) ४९८८

(२) यदुनाथ विरचित यह संभवतः आगमकल्पवल्ली से अभिन्न है। —कैट् कैट् १।३९, २।८

(३) श्लोक सं० १४६, अपूर्ण।

—स वि २४४८२

(४) —न्यू कैट् कैट् २।१२

उ०—मन्त्रजपविधि में।

आगमकल्पलतिका

लि०—(१) श्लोक सं० ८०००, आदि और अन्त में खण्डित, अपूर्ण। यदुनाथ चक्रवर्ती विरचित।

—अ० ब० ११३४८

(२) यदुनाथ विरचित—दे० नो० सं० भाग ५ की भूमिका पे० ९। —कैट् कैट् ३।९

(३) २७ पटलों में पूर्ण। —रा० ब० ८१८

(४) —ज० का० २३७

आगमकल्पलता और आगमकल्पलतिका ये दोनों अभिन्न हैं।

(५) —न्यू कैट् कैट् २।१२

आगमकल्पवल्ली

लि०—(१) श्लोक सं० ३५०, अपूर्ण। यदुनाथशर्मा द्वारा विरचित यह ग्रन्थ २५ पटलों में पूर्ण है। इनकी एक २५ पटल की पूर्ण प्रति सोसायिटी के पुराने संग्रह में है। इनमें विविध देव-देवियों, विशेषतः महाविद्याओं की पूजा का विवरण है। वर्तमान पुस्तक में सिर्फ २ पूरे और तीसरे पटल का कुछ ही अंश है। ग्रन्थकार ने प्रपञ्चसारसिद्धान्त, शारदातिलक, सारसमुच्चय, दीपिका, लघुदीपिका, पूजाप्रदीप, पुरश्चरणचन्द्रिका, मन्त्रदर्पणसिद्धान्त, मन्त्रनेत्र, श्रीरामार्चनचन्द्रिका, मन्त्रमुक्तावली, रत्नावली, ज्ञानार्णव,

सनत्कुमारतन्त्र, नारदीयचतु शती, मोमशमुमत, अगस्त्य-सहिता आदि ग्रन्थो का उल्लेख किया है। —ए० व० ६२१९

(२) श्लोक स० १०००, अपूर्ण (अन्त मे खडित) —अ० व० ११७०८

(३) श्लोक स० १९८०, अपूर्ण। —स० वि० २६१८५

आगमकौमुदी

लि०—(१) महामहोपाध्याय रामकृष्ण कृत। श्लोक स० १८४८, रचनाकाल १६२१ शकाब्द, पूर्ण। यह ग्रन्थ तन्त्र की सावारण विधियो और विविध देवी, देवताओ की पूजा का प्रतिपादन करता है। —ए० व० ६२१३

(२) इसमे शीघ्र आरोग्य लाभ करानेवाली, धनसम्पत्तिप्रद तथा शत्रु का शीघ्र विनाश करनेवाली विद्या कही गयी है। यह शाक्ताचार पर विभिन्न तन्त्रो से सगृहीत ग्रन्थ है। इसमे सक्षेपत शाक्त सिद्धान्तो का स्पष्टीकरण तथा शाक्त देवियो के पूजा के प्राय सभी मुख्य-मुख्य मन्त्र दिये गये है। इसके प्रवान विषय—पहले अकथहचक्र, नक्षत्र-चक्र, राशिचक्र, भूतचक्र, नाडीचक्र, अकडमचक्र, जातिचक्र तथा ऋणिधनिचक्र यो प्रतिपादित है। अदीक्षित पुरुष रूप पशु और गुरुक्रम लक्षण दिये गये है। तदनन्तर पञ्चदेवपूजा, स्त्री और शूद्र को प्रणवरहित मन्त्रदान, शूद्र को मन्त्रदान निषेध, सिद्ध मन्त्र मे कुछ विचार नही, दीक्षा मे चान्द्र और सौर का विचार, हरचक्र, चक्रशुद्धि का प्रकरण, मन्त्रो के दस सस्कार, दीक्षा-प्रकरण, षट्चक्रनिरूपण, आधारशक्ति-ध्यान, आवाहनमुद्रा, शिवपूजा-प्रकरण, स्वाहा-स्वधा-विचार, माला-लक्षण, जप-लक्षण, माला-सस्कार, प्रणाम्-लक्षण, मन्त्र-ग्रहणविधि, उपदेश-प्रकरण, राम और कृष्ण की उपासना के मन्त्र, राम और कृष्ण की गायत्री, लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा के मन्त्र, काली आदि शक्तियो के मन्त्र, भुवनेश्वरी के मन्त्र, मन्त्रो के विविध भेद, मालामन्त्र, सुन्दरी, तारा, श्यामा, अनिरुद्ध, प्रचण्ड-चण्डिका तथा गणेश के मन्त्र, उपविद्याएँ, योगिनी, मृत्युञ्जय, कर्णपिशाची, हनुमान् तथा गरुड के मन्त्र, यन्त्रो के सस्कार, मन्त्रगायत्री, भूमि पर माला गिरने से हुए दोष, प्रकीर्ण विषय कथन, प्रत्यङ्गिरा-कथन आदि। —रा० ला० १५४९

(३) रामकृष्ण विरचित —कैट् कैट् १।३९

(४) रामकृष्ण विरचित —न्यू कैट् कैट् २।१२

आगमचन्द्रिका (१)

लि०—कायस्थ कृष्णमोहन रचित, श्लोक स० १९५०, अन्त मे खडित। दीक्षा-प्रकार-नियम नामक प्रथम उल्लास की पुष्पिका दी गयी है। फिर आगे उल्लासो की

पुष्पिकाएँ नही दिखायी देती। बहुत-सी अवान्तर पुष्पिकाएँ दी गयी हैं। जैसे इति काली-प्रकरणम्, इति ताराप्रकरणम् इत्यादि। इसमे दीक्षा के नियमो का प्रतिपादन किया गया है तथा काली, तारा, श्रीविद्या, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता और लक्ष्मी की पूजा का विस्तृत विवरण दिया गया है।

प्रथम उल्लास की पुष्पिका मे लिखा है—'श्रीकृष्णमोहनकृतागमचन्द्रिकाया उल्लास एव प्रथमो जनमानसतामसघ्न ।

—ए० ब० ६२०९

आगमचन्द्रिका (२)

लि०—(१) श्लोक स० १५२५, अपूर्ण। यह रघुनाथ तर्कवागीश-पुत्र रामकृष्ण विरचित तान्त्रिक सग्रह ग्रन्थ है। इसमे दीक्षा-विधि, स्नान-विधि, विविध देवियो की पूजा तथा विविध चक्रो का निरूपण है। इसके आरभ मे स्वय ग्रन्थकार ने लिखा है—श्रीरामकृष्ण. सक्षिप्य तनोत्यागमचन्द्रिकाम्। ऊपर लिखे आगमचन्द्रिका ग्रन्थ से यह भिन्न है। यह रघुनाथ तर्कवागीश कृत आगमतत्त्वविलास का सक्षेप है।

—रा० ला० २६९

(२) रामकृष्ण विरचित, रचनाकाल १७२२ ई० —कैट् कैट् ११३९

(३) रामकृष्ण तर्कालङ्कार कृत। ग्रन्थकार के पिता द्वारा रचित आगमतत्त्व-विलास का सक्षेप। —न्यू कैट् कैट् २११२

आगमचिन्तामणि

उ०—मन्त्रमहार्णव मे।

आगमतत्त्वविलास

लि०—(१) नापाडि ग्रामनिवासी रघुनाथ तर्कवागीश विरचित। श्लोक स० १४,४००। यह ग्रन्थ ५ परिच्छेदो मे पूर्ण है। ग्रन्थकार ने ग्रन्थान्त मे अपनी वशावली का भी उल्लेख किया है—सर्वानन्द मिश्र से बलभद्र, उनसे काशीनाथ, काशीनाथ से चन्द्रचन्द्र, उनसे सकल शास्त्र पारगत सुकवि शिवराम चक्रवर्ती, शिवराम चक्रवर्ती से आगतमहाशक्ति रघुनाथ तर्कवागीश। उन्होने शकाब्द १६०९ (१६८७ ई०) चैत्र मे इसकी रचना पूर्ण की। यह एक विशाल तान्त्रिकसारभूत ग्रन्थ है। इसमें दीक्षा, योग आदि जैसे साधारण विषय प्रतिपादित हैं साथ ही विभिन्न देवताओं के पूजा आदि विषय वर्णित हैं। ग्रन्थकार के पुत्र रामकृष्ण ने इसका सार आगमचन्द्रिका के नाम से १७२५ शकसवत्सर मे (ए० ब० ६२१४ के अनुसार) लिखा, किन्तु आगमचन्द्रिका मे स्वय रामकृष्ण ने "मुनिवेदनृपे

शके" लिखकर १६३७ शकसवत्सर ग्रन्थ-निर्माणकाल बतलाया है। साख्यकारिका पर साख्यतत्त्वविलास नाम की टीका ग्रन्थकार की एक कृति और है।

—ए० ब० ६२१४

(२) श्लोक स० १३२३७। ५ परिच्छेदो मे पूर्ण है। इसमे सर्वप्रथम प्रमाणरूप से उद्धृत तन्त्र-ग्रन्थो के नाम दिये गये हैं। उनकी सख्या १५६ है। तदनन्तर—गुरूपदेशादि-विधि, मन्त्र विचार-विधि, दीक्षा-विधि, दीक्षा मे काल शुद्धि आदि का निरूपण, चक्रभेद कथन शुद्ध मन्त्र विचार, मन्त्रो के दस सस्कार, अक्षरनिर्णय, मन्त्राभिधान कथन, लक्ष्मीवीजाभि-धान वर्णन, स्त्रीवीजाभिधान कथन। वर्णाभिधान, वर्गाभिधान कथन, बीज निर्णय की व्यवस्था, बीज के अर्थ का अभिधान, दीक्षापद का अर्थ निरूपण, स्त्री और शूद्र की दीक्षा मे मन्त्र की व्यवस्था, पञ्चाङ्ग शुद्ध दीक्षा का निरूपण, अरिमन्त्र के त्याग की व्यवस्था, महाविद्या-निर्णय, मन्त्र की उपासना का विवेक, मन्त्र चैतन्य प्रकरण, सक्षेपदीक्षा का प्रकरण, करमाला का निर्देश, माला के सूत्र, नियम आदि का निरूपण, माला धारण मे अगुलिनियम कथन, रुद्राक्षमाला की विधि, महाशख की माला के सस्कार, कपाल पात्र की शुद्धि का निरूपण, त्रिलोही-मुद्रा का क्रम वर्णन, वलिदान का क्रम कथन, वलिदान मे अपने शरीर का रुधिर प्रदान करने की व्यवस्था, देवता के भेद से वाम और दक्षिण आचार की व्यवस्था, जल मे आसन नियम, पूजा आदि मे गुण-नियम, षोडशोपचार नियम, दशोपचार नियम, पञ्चोपचार नियम, अष्टादशोपचार नियम, यन्त्रधारण की विधि, यन्त्र लिखने के पदार्थों का नियम, मारणविधि, आकर्षणविधि, वशीकरणविधि, विद्वेषणविधि, उच्चाटन, स्तभन, अभिचार आदि की विधियाँ, षट्कर्मलक्षण, भूतोदय-विधि, योनिमुद्रा आदि के मन्त्रार्थ का निरूपण, भूतलिपिविधि, युग के भेद से जपादिका नियम; कूर्मचक्र का निरूपण, रहस्य-पुरश्चरणविधि, वीरसाधनविधि, चितादिसाधन, शवसाधन, योगिनीसाधन, मनोहरा योगिनीसाधन, कनकावती योगिनीसाधन, कामेश्वरी योगिनी साधन, रतिसुन्दरी योगिनी-साधन, पद्मिनी आदि योगिनियो के साधन की विधियाँ, योगिनियो के आकर्षण की मुद्रा का क्रम कथन, शङ्कटा किन्नरीसाधन, यक्षकन्यासाधन, पिशाचादि के साधन की विधि, योगिनी आदि के साधन काल का निरूपण, दृष्टिसिद्धिनिरूपण, मन्त्रसिद्धि के लक्षण, मन्त्र के दोष और दोषाभाव, मन्त्र के दोष की शान्ति की विधि, वालक मन्त्र के सस्कार की विधि, पीठ-स्थान आदि के नियम, स्वयभू कुसुम आदि का विवेचन, विभिन्न कुसुमो के रक्षण की विधि, यन्त्रो के नियमादि का वर्णन, भावरहस्य कथन, अन्तर्याग कथन, कुमारीपूजा-विधि, दूतीयागविधि, कुलपूजाक्रम, मदिरादिशोधनविधि। शक्तिशोधनविधि, वीर-

पुरश्चरणविधि, पान के अधिकारियो का निरूपण, मास आदि की व्यवस्था, वामाचार के अनुकल्पो का निर्देश, यन्त्र, पात्र आदि का निर्णय, चक्रपादोदक-माहात्म्य आदि, यन्त्रादि का नाश होने पर प्रायश्चित्त, तत् तत् पूजाओ के आधार का निरूपण, पङ्कशुद्धिनिरूपण, कुण्डनिरूपण, स्थण्डिलविधि, होमविधि, स्रुक्स्रुवादि-लक्षण, होमद्रव्यनिरूपण, अग्नि-स्थापनादि-विधि, अग्नि के नामकरणादि की विधि, शाक्ताभिषेकविधि, मार्तण्डभैरव-पूजा-विधि, गणेश, सूर्य आदि की पूजाविधि, इन्द्रादि की पूजाविधि, विष्णुपूजाविधि, रत्ना-भिषेकविधि, दधिवामनपूजा, हरगौरीपूजाविधि, अर्धनारीश्वरपूजाविधि, चण्डाग्रशूल-पाणिपूजाविधि, मञ्जुघोषपूजाविधि, मृतसजीविनी विद्या का वर्णन, वटुकपूजा, लक्ष्मी-पूजा, महालक्ष्मीपूजा, धनदापूजा, वागीश्वरीपूजा, भुवनेश्वरीपूजा, अन्नपूर्णापूजा, त्रिपुटा-पूजा, त्वरितापूजा, शूलिनीपूजा, दुर्गापूजा, जयदुर्गा, महिषमर्दिनी, काली आदि की पूजा-विधियाँ, गुह्यकाली, भद्रकाली, महाकाली, श्मशानकाली आदि की पूजा का क्रमकथन, तारापूजा का क्रमकथन, आठ ताराओ के विभिन्न मन्त्रो का कथन, प्रचण्ड चण्डिका का पूजाक्रम कथन, छिन्नमस्ता, भैरवी, त्रिपुरसुन्दरी, श्रीविद्या आदि की पूजा का क्रम कथन, शङ्कटा, वगला, मातङ्गी, उच्छिष्टचाण्डालिनी, धूमावती, कर्णपिशाची आदि की पूजा का क्रम कथन, विषहराग्निमन्त्र, आर्द्रपटीविधि, हरिद्रागणेश-मन्त्र आदि सैकडो विषय वर्णित है।   —नो० स० १।२३

(३) यह ग्रन्थ दो खण्डो मे विभक्त है। इस प्रति मे केवल १ म खण्ड का ही विवरण है। २य खण्ड सम्प्रति उपलब्ध नही है। पन्ने २०४, श्लोक स० ७३७७। यह विशाल तन्त्र-ग्रन्थ सम्पूर्ण तन्त्र और आगम ग्रन्थो का सारभूत है। ग्रन्थकार ने इसकी रचना मे लग-भग १६० तन्त्र और आगम ग्रन्थो का अवलोकन कर उनसे सहायता ली है॥। ग्रन्थारम्भ मे सब ग्रन्थो की लम्बी सूची स्वय ग्रन्थकार ने दे दी है। तदनन्तर विषयो की सूची भी ग्रन्थकार ने ग्रन्थारम्भ मे सन्निविष्ट कर दी है। वीज वर्ण निर्णय, सृष्टि का क्रम,

॥ अत्रोल्लिखिततन्त्रादिनामानि यथा—

स्वतन्त्रतन्त्रं फेत्कारीतन्त्रमुत्तरतन्त्रकम् । नीलतन्त्र वीरतन्त्रं कुमारीतन्त्रमुज्ज्वलम् ॥
कालीनारायणीतन्त्रे तारिणीतन्त्रमुत्तमम । बालातन्त्रञ्च समयातन्त्रं भैरवतन्त्रकम् ॥
भैरवीत्रिपुरातन्त्रे वामकेश्वरतन्त्रकम् । कुक्कुटेश्वरतन्त्रञ्च मातृकातन्त्रमेव च ॥
सनत्कुमारतन्त्रञ्च विशुद्धेश्वरतन्त्रकम् । सम्मोहनाख्यतन्त्रञ्च गोतमीयञ्च तन्त्रकम्॥
वृहद्गौतमीयतन्त्रं भूतभैरवतन्त्रकम् । चामुण्डापिङ्गलातन्त्रे वाराहीतन्त्रकं तथा ॥

दीक्षा-प्रकरण, दीक्षा दो प्रकार की है नित्य और काम्य, दीक्षापद की निरुक्ति, गुरुलक्षण,

मुण्डमालाख्यतन्त्रञ्च योगिनीतन्त्रमुत्तमम् । मालिनीविजयं तन्त्रं तन्त्र स्वच्छन्दभैरवम् ॥
महातन्त्र शक्तितन्त्रं तन्त्र चिन्तामणि परम् । उन्मत्तभैरवं तन्त्रं त्रैलोक्यसारतन्त्रकम् ॥
विश्वसाराह्वयं तन्त्रं तथा तन्त्रामृताभिधम् । महाफेत्कारीयतन्त्रं वायवीयञ्च तोडलम् ॥
मालिनीललितातन्त्रे त्रिशक्तितन्त्रक तथा । राजराजेश्वरीतन्त्रं महामोहस्वरोत्तरम् ॥
गवाक्षतन्त्रं गान्धर्वं तन्त्रं त्रैलोक्यमोहनम् । हसमाहेश्वर हंसपरमेश्वरतन्त्रकम् ॥
कामधेन्वाख्यतन्त्रञ्च तन्त्र वर्णविलासकम् । मायातन्त्र मन्त्रराज कुब्जिकातन्त्रमुत्तमम् ॥
विज्ञानलतिका लिङ्गागमं कालोत्तर तथा । ईशानसंहिता तद्वत् श्रीविनायकसंहिताम् ॥
अगस्त्यसहिता पुण्या नन्दिकेश्वरसहिताम् । वशिष्ठसहितां दक्षसंहितां मनुसहिताम् ॥
ब्रह्मणः सहिता दिव्यां सनत्कुमारसहिताम् । कुलानन्दसहिताञ्च वैशम्पायनसहिताम् ॥
नृसिंहतापनीयञ्च दक्षिणामूर्तिसहिताम् । ब्रह्मयालकञ्चादियामलं रुद्रयामलं ॥
वृहदयामलक सिद्धयामल कल्पसूत्रकम् । मत्स्यसूक्तं कल्पसूक्त कामराज शिवागमम्॥
उड्डीशञ्च कुलोड्डीशमुड्डीशं वीरभद्रकम् । भूतडामरक तद्वद् डामरं यक्षडामरम् ॥
कालिकाकुलसर्वस्वं कुलसर्वस्वमेव च । कुलचूणामणि दिव्यं कुलसार कुलार्णवम् ॥
कुलामृतकुलावल्यौ तथा कालीकुलार्णवम् । कुलप्रकाश वाशिष्ठं सिद्धसारस्वत तथा ॥
योगिनीहृदयं कालीहृदयं मातृकार्णवम् । योगिनीजालकुरकं तथा लक्ष्मीकुलार्णवम् ॥
तारार्णव चन्द्रपीठ मेरुचन्द्र चतुःशतीम् । तत्त्वबोध महोग्रञ्च स्वच्छन्दसारसग्रहम् ॥
ताराप्रदीपं सङ्केतचन्द्रोदयमतिस्फुटम् । षट्त्रिंशत्तत्त्वक लक्ष्यनिर्णय त्रिपुरार्णवम् ॥
विष्णुधर्मोत्तर मन्त्रदर्पण वैष्णवामृतम् । मानसोल्लासकं पूजाप्रदीपं भक्तिमञ्जरीम्॥
भुवनेश्वरीं पारिजातं प्रयोगसारमुत्तमम् । कामरत्न क्रियासार तथैवागमदीपिकाम् ॥
भावचूडामणिग्रन्थ तन्त्रचूडामणिं परम् । वृहच्छ्रीक्रमसज्ञञ्च तथा श्रीक्रमसज्ञकम् ॥
सिद्धान्तशेखर ग्रन्थ ता गणेशविमर्शिनीम् । मन्त्रमुक्तावलीं तत्त्वकौमुदीं तन्त्रकौमुदीम् ॥
मन्त्रतन्त्रप्रकाशाख्यं श्रीरामार्चनचन्द्रिकाम् । शारदातिलक ज्ञानार्णव सारसमुच्चयम् ॥
कल्पद्रुमं ज्ञानमाला पुरश्चरणचन्द्रिका । आगमोत्तरकं तत्त्वसागर सारसग्रहम् ॥
देवप्रकाशिनीं तन्त्रार्णवञ्च क्रमदीपिकाम् । तारारहस्य श्यामाया रहस्यं तन्त्ररत्नकम् ॥
तन्त्रप्रदीपं ताराया विलास विश्वमातृकाम् । प्रपञ्चसार तं तन्त्रसार रत्नावलीं तथा ॥
एवं षष्ट्युत्तरशत ग्रन्थाना स्फुटमागमे । कल्पान् कुमारीकल्पादीन् श्रुतीश्चोपनिषद्गणान् ।
ज्योति स्मृतिपुराणानि पाणिनीयादिकौशलम् ॥ इति ॥

गुरुदोष, पिता, पितामह तथा अपने से न्यून अवस्था आदि वाले से दीक्षा ग्रहण का निषेध, स्वप्नलब्ध मन्त्र की विधि, वहाँ गुरु यदि मिल गया हो तो कर्तव्य कर्म का कथन, शिष्य-लक्षण, दीक्षा मे मास आदि का नियम, समय की अशुद्धि का निरूपण, देवपर्व कथन, षट्-पदचक्र, अष्टवर्गचक्र, नक्षत्रचक्र, तारामैत्री-विचार, अकथहादिचक्र, ऋणिधनिचक्र का दूसरा प्रकार, हरचक्र, उपासना-निर्णय आदि सैकडो विषय वर्णित है।

—रा० ला० ३१८६

(४) रघुनाथ तर्कवागीश कृत। —कैट् कैट् ३।९

(५) शिवराम-पुत्र रघुनाथ तर्कवागीशकृत, १६८७ ई मे रचित

—न्यू कैट् कैट् २।१२

उ०—नारायणकृत तन्त्रसारसग्रह की भूमिका मे।

आगमतत्त्वसंग्रह

लि०—(१) श्लोक स० ९००, अपूर्ण, २ य परिच्छेद मात्र है। यह ग्रन्थ दो परिच्छेदो मे पूर्ण है। १ म परिच्छेद मे आगमो मे प्रामाण्य सिद्ध किया गया है, २य परिच्छेद मे आगम-प्रमेय का सक्षेपत विवेचन किया गया है। इसके निर्माता सौभाग्य-कल्पतरु के रचयिता माधव के प्रशिष्य, कल्पलतिका के रचयिता क्षेमानन्द के शिष्य महाराष्ट्र वश मे उत्पन्न तुङ्गभद्रातीरनिवासी विश्वरूप केशव शर्मा है। इसका निर्माण काल आश्विन-शुक्ल ५ कलि सवत्सर ४९३३ है। इसमे आगम-तत्त्वो का विशद और उपयोगी सग्रह है। इसमे प्रमाण रूप से उद्धृत आगम और तन्त्र के ग्रन्थो की सख्या ६० के लगभग है।

—ए० व० ६२१५

(२) प्रणम्य सर्वात्ममयी महेश्वरी गुरूश्च सर्वान् विदुष कृताञ्जलि ।
द्वितीयभाग प्रकरोमि मेयप्रकाशक ह्यागमतत्त्वसग्रहे ॥

इसमे भी केवल प्रमेय-प्रकाशक २य ही परिच्छेद है। तन्त्रो मे तीन काण्डो द्वारा निरूपित कर्म, उपासना और ज्ञान मे से प्रत्येक का स्वरूप इसमे बतलाया गया है।

—रा० ला० १७६०

(३) केशव विश्वरूप विरचित। —कैट् कैट् १।३९

(४) तुङ्गभद्रा निकट निवासी महाराष्ट्र केशव विश्वरूप, जो सौभाग्यकल्पलतिका के रचयिता क्षेमानन्द के प्रशिष्य तथा सौभाग्यकल्पद्रुम के रचयिता माधवानन्दनाथ के शिष्य थे, द्वारा कलि सवत्सर ४९३३ मे विरचित। —न्यू कैट् कैट् २।१३

आगमतन्त्र

लि०—वाराहीकवच मात्र। —न्यू कैट् कैट् २।१३

आगमदीक्षाविधि–आगमाह्निक

लि०—अघोरशिवाचार्य कृत। इसका एक खण्ड क्रियाक्रमद्योतिका है।
—न्यू कैट्. कैट् २।१३

आगमदीपिकातन्त्र

उ०—आगमतत्त्वविलास मे।

आगमद्वैतनिर्णय

लि०—विद्यापति ठाकुर(?) कृत।
—न्यू कैट् कैट् २।१३

आगमपुराण

(गोपीप्रेमामृत मात्र)

लि०—(१) श्लोक स० ३२। यह श्रीकृष्णार्जुन सवादरूप है। इसमे गोपियो की भगवद्भक्तो मे परम श्रेष्ठता प्रतिपादित है। —नो० स० ३।४१
(२) —न्यू कैट् कैट्. २।१३

आगममन्त्रदीपिका

लि०—यशोधर मिश्र कृत, श्लोक स० १२६, केवल ८ वाँ पटल, पूर्ण।
—स० वि० २५८१७

आगमरहस्य

(अथवा आगमरहस्यस्तोत्र)

लि०— —कैट् कैट् १।३९
उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

आगमशिरोमणि

उ०—दक्षिणामूर्ति कृत उद्धारकोश मे।

आगमसंक्षिप्तसार

लि०—द्विजानन्द कृत, २२ पटलो मे पूर्ण।

—न्यू कॅट् कॅट् २।१४

आगमविवेक

(द्वितीय रामकण्ठ कृत)

उ०—नादकारिका मे।

आगमशास्त्रविवरण

लि०— —त्रि० रि० ५४

आगमसंग्रह

नामान्तर—एकजटाकल्प

लि०—श्लोक स० ४९६१, १६ पटलो मे पूर्ण। इसके निर्माता कात्यायनीचरण-नखचन्द्र चकोरचित्त श्रीरामकान्त-पुत्र है। इन्होने बहुत तन्त्रो का अवलोकन कर श्रीतारा के विषय मे होने वाले सशयो का निरासक यह एकजटाकल्प रचा।

विषय—तारा, उग्रतारा, एकजटा आदि के एकरूप होने पर भी नामभेद से भेद निरूपण, उनके मन्त्रो मे भेद कथन, एकजटा के अधिकार मे प्रात कृत्य आदि का निरूपण, सहस्रार का विवेचन, कुण्डलिनी के अवस्थान आदि का निरूपण, प्रात कृत्य किये बिना पूजा करने मे दोष कथन, पशु और वीर के प्रात कृत्य मे विशेष कथन, पतित की सन्ध्या-व्यवस्था, सक्रान्ति आदि मे वैदिक सन्ध्या का निषेध होने पर भी तान्त्रिक सन्ध्या की आवश्यकता, सूतक आदि मे भी तान्त्रिक सन्ध्या, पूजा आदि की कर्तव्यता का निरूपण, तान्त्रिक तर्पणविधि, कामनाओ के भेद से वस्त्र के परिमाण का कथन, पीठ-चिन्तनविधि, पुष्पादि शोधनविधि, विजयाविधि, उसके पीने के समय आदि का निरूपण, मुद्राविधि, जीव-न्यासादिविधि, षोढा, गुह्यषोढा, व्यापकादि न्यासो की विधि, वैध हिंसा विचार, रुधिर दान विधि, लेपधारणादि विधि, त्रिविध रात्रिपूजा विधि, महानिशादिनिरूपण, ब्राह्मण की मद्यपान आदि विधि पर विचार, प्रायश्चित्तादि, शोधनविधि, चितासाधन-विधि, चिता के लक्षण आदि कथन, शवसाधनादिविधि कथन, पञ्च मुद्रादि साधनविधि, मन्त्रसिद्धि के उपाय कथन, शक्तिकवचादि निरूपण, लतासाधनविधि, शक्ति के गमनागमन का विवेक

कथन, महाशख यन्त्रादिविधि, वज्र पुष्पादिशोधनविधि, उग्रतारा, नीलसरस्वत्यादि के कवच कथन, कौलप्रायश्चित्त कथन, पूर्णाभिषेकादि विधि। —रा० ला० २२४७

(२) आगमसग्रहे एकजटाकल्प । रामकान्त और कात्यायनी के पुत्र द्वारा विरचित। —कैट् कैट्. १।३९

आगमसंहिता

उ०—तन्त्रसार मे।

आगमसार

लि०—(१) विविध विद्याविद्योतित महादानी श्रीरामभद्र भट्टाचार्य के छठे पुत्र श्री रघुमणि इसके निर्माता हैं। श्लोक स० ३०५२। यह तन्त्रशास्त्र मे वर्णित विविध प्रकरणो का सग्रह है। इसमे विष्णुस्त्रोत्र भी दिया गया है। उसकी सस्तुति मे ग्रन्थकार कहते हैं कि साधक धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति के लिए जगन्मय जगन्नाथ को इस स्तुति से प्रसन्न करे। —रा० ला० २६३

(२) रामभद्र-पुत्र रघुमणि विरचित। आगमससार मे भुवनेश्वरीकवच, आगमसार मे लक्ष्मीकवच। —कैट् कैट् १।३९

(३) रामभद्र-पुत्र रघुमणि विद्याभूषण कृत। —न्यू कैट् कैट् २।१५

उ०—तन्त्रसार, शक्तिरत्नाकर तथा पुरश्चर्यार्णव मे।

आगमसारसंग्रह (१)

नामान्तर—तत्त्वतरङ्गिणी

लि०—(१) श्रीयोगेन्द्र विरचित। श्लोक स० १६७, अपूर्ण। द्वितीय उल्लास की पुष्पिका से ज्ञात होता है कि द्वितीय उल्लास का ही नाम तत्त्वतरङ्गिणी है—इति श्रीयोगेन्द्रप्रकाशिते आगमसारसग्रहे ब्रह्मनिरूपणे तत्त्वतरङ्गिणी नाम द्वितीयोल्लास।

ग्रन्थ के आरभ वाक्य से मालूम पडता है कि पूरे ग्रन्थ का नाम तत्त्वतरङ्गिणी है—

नत्वा गुरुपदद्वन्द्व योगेन्द्रेण च धीमता।
नानातन्त्रानुसारेण कृता तत्त्वतरङ्गिणी ॥

इसमे केवल प्रारम्भिक दो उल्लास है। प्रमाण रूप से २० के लगभग तन्त्र ग्रन्थो का उल्लेख है। इसमे विषय इस प्रकार है—सदाशिव की निर्गुणता का प्रतिपादन, विन्दु-स्वरुप आदि का कथन, सत्त्वादि गुणो के सपर्क से ब्रह्म का सगुणत्व आदि कथन, जीव-

व्यान प्रकार, शक्तिस्वरूपादि कथन, श्रीकृष्ण आदि का प्रकृतिमयत्व कथन, कुलज्ञान की महिमा, कौलिको की प्रशसा आदि। —रा० ला० ४०५०

(२) इसके दो उल्लासो मे शक्ति की सर्वोत्कृष्टता और कौलपूजा प्रकार तथा आचार की महत्ता प्रतिपादित है। —ए० व० ६२२०,

(३) योगेन्द्र विरचित। इसके २ य उल्लास का नाम तत्त्वतरगिणी है।

—कैट् कैट्. १।३९, २।८,

आगमसारसंग्रह (२)

लि०—आनन्दमिश्र विरचित। —न्यू कैट् कैट् २।१५

आगमसिद्धान्त

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा ताराभक्तिसुवार्णव मे।

आगमसारोद्धार

लि०—श्रीमूक्तविवानमात्र। —न्यू कैट्, कैट. २।१५

आगमसिद्धान्त

उ०—कुलमुक्तिकल्लोलिनी तथा शिवानन्दकृत सिंहसिद्धान्तसिन्धु मे।

आगमसिन्धु

उ०—दक्षिणामूर्तिकृत उद्धारकोश मे।

आगमाद्युत्पत्ति

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।१५

आगमाधिकार

प्रत्यभिज्ञा-शैव ग्रन्थ।

उ०—सर्वदर्शनसंग्रह आनन्दाश्रम-सस्करण पृ० ७८ मे।

आगमामृत

उ०—दक्षिणामूर्नि के उद्धारकोश मे।

आगमामृतमञ्जरी

उ०—दक्षिणामूर्ति के उद्धारकोश मे।

आगमार्णवपीयूष

उ०—दक्षिणामूर्ति के उद्धारकोश मे।

आगमार्थसंग्रह

लि०—शैवागम। —न्यू कैट् कैट् २।१५

आगमालङ्कार

उ०—दक्षिणामूर्ति के उद्धारकोश मे।

आगमाह्निक

लि०—(१) (क) पन्ने १२२,
(ख) पन्ने ५५ तमिल अर्थ के साथ,
(ग) पन्ने ७६,
(घ) पन्ने २४७ नूतन लिखित। इसकी ये ४ प्रतियाँ उपलव्व है।
इस सग्रहतन्त्रग्रन्थ मे आगमानुसार दैनिक स्नानादि कृत्यो का प्रतिपादन है।
—तै म (क) ११३९०, (ख) ११३९४, (ग) ११३९५, (घ) ११३९७
(२) —कैट् कैट् १।३९
(३)—दे० आगमदीक्षाविधि। —न्यू कैट् कैट् २।१६

आगमोत्तर (तन्त्र)

उ०—आगमतन्त्रविलास, सौन्दर्यलहरीव्याख्या तथा तन्त्रसार मे।

आगमोत्पत्त्यादिवैदिकतान्त्रिकनिर्णय

लि०—रचयिता भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र वाराणसीगर्भज दक्षिणाचारमत-प्रवर्तक काशीनाथ। श्लोक स० ३३०, पूर्ण। ग्रन्थारम्भ श्लोको मे एक मे जैसा कि इसका नाम आगमोत्पत्तिनिर्णय कहा गया है—'काशीनाथ प्रतनुते आगमोत्पत्तिनिर्णयम्'। यह ग्रन्थ केवल तन्त्रो की उत्पत्ति या तन्त्रग्रन्थो की सख्या का ही प्रतिपादन नही करता वल्कि यह तान्त्रिक क्रियाओ तथा विशेपत तन्त्रानुयायियो के अवश्य कर्तव्य नियमो का भी प्रतिपादन करता हे। वैदिक और तान्त्रिक विभेद कैसे हुआ इत्यादि विपय विस्तार से इसमे वर्णित है। इसलिए इसका नाम आगमोत्पत्त्यादि-वैदिकतान्त्रिकनिर्णय पडा। इसके प्रारम्भ मे सम्पूर्ण आगम ग्रन्थो की संख्या वतलाते हुए

उनमे से कितने भूलोक मे, कितने स्वर्ग मे और कितने पाताल मे है यह प्रतिपादन किया गया है। तन्त्रग्रन्थ और सहिताग्रन्थो की लम्बी सूची भी दी गयी है। इसमे दिये गये विषय—आगमो की उत्पत्ति, युगधर्म, कौलिक और वैदिक कर्म विचार, षोडश सस्कार, स्वप्न मे प्राप्त मन्त्र का उपासनाक्रम, पूर्णाभिषेक की प्रणाली, वृहत्तन्त्रसार मे उक्त द्विविध पूर्णाभिषेकविधि का प्रकार, महाविद्या के छह आम्नायो का प्रकार, श्रीविद्यायन्त्र के धारण की महिमा, वाममार्गियो की अन्त्येष्टि क्रिया आदि है।

—ए० ब० ६२२६

आगमोद्योत

उ०—दक्षिणामूर्ति के उद्धारकोश मे।

आग्नेय आगम

यह अष्टादश (१८) रुद्रागमो मे अन्यतम है। किरणागम के अनुसार इसके प्रथम श्रोता व्योमशिव और उनसे द्वितीय श्रोता हुताशन है।

आग्नेयास्त्र

लि०—(१) —कैट कैट् १।३९

(२) आग्नेयास्त्र (विधि)। —न्यू कैट्. कैट् २।१८

आङ्गिरसतन्त्र

लि०—पाञ्चरात्र, पाद्मतन्त्र मे परिगणित।

—न्यू कैट् कैट् २।२०

आचारकथन

लि०—आकाशभैरवकल्प से गृहीत। —न्यू कैट् कट्. २।२१

आचारकुसुमावली

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

आचारचिन्तामणि

लि०—(१) पत्रे ८, पूर्ण। यह मौलिक तन्त्रग्रन्थ है।

—ब० प० १२४५

(२) श्लोक सं० १०५, अपूर्ण। —स० वि० २६३०३

आचारतन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० १६०, पूर्ण। —र० म० ४९८२ (ख)

(२) ७ पटलो मे पूर्ण। —दे० चीनाचार तथा महाचीनाचारतन्त्र।

—न्यू कैट् कैट् २।२३

आचारनिर्णय

लि०—श्लोक स० ६६, यह हर-गौरी सवादरूप ग्रन्थ ३५ पटलो मे पूर्ण है, किन्तु इस प्रति मे केवल ३५ वाँ पटल मात्र है। इसमे कायस्थो की उत्पत्ति, ब्राह्मणो के कर्तव्य, सुयज्ञ राजा के प्रति सुतपा नामक ब्राह्मण का उपदेश, कलियुग मे शूद्र का क्षत्रिय कर्म करना, चित्राङ्गद के प्रति ब्राह्मणो का शाप तथा वगलामत्र जप की महिमा—वगलामन्त्र के ग्रहण मात्र से कायस्थ ब्राह्मण हो जाता है। केवल इस ३५ वें पटल के पढने और सुनने से मनुष्य सफलमनोरथ हो जाता है और वगला देवी की स्तुति कर कालीविग्रह वन जाता है इत्यादि विषय वर्णित हैं। —रा० ला० ५९९

आचारनिलयतन्त्र

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।२५

आचारप्रकरण (प्रसरण ?)

उ०—शतरत्नसग्रह मे।

आचारसारप्रकरण

लि०—(१) ब्रह्मयामल से गृहीत —कैट् कैट् १।४०

(२) —रा० ला० ३१९

आचारसार तन्त्र

नामान्तर—महाचीनक्रमाचार, चीनाचारसारतन्त्र तथा आचारतन्त्र। यह शिव-पार्वती सवादरूप है। विशेप विवरण 'महाचीनक्रमाचार' मे देखे।

(१) लि०—श्लोक स० २७८। प्रस्तुत प्रति ५ पटल तक गयी है। इ० आ० ने इसके ७ पटल कहे हैं। यह विविधतन्त्रसग्रह मे महाचीनाचारतन्त्र के नाम से ५ पटलो मे छप चुका है। उस सस्करण मे ५ वे पटल की समाप्ति के वाद वहुत-से श्लोक दिये गये हैं जो प्रस्तुत प्रति मे नही दिखायी देते।

—ए० व० ५९९३

(२) यह मौलिक तन्त्र ग्रन्थ ८ पटलो मे पूर्ण है। इसमे कौलाचार प्रतिपादित है। अन्य तन्त्रो के समान इसमे भी श्रीपार्वतीजी के महाचीनाचार पर शिवजी से प्रश्न करने पर उन्होने वसिष्ठजी का वृत्तान्त कहा। वसिष्ठजी ने श्रीतारादेवी को प्रसन्न करने के निमित्त कामाख्या योनिमण्डल मे १० वर्ष तक उनकी आराधना की, किन्तु ताराजी का अनुग्रह उन्हे प्राप्त नही हुआ। पिता ब्रह्माजी के सदुपदेश से वे जनार्दन रूपी वुद्ध से चीनाचार की शिक्षा लेने चीन गये। उन्होने कौलाचार का उन्हे उपदेश दिया। उससे उन्हे सिद्धि प्राप्त हुई इत्यादि। इसके अनेक नाम हैं। —क०का० ४

(३) इसके ७ पटल कहे गये है। किन्तु इसमे प्रारम्भिक ३ पटल नही है। ४ र्थ पटल मे कौल धर्म कहे गये है, ५ म मे काम, क्रोध आदि शत्रुओ के दमन के साधन (उपाय) वर्णित है, ६ष्ठ मे कौलाचार से शक्ति की साधना आदि निर्दिष्ट है और ७म मे मविदाख्य ज्ञान जनक उपाय बतलाये गये है। —रा० ला० ४७०

(४) श्लोक स० २०२। विषय—कौलिको के आचार। जैसे सविदा स्वीकार की विधि, उसके शोधन के मन्त्र, दूध आदि मे मिलाकर सविदा पीने का विशेष फल, त्रिकटु आदि के चूर्ण के साथ घी मे भूँजी विजया के ग्रहण का फल और माहात्म्य, पञ्चतत्त्वविधि, मद्य आदि के शोधन की विधि, सुरा के ध्यान आदि, स्वयभू कुसुम के शोधन की विधि एव पूजाविधि कथन पूर्वक गुरुस्तोत्र प्रतिपादन, पात्र मस्था निरूपण, पूजा-काल के सिवा पीने का निषेध, पात्रवन्दन आदि की विधि, चक्र मे वर्जनीयो का कथन, शक्ति नही तो पान नही करना, पात्र के परिमाण आदि, कौलिक लक्षण, शक्तिशोधनविधिरहस्य, पुरश्चरणविधि आदि। —नो० स० १।२३

(५) इमकी श्लोक स० ४०० कही गयी है। यह प्रति ७ पटलो मे पूर्ण है।
—अ व० १०६२७ (घ)

(६) (क) श्लोक स० ३५७, पटल १–९ तक, अपूर्ण,
(ख) श्लोक स० ५१५, पूर्ण। —स वि (क) २५०००, (ख) २५४५५

(७) (क) —कैट् कैट् १।४०
(ख) आचारसार और आचारसारप्रकरण। —दे० चीनाचारसारतन्त्र।
—कैट् कैट् २।८

उ०—प्राणतोषिणी, कालिकासपर्याविधि (काशीनाथ कृत) मे।

आज्ञावतार

उ०—योगिनीहृदयदीपिका तथा भास्करराय द्वारा स्वकृत ललिता-सहस्रनाम-व्याख्या मे।

आञ्जनेयकल्प

लि०—छह अध्यायो मे पूर्ण। सुदर्शनसहिता से गृहीत।

—न्यू कैट् कैट् २।४१

आञ्जनेयमाला मन्त्र

लि०—शौनक सहिता से गृहीत। —न्यू कैट् कैट् २।४१

आञ्जनेयसहस्रनामस्तोत्र (हनुमद्वज्रकवचसहित)

लि०—सुदर्शनसहिता से गृहीत। —न्यू कैट् कैट् २।४१

आत्मज्ञान

लि०—श्लोक स० १५०, अपूर्ण। —अ० व० ९९८८

आत्मज्ञाननिर्णय

लि०—महानिर्वाणतन्त्र से गृहीत। —न्यू कैट् कैट् २।४६

आत्मनाथनित्यपूजानुक्रमणी

लि०—प्रज्ञानदीपिका से गृहीत। —न्यू कैट्. कैट्. २।४८

आत्मनाथार्चनविधि

लि०—प्रज्ञानदीपिका से गृहीत। १८ स्कन्धो मे पूर्ण। सूत्र-शैली के रूप मे निर्मित।

—न्यू कैट् कैट् २।४८

आत्मपूजा

लि०—श्रीनाथ विरचित। श्लोक स० २०००। यह ग्रन्थ १९ उल्लासो मे पूर्ण है। इसके आरभिक दो उल्लासो मे तान्त्रिक विषयो का वर्णन है। उसके बाद ३ य उल्लास से गुरु शिष्य सवाद के रूप मे दार्शनिक विषय ही प्रचुरमात्रा मे वर्णित हैं। इसमे वर्णित विषय ये है—१ युगानुसार शास्त्राचरण, पश्वाचार, वैष्णवाचार, शैवाचार आदि आचार भेद, २—शाक्ताचार, पञ्चतत्त्वप्रमाण, शक्तिप्रमाण, दक्षिणाचार, पञ्चतत्त्व

कथन, चक्र मे जाति-भेद नही, वामाचार, सिद्धान्ताचार और कौलाचार, ३—आत्मरहस्य के अधिकारी का निरूपण, ४—ब्रह्मचैतन्य कथन, ५—स्वात्मचैतन्य कथन, ६—जीव और परमेश्वर का ऐक्य कथन, ७—ब्रह्म की सर्वस्वरूपता, ८—मायाशक्ति कथन, कारण शरीर कथन, सूक्ष्म स्वरूप कथन के सिलसिले मे २४ तत्त्वो की उत्पत्ति, षट्चक्रनिरूपण, काशीमहात्म्य आदि। —ए० व० ६२०१

आत्मबोध

लि०—गोरक्षनाथ कृत। —न्यू कैट् कैट् २।५१

आत्मयाग (१)

लि०—(क) श्लोक स० १९२, पूर्ण, शक्तिसगमवृहत्तन्त्र के अन्तर्गत।
(ख) श्लोक सं० लगभग ३८, अपूर्ण।
—स० वि० (क) २४११३, (ख) २५१६०

आत्मयाग (२)

लि०—दत्तात्रेयपूजा। —न्यू कैट् कैट् २।५६

आत्मयोग

लि०—शैव योगज-उपागम। कामिक वर्ग मे अन्यतम।
—न्यू कैट् कैट् २।५६

आत्मरहस्य

लि०—श्रीनाथ कृत, १९ अध्यायो मे पूर्ण। —न्यू कैट् कैट् २।५६

आत्मरहस्यतन्त्र

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।५६

आत्मसंबोध

उ०—स्पन्ददीपिका मे।

आत्मसप्तति

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

आत्मसाधन

लि०—श्लोक स० १०२, पूर्ण। —स० वि० २४९१६

आत्मार्थपूजापद्धति

लि०—श्लोक स० ५०००। यह शैव तन्त्र है।

—अ० व० १०२५८

आत्रेयतन्त्र

लि०—पञ्चरात्रान्तर्गत। —न्यू कैट् कैट् २।६७

आथर्वणतन्त्रसार

लि०—कटकाचार्यकृत। —न्यू कैट् कैट्. २।६९

आथर्वणकात्यायनतन्त्र

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।६८

आथर्वणतन्त्र

दे० अथर्वतन्त्र।

उ०—कालीतन्त्र मे।

आथर्वणप्रयोगमालिका

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।६९

आथर्वणप्रोक्त देवीरहस्यस्वरूपक्रमोपासनाप्रयोग

लि०—भावनोपनिषद् तथा भास्कररायकृत भावनोपनिषद्भाष्य के आधार पर जगन्नाथसूरि (भास्करराय-शिष्य) कृत।

—न्यू कैट् कैट् २।६९

आथर्वणरहस्य

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।६९

आथर्वणमन्त्रार्णव

लि०—वाञ्छाकल्पलतोपस्थान मात्र।

—न्यू कैट् कैट् २।६९

आथर्वण्यस्त्रमन्त्र

लि०—कालिकागमान्तर्गत रुद्रतन्त्र से गृहीत।

—न्यू कैट् कैट् २।७०

आथवर्ण्यस्त्रविद्या

लि०—कालिकागम से गृहीत। —न्यू कैट् कैट् २।७०

आदित्ययामल

उ०—तन्त्रसार तथा पुरश्चर्यार्णव में।

कैट्. कैट् १।४५ में यह आदियामल के नाम से अभिहित है। तन्त्रसार और नक्षत्रसमुच्चय में इसका उल्लेख बतलाया गया है।

आदित्यविधान

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।७६

आदिनाथानन्दभैरव

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।८२

आदिपुराण

लि०—शिवागम। ॐकारस्तोत्र मात्र। —न्यू कैट् कैट् २।८३

आदिवातुलतन्त्र

उ०—फेत्कारिणी तन्त्र में।

आदिवाराहीपञ्चाङ्ग

लि०—उड्डामरतन्त्र से गृहीत। —न्यू कैट् कैट् २।८८

आदिशास्त्रतन्त्र

लि०—सनकादि विरचित, श्लोक सं० लगभग ८१, अपूर्ण।

—सं० वि० २४२६५

आद्यलक्ष्मीपूजाविधान

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।८९

आद्यादिमहालक्ष्मीहृदयस्तोत्र

लि०—अथर्वणरहस्य से गृहीत। —न्यू कैट् कैट्. २।८९

आद्यादिमहालक्ष्मीहृदय

लि०— —कैट् कैट्. ३।१०

आद्यादीपदानविधि

लि०—(१) वृन्दावन विरचित । —कैट् कैट् १।४५
(२) —ने० द० ३।४६
(३) —न्यू कैट् कैट् २।९०

आद्यापञ्चाङ्ग

लि०—(१) —कैट् कैट् १।४५
(२) —न्यू कैट् कैट् २।९०

आनन्दकल्पलतिका

लि०—(अवधूत) महेश्वर तेजानन्दनाथ कृत।
—न्यू कैट् कैट् २।९८

आनन्दगह्वरतन्त्र

उ०—तन्त्रालोक मे।

आनन्दतन्त्र

लि०—श्लोक स० १९१३। यह देवी और कामेश्वर सवादरूप ग्रन्थ २० पटलो मे पूर्ण है। लिङ्गरहस्य और शक्ति की अर्चा साङ्गोपाङ्ग इसमे वर्णित है। शक्ति-पूजा का विस्तृत विवरण १५ पटलो तक है। अन्तिम पाँच पटलो मे जातिभेद का निषेध, विविध दर्शन शास्त्रो का तथा तान्त्रिक दर्शनो का विवेचन किया गया है। उत्तर भारत मे इसका प्रचार वहुत कम है, किन्तु दक्षिण भारत मे इसका वहुत अधिक प्रचार है। प्रथम पटल की पुष्पिका[1] से ज्ञात होता है कि यह नित्याषोडशिकार्णवतन्त्र के अन्तर्गत भगमालिनीसहिता का एक अश है। नित्याषोडशिकार्णव तन्त्र की श्लोक स० वत्तीस करोड है और तदन्तर्गत भगमालिनीसहिता की श्लोक स० एक लाख है। —इ० आ० २५४१
(२) २० पटलो मे —कैट् कट् २।९
(३) पञ्चरात्रो मे परिगणित। —न्यू कैट् कैट् २।१०३
उ०—तन्त्रालोक मे।
सभवत यह अभिनव गुप्ताचार्य के तन्त्रसार मे उल्लिखित आनन्दशास्त्र से अभिन्न है।

१—इति द्वात्रिंशत्कोटिविस्तीर्णे नित्याषोडशिकार्णवतन्त्रे भगमालिनीसंहिताया शतसाहस्त्र्यामानन्दतन्त्रे प्रथमः पटलः ॥

आनन्दताण्डवविलासस्तोत्र

(महेश्वरानन्द के गुरु महाप्रकाश कृत)

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

आनन्ददीपिनीटीका

लि०—श्लोक स० ८००। यह कर्पूरस्तोत्र की ब्रह्मानन्द सरस्वती कृत व्याख्या है। कर्पूरस्तोत्र के २२ श्लोको पर ग्रन्थकार ने यह सुन्दर टीका रची है। इसमे कालिका का मन्त्रोद्धार भी है। —रा० ला० ३३०

आनन्दपटल

उ०—सर्वोल्लास मे।

आनन्दबोधलहरी

लि०—श्रीशङ्कराचार्य विरचित, श्लोक स० ३०। यह स्तोत्र अठारह श्लोको मे पूर्ण है। यह जीवन्मुक्तानन्दतरङ्गिणी के नाम से प्रसिद्ध है। यह १७ श्लोको मे श्रीशङ्करा-चार्य ग्रन्थमाला (वाणीविलास प्रेस, श्रीरङ्गम्) मे प्रकाशित है।

—ए० व० ६८०८

आनन्दभैरव

लि०—(१) कार्तवीर्यार्जुनसहस्रनाम मात्र।

—कैट् कैट् १।४८

(२) " —न्यू कैट् कैट् २।१०९

उ०—शिवसूत्रविमर्शिनी मे

आनन्दमयी-पूजा

लि०—इसमे आनन्दमयी की गुप्त तान्त्रिक पूजा वर्णित है। इस पूजा को जान कर उत्तम साधक शिवसायुज्य को प्राप्त होता है। इसमे कौलाचारसगत देवीपूजा वर्णित है। इसमे रुद्रयामल, लिङ्गागम, कुलार्णव, कुलसार आदि तन्त्र-ग्रन्थ उल्लिखित है।

—ए० व० ६४५०

आनन्दलहरी

लि०—श्रीशङ्कराचार्य कृत १०७ श्लोको मे पूर्ण। समयाचारमूलक सुभगोदया (श्री

गौडपादाचार्य कृत) के आधार पर श्रीशङ्कराचार्य ने १०२ श्लोको की रचना की। उनमे आरभ के ४१ श्लोक आनन्दलहरी के नाम से परिचित हैं। शेष सौन्दर्यलहरी के नाम से प्रसिद्ध हैं। किसी-किसी टीकाकार ने ४१ श्लोकों के बदले ३५ श्लोको को आनन्दलहरी कहा है और किसी ने ३० श्लोकों को। आनन्दलहरी की व्याख्या सुधाविद्योतिनी आदि के मत से निम्नलिखित श्लोक आनन्दलहरी के हैं — १, २, ८, ९, १०, ११, १४ से २१ तक, २६, २७ तथा ३१ से ४१ तक शेप सौन्दर्यलहरी के।

आनन्दलहरी की टीकाएँ

१—रहस्यप्रकाश (जगदीशतर्कालङ्कार विरचित) पन्ने ५८।

—इ० आ० २६२३

२—तत्त्वबोधिनी (सुबुद्धिमिश्र-प्रपौत्र, विद्यासागर-पौत्र, यादवचक्रवर्ती के पुत्र महादेव विद्यावागीश भट्टाचार्य कृत) पन्ने ६१। निर्माण काल १५२७ शकसवत्सर।

—इ० आ० २६२४

३—सौभाग्यवर्द्धिनी (कैवल्याश्रम कृत)—इ० आ० २६२२, ए० व० ६६७९

४—आनन्दलहरी-व्याख्या (कविराजशर्मा कृत)। —ए० व० ६६९७

५—सुबोधिनी (निरञ्जन कृत)। —ए० व० ६६९८

६—विस्तारचन्द्रिका (गोविन्दतर्कवागीश भट्टाचार्य कृत), श्लोक स० ५८८, पूर्ण।

—रा० ला० ३३७३, व प० ३३४

७—(क) तत्त्वदीपिका (गङ्गाहरिकृत) श्लोक स० २७६। —रा० ला० ७५०

(ख) ,, श्लोक स० १२१६। —नो स १२८

८—(क) मञ्जुभाषिणी (वल्लभाचार्य-पुत्र तर्कालङ्कार भट्टाचार्य श्रीकृष्णाचार्य कृत) श्लोक स० १६७४। —रा० ला० २४१५

(ख) ,, ,, —व० प० १२६२

९—(क) हरिभक्तिसुधोदया (विश्वामित्रगोत्रोद्भव हरिनारायण कृत) यह व्याख्या शक्तिपक्ष और विष्णुपक्ष मे की गयी है। श्लोक स० १४००, अपूर्ण।

—नो० स० २।१७,

(ख) श्लोक स० १७००, अपूर्ण। —ए० व० ६६९३

१०—आनन्दलहरीदीपिका (श्रीचन्द्रमौलि-पुत्र रघुनन्दन कविचक्रवर्ती कृत)

(क) श्लोक स० ८०० अपूर्ण। —ए० व० ६६९५

(ख) श्लोक स० ६००, अपूर्ण। —नो० स० ३।२४

११—मनोरमा (श्रीविश्वनाथ-पुत्र सर्वविद्याविशारद रामभद्र कृत) श्लोक स० ११००, पूर्ण (१०२ श्लोक तक)। —ए० व० ६६९६

१२—भवानीपक्ष मे और विष्णुपक्ष मे आनन्दलहरी की व्याख्या (नरसिंह कृत) श्लोक स० १४६३। —रा० ला० १७३२।

१३—मन्त्रादिपक्षीय (महामहोपाध्याय गोपीरमण तर्कपञ्चानन भट्टाचार्य कृत) श्लोक सं० ६६१। —नो० स० ११२६

१४—(मामन्तसारनिलय जगन्नाथचक्रवर्ती कृत) श्लोक स० ११३१। —नो० सं० ११२७

१५—आनन्दलहरीरहस्यप्रकाश (जगदीश पञ्चानन भट्टाचार्य कृत) श्लोक स० १८४५, पूर्ण। —नो० सं० ११२९

१६—आनन्दलहरीभाष्यालोचन (पदवाक्यप्रमाणज्ञ अतिरात्रयाजी महाभट्टार कविन्द-लोचनाचार्य-पुत्र श्रीराम कविडिण्डिम मुकुटराय महापात्रकृत) श्लोक स०२४००। —नो० स० ४१३३

१७—आनन्दलहरीतरि (गौरीकान्त मार्वभौम कृत)। —कैट् कैट् ११४८

१८—भावार्थदीपिका (ब्रह्मानन्दकृत)। —कैट् कैट् ११४८

१९—मुधाविद्योतिनी मुधानिष्यन्दिनी (?) प्रवरसेन (पुत्र?) कृत। —कैट् कैट् ३१११

२०—मुधाविद्योतिनी विद्वन्मनोरमा (?) महजानन्दनाथ कृत ?)। —कैट् कैट् ३१११

२१—विष्णुपक्षीय टीका —कैट् कैट् ११४८

२२—पदार्थचन्द्रिका —कैट् कैट् ३१११

२३—अप्पयदीक्षित कृत —कैट् कैट् ११४८

२४—अच्युतानन्द कृत —कैट् कैट् ११४८

२५—आदिनाथ कृत

२६—केशवभट्ट कृत —कैट् कैट् ११४८

२७—गङ्गाधर कृत —कैट् कैट् ११४८

२८—गोपीरामकृत —कैट्. कैट् ११४८, ३१११

२९—जगन्नाथ पञ्चानन कृत —कैट् कैट्. ११४८

३०—मल्लभट्ट कृत —कैट् कैट् ११४८

३१—माधववैद्य कृत —कैट् कैट् १।४८
३२—रामचन्द्रमिश्र कृत —कैट् कैट् १।४८, ३।११
३३—रामसूरि कृत
३४—रामानन्द तीर्थ कृत —कैट् कैट् १।४८
३५—लक्ष्मीधरदेशिक कृत —कैट् कैट् १।४८, २।९, ३।११
३६—विश्वम्भर कृत —कैट् कैट् १।४८
३७—श्रीकालभट्ट कृत —कैट् कैट् १।४८, ३।११
३८—श्रीरगदास कृत —कैट् कैट् २।९
३९—सदाशिव कृत
४०—अप्पय्यदीक्षित कृत टीका —तँ० म०
४१—विष्णुपक्षीय टीका (आनन्दलहरी की)

आनन्दविनोद

लि०—कामराजदीक्षित कृत। —न्यू कैट् कैट् २।११५

आनन्दाधिकशास्त्र

उ०—तन्त्रालोक मे।

आनन्दार्णवतन्त्र

लि०—श्लोक स० ४८०। श्रीविद्या की पूजा का प्रतिपादन करने वाला यह ग्रन्थ १० पटलो मे पूर्ण है। यह इ० आ० २५४१ आनन्दतन्त्र से सर्वथा भिन्न है। यह सर्वमङ्गला और सर्वज्ञ सवादरूप है। इसके १० पटलो के विपय सक्षेप मे ये है—श्री विद्या का स्वरूप, जन्मचक्रक्रम, दीक्षाकरण, त्रिपीठ, चक्र, चक्रो से विविध विद्याएँ, विभूतियाँ आदि, नवयोन्यङ्कित अस्त्र चक्र, दीक्षित द्वारा गुरुपादुका-पूजन, श्रीविद्या का साधन, वाक्सिद्धि आदि निखिल सिद्धियो की प्राप्ति के उपाय, मालामन्त्र आदि। इसका चतु शतीसहिता भी नामान्तर है। —ए० व० ६०१७

आनन्देश्वरतन्त्र

इसकी श्लोक स० १२००० है।

उ०—तन्त्रालोक की टीका जयरथी मे।

आनन्देश्वरपत्रिका

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।१२०

आनन्देश्वरपद्धति

लि०—	—न्यू कैट् कैट् २।१२०

आनन्दोद्दीपिनी

लि०—श्लोक स० ३००। रचनाकाल शक सवत्सर १७५४ लिखा है। यह फेत्कारिणी तन्त्र मे उक्त प्रकृति के स्वरूप का निरूपक स्वरूपाख्यस्तोत्र की ब्रह्मानन्द सरस्वती कृत व्याख्या है।	—नो० स० ३६१

(इसके तथा आनन्द-दीपिनी के कर्ता समान हैं। आरभिक श्लोक भी प्राय एक से ही हैं। इसलिए इनके विषय में यह विचारणीय है कि ये दो पृथक् २ ग्रन्थ हैं या एक ही है।)

आन(ण?)वोपधिसूत्रव्याख्या

लि०—श्लोक स० ४०, अपूर्ण।	—अ० व० १०३४६

आपदुद्धरणपद्धति

लि०—रुद्रयामल से गृहीत।	—न्यू कैट् कैट् २।१२२

आपदुद्धारकबटुकभैरव

लि०—	—न्यू कैट् कैट् २।१२२

आपदुद्धारकल्प

लि०—विश्वसार अथवा विश्वसारोद्धार तन्त्रान्तर्गत।

—न्यू कैट् कैट् २।१२२

आपदुद्धार-(ण)कवच

लि०—रुद्रयामल, कालीकल्प या कालीरहस्य से गृहीत।

—न्यू कैट् कैट्. २।१२२

आपदुद्धार-(ण)कालीकवच

लि०—	—न्यू कैट्. कैट्. २।१२२

आम्नाय

लि०—(१) श्लोक स० २६०, पूर्ण। इसमे पूर्वाम्नाय, दक्षिणाम्नाय, पश्चिमाम्नाय, उत्तराम्नाय, ऊर्ध्वाम्नाय, दिव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ, ऊर्ध्वौघ, परौघ, कामराजौघ, लोपामुद्रौघ, कामराजविद्याचरणवासना, लोपामुद्राविद्याचरणवासना, स्रोतश्चरणवासना, शाम्भवचरणविद्या, शाम्भवचरणवासना, परापादुकाक्रम, लोपामुद्रापादुकाक्रम, महा-

पादुका, सत्ताईस रहस्य, पाँच अम्बाएँ, नौ नाथ, छह आधारविद्याएँ, छह अध्वविद्याएँ, छह दर्शन, आठ वाग्देवता, छह योगिनियो की विद्याएँ, नित्याके मन्त्र, पाँच पञ्चिकाएँ, चन्क्रेश्वरी विद्या, सव देवी-देवताओ के मन्त्र आदि विषय वर्णित है।

—ए० ब० ६२८५

(२) (क) श्लोक स० ५०० । (ख) श्लोक स० ५०० । (ग) श्लोक स ५००
(घ) श्लो० स० १५०, (ङ) श्लोक स० ३४० । (च) श्लोक स० ३४० ।
—अ० ब० (क) १३४२३ (b), (ख) १३४३८, (ग) १३४५६,
(घ) १०३२८ (a), (ङ) ११७४८ (a), (च) ११७४८ (b)

(३) आम्नाय या आम्नायप्रकाश । —न्यू कैट् कैट् २।१४७

आम्नाय (२)

लि०—देवस्थली कृत । —न्यू कैट् कैट् २।१४७

आम्नायगुरुमण्डलदेवार्चनक्रमवल्ली

लि०—(१) श्लोक स० १३० । —र० म० ४८९८
(२) —न्यू कैट् कट् २।१४७

आम्नायदीक्षा

लि०—पारानन्दतन्त्र से गृहीत । —न्यू कैट् कैट् २।१४७

आम्नायदीक्षाक्रम

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।१४७

आम्नायदीक्षाविधि

लि०—पारानन्दतन्त्र से गृहीत । —न्यू कैट् कैट् २।१४७

आम्नायदेवता

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।१४७

आम्नायदेवतापूजा

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।१४७

आम्नायपद्धति (१)

लि० (१)—श्लोक स० १५०० । रुद्रयामल से गृहीत ।

—अ० व० १०६९१

(२)—श्लोक स० ७८, अपूर्ण । —स० वि० २६५७९
(३) चार पटलो (पूर्व, उत्तर, ऊर्ध्व और अनुत्तर इन चार पटलो) मे पूर्ण ।
—न्यू कैट् कैट् २।१४७

आम्नायपद्धति (२)

लि०—भास्कररायकृत । —न्यू कैट् कैट्. २।१४७

आम्नायपारायण

लि०—सौभाग्यतन्त्र से गृहीत । —न्यू कैट् कैट् २।१४७

आम्नायपूजा

लि०—(१) (क) श्लोक स० १२०, (ख) श्लोक १० ।
—अ० व० (क) ११७८३, (ख) ५९९१

आम्नायप्रकार

लि०—श्लोक स० १००० । —अ० व० १०३१३

आम्नायमञ्जरी

लि०—यह मपुटतन्त्रराज पर अभयगुप्त की टीका है ।
उ०—अभयगुप्तकृत वज्रावली मण्डलोपायिका मे ।

आम्नायमन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० ६० । —अ० व० ५६९०
(२) इसकी प्रथम पुष्पिका मे लिखा है—'ऊर्ध्वाम्नाय षट्शाम्भवीन्यास' ।
—न्यू कैट्. कैट्. २।१४८

आम्नायरहस्य

उ०—शारदातिलक-टीका राघवभट्टी तथा सेतुबन्ध (भास्करराय कृत), मदनरत्न-प्रदीप, विश्वनाथकृत कुण्डरत्नाकर, शङ्करभट्टकृत कुण्डोद्योतरत्नाकर, हेमाद्रिदानखण्ड तथा कुण्डकौमुदी मे ।

आम्नायलक्षण

लि०—यह याज्ञवल्क्यसूत्र पर टीका है ।

—न्यू कैट् कैट् २।१४८

आम्नायविद्या

लि०—　　—न्यू कैट् कैट् २।१४८

आम्नायव्याख्यान

लि०—यह मूल सूत्रो अर्थात् सुन्दरीतापनीयोक्त गौडपादीय मन्त्ररत्नाकरसूत्रो पर व्याख्यान है।　　—न्यू कैट् कैट् २।१४८

आम्नायषट्क

लि०—(१) श्लोकस० ३८०, पूर्ण।　　—सं० वि० २६१९५
(२)　　—न्यू कैट् कैट् २।१४८

आम्नायषडावरणदेवता

लि०—श्लोक स० १००।　　—अ० ब० १०८१४

आम्नायसार

लि०—　　—न्यू कैट् कैट् २।१४८

आम्नायादि

लि०—श्लोक स० १००, अपूर्ण ।　　—अ० ब० ११७५८

आम्नायावली

लि०—　　—न्यू कैट् कैट् २।१४८

आम्नायोपनिषद्

लि०—　　—न्यू कैट् कैट् २।१४८

आराधनक्रम

लि०—पाञ्चरात्रागम पद्मसहिता से गृहीत।

—न्यू कैट् कैट् २।१४८

आराधनरत्नमाला

लि०—शङ्कर पण्डित कृत　　—न्यू कैट् कैट्. २।१४८

आराधनविधि (१)

आराधनाविधि (२)

लि०—आकाशभैरव का २५ वाँ अध्याय।

—न्यू कैट् कैट् २।१४८,९

आर्द्रपटीविधान

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।१६७

आर्द्रोत्सवाद्युत्सवपटल

लि०—शैव कारणागम से गृहीत। —न्यू कैट् कैट् २।१६७

आलयनित्यार्चनपद्धति व्याख्यासहित

लि०—पञ्चरात्र–पाद्म सहिता के आधार पर रगस्वामी भट्टाचार्यकृत।
—न्यू कैट् कैट् २।१८२

आलयसंप्रोक्षणविधि

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।१८२

आलयाराधनविधि

लि०—पद्मसहिता से गृहीत। —न्यू कैट् कैट्. २।१८२

आलोकमाला

उ०—स्पन्दप्रदीपिका तथा स्पन्दनिर्णय मे।

आवरणचक्र

लि०—दे० मातृकावर्णचक्र।

आवरणपीठ

लि०—श्लोक स० ६०, पूर्ण। —स० वि० २५६०७

आवरणपूजा

लि०—(१) क श्लोक स० ४००। —अ० व० १०५०४
(२) शैवागम। —न्यू कैट् कैट् २।१८५

आवरणपूजाविधान

लि०—आगम। —न्यू कैट् कैट् २।१८५

आवरणविधि

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।१८५

आवेशभैरवमन्त्रप्रयोग

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।१९२

आवेशविजयभैरवमन्त्र

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।१९२

आवेशहनुमत्कल्प

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।१९२

आश्चर्यनामाष्टोत्तरशतदिव्यनामामृतस्तोत्र

लि०—गर्भकौलागम से गृहीत। —न्यू कैट् कैट् २।११

आश्चर्ययोगमाला

लि०—(१) श्लोक स० ४५०।

नामान्तर—योगरत्नावली या योगरत्नमाला। नागार्जुन कृत। इसपर विवृति श्वेताम्वर जैन मुनि गुणाकर कृत है। इसका रचनाकाल १२४० ई० (१२९६ वि०) है।
—अ० व० १३०१

(२) यह आश्चर्ययोगमाला अनुभवसिद्ध है। इसके रचयिता नागार्जुन है। यह सव लोगो के हृदय को प्रिय लगने वाली तथा सूत्रो से समर्थित है। इसमे वशीकरण, स्तम्भन, शत्रुमारण, स्त्रियो के आकर्षण की विविध विधियाँ सिद्ध करने के अनेक उपाय वतलाये गये है। —वी० कै० १२४४

(३) श्लोक स० ४००। —डे० का ३५०

आश्चर्याष्टोत्तरशतनामावली

लि०—गर्भकौलागम उत्तरतन्त्र से गृहीत।

—न्यू कैट् कैट् २।२१२

आसननियम

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।२३१

आसननिरूपण

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।२३१

आसनाक्षमालाजपसिद्धिनियममासतिथिवारादिफल

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।२३१

आसुरीकल्प (१)

लि०—(१) (क) श्लोक स० ८०, रचनाकाल १७४९ वि०, पूर्ण। इसमे आसुरी देवी के मन्त्रो से मारण, मोहन, स्तम्भन आदि तान्त्रिक पट्कर्मो की सिद्धि का प्रतिपादन है।

(ख) श्लोक स० ७५, पूर्ण। इसमे सर्वप्रथम पट्कर्मो के लिए देवी के मन्त्रो की जपविधि कही गयी है। तदनन्तर देवी के मन्त्रो से पट्कर्मो की सिद्धि की विधि कही गयी है। इसका उत्तरार्द्ध ऊपर लिखी प्रति ए० व० ६०७० से मिलता-जुलता है।

—ए० व० (क) ६०७०, (ख) ६१५६

(२) (क) श्लोक स० ३५०। —अ० व० (क) ७१३९

(ख) श्लोक स० १५०। ,, (ख) ४८१५

(ग) श्लोक स० ४२०। ,, (ग) १०२८५ (क)

(घ) श्लोक स० ५१०। ,, (घ) ११४१२

(३) पूर्ण। —स० वि० २५१८८

(४) —न्यू कैट् कैट् २।२३२

उ०—मन्त्रमहार्णव मे।

आसुरीकल्प (२)

लि०—(१) श्लोक स० २२०, पूर्ण। यह विभिन्न ग्रन्थो के अशो का सग्रह है। इसमे तान्त्रिक पट्कर्मो की सिद्धि आसुरी मन्त्रो से प्रतिपादित है। ये विभिन्न ग्रन्थो से सगृहीत चार आसुरी कल्प हैं——आसुरीविवान, राजवशीकरण, वन्ध्या का पुत्रजनन, देहन्यास आदि के साथ आसुरीमन्त्र का प्रतिपादन। इसमे चतुर्थ कल्प शिव-कार्तिकेय सवादरूप है। —ए० व० ६०७१

(२) श्लोक स० ९३, सूर्ण। —र० म० ४८९५

(३) इसमे ४र्थ कल्प शिव-कार्तिकेय सवादरूप है। —वी० कै० १२४५

(४) यह विभिन्न-प्रकार का है।

(क) यह अथर्ववेद का ३५ वाँ परिशिष्ट है।

(ख) महापुराण से गृहीत।

(ग) अथर्ववेदका एक परिशिष्ट।

—कैट् कैट् (क) १।५७, (ख) २।११, (ग) ३।१३

(५) —न्यू कैट् कैट् २।२३२

आसुरीकल्पविधि

लि०—(१) आसुरीकल्पसमुच्चय मे प्रतिपादित वशीकरण आदि षट्कर्मो की पद्धति इसमे प्रतिपादित है। —बी० कै० १२४७

(२) —कैट् कैट् १।५७

(३) —न्यू कैट् कैट् २।२३२

आसुरीकल्पसमुच्चय

लि०—पन्ने ३००। —बी० कै० १२४६

आसुरीतन्त्र

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।२३२

आसुरीतन्त्रसमुच्चय

लि०—श्लोक स० १००। यह शिव-कार्तिकेय सवादरूप है। आसुरीकल्प की इच्छा से कार्तिकेयजी ने शिवजी से आसुरीकल्प की विधि, ऋतु, वर्ष, मास, तिथि, वार, नक्षत्र, वेला आदि तथा ध्यान आदि के विषय मे प्रश्न किया। उसी का उत्तर इसमे प्रतिपादित है।

आसुरीतन्त्र के मुख्य विषय मारण, मोहन आदि हैं।

—नो० स० ४।३६

आह्निक

लि०—(१) श्लो० स० १६०। प्रात काल से सायकाल पर्यन्त के और सायकाल से प्रात काल पर्यन्त के धार्मिक कृत्यो का इसमे वर्णन है।

—ट्रि० कै० ११२७ ङ

(२) —न्यू कैट् कैट् २।२३६

आह्निकचन्द्रिका

लि०—(१) केशव-पुत्र धनराज विरचित। श्लोक स० ७००, पूर्ण। तान्त्रिक पूजा मे अधिकार प्राप्ति के लिए प्रात काल के कृत्य तथा न्यास आदि इसमे वर्णित हैं। शिवपूजा विधि भी विस्तार से वर्णित है। साथ ही साथ दुर्गा, बगलामुखी और महालक्ष्मी की पूजा भी सक्षेपत वर्णित है। —ए० ब० ६४६५

इन्द्रजाल

लि०—नित्यनाथ विरचित। —कैट् कैट्. १।५९

इन्द्रजाल या इन्द्रजालतन्त्र

लि०—(१) यह शिवप्रोक्त कहा गया है।

—ज० का० ९८५

(२) श्लोक स० २४, अपूर्ण (हिन्दी मे)

—स० वि० २४५०९

(३) श्लोक स० २७०, अपूर्ण (इसका नाम 'इन्द्रजालतन्त्र' कहा गया है)।

—अ० व० १४४४

उ०—प्राणतोषिणी तथा कक्षपुटतन्त्र मे।

इन्द्रजाल उड्डीश

लि०—रावणकृत। —न्यू कैट् कैट् २।२५१

इन्द्रजालकक्षपुट

लि०—कालीप्रसन्न विद्यारत्न द्वारा सगृहीत।

—न्यू कैट् कैट् २।२५१

इन्द्रजालकौतुक (१)

लि०—महादेवोक्त।

इन्द्रजालकौतुक (२)

लि०—पार्वती-पुत्र नित्यनाथ सिद्ध या सिद्धनाथ कृत।

—न्यू कैट् कैट्. २।२५१

इन्द्रजालपद्धति

लि०— —न्यू कैट् कैट्. २।२५१

इन्द्रजालप्रकरण

लि०—सिद्धशावरतन्त्र से गृहीत। —न्यू कैट्. कैट् २।२५१

इन्द्रजालविद्या

लि०— —न्यू कैट् कैट्. २।२५१

इन्द्रजालमहेन्द्रजाल

लि०—सिद्धनागार्जुनकृत कक्षपुट से गृहीत।

—न्यू कैट् कैट् २।२५१

इन्द्रजालविधान

लि०—नागोजी कृत। —न्यू कैट् कैट् २।२५१

इन्द्रजालादिसंग्रह

लि०— —न्यू कैट् कैट्. २।२५१

इन्द्रयामलतन्त्र

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे।

इन्द्राक्षीपञ्चाङ्ग

लि०—(१) (क) पन्ना १ से १२ तक, (ख) पन्ना १ से ५ तक, तथा (ग) पन्ना १–२ इस प्रकार ३ खण्डो मे विभक्त है। पूर्ण।

प्रथम खण्ड मे—३ पन्नो मे रुद्रयामलान्तर्गत शिव-पार्वती सवादरूप इन्द्राक्षीपटल है। ४र्थ से १० तक रुद्रयामलान्तर्गत उमा-महेश्वर सवादरूप इन्द्राक्षीपद्धति है एव १० से १२ तक रुद्रयामलान्तर्गत ईश्वर-पार्वती सवादरूप इन्द्राक्षीकवच है। २ य खण्ड मे—रुद्रयामलान्तर्गत उमा-महेश्वर सवादरूप इद्राक्षीसहस्रनामस्तोत्र है तथा ३ य खण्ड मे रुद्रयामलान्तर्गत उमा-महेश्वर सवादरूप इन्द्राक्षीस्तोत्र है। अन्त मे देवी इन्द्राक्षी का ध्यान दिया गया है। —ए० व० ६४३२

(२) (क) श्लोक स० ४२८, पूर्ण।
(ख) श्लोक स० ४५०, पूर्ण। —र० म० (क) ४८१६, (ख) ४९०५

(३) श्लोक स० ४५५, अपूर्ण। इसमे इन्द्राक्षीनित्यपूजापद्धति, जगच्चिन्तामणि-कवच तथा अपूर्ण स्त्रोत्र ये तीन ही हैं।

(४) उमा-महेश्वर सवादरूप रुद्रयामल से गृहीत। —स० वि० २५०६३
—न्यू कैट् कैट् २।२५६

इन्द्राक्षीपद्धति

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।२५६

इन्द्राक्षीप्रत्यङ्गिरायन्त्र

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।२५६

इन्द्राक्षीयन्त्र

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।२५६

इन्द्राणीतन्त्र

उ०— आक्सफोर्ड १०९ (क) के अनुसार इसका उल्लेख है।

—कैट् कैट् १।५९

इष्टार्थद्योतिनी (१)

लि०—श्लोक स० ५२३०, ३२ पटलो मे पूर्ण। विविध ओषधियाँ तथा वशीकरण, उच्चाटन, विद्वेषण, मोहन, मारण आदि षट्कर्म इसमे प्रतिपादित है।

—ट्रि० कै० ९२१

इष्टार्थद्योतिनी (२)

लि०—प्रयोगसार की टीका।　　—न्यू कैट्. कैट् २।२६१

इष्टोपदेशतन्त्र

उ०—स्पन्ददीपिका मे।

ईशान (१)

लि०—शैवागम। सर्वप्रोक्तागम का उपागम। कामिक वर्ग के अन्तर्गत।

—न्यू कैट्. कैट् २।२६४

ईशान (२)

लि०—शैवागम। अशुमदागम का उपागम। कामिक वर्गान्तर्गत।

—न्यू कैट्. कैट् २।२६४

ईशानशिवगुरुदेवपद्धति

लि०—(१) ईशानशिवगुरुदेवमिश्र कृत। श्लोक सं० ८०००। केवल मन्त्रपाद पर्यन्त।　　—अ० व० १३७४५

(२) नामान्तर—तन्त्रपद्धति। इसका अन्तिम भाग सिद्धान्तसार (ईशानशिव कृत) कहा गया है।　　—न्यू कैट् कैट् २।२६५

ईशानसंहिता (१)

लि०—(१) श्लोक स० २१५, पूर्ण। यह कुलार्णव तन्त्रान्तर्गत शिव-पार्वती सवाद-रूप फिर नारद-गोतम सवादरूप वैष्णवतन्त्र है। शिवजी के छठे मुखमे, जो गुप्त और ईशान

कहलाता है, निकलने के कारण यह ईशान कहलाता है। तन्त्र के छह आम्नाय, जो विविध देवी-देवताओ की पूजाविधि का प्रतिपादन करते हैं, शिवजीके छह मुखो से निकले हैं। जैसे इसी तन्त्र के प्रारम्भ मे कहा है—भुवनेश्वरी, अन्नपूर्णा, महालक्ष्मी और सरस्वती ये देवियाँ चतुर्वर्ग देने वाली हैं। इनके मन्त्र वाछित फल देने वाले हैं। इनके सब मन्त्र तथा साधन पूर्व मुख से कहे गये हैं। दक्षिणामूर्ति, गोपाल और विष्णु ये भी चतुर्वर्ग देने वाले है इनके मन्त्र साधनो सहित मैंने दक्षिण मुख से कहे हैं। कृष्ण, नारायण विष्णु, रामचन्द्र, नरसिह, वराह, शङ्कर आदि भी चतुर्वर्गप्रद हैं। उनके मन्त्र मैंने पश्चिम मुख से कहे हैं। काली, तारा, महिषमर्दिनी, त्वरिता, वगला, जयदुर्गा तथा मातङ्गिनी आदि प्रत्येक युग मे पूर्णकला हैं। कलियुग मे तो उनकी पूर्ण कला विशेषण रूप से व्यक्त है। उनके मन्त्र और साधन उत्तर मुख से मैंने कहे हैं। त्रिपुरेश्वरी, चण्डा, त्रिपुरभैरवी, त्रिपुरा, नित्या तथा अन्यान्य देवता चतुर्वर्गप्रद हैं। साधनो सहित उनके मन्त्र मैंने मनुष्यो के भोग और मोक्ष के लिए ऊर्ध्व मुख से कहे हैं। सूर्य, चन्द्रमा, हनुमान्, गौराङ्गी, अपराजिता, प्रत्यगिरा तथा अन्यान्य देवता चतुर्वगफलप्रद है। इनके मत्र और साधन गुप्त मुख से मैंने कहे हैं।

—ए० व० ५९१३

(२) अपूर्ण। —८०४

(३) श्लोक स० १८१। यह नारदगौतम सवादरूप गुप्ताम्नाय कुलार्णव का एक अश है। इसमे वैष्णवो के आचार और वर्म निरूपित है।

—रा० ला० ४२४

उ०—आगमतत्त्वविलास तथा आगमकल्पलता मे।

ईशानसंहिता (२)

लि०—यदुनाथकृत आगमकल्पलता का आधारभूत ग्रन्थ।

—न्यू कैट् कैट् २।२६६

ईशानसंहिता (३)

लि०—ईश्वर-अगस्त्य सवादरूप। ज्ञानरत्नाकर तथा अमरीकल्प आदि इसी से गृहीत हैं। —न्यू कैट् कैट् २।२६६

ईशान संहिता (४)

लि०—शैव।

उ०—गीताव्याख्या परमशिवेन्द्र सरस्वतीकृत तथा लिङ्गार्चनचन्द्रिका मे।

ईश्वरकल्प

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

ईश्वरतन्त्र

लि०— —न्यू कट् कैट् २।२७४

ईश्वरप्रत्यभिज्ञा

लि०—उत्पलाचार्य कृत, श्लोक स० २००। यह काश्मीर शैव सम्प्रदाय का ग्रन्थ है।
—अ० व० १८०६

ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी

लि०—श्लोक म० ३५००। इसको चतु साहस्री भी कहते हैं।
—अ० व० १८२८

ईश्वरमततन्त्र

लि०—वगलामुखीपञ्चाङ्ग मात्र। —न्यू कैट् कैट्. २।२७४

ईश्वरविमर्शिनी

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

ईश्वरप्रत्यभिज्ञाव्याख्या

लि०—श्लोक स० ५५०। —अ० व० १८०७

ईश्वरसंहिता (नृसिहकल्प)

लि०—ईश्वर-पार्वती सवादरूप। पञ्चरात्रागम।
—न्यू कैट्. कैट् २।२७९

ईश्वरसिद्धि

उ०—महार्यमञ्जरी-परिमल मे।

ईश्वरीकल्प

लि०—श्लोक म० ७५। —सं० वि० २४३७५

ईश्वरीतन्त्र

उ०—सुन्दरदेव द्वारा उल्लिखित। —कैट् कैट् १।६१

ईषतन्त्र

नामान्तर—(१) कातन्त्र। जयदेव विरचित।

उ०—Oxford १६९ (क) के अनुसार त्रिलोचनदास द्वारा इसका उल्लेख किया गया है। —कैट् कैट् १।६१

(२) —न्यू कैट् कैट् २।२८०

उग्रचण्डातन्त्र

लि०—कालिकापुराण मे उक्त। —न्यू कैट् कैट् २।२८३

उग्रचण्डेश्वरतन्त्र

लि०—वेतालकवचमात्र। —न्यू कैट् कैट् २।२८३

उग्रतारानीलसरस्वतीविधि

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।२८३

उग्रतारापञ्चाङ्ग

लि०—श्लोक स० ४२०, पूर्ण। देवी-भैरव सवादरूप इस ग्रन्थ मे उग्रतारा की पूजा-विधि तथा उक्त देवी के कई स्तव प्रतिपादित है। इनमे ३ रुद्रयामल से गृहीत कहे गये है तथा २ कुलसर्वस्व से। नित्यपूजापद्धति गद्य मे है एव साधारणपूजापद्धतिसी है। देवी पार्वतीजी के यह प्रश्न करने पर कि हे देव, आपने पहले जगच्चैतन्यरूपिणी सृष्टि, स्थिति और लय करने वाली उग्रतारा नाम से जो देवी कही थी, उसका पञ्चाङ्ग कहने की कृपा कीजिए। भगवान् भैरव ने उग्रतारा देवी का पञ्चाङ्ग कहा—

(१) रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत	(१)	उग्रतारापटल।
,,	(२)	उग्रतारानित्यपूजापद्धति।
,,	(३)	उग्रताराकवच।
कुलसर्वस्वान्तर्गत	(४)	उग्रतारासहस्रनामस्तव।
,,	(५)	उग्रतारास्तव।

—ए० व० ६३३२

उग्रतारापद्धति

लि०—(१) श्लोक स० ६००। इसके अन्त मे पीठपूजाक्रम भी है।

—अ० व० ११९७१

(२) पन्ने ३८। नारायणभट्ट विरचित। यह दुर्गा देवी की स्वरूपान्तर्भूता उग्रतारा की पूजा पर सग्रह ग्रन्थ है। —वी० कै० १३६३

पन्ने १४ (८×३६) श्लोक स० लगभग २५२, पूर्ण।

—र० म० ४८६०।

यह ग्रन्थ पूर्व के ग्रन्थो से भिन्न प्रतीत होता है। नाम से भी और आकार से भी।

उग्रतारापूजापद्धति

—न्यू कैट् कैट्. २।२८३

उग्रतारायन्त्र

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।२८३

उग्रतारासहस्रनाम

लि०—अक्षोभ्यसहिता से गृहीत। —न्यू कैट् कैट् २।२८३

उग्रतारासहस्रनामस्तोत्र

लि०—पूर्ण। यह तारातन्त्रान्तर्गत कहा गया है। किन्तु वीरेन्द्र रिसर्च सोसाइटी से प्रकाशित सस्करण (तारातन्त्र) मे यह स्तोत्र उपलब्ध नही होता है।

—व० प० १२४६

उग्रतारास्तोत्र

लि०—(१) योगिनीतन्त्र से गृहीत।
(२) रुद्रयामल से गृहीत।
(३) गौतम ऋषि कृत।
(४) स्वायंभुवपुराण से गृहीत।

—न्यू कैट् कैट्. २।२८३

उग्ररथशान्तिकल्पप्रयोग

लि०—(१) श्लोक स० ५००। —अ० व० ६५७१

(२) श्लोक स० ६५०। यह शैवागमान्तर्गत शिव-षण्मुख सवाद रूप है। षण्मुख (कार्तिकेय) जी ने शिवजी से निवेदन किया—भगवन्, सब प्राणियो का विनाश करने वाला, पुत्र पौत्रो का विनाशक, धनधान्य का नाश करने वाला तथा राजाओ को

राज्यच्युत कराने वाला यह उग्ररथ कौन है और इससे जीवो को त्राण कैसे मिल सकता है? इसी प्रश्न का शिवजी ने इसमे उत्तर दिया है। इसमे प्रतिपादित विषय है—जब पुरुष ६० वर्ष का हो जाय तब उसे कल्याण प्राप्ति तथा धनधान्य और पुत्र पौत्रादि की रक्षा के लिए शैवागमोक्त विधि से उग्ररथ शान्ति करनी चाहिए तथा उसकी विधि और प्रयोग आदि का कथन। —रा० ला० ३२३४

उच्चाटनप्रयोगक्रम

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।२८४

उच्चाटनमन्त्र

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।२८४

उच्चाटनादिविधि

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।२८४

उच्छिक

नित्यानन्दनाथ द्वारा रसरत्नाकर मे उक्त।

—न्यू कैट् कैट् २।२८५

उच्छिष्टगणपतिकल्प

लि०—(१) श्लो० स० २००। —अ० व० ५६६०
(२) रुद्रयामल आदि से गृहीत।

—न्यू कैट् कैट् २।२८५

उच्छिष्टगणपति (गणेश) कवच

लि०—श्लोक स० ६०। विश्वसारतन्त्र से गृहीत।

—न्यू कैट् कैट् २।२८५

उच्छिष्टगणपतिचतुरङ्ग

लि०—रुद्रयामलोक्त। इसके प्रारभ मे गणपति-मन्त्र है।

—रा० पु० ५७८३

उच्छिष्टगणपतिजपविधि तथा कवच

लि०—(१) दो प्रतियाँ, श्लोक स० ४८, पूर्ण। यह दोनो रुद्रयामलतन्त्रागृहीत है।
—र० म० ११५२

(२) रुद्रयामल से गृहीत। —न्यू कैट् कैट् २१२८५

उच्छिष्टगणपति-(गणेश)पञ्चाङ्ग

लि०—(१) रुद्रयामल से गृहीत।
(२) शिवार्चनचन्द्रिका से गृहीत।
—न्यू कैट् कैट् २१२८५

उच्छिष्टगणपति-(गणेश)पटल

लि०— —न्यू कैट् कैट् २१२८५

उच्छिष्टगणपतिपूजा

लि०— —न्यू कैट् कैट्. २१२८५

उच्छिष्टगणपतिमन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० ९०। —अ० व० ५७०१
(२) श्लोक स० ४०, अभिषेकमन्त्रसहित, पूर्ण।
—स० वि० २३८७८

उच्छिष्टगणपति-(गणेश)मन्त्रकवच

लि०— —न्यू कैट् कैट् २१२८५

उच्छिष्टगणपतियन्त्रविधानविधि

लि०— —न्यू कैट् कैट् २१२८५

उच्छिष्टगणपतिविधान

लि०— —न्यू कैट् कैट् २१२८५

उच्छिष्टगणपतीय

लि०— —न्यू कैट् कैट् २१२८५

उच्छिष्टगणेशपञ्चाङ्ग

लि०—(१) श्लोक स० २९०, पूर्ण। उमा-महेश्वर सवादरूप।
रुद्रयामलान्तर्गत (१) उच्छिष्टगणेशपटल।
,, (२) उच्छिष्टगणेशपूजन।
,, (३) गणेशकवच।

रुद्रयामलान्तर्गत (४) उच्छिष्टगणेशसहस्रनाम।
,, (५) उच्छिष्टगणेशस्तोत्र।
ऊपर कहे गये ५ विषय इसमे वर्णित हैं। —ए० व० ६५०९

(२) उच्छिष्टगणेशपटल। श्लोक स० लगभग ७२, अपूर्ण।
—स० वि० २५६७१

(३) उच्छिष्टविनायकपद्धति। श्लोक स० लगभग ३८०, पूर्ण।
—स० वि० २५८०१

(४) शिवार्चनचन्द्रिका से गृहीत —कैट्. कैट् ३।१४

उच्छिष्टगणेशप्रकरण

उ०—गणेशविमर्शिनी मे।
—न्यू कैट् कैट् २।२८५

उच्छिष्टगणेशसहस्रनामस्तव (१)

लि०—हरमेखलातन्त्र से गृहीत। श्लोक स० २०३। नाम स० १०३४।
—न्यू कैट् कैट् २।२८५

उच्छिष्टगणेशसहस्रनामस्तव (२)

लि०—रुद्रयामल से गृहीत। —न्यू कैट् कैट् २।२८५

उच्छिष्टचण्डालीपटल

वि०—फेत्कारिणीतन्त्र से गृहीत। —न्यू कैट् कैट् २।२८६

उच्छिष्टचण्डालीपद्धति

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।२८६

उच्छिष्टचण्डालीप्रकरण

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।२८६

उच्छिष्टचण्डालीप्रयोग

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।२८६

उच्छिष्टचण्डालीमन्त्र

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।२८६

उच्छिष्टचण्डालीमन्त्रादि

लि०—प्रयोगसहित। सुरेन्द्रसहिता के पञ्चागमशास्त्रसे गृहीत।

—न्यू कैट् कैट् २।२८६

उच्छिष्टचाण्डालिनीपद्धति

लि०—श्लोक स० ३३, पूर्ण। यह मन्त्रदेवप्रकाशिका के अन्तर्गत है।

—स० वि० २५७३३

उच्छिष्टचाण्डाली

लि०—नामान्तर चण्डाली या चाण्डालिनी।

—न्यू कैट् कैट् २।२८६

उच्छिष्टचाण्डालीकल्प

लि०—(१) श्लोक स० १०६, पूर्ण। इसमे उच्छिष्टचाण्डाली की पूजा का विवरण है। विशेप रूप से मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण आदि षट्कर्मो की पूर्वपीठिका के रूप मे जिनका रुद्रयामल तन्त्र से लम्बा अश उद्धृत है। इसमे दक्षिणकाली की पूजा-विधि भी वर्णित है। यह अश भी रुद्रयामल से ही गृहीत है। पुष्पिका मे इस ग्रन्थ का नाम सुमुखीकल्प भी दिया गया है। —ए० व० ६३८९

(२) ईश्वर के प्रति उक्त रुद्रयामल से गृहीत। —न्यू कैट् कैट् २।२८६

उच्छिष्टतन्त्र

प्राप्त ग्रन्थ सूची से

उ०—कक्षपुटतन्त्र तथा दत्तात्रेयतत्र मे।

उच्छिष्टभैरवादिबलिप्रकार

लि०— —न्यू कैट्. कैट् २।२८६

उच्छुष्मभैरव

नामान्तर—उच्छुष्मशास्त्र।

उ०—शिवसूत्रविमर्शिनी तथा स्वच्छन्दतन्त्र (भाग ३ य) मे। अभिनवगुप्ताचार्य के तन्त्रसार मे उच्छुष्मशास्त्र के नाम से इसी का उल्लेख है।

उच्छुष्मशास्त्र

उ०—परात्रिंशिकाव्याख्या (अभिनवगुप्तकृत) मे।

उज्ज्वलतन्त्र

उ०—आगमतत्त्वविलास मे।

उड्डयनतन्त्र

लि०—डामरखण्डान्तर्गत गौरीकल्प से गृहीत भगवद्वस्त्र-(?)पटल मात्र।

—न्यू कैट् कैट् २।२९०

उड्डामरतन्त्र

(१) लि०—श्लोक स० ५५०, पूर्ण। यह १५ पटलो मे पूर्ण है। इसके विषय—३ य पटल मे अञ्जनाधिकार, ७ म मे पुरुषवश्याधिकार, १३ वे मे भूतभैरव, १४ और १५ वे मे मन्त्रकोष वर्णित है।

—ए० ब० ५८४८

(२) —कैट् कैट् १।६२

मु०—रसिकमोहन चटर्जी के द्वारा सम्पादित विविधतन्त्रसग्रह मे यह रुद्रयामलोद्धृत कहा गया है।

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

उड्डामरेश्वरतन्त्र

लि०—(१) शिवप्रोक्त, श्लोक स० ७६०। यह १६ पटलो मे पूर्ण है। यह महातन्त्र रुद्रयामल से उद्धृत महादेव-पार्वती सवादरूप है।

गौरी देवी ने सिर से प्रणाम कर शङ्करजी से पूछा—हे देव, मै धर्मार्थसाधन वशीकरण, उच्चाटन, मोहन, स्तमन तथा शान्तिक, पौष्टिक आदि सुनना चाहती हूँ। आप सुनाने का अनुग्रह कीजिए। इसपर भगवान् ने भूतज्वर लगा देना, उच्चाटन, विद्वेषण, मारण आदि की सिद्धि करा देना, फोडे, फुसियाँ पैदा कर देना, जल रोक देना, खेत पर खडी फसल उजाड देना, पागल और अन्धा बना देना,विष उतार देना, अञ्जनसिद्धि कर देना जिससे गुप्त वस्तुएँ भी दीख पडे, मन उच्चाटन कर देना, भूत, ब्रह्मराक्षस आदि को पीछे लगा देना, पञ्चभूतो के अक्षरो से शुभाशुभ जानना, जडी बूटी उखाडने की विधि, नारी के गर्भ-धारण का उपाय, नाना प्रकार की ओषधियो का प्रयोग, वश मे करनेवाले तिलक, अञ्जन आदि का निर्माण, समोहन चूर्ण का निर्माण, डाकिनीदमन, ८ और ३६ यक्षिणियो का साधन,

चेटक-साधन, नाना सिद्धियो के उत्पादक मन्त्र, विविध प्रकार के लेप, मन्त्रो के अभिषेक का फल और विधि, महावृष्टि, रोगशान्ति, वशीकरण, आकर्षण आदि सिद्धियो का साधन, विद्याधर बन जाना, खडाऊँ और वेताल की सिद्धि कर लेना, अदृश्य हो जाना आदि विविध विषयो का प्रतिपादन किया गया है। —ज० का० ९८६

(२) श्लोक स० १५२, अपूर्ण। —स० वि० २४५१४

उड्डामर-(ईश्वर) तन्त्र

लि०—कार्तवीर्यार्जुनकल्प तथा कार्तवीर्यार्जुनकवच मात्र।

—न्यू कैट् कैट् २।२९१

उड्डामरतन्त्र

लि०—कार्तवीर्यपद्धति, कार्तवीर्यमन्त्र, कार्तवीर्यार्जुनमन्त्रविधान, कार्तवीर्यार्जुन-सहस्रनाम, कार्तवीर्यस्तवराज, चण्डिका-पूजाविधि, दत्तात्रेयकल्प, दत्तात्रेयकवच, दत्तात्रेय-विषयक मन्त्रादि, पञ्जर-विधान, परादेवीसूक्त, प्रत्यङ्गिराकल्प, भैरवसहस्रनामस्तोत्र आदि विविध विषय इसमे वर्णित है। —न्यू कैट् कैट् २।२९१

उड्डामरमहातन्त्रशास्त्रसारोद्धार

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।२९०

उड्डीयानमहेश्वरतन्त्र

लि०—आम्नायस्तवमात्र। —न्यू कैट्. कैट्. २।२९१

उड्डीश-उत्तरखण्ड

लि०—(क) श्लोक स० ३५०। शिवकालिका संवादरूप यह ७ पटलो मे पूर्ण है। यद्यपि यह उड्डीश है पर इसका वशीकरण आदि षट्कर्मो से कोई सम्बन्ध नही है। उनके विपरीत यह ऊँचे आध्यात्मिक विचारो का प्रतिपादक है। प्रस्तुत प्रति तथा आगे उक्त (ख) और (ग) चिह्नित दो प्रतियो मे ६ पटल है। कुछ पद्य और है। वे सातवे पटल का कुछ अश हो सकते है।

शिवजी ने महेशानी से निवेदन किया कि हे देवि, आप अपना सूत्रभूत उड्डीशोत्तरखण्ड, जो भ्रान्तिनाशक है, मुझसे कहिए। उड्डीश तो आपने पहले बहुत बार मुझसे कहा, किन्तु उत्तरखण्ड का माहात्म्य नही कहा। कौल ज्ञान को ही सर्वयोगमय कहा गया है। उसके बिना अतिभयावह अन्धकार छिन्न नही हो सकता। हे देवि, मेरा उससे बढकर दूसरा

प्रिय नही, इसलिए मैं बार-बार आपसे प्रार्थना करता हूँ। इस पर देवी ने कौलाचार, साधनमूल शक्ति, शक्तिपूजा, शक्तिमन्त्र, साधनसूत्र आदि विषय कहे।

(ख) श्लोक स० ३६०, पूर्ण॥

(ग) श्लोक सं० ३५०, पूर्ण॥

—ए० व० (क) ५८३३, (ख) ५८३४, (ग) ५८३५

उ०—पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, आगमतत्त्वविलास तथा महामोक्षतन्त्र मे।

उड्डीशकल्प

लि०—पन्ने ९४। —रा० पु० ४१५२

उड्डीश या उड्डीशतन्त्र

लि०—(१) गौरीशङ्कर सवादरूप। गौरीजी के यह निवेदन करने पर कि भगवन्, मुझे वशीकरण, उच्चाटन, मोहन, स्तभन, शान्तिक, पौष्टिक, नेत्रहानि, मनोनाश, श्रुतहानि, ज्ञानहानि, इन्द्रियग्लानि, शोषण आदि के साधन तन्त्र, मन्त्र आदि सुनने की इच्छा है। भगवान् शङ्कर ने उनका प्रतिपादन किया। यह आभिचारिक श्रेणि का कौल तन्त्रग्रन्थ है। —क० का० ६

(२) (क) पूर्ण, एकादश पटल तक।

(ख) अपूर्ण, अष्टम पटल तक।

(ग) अपूर्ण, षष्ठ पटल तक।

—व० प० (क) १४०६, (ख) १२७६, (ग) ४८६।

वगीय साहित्य परिषत् की इस तन्त्र की प्रतियाँ इस तन्त्र के मुद्रित सस्करण से मिलती नहीं। यद्यपि स० १४०६ सग्रह-ग्रन्थ सा प्रतीत होता है पर मार्जिन के हेडिङ्ग तथा अन्त पुष्पिका मे यह उड्डीश कहा गया है।

(३) यह कौल तन्त्र है। इसमे वशीकरण, समोहन, उच्चाटन, स्तभन, विद्वेषण, शान्तिक, पौष्टिक, चक्षुहानि, मनोहानि, कर्णहानि, ज्ञानहानि, क्रियाहानि, कीलन, कार्य-स्तभ, जलस्तभ, अन्धीकरण, शरीरसकोचन, गूंगा वना देना, बहिरा वना देना, भूतज्वर कर देना, शस्त्रको शान्त कर देना, सव आपत्तियो को हटा देना, दही और शहद का नाश कर देना, पागल वना देना, हाथी और घोडो को विगाड देना, सापो को आकृष्ट कर देना, मनुष्यो को आकृष्ट कर देना, खडी फसल नष्ट कर देना, वृक्ष आदि के पत्ते उजाड देना, गर्भ धारण करा देना आदि के मन्त्र, उनकी जपसख्या आदि, तदनन्तर किस तिथि मे किस

कर्म का अनुष्ठान करना, किस काष्ठ की कलम मे किस मन्त्र को लिखना एव मन्त्रसिद्धि का प्रकार आदि विषय प्रतिपादित है।

—वी० कै० १३६२

(४) श्लोक स० ४९६, पूर्ण। यह गौरीशङ्कर सवादरूप ग्रन्थ ११ पटलो मे पूर्ण है। इसमे प्रतिपादित मन्त्रो का एकान्त मे जप करना चाहिए एव इसमे उक्त देवी, देवताओ और मन्त्रो का श्रद्धायुक्त मन से ध्यान करना चाहिए। वी० कै० १३६२ मे प्रतिपादित वशीकरण, मोहन, उच्चाटन आदि सभी विषय इसमे भी प्रतिपादित है। यह कौल तन्त्र विविध प्रकार के टोने टुटके, झाड फूक, ओझाई आदि का प्रतिपादन करता है।

—रा० ला० ९८९

(५) श्लोक स० ४७५, पूर्ण। यद्यपि इसका प्रारभिक अश उपर्युक्त रा० ला० ९८९ के प्रारभिक अश से मिलता-जुलता है, किन्तु प्रारभिक वाक्य द्वारा यह मन्त्रचिन्तामणि कहा गया है—'अथ मन्त्रचिन्तामणिर्लिख्यते।' इस ग्रन्थ की प्रस्तुत प्रति तथा अन्य प्रतियो के विभिन्न पटलो की पुष्पिकाएँ इसका विभिन्न नामो से निर्देश करती है. जसे उड्डामरेश्वरतन्त्र, उड्डामरमहातन्त्र, उड्डीश, वीरभद्रतन्त्र, वीरभद्रोड्डीश, रावणोड्डीश आदि। विषय—अञ्जनाविकार, भूतवाद, मन्त्रपटल, वशीकरण, नारीवराङ्ग-संकोचन, लिङ्गपाटव-पटल, स्वरपटल, चाण्डालीपटल आदि विषय इसमे वर्णित है।

—ए० व० ५८३०

(६) श्लोक स० २६६, अन्त मे खण्डित, अपूर्ण। इस प्रति मे पुष्पिका नही है। प्रथम पृष्ठ पर इसका नाम वीरभद्रतन्त्र दूसरी कलम से लिखा है।

—ए० व० ५८३१

(७) श्लोक स० ३२०, पूर्ण, तथा तान्त्रिक चक्रो और यन्त्रो से विभूषित। सभी पटलो की जो इसमे ५ है, पुष्पिकाओ मे यह ग्रन्थ उड्डीश वीरभद्र कहा गया है। इसके कुछ श्लोक भैरवीतन्त्र से गृहीत कहे गये है। —ए० व० ५८३२

(८) ईश्वरप्रोक्त —ज० का० ९८८

(९) (क) श्लोक स० १५४, पूर्ण।
(ख) श्लोक स० २२५, पूर्ण। वीरभद्र महातन्त्रान्तर्गत।
(ग) श्लोक स० ६८२, पूर्ण। मयूरशिखाकल्पान्त।
(घ) श्लोक स० ५६८, पूर्ण। वीरभद्रतन्त्र मे उक्त।

उक्त—(इनके अतिरिक्त स० वि० मे अपूर्ण प्रतियाँ भी है, जिनकी सख्या है—२४२०८, २४५१३, २४५७०, २४६७७ तथा २४७०६।)

—स० वि० (क) २६७१४, (ख) २४९२६, (ग) २५५९१, (घ) २५६७२

(१०) नामान्तर—उड्डीश महातन्त्र या उड्डीशशास्त्र या रावणोड्डीश अथवा रावणोड्डीश डामर-तन्त्रसार या उड्डामरतन्त्र या वीरभद्रतन्त्र अथवा उड्डीशवीरतन्त्र।

—न्यू कैट् कैट् २।२९२

उ०—कक्षपुट, सिद्धचामुण्डी, ताराभक्ति सुधार्णव तथा सर्वोल्लास मे।

उड्डीशतन्त्रव्याख्या

लि०—श्लोक स० ६०४, पूर्ण। —स० वि० २४६४३

उड्डीशवीरभद्र

लि०—श्लोक स० ३२०, पूर्ण। यह ५ पटलो मे पूर्ण है। प्रत्येक पटल की पुष्पिका मे यह उड्डीशवीरभद्र कहा गया है। यद्यपि यह उड्डीशतन्त्र के शीर्षक से वर्णित है पर इसे उड्डीशवीरभद्र ही समझना चाहिए। इसमे उपर्युक्त पुष्पिकाएँ प्रमाण है।

—ए० ब० ५८३२,

उड्डीशसार

लि०—(१) श्लोक स० ५५०, अन्त के ६ पन्ने खण्डित, अपूर्ण।

—अ०ब० ११७२७

(२) श्लोक स० ३३५, अपूर्ण। —स वि २४८९४

उत्तमतन्त्र

उ०—आगमतत्त्वविलास मे। वामकेश्वरतन्त्र पृ० ८७ मे भी इसका उल्लेख किया गया है।

उत्तरकल्प

उ०—शाक्तानन्दतरङ्गिणी मे।

उत्तरकामाख्यातन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० ३१५। पार्वती-ईश्वर सवादरूप यह तत्र पूर्वखण्ड और उत्तरखण्ड के नाम से दो खण्डो मे विभक्त है। उत्तरखण्ड मे सभवत १३ पटल है। प्रस्तुत प्रति मे उत्तरखण्ड के केवल अन्तिम ४ पटल है—१० म, ११ श, १२ श और १३

ग। उनके विषय हैं—चार युगों के धर्म-कथन, भिन्न-भिन्न महीनों में भिन्न-भिन्न देवताओं की पूजा का फल कथन, अन्तर्याग का निरूपण, भगवान् विष्णु के चक्र से कटकर गिरे हुए सती देवी के अङ्ग प्रत्यङ्गों से उत्पन्न पीठों में शक्ति और भैरवों के नामों का निर्देश।

—रा० ला० ५७५

(२) —न्यू कैट्. कैट् २।३००

उ०—कौलिकार्चनदीपिका में।

उत्तरकामिक

लि०—शिवभक्तप्रतिष्ठाविधि मात्र। शैवागम। —न्यू कैट् कैट् २।३००

उत्तरकामिकमहातन्त्र

लि०— —न्यू कैट्. कैट् २।३००

उत्तरकामिकातन्त्र

लि०— —न्यू कैट्. कैट् २।३००

उत्तरकारण

लि०—शैवागम। —न्यू कैट् कैट्. २।२००

उत्तरगन्धर्वतन्त्रताराकल्प

त्रैलोक्यविजययन्त्र या त्रैलोक्यविजयकवच मात्र।

लि०— —न्यू कैट्. कैट् २।३००

उत्तरचतुःशतीशास्त्र

उ०—ललितासहस्रनामटीका सौभाग्यभास्कर में।

उत्तरतन्त्र

लि०—(१) श्लोक सं० ५००। यह देवी-ईश्वर संवादरूप तन्त्र १६ पटलों में पूर्ण है। वक्ष स्थल पर बैठी हुई देवी ने शङ्करजी से पूछा—हे देव, साधकों की प्रयोगविधि कहने की कृपा कीजिए। मैंने यामल आदि सब तन्त्र सुने पर मुझे उत्तम प्रयोगविधि कहीं पर सुनने को नहीं मिली। इसपर शङ्करजी ने १६ पटलों द्वारा निम्न निर्दिष्ट विषयों का प्रतिपादन किया—साधकों की प्रयोगविधि आदि का निरूपण, शाक्तों की निन्दा आदि करने में दोष कथन, महाविद्या आदि के पूजन आदि का निरूपण, भगलिङ्ग-माहात्म्यका प्रतिपादन,

स्नान आदि कृत्यो का निरूपण, गृहस्थो के आचार आदि का निरूपण, कर्म-काल आदि का कथन, प्रश्नोत्तर पदो का निरूपण, भाव का निरूपण, पुरश्चरणादि का निरूपण, वलिदान आदि का निरूपण आदि। —नो० स० १।३५

(२) श्लोक स० २१०। इसमे १० ही पटल हैं। उनके विषय हैं—साधको के कर्तव्य, उनकी विधि, दीक्षा के लिए गुरु-शिष्य आदि पात्र का निर्णय, कौल शक्ति कथन, कुलसाधको के लक्षण, कलाप्रशसा, शक्तिप्रशसा, स्वयभू कुसुम-माहात्म्य, आसन-विधि, वलिप्रशसा आदि।

(३) अभिषेकविधि मात्र, पूर्ण। भगवान् ने कहा है—"गुप्त च सर्वतन्त्रेषु तव स्नेहेन पार्वति। अभिषेक प्रवक्ष्यामि सर्वसिद्धिप्रदायकम्।"

इत्युत्तरतन्त्रे श्रीराजराजेश्वरीसवादे सर्वसिद्धिप्रदोऽभिषेकपटल।

—ए० व० ६१४७

(४) श्लोक स० ३०, स्वप्नाध्यायमात्र, पूर्ण। कौन सुस्वप्न और कौन दुःस्वप्न है तथा उनका क्या फल होता है इत्यादि का विवेचन इस अध्याय मे है। यह भी देवीश्वर संवादरूप ही है। —ए० व० ५८९६

(५) अपूर्ण, केवल ४र्थ और ५ म पटल है। —व० प० १३०५

(६) (क) श्लोक स० २७६, पूर्ण,
(ख) श्लोक स० ३००, अपूर्ण
(ग) २, ६, ७, २१, और २२ पटल अपूर्ण।

—स० वि० (क) २४७१७, (ख) २५७५६, (ग) २६१३१

उ०—कालिकासपर्याविधि, प्राणतोषिणी, मन्त्रमहार्णव, कुलप्रदीप, तन्त्ररत्न, श्यामारहस्य, आगमतत्त्वविलास, सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी, सर्वोल्लास, तन्त्रसार, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, पुरश्चर्यार्णव, महाकालकवच आदि मे। यह ६४ तन्त्रो मे अन्यतम है।

उत्तरनिश्वास

लि०—निश्वासागम शैव उपागम। —न्यू कैट् कैट् २।३०५

उत्तरपद

लि०— प्राप्त ग्रन्थसूची से

उत्तरभैरवी

लि०— —प्राप्त ग्रन्थसूची से

उत्तरवरिवस्या

लि०—भूसुरानन्दनाथ कृत । दे० वरिवस्यारहस्य ।

—न्यू कैट् कैट्. २।३०९

उत्तरवातुल

लि०—वातुलागमान्तर्गत शैव उपागम । दे० कामिकान्तर्गत ग्रथसूची ।

—न्यू कैट् कैट् २।३०९

उत्तरषट्क

लि०—विद्यानाथ कृत । —न्यू कैट् कैट् २।३०९

उत्तरषोढान्यासादि

लि०—श्लोक स० ४२० । पूर्वषोढान्यास तथा मातृकान्यास भी इसमे सन्निविष्ट है ।

—अ० व० १३३५९ (क)

उत्तरसंहिता

उ०—भारद्वाजसहिता मे । —न्यू कैट् कैट् ३।३०९

उत्तरातन्त्र

लि०—श्लोक सं० २१०, अपूर्ण । —स० वि० २४४४३

उ०—आगमसारसग्रह, कालीतत्त्व, कालिकासपर्याविधि तथा शाक्तक्रम मे ।

उत्तराथर्वण

लि०—प्रत्यङ्गिराकल्प मात्र । —न्यू कैट् कैट् २।३१०

उत्पत्तितन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० ६४२ । इसकी पुष्पिका मे लिखा है—"त्रिशतैकाशीति-(तम ?)पटल समाप्त ।" तदनुसार ३८१ पटल माने जायँ तो इसका कलेवर अति विशाल होना चाहिए । ऊपर इसकी जो श्लोक सं० दी गयी है वह उसके अनुरूप नही है । इससे ज्ञात होता है कि यह पूर्ण नही है ।

यह उमामहेश्वर सवादरूप है । श्री उमा के यह निवेदन करने पर कि शाम्भवीतन्त्र मे उत्पत्ति के सम्बन्ध मे जो आपने कहा, वह मैने सुना । इस समय हे देवेश, कलिसमत साधन कहने की कृपा कीजिए । उसपर भगवान् ने निम्ननिर्दिष्ट विषयो का प्रतिपादन किया—

दिव्य और वीर भाव की प्रशसा, वलियोग्य पशुओ, मनुष्य, वकरा, भैसा, भेड, शूकर, खरगोश, शाही, गोह, गेडा, कछुआ, वन्दर, गधा, घोडा, हाथी तथा विविध पक्षियो का निरूपण, असस्कृत मद्यपान मे दोष कथन, मातृयोनि के सिवा यवनानी आदि योनियो मे गमन करने पर भी कौलिक को दोष नही यह कथन, भाव-लक्षण, कलियुग मे सुरापान से भारतवर्ष मे वर्ण-भ्रश कथन, म्लेच्छोके राज मे कलिस्वभाव कथन, कलियुग मे पशुभाव का विधान, मद्यपान आदि का निषेध, उसके अनुकल्प का निषेध कथन, करमाला की प्रशसा, कामरूप मे विष्णु की शवसाधना का वृत्तान्त, कालधर्मकथन, आत्मसमर्पण का प्रकार, वाणलिङ्ग मे आवाहन आदि नही होते यह कथन, शिवनिर्माल्यके जलपान आदि की फलश्रुति, प्रात कृत्य का निरूपण, शिव-निन्दा आदि मे दोष कथन, दुर्गापूजा का माहात्म्य, अर्घ्यदानविधि, गङ्गाजल मे देवता आवाहन की आवश्यकता नही, ध्यानतत्त्व कथन, विष्णुतत्त्व कथन, दशावतारवर्णन, म्लेच्छराज का काल कथन, गौड देश गर्गपुर मे कल्कि अवतार कथन, उनके विवाह आदि कथन, वाह्यशुद्धिनिरूपण, जगन्नाथ-प्रसाद का माहात्म्य, परब्रह्मस्वरूप-वर्णन, ब्रह्माण्डोत्पत्तिकथन, गङ्गामाहात्म्यादि कथन, ब्रह्मा आदि के जन्म, विवाह आदि का कथन, पाँच प्रकार की मुक्ति का निरूपण, गोलोक-वर्णन, शिवलोक, सत्यलोकादि का वर्णन, कालिका निर्वाणदायिनी है यह कथन, वाणलिङ्ग का प्रमाण आदि। —रा० ला० २९६

(२) —र० म०

उ०—प्राणतोषिणीतन्त्र मे।

उत्तुङ्गपद्धति

लि०—उत्तुङ्ग शिवकृत। —कैट् कैट् २।१४

उत्सवपद्धति

लि०—(१) श्लोक स० ३००। —अ० व० ६८२६ (ग)

(२) —कैट् कैट् ३।१५

उत्सवप्रकरण

लि०— —कैट् कैट् १।६४

उत्फुल्लिकामत

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चतु षष्टि (६४) आगमो मे अन्यतम है।

उत्सवविधि आदि

लि०—श्लोक स० ३९०० । विविध आगमो से सगृहीत ।

—अ० व० ७०२९

उद्दण्डमाहेश्वरतन्त्र

लि०—वटुकभैरवपुरश्चरण मात्र श्लोक स० २४०, पूर्ण । —स० वि० २३८३९

उद्धारकोश

लि०—(१) दक्षिणामूर्ति कृत । ७ कल्पो मे पूर्ण । उक्त कल्पो के विषय हैं—दश विद्या मन्त्रोद्धारकोश-गुणाख्यान, षट्देवीमन्त्रोद्धारकोश, सप्त विद्या और सप्त कुमारो के कोशो का आख्यान, नवग्रह मन्त्रोद्धार कोशाख्यान, सब वर्णो के कोशाख्यान, सर्वागम मन्त्र सागर मे सप्तम कल्प । —ए० व० ५९९०

(२) श्लोक स० ५०० , ७ कल्पो मे पूर्ण । इसमे विविध देवी-देवताओ की पूजा मे उपयुक्त होनेवाले मन्त्र प्रतिपादित हैं। —ए० वं० ६२६४–६५

(३) श्लोक सं० ४९४ । इसमे देवी, गणेश तथा अन्यान्य शक्ति देवी-देवताओ के तान्त्रिक मन्त्रो का उद्धार, अर्थ और उपयोग प्रतिपादित हैं । साथ ही उनकी पूजाविधि भी वर्णित है । इनमे प्रमाण रूप से बहुत से महातन्त्र-वाक्य उद्धृत हैं । इस प्रति मे ६ ही पटल है । —रा० ला० २३४३

(४) नामान्तर—कोशध्याननिर्णय । श्लोक स० ५२६, गद्य पद्य रूप यह ७ पटलो मे पूर्ण ग्रन्थ दक्षिणामूर्ति मुनि विरचित है । इसकी पुष्पिका मे लिखा है १६ देवी, ७ कुमार और नौ ग्रहो के बीज-मन्त्र, मन्त्र ध्यान आदि का निर्णयरूप ७ वाँ पटल समाप्त । इसमे १० महाविद्याओ, उनकी सखियो और परिवार देवताओ के मन्त्रोद्धार, मन्त्र, ध्यान, मन्त्रार्थ, मन्त्रोपयोग आदि विषय वर्णित हैं । —रा० ला० २६६९

(५) यह ७ कल्पो मे पूर्ण है । इसमे १६ देवी, ७ कुमार, ९ ग्रह, ७ देवियाँ आदि के मन्त्र, ध्यान आदि का निर्णय किया गया है । इसमे प्रमाण रूप से आगमामृतमञ्जरी, कुब्जिकासर्वस्व, भैरवतन्त्र, शारदापटल आदि से वाक्य उद्धृत किये गये हैं ।

—क० का० ५

(६)—(क) श्लोक स० ४२०, (ख) श्लोक स० ३३८, (ग) श्लोक स० ४००, दक्षिणा-मूर्ति मुनि कृत । —र० म (क) ४८७१, (ख) १०३१, (ग) ४९३९

(७)—(क) श्लोक स० ५००, (ख) श्लोक स० ५००, (ग) श्लोक स० २००, अपूर्ण।

—अ० व० (क) १३६३५, (ख) ११३४७, (ग) ११७२६

(८) इसमे शाक्त देवियो के वीज मन्त्र प्रतिपादित है।

—बी० कै० १३६१

(९) श्लोक स० ६३०, पूर्ण, दक्षिणामूर्ति कृत। —स वि २४००९

(स वि मे इसके अतिरिक्त ४ प्रतियाँ और है, जिनके न० —२४१६६, २५४५६, २५६२०, तथा २५४६८ है)

(१०) सकलागमसारोक्त —रा० पु० ५७९३

(११) यह वृहत् और लघु भेद से दो प्रकार का है।

—कैट् कैट् १।६६

उद्धारनाथवाक्य

उद्धारनाथ कृत। —न्यू कैट् कैट् २।३४०

उद्धारोर्ध्वतन्त्र

—ने० द० (11)

उन्मत्तभैरवतन्त्र

उ०—फेत्कारिणीतन्त्र तथा आगमतत्त्वविलास मे।

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चतु पष्टि (६४) आगमो मे अन्यतम है।

उन्मत्तभैरवपञ्चाङ्ग

लि०—श्लोक स० ४८०, पूर्ण। यह पारमेश्वरतन्त्रान्तर्गत वाराणसी-पटल मे गुरु-रुद्र सवादरूप है। इसमे पद्धति और पटल २ अश नही है। (१) उन्मत्तभैरव द्वादश-नामस्तोत्र, (२) उन्मत्तभैरवहृदय, (३) उन्मत्तभैरवकवच, (४) उन्मत्तभैरव-स्तवराज, (५) उन्मत्तभैरवाष्टकस्तोत्र, (६) उन्मत्तभैरवसहस्रनामस्तोत्र, याज्ञवल्क्य कृत पञ्चाङ्ग पूर्ण साङ्गस्तोत्र, उन्मत्तभैरवमन्त्रोद्धार, उन्मत्त-भैरवकीलक, उन्मत्त-भैरव के सात्त्विक, राजस और तामस ध्यान। —ए० व० ६४९२

उन्मत्ताख्यक्रमपद्धति

लि०—कमलाकान्त भट्टाचार्य कृत। श्लोक स० ३००, पूर्ण।

—अ० व० १२७५१

उपचार

लि०—शैवागम से गृहीत ।　　—न्यू कैट् कैट् २।३४५

उपचार उपनिषत्

—प्राप्त ग्रन्थसूची से

उपदेशदीक्षाविधि

नामान्तर—पूर्णाभिषेकपद्धति ।

लि०—परमहस परिव्राजकाचार्य चैतन्यगिरि अवधूत कृत यह ग्रन्थ तान्त्रिक दीक्षा-विधि का प्रतिपादक है । इसमे दीक्षा-माहात्म्य, बीजमन्त्रप्रदान, पूजाविधि, वास्तुपूजा-विधि, पात्रस्थापनविधि, क्रियामयी दीक्षा आदि विषय वर्णित है ।

—इ० आ० २६१२

उपदेशसुधा

उ०—मन्त्रमहार्णव मे ।

उपरिष्टातन्त्र

लि०—पञ्चरात्र । भगवदाराधनसग्रह मे उक्त ।

—न्यू कैट् कैट् २।३७१

उपसंहरणमन्त्र

लि०—डामरतन्त्र से गृहीत ।　　—न्यू कैट् कैट् २।३७३

उपहारप्रकाशिका

लि०—श्लोक स० १३५०, पूर्ण । इसमे देवी-देवताओ की पूजा के सम्बन्ध मे विशेष विवरण दिया गया है । इसपर दो टीकाएँ है—उपहारप्रकाशिका-प्रकाश और उपहार-प्रकाशिका–विमर्शिनी ।　　—ट्रि० कै० ९२३

उपाङ्गललितापूजन

लि०—(१) श्लो० स० ३००, पूर्ण । आश्विन शुक्ल ५ मी को ललिता देवी की प्रसन्नता के लिए दाक्षिणात्यो द्वारा जो ललितादेवी का व्रत किया जाता है उसी की पूजाविधि इसमे वर्णितहै। उक्त व्रत विस्तार के साथ, शङ्करभट्ट के व्रतार्क तथा विश्वनाथ दैवज्ञ के व्रतराज मे वर्णित है। व्रत की कथात जो स्कन्दपुराण मे कही गयी

है, भी उपर्युक्त पुस्तक मे दी गयी है। पूजा-विवरण, जो प्रस्तुत प्रति मे दिया गया है, उपाङ्गललिताकल्प के आधार पर है। —ए० ब० ६३८१

(२) श्लोक स० ३००। इस व्रत मे प्रात स्नानादि से निवृत्त होकर वनस्पति की प्रार्थना करे—हे वनस्पते, आप आयु, बल, यश, तेज, सन्तति, पशु, धन, ज्ञान, और मेधा का मुझ मे आधान करे। जो यह व्रत करता है वह पुत्र, धन और विद्या से सम्पन्न, नीरोग सुखी और भोगवान् होता है। जो स्त्री या कन्या इस उत्तम व्रत का आचरण करती है उसे सदा सौभाग्य प्राप्त होता है। इस व्रत के आचरण से विजय, पुष्टि, आरोग्य और भी जो कुछ आकाक्षित हो महादेवी के अनुग्रह से सब प्राप्त होता है। इसमे व्रताङ्गपूजन, व्रत-कथा आदि विषय वर्णित हैं। —रा० ला० ७०९

(३) श्लोक स० २००। —अ० ब० ११७४४, १२१८४

उपाङ्गललितास्तोत्र

लि०—गोपति कृत। श्लोक स० ५, पूर्ण। —स० वि० २३२४८

उपार्यविंशति

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

उमातन्त्र

उ०—श्यामारहस्य मे। कालिकापुराण मे भी इसका नामोल्लेख है।

उमातिलकतन्त्र

उ०—दामोदरकृत तन्त्रचिन्तामणि मे।

उमामहेश्वरकल्प या उमामहेश्वरव्रतकल्प

लि०—ब्रह्मवैवर्त, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मोत्तर आदि पुराणो से गृहीत।

—न्यू कैट् कैट् २।३९४

उमामहेश्वरतन्त्र

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

उमामहेश्वरपूजा

लि०—श्लोक स० लगभग १५५। इसमे उमामहेश्वर की पूजा, होम आदि वर्णित हैं। पूजा इस प्रकार आरम की गयी है—

भगवान् उमेश के मस्तक पर पुष्प चढा कर शक्ति-मन्त्र से भक्ति के साथ नमस्कार कर क्षणभर स्मितपूर्णमुख भगवान् का ध्यान कर तदुपरान्त हे भवानीश ! आपका स्वागत हो ऐसा हृदय से कह कर समाहित हो जाय। तदुपरान्त हे वत्स, मेरा स्वागत हुआ यो भगवान् के कथन की स्वयम् भावना कर नमोऽन्त उसी मन्त्र से भगवान् के चरणकमल युगल मे पाद्य, स्वधान्त उसी मन्त्र से भगवान् के मुँह मे आचमन, स्वाहान्त उसी मन्त्र से भगवान् के सिर पर अर्घ और वौपडन्त उसी मन्त्र से दूर्वा, पुष्प और अक्षत चढावे आदि।

—ए० व० ६४७६

उमामहेश्वरसंवाद

लि०—(१) यह २१ पटलो मे पूर्ण है। —कैट् कैट् ३।१५

(२) आगम। नन्दिकेश्वरकृत। —न्यू कैट् कैट् २।३९५

उ०—वीरशैवचन्द्रिका मे।

उमामहेश्वरसंहिता

लि०—आगम। —न्यू कैट् कैट् २।३९५

उमायामल

लि०—परमशिवसहस्रनामस्तोत्र मात्र। यह यामलाष्टक मे अन्यतम है। दे० यामलाष्टक। —न्यू कैट् कैट् २।३९५

उमासुवर्चलातन्त्र

लि०—निर्वाणपञ्जर मात्र। —न्यू कैट् कैट् २।३९६

उमोत्तर या उत्तरोत्तरतन्त्र

लि०— —न्यू कैट् कैट् २।३९७

उलूककल्प

लि०—(१) श्लोक स० ७२, पूर्ण। भैरव द्वारा पार्वती के प्रति उक्त इस तन्त्र मे उल्लू के विभिन्न अङ्गो के साथ विभिन्न वस्तुओ के समिश्रण द्वारा निर्मित अञ्जन आदि का वशीकरण, मोहन, उच्चाटन, मारण आदि तान्त्रिक क्रियाओ मे उपयोग वर्णित है।

—ए० व० ६१५७

(२) श्लोक स० ५२, अपूर्ण । —अ० व० ३४२१

(३) अङ्कोलतैलविधि के साथ सश्लिष्ट। श्लोक स० सम्मिलित ७८, पूर्ण। —स० वि० २५३५७

(४) —कैट् कैट् ३।१५

(५) अभिचार, वशीकरण आदि पर । —न्यू कैट् कैट् २।३९८

उलूकतन्त्र

लि०—गोविन्द कृत। अभिचार, वशीकरण आदि पर। नामान्तर—उलूककल्प। —कैट् कैट् २।१३

उलूकपक्ष

लि०—कल्पसागर से गृहीत। —न्यू कैट् कैट् २।३९८

उल्कादिस्वरूप

लि०—अपूर्ण। इसमे उल्का और उसके स्वरूप का वर्णन करते हुए विविध शान्तियाँ, विविध अद्भुत, सूर्यमण्डल के चारो ओर घेरा लग जाना छायाद्भुत, सन्ध्याद्भुत, दिनमे तारो का दर्शन रूप अद्भुत, दृष्टि-अद्भुत, मेघाद्भुत, विजलियाँ और दिशाओ का जलना दिखाई देना, चन्द्रोत्पात, इन्द्रधनुप्, बिजली का कडकना, मूसलाधार वृष्टि होना, आकाश मे उडन तस्तरी, परियाँ दीख पडना आदि उत्पातो का निरूपण किया गया है। —रा० ला० २२५

ऊर्ध्वाम्नायन्यास

लि०—श्लोक स० १५०। —अ० व० ८४४३

ऊर्ध्वाम्नायपूजा

लि०—श्लोक स० २४०। —अ० व० ६०४८

ऊर्ध्वाम्नायपीठपूजनविधान

लि०— —कैट् कैट् १।७१

ऊर्ध्वाम्नायमन्त्रशास्त्र

लि०— —कैट् कैट् १।७१

उ०—कुलार्णवतन्त्र, शक्तिरत्नाकर, शाक्तानन्दतरङ्गिणी तथा प्राणतोषिणी मे।

ऊर्ध्वाम्नायतन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० ३२५, अपूर्ण। यह देवी-ईश्वर सवादरूप तन्त्र ग्रन्थ है। इस प्रति मे ३ य पटल से आरम कर ६ ष्ठ पटल तक का ही अश है। इसमे मानव-शरीर की प्रकृति, ब्राह्मण-स्वभाव तथा गुरु की महत्ता वर्णित है। —ए० व० ५९६२

(२) पाँचवे पटल तक, अपूर्ण। —व० प० ९२३

(३) श्लोक स० २९५। —र० म० ४८९४

(४) श्लोक स० ४६० (लगभग), अपूर्ण, यह कुलार्णवरहस्यान्तर्गत है। —स० वि० २४७१९

स० वि० मे दो अपूर्ण प्रतियाँ और है, जिनकी स० २४७३३ और २४७७९ है।

(५) दे० काल्यूर्ध्वाम्नायतन्त्र। —कैट् कैट् २।१३, ३।१५

उ०—प्राणतोषिणी और सर्वोल्लास मे।

ऊर्ध्वाम्नायसंहिता

लि०—(१) श्लोक स०३००। नारद-व्यास सवादरूप यह तन्त्र ग्रन्थ १२ अध्यायों मे पूर्ण है। यह ग्रन्थ अत्यन्त अर्वाचीन मालूम पडता है। इसमे वगाल के उन्नायक महा-वैष्णव गौराङ्ग चैतन्य का वुद्धदेव के स्थान पर अवतार के रूप मे उल्लेख है और इसमे उनकी पूजा के मन्त्र प्रतिपादित है। —ए० व० ५९५९

(२) श्लोक स० २५२। यह विष्णुभक्ति तथा विष्णु के अवतारो का प्रतिपादक नारदप्रोक्त ग्रन्थ १२ अध्यायो मे पूर्ण है। इसका आरभ इस प्रकार होता है—एक समय सुखासीन देवर्षि नारदजी से लोकनमस्कृत व्यासजी ने पवित्र होकर पूछा—हे महामुनिजी, मुझसे सर्वोत्तम विष्णुभक्ति कहिए। इसके साथ ही साथ सव प्रकार की विष्णुभक्ति तथा अवतारो के गुण भी कहिए। प्रष्टव्य सव विषय कह कर अन्त मे नारदजी ने कहा है—अठारहो पुराण तथा महाभारत को सुन कर जो फल होता है वह केवल ऊर्ध्वाम्नाय के श्रवण से हो जाता है। लक्ष्मीनारायण के मन्दिर मे ऊर्ध्वाम्नाय की पुस्तक की स्थापना कर वैष्णव को भक्तिभाव से उसका पूजन करना चाहिए।

इसके विषय यो वर्णित है—गुरुभक्ति, अवतार वर्णन, गौर-मन्त्र का उद्धार, तुलसी-माहात्म्य वर्णन, गङ्गा-माहात्म्य, गुरु आदि की पूजा, नारायणस्तुति, गया-माहात्म्य,

कार्तिक मास का माहात्म्य, वैष्णवो के वर्गों का परिगणन, वैष्णव सन्तो की पूजा तथा अपराध कथन। —रा० ला० २४३

(३) अपूर्ण। नारद प्रोक्त। —व० प० ४५८

(४) —कैट् कैट् १।७१, ३।१६

ऊर्मिकौल

(सिद्धसन्तान)

उ०—तन्त्रालोक मे।

ऋजुविमर्शिनी

महार्थमञ्जरीकार महेश्वरानन्द के परम गुरु कृत।

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल तथा भास्कररायकृत सेतुबन्ध मे।

ऋष्यशृङ्गसंहिता

नामान्तर—अनुत्तरब्रह्मतत्त्वरहस्य।

लि०— कैट् कैट् १।७३

एकजटीतन्त्र

उ०—प्राणतोषिणी मे।

एकवीराकल्प

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, तन्त्ररत्न, रहस्यार्णव तथा तारारहस्यवृत्ति मे।

एकवीरातन्त्र

उ०—तारारहस्यवृत्ति मे।

एकशक्तिव्याप्तिपटल

लि०—ज्ञानकाण्ड से गृहीत श्लोक स० १२५।

—डे० का० ३५५ (१८७९।८० ई०)

एकाक्षरगणपतिकल्प

लि०—(१) श्लोक स० ३००, पूर्ण। इसमे चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धि के लिए गणेश के मन्त्रो से होम और जल, दुग्ध, इक्षुरस और घी से चतुर्विध तर्पणो का प्रतिपादन है तथा यन्त्र लिखने की विधि भी वर्णित है। —ए० व० ६५०७

(२) पूर्ण। इस प्रति मे इसका नाम 'एकाक्षरगणपतिपूजाकल्प' कहा गया है।
—स० वि० २५०८

एकाक्षरगणपतिमन्त्रविधि

लि०—(१) श्लोक स० १५। —अ० व० १३८५९

(२) श्लोक स० लगभग १८०, पूर्ण। इसमे इसका नाम 'एकाक्षरगणपतिमन्त्रविधान' लिखा है। —स० वि० २३८६१

एकाक्षरगणपतिविधि

लि०—(१) श्लोक स० २५। —अ० व० १३८६१

(२) पुस्तक का नाम 'एकाक्षरगणेशविधान' दिया है।
—स० वि० २५८०९

(३) पुस्तक का नाम 'एकाक्षरगणपतिविधान' लिखा है।
—कैट् कैट् १।७४

एकाक्षरगणेशपद्धति

लि०—श्लोक स० १२५। —अ० व० ३४२२

एकाक्षरमन्त्रराजपुरश्चरणपद्धति

लि०—श्लोक स० ८९। —अ० व० १३६४१

एकाक्षरमन्त्रविधि

लि०—शारदानन्द कृत। —कैट् कैट् १।७४

एकाक्षरीलक्ष्मीनित्यपूजाविधि

लि०—श्लोक स० ५००। —अ० व० ३५१९

एकादशन्यास

लि०—श्लोक स० ७०। —अ० व० १३६७८

कंकालभैरवतन्त्र

उ०—लक्ष्मीधर कृत सौन्दर्यलहरीटीका तथा गौरीकान्त कृत सौन्दर्यलहरी की टीका मे। यह ६४ तन्त्रो मे अन्यतम है।

कंकालमालिनीतन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० ६७६। यह शिव-पार्वती सवादरूप डेढ लक्ष श्लोकात्मक दक्षिणाम्नाय के अन्तर्गत ५०००० श्लोको का मौलिक तन्त्र है। इसके ५ पटल उपलब्ध है। उनमे प्रतिपादित विषय है—अकारादि वर्णो की शिवशक्तिरूपता, योनिमुद्रा, गुरु-पूजा और गुरुकवच, महाकाली के मन्त्रो का प्रतिपादन तथा पुरश्चरणविधि।

—रा० ला० २४६

(२) श्लोक स० ६२७। यह भैरव-भैरवी सवादरूप है। इसका प्रारभ इस प्रकार कहा गया है—भैरवी ने कहा—हे महेश्वर, हे जगद्वन्द्य, आप वर्णो का कारण वतलाने की कृपा करे। भैरवी के इस निवेदन पर भैरव ने कहा—हे सुन्दरी, मै तुमसे वर्णो का उत्तम रहस्य कहता हूँ। हे महादेवी, यह प्रकाशनीय नही है फिर भी तुम्हारे स्नेह से मैने यह कहा। इसे जान कर योगी जन मेरे निर्गुणत्व को प्राप्त होते है इत्यादि। अन्त मे लिखा है—हे भद्रे, स्त्री और शूद्रो के लिए पुरश्चरण कदापि विहित नही है। सदा जप और पूजा ही उनके लिए प्रशस्त है। यदि गुरु-भक्ति हो तो चन्द्र और सूर्य ग्रहण मे शूद्रो को उत्तम सिद्धि प्राप्त होती है। तव वह गुरुभक्ति से सिद्धि को प्राप्त होता है। यह दक्षिणाम्नायान्तर्गत ककालमालिनीतन्त्र ५ पटलो मे उपलब्ध है। ५ पटलो के विषय यो दिये गये है—वर्णवीज सकेत, योनिवीज, मुद्रा, छह आधार और योनिकवच का निर्णय, गुरुपूजन, गुरुकवच और गुरुगीता का वर्णन, महाकाली के मन्त्रो का उद्धार, सक्षिप्त पूजापद्धति और पुरश्चरणविधि। —ज० का० ९८९

उ०—प्राणतोषिणी तथा ताराभक्तिसुधार्णव मे।

कंससंहिता

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे।

कक्षपुट

नामान्तर—नागार्जुनीय, सिद्धचामुण्डा, सिद्धनागार्जुनीय, कच्छपुट, कक्षपुटी, कक्ष-पुटमन्त्रशास्त्र, कक्षपुटतन्त्र आदि।

लि०—(१) इसमे वशीकरण, आकर्षण, स्तम्भन, मोहन, उच्चाटन, मारण, विद्वेष करा देना, व्याधि पैदा कर देना, पशु, फसल और धन का नाश कर देना, टुटके, जादू-टोने, यक्षिणीमन्त्र का साधन, चेटक-साधन, दिव्य अञ्जन साधन, अदृश्य कर देना, खडाउओ को

चला देना, गुटिका-साधन, आकाश-गमन, मरे को जिला देना, गडा धन निकाल देना, सेना को स्तब्ध कर देना, बहते जल को रोक देना आदि तान्त्रिक विधियाँ शाम्भव, यामल, शक्ति, कौल, डामर आदि विविध तन्त्रो का अवलोकन कर आगमोक्त तथा अन्यान्य लोगो के मुख से सुनकर, दही मे घी की तरह, सब सार निकाल कर साधको के हित के लिए यह मन्त्र सिद्ध नागार्जुन द्वारा २० पटलो मे लिखा गया। इसके पटलो के नाम मन्त्रसाधन, सर्ववश्य आदि दिये गये है।
—इ० आ० २६१६

(२) श्लोक स० १८००। मङ्गलाचरण श्लोक तथा नमूने के लिए एक मन्त्र देकर २१ वे पटल की पुष्पिका दी गयी है—"श्रीसिद्धनागार्जुनविरचिते कच्छपुटे सर्वसग्रहो नाम एकविंशतितम (२१ वॉ) पटल । समाप्तोऽय ग्रन्थ ।" इसके अनुसार यह २१ पटलो का है। शीर्षक मे ग्रन्थ का 'सिद्धनागार्जुनीय' नाम दिया गया है।
—रा० ला० २५६

(३) श्लोक स० २०००। २० पटलो मे पूर्ण। आरम मे मगलाचरण श्लोक के सिवा इ० आ० २६१६ की तरह मूलभूत तन्त्रग्रन्थ और विषय श्लोकबद्ध कहे गये है। इसमे दो प्रतियाँ अपूर्ण और दी गयी है—(१) की श्लोक स० १०५० तथा (२) की श्लोक स० ७५ दी गयी है।
—ए० ब० ६०७४

(४) श्लोक स० २०००, पटल स० २०, ग्रन्थ का नाम 'कक्षपुटमन्त्रशास्त्र' दिया है। मगलाचरण भी उपर्युक्त पुस्तको के मगलाचरण से भिन्न है। २० पटलो के विषय यो दिये गये है १—मन्त्रसाधना, २—वशीकरण, ३—राजवश्य, ४—स्त्रीवश्य, ५—पतिवश्य, ६—आकर्षणविधान, ७—स्तभन, ८—सेनास्तभन, ९—मोहन, १०—मारण, ११—उन्मत्तादिकरण, १२—इन्द्रजालविधान, १३—यक्षिणीसाधन, १४—सर्वाञ्जनादि-साधन, १५—ज्ञानविधान, १६—अदृश्यकरण, १७—पादुकागति, १८—कालज्ञान, १९—अति आहार-विधि, २०—सर्वसग्रह ।

इस सग्रह मे दो पुस्तके और है, दोनो पूर्ण है। उनकी स० है—१२१६३, १२१६४।
—तँ० म० ६६८३

(५) श्लोक स० १८००, पूर्ण। ग्रन्थ का नाम कक्षपुट दिया है।
[अ व.मे चार प्रतियाँ और है जिनमे एक पूर्ण और तीन अपूर्ण है। पूर्ण की स०है—१०६७१]
—अ० व० ११४७१

(६) श्लोक स० १८००। इसका सिद्धचामुण्डा भी नामान्तर है। शेप पूर्ववत्।
—क० का० ७

(७) २० पटलो मे पूर्ण। —व० प० १४०५

(८) नामान्तर—रसरत्नाकर। —ज० का० ९९१

(९) (क) श्लोक स० १८००, (ख) श्लोक स० १७२२, पूर्ण।
—र० म० (क) ४९३६, (ख) ४९१२

(१०) (क) पन्ने ८१, पूर्ण। (ख) कक्षपुटी के नाम से एक प्रति और है। कर्ता सिद्धनागर्जुन। पन्ने ४८। इसमे पटल स० ४१ दी गयी है।
—डे० का० (क) ४३७, (ख) ७६४

(११) कक्षपुट या कक्ष्यपुट अथवा कक्षपुटी या कच्छपुट अथवा कक्षपुटतन्त्र इन्द्रजाल पर नागार्जुन द्वारा लिखित। —कैट् कैट् १।७७

(१२) पन्ने ५०, नाम—कक्षपुटी, सिद्धनागार्जुन कृत।
—रा० पु० ५७६७

(१३) पूर्ण। —स० वि० २५८६१

[स० वि० मे कक्षपुट नाम की ४ अपूर्ण प्रतियाँ और है—न० २३९१४,२३९१५, २५२११ और २६२९४ तथा कक्षपुटी नाम की एक अपूर्ण प्रति न० २५५८९ की है।]

कक्षपुटीविद्या

लि०—श्लोक स० ३२७, पूर्ण। यह मन्त्रसारसिद्धखण्ड से गृहीत पार्वतीपुत्र नित्यनाथ कृत है। —डे० का० २२४

कक्षपुटीविधान

लि०— —कैट् कैट् १।७७

कक्ष्यामालास्तोत्र

लि०—दिवाकर वत्सकृत। —कैट् कैट् १।७७

उ०—oxford (आक्सफोर्ड) २३९ (ए) के अनुसार अभिनवगुप्त ने इसका उल्लेख किया है।

कक्ष्यास्तोत्र

उ०—उत्पल कृत स्पन्दप्रदीपिका तथा प्रत्यभिज्ञाहृदय मे।

सभवत यह दिवाकरवत्सकृत कक्ष्यामालास्तोत्र से अभिन्न है जिसका उल्लेख अभिनवगुप्त ने किया है।

कटाहतन्त्र

उ०—योगरत्नावली मे इसका विषतन्त्र के रूप मे उल्लेख है—'कटाहं छागतुण्ड च सुग्रीव कर्कटामुखम्। एतानि विषतन्त्राणि' इत्यादि। योगरत्नावलीकार श्रीकण्ठ शम्भु ने जिन तन्त्रो के आधार पर अपना ग्रन्थ रचा उनमे यह भी अन्यतम है।

कदम्बिकातन्त्र

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह ६४ तन्त्रो के अन्तर्गत वागीशाष्टक वर्ग मे अन्यतम है।

कनककल्प

लि०—श्लोक स० २५। यह महादेवभाषित है। इसमे सबको मनोवाञ्छित फल देने वाली तान्त्रिक षट्कर्मो की विधि मनुष्यो के हित के लिए कही गयी है। वे षट्कर्म हैं—शान्तिक, पौष्टिक, मनुष्यो को वश मे करना, मोहन, आकर्षण और स्तभन करना। ये ही इसमे विशेष रूप से वर्णित हैं। कनक कल्पयोग, सर्वोच्चाटन मन्त्र तथा रूपाकरण-विधि भी कही गयी है।　　　　—ए० व० ६०६९

कबन्ध

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह ६४ तन्त्रो के अन्तर्गत शिखाष्टक वर्ग मे अन्यतम है।

कपिञ्जलसंहिता

लि०—(१) (क) श्लोक स० १५००।
(ख) श्लोक स० १५००।
—अ० व० (क) ७९६१, (ख) ६६५४

(२) (क) श्लोक स० १०००, इसमे २२ पटलो मे मुख्यतया प्रायश्चित्त वर्णित है।
(ख) नूतन लिखित है।　　—तं० म० (क) १७३३, (ख) १७३४

कपालीशतन्त्र

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह ६४ तन्त्रो के अन्तर्गत भैरवाष्टक वर्ग मे अन्यतम है।

कमलापद्धति

लि०—(१) प्रेमनिधिपन्त कृत, श्लोक स० २००।
—अ० व० ५५४४ (क)

(२) श्लोक स० लगभग २२५०, पूर्ण। —स० वि० २६५०५

कमलार्चापारिजात

लि०—महेश्वरभट्ट कृत, श्लोक स० ८० (केवल पुष्पाध्याय मात्र)।

—अ० व० १०४७७

करङ्किणीमततन्त्र में यक्षिणीकल्प

लि०—श्लोक स० १००, पूर्ण।

१ विचित्रा, २ विभ्रमा, ३ हसी, ४ भीषणा, ५ अञ्जनरञ्जिका, ६ विशाला, ७ मदना, ८ घण्टा, ९ कालकर्णा, १० महाभया, ११ माहेशी, १२ शखिनी, १३ चान्द्री, १४ श्मशानी, १५ वटयक्षिणी, १६ मेखला, १७ विकला, १८ लक्ष्मी, १९ मालिनी, २० शतपत्रिका, २१ सुलोचना, २२ मुशोभाढचा, २३ कपाली, २४ पिनाकिनी, २६ नटी, २७ कामेश्वरी, २८ कर्णरेखा, २९ मनोहरी, ३० प्रमोदा, ३१ खङ्गिनी, ३२ नखकेशिनी, ३३ भोगिनी, ३४ पद्मिनी, ३५ स्वर्णवती, ३६ रतिप्रिया ये वर और सिद्धि देने वाली ३६ यक्षिणियाँ करङ्किणीमततन्त्र मे शम्भुदेव द्वारा कही गयी हैं। सक्षेपत इनकी आराधना भी कही गयी है। कर्मान्त मे भोजन करने पर पिशाचिनी सतुष्ट होती है तथा प्रतिदिन २७ स्वर्ण मुद्राएँ देती हैं। —ए० ब० ६०२८

कर्कचण्डेश्वरीतन्त्र

उ०—आक्सफोर्ड (oxford) ३२१ (ए) के अनुसार रसराजलक्ष्मी मे।

—कैट् कैट् १।८२

कर्कटामुखतन्त्र

उ०—योगरत्नावली का मूलाधार। —ए० ब० ६६०२

कर्णपिशाचीमन्त्र

लि०—श्लोक स० ३०, अपूर्ण। —अ० ब० ८२९९

कर्पूरस्तव या कर्पूरस्तोत्र

नामान्तर—कर्पूरादिस्तोत्र या कर्पूरस्तवराज, कालिकास्वरूपाख्यस्तोत्र।

लि०—(१) श्लोक स० ६४, पूर्ण।

—स० वि० २०३३९

इसके अतिरिक्त स० वि० मे इसकी दर्जनो प्रतियाँ हैं कर्पूरस्तव, कर्पूरस्तोत्र कर्पूर-स्तवराज आदि नामो से।

(२) (क) श्लोक स० ६०, पूर्ण। यह बहुत प्रसिद्ध स्तोत्र है। बहुत-से स्तोत्र-सग्रहो मे मुद्रित भी हो चुका है। इस प्रति के अन्त मे कालीकवच भी, जो जगन्मङ्गल-कवच के नाम से प्रसिद्ध है, सन्निविष्ट है। (ख) नाम कर्पूरस्तोत्र, श्लोक स० ६०, पूर्ण।

—ए० व० (क) ६६२४, (ख) ६६२५

(३) कालिकार्णव मे उद्धृत। यह श्यामास्तोत्र २२ श्लोको मे महाकाल द्वारा रचित है।

—अ० व० ३४३३ (क)

इसपर टीकाएँ—

लि०—(१) पत्रे ६, पूर्ण। प्रतापसिंह की प्रेरणा से वेणुधर द्वारा निर्मित कर्पूरस्तव-दीपिका।

—ए० व० ६६२६

(२) श्लोक स० २५०। भडोपर्नामक जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथ विरचित कर्पूर-स्तवदीपिका।

—ए० व० ६६२७

,, —स० वि० २०३४०, २३१०१

(३) श्लोक स० ४२५, पूर्ण। दुर्गाराम तर्कवागीश कृत कर्पूरस्तव व्याख्या।

—ए० व० ६६२८, २९,

,, —स० वि० २३८१०, १९५५७

(४) श्लोक स० २२०, पूर्ण। कामदेव पण्डित वशोत्पन्न कालीचरण विरचित महाकालप्रणीत कर्पूरस्तोत्रटीका।

—ए० व० ६६३०

(५) श्लोक स० १२६, रा० ला० ४७६ ने इसे अनन्तराम कृत लिखा है किन्तु इसके अनन्तराम कृत होने मे कोई प्रमाण उपलब्ध नही हुआ। इसलिए इसे अज्ञातकर्तृक ही समझना चाहिए। इसकी रचना शकाब्द १७२६, आश्विन मास गुरुवार को हुई।

—ए० व० ६६३१

(६) श्लोक स० १००, पूर्ण। परमहस परिव्राजकाचार्य श्री शङ्कराचार्य कृत कर्पूरस्तोत्रटीका।

—ए० व० ६६३२

(७) श्लोक स० २४०, पूर्ण। महाकालकृत कर्पूरस्वतवराज की स्फुटार्था व्याख्या ज्योतिर्विद् जयराम की प्रेरणा से श्रीकृष्ण पण्डित कृता तथा स वि २३२८२ अपूर्ण, १८११२ और १९६४५ पूर्ण।

—ए० व० ६६३३

(८) श्लोक स० २०१। कृष्णचन्द्र-पुत्र सुकृती नन्दराम कृत कर्पूरादिस्तव की टीका। इसका निर्माणकाल शकाब्द १७६६ ग्रन्थान्तिम श्लोक से प्रतीत होता है।

—नो० स० १।३९

(९) श्लोक स० ८००। कर्पूराख्य स्तोत्र की आनन्ददीपिनी टीका श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती विरचित। इसमे कर्पूराख्य स्तोत्र के २२ श्लोको की सुन्दर व्याख्या की गयी है। इसमे कालिका का मन्त्रोद्धार भी है। —रा० ला० ३३०

(१०) श्लोक स० ५६२, पूर्ण। महाकालकृत कर्पूरस्तवराज पर व्रजनाथपुत्र रगनाथ कृत टीका दीपिका। —स० वि० १९६४६, २१११९

(११) कुलमणि शुक्ल कृत, परमानन्द पाठक कृत, रङ्गनाथ कृत तथा अनन्त-रामकृत कर्पूरस्तव व्याख्याएँ। —कैट् कैट् १।८२

(१२) श्लोक स० ११२, लिपिकाल शकाब्द १७२३, स्तवप्रकाशाख्या व्याख्या, कर्ता का नाम अज्ञात। —स० वि० २२११२

(१३) श्लोक स० ३२५। शिवाशभूत भगवान् महाकाल कृत कर्पूरादिस्तव की कर्पूरादिप्रबोधिनी व्याख्या। त्रिभुवनविदित विद्यासतति श्रीरामकिशोर शर्मा द्वारा रचित। —नो० स० ३।४८

कर्मकाण्डक्रमावली

समवत काश्मीर मे यह मुद्रित है।

कर्मक्रियाकाण्ड

लि०— (१) श्लोक स० लगभग ७३२, पूर्ण। ईशान-प्रशिष्य, शि-वशिष्य सोमशम्भु कृत। इसका निर्माण-काल स० ११३० वि० है। —र० म० ४९९१

(२) पूर्ण, सोमशम्भु कृत। —डे० का० ४३८

(३) शैवग्रन्थ, सोमशभु द्वारा सन् १०७३ ई० मे रचित।

—कैट् कैट् १।८२

कर्मसारमहातन्त्र

लि०—श्लोक स० ९५००, यह पद्यबद्ध ग्रन्थ २८ उल्लासो मे विभक्त है। ग्रन्थकार श्रीकण्ठ-पुत्र मुक्तक, मुञ्जक या मुख्यक ने अपने गुरु श्रीकण्ठ के अनुग्रह से शिवात्मक तत्त्व का ज्ञान प्राप्त कर सब तन्त्रो के सारभूत सारसमुच्चय की रचना की। इसमे कहा गया है कि वेदान्त से शैव शास्त्र श्रेष्ठ है, शैव से दक्षिणाम्नाय उत्तम है तथा दक्षिणाम्नाय

मे पश्चिमाम्नाय श्रेष्ठ है। उससे आगे फिर कुछ श्रेष्ठ नही है । यह शम्भुप्रोक्त ज्ञानार्णव अगाव तथा अपार है। श्रीकण्ठ गुरु के अनुग्रह से जैसा देखा परम्परा-प्राप्त सुगोप्य भी विषय अपने गोत्रजो के हितार्थ श्रीकण्ठ-पुत्र मुख्यक द्वारा इसमे वर्णित किया गया। प्रतीत होता है यह ग्रन्थकार नित्याह्निक के कर्ता से अभिन्न है।

—ने० द० २।२४८

कलशचन्द्रिका

लि०—श्लोक स० ४२००। इसमे हरि, हर, दुर्गा, स्कन्द, गणेश, प्रजापति, काली आदि की कलशविधि, अङ्कुरारोपण तथा शुद्धि, विभिन्न हवन आदि के साथ, कही गयी है। —ट्रि० कै० ९२६

कलशस्थापन

लि०—श्लोक स० ८०, लिपिकाल सवत् १७४०।

—अ० व० ३८६९

कलशस्थापनादिविधि

लि०—श्लोक स० ३००, अपूर्ण। —अ० व० ९१३४

कलातन्त्र

उ०—आगमतत्त्वविलास मे।

कलादीक्षा

लि०—पन्ने १३५। मनोदत्त कृत यह ग्रन्थ शिवस्वामी द्वारा परिवर्द्धित हुआ।

—डे० का० ४४२, (१८७५।७६ ई०)

कलादीक्षारहस्यचर्चा

लि०—श्लोक स० ६८८९। यह गद्य और पद्यो मे लिखित अज्ञात-कर्तृक ग्रन्थ तान्त्रिक मन्त्रों मे दीक्षित करने की विधि का प्रतिपादक है। इसमे वर्णित विषय हैं—विशेष रूप से दीक्षा-विधि का निरूपण। दीक्षा सम्बन्धी प्रयोग तथा तान्त्रिक दीक्षा अवश्य लेनी चाहिए यह कथन, दीक्षा का समय निरूपण, विशेष करके समय की अशुद्धि का निरूपण, कुण्डनिर्माण की विधि, शाक्तों के अमृत आदि का निरूपण, परावस्था-निरूपण, तीन पात्रो का निरूपण, पाँच तत्त्वो का निरूपण, नीलकण्ठ आदि के विग्रहो की पूजा-विधि, षोडश उपचारो के मन्त्र आदि का निरूपण, होमविधि पूर्णपात्र आदि की विधि, कलादीक्षाविधि, शान्त्यतीत कला की शुद्धि का निरूपण आत्मविद्या तथा शिवतत्त्व के विभागादि का प्रतिपादन। —रा० ला० २२८५

कलावाद

उ०—सौन्दर्यलहरी की लक्ष्मीधर कृत टीका मे इसका ६४ तन्त्रो के अन्तर्गत रूप मे उल्लेख है।

कलासार

उ०—सौन्दर्यलहरी की लक्ष्मीधर कृत टीका मे।

कल्पचिन्तामणि

लि०—(१) श्लोक स० लगभग ४००, पूर्ण। रुद्रयामलान्तर्गत।

—स० वि० २४७८५

(२) —कैट् कैट् १।८४

कल्पतन्त्र

लि०—(१) —कैट् कैट् १।८४

(२) श्लोक स० ८६, दत्तात्रेयतन्त्रान्तर्गत, अपूर्ण।

—स० वि० २४५७३

कल्पद्रुमकलिका

लि०—लक्ष्मीवल्लभ विरचित। श्लोक स० ५५००।

—डे० का० १८८०।८१

कल्पद्रुमतन्त्र

लि०—यह तान्त्रिक पट्कर्म आदि से सम्वद्ध है।

—वी० कै० १२७३

कल्पसूक्त

उ०—आगमतत्त्वविलास मे।

कल्पसूत्र

लि०—(१) दुष्टक्षत्रियकुलकाल, रेणुकागर्भसभूत, महादेव प्रधान शिष्य, नारायणावतार महामहोपाध्याय परशुराम विरचित। यह तान्त्रिक दीक्षा विधि का प्रतिपादक है। दीक्षा तीन प्रकार की वतलायी गयी है—शाक्तिकी, शाभवी और मान्त्री। शक्ति का शिष्य मे प्रवेश कराने से दीक्षा शाक्तिकी कहलाती है, चरण विन्यास से शाभवी और मन्त्रोपदेश से मान्त्री। उपदेष्टा सभी दीक्षाएँ दे या कोई एक दे। इसमे वर्णित विपय है—

यागविधि, होमविधि, मव मन्त्रों की सामान्य पद्धति, त्रिशद्वर्णा गायत्री, स्वस्तिदा गायत्री, ऐंद्री गायत्री, दूर दृष्टि सिद्धि प्रदायक चक्षुष्मती विद्या, महाव्याधिनाशिनी विद्या आदि। यह दश काण्ड वाली महोपनिषत् या महात्रैपुर मिद्धान्तमालासर्वस्व कही गयी है। इसका जो प्रतिदिन अनुशीलन करता है वह मव यज्ञों का यष्टा होता है।

—इ० आ० २५८६

(२) श्लोक स० ५५०, १० खण्डो मे पूर्ण। यह ग्रन्थ सूत्र रूप मे है तथा मुख्यतया श्रीविद्या का प्रतिपादक है। —ए० वं० ६१६६–६९

(३) इसमे शक्ति के उपासको की दीक्षा, अन्यान्य धार्मिक (तान्त्रिक) विधियाँ और विविध उत्सवो का वर्णन है। रा० ला० ने न० १४६७ मे विद्याकल्पसूत्र के नाम मे इसी का निर्देश किया है। इसके १० खण्ड हैं। आठ खण्ड परिशिष्ट रूप मे है। जो कोई १८ खण्ड वाली इस महोपनिषत् का, जो त्रैपुरसिद्धान्तसर्वस्व भी कहलाती है, अनुशीलन (पाठ) करता है वह सव यज्ञो का यष्टा होता है। जिस-जिस ऋतु (यज्ञ) का पाठ करता है उस उसमे उसकी इष्टसिद्धि होती है।

—क० का० ८

(४) श्लोक स० ५३०, पूर्ण। —स० वि० २४४६८, २६००५

(५) परशुराम कृत। दे० विद्याकल्पसूत्र।

—कैट् कैट् १।८५

उ०—आगमतत्त्वविलास मे।

प्रसिद्धि है कि इस ग्रन्थ के ५० खण्ड है। यह अभी दक्षिण देश मे मिलता है। किन्तु प्रचलित १० खण्ड ही हैं।

कल्पसूत्र की टीकाएँ—

(१) सूत्रतत्त्वविमर्शिनी लक्ष्मणराणाडे कृत। रचना काल १८८८ ई०।

(२) कल्पसूत्रवृत्ति रामेश्वर कृत। रचना-काल शकाब्द १७५३। इन्होने भास्कर राय को अपना परम गुरु कहा है।

काकचण्डेश्वर

—प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

काकचण्डेश्वरकल्प

लि०—श्लोक स० ६४८, पूर्ण। —स. वि २५१९२

काकचण्डेश्वरीमत

नामान्तर—काकचण्डेश्वरीतन्त्र, महारसायनविधि, काकचण्डेश्वरी और काकचामुण्डा ।

लि०—(१) श्लोक स० ७०० । यह ग्रन्थ श्लोको मे रचित है। कैलास-शिखर पर विविध योगिनियो और गणनायको द्वारा सेवित पञ्चमुख त्रिनेत्र भैरवदेव को प्रसन्नवदन और सानन्द देख काकचण्डेश्वरी देवी (उमादेवी) ने निर्भय महाज्ञान का निर्देश करने के लिए उनसे सविनय निवेदन किया। अल्पमति मानवो द्वारा अति प्राचीन और विशाल वेदराशि का अवगाहन कर उससे सारभूत महाज्ञान प्राप्त करना कठिन जान कर करुणापूर्वक भगवान् भैरव ने नये ढग से इसमे सर्वोपाधिविनिर्मुक्त महाज्ञान का मुक्ति के लिए निरूपण किया है। इसके अन्त मे ओषधियो के बहुत-से नुस्खे दिये गये हैं जिनमे पारद का अश और प्रभाव विशेप रूप से दृष्टिगोचर होता है। महारसायन का विधान भी इसमे है।
—ने० द० १।१५५

(२) इस प्रति की पुष्पिकाओ मे १ से ४र्थ पटल तक के विषयो का उल्लेख नही है। केवल प्रथम पटल, चतुर्थ पटल दिया है। तदुपरान्त त्रैलोक्य सुन्दरी गुटिका, जारणपटल, शालमलीकल्प, ब्रह्मदडीकल्प, काकचण्डेश्वरीकल्प, हरीतकीकल्प, पोटलीपाद रसेन्द्र, जलूका पटल, तालकेश्वर ये विपय दिये गये हैं और अन्त मे 'रसायनविधि समाप्त' कहा गया है। यह प्रति पूर्ण मालूम नही होती। —इ० आ० २५८७

(३) पन्ने ३५ (१–२७ और २९ से ३६) बीच मे १ पन्ना (२८ वाँ) नही है। अपूर्ण। —व० प० ५५७

(४) श्लोक स० ६७०, पूर्ण। —स० वि० २५५७७

(५) काकचण्डेश्वरी नाम से लिखित (दे०, महारसायनविधि)।
—कैट् कैट् १।८९, २।१७

काङ्क्षेश्वरीसपर्या

लि०—श्लोक स० १२०। —अ० व० १२२७८

कात्यायनीकल्प

लि०—पूर्ण। —व० प० १३९९

कात्यायनीतन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० ५८८, इसकी पुष्पिका मे 'कात्यायनीतन्त्रे अष्टसप्ततिः (७८) पटल' लिखा है। इससे प्रतीत होता है कि शिव-गौरी सवादरूप यह ग्रन्थ ७८ पटलो मे है। इसमे कात्यायनी की उत्पत्ति, पूजा, महादुर्गा, जगद्धात्री आदि की उत्पत्ति, पूजा आदि विस्तार से वर्णित है। —नो० सं० २।३१

(२) श्लोक स० १०४, पटल ३। यह कात्यायनी की पूजा से सम्बद्ध मूल तन्त्रग्रन्थ है। कात्यायनी (दुर्गा) का आविर्भाव धर्म-मर्यादा की रक्षा के लिए हुआ था। आविर्भूत हुई कात्यायनी के समक्ष वायु और अग्नि मे तृण तक को भी हिलाने और जलाने मे सामर्थ्य का अभाव कथन, जगद्धात्री का स्वरूप निरूपण, उनके मन्त्र, ध्यान आदि का निरूपण, तिथि विशेष पर पूजा करने मे विशेष फल कथन।

—रा० ला० २४८८

(३) २०,२१,२२ वाँ और २३ वाँ पटल मात्र। शाक्त सम्प्रदाय से सम्बद्ध मन्त्रो का प्रतिपादक यह शिव-पार्वती सवाद रूप है। इसमे २३ वें पटल का नाम मालामन्त्र-भाग कहा गया है। —म० द० ५५७३

(४) श्लोक स० ३२८, अपूर्ण। —स० वि० २६३३९

(५) इनका नामान्तर—देवीमाहात्म्यमन्त्रविभागक्रम है।

—कैट् कैट् १।९२

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

कात्यायनीतन्त्रव्याख्या

लि०—(१) श्लोक स० ५५०। टीकाकार नीलकण्ठ, टीका का नाम मन्त्रव्याख्या-प्रकाशिका, पूर्ण। —स० वि० २६१९२

(२) श्लोक स० ३६०, अपूर्ण। व्याख्या का नाम मन्त्रव्याख्याप्रकाशिका।

—र० म० ५२९५

(३) अपूर्ण। यह कात्यायनीतन्त्र पर व्याख्या है। व्याख्या का नाम नही दिया है।

(४) टीका का नाम मन्त्रव्याख्याप्रकाशिका। रगभट्ट-पुत्र नीलकण्ठकृत (पटल २० से २३)। —कैट् कैट् २।१७

कादिमत या कादितन्त्र

नामान्तर—कादिमततन्त्र या षोडशनित्यातन्त्र।

लि०—(१) यह षोडश नित्यातन्त्रो अथवा तन्त्रोक्त सोलह शक्तियो के मन्त्र, मन्त्रोद्धार, पूजा, स्वरूप आदि का प्रतिपादक है। इसमे ३६ पटल है और प्रत्येक पटल मे १०० श्लोक है। विषय—तन्त्रावतार प्रकाशन, नौ नाथो का वैभव, पूजा आदि, षोडशनित्या विद्या का स्वरूप, १. **ललिता नित्या** का सपर्याक्रम, ललितानित्यार्चन, षोडश नित्याओ की नैमित्तिक तथा काम्य पूजा, २. **कामेश्वरीनित्या**-विधान, ३. **भगमालिनी नित्या**विद्या विधान, ४. **नित्यक्लिन्ना नित्या** विद्या, ५. **भेरुण्डा नित्या** विद्या, ६. **वह्निवासिनी नित्या** विद्या, ७. **महावज्रेश्वरी नित्या** विद्या, ८. **शिवदूती नित्या** विद्या, ९. **त्वरिता नित्या** विद्या, १०. **कुलसुन्दरी नित्या** विद्या, ११. **नित्या नित्या** विद्या, १२. **नीलपताका नित्या** विद्या, १३. **विजया नित्या** विद्या, १४. **सर्वमङ्गला नित्या** विद्या, १५. **ज्वालामालिनी नित्या** विद्या तथा १६. **चित्रानित्या** विद्या, सब नित्याओ की बलि, देवता, कुरुकुल्ला विधान, षोडश नित्याओ की अङ्गभूत पाँचवी वाराही की विद्या, षोडश नित्याओ के ध्यानो का विस्तार, षोडशनित्या मातृका कालव्याप्ति, षोडशनित्या व्याप्ति वैभव प्रकाशक मन्त्र की व्याप्ति का प्रकाशन, षोडशनित्या कालात्मक प्राणव्याप्ति, षोडश नित्याओ का लोककालतादात्म्य, षोडश नित्याओ के होमार्थ मण्डप, कुण्ड आदि का निर्माण, वास्तुदेवतापूजा, षोडशनित्याविद्याभक्तिनिष्ठा, अरिमर्दन विधान, सौम्यहोम विधान, ललिता विद्या का स्वरूप भेद विधान आदि ।

—इ० आ० २५३८

(२) श्लोक स० ३२१२। यह शिवपार्वती सवादरूप ग्रन्थ ३६ पटलो मे पूर्ण है। इसमे कुछ अन्तर के साथ पूर्वोक्त ही विषय वर्णित है। यह प्रति पूर्ण नही है। षोडश निनित्याओ के नामो मे त्वरिता के स्थान पर दुरिता, महावज्रेश्वरी के स्थान पर राजेश्वरी, चित्रा के स्थान पर छिन्ना नाम, नित्यक्लिन्ना के स्थान पर नित्यच्छिन्ना तथा शिवदूती के स्थान पर भवद्भूती नाम इसमे दिये गये हैं। कुरुकुल्ला और वाराही दो नाम और दिये है।

—रा० ला० ११०९

(३) कादिमत (षोडशनित्यातन्त्रीय)।

—ने० द० १।११५२ (ख)

(४) लि०—श्लोक स० ३५, अपूर्ण (षोडशनित्यातन्त्रान्तर्गत)।

—अ० व० १२६७५

(५) पटल ३० तक। इस सग्रह मे २ प्रतियाँ और है। दोनो २३ पटल तक ही है। कहा जाता है कि यह ग्रन्थ ३६ पटलो मे पूर्ण है और प्रत्येक पटल मे १०० श्लोक है।

—तं० म० १२०१८–१२०२०

(६) श्लोक स० ३४३०, अपूर्ण। —ट्रि० कै० ९२७

(७) (क) षोडशनित्यातन्त्रान्तर्गत श्लोक स २५२०, पूर्ण।

(ख) अपूर्ण। —स० वि० (क) २४५२४, (ख) २५२२५

(८) कादिमत या षोडशनित्यातन्त्र। —कैट् कैट् १।९२

उ०—शारदातिलक की राघवभट्टीयटीका, सौन्दर्यलहरी की टीका सौभाग्यवर्द्धिनी, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, कुण्डमण्डपसिद्धि तथा देवप्रतिष्ठातत्त्व मे।

इस ग्रन्थ की मनोरमा टीका की पूर्ति का काल सन् १६०२ ई० बतलाया गया है।

कादिमत पर तीन टीकाएँ—

मनोरमा (१)

लि०—(१) इसकी रचना सुभगानन्दनाथ, नामान्तर प्रपञ्चसार सिंहराज प्रकाश ने की थी। इनका वास्तविक नाम श्रीकण्ठेश था। ये काश्मीर के राजा के गुरु थे। इन्होने यह टीका दक्षिण देश मे लिखी थी जब कि ये रामेश्वर तीर्थ यात्रा के सिलसिले मे दक्षिण गये थे और राजा नृसिंह राज के आश्रय मे रहे थे। इन्होने २२ पटल तक ही यह टीका लिखी थी। शेष १४ पटलो की टीका इनके शिष्य प्रकाशानन्द देशिक ने पूर्ण की। टीका की रचना समाप्ति का समय १६६० वि० लिखा है। —इ० आ० २५४०

(२) सुभगानन्दनाथ, नामान्तर प्रपञ्चसार सिंहराजप्रकाश, विरचित, पटल १ ले से २२ वें तक। —क० का० २४, २५

(३) २२ वे पटल तक पूर्ण। —म० द० ५६३५–३७

(४) श्लोक स० ४१९२, पूर्ण। कादिमतमनोरमा षोडशनित्यातन्त्र की मनोरमा नाम की व्याख्या। —स० वि० २४९२०

(५) मनोरमा सुभगानन्दनाथ कृत (पटल १ से २२ तक) उनके शिष्य प्रकाशानन्द कृत (पटल २३ से ३६ तक) इसकी पूर्ति हुई सन् १६०२ ई० मे।

—कैट् कैट् १।९२, २।१७, ३।२०

विद्योपास्तिमहानिधि (२)

(६) यह शिवरामप्रकाश कृत तन्त्रराज की भिन्न टीका है। प्रतिष्ठानिधि, नाथपूजानिधि, विद्यानित्यक्रमनिधि, सक्षेपपूजानिधि, महाचक्रनिधि, नैमित्तिकनिधि, पूर्णाभिषेकनिधि प्रकीर्णकनिधि—ये इस विद्योपास्ति महानिधि मे नौ उपनिधियाँ है। विद्योद्धार केवल नाथो मे लभ्य है। इसलिए उसका यहाँ वर्णन नही किया गया। गुरु-शिष्य का स्वरूप,

गुरु-सेवा और आचार, राशि आदि का शोधन, सर्व प्रतिष्ठा का काल स्वरूप, वर्णो की यन्त्र प्रतिष्ठा, ओपधियाँ, चक्र, मातृकाचक्र का निर्माण, प्राण विद्या विधि, सपुट आदि का स्वरूप, मूर्तिस्थापन कर्म, दक्षिणा का निर्णय, दीक्षा, विद्या प्राप्तिविधि, मन्त्र के दोपो का परिहार, मन्त्रार्थो का निरूपण, चक्र और शिष्य प्रतिष्ठा के प्रयोग, विद्या प्राप्ति के प्रयोग आदि विपय वर्णित है। —म० द० ५६३८

सेतुबन्ध (३)

(७) यह भास्करराय कृत कादिमततन्त्र की व्याख्या है।

—कैट् कैट् १।९२, ३।२०

कादिसहस्रनामकला

लि०—(१) श्लोक स० ५७। महाकालसहिता मे उक्त ककारादि वर्णक्रम वाले कालीसहस्राम स्तोत्र मे आये शक्तिपात, सर्ववीरादिसिद्धि आदि गूढार्थ पदो का यह व्याख्यान रूप है। यह व्याख्यान रामानन्द तीर्थ स्वामी कृत है।

—रा० ला० १०३९

(२) महाकालसहिता मे उक्त काली-ककारादिसहस्रनाम की टीका रामानन्द तीर्थकृत। —कैट् कैट् १।९२

कापालिकमतव्यवस्था

लि०—मडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र वाराणसीगर्भसभूत काशीनाथ कृत, श्लोक स० १००। इसमे शावर मन्त्र से कापालिक सम्प्रदाय के आचार्यो की सूची तथा महाकापालिक मन्त्र का उद्धरण पहले किया गया है। तदुपरान्त कालीशाखा से विभिन्न प्रकार के शावर मन्त्र उनमे वर्णित विशेप पूजा विधि के साथ गिनाये गये है। तदुपरान्त इसमे शावर-मन्त्र साधना प्रकार वर्णित है। अन्त मे उन लोगो का वर्णन है जिनके लिए यह अवैदिक प्रकार की पूजा कही गयी है। यह क्रम वीर मार्ग मे रत लोगो के लिए ही प्रशस्त है, श्रुति और स्मृति मे ही निष्ठावान् वैदिक लोगो का यह समत नही, यो व्यवस्था की गयी है।

—ए० ब० ६४४४

कामकला

नामान्तर—कामकलाविलास, कामकलाङ्गनाविलास।

लि०—(१) पुण्यानन्दनाथ कृत। यह आदिशक्ति की पूजा पर लिखा गया है। "उदित पुण्यानन्दादिति कामकलाङ्गनाविलासोऽयम्।" इनके गुरु समवत श्रीनाथ

थे—"यदनुग्रहेण तीर्णस्तमै श्रीनाथनाविकाय नम" ग्रन्थान्तिम श्लोक से ऐसा अनुमान होता है। पुण्यानन्दोदितकामकलाविलास सम्पूर्ण । कामकलामूल सम्पूर्णम्।
—म० द० ५५७५, ७६, ७७

म० द० मे इसकी और भी कई प्रतियाँ है।
—स वि. २५५०७

(२) श्लोक स० लगभग ६१५ पूर्ण।
—कैट् कैट् १।८२, २।१७, ३।२०

(३) श्लोक स० ७, अपूर्ण। विशेष विवरण मे नित्याषोडशिका-व्याख्या by भास्कर लिखा है।
—अ० व० १५०४

(४) (क) कामकलाङ्गनाविलास
(ख) कामकलातन्त्र
(ग) कामकलाविलास त्रिपुरसुन्दरी की पूजा पर पुण्यानन्द कृत।
—कैट् कैट् १।९२, २।१८ ३।२०

(५) 'कामकलाङ्गनाविलास' पुण्यानन्द मुनीन्द्र कृत। —रा० पु० ५६५०

(६) श्लोक स० ७५। पुण्यानन्दयोगेन्द्र विरचित।
—ट्रि० कै० ११२७ (ज)

कामकला विलास पर तीन टीकाएँ—

तात्पर्यचन्द्रिका (१)

लि०—श्लोक ९५०। सच्चिदानन्द शिवाभिनव नृसिंह भारती शिष्य शिवचिदानन्द कृत।
—अ० व० १३१८१

कामकलाव्याख्या (२)

लि०—(१) नटनानन्द कृत। इस प्रति मे ४८ श्लोक तक ही टीका है। पुण्यानन्दमुनीन्द्रात्कामकला नाम विश्रुता जाता। आख्या काचिदमुष्या नटनानन्द करोति नव्याख्याम्॥
—म० द० ५५८०,८१

(२) टीकाकार का नाम ज्ञात नही हो सका।
—म० द० ५५७७–७९७८

(३) कामकलाव्याख्या 'चिद्वल्ली' श्लोक स० ९००। ताडपत्र पर ग्रन्थाक्षर मे लिखित। टीकाकार नटनानन्दनाथ। —अ० व० ६६१२, ५५४७, ५६७६

(४) श्लोक स० १०२६, पूर्ण। —डे० का० २२५

(५) कामकलाव्याख्या नटनानन्दनाथकृत —कैट्-कैट् १।८२, २।१७, ३।२०

उ०—कामकलाव्याख्या श्रीकृष्णानन्द कृत नटनानन्दनाथ कृत कामकलाव्याख्या मे इसका उल्लेख है। —कैट् कैट् ३।२०

कामकलाबिलासभाष्य (३)

लि०—श्लोक स० ३००। कमलाकर-पुत्र शङ्कर कृत। —अ० व० १०२५५

अ० व० मे बिना नाम और कर्ता की और भी कई व्याख्याएँ है। न० १०८२८, १०७६५ आदि।

कामकलाकालीस्तोत्र

लि०—(१) श्लोक स० ८०, पूर्ण। यह आदिनाथ विरचित महाकालसहिता के अन्तर्गत है। यह गद्यमय है। यह यद्यपि स्तोत्र कहा गया है पर इसकी शैली मालामन्त्र की सी है। महाकाल कहते है—"अथ वक्ष्ये महेशानि महापातकनाशनम्। गद्य सहस्र-नाम्नस्तु सजीवनतया स्थितम्।" अन्त मे कहा है "इतीद गद्यमुदित मन्त्ररूप वरानने।" —ए० व० ६६३४

(२) श्लोक स० लगभग ६८, पूर्ण। नाम केवल 'कामकलास्तोत्र' लिखा है 'काली' पद नही है। —स० वि० १८९४१

कामकलाध्यान

लि०—श्लोक स० १५००। —अ० व० १००६३

कामदतन्त्र

लि०—श्लोक स० २१६, अपूर्ण। आरभ के ५ पटल नही है। ६ठे से ९म तक केवल ४ ही पटल है। नवम के वाद के पटल भी कितने है यह ज्ञात नही। ६ठे पटल के आदि वाक्य से ज्ञात होता है कि यह शिव-पार्वती सवादरूप है। इसके विषय है—कलियुग मे काली ही सिद्धिदात्री है। उनकी पूजा के लिए शिखाहीन जपा पुष्प आदि का विधान, उनकी पूजा मे कमल तथा विल्वपत्रो की प्रशस्तता, बिल्व पत्रो के विना शिवा और शिव की पूजा की निष्फलता, कनेर, धत्तूर, कुन्द, मल्लिका, केतकी आदि पुष्पो द्वारा पूजा करने पर प्रत्येक का फल वर्णन। कलियुग मे कार्य करने मे असमर्थ कलुषितचित्त आलसी पुरुषो की तन्त्र-पूजा के अभाव मे कैसे गति हो? इस प्रश्न पर केवल काली-नाम स्मरण से ही उनकी गति हो जाती है, यह वहुधा कथन। अत्यन्त पापी काञ्चनपुर निवासी वहुलोमा नामक ब्राह्मण

ने मृत्यु-काल मे 'काली' ये अक्षर सुने उसका फल एव कार्तिक मे काली पूजा अवश्य कर्तव्य है, यह कथन। —रा० ला० १०६९

कामधेनुतन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० ९८०। यह शिव-पार्वती सवादरूप तन्त्र २४ पटलो मे है। २२, २३ और २४ वे पटल के विषय क्रम से यो दिये गये हैं—चन्द्र या सूर्य पर्व मे यदि पूर्ण आकाश मेघाच्छन्न रहे तो जप, होम आदि कैसे करना, पार्थिव लिंग पूजा और उसका फल तथा मालारहस्य। —ए० व० ६०३२

(२) श्लोक स० ७४२, २१ पटल। यह महादेव-पार्वती सवादरूप है। पार्वतीजी के यह निवेदन करने पर कि हे देवदेव, यदि आप की मेरे ऊपर कृपा हो तो पचास वर्णो का तात्त्विक रूप मुझसे कहने की कृपा करे। इसपर भगवान् ने कहा मै यह गुप्त रहस्य कहता हूँ जिसके विज्ञान मात्र से मनुष्य जीवन्मुक्त हो जाता है। इसके २१ पटलो के विषय यो दिये गये हैं—अक्षरो के तत्त्व, वर्ण आदि का निर्णय, मातृका-मन्त्र निर्णय, मातृका का तात्त्विक अर्थ, मन्त्र का जीवन्यास क्रम, मातृका-मूर्ति, न्यास, नाम आदि का कथन, वीज-ध्यान निर्णय, अन्य जीवन्यास, वर्णाधिदेवी के ध्यान आदि, मन्त्र, वीज, ध्यान–तत्त्वत्रयादि वर्णन, वकारककार ध्यान, तिलकविधि, हृत्तत्त्व आदि का निरूपण, सदीपिनी विद्या विधान, ककारोपासनादि क्रम, विद्यान्तर विधान निरूपण, निद्रा भङ्ग, विद्यादि वर्णन, मन्त्र-जप समर्पण निर्णय, कामिनी जप-गुण, कालगुण आदि का वर्णन। —ज० का० ९९२

(३) यह तन्त्र ग्रन्थ २४ पटलो मे पूर्ण है। मन्त्र या वीज, जो वर्णमाला के ५० अक्षरो के अनुसार ५० हैं, इसमे प्रतिपादित है। यह शिव-पार्वती सवादरूप अतिरहस्य विषय है। इसके विज्ञानमात्र से मनुष्य जीवन्मुक्त हो जाता है।

—क० का० ९

(४) श्लोक स० ३००, केवल १५ पटल तक। अपूर्ण। एक प्रति और अपूर्ण है, जिसका न० १०१४३ है।

—अ० व० १०२५३

(५) श्लोक स० ४३२, पूर्ण। ३ प्रतियाँ और हैं। सभी अपूर्ण न० २४२०७, २५०११ और २५३३८। —स वि २४९०६

(६) श्लोक स० ८२५। यह देव-देवी सवादरूप आगम-सन्दर्भ ज्ञानदर्पण कामधेनुतन्त्र के अन्तर्गत गायत्रीब्राह्मणोल्लासतन्त्र मात्र है। इसमे ५ पटल कहे गये हैं। उनके विषय

है १–ध्यान, जप आदि विविध गायत्र्युपयोगी विधान कथन, २–"भू' आदि व्याहृतियो का अर्थ निरूपण, ३–गायत्री का जपनीय स्वरूपादि कथन, ४–गायत्री के आवाहन, यज्ञोपवीत निर्माण आदि कथन, सन्ध्योपासनादि की उक्ति। यह विषय वर्णन पूर्वोक्त कामधेनुतन्त्र मे उक्त विषयो के वर्णन से मेल नही खाता। अत यह ग्रन्थान्तर हो सकता है।

—रा० ला० ४८१

(७) २४ पटलो मे। —कैट् कैट् १।९३, ३।२०

उ०—पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी, आगमतत्त्वविलास तथा शाक्तानन्दतरङ्गिणी मे।

कामरत्न

लि०—(१) यह जादू-टोने, वशीकरण, मोहन आदि यक्षिणी-साधनान्त विविध विषयो का समुद्र अद्भुत ग्रन्थरत्न १६ उपदेशो मे पूर्ण है। इसके निर्माता श्रीनाथ है। वश्य, आकर्षण आदि कर्म कब करने चाहिए इस विषय पर भी इसमे प्रकाश डाला गया है। जैसे वश्य, आकर्षण आदि वसन्त मे, विद्वेषण ग्रीष्म मे, स्तम्भन वर्षा मे, मारण शिशिर मे, शान्तिक शरद् मे और पौष्टिक कर्म हेमन्त मे करने चाहिए। जडी-बूटी उखाडने के मन्त्र, वार, तिथि, नक्षत्र आदि भी बतलाये गये है। इसके १६ उपदेशो मे वर्णित विषय यो है १–वशीकरण, २–आकर्षण, ३–युद्धजयादि, व्याघ्रनिवारण, ४–स्तमन, ५–मोहन–केशादिरञ्जन, ६–बीजवर्द्धन, ७–गाढीकरण आदि लोमशातनान्त, ८–कलहादिकरण का उपदेश, ९–अरिष्टनाशन, गोमहिषी आदि का दुग्धवर्द्धन, १०,११–नाना कौतुक, १२–कामसिद्ध्यादि, अनावृष्टिकरण, १३–निधिदरशाने वाले अजनादि, मृतसजीवन, १४–विषनिवारण, १५–यक्षिणीसाधन तथा रसादिशोधन, मारण। अन्तिम पुष्पिका यो है—'श्रीनाथविरचिते कामरत्ने रसादिशोधन मारण नाम षोडशोपदेश।'

—इ० आ० २६३४

(२) (क) श्लोक स० १२००। १५ उपदेशो मे पूर्ण। न ६५४३ (ख) प्रति १६ उपदेशो मे पूर्ण है। इसकी पृष्ठ स० १२२ है। बीच मे २ पन्ने गायब है, अपूर्ण। इनके अतिरिक्त (ग) चार प्रतियाँ है। सभी अपूर्ण है। इस ग्रन्थ मे तान्त्रिक षट्कर्म तथा और भी कई जादू-टोने, यन्त्र-मत्र, जडी-बूटी और कौतुको का वर्णन है।

—ए० व० (क) ६५४१, (ख) ६५४३, (ग) ६५४०, ६५४२, ६५४४, ३५४५

(३) श्लोक स० ८९२। गद्य और पद्य दोनो मे रचित तान्त्रिक षट्कर्म तथा अन्यान्य कौतुको का प्रतिपादक यह ग्रन्थ नाना तन्त्रो से सगृहीत है। इसमे वशीकरण से लेकर

यक्षिणीसाधन पर्यन्त प्रयोग है। इस प्रति मे केवल १० ही उपदेश है। अपूर्ण। विषय—वशीकरण आदि कर्मो के लिए ऋतुनिर्णय, जडी-बूटी आदि उखाडने के लिए तिथि, नक्षत्र और अगुलि का निर्णय, साधारण प्रयोग, वशीकरण मे—सर्ववशीकरण, राजवशीकरण इत्यादि सर्वजनाकर्षणादि आकर्षण प्रयोग, युद्धजयादि, व्याघ्रसिंह निवारण, शत्रुमुख-स्तभन से लेकर शुक्रस्तभन तक विविध स्तभनो का प्रयोग, सर्वजन मोहनादि से लेकर केशरञ्जन पर्यन्त विविध मोहन प्रयोग, वाजीकरण, गाढीकरण, स्त्रीद्रावण आदि विविध प्रयोग, खण्डीकरण, साम्य, भगवन्धन, भगमोचन, नष्टपुष्पा-पुष्पकरण, गर्भस्त्रावण, बहुरक्तपात निवारण, सुखप्रसव, पुष्परक्षण, वन्ध्या गर्भधारण, मृतवत्सा चिकित्सा, गर्भस्त्रावरक्षण आदि, सर्वारिष्ट विनाशपूर्वक रक्षादि के प्रयोग, इसके बाद खण्डित है। —रा० ला० ९९१

(४) श्लोक स० १७००। इसमे बहुत-सी अमोघ ओषधियाँ प्रदर्शित है। इसके रचयिता का नाम निमिनाथ दिया गया है। (ख) कर्ता का नाम नित्यनाथ है। इस अपूर्ण प्रति मे प्रारभिक १५० श्लोक है। (ग) श्लोक स० १७००। इसमे कर्ता का नाम श्रीनाथ दिया है। —अ० ब० १५६०, (ख) १०४२, (ग) ८३१५

(५) पूर्ण। —ब० प० १४११

(६) श्लोक स० १७००, पूर्ण। कर्ता श्रीनाथ। नामान्तर—पार्वतीनाथ भी दिया गया है। —र० म० ४९२५

(७) रचयिता का नाम नागभट्ट लिखा है। सभवत श्रीनाथभट्ट को श्री पृथक् कर नाथभट्ट ही थ को ग समझकर नागभट्ट लिखा गया है। —ज० का० ९९४

(८) श्लोक स० ९१५, यह प्रति पूर्ण कही गयी है पर इसके भी पूर्ण होने मे सन्देह है।

इसके अतिरिक्त कामरत्न नाम से ७ और कामरत्नतन्त्र नाम से ४ पुस्तकें और है जिनके न० क्रमश —२३८३५, २४६७५, २४९९३, २५२६८, २५४५८, २५८८४, २६०६६ ये कामरत्न की अपूर्ण प्रतियो के नबर है। कामरत्न तन्त्र के न० ये है—२३९५२, २४६७६, २४९, २५७४४। इनमे किसी मे कर्त्ता का नाम श्रीनाथ लिखा है, तो किसी मे नित्यनाथ। —स० वि० २५५७६

(९) पूर्ण, शकाब्द १७३० मे लिखित। —म० रि० ७२

[म रि. मे इसके अतिरिक्त न० ७३ (पन्ने २२), न० ७४ (पन्ने १८), नं० ७५ (पन्ने ६७) तथा न० ७६ (पन्ने ९१) की ४ प्रतियाँ और है। इनमे अन्तिम के सिवा सभी अपूर्ण प्रतीत होती है।]

(१०) नित्यनाथ कृत, (उड्डीश के आठवे अध्याय पर आधारित)। दूसरी प्रति मे श्रीनाथ भट्ट कृत लिखा है।

—कैट् कैट् १।९३, २।१८, ३।२०

उ०—शक्तिरत्नाकर, प्राणतोषिणी तथा मन्त्रमहार्णव मे।

मु०—इसका एक सस्करण १८४२ शकाब्द मे लक्ष्मी वेकटेश्वर प्रेस, वम्बई मे प्रकाशित हुआ है। उसमे कर्ता का नाम नित्यनाथ वतलाया गया है।

कामराज

लि०—श्लोक स० १०, पूर्ण। नाम कामराजमहामन्त्र लिखा है।

—स० वि० २५१७३

उ०—आगमतत्त्वविलास मे।

कामराजकीलितोद्धारोपनिषत्

लि०—श्लोक स० २०। यह अथर्वणशाखोक्त कहा गया है।

—ए० व० ६१३६

कामरूतन्त्र

लि०—श्लोक स० ४४२, अपूर्ण। इसमे तान्त्रिक जादुई, औषधियो के निर्माणार्थ विधियो और मन्त्रोच्चारण वतलाये गये हैं। यह महारहस्य शिव-काली सवादरूप है। इसमे मन्त्रावली, कामरत्नावली, विषसाधन आदि चार अध्याय हैं।

—ए० व० ६१५८

कामरूपनिबन्ध

लि०—(१) इसका वास्तविक नाम, पुष्पिका मे 'राजनिर्णय' दिया है।

—व० प १४१७

(२) श्लोक स० १०००। हर-पार्वती सवादरूप। इस ग्रन्थ मे राजनिर्णय, वसिष्ठशाप, चक्रवर्तियो के नियम आदि का वर्णन है। यह खण्डित है और कामरूपीय-निवन्धतन्त्र के नाम से निर्दिष्ट है। —रा० ला० ३१३

उ०—रघुनन्दन तथा कमलाकर ने अपने ग्रन्थों मे इसका उल्लेख किया है।

—कैट् कैट् १।९३

कामरूपयात्रापद्धति

लि०—श्लोक सं० १७८०। यह १० पटलो मे पूर्ण है। कामरूप (कामाख्या) के यात्रियो की सुविधा के लिए यह कामरूपयात्रापद्धति हलिराम शर्मा ने रची। इस ग्रन्थ के विषय हैं १– कामरूप शब्द की व्युत्पत्ति, कामाख्या की पाँच देवी-मूर्तियो की पूजा का माहात्म्य, यात्रियो के कर्तव्य, कामाख्या-पूजा का समय, मणिकूट तीर्थयात्रा का माहात्म्य, कामरूपक्षेत्र के माहात्म्य आदि का वर्णन, २ – अश्वक्रान्ततीर्थ आदि की यात्राविधि, ३ – मणिकर्णिकेश्वर आदि की यात्राविधि, पाण्डुनाथ पर्वत गमन आदि का वर्णन, ५ तथा ६– कामाख्या यात्रा, पूजन आदि वर्णन, ७– हयग्रीव विष्णु यात्रा, पूजादि की विधि, ८– दिक्पालादि यात्रा, ९ –सक्षेपत यात्रा वर्णन, तथा १० – कामाख्या आदि पञ्च देवी-मूर्तियो की पूजा। —रा० ला० ४०६

कामाख्यातन्त्र

लि०—(१) कामाख्या देवी की पूजा पर पार्वती-ईश्वर सवादरूप यह मूल तन्त्र ७ पटलो मे पूर्ण है। भगवान् शिव देवीजी से कहते हैं कि तुम्हारे स्नेह से हमने यह ब्रह्मतन्त्र कहा। इसका कदापि प्रकाश न करना, यह सदा गोपनीय, सदा गोपनीय और सदा गोपनीय है। पशु के निकट तो यह विशेष रूप से गोपनीय है। शान्त शुद्ध कौलिक तथा कालीभक्त शैव को इसका उपदेश देना चाहिए। —इ० आ० २५८४,८५

(२) श्लोक स० ४५०। यह नौ पटलो मे पूर्ण है।

—ए० व० ६०२६,२७

(३) श्लोक स० ४०१। पार्वती-ईश्वर सवादरूप यह मूल कौल तन्त्र ८ पटलो मे पूर्ण है। इसमे योनिरूपा वरदायिनी कामाख्या महाविद्या की कौलाचार के अनुरूप पूजा वर्णित है। विषय है, १—कामाख्या महादेवी तथा उनके इस तन्त्र की उत्कृष्टता, २—कामाख्या-मन्त्रोद्धार, कामाख्या-पूजा प्रकार, योनिपूजा, वही पर देवी की स्थिति होने के कारण उसकी पूजा के विना देवी की सिद्धि सभव नही। इसलिए उसकी पूजा अवश्य कर्तव्य है। सामान्य योनियो मे परस्त्री-योनियो के प्रशस्त होने पर भी वेश्या-योनि की पूजा का फल-प्राशस्त्य, ३—वरमन्त्रोद्धार, उसके ध्यान आदि, जप प्रकार आदि, ४—सद्गुरु-लक्षण, ज्ञान की प्रशसा, पशु गुरुलक्षण, उससे मन्त्रग्रहण की निन्दा, दिव्य, वीर और पशु भेदसे मनुष्यो की त्रिविधता, उनके लक्षण, ५—पञ्चतत्त्वो से पूजा की आवश्यकता में युक्तियाँ, उनके विना पूजा की असिद्धि आदि, ६—मारण, उच्चाटन, शुक्र, शोणित और मूत्र की

शुद्धता मे शिववाक्य, ब्रह्मज्ञान, ब्रह्मज्ञानियो की प्रशसा, सवर, सदीक्ष, शुद्ध वेदपारग ब्राह्मण की प्रशसा, ७–पूर्णाभिषेक, पूर्णाभिषेचन कर्म कराने मे गुरु विशेप की अधिकारिता, कौलिक ब्राह्मण की प्रशसा, ८–मुक्ति-निरूपण, मुक्तियो के स्वरूपो का निरूपण, मुक्ति के साधन, कुलज्ञान की विधि, कुलमन्त्र के लाभ मे प्रशसा, ९–कामाख्या देवी का स्वरूप, कामाख्या-तन्त्र के पठन, पाठन, श्रवण और श्रावण से अभिलषित सिद्धि कथन, कामाख्या-मन्त्र से अधिकृत देश के रोगादिनाशन, दस्यु आदि बाहरी भीतियो का नाशन, सात पुश्तो तक सम्पत्ति आदि प्राप्ति कथन द्वारा अत्यधिक प्रशसा, अन्त मे इस रहस्य तन्त्र के गोपन की विधि तथा अधिकारी के निरूपण के बहाने उपदेश्य और अनुपदेश्यो का कथन।

—रा० ला० १०६७

(४) (क) शिवप्रोक्त (पार्वती-ईश्वर सवादरूप) यह तन्त्र ९ पटलो मे विभक्त है। विषय है—तन्त्र का उपोद्घात, कामाख्या-मन्त्र का माहात्म्य, उसका उद्धार तथा ध्यान, पूजादि का निर्णय। अन्य मन्त्रो का साधन, उनका ध्यान तथा लतासाधन-निरूपण। गुरुतत्त्व-वर्णन, दिव्य, वीर तथा पशु के लक्षण। पञ्चतत्त्वो से आराधनीय देवी की अन्यान्य साधनाओ का वर्णन, शत्रुनाशन, उच्चाटन आदि, शुक्रादि की शुद्धि का वर्णन, पूर्णाभिषेक, उसके मन्त्र, कौलाधिकार, गुरु आदि का निर्वाचन, मुक्तितत्त्व का निर्णय, कामाख्यातत्त्व और तन्त्र की प्रशसा आदि। —ज० का० ९९५

(५) नवम पटलान्त, अपूर्ण। इस ग्रन्थ के ७ पटलो मे गुणादि दीक्षा का विधान है। लिपिकाल शकाब्द १७३१ है। —ब० प० १२४६

(६) पूर्ण। —स० वि० २४९२९

[स वि मे ३ पुस्तके और है। उनके न० २४६१५, २६३३६ तथा २६४३४ हैं इनमे अन्तिम पूर्ण है, आदि की दो अपूर्ण।]

(७) दे०, उत्तरकामाख्या। —कैट् कैट् १।९४

उ०—मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी तथा कालिकासपर्याविधि मे।

कामाख्यागुह्य

लि०—तन्त्रो के कतिपय ताडपत्रो मे से एक पर लिखा है—'इति श्रीमद् मत्स्येन्द्र-नाथावतारिते श्रीकामाख्यागुह्ये सिद्ध्यष्टम।' इससे मत्स्येन्द्रनाथ कृत कामाख्यागुह्य नाम का तन्त्र ग्रन्थ था यह सिद्ध होता है। दूसरी किसी प्रति का पता नही चल सका।

—ने० द० २।३२

कामिकतन्त्र

लि०—कामिकतन्त्रे अङ्गलिङ्गप्रतिष्ठा ।

—कैट् कैट् ११९४

उ०—तन्त्रकौमुदी तथा हेमाद्रिदानखण्ड मे ।

काम्मिकागम

नामान्तर—कामिक अथवा अकामज ।

लि०—(१) श्लोक स० १००० । क्रियापाद के ९ से ४० पटल हैं, ४१ वाँ पटल चालू है।

—अ० व० ७९७३

(२) प्रस्तुत प्रति इस महान् ग्रन्थ का केवल एक अल्प अशमात्र है। यह पूजा और उत्सवो पर है। इसकी श्लोक स० लगभग ६००० है। इसकी पटल सं० ८५ से १७४ है। अन्त मे सुप्रभेदतन्त्र के क्रियापाद का ५१ वाँ अध्याय है।

—तँ० म० ११,३८१

(३) कामिकतन्त्र, कामिकागम।

—कैट् कैट् ११९४

उ०—तन्त्रालोक की टीका जयरथी, शतरत्नसग्रह तथा तन्त्रकौमुदी मे।

कामेशार्चनचन्द्रिका

लि०—(१) श्लोक स० ६००, पूर्ण। यह भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथ रचित ग्रन्थ तीन प्रकाशो मे विभक्त है। इसमे कामेश्वर शिवजी की पूजापद्धति वर्णित है। इस पद्धति के समर्थन मे वहुत-से आकरग्रन्थो के वचन प्रमाण रूप से इसमे उद्‌घृत किये गये हैं।

विषय—शिवजी की महत्ता तथा सर्वश्रेष्ठता, साधको के प्रात कृत्य तथा देवपूजन मे योग्यता प्राप्त करने के लिए न्यास आदि तथा वाह्यपूजा, कलशस्थापन, विशेषार्घ्य, पूजा, पुरश्चरण आदि।

—ए० व० ६४५९

कामेश्वरतन्त्र

लि०—(१) कामेश्वरतन्त्रे यन्त्रसस्कारपद्धति ।

—कैट् कैट्. २।१८

उ०—कामकलाविलास की टीका चिद्वल्ली मे।

कामेश्वरपञ्चाङ्ग

लि०—(१) श्लोक स० ३६८, पूर्ण। —डे० का० २२६

(२) (क) विश्वोद्धारतन्त्र से गृहीत।

(ख) विश्वसारतन्त्र से गृहीत।

—कैट कैट् १।९४, २।१८

काम्यदीपदानपद्धति

लि०—(१) श्लोक स० ६७५। सदाशिवसहिता, उड्डामर, यामल, मेरु आदि तन्त्रो मे भगवान् महाविष्णु कार्तवीर्यार्जुन का साक्षात् या परम्परा द्वारा अनुष्ठेय काम्य दीपदान कर्म, ग्रन्थकार उमापति-पुत्र प्रेमनिधि पन्त द्वारा, इसमे प्रतिपादित है। यह ग्रन्थ अपूर्ण प्रतीत होता है। —ने० द० २।२६० (इ)

(२) (क) श्लोक स० १६००। इस प्रति का लिपि-काल शकाब्द १७३६ है।

(ख) श्लोक स० ८००। ग्रन्थकर्ता प्रेमनिधि।

—अ० व० (क) ५६३५, (ख) ५६९५

उमापति-पुत्र गुणवती-गर्भ सभूत कूर्माचलीय वाराणसीवासी प्रेमनिधि पन्त ने अनेक ग्रन्थ रचे हैं। जिनमे से कतिपय नीचे दिये जाते हैं—१ अन्तर्यागरत्न, २ काम्यदीपदान-पद्धति, ३ घृतदानपद्धति, ४ तन्त्रराजटीका सुदर्शन, ५ दीपदानरत्न, ६ दीपप्रकाश और उसकी टीका, ७ प्रयोगरत्न, ८ प्रयोगरत्नक्रोड, प्रयोगरत्नसस्कार, प्रयोग-रत्नाकर, वहिर्यागरत्न, भक्तव्रातसंतोषक, भक्तितरङ्गिणी, मल्लादर्श, मूलप्रकाश यह सभवत दीपप्रकाश की टीका है, लवणदानरत्न, शक्तिसगमतन्त्रटीका, शब्दार्थ-चिन्तामणि, शारदातिलकटीका।

(३) प्रेमनिधि कृत। —कैट् कैट् १।९५

काम्ययन्त्रोद्धार

लि०—श्लोक स० ५००। इसके निर्माता महामहोपाध्याय सत्पण्डित परिव्राजकाचार्य है। मातृकायन्त्र आदि सब यन्त्रो को लिखने की विधि इसमे वर्णित है। ग्रन्थकार ने नाना मूल आगमो से सार ग्रहण कर इसका निर्माण किया। इस प्रति का लिपि-काल शकाब्द १२९७ दिया गया है। आचार्य इन यन्त्रो को केसर, गोरोचन, लाह, कस्तूरी,

गजमद और चन्दन से सुवर्ण की लेखनी द्वारा लिखे। मन्त्रसाधक यन्त्र को भूमिष्ठ, विपस्थ, दग्ध, निर्माल्यमिश्रित, लघित और खण्डित कभी न करे।

—नो० स० ३।५३

कारणागम

लि०—(क) श्लोक स० ६००० । पटल १ से ८४ तक। यह प्रतिष्ठातन्त्र का क्रियापाद है। यह किरणागम के मतानुसार दश शिवागमो मे अन्यतम है। मतान्तर मे इसके स्थान पर १० शिवागमो मे मुकुटागम माना जाता है। यह १८५ पत्रे की अपूर्ण तथा अत्यन्त जीर्ण शीर्ण प्रति है। (ख) प्रथम खण्ड मात्र है। (ग) केवल किरणागमतन्त्रस्थ रामेश्वर-पूजा प्रतिपादित है। (घ) और (ङ) मे शिवविवाह-प्रयोग है। (च) रत्नलिङ्ग-स्थापनविधि प्रतिपादित है। और (छ) उत्सवप्रकरण का वर्णन है।

—नै० म० (क) ११३८२, (ख) ३६२३, (ग) ३६२६, (घ) ३६३२, (ङ) ३६३३, (च) ३६४४, (छ) ३६४९

कार्तवीर्यकल्प या सहस्रार्जुनकल्प

अथवा

कार्तवीर्यार्जुनकल्प

लि०—(१) (क) श्लोक स० १८९०। सुदर्शनसहिता उत्तरखण्ड से गृहीत। अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० १५००, यह २६ पटल तक है। (ग) श्लोक स० ५००, इसका लिपि-काल शकाब्द १७३६ है। (घ) श्लोक स० ३००, प्रथम पटल की पुष्पिका मे यह सहस्रार्जुनकल्प कहा गया है। (ङ) श्लोक स० ४२०। (च) श्लोक स० २५००। यह भी सहस्रार्जुनकल्प के नाम से अभिहित है। (छ) श्लोक स० २००।

—अ० व० (क) ८०१० (क), (ख) ९५९६, (ग) ७०८०, (घ) ३४२९, (ङ) ५५४८, (च) ६५७५, (छ) १००६२

(२) श्लोक स० १०५, पूर्ण। लिपि-काल १७९८ वि । (ख) अपूर्ण।

—स० वि० (क) २५४९५, (ख) ३५७९०

(३)

—कैट् कैट् १।९५

कार्तवीर्यदीपदान

लि०—(१) श्लोक स० २८०। —अ० व० ३४२५

(२) श्लोक स० ३१। अपूर्ण। —स० वि० २६६३३

कार्तवीर्यदीपदानपद्धति

लि०—(१) (क) श्लोक स० २५०, कमलाकरभट्ट कृत।
(ख) श्लोक स० २००।
—अ० व० (क) १२०३६, (ख) ४९९८

(२) श्लोक स० लगभग १८७, पूर्ण। कमलाकरभट्ट कृत।
—स० वि० २५२७५

(३) श्लोक स० २५०। इसमे ग्रन्थकार का नाम लक्ष्मणदेशिक लिखा है। परन्तु प्रमाण कोई उद्धृत नही है। इसमे कार्तवीय भगवान् की प्रीति के लिए किये जाने वाले दीपदान का विवरण दिया गया है। और लिखा है—वसन्त, शिशिर, हेमन्त अथवा वर्षा और शरद मे, वैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन मासो मे दीपदान करना चाहिए। —रा० ला० २३७

कार्तवीर्यदीपदानप्रयोग

लि०—(१) (क) श्लोक स० ३५०। लिपिकाल सवत् १७७१। (ख) श्लोक स० २०९। —अ० व० (क) २०२०, (ख) ५७७०

(२) (क) श्लोक स० २८५। इसके कर्ता का नाम कमलाकरभट्ट दिया हुआ है। विशेष विवरण में यह सुदर्शनसहिता के अन्तर्गत कहा गया है। पूर्ण।

(ख) श्लोक स० २००, पूर्ण।
—स० वि० (क) २६६१७, (ख) २६६४७

कार्तवीर्यदीपदानविधि

लि०—(१) कार्तवीर्य भगवान् को प्रज्वलित दीप-प्रदान करने की विधि इसमे वर्णित है। यह दीपदान वैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन मासो मे किया जाता है। यह ग्रन्थ उमामहेश्वर सवादरूप है।
—वी० कै० १२७४

(२) (क) श्लोक स० ३००। (ख) श्लोक स० २३०।

—अ० व० (क) २२५९, (ख) १००६२

(३) (क) श्लोक स० २८०, पूर्ण, उड्डामरतन्त्रान्तर्गत।

(ख) श्लोक स० १३२, पूर्ण। (ग) श्लोक स० १५२ पूर्ण।

(घ) श्लोक स० ५२६, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४२८६, (ख) २४३२०, (ग) २५३७९, (घ) २५४१३

कार्तवीर्यनित्यदीपदानविधि

लि०—पत्रे ५। —रा० पु० ६६६२

कार्तवीर्यपूजापद्धति

लि०—(१) अपूर्ण। इसमे कार्तवीर्य के विभिन्न मन्त्रो—मालामन्त्र, अस्त्रोपसहरण-मन्त्र तथा महामन्त्र—से पूजाविधि निर्दिष्ट है। —ए० व० ६५१३

(२) श्लोक स० २०४, अपूर्ण। —सं. वि २४३२१

(३) इनमे कार्तवीर्य-पूजा की विधि वर्णित है। नाम 'कार्तवीर्यपद्धति' है।

—बी० कै० १२७५

(४) (क) श्लोक स० ९५०, पुरुषोत्तम कृत।

(ख) श्लोक स० २५०। इसका नाम भी कार्तवीर्यपद्धति है।

—अ० व० (क) ३४२७, (ख) ५७६७

कार्तवीर्यपूजाप्रयोग

लि०—श्लोक स० ४६। लिपिकाल सवत् १८१९। पूर्ण।

—स० वि० २६६०५

कार्तवीर्यप्रयोग

लि०—(१) श्लोक स० ३५०। —अ० व० ४९९८

(२) (क) श्लोक स० १७४५, पूर्ण। चन्द्रचूड कृत। (ख) श्लोक स० २८७, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० १५०, अपूर्ण।

—सं० वि० (क) २३९५४, (ख) २४२३९, (ग) २४३६७

कार्तवीर्यमन्त्र

लि०—पूर्ण। इसमे भगवान् कार्तवीर्य के २० अक्षर के मन्त्र की जपविधि वर्णित है।

—ए० ब० ६५१४

कार्तवीर्यविधिरत्न

खि०—(१) श्लोक स० १३८०, शिवानन्दभट्ट विरचित।

—अ० व० १२८००

(२) श्लोक स० ५०६। शिवानन्दकृत, अपूर्ण। —स० वि० २५३८०

कार्तवीर्यार्जुनदीपचिन्तामणि

लि०—श्लोक स० २२०। महेश्वरभट्ट कृत।

—अ० व० ३४२४

कालचक्रतन्त्र

लि०—श्लोक स० ३०००, आदिवुद्ध द्वारा उद्धृत यह तन्त्र ५ पटलो मे पूर्ण है। इसके ५ पटलो के विषय यो वर्णित हैं—१ लोकधातुविन्यास, २ अध्यात्मनिर्णय, ३ अभिषेक, ४ साधन, ५ ज्ञान।

—ने० द० २।२९२ (क)

—श्रीकण्ठी के मतानुसार यह ६४ तन्त्रो मे अन्यतम और चक्राष्टक वर्ग मे है।

कालचण्डीश्वरतन्त्र

उ०—दत्तात्रेयतन्त्र मे।

कालज्ञान या कालोत्तर

लि०—(१) यह १८ पटलो मे पूर्ण है। अन्तिम पुष्पिका मे 'इति कालोत्तरे अष्टादश पटल' लिखा है। दशम पटल की पुष्पिका मे 'कालज्ञाने' इति के वाद 'दशमपटल' लिखा है। यह अपूर्ण है। —ने० द० १।१६३४ (च)

(२) प्रारभिक श्लोक स० १७। अपूर्ण। महेश्वरभाषित। इसमे शिव-कार्तिकेय सवाद से सकल और निष्कल के स्वरूप का निर्देश करते हुए परमात्मा की सर्वव्यापकता—पुरुष के शरीर मे वाह्याभ्यन्तर स्थिति वतायी गयी है। त्रिमात्र, द्विमात्र, एकमात्र, अर्धमात्रा परा सूक्ष्म है। उससे पर परात्पर है। व्रह्मा, विष्णु, रुद्र, महेश्वर और पाँचवें शिव हैं।

ब्रह्मा हृदय मे, विष्णु कण्ठ मे, रुद्र तालु के मध्य मे, महेश्वर ललाट मे स्थित हैं तथा नादाग्र को शिव जानना चाहिए। नादान्त परापर है। पर से परतर नही है, यह शास्त्र का निश्चय है। कार्तिकेयजी ने भगवान् शिवजी से प्रश्न किया कि ऐसा जो परात्पर तत्त्व है उसके गमनागमन कैसे हो सकते हैं ? आप मेरे सन्देह को निवृत्त करने की कृपा करे। महेश्वर ने उसी का इसमे समाधान किया है।

—ने० द० ३।२६२ (ख)

कालतन्त्र

लि०—दक्षिणकालीकवच मात्र। —कैट् कैट् १।९७

कालपरा

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

कालभैरवतन्त्र

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी मे।

कालरात्रिकल्प

लि०—(१) (क) श्लोक स० ५५०। पार्वती-ईश्वर सवादरूप यह ग्रन्थ १२ पटलो मे पूर्ण है। इसमे देवी कालरात्रि की पूजा का विवरण है एव उक्त देवी के मन्त्रो द्वारा मारण, मोहन, स्तभन आदि षट्कर्मो की सिद्धि कही गयी है। चार पुष्पिकाओ के अनुसार यह ग्रन्थ रुद्रयामलान्तर्गत और एक पुष्पिका के अनुसार आगमसार से सम्बद्ध कहा गया है। मन्त्रमहिमा, मन्त्रस्वरूप, मन्त्रोद्धार आदि विषय इसमे वर्णित हैं। (ख) १२ पटल तक का विषय वर्णित है।

—ए० व० (क) ६०६३, (ख) ६०६४

(२) श्लोक स० ३००। —अ० व० १०६९५

(३) (क) श्लोक सं० ३०८, पूर्ण। (ख) श्लोक स० २००, अपूर्ण, (ग) श्लोक स० लगभग ३६५, अपूर्ण। (घ) श्लोक स० २५५, अपूर्ण। (ङ) श्लोक स० १२६, अपूर्ण।

—रा० दि० (क) २५८५२, (ख) २४२११, (ग) २४२१२, (घ) २५४०५, (ङ) २५५९६

(४) षट्कर्म-प्रयोग विषय वर्णित है। —बी० कै० ५८६
(५) —कैट् कैट् ११९८

कालरात्रिचण्डिकाविधान

लि०— —कैट् कैट् ११९८

कालरात्रितन्त्र

लि०—श्लोक स० २५०, अपूर्ण। —अ० व० १०५१०

कालरात्रिपद्धति

लि०—अद्वयानन्दनाथ विरचित। —कैट् कैट् ११९८

कालरुद्रतन्त्र

लि०—श्लोक स० ८८०। शिव-कार्त्तिकेय सवादरूप यह ग्रन्थ २१ पटलो मे पूर्ण है। इसमे धूमावती, आर्द्रवती, काली, कालरात्रि, जो कालरुद्र की शक्तियाँ कही गयी है, के मन्त्रो से तान्त्रिक पट्कर्मो—मारण, मोहन आदि—की सिद्धि वर्णित है। यह कालिकागम से गृहीत तथा आथर्वणास्त्रविद्या के नाम से प्रत्येक पुष्पिका मे अभिहित है। धूमावती आदि की विद्या, मन्त्रोद्धार, मन्त्रविधि, पूजा, जपपूर्वक साधन क्रिया इसमे साङ्गोपाङ्ग वर्णित है। —ए० व० ६०९०

कालसकर्षणतन्त्र

उ०—मन्त्रमहार्णव मे।

कालाग्नि

लि०—श्लोक स० १००। —अ० व० ९७१५ (ग)

कालाग्निभैरवतन्त्र

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी मे।

कालाग्निरुद्रतन्त्र

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

कालाग्निरुद्रपटलोपनिषत्

लि०—पन्ने ७। —रा० पु० ५२२८

कालाग्निरुद्रोपनिषत्

लि०—(१) श्लोक स० १००, पूर्ण। इसमे विभूति से किसी के शरीर को अङ्कित करने की विधि वर्णित है। यह नन्दिकेश्वर प्रोक्त है। —ए० व० ६१६५

(२) नन्दिकेश्वरपुराणोक्त। —रा० पु० ६७५१

(३) नन्दिकेश्वरपुराण से गृहीत। —कैट् कैट् १।९८, ३।२१

कालानलतन्त्र

लि०—श्लोक स० १९००। यह नारद-नीललोहित (शिव) सवादरूप तन्त्र २५ पटलो मे समाप्त है। अन्तिम पटल का विषय दिया है—सिद्धिलक्ष्मी का सहस्रनाम स्तोत्र। इसका लिपिकाल ने० स० ८५७ दिया हुआ है। —ने० द० २।२३३

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

कालार्करुद्रपूजापद्धति

लि०—(१) श्लोक स० १००। इसमे कालार्क रुद्र की, जो शिवजी का एक रूप है, पूजाविधि प्रदर्शित है। —रा० ला० ३६२

(२) —कैट् कैट् १।९८

कालिकाकवच

लि०—(१) श्लोक स० ३०, यह जगन्मङ्गल नाम का कवच भैरवतन्त्रान्तर्गत है।

(२) (क) रुद्रयामल से गृहीत।

(ख) स्कन्दपुराण से गृहीत। —कैट् कैट् १।९८

(३) विरूपाक्षकृत (शिवकृत), नामान्तर—जगद्रक्षाख्यकवच।

(क) उत्तरतन्त्र से, कालिकाकल्प से, (ख) कालिकाकुलसार से,

(ग) कालिकाकुलामृत से, (घ) आपदुद्धारण रुद्रयामल से तथा शाम्भवी-संहिता से गृहीत। —कैट् कैट् ३।२१

कालिकाकुल

उ०—क्षेमराजकृत स्वच्छन्दतन्त्र-टीका मे।

कालिकाकुलसर्वस्व

उ०—तन्त्ररत्न श्यामारहस्य, आगमतत्त्वविलास, सर्वोल्लासतन्त्र, कालिकासहस्र-नामस्तोत्र तथा अमितादीपदान मे।

कालिकाकुलसद्भाव

उ०—श्यामारहस्य तथा कौलिकार्चनदीपिका मे।

कालिकाकुलसार

लि०—कालिकाकवच मात्र ।

—कैट् कैट् ३।२१

कालिकाक्रम या कालीक्रम

उ०—योगराज कृत परमार्थसार तथा क्षेमराजकृत साम्बपञ्चाशिका-टीका मे।

कालिकापञ्चाङ्ग

लि०—श्लोक स० ९८५, पूर्ण । —र० म० ४८३८

कालिकापद्धति

लि०—(१) श्लोक स० ८००, अपूर्ण। —अ० ब० ९५४१

(२) (क) श्लोक स० ९६, अपूर्ण, कालीतन्त्रान्तर्गत ।

(ख) श्लोक स० ६३, अपूर्ण ।

—स० वि० (क) २६६४४, (ख) २४४०९

कालिकापूजाप्रयोग

लि०—अन्त मे खण्डित। —ए० ब० ६३१४

कालिकामत

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

कालिकामाहात्म्य

लि०—श्लोक स० २३० । इसमे कालिका के नाम की महिमा प्रतिपादित है। जैसे—श्यामामोदतरंगिणी मे कहा है—हे देवेशि, हे मात , कालिका-नामोच्चारण का फल कहता हूँ—ककार वाञ्छित फल देता है—एव उत्तम धनपुत्रादि देता है। चाहे वार-वार चाहे एक ही वार जिसने काली का स्मरण किया मुक्ति उसके हाथ मे धरी हुई है, इसमे सन्देह नही । —रा० ला० ३३५

कालिकारहस्य

लि०—पूर्णानन्द रचित। —कैट् कैट् १।९८

कालिकार्चादीपिका

लि०—दे०, दक्षिणकालिकानित्यपूजाविधि। —कैट् कैट् १।९९

कालिकार्चामुकुर

यह कामाख्या के परम उपासक कालीचरण कृत है।

लि०—श्लोक स० १२५, पूर्ण, लिपिकाल १७८७ शकाब्द।

—स० वि० २६४९१

कालिकार्चाविधि

उ०—कालिकार्चासपर्याविधि मे।

कालिकार्णव

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव मे।

कालिकासपर्याविधि

लि०—दाऊजी ज्योतिषी (वाराणसी) के सग्रह मे ३६९ पन्ने की पूर्ण प्रति है। इसके निर्माता है निगमागमविद्या विद्योतित काशीनाथ तर्कालङ्कार।

कालिकोद्भव

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा प्राणतोषिणी मे।

कालिकोद्भाव

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे। —कैट् कैट् २।१९

कालिकोपनिषत्

लि०—(१) श्लोक सं० ५०। यह ग्रन्थ अथर्ववेद के सौभाग्यकाण्ड मे सम्बद्ध बतलाया गया है। —ए० व० ६१३४

(२) श्लोक स० ६१। यह अथर्ववेद के सौभाग्यकाण्डान्तर्गत कहा गया है। इसमे कालिका के मन्त्र, ध्यान और माहात्म्य वर्णित है। —रा० ला० २०९४

कालिकोपनिषत्सार

उ०—कालिकामपर्याविधि मे।

कालीकल्प

उ०—कौलिकार्चन-दीपिका, श्यामारहस्य, तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्ति-सुधार्णव, सर्वोल्लास, कालिकासपर्याविधि आदि मे।

कालीकल्पलता

लि०—(१) विमर्शानन्दनाथ विरचित। श्लोक स० १०६२, पूर्ण।

—स० वि० २४५८४

(२) (क) श्लोक स० ७२०। (ख) श्लोक स० ६००।

—अ० व० (क) ५५३९, (ख) ५६१८

कालीकुल

उ०—कौलिकार्चनदीपिका मे।

कालीकुलक्रम

लि०— —कैट् कैट् १।९९

कालीकुलक्रमार्चन

लि०—श्लोक स० ७००, लिपि-काल १६१० ई०। इसके रचयिता है परमहसपरि-व्राजक विमलवोधपाद। इसमे कालीपूजा कुलक्रमानुसार वर्णित है। ग्रन्थारम्भमे ग्रन्थकार ने अपनेगुरुओ को नाम निर्देशपूर्वक नमस्कार किया है। वे है—'विश्वामित्र, वशिष्ठ, श्रीकण्ठ, कुण्डलीश्वर, श्रीक्रोध, मीनाङ्क और तालाङ्क।

इसमे वर्णित विषय है—अन्तर्यागविधि, आसनपूजाविधि, न्याससहित ध्यानविधि, नित्यार्चनविधि आदि। —ने० द० ३।३१४

कालीकुलसर्वस्व

लि०—अपूर्ण। दक्षिणकालिकासहस्रनाम भी इसके अन्तर्गत रा० ला० ८६५ मे कहा गया है—'शिवपरशुरामसवादे कालीकुलसर्वस्व दक्षिणकालिकासहस्रनामस्तोत्र समाप्तम्।' पर वर्तमान प्रति मे वह उपलब्ध नही हुआ। यह निगमशैली का ग्रन्थ है।

—व० प० १३९५

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी, ताराभक्तिसुधार्णव, सर्वोल्लासतन्त्र, ललितार्चनचन्द्रिका, तारारहस्यवृत्ति, कालिकासपर्याविधि, श्यामारहस्य तथा कौलिकार्चनदीपिका मे। —ए० व० ५९३१

कालीनारायणी

उ०—आगमतत्त्वविलास मे।

कालीपद्धति

लि०—(१) श्लोक स० १५०० । —अ० व० १०४४२

(२) (क) श्लोक स० ४८७, पूर्ण। (ख) श्लोक स० लगभग ५३८, पूर्ण। उपर्युक्त कालीपद्धति से यह प्रति आकार मे कुछ भिन्न मालूम पडती है।

—स० वि० (क) २४०१२, (ख) २५२७०

(३) —कैट् कैट् १।१००

कालीपुराण

लि०—श्लोक स० ५४००। यह रुद्रयामलान्तर्गत महाकालसहिता से गृहीत उमामहेश्वर सवादरूप है। यद्यपि पुष्पिका मे यह ग्रन्थ रुद्रयामलान्तर्गत कहा गया है किन्तु यह कालिकापुराण के सस्करण से हूबहू मिलता है जो बगवासी इलेक्ट्रिक मशीन प्रेस कलकत्ता से सन् १९०९ मे प्रकाशित हुआ था। यह उसके ४र्थ अध्याय के १०वे श्लोक से आरम होकर ६० वे अध्याय के ८२वे श्लोक मे समाप्त होता है। इसकी पुष्पिका मे यो उल्लेख है—इति रुद्रयामले तन्त्रे महाकालसहिताया श्रीकालीपुराण समाप्तम्।

—ए० व० ५८७४

कालीपूजा (१)

लि०—(१) श्लोक स० २२०, राघवानन्दनाथ कृत। —अ० व० ५१४०

लि०—(२) श्लोक स० ३००, स्वयप्रकाशानन्द सरस्वती कृत।

—अ० व० २४११ (क)

कालीपूजापद्धति

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत। इस ग्रन्थ मे कालीपूजा वर्णित है।

—क० का० ७७

(२) (क) श्लोक स० ३५, अपूर्ण ।
(ख) श्लोक सं० ७९८, पूर्ण ।

—स वि० (क) २५२७१, (ख) २५६२१

[स० वि० के सग्रह मे कालीपूजा-पद्धति तथा कालीपूजन-पद्धति के नाम से और भी पुस्तकें है पर सब अपूर्ण और भिन्न भिन्न प्रतीत होती हैं]

कालीपूजाविधि

लि०—इसमे काली के ध्यान, मन्त्र आदि के साथ पूजाविधि प्रतिपादित है।

—रा० ला० २३२

कालीभक्तिरसायन

लि०—श्लोक स० ५५० । इसके रचयिता दक्षिणाचारप्रवर्तक काशीनाथभट्ट हैं। ये भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र, वाराणसी-गर्भसभूत और वाराणसीनिवासी थे । यह ग्रन्थ ८ प्रकाशो मे पूर्ण है। आचारनिर्णय, २२ अक्षरो के मन्त्र का उद्धार, प्रात कृत्य आदि से लेकर तान्त्रिक सन्ध्याविधि पर्यन्त, द्वारपूजा से लेकर न्यासविधान तक का विषय, यन्त्रोद्धारविधि, देवता-पूजाविधि, आवरणपूजाविधि, विद्या-माहात्म्य तथा उपासक-धर्मविधि और पुरश्चरणविधि इसमे वर्णित है।

इसमे प्रमाण रूप से अनेक तन्त्र ग्रन्थो का उल्लेख है। —ए० व० ६३०४

कालीमत्तमयूराष्टकस्तोत्र

उ०—इण्डिया आफिस कैटलाग तथा श्यामारहस्य मे।

कालीयामल

उ०—कुलपूजनचन्द्रिका (चन्द्रशेखर शास्त्री कृत) मे ।

कालीविलासतन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० ११०० । ३५ पटलो मे पूर्ण ।

—ए० व० ५९२८

(२) श्लोक स० ९२५ । देवी-सद्योजात (शिव) सवादरूप यह तन्त्र शिवप्रोक्त है। इसमे ३० पटल हैं। उनके विषय हैं—शिवाशिवसवाद रूप से प्रस्तावना, तन्त्रनाम निर्वचन, शूद्र के लिए प्रणव, स्वाहा आदि के उच्चारण का निषेध, शूद्र जाति के लिए प्रशस्त मन्त्र आदि का निरूपण, स्वाहा तथा प्रणव युक्त स्तोत्र पाठ आदि मे शूद्र का भी अधिकार,

(२) असितादीपदान मात्र। —कैट् कैट् ३।२२

उ०—शक्तिरत्नाकर, शाक्तानन्दतरङ्गिणी तथा प्राणतोषिणी मे।

कालीकुलावलि

लि०—यह काली की तान्त्रिक पूजा के सम्बन्ध मे है। —बी० कै० १२७१

कालीकुलामृततन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० ११५०, १५ पटलो मे पूर्ण। इस ग्रन्थ मे मुख्यतया काली-पूजा का प्रतिपादन है, साधारण रूप से तारा की पूजा का भी प्रतिपादन है। इसमे सब मन्त्रो के उद्धार, ऋषि, छन्द, देवता, बीज, शक्ति, कीलक, विनियोग, ध्यान, पूजा आदि, स्तोत्र और कवच का वर्णन है। इसका साधन-क्रम भी वर्णित है। इसका लिपि-काल १७२७ शकाब्द है। —ए० बं० ६०१६

(२) श्लोक सं० ९५२, पूर्ण। पटल १–११ कहे गये है। साथ मे योनिकवच और सरस्वतीकवच भी सनिविष्ट है। —स० वि० २६१४१

(३) १५ पटलो की पूर्ण प्रति दाऊजी दीक्षित ज्योतिषी, वाराणसी के सग्रह मे है।

कालीकुलार्णवतन्त्र

लि०—श्लोक स० ११७६। देवी-भैरव सवादरूप यह एक मौलिक तन्त्रग्रन्थ है। इसका आरम्भ 'वीरनाथ उवाच' मे है। वीर का अर्थ है जो वामाचार-पूजा से सिद्धि प्राप्त कर चुका हो। वीरनाथ उन वीरो के सर्वोच्च अधिपति है। यह ग्रन्थ गुह्यकाली, जो नेपाल की महादेवी है, के सम्बन्ध मे है। उक्त देवी आश्रितो पर अनुग्रह करती है। यह ग्रन्थ अथर्वण-सहितान्तर्गत कहा गया है। यह महा गुह्य और प्रलयानल सदृश है, अतएव गोपनीय कहा गया है। —ने० द० ११३०

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव तथा कौलिकार्चनदीपिका मे।

कालीक्रम

लि०—यह आद्या द्वारा भूमि पर अवतारित सात करोड़ श्लोकात्मक ज्ञानसद्भाव, जिसमे खेचरविद्या विचार-क्रम मे हजारो मन्त्र है, के अन्तर्गत है। यह खेचर-विद्या से सम्बद्ध प्रतीत होता है। यह चार या अधिक पटलो मे पूर्ण है। —ने० द० २१९

उ०—तन्त्रसार तथा पुरश्चर्यार्णव मे।

कालीतत्त्व

नामान्तर—कालीतत्त्वरहस्य ।

लि०—(१) श्लोक स० ८४५, अपूर्ण । इसकी पूर्ण १ प्रति, जिसमे २१ तत्त्व (अध्याय) है, वी० कै० ५८६ मे है। वहुत-से कैटलागो मे इसका 'रहस्य' के नाम से उल्लेख है। दे०, कैट् कैट् १।९९। इस ग्रन्थ के रचयिता राघवभट्ट है। उन्होने कुलनाथगणो के साथ सव तन्त्रो का विचार कर कालीतत्त्व की रचना की। इसमे वर्णित विषय यो है—१म मे साधको के प्रात कृत्य, २य मे स्नान, ३य मे सन्ध्या, ४र्थ मे तर्पण, ५म मे पूजा, ६ष्ठ मे द्रव्यशुद्धि, ७म मे कुलसम्पत्ति, ८म मे पुरश्चरण, ९म मे नैमित्तिक कर्म, १०म मे काम्यकर्म, ११ श मे कौलाचार, १२ वे मे स्थान, पुष्प आदि, १४ वे मे प्रायश्चित्त, १५ वे मे भाव, १६ वे मे कुमारीपूजाविधि, १७ वे मे माला, १८ वे मे स्तुति, १९ वे मे शान्ति, २० वें मे मन्त्र तथा २१ वें मे रहस्य आदि। इस ग्रन्थ मे प्रमाण रूप से अनेक तन्त्र उद्धृत है। —ए० व० ६३०६,७

(२) इसका दूसरा नाम आचारप्रतिपादनतत्त्व है। इसके रचयिता राघवभट्ट वहुत वडे तान्त्रिक, ग्रन्थलेखक और टीकाकार थे। शारदातिलक पर लिखी गयी पदार्थादर्श नाम की उनकी टीका स्मृति तथा तन्त्र निबन्धो मे प्राय उद्धृत है। दरवार लाइब्रेरी की इस प्रति मे आचार और प्रायश्चित्त ही वर्णित है। ग्रन्थकार ने शारदातिलक पर लिखी अपनी टीका का सत्सम्प्रदायकृत व्याख्या के नाम से उल्लेख किया है।

—वी० कै० पे ६०९

शारदातिलक के वनारस के सस्करण (सवत् १९५८) से ज्ञात होता है कि राघवभट्ट के पिता नासिक से काशी आये थे। उक्त टीका की रचना १५५० वि० मे हुई।

—ने० द० १।१५३९

(३) (क) श्लोक स० २०००, (ख) श्लोक स० ६००।

—अ० व० (क) १०६७०, (ख) १०३५

(४) इसमे कालीजी की तान्त्रिक पूजा प्रतिपादित है। यह २१ पटलो मे पूर्ण है। पूर्ण प्रति की पत्र स० ९६ है। इसके रचयिता राघवभट्ट है। —वी० कै० १२७२

कालीतत्त्वसुधा-सिन्धु

लि०—श्लोक स० १३९७२, ३२ तरगो मे पूर्ण। रचयिता कालीप्रसाद काव्यचञ्चु। यह विशाल ग्रन्थ काली की पूजा पर विभिन्न तन्त्रो से सगृहीत है। इसका कालीतत्त्व-सुधार्णव भी नामान्तर है। इसकी समाप्ति १७७४ सवत् मे हुई, यह—"वेदाब्धिसिन्धु-

चन्द्राङ्के माघे दिनचतुष्टये। समाप्तिमगमद् ग्रन्थ कालीतत्त्वसुधार्णव ॥" इस श्लोक से ज्ञात होता है। इसके रचयिता कालीजी के परम उपासक थे। इसके मुख्य-मुख्य विषय यों हैं—दीक्षा शब्द की व्युत्पत्ति, गुरु के विना पुस्तक से मन्त्र ग्रहण मे दोष, दीक्षा न लेने मे दोष, श्वशुर आदि से मन्त्र-ग्रहण मे दोष, यदि सिद्ध मन्त्र हो तो दोष नहीं, सिद्धमन्त्र निरूपण, निषिद्ध गुरुओं से मन्त्र ग्रहण करने पर मन्त्रत्याग और प्रायश्चित्त करने का विधान, स्वप्न मे पाये मन्त्र के सस्कार, निषिद्ध, और सिद्ध लक्षणो से युक्त गुरु का निरूपण, स्त्री और शूद्रो को प्रणव, स्वाहा आदि से युक्त मन्त्र देने के सम्बन्ध मे विचार, कलियुग मे आगम मे उक्त दीक्षा की आवश्यकता, तन्त्रादि शास्त्रो मे सदेह, निंदा आदि करने मे दोष, मन्त्र और मन्त्रवक्ता की प्रशसा, तन्त्र और आगम पदो की व्युत्पत्ति। ३२ अक्षरो के नाम और अर्थ कथन, दक्षिणापद की व्युत्पत्ति, काली के मन्त्र की प्रशसा, दक्षिणकाली, सिद्धकाली आदि के मन्त्र, वीरभाव का लक्षण, पशु भाव का लक्षण, दिव्य आदि भावो का निरूपण, सात प्रकार के आचारो का निरूपण, कलियुग मे पशुभाव की प्रशस्तता, प्रतिनिधि द्रव्यो का निरूपण, पशुभाव आदि मे पूजाकाल की व्यवस्था, पूजा के अधिकारी का निरूपण, पुरोहित के प्रतिनिधि होने का निषेध, बलिदान की प्रशसा, अवैध हिंसा मे दोष, पूजा की आधारभूत प्रतिमा आदि, मन्त्र शब्द की व्युत्पत्ति, विशेष कुलदीक्षा, स्वकुलदीक्षा, मन्त्र के छह साधन प्रकार, मन्त्र के दस सस्कार, मातृका-मन्त्र, वर्णमाला की उत्पत्ति, वैदिक गायत्री के जप मे माला का विधान, वीरो के पुरश्चरण की विधि, ग्रहण मे पुरश्चरण की विधि, कुमारीपूजा मे स्थान, क्रम, उपचार, दान आदि का निरूपण, विविध पुरश्चरण, मन्त्र का अमृतीकरण, मन्त्र की निद्रा का भग करना, मन्त्र, सिद्धि के उपाय, योनिमण्डल-ध्यान, प्रफुल्लबीज-ध्यान, काली बीज-ध्यान, श्यामा के ३२ अक्षरो के मन्त्र का ध्यान, कुल-वृक्ष का निरूपण, कामकला निरूपण, लेलिहान मुद्रादि कथन, अठारह उपचार आदि और उनके मन्त्र, नवदीपविधि, प्रणामविधि, सहार-मुद्रा, प्रार्थना-मुद्रा, शिर के प्रदान की विधि, रुधिर दान की विधि, अपने गात्र के रुधिर प्रदान की विधि, सविदा साधन की परिपाटी, शक्ति न हो तो अर्चनपान मे दोष, वर्जनीय शक्तियाँ, विजयापान मे काल-नियम, वीरो के स्नान, सन्ध्योपासना, तर्पण आदि, द्रव्य-शोधन, शाप-विमोचन, हंस-मन्त्र, पान-पात्र का परिमाण, लतासाधन, शक्ति-शुद्धि, पञ्च तत्त्व, कुण्ड-गोलग्रहण आदि की विधि, दूतीयजन, कुलनायिकाएँ, चितासाधन, शवसाधन, शवसाधन मे स्थान, आसन आदि के नियम आदि। —रा० ला० २९५६

कालीतत्त्वामृत

लि०—श्लोक स० १६८०, यह चार लहरी (अध्याय) तक ही है। इसके रचयिता वलभद्र पण्डित है। प्रथम लहरी मे पशु के सम्मुख इस तन्त्रशास्त्र की चर्चा का निषेध, प्रतिमा आदि मे शिलावृद्धि करने मे दोप कथन, अदीक्षित का तन्त्रशास्त्र मे अनधिकार कथन, विहित और अविहित गुरुओ का निरूपण, दिव्य, वीर, पशु आदि का भेद, कौलिको का पशु मे मन्त्र ग्रहण मे प्रायश्चित्त, कलि मे काली उपासना की कर्तव्यता, आगमोक्त दीक्षा ग्रहण करने के वाद पुराणविधि से कर्मानुष्ठान करने मे फलाभाव, गुरु और शिष्य के लक्षण, मन्त्र के दस सस्कार, यन्त्र-सस्कार, माला-सस्कार, पुरश्चरण की आवश्यकता, पुरश्चरणक्रम, मन्त्र के सूतकादि दोपो का निरूपण, मन्त्र की शिखा, पडध्वा और षड्वर्णो की भावना, स्वतन्त्र तन्त्रादि मत साधन। सिद्धि का प्रकार, वास्तुयाग-विचार, कुण्ड के दोपादि का निरूपण आदि, सिद्धि का प्रकार आदि। —रा०ला० २९६२

कालीतन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० ६००, ११ पटलो मे पूर्ण। यह उमा-महेश्वर सवादरूप है।

—ए० व० ५९३०–३३

(२) (क) श्लोक स० ३००। १३ पटलो मे ? इस सग्रह मे तीन प्रतियाँ और है। जिनमे २ (ख) और (ग) तीन सौ श्लोक वाली है एव (घ) दो सौ श्लोक की है। २०० श्लोको वाली की पटल सख्या १२ दी गयी है। ३०० श्लोक की एक की पटल स० १२ और दूसरी की पटल स० नही दी गयी है।

—अ० व० (क) ५६०४, (ख) १०७२७, (ग) ८२३३, (घ) १९४१४

(३) श्लोक स० ४१५। इसमे शिवात्मिका मूल शक्ति काली की समन्त्र पूजा, प्रतिष्ठा, निष्क्रमण, अभिषेक, स्नान आदि विषय सक्षेपत वर्णित है। सभवत यह उमा-महेश्वर सवादरूप कालीतन्त्र से भिन्न है। इसमे केवल ४ पटल है।

—ट्रि० कै० ९७४ (घ)

(४) भण्डारकर रि इस्टीच्यूट मे १ प्रति ११ पटलो मे पूर्ण है।

(५) (क) श्लोक स० ६७५, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ३२४, अपूर्ण, (ग) श्लोक स० ३१२ अपूर्ण, (घ) श्लोक स० ३००, अपूर्ण, (ङ) श्लोक स० १९२, अपूर्ण, (च) श्लोक स० ३३०, अपूर्ण, (छ) प्रति १० पटलो की पूर्ण वतलायी गयी है।

—स० वि० (क) २५४५९, (ख) २४५२९, (ग) २४५३०, (घ) २४९००, (ङ) २५४३६, (च) २६४२३, (छ) २४९०८

उसे वैग्यत्व-प्राप्ति हो जाती है यह कथन, कलियुग मे पशुभाव की कर्तव्यता, दिव्य, वीर भाव आदि का निषेध, दीक्षाकाल कथन, दिव्यादि भावो के लक्षण, कलियुग मे सविदापान का नियम, काँसे के वर्तन मे रखा हुआ नारियल का जल मदिरातुल्य है, शिव और विष्णु मे अभेद, कलियुग के योग्य वशीकरण, मोहन, विविध देव-देवियो के स्तोत्र, विविध देवी देवो के पूजा, मन्त्र, ध्यान आदि, जम्बूदीप मे महिषमर्दिनी के अस्त्र आदि का निरूपण, अन्य द्वीपो के अस्त्रो का निरूपण, महिषमर्दिनी के गणो का निरूपण, कालिका कृष्णजी की माता है, कृष्णजी ने कालिका का स्तनपान किया, कृष्ण के समीप मे कालिका के कामवीज आदि कथन, ध्यान कथन, मन्मथ साधन ? पञ्च वीजो का निर्णय, माया-वीज आदि का साधन, रमा-वीज आदि का निरूपण, कूर्च ध्यान आदि कथन, शिञ्जिनीके ध्यान आदि का कथन, काम वीज के लिखने का क्रम, स्त्री-वीज के लिखने का क्रम, अनुलोम विलोम से अकारादि से लेकर क्षकार तक जप-प्रकार कथन, कृष्ण के मुरलीधारण का विवरण, कलियुग मे पुरश्चरण, होम आदि करने का निषेध, गुरुपूजा से ही सब सिद्धि होती है, यह कथन। —रा० ला० २९६३

(३) शिवपार्वती सवादरूप यह ग्रन्थ ३४ पटलो मे पूर्ण है। इसमे शाक्तो की तान्त्रिक पूजा विधियाँ तथा उत्सव वर्णित हैं। —क० का० १२

(४) केवल १२ पटल तक, अपूर्ण। —व० पं० ४३५

उ०—प्राणतोषिणी तथा सर्वोल्लास मे।

कालीशाबर

लि०—(१) श्लोक स० ९३, तीन पटलो मे पूर्ण। शिवपार्वती सवादरूप इस ग्रन्थ मे शावरो के भेद वतलाये गये है—शावर, सिद्धशावर, कुमारीशावर, विजयाशावर, कालिकाशावर, कालशावर, दिव्यशावर, वीरशावर, श्रीनाथशावर, योगिनीशावर, तारिणीशावर, तथा शम्भुशावर, यो सब मिला कर १२ शावर है। इसी प्रकार १२ अघोर और १० गारुड भेद भी हैं। इसके तीन पटलो मे १म परिभाषा पटल, २य कालीसक्षेप पटल, ३य कालीशावर पटल है। तीसरे पटल के वाद हिन्दी मे एक विभाग और है जो 'शावर सकल साधन' के नाम से अभिहित है। —ए० व० ६०९५

(२) श्लो० स० १००। —अ० व० १०८८८

कालीशावरतन्त्र

लि०—श्लोक स० ४५०, अपूर्ण। —अ० व० १२७३२

कालीसपर्याक्रमकल्पवल्ली

लि०—श्रीनिवासभट्ट विरचित । —कैट् कैट् १।१००

कालीसर्वस्वसंपुट

लि०—श्लोक स० ४२५६। न्यायवागीश भट्टाचार्य-पुत्र श्रीकृष्ण विद्यालङ्कार विरचित। इस विशाल गन्थ मे विविध विषय वर्णित है जिनमे से कुछ मुख्यो का उल्लेख नीचे किया जाता है —

जिन महातन्त्र ग्रन्थो के आधार पर इसकी रचना की गयी थी उनकी विस्तृत सूची ग्रन्थारम्भ मे दी गयी है। दीक्षा-प्रसग, काली के आठ भेद, काली शब्द की व्युत्पत्ति, साधको के प्रात कृत्य, विविध न्यास, महाकालपूजा, आवरणपूजा, काली के विविध स्तोत्र, माला-भेद, माला-शोधन और माला-सस्कारविधि, शरत्कालीन आदि विविध पुरश्चरण, कुमारी-पूजा, दूतीयाग, योनिपूजा, पञ्च मकारविधि, विजयाकल्प, मास, मत्स्य, मुद्रा आदि की शोधन-विधि, वीरसाधनविधि, शवलक्षण आदि कथन, तीन प्रकारो से शवसाधनविधि, योगियो के नित्य कृत्य कथन, षट्कर्म कथन, उच्चाटनविधि, विद्वेषण, स्तभन आदि की विधियाँ, अदर्शनक्रम कथन, आकर्षणविधि, वशीकरणविधि, गुरुचरण-चिन्तन प्रकार कथन आदि। —नो० स० १।६०

कालीसारतन्त्र

उ०—शक्तिरत्नाकर मे।

कालीसुधानिधि

लि०—श्लोक स० १५४०, अपूर्ण। —स० वि० २४५६६

कालीसोपानपद्धति

लि०—श्लोक स० ३८०। —अ० व० ५६४२

कालीस्तवराज

लि०—श्लोक स० ३६। यह कालीहृदयान्तर्गत कालभैरव-परशुराम सवादरूप काली-स्तुति है। इस स्तव के स्मरण मात्र से कालिका प्रसन्न होती है और उनकी प्रसन्नता से साधक को सकल सिद्धियाँ प्राप्त होती है। —रा० ला० ४१६

कालीहृदय

लि०—श्लोक स० ७५, पूर्ण। इसमे कालीजी का लम्बा मन्त्र है, जो हृदय कहलाता है। यह देवीयामल के अन्तर्गत है। —ए० ब० ६६४७

उ०—तन्त्रसार (कृष्णानन्दकृत) मे।

कालोत्तर या कालोत्तरतन्त्र

लि०—(१) यह शिव-कार्तिकेय सवादरूप महातन्त्र है। पुष्पिका मे 'बृहत्कालोत्तर नाम शिवशास्त्रम्' भी कहा गया है। कालोत्तर बहुत प्राचीन तन्त्रग्रन्थ है। १० म शताब्दी के अन्त तथा एकादश शती के प्रारम्भ मे देदीप्यमान वैदुष्य वाले अभिनव गुप्त ने अपने त्रिंशिका-तत्त्वविवरण मे इसका उद्धरण दिया है। यह ४० पटलो मे पूर्ण है। पटलो के नामो से, जो नीचे दिये जा रहे है, ज्ञात होता है कि सम्पूर्ण तान्त्रिक क्षेत्र मे यह प्रकाश डालता है। कही पर इसके ३२ ही पटलो का उल्लेख है। १ प्रायश्चित्त पटल, २ अक्षसूत्रमाला पटल, ३ घण्टालक्षण पटल, ४ पुष्प पटल, ५ अष्टपुष्पिका पटल, ६ व्रत-यात्रा पटल ७ फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी पटल, ८ ग्रह-व्रत पटल ९ व्रत पटल १० तत्त्वो की उत्पत्ति का पटल, ११ साधन सवित् पटल, १२ नाडीचक्रो के नाम निर्देश का पटल, १३. प्रसाद प्रणव आदि पटल, १४ प्रत्यक्ष पटल, १५. जप पटल, १६ लिङ्गोद्धार पटल, १७ इष्टि पटल, १८ अन्तर्याग पटल, १९ अन्त्येष्टि पटल, २० श्राद्ध पटल, २१ लिङ्गवर्णन पटल, २२ लिङ्ग पटल, २३ प्रतिमा पटल, २४ मातृभैरववर्णन पटल, २५ पीठ पटल २६ वास्तुयाग पटल, २७ प्रासाद-लक्षण पटल, २८ अधिवासन पटल, २९ स्थापन पटल, ३० जीर्णोद्धार पटल, ३१ वृषभ पटल, ३२. उद्धातोद्देश पटल, ३३ विजय पटल, ३४ ब्रह्माण्ड-वर्णन पटल, ३५ तत्त्वयुक्ति-वर्णन पटल, ३६ मन्त्रार्थ पटल ३७ क्षेत्र-ग्रहण पटल, ३८ शक्ति-वर्णन पटल, ३९ पूर्व सेवा पटल, ४०. अघोरादि शास्त्र व्याप्ति परिपालन पटल।

नं० द० मे उनकी और भी प्रतियाँ है परन्तु वे सब इससे अधिक मात्रा मे अपूर्ण प्रतीत होती है। पृ० ६ स० ८९, पृ० ८३ स० १५८३, पृ० ८ और ९६ स० २२६८ तथा पृष्ठ ८० स० १६३४। —नं० द० १२७३ (क)

(२) श्लोक स० १८, मुद्रापटल मात्र। —ए० ब० ५८९८

(३) श्लोक स० १६००। —अ० ब० ७९१

उ०—आगमतत्त्वविलास (रघुनाथ कृत), प्राणतोषिणी (प्राणतोषण कृत), तारा-भक्तिसुधार्णव, तन्त्रालोकसटीक, शतरत्नसग्रह, चतुर्वर्गचिन्तामणि हेमाद्रि, भोज के तत्त्वसग्रह पर तत्त्वप्रकाशिकावृत्ति, साम्वपञ्चाशिका (क्षेमराज कृत), कमलाकर के द्वैतपरिशिष्ट तथा रघुनन्दन के स्मृतितत्त्व मे ।

काल्यादिमन्त्र

लि०—श्लोक स० ५० । इसमे काली आदि १५ देवताओ के मन्त्र प्रतिपादित है ।

—अ० व० ७१८४

काल्यूर्ध्वाम्नायतन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० ५४०, पूर्ण, पाँच पटलो मे विभक्त । इस ग्रन्थ का प्रतिपादन क का २२ मे भी किया गया है, पर वहाँ इसके पटलो की सख्या का उल्लेख नही है एव व प मे यह ग्रन्थ ऊर्ध्वाम्नायतन्त्र कहा गया है । —ए० व० ५९६३

(२) श्लोक स० ४८८ । देवी-ईश्वर सवादरूप (देवी के प्रश्न करने पर शिव प्रोक्त) यह महातन्त्रो मे अन्यतम है । इसकी साधारणत ऊर्ध्वाम्नाय के नाम से प्रसिद्धि है । यह ५ पटलो मे पूर्ण है—ऊर्ध्वाम्नाय की प्रस्तावना, देवता, गुरु और मन्त्रो मे ऐक्य भावना आवश्यक है, शरीर का निरूपण, सारा विश्व पशुरूप है, यह कथन, निर्गुण और निर्विकार परमात्मा से जगत् की सृष्टि कैसे ? इस प्रश्न का समाधान, प्रकृति से महत्तत्त्व आदि की उत्पत्ति, परा, पश्यन्ती वैखरी के भेद से त्रिविध शक्ति का निरूपण, कर्मेन्द्रियो के अधिष्ठाताओ का निरूपण, क्रियाशक्ति, ज्ञानशक्ति आदि का निरूपण, पञ्चीकरण की प्रक्रिया का कथन, शरीर प्रणवाकार है वह कथन, स्थूल और सूक्ष्म आदि शरीरो की ब्रह्मा, विष्णु आदि रूपता, दक्षिण नेत्रगत काल की राम,कृष्ण,नारायण आदि रूपता,अजपा की द्विविधता कहते हुए उनके स्वरूप का कथन, पितासे हड्डी, मज्जा आदि की तथा माता से मास, चर्म आदि की उत्पत्ति कथन, नाडी, सन्धि आदि की सख्या, शरीर के विशेष अवयवो मे २७ नक्षत्रो की अवस्थिति का निर्देश, इसी तरह १५ तिथियो की अवस्थिति का निरूपण, शरीरस्थ राशिचक्र का निरूपण, षट्चक्र तथा देह मे १४ लोको की स्थिति आदि का निरूपण, जीव कहाँ रहता है, यह निरूपण करते हुए काली का नन्द-गृह मे कृष्णरूप मे तथा सुन्दरी का राधा के रूप मे अवतार आदि तथा ऐश्वर्यादि कथन,पक्ष्मो का वृन्दावनत्व कथन, उसमे कृष्ण के अवस्थान आदि का निरूपण, तत्त्वज्ञान और तत्त्वज्ञान साधन-प्रक्रिया का निरूपण, छायासिद्धि का प्रकार तथा योगसाधन-प्रकार कथन, बीजोद्धार आदि कथन,

दैहिक स्थान के भेद से जल के गङ्गाजल, पर अमृत, देहरक्षक आदि नामभेद कथन, काली नाम का निर्वचन, योगियो की मानसी पूजा का प्रतिपादन, वीरों के अन्तर्याग की शैली, ज्ञानरूप चक्र के स्थान आदि का निरूपण, सगुण और निर्गुण भेद से विविध शाभव चक्रो का निरूपण। —रा० ला० १७४३

(३) महेश्वर भाषित (उमा-महेश्वर सवादरूप) यह तत्त्वज्ञान विषय पर मौलिक तन्त्रग्रन्थ ५ पटलो मे पूर्ण है। यह मूल मे भगवान् शिवजी द्वारा ऊर्ध्व मुखसे कहा गया था, अतएव ऊर्ध्वाम्नाय कहलाता है।

काश्यपीयसंहिता

लि०—श्लोक म० ८०। इसमे रज्जुवन्ध और मृत्सस्कार नामके केवल दो ही पटल हैं। —अ० व० १०८८२ (घ)

किङ्किणीतन्त्र

उ०—मन्त्रमहार्णव मे।

किरणतन्त्र

लि०—श्लोक म० २७००। लिपि-काल १०वी शताब्दी ई०, अपूर्ण। भगवान् त्रिपुरेश्वर-गरुड सवादरूप यह महातन्त्र ६४ या उससे अधिक पटलो मे पूर्ण है। ६४ पटलो के विषय यो दरशाये गये हैं—पशु-विचार, आहार-विहार-विचार, शिव-विचार, शक्ति-विचार, दीक्षा-विचार, मन्त्र, शिव और शक्ति विचार, तत्त्व-विचार, शिवशक्ति-विचार, ज्ञानभेद-विचार, मन्त्रोद्धारविचार, लिङ्गार्चन-विचार, अग्निकार्यविधि, अग्निकुण्ड-विचार, गृहलक्षण, द्वारलक्षण, अष्टयाग, गणपतियाग, नवग्रहयाग, अशभेद-विचार, पवित्रारोहणविधि, गुरुपरीक्षा, व्रतेश्वरयाग, शुद्धि और अशुद्धि विचार, पञ्चमहापातक-प्रायश्चित्तविधि, भोजन, आसनविधि, नित्यहानि पर प्रायश्चित्त, साधनविधान पटल, पञ्चब्रह्मोद्धार पटल, लिङ्गोद्धार पटल, मातृकायाग पटल आदि।

किरणागम

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह अष्टादश रुद्रागमो मे अन्यतम है।

उ०—शतरत्नसंग्रह तथा तन्त्रालोक मे।

किरणागमवृत्ति

अघोर शिवाचार्य विरचित।

कुक्कुटकल्प

लि०—श्लोक स० २०० । इसमे वशीकरण, विद्वेषण, उच्चाटन, स्तभन, मोहन, ताडन, ज्वरबन्धन, जलस्तभन, सेनास्तभन आदि विविध तान्त्रिक षट्कर्मो की सिद्धि के लिए मन्त्र-जप आदि उपाय प्रतिपादित हैं ।

—ट्रि० कै० १०२५ (ख)

कुक्कुटतन्त्र

लि०—श्लोक स० ४५० । —अ० व० १३३०४

उ०—सर्वोल्लास मे ।

कुक्कुटेश्वरतन्त्र

उ०—आगमतत्त्वविलास तथा तन्त्रसार मे ।

कुण्डकल्पद्रुमटीका

लि०—अपूर्ण । यह माधव शुक्ल कृत कुण्डकल्पद्रुम पर टीका है । इसमे पदे-पदे तन्त्रग्रन्थो के नाम उद्धृत हैं । —ए० व० ६५३८

कुण्डतन्त्रराज

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे ।

कुण्डलाभरण

गोरक्षनाथ या महेश्वरानन्द कृत ।

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे ।

कुण्डलिनीहोमप्रकरण

लि०—इसमे शक्ति देवी की पूजा मे विशेष होम का प्रतिपादन किया गया है । होम-क्रम यो लिखा है—अ अ —प्रकृति, अहकार, बुद्धि, मन, श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिह्वा, नासिका, हस्त, पाद, मलद्वार, मूत्रद्वार, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथिवी रूप आत्मतत्त्व से आणवमल स्थूल देह को शोधित कर ऐ क अखण्ड एकरस आनन्ददायक स्वच्छन्द स्फुरण मात्र कुलरूपी परसुधात्मा मे हवन करे । फिर धर्म और अधर्मरूपी हवि से दीप्त आत्मा रूपी अग्नि मे मनरूपी स्रुवा से इन्द्रियवृत्तियो का हवन करे इत्यादि । —म० द० ८५८३, ८४

कुब्जिकातन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० ७२०, पूर्ण। यह शिव-पार्वती सवाद रूप तन्त्र नौ पटलो मे विभक्त है। श्रीपार्वतीजी के शङ्करजी से यह निवेदन करने पर कि हे देवेश, निरञ्जन पद किस उपाय से प्राप्त होता है? यदि आप की मुझ पर दया है तो सार से भी सारतर उपाय बतलाने की कृपा कीजिये। समयाचार, साधन और सब भूतो के चैतन्य शब्दब्रह्म को मैं साधको के हित के लिए सुनना चाहती हूँ। इसपर शिवजी ने कहा—जो मन्त्रार्थ, मन्त्र-चैतन्य और योनिमुद्रा नही जानता वह अरबो कल्पो मे भी सिद्धि-लाभ नही कर सकता। मैं महामन्त्र को मन्त्रार्थ के अनुसार कहता हूँ जिसके ज्ञात होने मात्र से साधक सकल-सिद्धीश्वर हो जाता है। इसके विषय यो प्रतिपादित हैं—१ म पटल मे प्रस्तावना, २ य, ३ य और ४ र्थ मे मन्त्रार्थो का विवरण, ५ म मे मन्त्रचैतन्य, ६ ठे मे योनिमुद्रा, ७ वें मे दिव्य, वीर और पशु भावो का निर्देश, ८ वे मे ऐन्द्रजालिक विधि तथा ९ म मे मन्त्र-सिद्धि वर्णित है। यह रा० ला० ६९४ मे वर्णित कुब्जिकातन्त्र से सर्वथा भिन्न है।

—ए० ब० ५८०६

(२) श्लोक स० ४५३। पुष्पिका से ज्ञात होता है कि देवी-ईश्वर सवादरूप यह मौलिक तन्त्र १४ पटलो मे पूर्ण है। इसमे १ म मे स्त्री-दोषलक्षण, द्वितीय मे रक्त-मातृका पूजा, ३ य मे नाडी-शुद्धि, ४र्थ मे षष्ठी देवी की पूजा, ५ म मे डाङ्कुरकुमार पूजा, ६ ठे मे जयकुमार पूजा, पुत्रव्यात्वगमन, स्नानविधि आदि विषय वर्णित है।

पुत्रोत्पत्ति मे रक्तमातृका, षष्ठी देवी, डाङ्कुरकुमार और जयकुमार ये चार बाधक हैं। सन्तति के आकाक्षियो को इनकी सब प्रकार से सन्तुष्टि करनी चाहिए।

—रा० ला० ६९४

(३) इसमे १ से १३ पटल हैं। तीन पन्नो मे विविध यन्त्र अकित हैं।

—स० वि० २५७६५

[न० वि० मे २४२१५ तथा २६४३५ न० की दो प्रतियाँ पूर्ण हैं। १ से १३ पटलो मे विभक्त ४ प्रतियाँ अपूर्ण भी है जिनकी स०—२४३८३, २४७७४, २४९३७ और २५४६० है।]

(४) कुब्जिकातन्त्र मे दुर्गाकवचमात्र, कुब्जिकातन्त्र मे कौलिको की अन्त्येष्टि-विधि मात्र। कुब्जिकातन्त्र मे प्रत्यङ्गिरामालामन्त्र।

—कैट्. कैट् १।११०, ३।२२ तथा ३।१९४

उ०—मन्त्रमहार्णव, सौन्दर्यलहरी की सौभाग्यबोधिनी टीका, सर्वोल्लास, महार्थ-मञ्जरी-परिमल, कालिकासपर्याविधि, तन्त्रसार, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, प्राणतोषणी आदि मे।

कुब्जिकापूजन

लि०—(क) श्लोक स० ७००। इसमे कुब्जिका देवी की सक्षिप्त पूजाविधि प्रतिपादित है। इसके अन्त मे एक लम्बा उद्धरण कुब्जिकामत से गृहीत है। इसमे मुख्य-मुख्य विषय है—भूतशुद्धि, कलशपात्र-पूजन, गन्विन्याम, पडङ्गन्यास, मालिनीन्यास, अघोरन्यास, पड्दूती, न्यास, अघोरास्त्रन्यास, एकाक्षरीपडङ्गन्यास, विद्यान्यास, घोरिकाप्टकन्यास, रुद्रखण्डन्यास, मातृखण्डन्यास, विजयपञ्चकन्यास, डादिसप्तकन्यास, गुरुपक्तिपूजा, ब्रह्माण्यादिपूजन, भगवतीपूजन, वागेश्वरीपूजन, क्रमपूजन, कर्मध्यान, विमलपञ्चक, अष्टाविशतिकर्म, अष्टाविशतिकर्म-पूजाविधि तथा विखण्डापूजन।

(ख) इसमे विषय दिये गये है—वक्रन्यास, पडङ्गन्यास, गायत्री, मालिनीदण्डक-स्तोत्र, पञ्चवल्यर्चनविधि, कुम्भपूजा, पश्चिमदेवार्चन, अघोरपूजा, उग्रचण्डापूजा, कुमारीपूजा, चौसठ योगिनीवलि। इस पुस्तक के अन्त मे पुष्पिका नही है।

—ए० व० (क) ६४३६, (ख) ६४३७

कुब्जिकापूजापद्धति

लि०—श्लोक स० २५००। यह कुब्जिका देवी की पूजा पद्धति है। इसमे शिव और शक्ति के बहुत-से स्तोत्र और कूटाक्षर मन्त्र प्रतिपादित है। जिनमे व्यञ्जन-राशि के बीच एक ही स्वरवर्ण रहता है। यह ग्रन्थ पूर्ण नही है। इसमे ६४ योगिनियो के नाम और क्रम दिये गये है—१ श्रीजयादेवी, २ विजया, ३ जयन्ती, ४ अपराजिता, ५ नन्दा, ६ भद्रा, ७ भीमा, ८ दिव्ययोगी, ९ महासिद्धयोगी, १० गणेश्वरी, ११ शाकिनी, १२ कालरात्रि, १३ ऊर्ध्वकेशी, १४ निशाकरी, १५ गम्भीरा, १६ भूषणी, १७ स्थूलाङ्गी, १८ पवगी, १९ कल्लोला, २० विमला, २१ महानन्दा, २२ ज्वाला-मुखी, २३ विद्या, २४ पक्षिणी, २५ (?), २६ विषभक्षणी, २७ महासिद्धिप्रदा, २८ तुष्टिदा, २९ इच्छासिद्धि, ३० कुर्वाणिका, ३१ भासुरा, ३२ मीनाक्षी, ३३ दीर्घाङ्गा, ३४ कलहप्रिया, ३५ त्रिपुरान्तकी, ३६ राक्षसी, ३७ घोरा, ३८ रक्ताक्षी, ३९ विश्वरूपा, ४० भयकरी, ४१ फेत्कारी, ४२ रौद्री, ४३ वेताली, ४४ शुष्काङ्गा, ४५ नरभोजिनी, ४६ वीरभद्रा, ४७ महाकाली, ४८ कराली, ४९ विकृतानना,

५० कोटराक्षी, ५१ भीमा, ५२ भीमभद्रा, ५३ सुभद्रा, ५४ वायुवेगा, ५५ हयानना, ५६ ब्रह्माणी, ५७ वैष्णवी, ५८ रौद्री, ५९ मातङ्गी, ६० चर्चिकेश्वरी, ६१. ईश्वरी, ६२ वाराही, ६३ सुवडी तथा ६४ अम्वा। यह ग्रन्थ २४००० श्लोकात्मक कहा गया है।
—ने० द० ३।३८३ (ख)

कुब्जिकापूजाप्रकार

लि०—अग्निपुराण से गृहीत। —कैट्. कैट् १।११०

कुब्जिकामत

लि०—(१) श्लोक स० २९६४। प्रसिद्धि है कि एक तन्त्र-सम्प्रदाय था जो कुब्जिकामत, कुलालिकाम्नाय, श्रीमत, कादिमत, विद्यापीठ, दिव्यौघसद्भाव आदि विविध नामो से अभिहित होता था। श्रीमतोत्तर, मन्थानभैरव, कुब्जिकामतोत्तर आदि उसी के परिशिष्ट है, जिनमे उसका साराश प्रतिपादित है। कहते है कि मूल ग्रन्थ (कुलालिकाम्नाय) २४००० श्लोको का ग्रथ है, यह चार विभागो मे विभक्त है, जिन्हे पट्क कहा जाता है। प्रत्येक पट्क मे छह हजार श्लोक है। यह कुब्जिकामत कुलालिकाम्नाय के अन्तर्गत है। इसमे २५ पटल है। इसकी अन्तिम पुष्पिका मे लिखा है—"कुलालिकाम्नाये श्रीमत्कुब्जिकामते समस्तस्थानाववोधश्चर्यानिर्देशो नाम पञ्चविंशति-(२५) तम पटल समाप्त।" इसके २५ पटलो के विपय है—१ चन्द्रद्वीपावतार, २ कौमारी-अधिकार, ३ मन्थानभेद-प्रचार रतिसगम, ४ गह्वरमालिनी–उद्धार मे मन्त्रनिर्णय, ५ वृहत्समयोद्धार, जप-मुद्रानिर्णय, मन्त्रोद्धार मे षडङ्ग विद्याधिकार, स्वच्छन्दशिखाधिकार, दक्षिण पट्क-परिज्ञान, देवीदूतीनिर्णय, योगिनीनिर्णय, महानन्दमञ्चक, पदद्वयहसनिर्णय, चतुष्कपदभेद, चतुष्कनिर्णय, द्वीपाम्नाय, समस्तव्यस्तव्यापिनिर्णय, त्रिकाल उत्क्रान्ति सम्वन्ध, तद्ग्रह-पूजाविधिपवित्रारोहण आदि।

—ने० द० १।२८५ (क)

[ने० द० मे कुब्जिकामत की और भी प्रतियाँ निर्दिष्ट है। सभी प्राय अपूर्ण है—पृष्ठ ८,११,३४,५४,५५,५७, ९८ और ९९। इनकी स० है—२२६ (ङ), १०७८ (घ), १४७३ (क) और (द)।]

(२) श्लोक स० ३५००। इसका प्रतिलिपि-काल १४८८ शकाव्द दिया गया है। इनमे इसके ५६ पटल कहे गये है। —ने० द० २।२७१

कुब्जिकामत (कादिभेद में)

लि०—(१) श्लोक स० ३५००, लिपि-काल सन् ११९५ ई०। यह कुब्जिकामत का लघु सस्करण है। यह पश्चिमाम्नाय का ग्रन्थ है। कुछ लोगो का कहना है कि यह कौलिनी और श्रीकण्ठ सवादरूप है। तन्त्र तीन श्रेणियो मे विभक्त है—कादि, खादि और हादि। कालीसम्बन्धी तन्त्र कादि, 'सुन्दरीसम्बन्धी हादि तथा अन्य देवियो से सम्बद्ध तन्त्र खादि श्रेणी मे आते है। यह तन्त्र कादि श्रेणी से सम्बद्ध है। इसके अतिरिक्त तन्त्रो के और छह विभाग भेद है जो षडाम्नाय कहलाते है। जैसे उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, ऊर्ध्व और अध। यह उन विभागो मे पश्चिम विभाग या पश्चिमाम्नाय के अन्तर्गत है।

—ने० द० २।३७८

(२) श्लोक स० १७००, अपूर्ण। यह कुलालिकाम्नाय के अन्तर्गत शाक्त तन्त्र है। इसमे ४२ पटल और ६००० श्लोक है। कुब्जिकामततन्त्र भी इसे कहते है।

—ए० व० ५८०४, ५ तथा ६८२०

(३) —कैट् कैट् ३।२४

कुब्जिकामतलघुटिप्पणी

लि०—इसकी पुष्पिकामात्र प्राप्त है। जिससे ज्ञात होता है कि इसके कम-से-कम २५ पटलो तक तो यह टिप्पणी लिखी गयी थी। इसके अतिरिक्त और विषय या ग्रन्थ-परिमाण प्राप्त नही हो सके।

पुष्पिका है—"इति श्रीकुब्जिकामते लघुटिप्पण्या पञ्चविशति-(तम ?) पटल समाप्त।" इति श्रीआगमावतार समाप्त। —ने० द० २। पेज ११६

कुब्जिकामतोत्तर

लि०—यह कुलावलिकाम्नाय (कुलालिकाम्नाय ?) के अन्तर्गत है। इसमे २३ पटल है। इसमे विषय—त्रिकाल सक्रान्ति सम्बन्ध, आनन्दचक्रद्वीपावतार, समस्त-व्यस्तव्याप्ति आदि वर्णित है।

—ने० द० १।१३५ (ख)

कुमारतन्त्र (१)

लि०—(१) अभिनव लिखित। यह महादेव-कौशिकमुनि सवादरूप है। भगवान् महादेव को प्रणाम कर परम भक्ति और स्तुतिपूर्वक कौशिक मुनि ने कहा भगवन्, मुझे

कुमारतन्त्र सुनने की अत्यन्त उत्कण्ठा है इसपर भगवान् शिव ने महामन्त्र ग्रन्थ कोटि विस्तृत करुणाख्यतन्त्र उनसे कहा। —तै० म० ११९

(२) श्लोक स० लगभग ५३। केवल मातृकापूजा नामक प्रकरण पूर्ण। यह तन्त्र रावणकृत कहा गया है। —स० वि० २६४८४

(३) (क) श्लोक स० २०००, ३१ पटल। (ख) श्लोक स० १६००। पूजाविधि पर यह विविध आगमो से उद्धरण रूप है।

—अ० व० (क) ७९३३ (क), (ख) ७०१९

(४) श्लोक स० ९२९। यह शिवप्रोक्त (शिव-पार्वती सवादरूप) कहा गया है। इसमे स्कन्द की आराधना, उनका परिवार, उनकी साधना, उमका क्रम, मण्डप, धारणामन्त्र, उसके अङ्गभूत मन्त्र, मन्त्रोद्धार-क्रम, मुद्रा, दीक्षा, अभिषेकविधि, प्रतिमा-लक्षण आदि विषय वर्णित है। —ट्रि० कै० ९२९ (क)

(५) —कैट् कैट् १।११०

(६) कुमारतन्त्र ८५ पटलो मे है। —कैट् कैट् ३।२४

(७) कुमारतन्त्र या बालतन्त्र यह बालरोग पर रावण कृत है। इसके १२ अध्याय चक्रपाणिदत्त के चिकित्सासग्रह मे गद्य के रूप मे दिये गये है (कलकत्ता संस्करण, सन् १८७२) पृ० ४६६। अन्य आयुर्वेद ग्रन्थो मे भी इसका प्राय उल्लेख आता है।

उ०—नीलकण्ठभट्ट के शान्तिमयूख मे। —कैट् कैट्. २।२२

कुमाररत्न

लि०— —प्राप्त ग्रन्थसूची से।

कुमारसंहिता

लि०—(१) श्लोक स० २५०। १० अध्यायो मे पूर्ण। यह ब्रह्मा और शिव सवाद-रूप है। इसमे गणेश-पूजा का विवरण दिया गया है। ulwar २०२८ तथा extra ६१५ मे यह ७ अध्याय का कहा गया है। कैट्-कैट् (३।२४) ने इसकी १० अध्याय की दूसरी प्रति का निर्देश किया है। इसके विषय है—विद्यागणेश-मन्त्रोद्धार, पुरश्चरण, पूजा, पञ्चमाचरण, वशीकरणादि प्रयोग, स्तभन और उच्चाटन, होमविधि, सग्राम-विजय, वाञ्छाकल्पलता, मन्त्रविधान। यह शिवप्रोक्त है।

—ए० व० ६०५६

(२) श्लोक स० लगभग १८७, पूर्ण। —स० वि० २४६८६
(३) —म० रि० इ० मे १ प्रति है।
(४) दे०, कौमारसहिता। —कैट् कैट् १।११०, २।२२

कुमारिकापूजन

लि०—(१) श्लोक स० लगभग २४, पूर्ण। —र० म० ११७३
(२) —कैट् कैट् २।२२
(३) 'कुमारिकापूजाविधि' श्लोक स० २२, पूर्ण। —स० वि० २६५०९

कुमारीकल्प

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव मे।

कुमारीतन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० ३००, नौ पटलो मे पूर्ण। यह तन्त्र दो भागो मे विभक्त है—पूर्व भाग और उत्तर भाग। इस प्रति की अन्तिम पुष्पिका के अनुसार यह प्रथम भाग (पूर्व भाग) मात्र है। इसमे काली की पूजा (कालीकल्प) प्रतिपादित है।
—ए० व० ६०१०–१३

(२) श्लोक स० २५०। इसमे १० पटल है। परमरहस्य कालीतन्त्रका यह कालीकल्प है यानी पूर्व भाग मात्र है। —ने० द० २।२६४ (ख)

(३) श्लोक स० ३००। अन्तिम पुष्पिका द्वारा यह परम रहस्य कुमारीतन्त्र का पूर्व भाग और ९ पटलो मे पूर्ण कहा गया है। इसके विषय यो वर्णित है—विद्योद्देश, अन्तर्यागविधि, वहिर्यागविधि, नैवेद्य निश्चयादि कथन, पुरश्चरणविधि, कुलाचारविधि, पूजा के स्थान आदि का निरूपण, आचारविधि तथा कालीकल्प। इसका श्मशान मे १०००० जप करने से शत्रुमारण होता है। यह कालीकल्प अतिगोपनीय कहा गया है। इसके गोपन से सर्वसिद्धियाँ प्राप्त होती है और प्रकाशन से अशुभ होता है। —नो० स० ३।६६

(४) श्लोक स० १००, अपूर्ण। —अ० व० १०६२७ (ख)
(५) (क) श्लोक स० ३३१, पूर्ण, लिपि-काल शकाब्द १६५६।
(ख) श्लोक स० ७२, अपूर्ण।
—स० वि० (क) २४७१८, (ख) २५४३७
(६) —कैट् कैट् १।१११, ३।२४

उ०—श्यामारहस्य, ताराहस्यवृत्ति, आगमतत्त्वविलास, तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी, ताराभक्तिसुधार्णव, कौलिकार्चनदीपिका, कालिकासपर्याविधि, सर्वोल्लासतन्त्र आदि मे।

कुमारीतन्त्रकल्प

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव तथा कालिकासपर्याविधि मे।

कुमारीपूजा

लि०—(१) पुष्पिका मे यह कुमारीपूजाविधिसग्रह नाम से उल्लिखित है। यह सकर्षणयामल, विश्वभैरव पटलपिङ्गल आदि से उद्धृत है।

—ए० ब० ५९९०

(२) श्लोक स० ५५। इस तान्त्रिक सग्रह ग्रन्थ मे विविध जाति, अवस्था की कुमारियो की पूजाविधि प्रतिपादित है। अवस्थाभेद मे कुमारियो के नाम कहे गये है। जैसे—'एक वर्षा भवेत् सन्ध्या द्विवर्षा च सरस्वती' इत्यादि। उनकी पूजा का क्रम भी वर्णित है।

—रा० ला० ६३६

(३) पूर्ण।

—व० प० ५०८

(४) श्लोक स० २५, पूर्ण।

—स० वि० २४७५१

स० वि० मे कुमारीपूजनविधि, कुमारीपूजाविधि आदि नाम से अनेक पुस्तके है जिनकी स० २४९०१, २५०२७, २५७४३, २६२५५ तथा २६५७५ है।

कुमारीहृदय

लि०—यह शिव-नारद सवादरूप मौलिक तन्त्र है। नारदजी की प्रार्थना पर भगवान् शङ्कर द्वारा भगवती दुर्गाजी की प्रसन्नता के उपाय इसमे प्रतिपादित है। इसमे ५ पटल है एव शक्ति कुमारी की पूजा विशेष रूप मे वर्णित है।

—क० का० ७६ (४)

कुलकमल

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

कुलगह्वर

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

कुलतन्त्र

उ०—कुलप्रदीप तथा आनन्दलहरी की टीका तत्त्ववोधिनी मे।

कुलकुलादिचक्र

लि०—(१) इसमे अकार से लेकर क्षकार तक के सव वर्ण और उनकी श्रेणियाँ विभिन्न कक्षाओ मे देवताओ के अनुसार विभक्त है। जैसे—अ, आ, ए, क, च, ट, त, प, य और प ये वर्ण मारुत है। इ ई ऐ ख, छ, ठ, थ, फ, र और क्ष ये वर्ण आग्नेय है। उ, ऊ, ओ, ग, ज, ड, द, व, न और ल ये वर्ण पार्थिव है आदि। यह अक्षरो के देवता, वर्ग आदि का निरूपक तन्त्रग्रन्थ है। —क० का० १३

(२) 'कुलाकुलादिचक्र' नाम दिया है। श्लोक स० लगभग २१८, पूर्ण। यह तन्त्र-सारोक्त कहा गया है। —स० वि० २५३०५

कुलचूड़ामणितन्त्र

लि०—(१) अपूर्ण श्लोक स० ४८०। यह सात पटलो मे पूर्ण है। स० ५८२९ मे जो चूडामणितन्त्र है उसमे केवल मात्र योनिस्तव है। —ए० व० ५८२७, २८

(२) श्लोक स० ५०४। यह भैरव-भैरवी सवादरूप है। इसमे वर्णित विपय है—गुरु का निरूपण, स्थान आदि का निरूपण, कुलदेवता की पूजा, कुल अङ्गनाओका निरूपण, यन्त्र आदि के लिखने का उपाय निरूपण, कुलाचार आदि, समयाचार के रहस्य आदि का निरूपण, मद्यपान आदि की विधि, वेताल आदि की सिद्धि का प्रकार, कुलाचारसकेत निरूपण, प्रयोग आदि। —नो० स० १।७०

(३) श्लोक स० १५०। —अ० व० १०६२७ (ग)

(४) श्लोक स० ४६० और पटल ७। ७ पटलो के विपय यो वर्णित है—कुल तन्त्रो की प्रशसा, कौलो के कर्तव्य कर्मो का निरूपण, कुलशक्ति पूजाविधि, कौलिको के विशेष अनुष्ठान, महिपमर्दिनी के स्तव आदि। —रा० ला० २४५

(५) (क) श्लोक स० ९१०, पूर्ण। (ख) श्लोक स० २४०, अपूर्ण है।

—स० वि० (क) २३८८०, (ख) २४८८९

उ०—कौलिकार्चनदीपिका, तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, ताराभक्ति-सुधार्णव, श्यामारहस्य, कुलप्रदीप, रहस्यार्णव, तारारहस्यवृत्ति तथा आगमतत्त्व-विलास मे।

कुलतत्त्वसार

उ०—सर्वोल्लासतन्त्र मे।

कुलदीक्षा

लि०—(१) (क) मनोदत्त रचित, पूर्ण। (ख) पूर्ण।
—डे० का० (क) ४४०, (ख) ४४१ (१८७५-७६ ई०)

(२) मनोदत्त कृत, पूर्ण। शिवस्वामी द्वारा परिवर्द्धित।
—डे० का० ४४२ (१८७५, ७६ ई०)

कुलदीपिका

लि०—(१) श्लोक स० ३६० पूर्ण। कौलिकों के हित के लिए श्रीरामशङ्कराचार्य ने इसकी रचना की। इसमे मन्त्र पदका अर्थ, ब्रह्मनिरूपण, कुलाचारविधि, नित्यानुष्ठान, कुलपूजा, शिवावलि, सविदाशोधन, दीक्षा, होमविधि, प्रकारान्तर से शक्तिपूजा, योग, बलिदान-द्रव्य आदि विषय वर्णित हैं। —ए० व० ६४४२

(२) श्लोक स० ९४०। कुलशास्त्र तथा तीनो सम्प्रदायो का अवलोकन कर कौलिको के हितार्थ कुलदीपिका की रचना की गयी। इसमे दस महाविद्याओ के मन्त्र, अनुष्ठान आदि विषय वर्णित हैं। —नो० स० १।७

(३) दे० शूद्रकुलदीपिका, कौलाचारदीपिका। —कैट्. कैट् १।११२

कुलदीपिनी

लि०—श्लोक स० ३४६। —र० म० ४४११

कुलद्रव्यशोधन

लि०—श्लोक स० लगभग ८, अपूर्ण। —म० वि० २४२६६

कुलपञ्चामृत

उ०—कुलप्रदीप मे।

कुलपञ्चाशिका

उ०—क्षेमराज ने इसका उल्लेख किया है, हाल पे० १०८ के अनुसार।
—कैट्. कैट्. १।११२

कुलपूजनचन्द्रिका

लि०—इसके रचयिता चन्द्रशेखर शर्मा हैं। इसमे कौलि की कोपूजाविधि आदि विषय वर्णित हैं।

कुलपूजापद्धति

लि०—(क) श्लोक स० ११८, अपूर्ण।

(ख) श्लोक स० १३३, अपूर्ण, (ग) श्लोक स० २३८, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २५००४, (ख) २६२९८, (ग) २६४९२

कुलपूजाविधि

लि०—श्लोक स० ८०, पूर्ण। इसमे किसी विशेष देवी का उल्लेख किये बिना पूजा वर्णित है। इस पद्धति मे साधारण पूजापद्धति की अपेक्षा बहुत थोडा अन्तर है।

—ए० ब० ६४५१

कुलप्रकाशतन्त्र

लि०—श्लोक स० ३६, अपूर्ण। इसमे कौलो की श्राद्धविधि वर्णित है। साथ ही कौल-श्राद्धपद्धति का भी प्रतिपादन है।

उ०—तन्त्रसार मे।

कुलप्रदीप

लि०—(१) महोपासक कौलिको की प्रसन्नता के लिए शिवानन्दाचार्य ने विस्तृत कुलमार्ग का सारभूत यह निबन्ध रचा। जिस पर प्रभूत गुरु-कृपा हो, इष्ट देवता का महान् अनुग्रह हो उसी पुरुष को इस शास्त्र का ज्ञान होता है। इसके विषय हैं—कुल-धर्म प्रशसा, कुल-पूजा का समय निरूपण, पूजा-द्रव्य, कलशस्थापन-प्रयोग, उसका २ रा, ३ रा और ४था प्रकार, कुण्ड, गोल आदि द्रव्यो के ग्रहण की विधि, प्रधान रूप से चक्रो का निरूपण आदि। यह ७ प्रकाशो मे पूर्ण कहा गया है। —इ० आ० २५६९

(२) अपूर्ण। इस ग्रन्थ के ७ और ८ प्रकाशो का उल्लेख क्रमश म द ५५८५ तथा इ आ २५६९ मे किया गया है। इसके रचयिता का नाम शिवानन्द गोस्वामी है। इस प्रति मे ५वाँ, ६ ठा प्रकाश और ७ वे का कुछ अश है। इसमे २ य, ३य, ४र्थ मकार और ५ म मकार का निरूपण, दूतीयाग, कुण्डगोलादि की ग्रहणविधि, कुलाचार निरूपण आदि विषय वर्णित हैं। —ए० ब० ६४४३

(३) (क) श्लोक स० ७००, (ख) श्लोक स० १००० अपूर्ण ।

—अ० व० (क) १०६३५, (ख) ११३४५

(४) इसकी २ प्रतियाँ है । —म रि ९७ और ९८

(५) यह ८ प्रकाशो मे पूर्ण है। इसके निर्माता शिवानन्दाचार्य हैं। शक्ति के उपासको मे महोपासक कौलो का यह निबन्धग्रन्थ है। यह समस्त आगमो का सारभूत है।

—म० द० ५५८५

(६) शिवानन्दाचार्य कृत । —कैट् कैट् १।११२

उ०—मन्त्रमहार्णव मे।

कुलमत (तन्त्र)

लि०—श्लोक स० ११२०। श्रीकविशेखर विरचित यह ग्रन्थ १६ पटलो मे पूर्ण है। इसका निर्माण कौल विद्वानो की प्रसन्नता के लिए शकाब्द १६०२ मे हुआ था। इसमे लिखा है—"शके युगखपड्विधौ।" इसमे—कौलाचार वर्णन, श्रीन्यास विवरण, श्रीपूजा, बालकसस्कार, गुरु-शिष्य-लक्षण, दीक्षाविधि, षट्कर्मविधि, वीरसाधन, शवसाधन, योगिनीसाधन, आकर्षण आदि प्रयोग कथन, दीपनी-विधान आदि विषय वर्णित हैं।

—नो० म० ४।५९

कुलमार्गतन्त्र

लि०—यह ६४ तन्त्रो मे अन्यतम है। —कैट् कैट् १।११२

कुलमुक्तिकल्लोलिनी

लि०—(१) श्लोक स० ९४५०, २२ पटलो मे पूर्ण। इस ग्रन्थ मे सामान्यत तान्त्रिक पूजा का विवरण दिया गया है। कालीपूजा के प्रचुर उद्धरण दिये गये हैं। इसके निर्माता आद्यानन्द (नवमीसिंह) हैं। इसकी एक प्रति जिसकी प्रतिलिपि स० १८७७ वि० मे की गयी थी, इडियन म्यूजियम मे है (२६८९)। इसमे बहुत से तन्त्र-ग्रन्थ और ग्रन्थकारो का उल्लेख है। —ए० व० ६३०८

(२) श्लोक स० ३२०५। कुलदीक्षा, नित्यपुरश्चर्याविधि का प्रतिपादनपूर्वक षट्कर्म वशीकरण, उच्चाटन, स्तम्भन, मोहन, मारण आदि के साथ इसमे वर्णित हैं। यह सिद्धान्तानुसारी शाक्तो के दीक्षा आदि विविध कर्मो का प्रतिपादक तन्त्र हैं।

—रा० ला० २३४२

(३) श्लोक स० ८८७६, पूर्ण। —स० वि० २४८९६

कुलमूलावतार

उ०—पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, प्राणतोपिणी, महार्थमञ्जरी-परिमल, तथा नित्योत्सवनिवन्ध मे।

कुलयुक्ति

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे। यह शैव तन्त्र है।

कुलरत्नमातृकासाहस्रिका

उ०—ज्ञानेश्वरकृत प्रपञ्चसारविवरण मे (?)।

कुलरत्नमाला

उ०—तन्त्रालोक तथा योगराज कृत परमार्थसार की टीका मे।

कुलरत्नमालिकासाहस्रिका

उ०—परमार्थसार की योगराज कृत टीका मे।

कुलरत्नावली

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

कुलशासन

लि०—वम्वई रायल सोसाइटी मे न० ८७० एक प्रति है।
उ०—सच्चिदानन्दनाथ कृत ललितार्चनचन्द्रिका मे।

कुलसंग्रह

उ०—शङ्कर कृत तारारहस्यवृत्ति मे।

कुलसंहिता या नवरात्रादिकुलसंहिता

लि०—श्लोक स० ७६८। यह शिव-पार्वती सवादरूप कहा गया है। इसकी प्रस्तावना मे कहा गया है—कालीतन्त्र, यामल, भूतडामर, कुब्जिकातन्त्रराज, खेचरीसाधन, काली-मन्त्र, वीजमन्त्र आदि का परम प्रसन्नता और अतियत्न से विवेचन कर साधको के हित के लिए इसका प्रतिपादन किया जाता है—मन्दर स्थित भगवान् महेश्वर से प्रेमविह्वल पार्वती-जी ने पूछा—जिस उपाय से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है, हे दयासागर, वह उपाय मुझे

वतलाइए। इसपर महेश्वर ने कहा—हे प्रिये, यह नवरात्र सुखप्रद, मोक्षप्रद और महैश्वर्यप्रदायक है। इसे तुम अत्यन्त गोपनीय रखना। इसमे प्रतिपादित विपय हैं—कौल-धर्म निरूपण, साधको के लक्षण, साधिकाओ के लक्षण, कौल पूजा-क्रमविधि, उसका फल, पञ्चतत्त्व-निरूपण, मत्स्य आदि की शोधनविधि, वलिदानविधि, पात्रग्रहण आदि की विधि, जप और तर्पण की विधि, कलियुग मे वीरभाव की प्रशस्तता, साधना-विधि, साधनादि के विभिन्न देशो का निरूपण कौलो के कर्तव्याकर्तव्य का विधान, कौल गुरु के लक्षण आदि का कथन, कौलाचार मे अधिकार का निरूपण, गुरु-प्रशसा वर्णन, कौलरहस्य आदि। —नो० स० १।७३

कुलसर्वस्व

उ०—आगमतत्त्वविलास तथा उग्रतारापञ्चाङ्ग की पुष्पिका मे।

कुलसार

उ०—आगमतत्त्वविलास तथा प्राणतोपिणी मे।

कुलसारसंग्रह

लि०—श्लोक स० १०७, अपूर्ण। शिव-पार्वती सवादरूप यह मौलिक तन्त्रग्रन्थ सोमभुजङ्गवल्ली, जो अमृतमथन का एक अग है, का एक भाग है। यह पूर्ण ग्रन्थ ३६ पटलो मे विभक्त है। इसमे विश्वस्तभन, आकर्षण, मारण आदि का भी वर्णन है, यह ग्रन्थ की प्रस्तावना से ज्ञात होता है। —ने० द० १६६३

कुलसूत्रषोडशस्वरकला

लि०—शितिकण्ठ विरचित। —डे० का० ४४५ (१८७५-७६ ई०)

कुलाकुलादिभेद

लि०—श्लोक स० २००। —अ० व० ५१४१

कुलागम

उ०—प्राणतोषिणी, कौलिकार्चनदीपिका तथा सौभाग्यभास्कर (भास्करराय कृत) मे।

कुलाचार

लि०—श्लोक स० ४००, अपूर्ण। —अ० व० १०१९१

कुलानन्दसंहिता

उ०—आगमतत्त्वविलास मे।

कुलामृत

उ०—कुलप्रदीप, तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव मे।

कुलामृतदीपिका

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे।

कुलाम्नाय

उ०—विज्ञानभैरवटीका (शिव उपाध्याय रचित) मे।

कुलार्चनचक्र

लि०—एक प्रति है। —र० म०

उ०—कौलिकार्चनदीपिका, तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी, ताराभक्तिसुधार्णव, श्यामारहस्य, तारारहस्यवृत्ति, आगमतत्त्वविलास, आगमकल्पलता, रहस्यार्णव, ललितार्चनचन्द्रिका, सौभाग्यभास्कर और कुलप्रदीप मे।

कुलार्चनदीपिका

लि०—महामहोपाध्याय जगदानन्द विरचित। —रा० पु० ५६१७

कुलार्चनपद्धति

लि०—श्लोक स० ४००। सहतामनलाल दीक्षित कृत।

—अ० व० १२२९६

कुलार्णवतन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० २०००, १७ उल्लासो मे पूर्ण। १७ उल्लासो मे ये विषय वर्णित हैं—जीवस्थिति कथन, कुल-माहात्म्य, ऊर्ध्वाम्नाय-माहात्म्य, मन्त्रोद्धार, सोलह प्रकार के न्यास, कुल-द्रव्यो के निर्माण आदि की विधि, कुल-द्रव्य आदि के सस्कार, वटुक आदि की पूजाविधि, तीन तत्त्वो के उल्लास तथा पान के भेद, कुल-योगादि का वर्णन, विशेष दिन की पूजा, कुलाचारविधि, श्रीपादुका-भक्तिलक्षण, गुरु और शिष्य के लक्षण, गुरु-शिष्यादि-परीक्षा, पुरश्चरणविधि, काम्यकर्मविधि, गुरु नाम, वासना आदि कथन। शिव-

पार्वती सवादरूप यह कुलार्णव महारहस्य, सर्वागमो मे उत्तमोत्तम तथा सवा लाख श्लोकात्मक कहा गया है। यह मुक्तिप्रद शास्त्र है। —रा० ला० २९०, २५८

(२) यह शिवप्रोक्त मौलिक तन्त्रो मे एक है। इसमे १७ उल्लास है। उनमे विपय पूर्ववत् वर्णित है। —वी० कै० १२८५

(३) (क) उल्लास २८, अपूर्ण। (ख) अपूर्ण। (ग) अपूर्ण। (घ) अपूर्ण।
—व० प० (क) ९२४, (ख) १९८, (ग) ८२३, (घ) ६०२

(४) श्लोक स० २३००। १७ उल्लास या पटलो मे। इसमे कहा गया है कि उड्डीयान महापीठ मे स्त्री के विना सिद्धि नही होती, स्त्री-विहीन साधना करने मे वहाँ देवता विघ्न डालते है। देविदैकोठ पीठ मे युक्ताहारविहारा सर्वलोकमनोहरा नारी की आवश्यकता होती है जिसके दर्शन मात्र से मन मे क्षोभ उत्पन्न हो जाय। मन का यदि क्षोभ न हो तो वहाँ सिद्धि नही होती। ब्राह्मणी और यवनी के सिवा सजातीया सर्वदा ग्राह्य है। विदग्धा रजकी और नापिती ग्राह्य है। जो साधक ब्राह्मणी या यवनी का दैवयोग से यदि स्पर्श भी करे तो उसे करोड-करोड कल्पो मे भी सिद्धि प्राप्त नही होती। वह दरिद्र और महारोगी होता है। त्रिपुरा उससे विमुख होकर हँसती हुई चली जाती है। हिंगुलापीठ मे जो साधक मत्स्य-सेवन करता है उसे भी करोड-करोड कल्पो मे भी सिद्धि नही होती। देविदैकोठ और मुद्राख्य पीठो मे निवास कर रहा साधक मद्य चढा कर यदि जप करे तो उसे भी सिद्धि प्राप्त नही होती। जालन्धर महापीठ मे मद्य का त्याग कर देना चाहिए। वाराणसी मे केवल मुद्रा से शिवभक्तिपरायण साधक को सिद्धि प्राप्त होती है, इसमे सन्देह नही। अन्तर्वेदी, प्रयाग, मिथिला, मगध और मेखला मे मद्य से सिद्धि होती है। वहाँ मद्य के विना देवता विघ्न उपस्थित करते है। अङ्ग, वङ्ग और कलिङ्ग मे स्त्री से सिद्धि होती है। सिहल मे, द्रौपदीकृत स्त्रीराज्य मे तथा राढा मे मत्स्य, मास, मुद्रा और अङ्गना से सिद्धि होती है। गौड देश मे पाँचो द्रव्यो से सिद्धि होती है। उसी प्रकार अन्य देशो मे भी पाँच द्रव्यो से सिद्धि होती है। तन्त्रान्तर मे कहा गया है कि दही के वरावर गुड और वैर की जड मिला कर तीन दिन रखा जाय तो मद्य हो जाता है। शक्ति कुल कही गयी है, उसमे जो पूजा आदि है वह कुलाचार है जो साधक को अभीष्टप्रद है।

—ए० व० ५९०५

ए० व० मे इनकी ५९०४ से ५९१२ तक ९ प्रतियाँ और है। उनमे से एक का उपर्युक्त विवरण है। स० ५९०८ मे इसके ३६ पटल कहे गये है। उसकी पुष्पिका यों है—

इति श्री कुलार्णवे देवीश्वरसवादे परमार्थतत्त्वज्ञानतरङ्गिण्या नोममाहात्म्य नाम षट्त्रिंशत्पटल ।

(५) श्लोक स० २५०० । १७ उल्लासो मे। १७ उल्लासो के विषय प्राय पूर्ववत् ही वर्णित है ।

—ने० द० २।२५३ (ख)

(६) यह देवी-ईश्वर सवादरूप महारहस्य तन्त्रग्रन्थ सवालाख श्लोकों का ५ खण्डो मे पूर्ण है। उसका यह ५ वाँ खण्ड है। उसके १७ उल्लास इस प्रति मे वर्णित है।

—म० द० ५५८७

—म० द० मे ५५८८ से ९५ तक ८ प्रतियाँ और है।

(७) श्लोक स० २६०८।

—अ० व० १०६९८

—अ० व० मे ९ प्रतियाँ और है, जिनकी स० ५७८४, १००२४, ६७४४, ७१४६, १०५८८, ११२३८, १७३, १२८१४, और १२८५६ है । इनमे अधिकाश २००० श्लोकात्मक है।

(८) उल्लास १६ है। देवीजी के प्रश्न पर भगवान् महादेवजी द्वारा प्रोक्त। इसमे कुलाचारानुसार अनुष्ठित पूजा के वैशिष्टय आदि का निरूपण है। ऊर्ध्वाम्नाय तथा अन्यान्य तन्त्रो की सम्मति भी इस विषय मे प्रतिपादित है और मन्त्रोद्धार आदि विषय भी वर्णित है। शेप विषय रा० ला० २९० के तुल्य है।

(९) श्लोक स० १९७०। ईश्वर-पार्वती सवादरूप यह ग्रन्थ कौल श्रेणी के शाक्तो का अत्यन्त मान्य है।

—ट्रि० कै० ९३०

(१०) शिवभाषित।

—रा० पु० ५७६२, ५६२३

(११) श्लोक स० २७३। केवल १ ला और नवाँ (९वाँ) उल्लास मात्र। इस सग्रह मे कुलार्णवतन्त्र के नाम से एक पूर्ण प्रति और है जिसकी —स० ४४६ है।

—डे० का० २२७

(१२) श्लोक स० लगभग २१०४, पूर्ण।

—स० वि० २४७९५

—स० वि० मे कुलार्णव और कुलार्णवतन्त्र नाम से १४ प्रतियाँ और है जिनकी स० कुलार्णव के नाम से–२३८७९, २४४९३, २५२१०, २५६२२, २५६२३, २५६२४, २६२९५ तथा कुलार्णवतन्त्र के नाम से–२४०८५ से ८८ तक, २५६०४, २६३८४, २६५०३ है।

(१३) श्लोक स० २४२६, पूर्ण।

—र० म० ४९९५

(१४) पूर्ण। ईश्वर-प्रोक्त इस सग्रह मे २ प्रतियाँ है। दोनो का नाम कुलार्णवतन्त्र है। —ज० का० ९९८, ९९९

(१५) उल्लास १७। यह ५ खण्डात्मक कुलार्णव का ५वाँ खण्ड है। पूर्ण ग्रन्थ की श्लोकसख्या १२५००० सवा लाख बतलायी गयी है। यह महारहस्य सब आगमो मे परम उत्तम और ५ खण्डात्मक है। यह पुष्पिका मे स्पष्ट प्रतिपादित है।—इ० आ० २५६७

(१६) पन्ने २१४। इसमे इसका नाम कुलार्णवरहस्य दिया है, पर यह कुलार्णव-महारहस्य से अतिरिक्त नही है। इस सग्रह मे २ प्रतियाँ और है, जिनकी स० ९९ और १०१। —म० रि० १०५

उ०—कौलिकार्चनदीपिका, ताराभक्तिसुधार्णव, तारारहस्यवृत्ति, तन्त्रसार, कालिकासपर्याविधि, सर्वोल्लास मे।

कुलार्णवटीका

लि०—अपूर्ण। —ने० द० २।२९

कुलार्णवसार

लि०—श्लोक सं० १८८। —अ० व० ५७९२

कुलार्णवसारोद्धार

लि०—श्लोक स० ३००। —अ० व० ३४३३

कुलालिकाम्नायतन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० ७५०। यह ग्रन्थ आदि और अन्त मे खण्डित है। पुष्पिका मे दक्षिणपट्क परिज्ञान नाम का १२ वाँ पटल समाप्त कहा गया है। इसमे कुल-विद्या (Kula doctrines) का प्रतिपादन है। —ट्रि० कै० १०१६ (ग)

(२) —कैट् कैट् १।११२

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

कुलावतार

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव मे।

कुलीनाचार

लि०—श्लोक स० २३। —अ० व० ५६४७

कुलेश्वर

उ०—परात्रिंशिका मे।

कुलेश्वरीतन्त्र

उ०—सौन्दर्यलहरी की गौरीकान्तकृत टीका मे।

कुलेश्वरीपूजाविधि

लि०—श्लोक स० लगभग ६२, पूर्ण, कामाख्यातन्त्रान्तर्गत।

—स० वि० २६४९९

कुलोड्डीश (महातन्त्र)

लि०—(१) श्लोक स० ९२५। ४ पटलो मे पूर्ण यह श्रीदेवी-ईश्वर सवादरूप है। श्रीदेवी द्वारा महाषोडशी के सम्बन्ध मे प्रश्न करने पर ईश्वर द्वारा पञ्च शक्तियो का ज्ञेयत्व कथन। वे पॉच शक्तियाँ है—१ कामेश्वरी, २ वज्रेश्वरी, ३ भगमाला, ४ त्रिपुरसुन्दरी और ५ परब्रह्मस्वरूपिणी नित्या। —ए० व० ५८४५

(२) श्लोक स० १२३७। देवी-ईश्वर सवादरूप यह महातन्त्र ४ पटलो मे पूर्ण है। इसमे विषय यो वर्णित है—१ पञ्चभूतो के अधिष्टातृ देवता, पाँच शक्तियो का निरूपण, ५म शक्ति के दीक्षाभेद से वैष्णव, शैवादि भेदो का वर्णन, ५म शक्ति की ब्रह्मरूपता, उसकी उपासना का प्रकार, पञ्च कूटो का निरूपण, स्वप्नावती विद्या कथन, उसकी साधना, गन्धर्वविद्या, ब्रह्म-विद्या के स्वरूपादि कथन, नटी, कापालिकी आदि आठ प्रकार की नायिकाओ का निरूपण, उनके आकर्षण आदि के साधन का प्रकार, समयाचार कथन, कुलाचार कथन, सुराशापविमोचन, २य और ३य मे पञ्च पञ्चाक्षरी विद्या, पञ्चमी विद्या की गायत्री आदि, 'मुद्रा' पद की निरुक्ति, मुद्रालक्षण, भौतिक, मनोमय आदि विविध शरीर, षोडशमहाविद्याओ का निरूपण, पीठ निरूपण, ध्यानयोग, कर्मयोग। ४ र्थ मे—मन्त्रग्राम आदि का साधन प्रकार, आकर्षण, वशीकरण आदि मे ऋतु आदि का नियम, सब कर्मो मे होम की आवश्यकता, होम-द्रव्यो का निरूपण, वशीकरण आदि मे पुष्प विशेषो का नियम तथा गुरुतोषणविधि। —रा० ला० २९६१

(३) दे०, उड्डीशतन्त्र। —कैट् कैट् १।११२

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी तथा ताराभक्तिसुधार्णव मे।

कुलोत्तम

उ०—प्राणतोपिणी मे।

कुल्लकाविधिपटल

लि०—श्लोक स० २५। —अ० व० ५६४३

कुल्लकाविवरण

लि०—(क) श्लोक स० ३०। (ख) श्लोक स० ३०।
—अ० व० (क) ८४८०, (ख) ८३२०

कुल्लुकाविधि

लि०—श्लोक स० १६८, पूर्ण। इसके साथ, निर्वाणविधि, सर्वानन्द कृत स्तववर तथा पु ना. (पुण्यनाथ ?) कृत स्तवराज भी सलग्न हैं। —स० वि० २४८६१

कृकलासदीपिका

लि०—श्लोक स० २४२, ५ पटलो मे पूर्ण। —स० वि० २६४३७

उ०—प्राणतोपिणी मे।

कृत्यचन्द्रिका

लि०—श्लोक स० ९६। इसके रचयिता रामचन्द्र चक्रवर्ती है। इसमे सव कामनाओ की सिद्धि के लिए षडशीति सक्रान्ति (चैत्र की सक्रान्ति) से लेकर महाविपुव सक्रान्ति तक गणेश आदि की तथा कालार्क रुद्र की पूजापूर्वक शिवयात्रा वर्णित है। जिससे शिवजी प्रसन्न होते हैं। यह तन्त्र शिवोपासनापरक है। —रा० ला० ५२३

कृत्यरत्नार्णव

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

कृत्यार्णव

उ०—कालिकासपर्याविधि मे।

कृत्यासूक्तटीका

लि०—श्लोक स० ३८०। पिप्पलाद विरचित यह ग्रन्थ प्रत्यङ्गिरासूक्त-टीका के नाम से भी प्रसिद्ध है। —अ० व० १३३८३ (ग)

कृत्योत्पादनमन्त्रप्रयोग

लि०—श्लोक स० २०, पूर्ण। —स० वि० २४३२८

कृष्णयामल

लि०—(१) श्लोक स० १४६०। यह व्यास-नारद सवादरूप है। इसमे कृष्ण की महिमा का प्रतिपादन किया गया है। विषय यो वर्णित है—व्यासजी का नारदजी से प्रश्न, शम्भु का ब्रह्माजी से प्रश्न, कृष्ण-रहस्य के विषय मे ब्रह्मा का विष्णु से प्रश्न, आराध्य ईश्वर कौन है इसके निर्णय मे विष्णु का महाविष्णु से प्रश्न, वृन्दावन का आरोहण वर्णन, विद्याधर आदि का प्रत्यागमन, विद्याधरी को कृष्ण का शाप, विद्याधर के साथ नारदजी का निर्गमन, कृष्ण के किङ्कर की उत्पत्ति, मदालसा का उपाख्यान आदि, ऋतध्वज का पितृपुर मे प्रवेश, कालयवन का भस्म होना आदि। —नो० स० १।७८

(२) यह वैष्णव तन्त्र है। इसमे कृष्ण की महिमा, पूजाविधि आदि वर्णित है।
—वी० कै० १२८४

(३) श्लोक स० ११२। त्रिभङ्गचरित्र मात्र पूर्ण है। शेपदेव शतनामस्तोत्र तथा चैतन्यकल्प भी कृष्णयामल से गृहीत कहे गये है। ये एशियाटिक सोसाइटी आफ बङ्गाल के प्राचीन सग्रह मे है। —ए व० ५८९१

(४) (क) श्लोक स० लगभग २०७०, अपूर्ण।
(ख) श्लोक स० लगभग २७, अपूर्ण।
(ग) श्लोक स० लगभग १४०८, अपूर्ण।
(घ) श्लोक स० लगभग ३१२, अपूर्ण।
—स० वि० (क) २६६७८, (ख) २४५३४, (ग) २४५३५, (घ) २४८७५

कृष्णषडक्षरमन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० २०। —अ० व० १३८६६

(२) श्लोक स० ४०, पूर्ण। इसके आरभ मे गुरुमन्त्रप्रयोग भी सन्निविष्ट है। —स० वि० २५५०४

केदारकल्प

लि०—(१) (क) श्लोक स० १६००, पूर्ण। स्कन्दपुराणान्तर्गत। (ख) श्लोक स० ११००, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० १०००। अपूर्ण। (घ) श्लोक स० १०००, पटल २१, अपूर्ण। —अ० व० (क) ११५१७, (ख) ५७८२, (ग) ९८८, (घ) २४

(२) श्लोक स० लगभग १६००, पूर्ण । —र० म० ३९५६

(३) श्लोक स० लगभग १०४०, पूर्ण । लिपिकाल १८४५ वि० ।

—स० वि० २३९०४

कैवल्यकलिकातन्त्रटीका

लि०—श्लोक स० ४६८, पूर्ण । रा० ला० ४२९ ने इसका षट्चक्रविवृतिटीका के रूप मे वर्णन किया है। उसमे स्पष्टत लिखा है कि यह कैवल्यकलिकातन्त्र के २य पटल की टीका है। इनके रचयिता वैदिक नारायण भट्टाचार्य के पौत्र, वामदेव भट्टाचार्य के पुत्र विश्वनाथ हैं । —ए० व० ६३६८

कैवल्यतन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० १६८। ५ पटलो मे पूर्ण। इसमे तन्त्रो मे प्रसिद्ध पञ्च तत्त्व—मत्स्य, मास, मद्य आदि—का उपयोग वर्णित है।

—ए० व० ६००९

(२) श्लोक स० २२४, पटल ५। प्रतिपाद्य विषय—मत्स्य आदि पञ्च मकारो की प्रशसा, पञ्च मकारो की शोधनविधि, पञ्चतत्त्वशोधन और बाह्य होमविधि। यह शिव-पार्वती सवादरूप है। —रा० ला० २६५

(३) पन्ने ८, पटल ५, पूर्ण। —त्र० प० १२७०

उ०—कौलिकार्चनदीपिका तथा प्राणतोषिणी मे।

कोमलवल्लीस्तव

गोरक्षनाथ या महेश्वरानन्द विरचित।

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

कौतुकचिन्तामणि

लि०—(१) श्लोक सं० १०२५, पूर्ण। इसमे पहले विषपरीक्षा प्रकार वर्णित है। तदुपरान्त कहा गया है कि स्वय प्रयत्नवान् राजा को स्तभन, वशीकरण, वाजीकरण, कृत्रिम वस्तु करण, जनोपकार, वृक्षदोहन आदि कौतुको द्वारा काल-ज्ञान करना चाहिए। इसमे परसेनास्तभन, अङ्गारभक्षण, गृहदाहस्तभन, खड्गस्तभन, अग्निस्तभन तथा जलस्तभन के भेद, वीर्यस्तभन, स्त्रीवशीकरण, पतिवशीकरण, आकर्षण, विविध अञ्जन-

निर्माण, अदृश्यकरण, वृक्षदोहन, पाषाण-चर्वण, नाना रूप करण, मत्स्य सर्पकरण आदि विविध विषय वर्णित है।

—ए० व० ६५६४

(२) श्लोक स० १६००, पूर्ण। श्रीमन्मलवान् द्वारा लिखित (सभवत यह लिपि-कर्ता का नाम है)।

—अ० ब० १३०४

(३) श्लोक स० १६०० के लगभग। प्रतापरुद्रदेव कृत। —रा० पु० ४८८६

(४) श्लोक स० ८४४। लिपि-काल सवत् १८८४, अपूर्ण।

—स० वि० २४४८८

कौतुकरहस्य

लि०—यह पण्डित चूडामणि विरचित कौतुक-ग्रन्थ है। इसमे स्तभन, वशीकरण, वाजीकरण, कई वस्तुएँ बना देना, लोगो को अदृश्य कर देना, वृक्षो पर फल, फूल दिखा देना, वाढ को रोक देना, जलती आग मे कूदने पर भी न जलना आदि कई प्रकार के कौतुक वर्णित है। इसकी पुष्पिका मे दो मन्त्र भी दिये गये है, किन्तु उनकी भाषा समझ मे नही आती।

—क० का० १७

कौतूहलचिन्तामणि

लि०—यह ग्रन्थ नागार्जुन कृत है। इसमे शत्रु के घर को गिरा देना, उच्चाटन कर देना, अपने वश मे कर लेना, मार डालना, किसी दूसरे से वैर करा देना, वन्दी को वन्धन से छुडा देना आदि विविध कृत्यो के तन्त्र-मन्त्र और उपाय वर्णित है।

—वी० के० १२७७

कौतूहलविद्या

लि०—श्लोक स० १४९। यह इन्द्रजाल या जादुई पर पार्वतीपुत्र नित्यनाथ विरचित तन्त्रग्रन्थ है। व्याधि और दारिद्रय हरने वाला तथा जरा और मृत्यु से वचाने वाला यह सर्वोत्तम इन्द्रजाल है। इसमे कवूतर, वकरी, मोर आदि को उत्पन्न करने वाली विविध औषधियाँ वतायी गयी है एव वशीकरण के मन्त्र आदि वर्णित है।

—रा० ला० ६१४

कौमारतन्त्र

लि०—श्लोक स० लगभग २६, अपूर्ण। यह वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत है।

—स० वि० २४६६३

कौमारबलि

लि०—श्लोक स० १२० । इसमे स्कन्द (कार्तिकेय) की पूजा, वलिदानविधि आदि विपय वर्णित है । —ट्रि० कै० ९७३ (ग)

कौमारसंहिता

लि०—(१) श्लोक स० २७२, पूर्ण । —र० म० ४०७८
(२) श्लोक स० लगभग २८६, पूर्ण । —स० वि० २५५७५

कौमारसंहिता-टीका

लि०—श्लोक सं० लगभग ५०९, अपूर्ण । —स० वि० २४८१२

कौमारीपूजा

लि०—इसमे सप्त मातरो मे अन्यतम कौमारी देवी की पूजापद्धति निर्दिष्ट है । इसका लिपि-काल नेपाली स० ४०० या १२८० ई० कहा गया है ।
—ने० द० १।१३२० (छ)

कौलगजमर्दन

लि०—श्लोक स० ६२४, पूर्ण । यह परमहसपरिव्राजकाचार्य कलासाचलयतिवर्य-शिष्य श्रीकृष्णानन्दाचल विरचित है । यह सवत् १९१० तथा सन् १८५४ मे निर्मित हुआ । इसमे तन्त्रमत का, विशेषत कौल-क्रियाओ का, खण्डन सप्रमाण किया गया है । इसमे विविध तन्त्रो तथा पुराणो के वचन प्रमाण रूप से उद्धृत है ।
—ए० व० ६४४७

कौलतन्त्र

लि०—श्लोक सं० १०० । भैरवी-भैरव सवादरूप इस ग्रन्थ मे कौल-सम्प्रदायानुसार तारा और काली की पूजा का प्रतिपादन है । इसमे चार पटल है । जिनमे ताराकल्पस्थ तारारहस्य, ताराचार तथा कालीकल्प विपय वर्णित है । —ए० व० ५९३४

उ०—कौल्किार्चनदीपिका तथा कालीमपर्यापद्धति मे ।

कौलमार्ग

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे ।

कौलरहस्य तथा रजस्वलास्तोत्र

(१) लि०—तरुणीवीरेन्द्र नरोत्तमारण्यमुनीन्द्र-शिष्य कृत।

—रा० पु० ६९३५

(२) तरुणी ऋषि कृत, लिपि-काल आरभ की दो प्रतियो का क्रमश स० १७४२ तथा १७९० वि०। —म० रि० ११० से ११४ तक

(३) श्लोक स० ९६, पूर्ण। —स० वि० २४९३५

कौलादर्श

लि०—(१) श्लोक स० २००। विश्वानन्दनाथ रचित।

—अ० ब० १०३०४ (क)

(२) कौलामृत तथा कुलार्णव मे कहे गये पदार्थो का सग्रह कर विश्वानन्दनाथ ने कौलो के हितार्थ इसका निर्माण किया। इसमे कौलो के आचार और समस्त धर्मों का वर्णन है। —म० द० ५५९६ से ५५९८ तक

कौलादर्शतन्त्र

लि०—(१) यह उमाशङ्कर-पुत्र अभयशङ्कर कृत है।

—म० रि० ११५

(२) श्लोक स० लगभग ३००, अपूर्ण। कर्ता का नाम निर्दिष्ट नही है।

—स० वि० २५८१६

कौलाधिकार

लि०—श्लोक स० १२०। —अ० व० १०१८०

कौलावली

लि०—आरम से ९ वे उल्लास तक का अश इस प्रति मे है। यह ग्रन्थ विविधतन्त्र-सग्रह मे (कलकत्ता १८८१-८६ मे प्रकाशित) रसिकमोहन चटर्जी सम्पादित तथा Tantric Texts Series of Arthur Avalon मे प्रकाशित कौलावली का सक्षिप्त रूपान्तर है। यह प्रस्तावना भाग का त्याग कर Avalon के सस्करण, द्वितीय उल्लास के ५० वे श्लोक से आरम्भ होकर १५ वे उल्लास के ११८ वे श्लोक मे समाप्त हो जाता है। इस प्रति का १ उल्लास मुद्रित पुस्तक के दो उल्लासो के समान है। यह कौलक्रियाओ का प्रतिपादक है। —ए० व० ६४३८

उ०—सभवत कौलावलीय नाम से पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव तथा काली-सपर्या-विधि मे इसी का उल्लेख है।

कौलावलीतन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० ६००। ईश्वर-देवी सवादरूप यह ग्रन्थ ५ उल्लासो मे पूर्ण और रुद्रयामल के उत्तरतन्त्र से गृहीत कहा गया है। एक पुष्पिका मे 'इति उत्तरतन्त्रे षष्ठ पटल' कहा गया है। अन्त मे जो पुष्पिका दी गयी है उसमे 'इति कुलार्णवे सपाद-लक्षग्रन्थे ऊर्ध्वाम्नाये कुलद्रव्यादिलक्षण नाम पञ्चमोल्लास' कहा गया है। इसमे विभिन्न तन्त्रो के खण्ड उद्धृत हैं। देवी के यह निवेदन करने पर कि भगवन्, आपने उत्तम-उत्तम सब पुरश्चरण कहे अब मैं साधन सुनना चाहती हूँ। इसपर भगवान् शिव ने गुप्त साधन, तद्विषयक विविध प्रश्नोत्तर, कुलद्रव्य आदि के लक्षण आदि विषय कहे।

—ए० व० ५८६५

कौलावलीय

(२) श्लोक स० १८६०। जगदानन्द मिश्र ने कौलिको की प्रसन्नता के लिए चैत्र कृष्ण संवत् १७०० मे इसकी रचना की। इसकी सुगोप्यता पर ग्रन्थकार ने अधिक जोर दिया है। इसके विषय पूर्ववत् हैं। —रा० ला० २७०

(३) पूर्ण, जगदानन्द मिश्र कृत। —व० प० ९७४

(४) श्लोक स० १०००, अपूर्ण। (ख) अपूर्ण।

—अ० व० (क) १०१८५, (ख) ९१३०

(५) श्लोक स० १६२०, पूर्ण। लिपिकाल वगला सवत्सर १२७७।

—स० वि० २४८७४

—स० वि० मे स० २३९५५, २४८७४, २४९३२, २५२१३ और २६४३८—ये प्रतियाँ और हैं।

(६) जगदानन्द शर्मा द्वारा विरचित। —कैट् कैट् १।१३१

कौलिकार्चनदीपिका

लि०—(१) श्लोक स० १५००, जगदानन्द परमहस विरचित यह ग्रन्थ कही कौलि-कार्चनदीपिका, कही कुलदीपिका और कही अर्चनदीपिका के नाम से उल्लिखित है। यह शकाब्द १७०० मे बनारस मे लिखा गया था। इनमे प्रतिपादित विषय है—

कुलधर्म की प्रशसा, कौलज्ञान की प्रशसा, कुलीनो की प्रशसा, कुलीन का लक्षण, वशवृक्ष, कुलीनो के पर्वकृत्य, उत्तम आदि भेद से तीन प्रकार, कुलीनो के त्याज्य और ग्राह्य विषय, कुलद्रव्य और उनके प्रतिनिधि, कलशलक्षण, कलशपात्र का वर्णन, उसका आधार, चषक-विधान, पूजा, मण्डल, सामान्य अर्घ आदि, कुलीनो के द्वारपाल, उनकी पूजा आदि, विजयाग्रहण, विजया स्वीकारविधि, पूजाप्रयोग आदि मे जो-जो कर्तव्य है उनका कथन, घटस्थापन, सुवासस्कार शुद्धयादिशोधन, श्रीपात्र-स्थापन, गुरु आदि के पात्रो का स्थापन, भिन्न-भिन्न देशो मे भिन्न-भिन्न व्यवस्था, तर्पणविधि, बिन्दुस्वीकार, द्रव्यशोधन, सव शक्तियो का और शिव का निरूपण, पानविधि, पात्रवन्दन, पञ्चम पात्र मे पञ्चम की विधि, विविध स्तोत्र, आत्मसमर्पण, देवीविसर्जन, चषक का शीतलीकरण, निर्माल्य, यन्त्रलेप आदि धारण आदि। —ए० व० ६४३९

क्रमकेलि

यह क्रमस्तोत्र की अभिनव गुप्त विरचित टीका है।

उ०—परात्रिंशिका तथा महार्थमञ्जरीपरिमल मे।

क्रमचन्द्रिका

लि०—श्लोक स० २२२०। रत्नगर्भ सार्वभौम विरचित इस ग्रन्थ मे तन्त्रशास्त्र मे प्रतिपादित अर्थ का व्याख्यान (तान्त्रिक पूजाविधि का प्रतिपादन) है।

—रा० ला० ३३१

क्रम दीक्षा

लि०—(१) श्लोक स० ७००। इसके रचयिता श्रीकालिकानन्द के शिष्य जगन्नाथ हैं। यह दीक्षा के विषय मे प्रदत्त विवरणो से पूर्ण है। विशेष रूप से क्रमदीक्षा सम्बन्धी विवरण इसमे प्रचुरमात्रा मे है। इसमे बहुत से तन्त्रो से वचन उद्धृत है। जैसे—बृहत्तन्त्र-राज, शारदातिलक, सोमशम्भु, तन्त्रसार, विष्णुयामल, प्रपञ्चसार, महानिर्वाणतन्त्र आदि। विविध देवियो के मन्त्र भी इसके उत्तरार्द्ध मे वर्णित है।

—ए० व० ६५२५

(२) (क) श्लोक स० १९८,, पूर्ण। रुद्रयामलान्तर्गत।

(ख) श्लोक स० ?, पूर्ण।

—स० वि० (क) २५४३४, (ख) २४८३२

क्रमदीक्षापद्धति

. लि०—श्लोक स० लगभग ५२२, पूर्ण। लिपि-काल स० १८८२ वि०।
—स० वि० २५२७६

क्रमदीक्षाप्रकरण

लि०—श्लोक स० २००। शक्तिसगमतन्त्र से गृहीत। —अ० व० १०१८८

क्रमदीपिका (१)

लि०—(१) श्लोक स० १०००। आठ पटलो मे पूर्ण यह ग्रन्थ केशवाचार्य विरचित है। इसमे विष्णुदेव की तान्त्रिक पूजाविधि वर्णित है। इस पर भैरव कृत टिप्पणी और गोविन्द विद्याविनोद भट्टाचार्य कृत टीका है। —ए० व० ६४८७–६४९२

(२) श्लोक सं० १००८। यह आठ पटलो मे पूर्ण है। विष्णुपूजा आदि विषय इसमे प्रतिपादित है। विषय यो वर्णित हैं—गोपाल-मन्त्र की सर्वफलदातृता, गोपाल-मन्त्र, आसनशुद्धि, भूतशुद्धि, केशवकीर्त्यादिन्यास प्रकार, गोपीजनवल्लभाय नम , इस मन्त्र के फलादि का कथन, श्रीकृष्ण के ध्यान, मालादि का कथन, जप-प्रकार, शिष्यलक्षण, दीक्षाविधि, दीक्षित के कर्तव्य, मन्त्र-जप के स्थान आदि का निरूपण, श्रीकृष्ण के चतुर्वर्ग-साधन ध्यान का कथन, उच्चाटन आदि के मन्त्र, जयकामना के निमित्त मन्त्र, सिद्ध मन्त्र की वश्यादि विधि, स्त्री-वशीकरण, त्रैलोक्यमोहन मन्त्र कथन आदि।
—रा० ला० १५५१, १६४५

(३) ८ पटलो मे पूर्ण। केशवाचार्य कृत। —ज० का० १००३

(४) ८ पटलो मे पूर्ण। केशवाचार्य कृत। इसमे वैष्णवो के गुप्त मन्त्रो का विवरण दिया गया है। —बी० कै० १२८०

(५) श्लोक स० ६९३। इस पर गोविन्द विद्याविनोद भट्टाचार्य कृत विवरण तथा नित्यप्रज्ञ या पुरुषोत्तम कृत भावदीपिका ये दो टीकाएँ हैं।
—अ० व० ९४११, १०२४२, ९४१४ (ख)

(६) पन्ने ३३ (यह ८ पटलो मे है), अपूर्ण, केशवाचार्य कृत।
—वं० प० १०९

(७) लि०—पटल ८। इसमे केशव, नारायण, गोपाल, गोविन्द आदि विभिन्न रूपो मे भगवान् विष्णु की पूजा का विवरण है। —क० का० १६

(८) श्लोक स० १०००। इसमे नारदादि द्वारा उक्त भगवान् विष्णु की पूजाविधि कही गयी है। इसके रचयिता केशवाचार्य हैं। यह ८ पटलो मे विभक्त है।

—नें० द० १।३८३ (क)

(९) श्लोक स० २०००, ७ पटलो मे समाप्त। इस पर भावदीपिका टीका भी है, जिसके रचयिता नित्यप्रज्ञ या पुरुषोत्तम हैं। —अ० व० ९८११ (ख)

(१०) श्लोक स० लगभग १६००, पूर्ण। —स० वि० २५११०

इसके अतिरिक्त स० वि० मे और भी कई प्रतिया है जिनके न० २४८८७, २४८८८, २५०९२ तथा २५६२५ है।

(११) केशवभट्ट कृत, ८ पटल पर्यन्त। गोविन्दविद्या विनोद भट्टाचार्य कृत टीका सहित। —रा० पु० २६२६

उ०—तन्त्रसार और पुरश्चर्यार्णव मे।

क्रमदीपिका (२)

लि०—श्लोक स० ९००। अन्त मे खण्डित (अपूर्ण)। वसिष्ठ विरचित। सभवत यह पूर्वोक्त क्रमदीपिका से अन्य पुस्तक है, क्योकि इसके कर्ता केशवाचार्य के वदले वसिष्ठ बतलाये गये हैं। —अ० व० १३८६७

क्रमदीपिकाटीका (१)

लि०—(१) (क) श्लोक० स० ४५००, पूर्ण, भैरव त्रिपाठी विरचित। (ख) श्लोक० स० २७००, पूर्ण, गोविन्द विद्याविनोद भट्टाचार्य कृत। (ग) ३ पटलो तक विश्वेश्वर और तदनन्तर शेष अश की टीका के कर्ता जनार्दन हैं। श्लोक स० ३२५० के लगभग है।

—ए० व० (क) ६४९०, (ख) ६४८१, (ग) ६४९२

क्रमदीपिका-टिप्पणी (२)

(३) यह क्रमदीपिका की तीसरी व्याख्या है। इसके निर्माता भैरव त्रिपाठी हैं।

—वी० कै० १२८१

क्रमदीपिका-विवरण (३)

(२) इसके रचयिता गोविन्द विद्याविनोद भट्टाचार्य है। क्रमदीपिका पर यह दूसरी व्याख्या है। यह व्याख्या पूरे आठ पटलो पर है। —वी० कै० १२८२

क्रमपूर्णदीक्षापद्धति

लि०—श्लोक स० ५७० । यह गुरुदेव उपाध्याय विरचित है। इसमे क्रमदीक्षा और तारा का पूर्णाभिषेक ये दोनो विषय सप्रमाण वर्णित है । यद्यपि यह पद्धति कही गयी है, तथापि इसमे प्रयोग और प्रमाण दोनो वर्णित है। सक्षेप से पूर्ण दीक्षा का ग्रहण-क्रम और सक्षेप से ही तारा की पूर्णाभिषेक-विधि ये दो विषय इसमे कहे गये है ।

—ए० ब० ६५२६

क्रमरत्नमाला या क्रमरत्नमालिका

लि०—(१) श्लोक स० २०००। यह नौ पटलो मे पूर्ण है। इसमे गोपालविषयक ५९ मन्त्र वर्णित है तथा गोपाल-महामन्त्रो के जप का क्रम भी कहा गया है।

—तै० म० १२१५२

(२) श्लोक स० २०००, अपूर्ण । —अ० ब० ७९६२

क्रमवासना

इसके रचयिता महेश्वरानन्द के परम गुरु है।

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे ।

क्रमसंहिता

उ०—तारामक्तिसुवार्णव मे ।

क्रमसद्भाव

उ०—तारामक्तिसुवार्णव मे ।

क्रमसिद्धि

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे ।

क्रमसूत्र

उ०—प्रत्यभिज्ञाहृदय तथा महार्थमञ्जरी-परिमल मे ।

क्रमस्तुति या क्रमस्तोत्र

उ०—क्रमकेलि, जो क्रमस्तुति की टीका है, तथा सौभाग्यवर्द्धिनी नामक सौन्दर्य-लहरी की टीका मे ।

क्रमोत्तम

लि०—(१) श्लोक स० २४००, पूर्ण। यह निजात्मानन्दनाथ (मल्लिकार्जुन योगीन्द्र) कृत है। इसमे साधको के प्रात काल के कर्तव्यो के विवरण के साथ न्यासादि का निर्देश तथा त्रिपुरादेवी की पूजाविधि विस्तार से वर्णित है। यह पुस्तक विभिन्न कैटलागो मे भिन्न-भिन्न नामो से उल्लिखित है—गद्यवल्लरी (रा ला २२६१), श्रीविद्यापद्धति (वी क १३३५), क्रमोत्तमपद्धति (वी. कै १२८३), महात्रिपुरसुन्दरीपादुकार्चनक्रमोत्तम (इ आ २६००) आदि। ग्रन्थकी प्रस्तावना से प्रतीत होता है कि ग्रन्थकार के गुरु श्रीनृसिह तथा माधवेन्द्र सरस्वती थे। यह ग्रन्थ ३३ पटलो मे पूर्ण हैं। इसके विषय है—अजपार्पण, स्नान, सन्ध्या, तर्पण आदि का निरूपण, सहार रूप चक्रन्यास का वर्णन, न्यास-विवरण, न्यासविधि तथा पूजापटल। इसकी पुष्पिकाओ मे भी इसके विभिन्न नाम प्रतिपादित है—१ गद्यवल्लरी, २ श्रीविद्यापद्धति, ३ श्रीप्रासादपरापद्धति आदि। —ए० ब० ६३५१

(२) क्रमोत्तमपद्धति। —बी० कै० १२८३

क्रमोदय

उ०—योगिनीहृदयदीपिका तथा महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

क्रियाकाण्ड

लि०—श्रीशक्तिनाथ (श्रीकल्याणकर) ने शिष्यसघ की ज्ञानसिद्धि के लिए क्रियाकल्पतरु के अन्तर्गत इस क्रियाकाण्ड का निर्माण किया। इसमे पीठयाग, सुभद्रयाग, कन्दरयाग, जयाख्ययाग, भीमाख्ययाग, कुहूयाग आदि वर्णित हैं। कल्पतरु भी सम्पूर्ण कुलशास्त्र का भाग है। इसमे वामाचार-पूजा वर्णित है। ग्रन्थकार निम्ननिर्दिष्ट अपने गुरुओ के आशीर्वाद तथा कृपा से ग्रन्थ का निर्माण करने मे समर्थ हुए थे। उनके पारम्पर्यप्रकाशी महागुरु थे। श्रीकण्ठनाथ, गङ्गाधर मुनीन्द्र, महाबल, महेशान, महावागीश्वरानन्द, देवराज तथा विचित्रानन्द ग्रन्थकार के मार्गप्रदर्शक थे। जो विषय-सामग्री इसमे वर्णित है वह कुलशास्त्र और आम्नाय से ली गयी है। ग्रन्थकार ने इसमे तान्त्रिक क्रिया के अनुसार बहुत-से योगो का वर्णन किया है। —ने० द० १८३ (ज्ञ)

क्रियाकाण्डशेखर

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा तारामक्तिसुधार्णव मे

क्रियाकारकमण्डन

उ०—शतरत्नसग्रह मे ।

क्रियाकालगुणोत्तर

लि०—श्लोक स० २१००। यह शिव-कार्तिकेय सवादरूप है। इसमे तीन कल्प है—क्रोधेश्वरकल्प, अघोरकल्प तथा ज्वरेश्वरकल्प। नागो की विभिन्न जातियो के लक्षण, गर्भोत्पत्ति, ग्रह, यक्ष, पिशाच तथा डाकिनी-शाकिनियो के लक्षण, विषैले सर्प, बिच्छू आदि विषैले जीव जन्तुओ के लक्षण इसमे प्रतिपादित है। इसका लिपिकाल सन् ११८४ ई० है। —ने० द० २।३९२

क्रियाक्रमद्योतिका

लि०—(१) (क) श्लोक स० १५००, यह अघोर शिवाचार्य, नामान्तर परमेश्वर कृत है। यह निर्वाणदीक्षा से गृहीत है, जो सक्षिप्त दीक्षाविधि के अन्त मे है। (ख) केवल पवित्रविधि पर्यन्त है, जो क्षतविक्षत और २०० श्लोकात्मक है।

—अ० व० (क) ७९७९, (ख) ७९३२

(२) श्लोक स० ५००। यह अघोर शिवाचार्य कृत है। इसमे अभिषेक और दीक्षा-विधि प्रतिपादित है। —ट्रि० कै० ९३१

(३) इसका कुछ अश १९०४ और १९१२ मे मद्रास मे प्रकाशित हुआ था। पाशुपत शास्त्र का सारोद्धार इसमे है। —म० रि० ११६

क्रियाक्रमद्योतिका-व्याख्या

लि०—श्लोक स० ३०००। यह अघोर शिवाचार्य कृत क्रियाक्रमद्योतिका की व्याख्या है। —अ० व० १०८७९

क्रियाक्रमोद्योत

लि०—(क) पन्ने १६२, पूर्ण। यह अघोर शिवाचार्य कृत है।

—तँ० म० (क) ११३७७

क्रियालेशस्मृति

लि०—श्लोक स० १०००। यह थोडे मे सब अनुष्ठानो को सूचित करने वाला सर्वोप-कारक ग्रन्थ है। सब पर देवताओ का अनुग्रह हो ऐसी बुद्धि से श्रीनीलकण्ठ ने गुरु और

इष्टदेव के प्रसाद से इसकी रचना की। इसमे विष्णु, दुर्गा, शिव, स्कन्द, गणेश, शास्ता, हर, अच्युत आदि की पूजा सक्षेपत वर्णित है। बीजाकुर, स्थान और विग्रह की शुद्धि, निष्क्रमण, स्नान, पूजा, बलि, उत्सव, तीर्थयात्रा इत्यादि विष्णु प्रभृति सात देवताओ के तत्-तत् शास्त्रोक्त कर्म सक्षेपत इसमे लिखे गये है। —ट्रि० कै० ९३२

क्रियासंग्रह

लि०—(१) श्लोक स० २५००। यह शङ्कर कृत है। —अ० व० १३१२०

(२) श्लोक स० ३५६८। इसके निर्माता कुञ्झिक्काड् शङ्कर है। इसमे शैव विभाग के ९ पटल तक का ग्रन्थाश है। उपासक की देहशुद्धि का प्रतिपादन कर देवता-पूजन, हवन आदि विषय वर्णित है। —ट्रि० कै० ९३४

(३) श्लोक स० १६००। इसमे तन्त्र और आगमो मे उक्त दुर्गा देवी की स्थापना, पूजा आदि प्रतिपादित है। इसमे दुर्गा-विभाग के केवल ९ पटलो तक का ही ग्रन्थाश है। १० वे पटल का कुछ अश क्षतविक्षत अवस्था मे है। इसके कर्ता पूर्वोक्त ही है।

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे। —ट्रि० कै० ९३३

क्रियासार

लि०—(१) श्लोक स० ३६००। यह ६९ पटलो का ग्रन्थ है। इसमे मातृका-स्थापन आदि विविध तान्त्रिक क्रियाएँ वर्णित है। —ट्रि० कै० ९३५

(२) श्लोक स० ३६००। —अ० व० ७९८४ (क)

उ०—पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी, ललितार्चन-चन्द्रिका, तन्त्रसार, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, कुण्डमण्डपसिद्धि तथा तीर्थतत्त्व (रघुनन्दन कृत) मे।

क्रियासार-व्याख्या

लि०—(क) श्लोक स० ९५००। इसके रचयिता है—व्याघ्रग्रामवासी नारायण। यह ग्रन्थ १३ पटल तक है। इसमे ६ पटल शास्त्र-भाग के है। (ख) श्लोक स० ५२००। इसमे शङ्कर और नारायण भाग का व्याख्यान ८ पटलो मे पूर्ण है। क्रियासार-व्याख्या १० पटलो की है। (ग) श्लोक स० ९००० है। यह ग्रन्थ छह पटलो मे पूर्ण है। (घ) श्लोक स० ३७००।

—ट्रि० कै० (क) ९३७, (ख) ९३६, (ग) ९३८, (घ) ९३९

क्रियासारसमुच्चय

उ०—तन्त्रसार मे।

क्रूरकर्मार्णव

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

क्रोधभैरवतन्त्र

यह ६४ आगमो मे अन्यतम भैरवाष्टक वर्ग के अन्तर्गत है।

क्षेत्रेशपूजनतन्त्र

लि०—वहुरूप गर्भस्तोत्र के माथ है। —डे० का० २५२

खचक्रतन्त्र

यह श्रीकण्ठ के मत से चतु षष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है। (तन्त्रालोक-टीका)।

खड्गमालातन्त्र

लि०—(१) (क) अपूर्ण। (ख) पूर्ण।

—स० वि० (क) २४१७७, (ख) २५६०५

(२) —कैट् कैट् १।१३५, २।२७

खड्गमालाभेद

लि०—(क) अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ९००, पूर्ण।

—अ० व० (क) ११७२२, (ख) ११७६५

खेचरीपटल

लि०—(१) इसमे पिशाची या भूतिनी को वश मे लाने के लिए उनकी गुप्तपूजा का प्रतिपादन है। प्रतीत होता है कि यह किसी तन्त्र से अशत. गृहीत है।

—वी० कै० १२७९

(२) —कैट् कैट्. १।१३७

खेचरीपद्धति

लि०—श्लोक स० २५०, अपूर्ण। —स० वि० २५७७२

खेचरीविद्या

लि०—(१) महाकालयोगशास्त्रान्तर्गत उमा-महेश्वर सवादरूप यह ग्रन्थ चार पटलो मे पूर्ण है। —ए० ब० ६१२०

(२) क्रमश (क) श्लोक स० २००, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ३००, पूर्ण। (ग) महाकालयोगशास्त्रान्तर्गत श्लोक स० ३२०, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २४५८२, (ख) २५६२८, (ग) २६३१९

(३) —कैट् कैट् १।१३७

गकारादिगणपतिसहस्रनामस्तोत्र

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत यह स्तोत्र शिव-पार्वती सवादरूप है। इसमे गणपति के गकारादि सहस्र नाम कहे गये हैं। इसकी श्लोक स० २५० है।

—रा० ला० ८८९

गङ्गापञ्चाङ्ग

लि०—श्लोक सख्या ६००, पूर्ण। —अ० ब० १०६८६

गजेन्द्रमोक्षतन्त्र

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

गणपतिकल्प

लि०—(१) श्लोक स० ६००, अपूर्ण। —अ० व० ६८६६

(२) श्लोक स० १८८, अपूर्ण। —स० वि० २५३६५

(३) —कैट् कैट् १।१४१

गणपतिकवच (वज्रपञ्जर)

लि०—(१) पूर्ण। —र० म० १०३५ (क)

(२) —कैट् कैट् १।१४१

गणपतिक्रम

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

गणपतिजपप्रयोग

लि०—श्लोक सं० ५५, पूर्ण। —र० म० १०१६

गणपतिदीक्षाकल्पसूत्र

लि०—१३५ सूत्रो मे पूर्ण। —अ० व० ११२४१

गणपतिनित्यार्चनपद्धति

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

गणपतिपञ्चाङ्ग

लि०—(१) कुलार्णव और रुद्रयामलान्तर्गत। —कैट् कैट् ११४१
(२) (क) श्लोक स० ३४०, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ६७०, पूर्ण।
—स० वि० (क) २५२३२, (ख) २६४१८

गणपतिपद्धति

लि०—श्लोक स० १००, पूर्ण। —अ० व० ८१६५

गणपतिपूजनविधि

लि०—श्लोक स० २०५, अपूर्ण। इसमे उपासनाविकार भी सनिविष्ट है।
—स० वि० २६६३५

गणपतिपूजा

लि०—(१) (क) श्लोक स० १४०। (ख) श्लोक स० ४००। (ग) श्लोक स० १२०। —अ० व० (क) ५०६४, (ख) ७१४४, (ग) ८९५८
(२) —कैट्. कैट् ११४२

गणपतिपूजाविधान

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। श्लोक स० ६०, पूर्ण। —स० वि० २६६५७

गणपतिमन्त्रसंग्रहदीपिका

लि०— —प्राप्त ग्रन्थसूची से।

गणपतिमन्त्रसमुच्चय

लि०—पूर्णानन्द विरचित। श्लोक स० ३००।
—अ० व० ५१४८

गणपतिरत्नप्रदीप

लि०—(१) ब्रह्मेश्वर विरचित। —कैट् कैट् १।१४२
(२) —म० रि० १२४

गणपतिरहस्य

लि०— —कैट् कैट् १।१४२

गणपतिसहस्त्रनामार्थप्रकाश

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

गणपत्युपनिषत्

लि०—(१) —रा० पु० ६७३२
(२) —कैट् कैट् १।१४२

गणपत्येकाक्षरविधान

लि०—श्लोक स० २००। —अ० व० १२१४३

गणेशकल्प

लि०—(१) इसमे गणेशपूजामम्बन्धी तान्त्रिक विधियाँ प्रतिपादित है। यह ग्रन्थ ६ पटलो मे पूर्ण है। उनके विपय है—१ वीजकोप तथा चतुर्विध दीक्षाओ का वर्णन, २ गणपति के एकाक्षर आदि ३७ मन्त्रो का विधान, ३ उपासक के प्रात कालीन कृत्य, मातृकान्यास, ४ पूजाविधि, पुरश्चरणविधि तथा शान्तिक, वश्य, स्तभन आदि षट्-कर्मो का वर्णन। —इ० आ० २६०९

(२) (क) श्लोक स० २४००। (ख) श्लोक स० १२००।
—अ० व० (क) ३४३५, (ख) १०६७९

(३) —कैट् कैट् १।१४४

गणेशपञ्चाङ्ग

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत। इसमे निम्ननिर्दिष्ट विपय वर्णित है—
१ गणपतिमन्त्रोद्धारविधि, २ महागणपतिपूजापद्धति, ३ महागणपतिपूजा-कवच, ४ महागणपतिपूजासहस्त्रनामस्तव तथा ५ महागणपतिपूजास्तोत्र।
—ए० व० ६५०८

(२) यह देवीरहस्यान्तर्गत भैरव-देवी सवादरूप है। इसमे निम्न लिखित विपय वर्णित हैं—१ पूजापटल, २ पूजापद्धति, ३ सहस्रनाम, ४. कवच तथा ५. स्तोत्र। पुष्पिका मे देवीरहस्य के १३० पटल कहे गये हैं।

(३) इसकी श्लोक स० ११०० है। इसमे गणेशजी के पटल, पूजापद्धति, कवच, सहस्रनाम, स्तव, स्तोत्र आदि वर्णित हैं। —अ० व० १२७९९

(४) रुद्रयामलान्तर्गत, पूर्ण। —र० म० ४८२७

(५) गणेशकवच मात्र। इसमे गणेशजी के नामो से शरीर के विभिन्न अगो की रक्षाविधि वर्णित है। —वी० कै० १२६४

(६) (क) श्लोक स० १७५, पूर्ण। (ख) श्लोक स० २८७। इसमे गुरु-प्रार्थना तथा शिवापराध-क्षमापन-स्तोत्र भी समिलित है।

—स० वि० (क) २४५९०, (ख) २६४८६

(७) रुद्रयामलान्तर्गत। —कैट् कैट् १।१४४

गणेशपद्धति

लि०—उमानन्दनाथ विरचित। (क) श्लोक सं० ५००। (ख) श्लोक स० ३००। (ग) श्लोक स० ३००। प्रकाशानन्दनाथ विरचित।

—अ० व० (क) १३६४२, (ख) १७५, (ग) ५५३६

गणेशपूजा

लि०— —रा० पु० ७६९०

गणेशपूजापद्धति

लि०—(१) —कैट्. कैट् १।१४४

(२) श्लोक० सं० ९२, पूर्ण। —स० वि० २४३२७

गणेशपूजाविधि

लि०—श्लोक स० १२०। —अ० व० ३४३८

गणेशयामल

लि०— —कैट् कैट् १।१४४

यह अष्टयामलो मे अन्यतम है। अष्टयामलो के नाम यामलाष्टक मे देखे।

गणेशयोगमीमांसासूत्र

लि०—सूत्र सख्या ४०९। —अ० व० ११२४० (ख)

गणेशविमर्शिनी

उ०—तन्त्रसार, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, मन्त्र-महार्णव तथा कुण्डमण्डपसिद्धि मे।

गणेशसहस्रनाम

लि०—(१) गणेशपुराण से उद्धृत। (२) रुद्रयामल से गृहीत।

—कैट् कैट् १।१४४

गणेशसहस्रनामव्याख्या

लि०—गोपालभट्ट कृत। —कैट् कैट् १।१४४

गणेशहृदय

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

गणेशाचारचन्द्रिका

लि०—दामोदर विरचित। यह ७ पटलो मे पूर्ण है। इसमे सन्ध्याविधि, जप-विधि, बाह्यपूजा, ब्राह्मण-भोजनविधि, काम्यकर्मविधि, मन्त्रवैगुण्य होने पर प्रायश्चित्त, दक्षिणा, दान आदि की विधि आदि विषय वर्णित है। —नो० स० ४।७३

गणेशार्चनचन्द्रिका

लि०—(१) श्लोक स० ४५०। —अ० व० १२२५४

(२) (क) मुकुन्दलाल विरचित। (ख) सदानन्द शुक्ल विरचित।

—कैट् कैट् १।१४५

गणेशार्चनदीपिका

लि०—(क) काशीनाथ विरचित। (ख) वृन्दावन विरचित।

—कैट् कैट् १।१४५

गणेशाष्टकपीठिका

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

गणेश्वरविमर्शिनी (गणेशविमर्शिनी)

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, मन्त्रमहार्णव तथा शारदातिलक की टीका राघवभट्टी मे।

गद्यवल्लरी

लि०—(१) निजात्मप्रकाशानन्दनाथ मल्लिकार्जुनयोगीन्द्र विरचित। श्लोक सं० २०१६। यह श्रीविद्या-पद्धतिरूप प्रथम खण्ड है। इसमे निम्नलिखित विषय वर्णित हैं—गुरु-परम्परा वर्णन के प्रसङ्ग मे सम्प्रदाय-प्रवृत्ति वर्णन, प्रात कृत्य, तान्त्रिक सन्ध्या, अर्द्ध-रात्रि मे तुरीय सन्ध्या, तर्पण आदि की विधि, श्रीविद्यापूजाविधि, प्राणप्रतिष्ठाविधि, प्रपञ्चयागविधि, वालासम्पुटितादि मातृकान्यास आदि लक्ष्मीसपुटित, कामसपुटित, श्रीविद्यासम्पुटित आदि न्यास, श्रीकण्ठ, केशव आदि, काम, रति, प्रणव, उत्थानकला आदि के मातृकान्यास, मालिनी, कालसकर्षिणी आदि के न्यास, परा, वैखरी, सूर्यकला, योगपीठ, ग्रह, नक्षत्रादि के न्यास, जपविधि, मण्डप-ध्यान आदि, स्तोत्र आदि तथा श्रीविद्या-माहात्म्य। —रा० ला० २६१

(२) पूर्णानन्द कृत। —कैट् कैट् १।१४९

गन्धर्वतन्त्र

लि०—(१) यह दत्तात्रेय प्रोक्त—दत्तात्रेय-विश्वामित्र संवादरूप—तन्त्र ४२ पटलो मे पूर्ण है। उनमे प्रतिपादित विषय सक्षेपत यो हैं—तन्त्र की प्रस्तावना, विविध विद्या-भेदो का उद्धार, पञ्चमी विद्या की उद्धारविधि, राजराजेश्वरी कवच, यन्त्रोद्धार आदि, अग और आवरण पूजा, कर्मयोगादि का क्रम, भूतशुद्धि, करशुद्धि, मातृकान्यास, षोढा-न्यासक्रम, नित्यन्यास आदि, अन्तर्यागविधि, मानसपूजा, ध्यानयोगक्रम, वहिर्यागक्रम, विशषार्घ्यविधि, वहिर्होम प्रकार, पूजोपचार, प्रकटाप्रकट योगिनी पूजनक्रम, जपादि-विधि, वटुक आदि के लिए वलि, शेषिका विद्या प्रयोगक्रम, पूजासम्पूरणादि उपायविधि, समयाचारविधि, कुमारी-पूजन-क्रम, कुमारी-पूजा का माहात्म्य, पुण्यपीठ कथन आदि, आपत्कालीन पूजा आदिकी विधि, गुरु, शिष्य और दीक्षाके लक्षण, दीक्षाविधि, पुरश्चरण-विधि, विद्यासकेत-निर्णय, त्रिकूट पृथक् साधनविधि, होमद्रव्य प्रयोग, मुद्राधारणविधि, चक्रराजप्रतिष्ठा, कुलाचार आदि। —ज० का० १००६

(२) पटल सं० १ से १७ तक, श्लोक स० १६५०, अपूर्ण।

—सं० वि० २६४५७

(३) तन्त्रगन्धर्व भी इसका नामान्तर है। तन्त्रगन्धर्वे त्रिपुरा-सुन्दरीत्रैलोक्य-मोहनकवच, गन्धर्वतन्त्रे महाकालीकवच। —कैट् कैट् १।१४९, ३।३२

उ०—तारारहस्यवृत्ति, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी, महामोक्षतन्त्र, सर्वोल्लास, आगमतत्त्वविलास तथा रहस्यार्णव मे।

गन्धर्वमालिका

उ०—जगन्नाथ ने आनन्दलहरी-टीका मे इसका उल्लेख किया है।

गन्धर्वराजमन्त्रविधि

लि०—इसमे गन्धर्वराज विश्वावसु की पूजापद्धति वर्णित है एव सुन्दर पुत्रियों की कामना पर जपपद्धति भी वर्णित है। —ए० ब० ६५२४

गन्धोत्तमानिर्णय

लि०—(१) गुरुसेवक विरचित। श्लोक स० ४००।

—अ० व० ३४३९

(२) गुरुसेवक (श्रीकाल) विरचित। रचनाकाल १७०९ वि०।

—रा० पु० ६२४७

(३) (क) श्लोक स० ३६५, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ३३६, पूर्ण। (ग) श्लोक स० ३८४। —स० वि० (क) २५१०९, (ख) २५६२९, (ग) २५६३०

गमशासन

उ०—तन्त्रालोक मे।

गरुडप्रकरण

लि०— —कैट् कैट् १।१५०

गरुडसंहिता

लि० —तै० म०

गर्गसंहिता

लि०—श्लोक स० ३७०। —अ० व० ६९९२

गर्गाचार्यसंहिता

उ०—मन्त्रमहार्णव मे।

गर्भकुलार्णव

लि०—पार्वती-परमेश्वर सवादरूप । ३४ पटलो मे पूर्ण यह ग्रन्थ अति रहस्य कौलागम का सारभूत है। इसमे सौभाग्यदेवी की अर्चनाविधि विस्तारपूर्वक वर्णित है।

—म० द० ५५९९ से ५६०५ तक

गर्भकौलागम

लि०—यह शिव-पार्वती सवादरूप है। भगवती पार्वतीजी के शिवजी से यह पूछने पर कि भगवन्, ध्यान, जप, स्मरण और क्रिया के विना सिद्धिप्रद कोई उपाय वतलाने की कृपा करें। भगवान् शिवजी ने उत्तर दिया कि तुम्हारे वैभवपूर्ण दिव्य अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र मे यह सामर्थ्य है कि उसके पाठमात्र से सव सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती है।

—म० द० ५६०६ से ५६१० तक

गर्भपुष्टिव्रत

लि०—श्रीनारायण विरचित। श्रीरामडामर-मन्त्रानुसार। श्लोक स० २५।

—अ० व० ८८६८

गाणककल्पसूत्र

लि०—श्लोक स० २५०। —अ० व० ११३९७ (क)

गाणककल्पसूत्रकारिका

लि०—श्लोक स० ९००। —अ० व० ११३९७ (ख)

गायत्रीकल्प

लि०—(१) ब्रह्मा-नारद सवादरूप। इसमे नारदजी के प्रश्न पर ब्रह्मा ने गायत्री के ध्यान, वर्ण, रूप, देवता, छन्द, आवाहन, विसर्जन, माहात्म्य आदि का वर्णन किया है।

—रा० ला० ४४३

(२) चतुर्मुख (ब्रह्मा)-नारद सवादरूप। इसमे गायत्री की पूजा का विवरण दिया गया है। —ए० व० ६०६६

(३) वसिष्ठसहिता के अन्तर्गत। श्लोक स० १२००।

—अ० व० १०२०६ (ख)

(४) विश्वामित्रकल्पान्तर्गत। श्लोक स० १५००।

—अ० व० १३७७९

(५) (क) श्लोक स० २५००। (ख) श्लोक स० ७००।

—अ० व० (क) १०३०९, (ख) ५७३४

(६) विश्वामित्र कृत। —र० म० २६७०

(७) अगस्त्यसहितान्तर्गत, श्लोक स० २२५, पूर्ण। —स० वि० २५०९३

(८) (क) भृङ्गीशतन्त्रान्तर्गत। १ से ४ पटल तक, अपूर्ण। श्लोक स० १४०।
(ख) श्लोक स० १८, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० लगभग ७८, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २५७०५, (ख) २४०७७, (ग) २५७९५

(९) विश्वामित्र कृत। —कैट् कैट् १।१५२, २।३०.

उ०—सौभाग्यभास्कर, ललितासहस्रनाम की टीका तथा आचारार्क मे।

गायत्रीकवच

लि०—(१) (क) नीलतन्त्र तथा आगमसन्दर्भ के अन्तर्गत। इसमे शरीर के विभिन्न अङ्गो के रक्षार्थ वैदिक गायत्री के विभिन्न वर्णो का उपयोग वर्णित है।

—ए० व० ६७२१

(२) रुद्रयामलान्तर्गत शिव-पार्वती सवादरूप। —ए० व० ६७२२

(३) नीलतन्त्रान्तर्गत। —नो० स० ३।७४

(४) आगमसन्दर्भान्तर्गत देव-देवी सवादरूप। —नो० स० ३।७५

(५) (क) वसिष्ठसहिता से गृहीत। श्लोक स० २०। (ख) श्लोक स० ७५।
(ग) श्लोक स० २१।

—अ० व० (क) १३४८० (छ), (ख) ७७०३, (ग) ७७२१

(६) ब्रह्मसहिता मे उक्त गायत्रीकवच, गायत्रीवर्णविन्यास आदि के साथ, वर्णित है। —स० वि० २६५००

(७) रुद्रयामल, देवीपुराण, वसिष्ठसहिता तथा विश्वामित्रसहिता से गृहीत।

—कैट् कैट् १।१५२, २।३०, ३।३२

गायत्रीजपपद्धति

लि०—श्लोक स० १०। —अ० व० १३८६५

गायत्रीतन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० १९५। इसके १ से ९ तक ही पटल उपलब्ध है। इसमे गायत्री-माहात्म्य, गायत्री-ध्यान, न्यास, गायत्रीहीन ब्राह्मण की निन्दा, यज्ञोपवीत-लक्षण,

सन्ध्या-लक्षण, गायत्रीमन्त्र की प्रशंसा, तिथियों के ध्यान और मन्त्र, पक्षों के ध्यान और मन्त्र एव गायत्रीकवच वर्णित है। —रा० ला० ५९८

(२) शिव प्रोक्त। —ज० का० १००९

(३) (क) श्लोक स० १८८, पटल १ से ९ तक, पूर्ण।

(ख) श्लोक स० ४५०। इसमे योनिकवच तथा योनिमुद्राप्रकरण भी सन्निविष्ट है। पूर्ण। (ग) चतुर्थ पटल मात्र। (घ) अपूर्ण।

—स० वि० (क) २५९८६, (ख) २६४७२, (ग) २५०२४, (घ) २५५७३

उ०—प्राणतोषिणी तथा महामोक्षतन्त्र मे।

गायत्रीदशविधान

लि०—श्लोक स० १००। —अ० व० ११६४७ (ख)

गायत्रीपञ्चाङ्ग

लि०—(१) इसमे निम्नलिखित पाँच विषय हैं—१ गायत्रीहृदय, २. रुद्रयामलतन्त्रोक्त गायत्रीरहस्यान्तर्गत गायत्रीनित्यपूजापद्धति, ३ रुद्रयामलतन्त्रोक्त गायत्रीरहस्यान्तर्गत गायत्रीसहस्रनाम, विश्वामित्रसंहितान्तर्गत गायत्रीकवच तथा विश्वामित्र कृत गायत्रीस्तवराज। —नो० सं० २।५१

(२) श्लोक सं० ८००, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ३००, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० ८००, अपूर्ण। —अ० व० (क) १२८१५, (ख) १२६८३ (ग) १२८०१

(३) पन्ने २०। —रा० पु० ६७७३

(४) श्लोक सं० ९६०, अपूर्ण। —स० वि० २४८८४

(५) रुद्रयामल से तथा विश्वामित्रकल्प से गृहीत।

—कैट् कैट्. २।३०। ३।३२

(६) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक स० ७७०, अपूर्ण। —र० म० ४९९२

गायत्रीपञ्जर

लि०—(१) ब्रह्मतन्त्र से गृहीत, श्लोक सख्या १००।

—अ० व० १३४८० (ख)

(२) वसिष्ठसंहितान्तर्गत, ब्रह्मा-नारद सवादरूप। श्लोक सं० २२०।

—रा० ला० ८८४

(३) ब्रह्मतन्त्र तथा वसिष्ठसंहिता से गृहीत। —कैट् कैट् १।१५२

गायत्रीपटल

लि०—(१) श्लोक स० १२८, अपूर्ण । —स० वि० २४३३२

(२) स्वयप्रकाशेन्द्र सरस्वती विरचित । —कैट् कैट् १।१५२

(३) रुद्रयामलान्तर्गत । —कैट् कैट् ३।३२

गायत्रीपद्धति

लि०—(१) रुद्रयामलोक्त । इसमे उपासको के प्रात कृत्यो के साथ गायत्री-पूजा का विवरण विस्तार से प्रतिपादित है । —ए० व० ६४२३

(२) रुद्रयामलोक्त । —रा० पु० ६३४८

(३)—(क) विश्वामित्र विरचित । (ख) शारदा तिलक से गृहीत । (३) भुवनेश्वर विरचित । (घ) भूषणभट्ट विरचित। —कैट् कैट् १।१५२

(४)—(क) रुद्रयामलान्तर्गत । (ख) शङ्कराचार्य विरचित ।

—कैट् कैट् २।३०, ३।३२

गायत्री-पुरश्चरण

लि०—(१) (क) श्लोक स० ५०० । (ख) श्लोक स० २००० । (ग) गायत्री-पुरश्चरण आदि गोविन्द दशपुत्र कृत, श्लोक स० ३६०० । (घ) श्लोक स० ३०० । (ङ) श्लोक स० १०० ।

—अ० व० (क) १६७८, (ख) ११०१५, (ग) ३४४०, (घ) ४२, (ङ) ११५६

(२) (क) शङ्कर कृत । (ख) शिवराम कृत । —कैट् कैट् १।१५२

गायत्रीपुरश्चरणचन्द्रिका

लि०—(१) जयराम-पुत्र काशीनाथ कृत, श्लोक स० ६६६ ।

—अ० व० १३०४९

(२) काशीनाथ भट्ट कृत । —कैट् कैट् २।३०

गायत्रीपुरश्चरणपद्धति

लि०—(१) गङ्गाधर कृत । विश्वामित्रकल्प और वसिष्ठकल्प का भली भाँति मनन कर, उनके सार रूप इस ग्रन्थकी ग्रन्थकार ने स्मृतिशास्त्र के अनुसार रचना की ।

—ए० व० ६४२२

(२) (क) गङ्कर घारे कृत। श्लोक सं० २०००।
(ख) कर्ता का नाम अज्ञात। श्लोक स० २०० है।
—अ० व० (क) ११२४६, (ख) २५९२

(३) (क) श्लोक स० २५०, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ५४, अपूर्ण।
—स० वि० (क) २५११२, (ख) २४५५५

(४) —कैट् कैट् ३।३२

गायत्रीपुरश्चरणप्रयोग

लि०—(१) शारदातिलकोक्त, भट्ट गङ्कर-पुत्र भट्ट शा-(सा ?)म्व कृत। शारदातिलक के २१ वे अध्याय के प्रारम्भिक २१ पद्यो के अनुसार सक्षिप्त गायत्रीपुरश्चरण-प्रयोग इसमे वर्णित है। —ए० व० ६४२१

(२) नारायण भट्ट-पुत्र कृष्णभट्ट कृत, श्लोक स० २३०, पूर्ण।
—र० म० ४४८५

(३) (क) नारायणभट्ट-पुत्र कृष्णभट्ट विरचित, रचनाकाल १७५७ ई०
(ख) साम्वभट्ट कृत। —कैट् कैट् २।३०, ३।३२

गायत्रीपुरश्चरणविधान

लि०—विश्वामित्रकल्प से गृहीत। —कैट् कैट् १।१६२, २।३०

गायत्रीपुरश्चरणविधि

लि०—(१) शारदातिलकोक्त। शारदातिलक के २१ वे अध्याय के आधार पर रचित। —ए० व० ६४२५

(२) श्लोक सं० २००। इसमे गायत्री-मन्त्र के अक्षरो का अङ्ग-प्रत्यङ्ग मे न्यास, गायत्री-मानसपूजा, गायत्री शाप विमोचन, गायत्री मन्त्र के ब्रह्मास्त्र और आग्नेयास्त्र बनाने की विधि, गायत्री-जपविधि, उत्तरन्यासविधि आदि विषय वर्णित हैं।
—रा० ला० ८९८

(३) (क) अनन्तदेव विरचित, (ख) गीर्वाणेन्द्र सरस्वती कृत।
—कैट् कैट्. १।१५२

गायत्रीप्रकरण

लि०—भास्कर विरचित। —कैट् कैट् १।१५२

गायत्रीब्रह्मकल्प

लि०—(१) इसमे गायत्री पूजा, न्यास, ध्यान, पुरश्चरण आदि विस्तार से वर्णित है तथा पूजा-पद्धति और प्रयोग का भी साङ्गोपाङ्ग वर्णन है। यह ऋग्विधान के अन्तर्गत है।
—ए० व० ६४२६

(२) ऋग्विधानान्तर्गत ब्रह्म-नारद सवादरूप। नारदजी ने ब्रह्माजी से गायत्री के न्यास, ऋषि, देवता, छन्द, आवाहन, विसर्जन, हृदय, शिखा, गोत्र, विनियोग, कुक्षि, पाद, ध्यान, मुख, माहात्म्य आदि के विषय मे प्रश्न किये। ब्रह्माजी ने उन सबका क्रमश इसमे समाधान किया है।
—रा० ला० ९००

(३) श्लोक स० ३५०, पूर्ण।
—र० म० ४४८१

(४)
—कैट् कैट् १।१५२, २।३०

गायत्रीब्राह्मणोल्लासतन्त्र

लि०—(१) ५ पटलो मे गायत्री-सम्बन्धी विविध विषय इसमे वर्णित है। जैसे—गायत्री ध्यान, ऋषि आदि न्यास, मुद्रा, वर्णन्यास, अक्षरो के वर्ण, त्रिपदा गायत्री, प्रणव, मेरुसेतु, क्षत्रिय और वैश्य की द्विपदा गायत्री, गायत्री के वर्णों के देवता, गायत्री-सपुटित इष्ट मन्त्र, गायत्री और जीवात्मा का अभेद आदि।
—ए० व० ६०२९

(२) श्लोक स० ८२५ तथा पटल स० ५। कामधेनुतन्त्र के अन्तर्गत देव-देवी सवाद-रूप। इसमे वर्णित विषय है—१म पटल मे ध्यान, जप आदि गायत्री-उपासको के उपयोग की नाना विधियाँ है, २य मे 'भू' आदि सप्त व्याहृतियो का अर्थ-निरूपण है, ३य मे गायत्री के जपयोग्य स्वरूप का वर्णन है, ४र्थ मे गायत्री का आवाहन, यज्ञोपवीत निर्माण आदि एव ५म मे सन्ध्योपासना आदि का वर्णन है
—रा० ला० ४८१

(३) कामधेनुतन्त्र से गृहीत।
—कैट् कैट् १।१५२

गायत्रीमाला

लि०—(१) ब्राह्मण, विष्णु, रुद्र, महालक्ष्मी, नृसिंह, लक्ष्मण, कृष्ण, गोपाल, परशुराम, तुलसी, हनुमान्, गरुड, अग्नि, पृथ्वी, जल, आकाश, सूर्य, चन्द्र, गुरु, परमहस, पवन, हस, गौरी और देवी के भेद से कुल २४ गायत्रियों का वर्णन। —ए० व० ६२८१

(२)
—कैट् कैट् १।१५२

गायत्रीरहस्य

लि०—(१) व्यास-परशुराम विरचित। १० अनुभवो (अध्यायो) मे पूर्ण। उनमे प्राणायामाभ्यास का आनन्द, सकल्प, सन्ध्यार्थ के ध्यानानन्द का उदय, मार्जन, आचमन, अघमर्षण, अर्घ्यदान, तथा शुद्धि के विधारण का आनन्द, गायत्री-उपासना-जन्य आनन्द का उदय, २४ मुद्राओ के तत्त्व विचारानन्द का उदय आदि विषय वर्णित है।

—इ० आ० २६३६

(२) (क) विश्वामित्रकल्प से गृहीत। (ख) चार भागो मे विभक्त, रुद्रयामलान्तर्गत। —कैट् कैट् १।१५२, ३।३३

गायत्रीविधान

लि०—(१) श्लोक स० २५०। —अ० व० ८८६४

(२) —कैट् कैट् १।१५२, २।३०

गायत्रीविधानभाष्य

लि०— —कैट् कैट्. ३।३३

गायत्रीशापविमोचन

लि०—(१) श्लोक स० ६०। —अ० व० १२२४९

(२) श्लोक स० २०८, पूर्ण। इसमे गायत्री-हृदय और गायत्रीकवच भी सम्मिलित है। —र० म० १३५५

(३) —कैट्. कैट् १।१५२, २।३०

(४) श्लोक स० ७०, पूर्ण। —स० वि० २४४३१

गायत्रीसहस्रनाम

लि०—(क) रुद्रयामल से गृहीत। (ख) रुद्रयामल के गायत्रीरहस्य से गृहीत।

—कैट् कैट् (क) २।३०, (ख) ३।३३

गायत्रीस्तवराजस्तोत्र

लि०—(१) विश्वामित्र विरचित। विश्वामित्रसहिता के अन्तर्गत।

—ए० व० ६७२४

(२) विश्वामित्रसहितान्तर्गत विश्वामित्रसमुद्धृत। गायत्री की स्तुति। श्लोक सं० ६५। —रा० ला० ८८६

(३) विश्वामित्रसहिता से उद्धृत। विश्वामित्र कृत।

—कैट्. कैट् १।१५२, ३।३३

गायत्रीहृदय

लि०—(१) (क) ब्रह्म-वसिष्ठ सवादरूप। इसमे वैदिक गायत्रीमन्त्र का मूल वर्णित है। (ख) ब्रह्म-वैशम्पायन सवादरूप। (ग) ब्रह्मकल्पान्तर्गत एव ब्रह्म-याज्ञवल्क्य सवादरूप। —ए० ब० (क) ६७१८, (ख) ६७१९, (ग) ६७२०

(२) नारदोपनिषत् सवादरूप। श्लोक स० ४८। इसमे गायत्री की उत्पत्ति के साथ गायत्री का अर्थ प्रतिपादित है। —रा० ला० ४४२

(३) ब्रह्मा-वसिष्ठ सवादरूप। इसमे वसिष्ठजी के प्रश्न पर ब्रह्मा ने ब्रह्मज्ञान की उत्पत्ति की प्रकृति गायत्री का व्याख्यान किया है। जो मनुष्य गायत्रीहृदय का पाठ करता है वह इस लोक और परलोक मे सुखी रहता है। जो ब्राह्मण नित्य गायत्री-हृदय का पाठ करता है, उसे गायत्री के ३ लाख ६० हजार जप करने का फल प्राप्त होता है। उसे सब तीर्थों मे स्नान करने का, सब वेदो के ज्ञान तथा सव वेदो के अध्ययन का फल अनायास मिल जाता है। इसमे गायत्री की उत्पत्ति तथा गायत्री का अर्थ विशेष रूप से वर्णित है। —रा० ला० ४७५

(४) (क) श्लोक स० १००। (ख) श्लोक स० २१।

—अ० ब० (क) ८३०८, (ख) १३४८० (ग)

(५) श्लोक स० ११७०, पूर्ण। —स० वि० २४८२१

(६) (क) दे० नारदोपनिषद्। (ख) पद्मपुराण के पातालखण्ड से गृहीत। (ग) वसिष्ठसहिता से गृहीत। (घ) विश्वामित्रकल्प से गृहीत।

—कैट् कैट् १।१५२, ३।३३

गायत्र्यक्षरकल्प

लि०—श्लोक स० २८। —अ० ब० १०५६०

गायत्र्यक्षरतत्त्व

लि०— —कैट् कैट् १।१५२

गायत्र्यर्चनदीपिका

लि०—(१) मडोपनामक शिवरामभट्ट-पौत्र जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथ विरचित। इसमे उपासको के प्रात कृत्यो के वर्णनपूर्वक गायत्री देवी की पूजा वर्णित है।

—ए० ब० ६४२०

(२) काशीनाथ विरचित, श्लोक स० ३००, अपूर्ण ।

—म० वि० २४८०९

गायत्र्यर्चनरत्नमाला

लि०—(१) इसमे प्रधान रूप से उपासको के दैनिक कृत्यो के साथ गायत्री देवी की नित्यपूजा, नैमित्तिक पूजा तथा पुरश्चरण का वर्णन है ।

—ए० व० ६४२४

(२) गायत्र्यर्चारत्नमाला। —कैट्. कैट्. १।१५२

गायत्र्यर्थरहस्य

लि०—ज्ञानदेव कृत । —कैट् कैट् १।१५३

गायत्र्यष्टोत्तरशतनाम

लि०—(१) (क) विश्वामित्रकल्प से गृहीत, श्लोक स० २० । (ख) श्लोक स० २० । —अ० व० (क) १४४८० (ख), (ख) १०२०६ (क)

(२) —कैट् कैट् १।१५३

गायत्र्यष्टोत्तरशतदिव्यनामामृतस्तोत्र

लि०—विश्वामित्र-रामचन्द्र सवादरूप । श्लोक स० ४२ । इसमे कहा गया है कि गायत्री के अष्टोत्तर शत (१०८) नामो के पाठ से रोगियो के रोग शान्त हो जाते हैं एव सब ऐश्वर्यो की वृद्धि होती है। अधिक क्या कहे यह स्तोत्र सबका दर्शन देने वाला है । —रा० ला० ८८२

गारुडतन्त्र या गारुडीतन्त्र

उ०—मन्त्रमहार्णव तथा तन्त्रसार मे ।

गारुडसंहिता

लि०—(१) मूर्तिलक्षण पर। इसमे मूर्ति के आकार प्रकार का प्रतिपादन है।

—तँ० म० २५६

(२) —कैट् कैट्. १।१५३

गार्ग्यसंहिता

उ०—आगमकल्पलता मे ।

गुटिकाकल्प

लि०— —कैट् कैट्. १।१५४

गुटिकाकवच

लि०—श्लोक सख्या १००। —अ० व० ३५२४

गुटिकादेवपूजन

लि०—गुटिका या गुटका का प्रयोग सदा छोटे आकार की पुस्तक या पाकेटबुक के लिए होता है। यहाँ पर सभवत इसका प्रयोग इसी अर्थ मे किया गया है। अन्य दो पदो (देव और पूजन) से ज्ञात होता है कि यह पुस्तक किन्ही विशेष देवी और देवताओ की पूजाविधि की प्रतिपादक है। —वी० कै० १२६८

गुप्तगोपाललीलामृत

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

गुप्तदीक्षातन्त्र

उ०—शाक्तानन्दतरङ्गिणी मे।

गुप्तसाधनतन्त्र

लि०—(१) १२ पटलो मे पूर्ण। —ए० व० ५९१५

(२) उमा-महेश्वर सवादरूप। १२ पटलो मे पूर्ण। श्लोक स० ४८४। इसमे प्रतिपादित विषय हैं—कुलाचार और कौलो की साधना, पञ्चाङ्गोपासना, आत्मसिद्धि के उपाय, मासिक जप विवरण, दक्षिणा का प्रकार, मन्त्रोद्धार आदि।

—रा० ला० ७३८

(३) शिव-पार्वती सवादरूप, १२ पटलो मे पूर्ण। इसमे कुलीन का लक्षण निम्नलिखित है—

कुलं शक्ति समाख्याता अकुल शिष्य उच्यते।
तस्या लीनो भवेद् यस्तु कुलीन स प्रकीर्तित॥

—ने० द० २।२६२ (ग)

(४) पूर्ण। —व० प० ३४६

(५) शिवप्रोक्त। —ज० का० १०१४

(६) (क) श्लोक स० २७० । अपूर्ण । (ख) श्लोक स० ३१५ अपूर्ण । (ग) श्लोक स० २४८ अपूर्ण । (घ) श्लोक स० ४२५, पटल ७ वे मे १२ तक है । आरभ के छह पटल नही है। अपूर्ण। (ङ) केवल १ मे ५ पटल तक । श्लोक स० १२८, अपूर्ण। (च) केवल ४र्थ पटल मात्र ।

—स० वि० (क) २४८५८, (ख) २५१९७, (ग) २५१९८, (घ) २५४८७, (ङ) २५७५८, (च) २६५०२

(७) —कैट्. कैट्. १।१५५

उ०—श्यामापूजाव्यवस्था, महामोक्षतन्त्र, कालिकार्चामुकुर, सर्वोल्लास तथा कालिकासपर्याविवि मे ।

गुप्तसारतन्त्र

उ०—महामोक्षतन्त्र मे ।

गुप्तार्णवतन्त्र

(अपराधस्तोत्रमात्र)

लि०—(१) श्लोक स० ४१, पूर्ण । —र० म० ११६४

(२) गुप्तार्णवतन्त्रे अपराधस्तोत्रम् । —कैट्. कैट् २।३१

उ०—तन्त्रसार मे ।

गुप्तासनतन्त्र

उ०—प्राणतोपिणी मे ।

गुरुकवच

लि०—(१) महागमसारान्तर्गत । श्लोक सं० ४५, पूर्ण। इस सग्रह मे १८ प्रतियाँ और हैं। —स० वि० २२५४३

(२) (क) विश्वसारोद्धार से गृहीत । श्लोक स० ५० । (ख) विश्वसारोद्धार से गृहीत । श्लोक स० २६, अपूर्ण । —अ० व० (क) ११७६२, (ख) २०१० (ख)

(३) समयातन्त्रान्तर्गत, शिव-पार्वती सवादरूप । श्लोक स० ३७ । यह सर्वसिद्धिप्रद कवच है। श्री गुरु की कृपा से यदि सद्विद्या प्राप्त हो जाय तो जो इसका पाठ करे, या पाठ करावे, सुने या सुनावे वह सर्वसिद्धियो का अधीश्वर होकर देववत् भूमि मे विचरता है।

—रा० ला० ४०८०

(४) महागममारान्तर्गत । —ए० व० ६८०३

(५) (क) पूर्ण। (ख) त्रैलोक्य नाम का गुरुकवच, पूर्ण। (ग) ब्रह्मयामलान्तर्गत, अपूर्ण। —व० प० (क) ५३२, (ख) ५३२ (क), (ग) ७९८ (ख)

(६) (क) श्लोक स० ५८, पूर्ण। (ख) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक स० ९२, पूर्ण। (ग) इसकी पुष्पिका मे 'विश्वसारोद्धारे गुरुकवचम्' लिखा है अत यह विश्वसारोद्धारतन्त्रान्तर्गत है, यह निश्चय होता है। श्लोक स० ८८, पूर्ण।

—र० म० (क) ५०४०, (ख) ४५०३, (ग) ४८०६

(७) (क) रुद्रयामल से उद्धृत। (ख) ब्रह्मयामल से गृहीत। (ग) निगमसार से गृहीत, रुद्रयामल से गृहीत, समयातन्त्र से गृहीत।

—कैट् कैट् १।१५५, ३।३३, २।३१

गुरुकीलकपटल

लि०—गुप्तवतीरहस्यतन्त्रोक्त। —रा० पु० ५७१०

गुरुकुण्डली

लि०—(१) बृहस्पति प्रोक्त। 'ओ धुक् धुक् स्वाहा' मन्त्र द्वारा ७ वार अभिमन्त्रित की हुई खडिया लेकर उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम ७।७ रेखाएँ खीचकर ४९ कोष्ठो का मण्डल भूमि पर लिखना चाहिए। उनमे शून्य सहित ४९ अङ्क लिखने चाहिए। तदनन्तर प्रश्नकर्त्ता के कुल के वालक के हाथ से उस खडिया को अभिमन्त्रित कर अपने कार्य का शुभ या अशुभ फल मन मे सोच कर उन कोष्ठो मे से किसी एक कोष्ठ पर खडिया गिरा कर शुभाशुभ फल कहना चाहिए। कोष्ठो पर अङ्कित अङ्को की तालिका तथा फल पृथक् दिया हुआ है। उसी के अनुसार शुभाशुभ फल कहा जाता है। —रा० ला० ४०८२

(२) गुरुतन्त्र से गृहीत। —कैट् कैट्. २।३१

गुरुगीता

लि०—(१) इसके आरम्भ मे गुरुपूजा वर्णित है। तदुपरान्त स्तोत्र का आरम्भ होता है। यह स्कन्दपुराणान्तर्गत तथा रुद्रयामलान्तर्गत भी कहा गया है। किसी-किसी प्रति मे गुरुमाहात्म्य भी वर्णित है। —ए० व० ६७९० से ६७९३ तक

(२) गुरुयामलतन्त्रान्तर्गत। इसमे गुरुगीता के ऋषि, छन्द, देवता, वीज, शक्ति, कीलक आदि का वर्णन कर गुरुराज की स्तुति तथा महिमा विशेष रूप से वर्णित है।

—रा० ला० ४४५

(३) ब्रह्मयामलान्तर्गत उमा-महेश्वर संवाद रूप। इसमे आत्मतत्त्वज्ञानी गुरुदेव की स्तुति प्रतिपादित है।

(४) अपूर्ण। —व प. १२०६

(५) व्यास कृत। स्कन्दपुराण के उत्तर खण्ड से गृहीत। इस पर सुदर्शन की टीका है। —कैट् कैट्. १।१५६, ३।३३

उ०—प्राणतोषिणी मे।

गुरुतन्त्र

लि०—(१) २६४ श्लोक का यह ग्रन्थ ५ पटलो मे पूर्ण है। इसमे गुरु के ध्यान, पूजा, माहात्म्य आदि विषय वर्णित है। —रा० ला० २४७

(२) विवरण रा० ला० २४७ मे देखें। —ए० व० ५९१८

(३) श्लोक स० १००, पटल ५। —अ० व० १०२३१

(४) पूर्ण। —व० प० ५०५

(५) (क) श्लोक स० ९२, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० १९५, पूर्ण। (ग) श्लोक स० २६१, पूर्ण। (घ) श्लोक सं० १६२, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४५८६, (ख) २४७२१, (ग) २४७८३, (घ) २५७४०

उ०—प्राणतोषिणी, महामोक्षतन्त्र तथा कालिकासपर्याविधि मे।

गुरुदीक्षातन्त्र

उ०—शाक्तानन्दतरङ्गिणी मे।

गुरुपंक्तिपूजाविधि

लि०—गुरुपक्तिपूजाविधि गुरुपङ्क्तिपञ्चाङ्ग के ५ अङ्गोंमे अन्यतम हो सकती है —ने० द० १३६१

गुरुपञ्चाङ्ग

लि०—(१) गुरुयामलान्तर्गत, हर-गौरी सवादरूप। इसमे (१) श्री गुरुपटल, (२) गुरु-नित्यपूजापद्धति, (३) गुरुकवच, (४) गुरुमन्त्रगर्भ सहस्रनाम तथा (५) गुरु-स्तोत्र वर्णित है।

(२) गुरुपञ्चाङ्ग—गुरुसहस्रनाम मात्र, श्लोक स० २४५। पूर्ण।

—डे० का० २२८ (१८८३-८४ ई)

(३)—(१) गुरुपटल, रुद्रयामल से गृहीत, (२) गुरुपूजापद्धति, (३) गुरुसहस्र-नाम, निगमयोगसार से गृहीत, (४) गुरुस्तोत्र, निगमयोगसार से गृहीत तथा ब्रह्मयामल और रुद्रयामलान्तर्गत। —कैट् कैट् १।१५६, २।३१, ३।३२ तथा ३।३४

(४)—(१) गुरुपटल, रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० ६२, पूर्ण। (२) गुरुपूजा-पद्धति, श्लोक स० १२२, पूर्ण। —र० म० ४७९५, ४७५०

(५)—(क) गुरुपटल, श्लोक स० ४८। (ख) गुरुपूजाविधि। (ग) गुरुसहस्र-नाम। (घ) गुरुस्तुति।

—स० वि० (क) २५६७४, (ख) २६६९३, (ग) २४४५३, (घ) २२३८८

(६) (क) गुरुसहस्रनामस्तोत्र, समोहनतन्त्रान्तर्गत, हर-पार्वती सवाद रूप। श्लोक स० ११८। भगवन्, कलियुग मे आर्त लोग किस उपाय से सद्गति को प्राप्त हो? पार्वतीजी के इस प्रश्न पर भगवान् शिवजी ने अति सुगोप्य सनातन ज्ञानरूप यह गुरुसहस्रनाम सुनाया। (ख) गुरुसहस्रनाम, निगमयोगसारान्तर्गत। इसे कुलभैरवी देवी ने शङ्करजी के पूछने पर उन्हे दिया। यह परम गोपनीय और ब्रह्मज्ञानप्रद है। इसकी श्लोक स० १३३ है। (ग) पार्वती जी के प्रश्न करने पर शिवजी ने इस गुरुसहस्रनामस्तोत्र का उपदेश दिया। यह गुरुमाहात्म्य का द्योतक है। जिस घर मे यह स्तोत्र रहता है वहाँ गुरु कृपा से शिष्य ब्रह्मसायुज्य को प्राप्त हो जाता है।

—रा० ला० (क) ४०७०, (ख) ४०८३, (ग) ४१००

(७) (क) गुरुसहस्रनामस्तोत्र—समोहनतन्त्रान्तर्गत, शिव-पार्वती सवादरूप वि० विवरण रा० ला० ४०७७ आदि मे दिया गया है। (ख) निगमयोगसारान्तर्गत गुरु-सहस्रनामस्तोत्र महादेव-पार्वती सवादरूप है। (ग) गुरुस्तवराज यह वामकेश्वर-तन्त्रान्तर्गत हरगौरी-सवादरूप है। इसमे ८ श्लोक है। यदि कोई पूर्व की ओर मुँह कर हाथ जोड कर इन ८ श्लोको का पाठ करे तो पुरश्चरण के विना भी उसे मन्त्रसिद्धि प्राप्त हो जाती है। —ए० व० (क) ६७९४, (ख) ६७९५, (ग) ६७९०

(८) गुरुस्तोत्रकवचसग्रह। इसमे निम्ननिर्दिष्ट ४ स्तोत्र है—१ गुरुपरब्रह्मस्तोत्र, निगमयोगसारान्तर्गत।

(२) गुरुपरब्रह्मस्तोत्र कवच (निगमयोगसारान्तर्गत)।

(३) गुरुकवच, समयातन्त्रान्तर्गत।

(४) गुरुपङ्क्तिकवच, गुरुतन्त्रान्तर्गत।—ए० व० ६८०४

(९) गुरुस्तोत्र, कुब्जिकातन्त्रान्तर्गत। पूर्ण।—व० प० ७९८ (क)

गुरुपादपद्मप्राप्ति

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत । इसमे गुरु द्वारा आत्मज्ञान का पथ प्रदर्शन और उनके चरणो से आशीर्वाद-प्राप्ति प्रतिपादित है। —बी० कै० १३१२

(२) गुरुपादपद्म-प्राप्ति (परमहस की) रुद्रयामल से गृहीत।

—कैट्. कैट्. १।१५६

गुरुपारम्पर्य

लि०—(१) (क) श्लोक स० ४००। (ख) श्लोक स० ८०, महाम्नायान्तर्गत।

—अ० व० (क) ५६४८, (ख) ६०२६ (क)

(२) श्लोक स० लगभग ४३०, पूर्ण। —स० वि० २६२०३

गुरुपालीश्वरपूजाविधि

लि०—श्लोक स० ७७५। समलाम्बा सहित श्री गुरुपालीश्वर नामक महाप्रभु की पूजाविधि इसमे वर्णित है। —ट्रि० कै० ९४१

गुरुप्रशंसा

लि०—इसमे गुरुमहिमा वर्णित है एव साथ ही साथ गुरु के प्रति आदर और अनादर करने का शुभ और अशुभ फल भी वर्णित है। —ए० व० ६७९७ (क)

गुरुमण्डलपूजनविधि

लि०—श्लोक स० ७५, पूर्ण। —र०म० ९२४

गुरुमण्डलादिपूजनविधि

लि०—(१) श्लोक स० ४००, अपूर्ण। —र० म० १०७१

(२) —कैट् कैट् २।३१

गुरुमन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० २५०। —अ० व०५६४४

(२) श्लोक स० २७। —स० वि० २५४१४

गुरुपूजाक्रम

लि०—कैलासनाथ कृत। —कैट् कैट्. १।१५६

गुरुमहाविद्या

लि०—श्लोक स० ४००। —अ० व० १०७१९

गुरुरहस्याङ्गपूजाविधानस्तोत्र

लि०—(१) विश्वसारतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० १३६, पूर्ण।

—र० म० ४७६१

गुर्वचनतन्त्र

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

गुह्यकातन्त्र

लि०—महागुह्यतन्त्र की श्लोक स० १२००० है। उसी का महागुह्यातिगुह्य अंश १३०० श्लोक का यह तन्त्र है। यह श्री गुह्यकाली से सम्बद्ध है।

—ने० द० २।३७७ (ख)

गुह्यकालीपूजा

लि०—इसमे गुह्यकाली की पूजा का विवरण दिया है एव कलशस्थापन, शखस्थापन, अर्घ्यस्थापन, तर्पण, अमृतेश्वरी-पूजन आदि विषय वर्णित हैं। —ए० ब० ६३१८

गुह्यकालीसहस्रनाम

लि०—श्लोक स० २७०, पूर्ण। भैरव-भैरवी सवादरूप यह सहस्रनाम स्तोत्र वाला-गुह्यकालिकातन्त्ररहस्यान्तर्गत है। —ए० ब० ६६५०

गुह्यकाल्ययुताक्षरमालातन्त्र

लि०—(क) श्लोक स० ३८०, पूर्ण। यह महाकालसहितोक्त तथा महाकालोपासित है। (ख) श्लोक स० २००, पूर्ण। महाकालसहितोक्त। (क) मे उक्त मन्त्र साकल्येन इसमे प्रतिपादित नही हैं।

—ए० ब० (क) ६३१६, (ख) ६३१७

गुह्यचक्रतन्त्र

श्रीकण्ठी के अनुसार यह चतु षष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है।

गुह्यतन्त्र

उ०—आक्सफोर्ड १०९ (क) तथा,एल् डी (ङ) मे इसका उल्लेख है।

—कैट् कैट् १।१५७

गुह्ययोगिनीतन्त्र

उ०—अभिनवगुप्त द्वारा उल्लिखित। —इ० आ० पेज ८४०

गुह्यसिद्धितन्त्र (शास्त्र)

लि०—(१) यह वामाचार का ग्रन्थ है। इसका विषय अति रहस्य है।

—ने० द० १६४८ (ट)

(२) —कैट् कैट् ३।३४

गुह्यातन्त्र

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी मे।

गुह्यातिगुह्यतन्त्र

लि०—(१) इसमे विभिन्न शक्तियो की पूजा और माहात्म्य वर्णित है।

—ए० व० ६००५

(२) विद्योत्पत्तिमात्र।

—रा० ला० ३३४, ४४८

गूढार्थादर्श

लि०—(१) यह जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथ (शिवानन्दनाथ) विरचित ज्ञानार्णव-तन्त्र-टीका है। यह टीका २३ पटलो तक रची गयी है। इसमे ये विषय प्रतिपादित हैं—भगवन्, आप क्या जपते है ? पार्वतीजी के इस प्रश्न का महादेवजी द्वारा उत्तर। त्रिपुरा मन्त्र की उपासना के प्रकार आदि। अन्तर्याग, मन्त्रपूजा प्रकार, बलिदान प्रकार, पञ्च-सिंहासन स्थित त्रिपुरा का विवरण, त्रिपुराभैरवी के बीज आदि, महाविद्या के बीज, त्रिपुरा के तीन भेद तथा उनके मन्त्र आदि का निर्देश, श्रीविद्या के १० भेद, षोडशी के चार भेद, आसनशुद्धि, अर्घस्थापन, नित्यपूजा प्रकार आदि। —रा० ला० ८२६

(२) भडोपनामक काशीनाथ विरचित। श्लोक संख्या ६८५, पूर्ण। मन्त्रसार-समुच्चय-टीका (?)। —स० वि० २६४२६

गूढावतार

लि०—विश्वसारतन्त्रान्तर्गत, शिव-पार्वती सवादरूप। यह विश्वसारतन्त्र के उत्तर-खण्ड का ११वाँ पटल मात्र है। इसमे भगवान् विष्णु का महाप्रभु चैतन्यदेव के रूप मे अवतरण तथा चैतन्य गायत्री वर्णित है। —ए० व० ६०३८

गोपालकल्प

लि०— —कैट् कैट् १।१६१, २।३२

गोपालपञ्चाङ्ग

लि०—(१) इसमे निम्न लिखित ५ विषय हैं—

१ गोपाल पटल—अङ्गन्यास, ध्यान, विन्दुवीज, अङ्गमन्त्रादि रूप। २ गोपाल-मन्त्रपद्धति। ३ गोपालसहस्रनाम, समोहनतन्त्र मे उक्त हर-पार्वती सवादरूप। ४ 'त्रैलोक्यमगल गोपालकवच, सनत्कुमारसहितान्तर्गत तथा ५. गोपालस्तवराज गौतमीतन्त्रोक्त। —नो० स० २।५७

(२) (क) गौतमीतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० ७७५, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ४७०। —र० म० (क) ४७५९, (ख) ४८५९

(३) (क) श्लोक स० ७८२, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ७६०, पूर्ण। —स० वि० (क) २४६७४, (ख) २६३५०

(४) (क) निम्नलिखित गोपालपटलादि—५ ग्रन्थ पृथक् पृथक् दिये गये हैं गोपालपटल, गोपालपद्धति, गोपालकवच, गोपालपञ्जर, गोपालहृदय, गोपालसहस्रनाम, गोपालस्तवराज, 'जित ते' स्तोत्र आदि। (ख) गोपालपद्धति। श्लोक स० २१५, अपूर्ण। —स० वि० (क) २६४४५, (ख) २४३१०

(५) १ गोपालपटल, हरिव्यासदेव विरचित, २ गोपालपूजापद्धति गोपाल मिश्र कृत, ३ गोपाल जगन्मङ्गल कवच, ४ गोपालरहस्य सहस्रनाम-स्तोत्र सम्मोहनतन्त्रा-न्तर्गत तथा गोपालसहस्रनामस्तोत्र, ५ गोपालस्तव एव गोपालस्तवराज रामानन्द द्वारा काशीखण्ड से उद्धृत। —कैट् कैट् १।१६१, १६२, १६३

(६) गोपालसहस्रनाम, समोहनतन्त्रान्तर्गत (स्तोत्ररत्नाकर, मद्रास मे मुद्रित गोपालसहस्रनाम से यह मिलता-जुलता है)। —ए० ब० ६७५९

(७) शिवकृत, गौरी-शङ्कर सवादरूप। इसकी श्लोक स० २५७ है। इसके माहात्म्य के विषय मे लिखा है—जो इस स्तोत्र का पाठ करता है उसके घर मे श्रीगोपाल का सदा निवास रहता है। —रा० ला० २९२५

(८) समोहनतन्त्रान्तर्गत। पूर्ण। —व प ३१६

गोपालपद्धति

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

गोपालरहस्य

लि०—(१) मुकुन्दलाल कृत। —कैट्. कैट्. १।१६२

(२) समोहनतन्त्रान्तर्गत गोपालसहस्रनामस्तोत्र का ही नामान्तर गोपालरहस्य या गोपालरहस्यसहस्रनाम स्तोत्र है। —कैट्. कैट्. २।३३

(३) गोपालपटल के अन्तर्गत दी गयी गोपालपद्धति आदि की तालिका मे गोपालरहस्य भी एक पुस्तक है, उसका विवरण कुछ नही ज्ञात है। —स० वि० २६४४५

गोपालसंहिता

लि०—दे० गौरीकञ्चुलिका —कैट्. कैट्. १।१६३

गोपालार्चनविधि

लि०—(१) पुरुषोत्तमदेव विरचित। —कैट्. कैट्. १।१६३

(२) कर्ता का नाम नही दिया है। २ प्रतियाँ हैं।

—म० द० ३०६७, ३२९६

गोपीतन्त्र

उ०—महामोक्षतन्त्र मे।

गोप्यगोपनलीलामृत

उ०—महामोक्षतन्त्र मे।

गोमुखलक्षण

लि०—ललितागमान्तर्गत। गोमुख अर्थात् गोमुखी पाँच प्रकार की बतलायी गयी है—लाल, हरी, सफेद, नीली और चितकबरी। इससे सब मन्त्रो की सिद्धि की जाती है। वशीकरण मन्त्र सिद्ध करना हो तो लाल, आकर्षण-मन्त्र सिद्ध करना हो तो हरी, स्तभन और उच्चाटन मन्त्र की सिद्धि करनी हो तो सफेद, मारण-मन्त्र की सिद्धि करनी हो तो नीली एव मोहन मन्त्र की सिद्धि के लिए चितकबरी गोमुखी होनी चाहिए। वशीकरण मे ९ अगुल की, आकर्षण मे २५ अगुल की, स्तभन और उच्चाटन मे ३२ अगुल की तथा शत्रुनाशार्थ १५ अंगुल की गोमुखी होनी चाहिए। —म० द० ५७६२

गोरक्षशतक

लि०—(१) मीननाथ-शिष्य गोरखनाथ विरचित।

—ए० व० ६६०९ से ६६१८ तक

(२) प्राणनिरोध से किये गये योग-साधन का फल इसमे वर्णित है। इसमे कहा गया है कि जिसका मन क्षण भर के लिए भी ब्रह्मविचार मे स्थिर हो जाता है उसे सब तीर्थो मे स्नान, ब्राह्मणो को पृथ्वीदान, सहस्रो यज्ञो के अनुष्ठान, देवपूजन, पितृतर्पण और पितरो के उद्धार का फल प्राप्त हो जाता है। इसकी श्लोक स० ३२८ है।

—रा० ला० ४५१

(३) नामान्तर—ज्ञानशतक या ज्ञानप्रकाशशतक, गोरक्षनाथ कृत, इसपर मथुरानाथ शुक्ल कृत तथा शङ्कर कृत दो टीकाएँ है। —कैट् कैट् १।१६५

(४) गोरक्ष कृत। —म० द० २८३१ (घ)

गोरक्षशाबरतन्त्र

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से

गोरक्षसंहिता

लि०—(१) षट्चक्र का वर्णनमात्र, पूर्ण। —व० प० ७२१

(२) श्लोक स० २७१०, अपूर्ण। —स० वि० २५५७२

(३) गोरक्ष कृत। गोरक्षसहिताया छिन्नमस्तानामशतक।

—कैट् कैट् १।१६५

गोविन्दकल्पलता

लि०—समीराचार्य विरचित। यह ग्रन्थ १३ सग्रहो मे पूर्ण है। इसकी श्लोक स० लगभग २५०० है। इसमे प्रतिपादित विषय है—दीक्षादि का निरूपण, मन्त्र के अधिकारी आदि का निरूपण, अकडमचक्र आदि का निरूपण, मन्त्रो के चैतन्य आदि का निरूपण, कृष्ण के मन्त्र, आकार आदि का निरूपण, आचारगत मासिकपूजा का निरूपण, मन्त्र, ऋषि, छन्द आदि का निरूपण, गोपालमन्त्रग्रहण की विधि आदि का निरूपण, यजनविधि-प्रयोग आदि का निरूपण, पुरश्चरणविधि तथा मन्त्र के प्रभेद आदि का निरूपण, कुण्ड के लक्षण आदि का वर्णन आदि। —नो० स० ११।१००

गोविन्दवृन्दावनतन्त्र

वृहद्गौतमीतन्त्रान्तर्गत यह २८ पटलो मे है।

उ०—शाक्तानन्दतरङ्गिणी मे।

गौतमीतन्त्र, गौतमीयतन्त्र या गौतमीयमहातन्त्र

लि०—(१) इसमे ३३ पटल है। किसी-किसी प्रति मे ३१ पटल भी है। यह महातन्त्र है। वैष्णव तन्त्र होने पर भी इसमे शाक्त आचार के अनुसार पूजा आदि का प्रतिपादन है। —इ० आ० २५५४

(२) यह सुप्रसिद्ध वैष्णव तन्त्र है। प्रस्तुत प्रति मे ३१ पटल है, किन्तु यह ३४ पटलो मे वगानुवाद के साथ कलकत्ता मे १९२७ ई० मे प्रकाशित हो गया है। ३२ पटलो वाला इसका एक सस्करण वगलिपि मे और प्रकाशित हो गया है। इसकी वैष्णव साहित्य परिषद् कलकत्ता मे स्थित प्रति मे ३२ पटल है। —ए० व० ६००४

(३) (क) श्लोक स० १०००। (ख) श्लोक स० ९००।

—अ० व० (क) ९४००, (ख) ११२९२

(४) पूर्ण। —डे० का० (१८८२-८३)

(५) यह वैष्णवतन्त्र है। इसमे ३१ पटल है। यह वैष्णवो की सम्पूर्ण साधना और उपासनाओ की प्रक्रियाओ का प्रदर्शक है। विष्णु के विभिन्न स्वरूपो की पूजा-अर्चा इसमे प्रतिपादित है। —वी० कै० १२६५

(६) इस सग्रह मे इसकी ४ प्रतियाँ है—(क) यह ३२ पटलो मे पूर्ण है। मुद्रित सस्करण से इसमे यत्र-तत्र भेद दृष्टिगोचर होता है। (ख) अपूर्ण। (ग) राधामोहन कृत तत्त्वदीपिका टीका के साथ अपूर्ण। (घ) अपूर्ण।

—व० प० (क) २९२, (ख) ६६७, (ग) ३२६, (घ) १०७

(७) नारद प्रोक्त। पत्र स० ७५ है। —ज० का० १०१६

(८) वैष्णव महातन्त्र ३२ पटलो मे है। लिपिकाल १६९० वि०।

—म० रि० १३९

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, मन्त्रमहार्णव, आगमतत्त्वविलास, महामोक्षतन्त्र तथा सर्वोल्लासतन्त्र मे।

गौरीकञ्चुलिका

लि०—(१) यह गोपालसहिता का एक भाग मात्र है। इसमे मन्त्रोच्चारण के साथ-साथ विशेष ओपधि के उपयोग द्वारा रोगो की निवृत्ति वर्णित है। कञ्चुलिकातन्त्र के नाम से इसके कई सस्करण प्रकाशित भी हो चुके है। यह हर-गौरी सवादरूप है। गौरी-कञ्चुलिका, कञ्जलिका, कञ्चुली आदि इसके विभिन्न नाम है।

—ए० व० ६१४९

(२) हर-गौरी सवादरूप। इसमे मन्त्रो के साथ ओषधियो का निरूपण, ओषधि के उपयोग का समय आदि विषय वर्णित है। —नो० स० १।१०६

(३) श्लोक सख्या ३३०। इसमे जडी बूटियो के खोदने और उखाडने की तिथि वार, नक्षत्र आदि का नियम, विशेप-विशेष नक्षत्रो मे रोग होने पर उसके भोग काल, साध्य, असाध्य आदि का वर्णन एव दाद, प्रमेह, गण्डमाला आदि रोगो की विशेष चिकित्सा वर्णित है। शरीर-जरा को हटाने के लिए शेमर, चित्रक, निर्गुण्डी आदि का कल्प कहा गया है।

—रा० ला० ४७६

(४) (क) श्लोक स० ३००, अपूर्ण। (ख) गौरीकाञ्जलिका तन्त्र के नाम से है। इसकी श्लोक स० ३६० है। इसके विवरण मे उक्त 'ओषधिप्रकरणम्' लिखा है।

—स० वि० (क) २४९००, (ख) २५९९६

गौरीकल्प

लि०— —कैट्, कैट् १।१७१

गौरीडामर

लि०—पार्वती-ईश्वर सवादरूप। इसमे आकर्षण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, मारण आदि का विशेष रूप से वर्णन है। —ए० व० ५८५९

गौरीतन्त्र

लि०—भागवत-माहात्म्य तथा सारसग्रह मात्र।

—कैट् कैट् १।१७२, २।३४

उ०—महामोक्षतन्त्र मे।

गौरीयामल

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव तथा पुरश्चर्यार्णव मे।

ग्रहणपुरश्चरणप्रयोग

लि०—श्लोक स० २०, पूर्ण। —स० वि० २४७११

ग्रहणपुरश्चरणविधि

लि०— —कॅट्. कैट् ३।३७

ग्रहयन्त्र

लि०—भास्कर प्रोक्त, श्लोक म० १०। —अ० व० ८११२ (ग)

ग्रहयामलतन्त्र

लि०—(१) हर-पार्वती सवादरूप। नवग्रह-पूजा पर यह तान्त्रिक ग्रन्थ १८ पटलो मे पूर्ण है। इसके वर्ण्य विपय हैं—श्रीसवितृ विद्यादि तान्त्रिक तथा वैदिक सन्ध्याविधि, अभिपेकविधि, क्षेत्रादि पड्वर्गदृप्टिफल, राशियो के शील आदि, अप्टादश विव अशनादि, पथ्यापथ्य विवेक, प्राणायाम विवेक, दस महामुद्रादि विवेक, समाधिविधि, वास्तुग्रह, द्विजप्रकरण विवेक, ग्रहचरितादि निर्णय, जगद्दुर्लभ अक्षय कवच इत्यादि।

—इ० आ० २६३२

(२) इसमे वैदिकी सन्ध्या, अभिपेक आदि, जप-सख्या, ग्रहचरित आदि का वर्णन है। इमकी श्लोक सख्या लगभग ४०० है। यह प्रति ७ वे पटल मे खण्डित है।

—रा० ला० ३९८

(३) —कैट् कैट्. १।१७३, २।३४, ३।३७

उ०—प्राणतोषिणी मे।

घटतन्त्र

लि०—वारम्भणि ऋषि कृत। —कैट् कैट् १।१७४

घण्टाकर्णकल्प

लि०—आपद् उद्धारण मन्त्र युक्त, अपूर्ण। पन्ने २०। —रा० पु० ५११८

घण्टाकर्णप्रकरण

लि०— —कैट्. कैट् १।१७४

घेरण्डसंहिता

लि०—(१) —ए० व० ६१२९

(२) —कैट् कैट् १।१७४

चक्रदीपिका

लि०—रामभद्र सार्वभौम विरचित। इसमे षट्चक्रो का विवरण दिया गया है।

—ए० ब० ६६२२

उ०—तन्त्रसार मे।

चक्रनिरूपण (१)

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, उमा-महेश्वर ससादरूप। अध्याय १ से ६ तक। इसमे महाकुलाचार-क्रम से ५ चक्र, उनके आचार तथा विधि-विधान का वर्णन है। श्रीतन्त्र (रुद्रयामल) मे ५ चक्र कहे गये हैं। ऐहिक सुखदायक और मोक्षप्रद उन चक्रो का विधि-विधान के साथ पूजन करना चाहिए। वे चक्र है—राजचक्र, महाचक्र, देवचक्र, वीरचक्र तथा पशुचक्र। सुरूपा और मनोहर चारो वर्णो की कुमारियो की पूजा करनी चाहिए। उनके अभाव मे जिस किसी कुमारी की पूजा की जा सकती है। यवनी, योगिनी, रजकी, श्वपची और मल्लाह की लडकी—ये पाँच शक्तियाँ कही गयी है। यन्त्रराज की पूजा मे तुलसीदल, विल्वदल और धात्रीदल का उपयोग करने से अति शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है।

—म० द० ५६११, ५६१२

चक्रनिरूपण (२)

नामान्तर—षट्चक्रक्रम तथा षट्चक्रप्रभेद।

लि०—पूर्णानन्द विरचित। इसमे तन्त्रो के अनुसार, षट्चक्रो के भेदक्रम से उद्भूत परमानन्द विस्तारपूर्वक वर्णित है। इस पर रामवल्लभ विरचित सजीविनी तथा रामनाथ सिद्धान्त विरचित दीपिका, ये दो टीकाएँ है।

—रा० ला० २२७, ४५२, २१३०

चक्रभेद

लि०—(१) (क) श्लोक स० १०८, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ९५, रुद्रयामलान्तर्गत, पूर्ण।

—स० वि (क) २४०८५, (ख) २६१५६

(२)

—कैट् कैट् २।३५

(३) श्लोक स० २५०। विशेष-विशेष मन्त्र और चक्र इस मे प्रतिपादित हैं।

—ट्रि० कै० १०२६ (ग)

चक्रभेदनिर्णय

लि०—कुलार्णवतन्त्रान्तर्गत। —कैट् कैट् १।१७५

चक्रमेलनक्रमार्चन

लि०—श्लोकसख्या ३००, पूर्ण। —सं० वि० २६१८३

चक्रराज

उ०—सौभाग्यभास्कर मे।

चक्रविचार

लि०—तन्त्रसारोक्त, श्लोक स० १७५, पूर्ण।

—स० वि० २५५७०

चक्रविद्या

लि०—शिव-पार्वती सवादरूप। इसमे शक्ति देवी के प्रतिनिधिभूत चक्र की पूजा प्रतिपादित है। पूर्ण। —म० द० ५६१३

चक्रसंकेतचन्द्रिका

लि०—जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथ विरचित। इसमे वामकेश्वरतन्त्र के भाग-रूप योगिनीतन्त्र के कतिपय पद्य हैं। उन पर काशीनाथ विरचित सक्षिप्त टीका है। यह टीका अमृतानन्दनाथ की टीका से मिलती-जुलती है। —ए० व० ६१४४

चक्रोद्धारसार

लि०—जयदेव-पुत्र विनायक विरचित। श्लोक स० २०००। आदि और अन्त मे खण्डित, अपूर्ण। —अ० व० १२९८७

चण्डभास्करपताका

लि०—दामोदर शास्त्री विरचित। श्लोक स० ३००। —अ० व० ११५०४

चण्डभैरवतन्त्र

श्रीकण्ठी के मतानुसार चतुष्षष्टि (६४) भैरवागमो के अन्तर्गत। भैरवाष्टक मे अन्यतम।

चण्डरोषणमहातन्त्र

लि०—कल्पवीराख्य नीलतन्त्रान्तर्गत, २५ पटलो मे पूर्ण।

—ने० द० २ य भाग पृ० २४०, पक्ति २०

चण्डिकाक्रम

लि०—श्लोक स० २००। —अ० व० ११९८०

चण्डिकानवाक्षरीमन्त्रप्रकाशिका

लि०—विद्यारण्य विरचित। श्लोक स० ३००। —अ० व० ६९३९ (क)

चण्डिकापूजा

लि०—(१) इसमे चण्डिका देवी की सर्वाङ्ग-पूजा और स्तोत्र वर्णित हैं। जो पुरुष पुष्पाञ्जलि, नमस्कार, जप और धर्म निवेदन द्वारा सदा चण्डिका देवी का ध्यान करता है, उसे ही सब सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। —म० द० ५६१४

(२) चण्डिका की नित्य पूजा, चण्डिका-पूजाविधान तथा चण्डिका-पूजाविधि—ये उपर्युक्त ग्रन्थार्थ के ही प्रतिपादक हैं। —कैट् कैट् १।१७६

चण्डिकार्चनक्रम

लि०—कृष्णनाथ विरचित। —कैट् कैट् १।१७६

चण्डिकार्चनचन्द्रिका

लि०—वृन्दावनशुक्ल कृत। —कैट् कैट् १।१७६

चण्डिकार्चनदीपिका

लि०—(१) जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथभट्ट विरचित। इसमे नवरात्रोत्सवके सम्बन्ध मे प्रमाण और कर्तव्य का प्रतिपादन करते हुए नवरात्रोत्सव का विस्तार से वर्णन है। —ए० व० ६४०५

(२) पन्ने २०। —रा० पु० ४७०२

चण्डिकाशतक

लि०—(१) नामान्तर—चण्डीशतक। बाणभट्ट विरचित। —इ० आ० २६२५

(२) दे०, चण्डीशतक बाणभट्ट कृत। —कैट् कैट् १।१७६, २।३६

चण्डिकास्तोत्र

लि०—(१) चतुर्भुजी टीका सहित। यह टीका पूरे १३ अध्यायो मे है। इसकी श्लोक स० लगभग १५०० है। —डे० का० २२५ (१८८३–८४ ई०)

(२) मार्कण्डेयपुराण से गृहीत। दे०, देवीमाहात्म्य या चण्डीस्तोत्र।

—कैट् कैट् १।१७६

चण्डिकाहृदय

लि०—(१) श्लोक स० २६, पूर्ण। —स० वि० २५३१४

(२) (क) पूर्ण। (ख) अपूर्ण।

—म० द० (क) ६२७८, (ख) ३२३ (क)

चण्डीटीका

लि०—कामदेव कविवल्लभ विरचित। श्लोक स० १०००। यह मार्कण्डेयपुराणान्तर्गत चण्डीस्तोत्र या दुर्गासप्तशती का व्याख्यान है। —रा० ला० ३५७

चण्डीनवार्णपटल

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। इसमे चण्डी के नवार्णमन्त्र सम्बन्धी विस्तृत विवरण है।

—ए० व० ५८६९

चण्डीपद्धति

लि०—श्लोक स० ८०। —अ० व० ५६९६

चण्डीपाठ

लि०—श्लोक सख्या ३००। —अ० व० ७७३

चण्डीपाठक्रम

लि०—(१) वाराहीतन्त्रान्तर्गत। इसमे क्रोडतन्त्रान्तर्गत शतावृत्ति चण्डीपाठ का फल, हरगौरीतन्त्रान्तर्गत काम्य पाठविधि तथा मरीचितन्त्रान्तर्गत चण्डीपाठक्रम भी सनिविष्ट है। —स० वि० २६५०७

(२) मरीचिकल्प से गृहीत। श्लोक स० २००। —अ० व० ३४४२

चण्डीपाठप्रयोगविधि

लि०—पन्ने २३। —रा० पु० ५८८६

चण्डीपुराण

लि०—मार्कण्डेयमुनि विरचित। इसमे वर्णित विषय है—दक्ष को शाप, सती का देहत्याग, पीठो का, जहाँ सती के विभिन्न अङ्ग गिरे थे, माहात्म्य, मधुकैटभवध, दुन्दुभिवध,

घोरवध, नमुचि और चिक्षुर का वध, महिषासुरवध, सुन्दोपसुन्दवध, सनत्कुमारोपाख्यान तथा मुरवध। —रा० ला० ३७०

चण्डीपूजाविधान

लि०—(१) डमरुकाकल्प से गृहीत। श्लोक स० १२००, अपूर्ण।

—अ० ब० ३०४५

(२) इसमे दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती की पूजा वर्णित है।

—म० द० ५६१५

चण्डीपूजाविधि

लि०—(१) चण्डिकाकल्पोक्त। चण्डिका देवी के उपासको के दैनिक कृत्यो के साथ देवी की पूजाप्रक्रिया इसमे प्रदर्शित है। —ए० व० ६४१५

चण्डीप्रयोगविधि

लि०—(१) श्लोक सख्या ६००। —अ० व० १७३१

(२) नागोजिभट्ट विरचित। —रा० पु० ५८१४

(३) नागोजिभट्ट विरचित सप्तशती-मन्त्रविभाग के साथ, कात्यायनीतन्त्रान्तर्गत। श्लोक स० ४६२। —स० वि० २६५६३

चण्डीरहस्य

लि०—अपूर्ण। —म० द० ३९७७ (ग)

उ०—सौभाग्यभास्कर मे।

चण्डीविधान

लि०—(१) (क) श्लोक स० ८००। (ख) श्लोक स० ३००। श्रीनिवास कृत।

—अ० व० (क) ९०७, (ख) ५४३६

(२) इसमे चण्डी देवी की पूजा प्रतिपादित है तथा उसके अगभूत होम, ब्राह्मण-भोजन आदि भी वर्णित है। —बी० कै० १२५२

(३) अपूर्ण। —म० द० २१९६ (क)

चण्डीविधानपद्धति

लि०—कमलाकरभट्ट कृत। पूर्ण। —डै० का० ३८६ (१८८२-८३ ई०)

चण्डीशतक

लि०—वाणभट्ट विरचित। दे०, चण्डिकाशतक।

चण्डीविवरण

लि०—तीर्थस्वामी विरचित। श्लोक स० ८०। —अ० व० १०२५८

चण्डीसपर्याकल्प

लि०—श्रीनिवासभट्ट विरचित। श्लोक स० ११००। —अ० व० ११४१८

चण्डीसपर्याक्रमकल्पवल्ली

लि०—(१) श्रीनिवास कृत। ५ स्तवको मे पूर्ण। प्रमाणनिरूपण, प्रात स्नान आदि कर्म, नित्य पूजा-प्रयोग, विविध काम्य प्रयोग आदि विषय इसमे वर्णित है।

—ए० व० ६४०४

(२) श्रीनिवासभट्ट विरचित। श्लोकसख्या १५४६ और स्तवक स० ५। इसमे नवाक्षर मन्त्र का निरूपण, देवीमाहात्म्य कथन, चण्डीपूजा मे अभिषेक, तर्पण, अर्चन, आसन तथा विविध न्यास, पीठपूजा, चण्डीपूजाप्रयोग, मानसपूजाविधि, नैमित्तिकार्चन-विधि, दमनकपूजाविधि आदि विषय वर्णित है। —रा० ला० १८५५

(३) श्लोक स० १२०० तथा स्तवक स० ४। —अ० व० ५५८६

(४) (क) श्रीनिवासाचार्य कृत। श्लोक स० ५००। (ख) श्रीनिवासाचार्य कृत श्लोक स० १४०, अपूर्ण। (ग) श्रीनिवासाचार्य कृत श्लोक स० लगभग ५७०, अपूर्ण, लिपिकाल १६४८ शकाब्द। (घ) श्रीनिवासभट्ट कृत। यह ९ अध्यायो मे पूर्ण है तथा इसका आकार वृहत् (३००० श्लोको से भी ऊपर) प्रतीत होता है। फिर भी यह अपूर्ण कहा गया है। सभवत यह पूर्वोक्त औरो (क), (ख) और (ग) से अतिरिक्त है।

—स० वि० (क) २४८०५, (ख) २४८०६, (ग) २४८८३, (घ) २५६०९

चण्डीस्तोत्रक्रम

लि०—श्लोक स० लगभग १८०। —डे० का० (१८८३-८४ई०)

चण्डीस्तोत्रप्रयोगविधि

लि०—नागोजिभट्ट कृत, श्लोक स० लगभग ५६०।

—डे० का० २२७ (१८८३-८४ ई०)

चण्डीस्तोत्र (अञ्जलि) मूर्तिरहस्यटीका

लि०—श्रीजयसिंह मिश्र विरचित, श्लोक स० ३४५।

—डे० का० २२८ (१८८३-८४ ई०)

चण्डीस्तोत्रव्याख्या

लि०—नागोजिभट्ट कृत। पन्ने ६१। —रा० पु० ७५०६

चतुःशती (१)

लि०—(क) नारदीय। पार्वती-ईश्वर सवादरूप। इसमे ४०० श्लोको द्वारा शक्ति के नित्या, महात्रिपुरसुन्दरी, कामेश्वरी, भगमालिनी, नित्यक्लिन्ना, भेरुण्डा इत्यादि १६ स्वरूपो का प्रतिपादन करते हुए उनके पूजनार्चन, बीजमन्त्र आदि का प्रतिपादन किया गया है। इसका दूसरा नाम नित्याषोडशिकार्णव भी है। छह पटलो मे पूर्ण। (ख) इसमे अन्यान्य बहुत-से ग्रन्थो के साथ टीका भी है। अपूर्ण। (ग) एक से पाँच पटल तक, अपूर्ण। (घ) पूर्ण। —म० द० (क) ५६१६, (ख) ५६१७, (ग) ५६१८, (घ) १५१७६

(२) पार्वती-ईश्वर सवादरूप चतु शती ऋजुविमर्शिनी व्याख्यासहित, पूर्ण।

—म० द० ४४४३

उ०—आगमकल्पलता, योगिनीहृदयदीपिका तथा चिद्वल्ली मे।

चतुःशतीटीका

लि०—(१) रत्नेश-शिष्य विद्यानन्द विरचित। ५ पटलो मे पूर्ण। देवी त्रिपुर-सुन्दरी की पूजा का प्रतिपादक महान् तान्त्रिक ग्रन्थ बहुरूपाष्टक की अशभूत चतु शती पर यह व्याख्यान है। इसका नाम वामकेश्वर या अर्थरत्नावली है। —क० का० २०

(२) (क) विद्यानन्दनाथ विरचित अर्थरत्नावली पाँच पटलो तक। (ख) विद्या-नन्दनाथ विरचित अर्थरत्नावली पाँच पटलो तक। पूर्ण। (ग) विद्यानन्दनाथ विरचित अर्थरत्नावली अपूर्ण।

—म० द० (क) ५६१९, (ख) ५६२०, (ग) ५६२१,

(३) (क) शिवानन्द मुनि कृत ऋजुविमर्शिनी, पूर्ण।

(ख) शिवानन्द मुनि कृत ऋजुविमर्शिनी, पूर्ण।

—म० द० (क) ५६२२, (ख) ५६२३

चतुःषष्टिभैरवपूजा

लि०—पूर्ण। —म० द० १४६६३

चतुःषष्टियोगिनीनाम

लि०—योगिनी के मन्त्र, यन्त्रादि सहित। श्लोक स० ५१, पूर्ण।

—स०. वि २५६१०

चतुःषष्टियोगिनीपूजन

लि०—श्लोक स० ६०। —अ० व० ८१७७

चतुःषष्टियोगिनीपूजा

लि०—पूर्ण। —म० द० १४६६२

चतुर्मतसारसंग्रह

लि०—अप्पय्यदीक्षित विरचित। श्लोक स० ६००। एक-सी दो प्रतियाँ हैं।

—अ० व० ७१०९, ७०९९

चतुर्विंशतिगायत्री

लि०—श्लोक सं० १२०। —अ० व० ५३४१

चन्द्रज्ञान

लि०—चन्द्रहाससहितान्तर्गत यह शिव-चन्द्र संवादरूप है। इसमे ससार की विविध वस्तुओ की वास्तविक प्रकृति के सम्बन्ध मे विवेचन है। —ए० व० ६०५७

चन्द्रज्ञानतन्त्र

उ०—खेमराज ने इसका उल्लेख किया है। दे०, Hall पेज १९७ तथा Oxford १०९ (क) —कैट् कैट् ११८०

चन्द्रज्ञानविद्या

उ०—सौन्दर्यलहरीटीका लक्ष्मीधरी, शिवसूत्रविमर्शिनी, सौभाग्यभास्कर, महार्थ-मञ्जरी-परिमल तथा वीरशैवागमचन्द्रिका मे।

चन्द्रज्ञानागमसंग्रह

लि०—(१) (क) शिव-पार्वती सवादरूप यह १५ पटलों मे पूर्ण है। उनमे प्रतिपादित विषय हैं—षडाम्नायो के लक्षण, पीठो के लक्षण, श्रीचक्र-लक्षण, चक्र के मध्य के देवताओ का प्रतिपादन, श्रीविद्या की उपासना की प्रशसा, श्रीविद्यासन्ध्यानुष्ठान, श्री-

विद्यान्यास, श्रीविद्याजपकल्प, पूजा के स्थान तथा समय का निरूपण, चक्र की आराधना का फल, शक्तिपूजा का फल, रहस्य शाक्त आचार और दीक्षाविधि, मन्त्रार्थ प्रतिपादन आदि। (ख) पटल ३ से ७ तक तथा १२ से १५ तक। अपूर्ण।

—म० द० (क) ५६२४, (ख) ५६२५

(२) —कैट् कैट् ३।३९

चन्द्रज्ञानागमसंग्रहरहस्य

लि०—अपूर्ण। —म० द० ६२२ (ग)

चन्द्रपीठ

उ०—मन्त्रमहार्णव, पुरश्चर्यार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव मे।

चन्द्रयामल

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे।

चन्द्रलेखा

श्रीकण्ठी के अनुसार चतु षष्टि (६४) भैरवागमो के अन्तर्गत वागीशाष्टक मे अन्यतम।

चन्द्रशेखरपद्धति

लि०—वाराहीतन्त्रान्तर्गत, पूर्ण। —व० प० ११८३

चन्द्रहाससंहिता

लि०—शिव-चन्द्र सवादरूप। इसमे गूढ शारीर ज्ञान वर्णित है। केवल चन्द्रज्ञान मात्र, श्लोक०स० २२५, पूर्ण। —ए० व० ६०५७

चन्द्रा

श्रीकण्ठी के अनुसार चतु षष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत। मङ्गलाष्टक मे अन्यतम।

चन्द्रांशु

श्रीकण्ठी के मतानुसार (१८) अष्टादश रुद्रागमो के अन्तर्गत।

चन्द्रिका

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव मे।

चन्द्रोन्मीलन

लि०—यह वहुत-से ग्रन्थो से सगृहीत है। इसमे रुद्रयामल, ब्रह्मयामल, विष्णुयामल, उमायामल और वृद्धयामल—इन पाँच यामलो के उद्धरण विशेष रूप से लिये गये हैं। इसमे वहुत विषय वर्णित हैं। यह ४९ पटलो मे पूर्ण विशाल ग्रन्थ है।

—वी० कै० १२६३

चन्द्रोन्मीलनतन्त्र

लि०—श्रीमधुसूदन कृत। —कैट्. कैट् ११८२

चमत्कारचिन्तामणि

लि०— —कैट् कैट्. ११८३

चलनसूत्र

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

चामुण्डातन्त्र

उ०—कृष्णानन्द कृत तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, सौन्दर्यलहरीटीका लक्ष्मीवरी, चैतन्यगिरि कृत विष्णुपूजापद्धति तथा आगमतत्त्व-विलास मे।

चामुण्डापटल

लि०—वाराहीतन्त्र से गृहीत, श्लोक स० ६३। —अ० व० ११७४७ (क)

चामुण्डापद्धति

लि०—ज्ञानार्णवतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० ६००। —अ० व० ९७६० (क)

चामुण्डाप्रयोग

लि०—(क) श्लोक स० ३०, अपूर्ण। (ख) मातृकाभेदतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० ४४, पूर्ण। —स० वि० (क) २५७२०, (ख) २६४७८

चामुण्डायन्त्रपूजनविधि

लि०—श्लोक स० ३५, अपूर्ण। —र० म० ३४९६

चालिकातन्त्र

श्रीकण्ठी के मतानुसार चतु षष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत।

चिच्चन्द्रिका

उ०—आगमकल्पलता तथा तन्त्रकौमुदी मे।

चिच्छक्तिसंस्तुति

योगिनाथ विरचित।

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

चिञ्चिणीमतसारसमुच्चय

लि०—यह १२ पटलो मे पूर्ण मौलिक तन्त्र है। इसके १ म श्लोक से यह सूचित होता है कि चिञ्चिणीमत सिद्धनाथ ने, जो सकल योगियो मे अन्यतम तथा नाथ उपाधि से विभूषित थे, स्थापित किया था। इसका सम्बन्ध वामाचार तथा पश्चिम क्रम से है। इसके प्रारम्भ श्लोक मे उस समय प्रचलित धार्मिक कृत्यधाराओ की गणना की गयी है। यह ग्रन्थ तान्त्रिक क्रमविकास के आरभिक काल से सम्वद्ध है। —ने० द० १।७६९

चित्कलामहामन्त्र

लि०—श्लोक स० २०। —अ० व० ५६८७

चित्रिकातन्त्र

श्रीकण्ठी के मतानुसार चतु षष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत।

चिदमृततन्त्र

(चण्डीविधान मात्र)

लि०— —कैट् कैट् ३।४०

चिदम्बर

सर्वोल्लास के अनुसार चतु षष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत।

चिदम्बरकल्प

लि०—श्लोक स० १३००। —अ० व० ९८१२

चिदम्बरतन्त्र

लि०—यह शैव तन्त्र है। इसकी श्लोक स० १०००० है।

—अ० व० १०६५९

चिदम्बरनटतन्त्र

लि०—चिदम्बरनटतन्त्रे दक्षिणामूर्तिसहस्त्रनाम। —कैट् कैट् २।३८
उ०—सौभाग्यकल्पद्रुम मे।

चिदम्बरनटनमन्त्रकल्प

लि०—अपूर्ण। —म० द० ७८३३

चिदम्बरपटल

लि०—श्लोक स० १५००, अपूर्ण। यह शैव तन्त्र है। —अ० व० १०७१३

चिदम्बररहस्य

लि०—(१) शैवतन्त्र। श्लोक स० ७२००। —अ० व० ३४४४

(२) (क) यह ग्रन्थ ६४ पटलो मे पूर्ण है। वर्तमान प्रस्तुत प्रति मे १० वाँ और १२ वाँ पटल नही है। अपूर्ण, श्लोक, स० लगभग १६१। (ख), पूर्ण। पर इसका आकार (क) प्रति की अपेक्षा अत्यन्त लघु प्रतीत होता है। पटल सख्या भी इसमे नही दी गयी है। —स० वि० (क) २४९४७, (ख) २५४६३

(३) कैट्. कैट्. १।१८८, ३।४०

(४) पूर्ण। —म० द० ७८३४

चिदानन्दकेलिविलास

लि०—यह गौडपाद विरचित देवीमाहात्म्य-टीका है।

—कैट् कैट् १।१८८

चिदानन्ददर्पण

लि०—सच्चिदानन्द अवधूत विरचित, पूर्ण। —म० द० २२२३

चिदानन्दमन्दाकिनी

लि०—कृष्णदेव गण विरचित, यह ग्रन्थ तान्त्रिक दर्शन का प्रतिपादक है। इसमे प्रतिपादित विषय हैं—महामोक्ष आदि का निरूपण, जपानुष्ठानादि का निरूपण, भावनिरूपण, शारीर योगसाधनादि का निरूपण आदि।

—ए० व० ६२२९

चिद्गगनचन्द्रिका

लि०—कालिदास विरचित, पूर्ण । —म० द० ३०९७

उ०—योगिनीहृदयदीपिका, सौभाग्यभास्कर तथा महार्थमञ्जरी-परिमल मे ।

चिद्वल्लीव्याख्या

लि०—नटनानन्दकृत, श्लोक स० ३७५, पूर्ण । लिपिकाल सवत् १६७३ ई० । यह कामकलाविलास की व्याख्या है । —स० वि० २५४६४

चिद्विलास

लि०—पुण्यानन्द योगी विरचित । इसकी श्लोक सख्या ३७ है ।

—अ० व० ९९८२

उ०—चिद्वल्ली मे ।

चिद्विलासस्तव

लि०—अपूर्ण । —स० वि० २६००५

चिद्विलासस्तुति

लि०—अमृतानन्दनाथ कृत —न्यू कैट् कैट् २६३

चिन्तामणिकल्प

लि०—(१) दामोदर पण्डित विरचित, श्लोक स० ५००, अपूर्ण । यन्त्रसहित ।

—अ० ब० १०५०९

(२) श्लोक स० लगभग ५८७, अपूर्ण । —स० वि० २५३८६

चिन्तामणितन्त्र

लि०—(१) हर-पार्वती सवादरूप । इसमे योनिवीज, रहस्य योनिमुद्रा, कुण्डलिनी ध्यानादि-कथन, योनिकवच, आधार चक्र के क्रम से कवच-पाठ का फल, योनिकवच वारण का फल, षट्चक्रो के क्रम से मन्त्रार्थकथन, षड्दल का वर्णन, मणिपूर का वर्णन, हृदय-कमल का वर्णन, आज्ञापुर का वर्णन, मन्त्र के चैतन्य होने का प्रकार, मुद्रामन्त्रार्थ-निरूपण, चैतन्य रहस्य इत्यादि विषय वर्णित हैं । —नो० स० १।११५

(२) श्लोक स० २६४, पटल स० ७। षट् चक्रो मे स्थित योनिरूप के चिन्तन की विधि, त्रैलोक्यमगल-कवच, योनिमुद्रानिरूपण, मन्त्रार्थनिरूपण, मुद्रा, मन्त्रार्थ, चैतन्य इत्यादि विषय इसमे वर्णित है। —रा० ला० २६६

(३) श्लोक स० २५०, पटल ८। —अ० व० ११६८७

(४) १० म पटल तक, पूर्ण। —व० प० १४१३

(५) (क) श्लोक स० २५० तथा पटल १ से ७ तक, पूर्ण। (ख) श्लोक स० २२४, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० १८२, अपूर्ण। (घ) श्लोक स० ७२। इसमे मन्त्रार्थ, मन्त्रचैतन्य और योनिमुद्राविवरण है। (ङ) श्लोक स० लगभग ११८ अपूर्ण, पटल १ से ३ तक।

—स० वि० (क) २५७४२, (ख) २४७६४, (ग) २५४६५, (घ) २५७३०, (ङ) २६४८०

उ०—कालिकामपर्याविधि (काशीनाथ कृत) मे।

चिन्तामणिमन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० १०। —अ० व० ५७९७६

(२) पूर्ण, तीन प्रतियाँ। —म० द० ६२९९, ६३००, ६३०१

उ०—श्रीहर्ष के नैषधीयचरित के १ म सर्ग के १४५ वे श्लोक मे।

चिन्त्यागम

दस शिवागमो के अन्तर्गत।

चिल्लाचक्रेश्वरीमत

उ०—जन्ममरणविचार तथा जयरथ कृत तन्त्रालोक-टीका मे।

चीनतन्त्र

उ०—कौलिकार्चनदीपिका मे।

चीनाचार

लि०— —ने० द० २।२०७, पक्ति

चीनाचारक्रम

लि०—शिव प्रोक्त। —ज० का० १०२१

चीनाचारतन्त्र

लि०—श्लोक स० ४००, पूर्ण —स० वि० २३८५८
उ०—प्राणतोषिणी मे ।

चीनाचारसार

दे०, महाचीनक्रमाचार ।

चेतसिंहकल्पद्रुम

लि०—भवानीशकर कृत । —कैट् कैट् १।१९०

चैतन्यकल्प

लि०—(१) ब्रह्मयामलान्तर्गत, पार्वती-ईश्वर सवादरूप । श्लोक स० १५७ । छह पटलो मे पूर्ण । गौराङ्गदेव का जन्म, गौराङ्गदेव का माहात्म्य, गौराङ्गदेव-मन्त्रोद्धार, यमुनास्तुति तथा गौराङ्ग-पूजा आदि विषय इसमे वर्णित है ।

—रा० ला० ५९४

(२)—(क) रुद्रयामल का ५वाँ अध्याय मात्र, अपूर्ण ।
(ख) रुद्रयामल का ५वाँ अध्याय मात्र, पूर्ण ।
(ग) रुद्रयामल का ५वाँ अध्याय मात्र, पूर्ण ।

—व० प० (क) २९०, (ख) ५०२, (ग) ५७५

(३) ब्रह्मयामल से गृहीत —कैट् कैट् १।१९०

चैतन्यगिरिपद्धति

लि०—चैतन्यगिरि विरचित, श्लोक स० ३०० । —अ० व० ९९४०

छत्रयोगोद्भूतदोषशान्तिविधि

लि०—दिल्लीश्वर शाह बहादुर की आज्ञा से वाचस्पति मिश्र ने इसकी रचना की। इसमे भृगुसिद्धान्ती मे सूचित मार्ग के अनुसार छत्रयोगविधि वर्णित है। इसकी रचना शकाब्द १७७५ मे हुई । —नै० द० १।११११

छलार्णसूत्र (सवृत्ति)

लि०—मूलकार भास्करराय तथा वृत्तिकार वुद्धिराज । श्लोक स० २०० ।

—अ० व० ६०१३

छागतुण्डतन्त्र

यह योगरत्नावली का आधार ग्रन्थ है। —ए० व० ६६०२

छायापुरुषलक्षण

लि०—(क) शिवागमतन्त्रान्तर्गत। श्लोक स० १८। (ख) श्लोक सं० लगभग २५, पूर्ण। फलश्रुतिसहित। —स० वि० (क) २४१०५, (ख) २६४८१

छायापुरुषविधि

लि०— —कैट् कैट् ११९३

छिन्नमस्ताकल्प

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत। पटल १ से १८ तक। श्लोक स० ५००।

—अ० व० १६९२

(२) पूर्ण। —म० द० ७८३६

छिन्नमस्तापञ्चक

लि०—श्लोक स० २२, पूर्ण। —स० वि० २४४३४

छिन्नमस्तापञ्चाङ्ग (१)

लि०—फेत्कारीतन्त्रान्तर्गत, उमा-महेश्वर सवादरूप। इसमे—१. छिन्नमस्तापटल, २. छिन्नमस्ता-पूजापद्धति, ३ छिन्नमस्ता-कवच, ४ छिन्नमस्ता-सहस्रनाम तथा ५. छिन्नमस्तास्तोत्र ये पाँच विषय वर्णित है। —ए० वं० ६३८७-८८

छिन्नमस्तापञ्चाङ्ग (२)

लि०—भैरवतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० लगभग ४००, पूर्ण।

—सं० वि० २४८८२

छिन्नमस्तापटल

लि०–इनमे छिन्नमस्ता देवी की पूजा आदि वर्णित है। —बी० कै० १२५५

छिन्नमस्तापद्धति

लि०—इसमे छिन्नमस्ता देवी (दश महाविद्याओ मे अन्यतम) के मन्त्रोद्धार, पूजन, बलिदान आदि विषय प्रतिपादित हैं। —बी० कै० १२५४

छिन्नमस्तापारिजात

लि०—रामचन्द्र कृत। —कैट् कैट् १।१९३

छिन्नमस्तापूजाविधान

लि०—श्लोक स० १४५। —स० वि० २५८१५

छिन्नमस्तारहस्य

लि०—व्रजराज कृत। —कैट् कैट्. १।१९३

छिन्नमस्ताष्टोत्तरशतनाम

लि०—गोरक्षसहितान्तर्गत। इमे शिवजी ने नारदजी से कहा था। इस स्तोत्र का नवमी या षष्ठी को जो पाठ करता है वह कुबेर की तरह धनसम्पन्न होता है, यो इस स्तोत्र का महत्त्व वर्णित है। —वी० कै० १२६६

छिन्नापारिजात

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

छिन्नारहस्य

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

जगच्चिन्तामणिनामक त्रिपुरसुन्दरी-कवच

लि०—रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत। श्लोक स० ७०, पूर्ण। —र० म० ९९१

जगत्क्षोभणमालामन्त्र

लि०—श्लोक स० ७०, दो प्रतियाँ। —अ० व० ५६१६, १७

जगत्क्षोभिणीमाला

लि०— —कैट् कैट् १।१९४

जगद्धात्रीदुर्गायन्त्र

लि०—इसमे एक यन्त्र दिया हुआ है, जो जगद्धात्री दुर्गायन्त्र कहलाता है। इसे किस प्रकार खीचना (बनाना) चाहिए, इस विषय का निर्देश करने हेतु थोडे श्लोक भी इसमे दिये गये हैं। इस सम्बन्ध के कृष्णानन्द के तन्त्रसार मे उक्त श्लोको से ये मिलते-जुलते हैं।
—ए० व० ६५८७

जगद्धात्रीपूजापद्धति

लि०—(१) रचयिता—राजकृष्णशर्मा । अपूर्ण । —व० प० १६५७

(२) श्लोक स० २११, अपूर्ण । (ख) श्लोक स० २०६, अपूर्ण ।

—स० वि० (क) २४८७७, (ख) २६४७९

जगद्धात्रीपूजाविधि

लि०—निगमकल्पसारसारस्वतग्रन्थान्तर्गत दुर्गाकल्प मे शिवभाषित, श्लोक स० ४० । इसमे जगद्धात्री की पूजाविधि तथा पूजन का फल वर्णित है । —रा० ला० ५५८

जगद्धात्रीपूजाव्यवस्था

लि०—(१) श्लोक स० ३५, पूर्ण । —स० वि० २४७३१

(२) —कैट् कैट् ३।४२

जगन्मङ्गलकवच

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, (क) श्लोक स० १६, अपूर्ण । (ख) श्लोक स० ३६, पूर्ण । —अ० व० (क) और (ख) ५१०१

(२) नारदपञ्चरात्रान्तर्गत, पूर्ण । —व० प० ४३४ (ख)

जनमारशान्तिप्रयोग

लि०—(१) विधानमालान्तर्गत गर्गकारिका के अनुसार श्लोक स० ३८ । इसमे महामारी का भय निवारण करने के लिए गर्गप्रोक्त विधान से शान्तिप्रयोग प्रतिपादित है ।

—रा० ला० ४०८८

(२) यह गर्ग प्रोक्त है । —कैट् कैट् १।१९७

जन्ममरणविचार

भट्ट रामदेव विरचित । इनके गुरु थे योगराज अथवा योगेश्वराचार्य जो अभिनवगुप्त के शिष्य थे ।

जपक्रम

लि०—(क) श्लोक स० ३२ । (ख) श्लोक स० लगभग २२, पूर्ण । (ग) श्लोक नं० लगभग ८० । (घ) श्लोक स० लगभग २२, पूर्ण ।

—स वि (क) २४५४७, (ख) २४७२०, (ग) २४७२८, (घ) २६१६०

[इन पुस्तकों मे (ख) और (घ) एक वर्ग की तथा (क) और (ग) भिन्न वर्ग की प्रतीत होती है ।]

जपपद्धति

लि०—(१) श्लोक स० ९६०।

—डे० का० २२९ (१८८३-८४ ई०)

(२) —कैट् कैट् १।१९८

जपप्रयोग

लि०—(१) (क) पूर्ण। (ख) अपूर्ण।

—ब० प० (क) १३१०, (ख) १३०८

(२) (क) श्लोक स० ६१। (ख) यामलोक्त। श्लोक स० ८८, पूर्ण। (ग) श्लोक स० लगभग ३५, अपूर्ण, तथा (घ) श्लोक स० १६, पूर्ण (?)।

—स वि (क) २४४३६, (ख) २४४३९, (ग) २४४४६, (घ) २४७२७

जपरहस्य

लि०—(१) शिव-पार्वती सवादरूप। श्लोक स० ४०। जिसके विना कोटि-कोटि-कल्पो तक भी जप (मन्त्र) सिद्धि नही हो सकती, उस जपक्रम का इसमे शिवजी द्वारा पार्वतीजी के प्रति वर्णन है। —रा० ला० ३८१

(२) —कैट् कैट् ३।४३

जपरहस्यविधि

लि०—श्लोक स० २००। —अ० ब० १०१८९

जपलक्षण

लि०—तीन प्रतियाँ जिनमे (क) सज्ञक दो पूर्ण और (ख) सज्ञक एक अपूर्ण है।

—म० द० (क) ५४४३–४४, (ख) ५४४५

जपविधान

लि०—श्लोक स० ४००। —अ० ब० ५५६३

जपविधि

लि०—(१) (क) श्लोक स० १२, पूर्ण। (ख) पूर्ण, श्लोक स० १००।

—स वि (क) २६०९५, (ख) २६१३३

(२) शिवदीक्षित कृत। —कैट् कैट् १।१९८

जपार्चनपुरश्चरणविधि

लि०—रुद्रयामल-वटुककल्पान्तर्गत। श्लोक स० ६३२, पूर्ण।

—स० वि० २५८४८

जयदुर्गापूजापद्धति

लि०—(क) श्लोक स० १४४, पूर्ण। (ख) श्लोक स० १५५, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४७५३, (ख) २६१०१

जयदुर्गापूजाविधि

लि०—श्लोक स० १०५, पूर्ण।

—स० वि० २५७३५

जयद्रथयामल

लि०—(१) पार्वती-महेश्वर सवादरूप। ४ पट्को मे विभक्त। प्रत्येक षट्क मे ६००० श्लोक है। इसकी कुल श्लोक सख्या २४००० है। अन्तिम (उत्तरषट्क) मे वगलामुखी की पूजा प्रतिपादित है।

(२) यह चिरकाल तक सदिग्ध था कि काली-पूजा भारत मे ऊँची श्रेणियो मे क्रमागत है या नही। यह ग्रन्थ कहता है कि परमेश्वरी की पूजा कुम्हार या तेली के घर मे होनी चाहिये। हिन्दू समाज मे दोनो जातियाँ निम्नकोटि की मानी गयी है। कहा जाता है कि यह पूर्ण ग्रन्थ २४००० श्लोकात्मक है। यह चार भागो मे विभक्त है। प्रत्येक भाग मे ६०००—६००० श्लोक है। वे प्रत्येक षट्क कहे जाते है। इसके पहले भाग का नाम काल-सकर्पिणी है, २ य का विद्याविद्धेश्वरी चक्र, ३ य का नाम यक्षिणी चक्र आदि है।

—ने० द० १।२५८

(३) दुर्योधन की वहिन का पति सिन्धुदेश का राजा जयद्रथ भूतल के सकल भोगो को अनित्य समझ कर, विशाल समृद्ध राज्य का त्याग कर, हिमालय स्थित वदरिकाश्रम चला गया। जगन्माता पार्वती को उसने प्रसन्न किया। पार्वतीजीने उसका शिव जी से परिचय करा दिया। इन तीनो का सवाद रूप यह ग्रन्थ है। जयद्रथ ने मुक्ति के विषय मे प्रथम प्रश्न पूछा। उसका भगवान् शिवजी ने साख्य मत के अनुसार उत्तर दिया और कहा मुक्तिके लिए काल-सकर्षिणी अत्यन्त सरल उपाय है। अमुक-अमुक व्यक्ति इसका अवलम्वन

कर सफलमनोरथ हुए। उन व्यक्तियो के नाम भी इसमे वर्णित है। शेष विषय ने० द० १।२५८ के समान ही कहे गये है। —ने० द० २।३५८ (क)

(४) ४ पट्को मे। —कैट् कैट् १।२००, २।४३

उ०—मन्त्ररत्नावली मे।

जयाक्षरसंहिता या जयाख्यसंहिता ज्ञानलक्षणी

लि०—(१) एकायनाचार्य नारायण गर्भ-शिष्य माधक चन्द्रदत्त विरचित। यह तन्त्र ग्रन्थ २७ पटलो मे है। इसमे स्नानविधि, मानसयाग, मन्त्रसन्तर्पण, चार आश्रमो के कर्म, प्रेतशास्त्रविधि, अन्त्येष्टिविधि, प्रायश्चित्तविधि आदि विषय वर्णित है।

—ने० द० १।४९, १६३३ (क) तथा (ख)

(२) साधक चन्त्रदत्त कृत। —कैट् कैट् ३।४३

जया (जयाख्यसंहिता)

लि०—(१) (क) श्लोक स० ४८००, पूर्ण। दो प्रतियाँ। (ख) श्लोक स० २४००, पटल स० २१, अपूर्ण।

—अ० व० (क) ७४०८ तथा १३२२०, (ख) ११२९४

(२) आगम ग्रन्थ, नारदपञ्चरात्र से गृहीत। —कैट् कैट् १।२०२, २।४३

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

जयोत्तरसंहिता

उ०—Katalog der Sanskrit-Handschriften der univesitats–Bibliothek in Leipzig von Theodor Aufrecht Leipzig 1901 80 मे इसका उल्लेख है। —कैट् कैट् ३।४३

जातवेदःकल्प

लि०—श्लोक स० ८१, पूर्ण। —स० वि० २५४४३

जातवेदोविधान

लि०—श्लोक स० ५८, अपूर्ण। —स० वि० २४३६५

जानकीत्रैलोक्यमोहन

लि०—रुद्रयामल से गृहीत। —कैट् कैट् १।२०५

जानकीविरहसंभवमन्त्रराजस्तोत्र

लि०—श्रीमद्दासदासजन विरचित। इसमें २० श्लोक हैं जो श्रीजानकीजी के प्रति कहे गये हैं। इसमे ग्रन्थकार की स्वरचित टीका भी है। —ए० व० ६७८४

जानकीसहस्रनामस्तोत्र

लि०—सिद्धेश्वरतन्त्र से गृहीत। —कैट्. कैट्. १।२०६

जाबालिसूत्र

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

जालन्धरपीठदीपिका

लि०—प्रह्लादानन्द कृत, श्लोक स० ६००, अपूर्ण। —अ० व० ११५१३

जालन्धरपीठमाहात्म्य

लि०—श्रीनिवास-शिष्य कृत। —कैट् कैट् १।२०६

जीर्णोद्धारदशकव्याख्यासहित

लि०—(१) श्लोक स० ११००, दो प्रतियाँ (क) और (ख) पूर्ण, शैव तन्त्र।

—अ० व० ६८३० (क), ६८३३

(२) वैष्णव तन्त्र, पूर्ण। —म० द० ५२४९

जीवचक्रनिरूपण

लि०—शाक्त ग्रन्थ, अपूर्ण। यह जीवचक्र की पूजा आदि विषय पर है।

—म० द० ५६२६

जीवस्थितिकथन

लि०—श्लोक स० ५०, पूर्ण। कुलार्णवरहस्यान्तर्गत।

—स० वि० २५७७७

ज्ञानकारिका

लि०—(१) महामच्छि(च्छी?)न्द्रनाथ अवतारित यह तन्त्रग्रन्थ ३ पटलो मे पूर्ण है।

—ने० द० १।१३४४ (ख)

(२) श्लोक म० २२५। यह शैव तन्त्र है। —अ० व० १३२८९

ज्ञानगर्भ

उ०—स्पन्ददीपिका, प्रत्यभिज्ञाहृदय तथा शिवसूत्रविमर्शिनी मे।

ज्ञानगर्भस्तोत्र

उ०—स्पन्दविवृत्ति मे।

ज्ञानचन्द्रोदय

लि०—गोवर्द्धन तान्त्रिक विरचित। श्लोक स० १६००, अपूर्ण। यह शाक्त तन्त्र है।
—अ० व० १९७४

ज्ञानतन्त्र

लि०—(१) महादेव-नारद सवादरूप। इसमे ९ परिच्छेद है। प्रतिपाद्य विषय—१म मे गुरुपरीक्षा तथा अकालदीक्षा, २य मे चराचर विषयो के ज्ञान का उपाय, ३ य मे किसकी मुक्ति होती है और किसको नरक, यह प्रश्न और इसका उत्तर, ४ र्थ मे पूजा, होम, वलिदान आदि का प्रतिपादन, ५ म मे मन्त्रो की उत्पत्ति का निरूपण, ६ ठे मे मन्त्र-शोधन की विधि, ७ म मे मन्त्रशापोद्धार, पूजा प्रकार आदि, ८म मे किस मन्त्र के प्रभाव से नागराज शेष पृथिवी धारण करते है? इस प्रश्न का उत्तर एव ९ म मे मन्त्रो का गन्धर्व-शापमोचन। —रा० ला० ४४४

(२) श्लोक स० ८३। ९ पटलो मे पूर्ण। नो० स० १।१२४ मे यह शिव-नारद सवादरूप तथा १० परिच्छेदो मे पूर्ण कहा गया है।

—ए० व० ६०१८

(३) यह पार्वती-ईश्वर सवादरूप है। इसमे प्रतिपादित विषय है—तत्त्वज्ञान का स्वरूप और उसकी प्राप्ति के उपाय, एकाक्षर आदि मन्त्रो का कथन, मन्त्रोद्धार साधन तथा महाविद्याओ के स्वरूप आदि, उनके अङ्गसस्थानो का कथन, वाल मन्त्र का निरूपण, भैरव के अङ्गो का निर्णय, भुवनेश्वरी विद्या का निरूपण, उनके मन्त्रो के अङ्गो का निरूपण, त्रिवर्गसाधनी विद्या का निर्देश, त्रिपुराविद्या का प्रतिपादन, अन्नपूर्णा, माहात्रिपुरसुन्दरी तथा काली के मन्त्राङ्गो का निर्णय, गुरु-निरूपण, मन्त्रसिद्धि के उपाय आदि।

—नो० स० १।१२३, १२४

(४) ७म पटल (परिच्छेद ?) तक, अपूर्ण।

—त्र० प० १३९६

(५) (क) श्लोक स० २०८, अपूर्ण, (ख) पटल(परिच्छेद ?) १ म से ७ म तक श्लोक स० २१६, पूर्ण (?)। —स. वि. (क) २४५५०, (ख) २५९९५

उ०—कौलिकार्चनदीपिका तथा कालिकासपर्याविधि (काशीनाथ कृत) में।

ज्ञानतिलक (१)

लि०—(१) कालज्ञानतिलक भी इसका नामान्तर मिलता है। शिव-कार्तिकेय सवादरूप यह ८ पटलो मे पूर्ण है एव परम ज्ञान का प्रतिपादन करता है। इसकी श्लोक स० १९९ है। —ए० व० ५९७५

(२) श्लोक स० १९९। —अ० व० ३५२५

उ०—शतरत्न मे।

ज्ञानतिलक (२)

लि०—विष्णु-नारद सवादरूप, यह छोटा-सा तन्त्र ग्रन्थ गुरु-प्रशसा का प्रतिपादक है। —ने० द० १।१३४०

ज्ञानतिलक (३)

लि०—यह सरस्वतीसूत्र की टीका है। —कैट् कैट्. ३।४५

ज्ञानदीपक

लि०—यह विद्यानन्दनाथ (देव) विरचित ज्ञानदीप-विमर्शिनी का एक अश है। इसमे त्रिपुरसुन्दरी की पूजाविधि वर्णित है।

यह चतु षष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है।

—ने० द० २।३६० (ग)

उ०—सर्वोल्लासतन्त्र मे।

ज्ञानदीपविमर्शिनी

लि०—परमहस विद्यानन्दनाथ देव विरचित। विद्यानन्दनाथ छहो आम्नायो के महान् विद्वान् थे। उन्होंने वामकेश्वराम्नाय उड्डीशरूप महासागर से प्रपन्न जनता के दु खान्धकार के विनाश मे भानुरूप यह ज्ञानदीपविमर्शिनी रची। यह २५ पटलो मे पूर्ण है। इसमे गुरुध्यान, मन्त्रध्यान, स्नानादि, द्वारपालार्चन, चक्रोद्धार, अर्कसाधन, याग, मन्त्रोद्धार, न्यास, अन्तर्न्यास, पीठार्चन आदि, सामान्यार्घपात्रविधि, ध्यानपद्धति, चक्रार्चन,

पूजा, जप, होम, स्तोत्र, उशनारोपण, काम्यसाधन, दीक्षा, पारम्पर्यचर्या आदि विषय वर्णित है। इस ग्रन्थ का मुख्य आधार वामकेश्वरतन्त्र है।

—ने० द० २।१६ प्रे०

उ०—योगिनीहृदयदीपिका मे।

ज्ञानप्रदीप

लि०—(१) मातृकाभेदतन्त्रान्तर्गत। श्लोक स० ४५, पूर्ण।

—स० वि० २५७८४

(२) छन्दोवद्ध, हरि-हर सवादरूप। —कैट् कैट् १।२०९

ज्ञानभैरवतन्त्र

लि०—(क) श्लोक स० ४०, पूर्ण। (ख) श्लोक स० २८, अपूर्ण। ६ष्ठ पटल मात्र।

—स० वि० (क) २४७६३, (ख) २५७३९

ज्ञानभैरवीतन्त्र

लि०—देवी-ईश्वर सवाद रूप यह तन्त्र छह या अधिक पटलो मे पूर्ण है।

—नो० स० १।१२५

ज्ञानमार्जनीतन्त्र

लि०—उमा-महेश्वर सवादरूप। इसमे ब्रह्मज्ञान का उपाय, अठारह विद्याओ का वर्णन, शाङ्करी और विद्या की गुप्तता का प्रतिपादन, अध्यात्म विद्या का स्वरूप निर्देश, त्रिदण्डी आदि का सिद्धान्त कथन, शारीर तत्त्व-वर्णन, शरीर मे चन्द्र, सूर्य आदि का क्रमश स्थान निरूपण, आहार, निद्रा और सुषुप्ति के कारणो का निरूपण, शिव और शक्ति के स्वरूप का निर्देश, षट्चक्र-निरूपण, त्रिगुण, त्रिदेव आदि का तत्त्व कथन आदि विषय वर्णित हैं। —नो० स० १।१२६

ज्ञानमाला

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

ज्ञानरत्नावली

लि०—ज्ञानेश्वर विरचित। —कैट् कैट् ३।४५

ज्ञानसंकुली या ज्ञानसंकुलीतन्त्र

लि०—(१) शाम्भवीतन्त्रान्तर्गत। उमा-महेश्वर सवादरूप।

—ए० व० ६०३५

(२) यह उमा-महेश्वर सवदरूप है। इसमे शिवजी ने उमादेवी के प्रति वेदान्तसार-सर्वस्व का उपदेश दिया है। इसमे प्रणव की प्रशसा, स्थूल देहादि के लक्षण आदि विषय प्रतिपादित है। —रा० ला० ५६४

(३) पत्र स० १०, पूर्ण। —व० प० ५४८

ज्ञानसंबोध

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

ज्ञानसार

लि०—(१) द्राविड टीका सहित। —म० द० ३१०९ (ज)

(२) —कैट् कैट् १।२१०

उ०—प्राणतोषिणी तथा कौलिकार्चनदीपिका मे।

ज्ञानसारनिधि

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

ज्ञानसारस्वत

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

ज्ञानस्वरूप

लि०—यह प्रपञ्चसार का विवरण है। —कैट् कैट्. १।२१०

ज्ञानानन्दतरङ्गिणी

लि०—शिरोमणि विरचित। इसकी श्लोक स० २००० और परिच्छेद ८ है। उनमे ये विषय वर्णित है—१ गुरुशिष्यलक्षण, अकडमचक्र आदि, आसनो के भेद, मालासस्कार आदि, २ पुरश्चरणविधि, योनिमुद्राविधान आदि, ३ महाविद्याओ का विवेचन, ४ भगवती-तत्त्व निर्णय तथा दुर्गोत्सव मे प्रमाण, ५ सर्वतोभद्र, मण्डल, ६ दीक्षाविधि, ७ सामान्य पूजाविधि, गायत्री आदि की पूजाविधि, मन्त्रोद्धार आदि।

—रा० ला० २८६

ज्ञानामृतरसायन

लि०—(१) यह शाक्त तन्त्र है। —म० द० ५६२७

(२) गोरक्षनाथ कृत। इस पर सदानन्द कृत टीका है, पर ग्रन्थ का नाम 'ज्ञानामृत' मात्र है। —कैट् कैट् १।२११

उ०—विज्ञानभैरव की शिव उपाध्याय कृत टीका मे।

ज्ञानामृतसारसंहिता

लि०—यह नारदपञ्चरात्र का एक भाग है। इसमे कृष्णस्तवराज, कृष्णस्तोत्र, कृष्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्र, गोपालस्तोत्र, त्रैलोक्यमङ्गलकवच एव राधाकवच ये विपय वर्णित है। —कैट् कैट् १।२११

ज्ञानार्णव (नित्यातन्त्र)

लि०—(१) देवी-ईश्वर सवादरूप यह एक नित्यातन्त्र है। इसमे २३ पटल है। उनमे प्रतिपादित विपय इस प्रकार है—पटल १ से ५ तक वाला के न्यास, ध्यान, पूजन, यजन आदि, ६ से ८ तक पूर्व, द्वितीय तथा पश्चिम सिंहासन का विधान, ९ म मे पञ्चम सिंहासन का विधान, १० म से १४ वें तक त्रिपुरसुन्दरी के द्वादश भेद, षोडशी श्रीविद्या के न्यास, मुद्रा, पूजनप्रयोग आदि, १५ वे से २३ वे पटल तक रत्नपुष्पा वीज सन्धान, त्रिपुरा के जप, होम, द्वितीय यागज्ञान, द्वितीय यागदीक्षा तथा दमनरोपण।

—इ० आ० २५५२

(२) इसमे २६ पटल है। विपय विवरण—वर्णमाला का निरूपण, वालान्यास-विधि, त्रिपुरेश्वरी न्यास, त्रिपुरेश्वरक्रमविधि, त्रिपुरायजन, वलिविधि, पूर्वसिंहासन, पश्चिमसिंहासन, सर्वसिंहासन, त्रिपुरा के १२ भेद, षोडशाक्षरी विद्या, त्रिपुरामुद्रा निरूपण, श्रीविद्यायजनविधि, श्रीविद्याप्रयोगविधि, त्रिपुराजप तथा होमविधि आदि।

—ए० व० ५८०९

(३) नित्यातन्त्रान्तर्गत देवी-ईश्वर संवादरूप यह तन्त्र ग्रन्थ २२ पटलो मे पूर्ण है। इसकी श्लोक स० लगभग २००० है। विपय यो वर्णित है—अक्षमाला का निर्णय, देवी के विविध मन्त्रो का प्रतिपादन, त्रिपुरा वाला के मन्त्रो का निरूपण, वाला के न्यास आदि का निरूपण, त्रिपुरा की साधना-विधि, अन्तर्याग-विधि, चक्रोद्धारविधि, त्रिपुरा के ध्यान का वर्णन, मण्डल, पूजा आदि का निरूपण, मुद्रालक्षण, त्रिपुरेश्वरी की क्रमविधि,

कुमारी-क्रमविधि, यजन, वलिदान आदि की विधि, पञ्च सिंहासनविधि, महात्रिपुरसुन्दरी के १२ भेदो का विवरण, षोडशाक्षरी श्रीविद्या की विधि, चक्रादि प्रयोग, ५० पीठों का विवरण, रत्नपूजाविधि, त्रिपुरा वीज साधनविधि, त्रिपुरा-जप तथा होमविधि आदि।

(४) (क) पन्ने ११६। (ख) पन्ने ८६। —नो० स० ११२९

—रा० पु० (क) ५८२९, (ख) ६६५९

(५) उमा-महेश्वर सवादरूप यह मौलिक तन्त्र है। रा० ला० ८२६ में तथा इ० आ० २५५२ मे इसका वर्णन है। यह २३ पटलो मे है। अपूर्ण। इसमे क्रमश वाला-देवी के ध्यान और पूजनविधि, त्रिपुरा वाला का यजन, पूर्व सिंहासन विधि आदि प्रमुख विषय प्रतिपादित हैं। —क० का० २३

(६) यह शिवप्रोक्त है। पत्र स० १४१। —ज० का० १०२२

(७) उमा-महेश्वर सवादरूप, २० पटलो मे। इसमे देवी की पूजा तथा तदुचित मासादि उपहार आदि विषय वर्णित है। श्लोक स० १०७८।

—तँ० म० ६७२०

(८) नामान्तर—नित्यातन्त्र। (क) श्लोक स० लगभग १५६०, पूर्ण। (ख) केवल ४ पटलो तक। —र० म० (क) (ख)

(९) नामान्तर—नित्यातन्त्र। उमा-महेश्वर सवादरूप, पटल स २६। यह शाक्त यजन पूजन से सम्वद्ध आगमो मे अन्यतम आगम हैं। इसके २६ पटलो मे ये विषय प्रतिपादित हैं—वर्णमाला, वालान्यासविधि, वाला के यन्त्र का उद्धार, ध्यान आदि, त्रिपुरेश्वरी पीठपूजाविधि, त्रिपुरेश्वरी यजन, पूर्व सिंहासन विधि, रुद्रभैरवीयजन, पश्चिम सिंहासन यजन, पञ्च सिंहासन, विद्याविधि, त्रिपुरसुन्दरी के १२ भेद, श्रीविद्याविवरण, श्रीविद्या-न्यास, मुद्रा, श्रीविद्यायजन, त्रिपुरसुन्दरी पूजाप्रयोग, सुवर्ण रत्न पुष्प पूजन, वीज-साधनविधि, होम कुण्डादिविधि, ज्ञानहोम विवरण, दूतीपूजा, ज्ञानदूतिकायजन, दीक्षा-विवरण पवित्रारोपण, दमनारोपण तथा गुरुवन्दनस्तोत्र।

—म० द० ५६२७ से २६३१ तक

(१०) (क) श्लोक स० २०००, पूर्ण। (ख) श्लोक स० १५००। (ग) श्लोक स० १६००, पटल २३। (घ) श्लोक सं० १०००, अपूर्ण। (ङ) श्लोक स० १०००, ९ से २२ पटल तक, अपूर्ण। (च) श्लोक स० १६, अपूर्ण।

—अ० व० (क) ११४०१, (ख) ५५९८, (ग) ५५५८, (घ) १०६१८, (ङ) १०५९४, (च) १४४१

(११) ज्ञानार्णवतन्त्र; (क) श्लोक स० २२६०, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ६२५, अपूर्ण। —स० वि० (क) २५११५, ख) २४३५४

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, मन्त्ररत्नावली, शक्तिरत्नाकर, आगमकल्पलता, ललितार्चनदीपिका, सर्वोल्लासतन्त्र, तन्त्ररत्न तथा शाक्तानन्दतरङ्गिणी मे।

स० वि० मे ज्ञानार्णव और ज्ञानार्णवतन्त्र को पृथक्-पृथक् माना गया है, जो विचारणीय है। सर्वोल्लास मे यह चतु षष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत कहा गया है।

ज्ञानार्णवटीका (गूढार्थादर्श)

लि०—भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र वाराणसी-गर्भसभूत काशीनाथभट्ट कृत।

—ए० व० ५८१६

ज्ञानेन्दुकौमुदी

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

ज्ञानोत्तर

उ०—तन्त्रालोकटीका जयरथकृत तथा शतरत्नसमुच्चय मे।

ज्ञानोदय

लि०—महेश्वर-विनायक सवादरूप यह तन्त्र ८ पटलो मे पूर्ण है। (क) श्लोक स० ५००। इसमे हरिहर-पूजाप्रकार प्रतिपादित है।

(ख) श्लोक स० ५००, पूर्ण। विनायक के शङ्कर जी से यह प्रश्न करने पर कि चराचर सम्पूर्ण विश्व के एकमात्र अधिष्ठान आप ही है फिर पुराणवेत्ता लोग 'नारायण' 'नारायण' क्या चिल्लाते है ? इस पर भगवान् महेश्वर ने नारायण के तत्त्व, माहात्म्य आदि का प्रतिपादन कर उनकी पूजा का प्रतिपादन किया है।

—ट्रि० कै० (क) ५८१ (घ), (ख) ९४३

ज्ञानोन्नयन

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे।

ज्येष्ठापूजाविलास

लि०—वीरेश्वर विरचित। —कैट् कैट्. १।२११

ज्योतिष्कल्प

लि०—श्लोक स० १११, पूर्ण। —म. वि. २४६९४

ज्योतिष्मतीकल्प

लि०—(१) —म० द० ७८४०
(२) श्लोक स० ४५, पूर्ण। —स० वि० २४१२९

ज्योत्स्नापञ्चतन्त्र

उ०—आक्सफोर्ड १०९ (ख) के अनुसार गौरीकान्त ने इसका उल्लेख किया है।
—कैट्. कैट् १।२१४

ज्वरशान्ति (१)

लि०—गर्गसहिता मे उक्त, श्लोक स० ३८, शरीर मे उत्पन्न अथवा उत्पन्न होनेवाले आमज्वर, पित्तज्वर, श्लेष्मज्वर आदि सब ज्वरो की निवृत्तिपूर्वक शीघ्र आरोग्य लाभ के लिए ज्वर के अधिपति महारुद्र प्रीत्यर्थ गर्गसहिता मे उक्त नवग्रहयाग सहित ज्वर-शान्ति इसमे कही गयी है। —रा० ला० ४०८६

ज्वरशान्ति (२)

लि०—शान्तिसारान्तर्गत। श्लोक स० २१। इसमे भी पूर्ववत् ज्वरशान्तिप्रयोग वर्णित है। —रा० ला० ४११५

ज्वालाकवच

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। —क० का० ७८

ज्वालातन्त्र

श्रीकण्ठी के अनुसार चतुःषष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत।

ज्वालापटल

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। इसमे ज्वालामुखी देवी की पूजापद्धति प्रतिपादित है।
—क० का० ८०

ज्वालापद्धति

लि०—इसमे ज्वालादेवी की पूजापद्धति प्रतिपादित है। —क० का० २१

ज्वालामुखीपञ्चाङ्ग

लि०—(१) श्लोक स० २३२, पूर्ण। यह रुद्रयामलान्तर्गत है।

—र० म० ४८३५

(२) रुद्रयामल से गृहीत। —कैट् कैट् १।२१४, २।४४

ज्वालावलीतन्त्र

लि०— —कैट् कैट् १।२१४

ज्वालासहस्रनाम

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, शिव-पार्वती सवादरूप। इसमे देवी ज्वालामुखी के १ हजार नाम वर्णित है। —क० का० ८१

झङ्कारकरवीरतन्त्र

लि०—यह महातन्त्र ८००० श्लोको मे पूर्ण है। इसमे चण्डकपालिनी-पूजा आदि वषय वर्णित हैं। —नें० द० १।१०९

लि०—झङ्कारकरवीर। —कैट् कैट् ३।४६

डाकिनीकल्प

लि०—श्लोक स० २२५, पूर्ण। —र० म० १२०२

डाकिनीतन्त्र

लि०—केवल १म से ५ वे पटल तक, अपूर्ण। —ब० प० ११५३

डामरतन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० १३०, अपूर्ण।

—स० वि० २४३८५

(२) डामरतन्त्र मे—कार्तवीर्यार्जुनकवच, कार्तवीर्यार्जुन-स्तोत्र तथा सक्षेप पूजा-विधि। —कैट् कैट् १।२१४

(३) दे०—उड्डामरतन्त्र, उड्डामरेश्वरतन्त्र, डामरतन्त्र मे कार्तवीर्यार्जुन सहस्र-नाम तथा भगवद्वस्त्र पटल। —कैट् कैट् २।४४

उ०—रा० ला० १८५५ तथा निर्णयसिन्धु मे।

श्रीकण्ठी के अनुसार चतु षष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत।

डामरतन्त्रसार

लि०—श्लोक सं० १००८, पूर्ण। —सं० वि० २३९८६

डामरप्रकरण

लि०— —कैट् कैट्. ११२१४

डामरभैरवतन्त्र

उ०—फेत्कारिणीतन्त्र मे।

डामरेश्चरतन्त्र

लि०—डामरेश्वरतन्त्र मे चण्डीपाठ, दत्तात्रेयकवच। —कैट्. कैट् ११२१४

तकारादिस्वरूप

लि०—यह श्रीबालाविलासतन्त्रान्तर्गत देवी-ईश्वर संवादरूप है। इसमे ३१२ श्लोको द्वारा तकारादिपदो से तारा देवी की स्तुति, इस सहस्रनाम स्तोत्र का पुरश्चरण, फल आदि प्रतिपादित है। यह सब तन्त्रो मे गोपित परम रहस्य, त्रैलोक्य सुख का कारण तथा सकलसिद्धियो का प्रापक है। जो मनुष्य शुचि या अशुचि किसी भी अवस्था मे इसका पाठ करता या कराता है वह तारा का स्नेहभाजन होता है।

—रा० ला० ४६२

तत्त्वगर्भस्तोत्र (१)

उ०—स्पन्दप्रदीपिका, प्रत्यभिज्ञाहृदय तथा शिवसूत्रविमर्शिनी मे।

तत्त्वगर्भस्तोत्र (२)

भट्टप्रद्युम्न कृत

उ०—उत्पलाचार्यकृत शिवदृष्टिटीका मे।

तत्त्वचिन्तामणि

लि०—(१) पूर्णानन्दयति विरचित। यह तन्त्र सन् १५७७ मे पूर्णानन्द यति द्वारा रचा गया। इसमे ६ प्रकाश है। ६ ठे प्रकाश, जिसका नाम योग विवरण या षट्चक्र-निरूपण है, के १८५६, १८६० तथा १८६९ मे कलकत्ते से ३ संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

—इ० आ० २६१३

(२) परमहस परिव्राजक ब्रह्मानन्द-शिष्य पूर्णानन्द परमहस विरचित। इसकी शक सवत्सर १४९९ मे रचना हुई। इसमे प्रतिपादित विषय हैं—तत्त्वज्ञान-निरूपण, दीक्षा, दीक्षास्थान तथा दीक्षा के अङ्गो का निरूपण, मण्डप-निर्माण के नियमो का वर्णन, दीक्षादिन के पूर्व दिन के कर्तव्य कार्यो का निरूपण, षट्चक्रो के क्रम का निरूपण, कुण्ड-लक्षण, होमविधि आदि। —नो० स० ११३६

(३) श्रीमत्परमहस परिव्राजक गुरुवर श्रीब्रह्मानन्द के मुखारविन्द से निरन्तर नि सृत हो रही परम रहस्य निगम रूप मधु विन्दुराशि से परमानन्दपूर्ण पूर्णानन्द परमहस ने शक सवत्सर १४९९ मे इसका निर्माण किया। इसमे दीक्षाविधिपूर्वक आत्मवस्तु का निर्णय किया गया है। यह १म प्रकाश मात्र है। —रा० ला० १०९९

(४) पूर्णानन्द परमहस कृत। श्लोक स० ३०, अपूर्ण।

—स० वि० २४६६९

उ०—प्राणतोषिणी तथा ताराभक्तिसुधार्णव मे।

तत्त्वतरङ्गिणी

लि०—श्लोक स० २६२, अपूर्ण। —स० वि० २४६७९

तत्त्वत्रयकथन

लि०—श्लोक स० १५, पूर्ण। —स० वि० २५५६०

तत्त्वन्यासमातृकान्यास

लि०—श्लोक स० १००। —अ० व० १३८९८

तत्त्वप्रकाश

लि०—(१) ज्ञानानन्द ब्रह्मचारी विरचित। १२ कल्पो मे पूर्ण। इसका प्रथम कल्प जो कुलसगीता नाम से भी प्रसिद्ध है, ५ विरामो मे पूर्ण है। बहुत-से तन्त्रो का अवलोकन कर ग्रन्थकार ने शाक्तो के आनन्द के लिए इस ग्रन्थ का शकाब्द १७३० अथवा १८०८ ई० मे निर्माण किया। ग्रन्थकार की प्रतिज्ञा है कि मैं आत्मतत्त्व के प्रबोध तथा भ्रम-विनाश के लिए इस ग्रन्थ के १ म कल्प मे कुलसगीता का प्रतिपादन करता हूँ।

—नो० स० ११३७
—कैट् कैट् १।२१९

(२)

तत्त्वप्रदीपिका

लि०—यह राधामोहन कृत गौतमीयतन्त्र-टीका है। अपूर्ण। दूसरी प्रति भी अपूर्ण है।
—व० प० १७७, ३३५

तत्त्वबोधतन्त्र

उ०—तन्त्रसार (कृष्णानन्दकृत) तथा कालिकासपर्याविधि (काशीनाथ कृत) मे।

तत्त्वबोधिनी (१)

नामान्तर—श्रीतत्त्वबोधिनी

लि०—इसके निर्माता कृष्णानन्द जिज्ञासु है। वे कहते है—मैने प्रतिदिन मुक्तिप्रद श्रीनाथ चरणारविन्द का ध्यान कर श्रीनाथमुखारविन्द से नाना तन्त्रो के मत जाने और उनमे से सार ग्रहण किया। उसीके फलस्वरूप इस तत्त्व बोधिनी की रचना की। इसमे १५ कल्प है। जिनके विषय यो है—१ म कल्प मे गुरू-स्तोत्र, कवच आदि का प्रतिपादन है, २य मे नित्य कर्मो का अनुष्ठान, पूजा आदि का प्रतिपादन है, ३ य मे शिवपूजा-विधान, ४र्थ मे पूजा के आधार आदि तथा न्यास विवरण, ५म मे साधारण पूजा, ६ष्ठ मे जपरहस्य, ७म मे पञ्चाङ्ग, पुरश्चरण, ८ म मे ग्रहण-पुरश्चरण आदि का विवरण, ९म और १० म मे होम का विवरण, ११ श मे कुमारीपूजा आदि, १२ श मे षट्चक्रविधि, १३ श मे शान्ति, वश्य आदि षट्कर्म, १४ श मे शान्तिकल्प-विधान तथा १५ श मे आथर्वणोक्त ज्वरशान्ति कही गयी है। —रा० लां० २८१

तत्त्वबोधिनी (२)

आनन्दलहरी-टीका, महादेव विद्यावागीश कृत। रचना काल १६०५ ई०।
—इ० आ०

तत्त्वमञ्जरी

उ०—विज्ञानभैरव की शिव उपाध्याय कृत टीका मे।

तत्त्वयुक्ति

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

तत्त्वयोगबिन्दु

लि०—रामचन्द्र विरचित। इसमे राजयोग के ये १५ भेद वर्णित है—क्रियायोग, ज्ञानयोग, चर्यायोग, हठयोग, कर्मयोग, लययोग, ध्यानयोग, मन्त्रयोग, लक्ष्ययोग, वासनायोग, शिवयोग, ब्रह्मयोग, अद्वैतयोग, राजयोग तथा सिद्धयोग। —ए० व० ६६०५

तत्त्वरक्षाविधान

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे ।

तत्त्वविचार

कल्लट विरचित

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे ।

तत्त्वविमर्शिनी

लि०—(१) इस १५० श्लोक के ग्रन्थ मे अन्त्येष्टिविधि निरूपित है। पूर्ण।

—ट्रि० कै० ११२७ (ट)

(२) यह उपमन्यु विरचित है एव इस पर काशिका टीका (उपमन्यु कृत) है।

—कैट् कैट् १।२२०

उ०—योगिनीहृदय दीपिका मे ।

तत्त्वशंबरतन्त्र

उ०—सौन्दर्यलहरीटीका (लक्ष्मीधरी) मे ।

तत्त्वशुद्धि

लि०—(१) इसकी श्लोक सख्या १०० है। —अ० व० ५६७७

(२) —कैट् कैट् १।२२०

(३) (क) श्लोक स० २८, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ३७, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४०७५, (ख) २५१७८

तत्त्वशोधनप्रकार

लि०—श्लोक स० १८, पूर्ण। —स० वि० २६४१४

तत्त्वसंग्रह

लि०—शैव तन्त्र। सद्योज्योति शिवाचार्य विरचित, श्लोक सख्या ३००। इसके ज्ञान, क्रिया और योग तीन पाद है। अपूर्ण। —अ० व० ७९७२

उ०—शैव तन्त्रग्रन्थ, नरेश्वर परीक्षासग्रह तथा सर्वदर्शनसग्रह मे उल्लिखित इस पर अघोर शिवाचार्य कृत लघुटीका है। —कैट् कैट् १।२२०

तत्त्वसंग्रह-टीका

वृहट्टीका अथवा शरन्निशा, नारायणकण्ठ कृत ।

उ०—अघोर शिवाचार्य की वृत्ति मे ।

अघोर शिवाचार्य की वृत्ति मे अघोर शिवाचार्य का जीवन काल ११३० से ११५८ ई० बतलाया गया है।

तत्त्वसद्भावतन्त्र

लि०—देवी-भैरव सवादरूप। यह तन्त्र दक्षिणाम्नाय से सम्बद्ध है अर्थात् इसका प्रतिपादन शिवजी ने अपने उस मुख से किया है जो दक्षिणाभिमुख था। यह भैरवस्तोत्र कहा गया है, क्योकि इसके वक्ता भैरव हैं और उन्होंने अपना कथन तब आरभ किया जब ब्रह्मा का मस्तक-स्थित सिर काट कर अपने मस्तक पर रख लिया था। इनकी श्लोक सख्या ७ करोड़ कही गयी है। इसमे ७ करोड श्लोक है या शब्द इसका निश्चय नही। महादेवजी ने वाम, दक्षिण आदि जो और यामल कहे है उनमे दूसरे-दूसरे विषय कहे हैं, पर इसमे केवल ज्ञान का प्रतिपादन किया है। —ने० द० २ पृ० ११३

तत्त्वसार

नामान्तर—योगसार

लि०—(१) शिव-कार्तिकेय सवादरूप। Eggeling पे. ८०० मे भी एक तत्त्व-सार वर्णित है परन्तु वह सूत-शौनक सवादरूप कहा गया है।

—ने० द० १।१६३४ (क)

(२) आनन्दभैरव-आनन्दभैरवी सवादरूप। १० पटलो मे पूर्ण। यह तत्त्वसार-योग का सार, सब शास्त्रो मे परमोत्तम तथा सब तन्त्रो मे प्रधान कहा गया है।

—नो० स० ४।१०३

उ०—शाक्तानन्दतरङ्गिणी मे।

तत्त्वसारसंहिता

उ०—हेमाद्रि-परिशेषखण्ड तथा ताराभक्तिसुधार्णव मे।

तत्त्वसिद्धि

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

तत्त्वानन्दतरङ्गिणी

लि०—(१) पूर्णानन्द विरचित इस ग्रन्थ मे ७ उल्लास हैं।

—ए० व० ६२००

(२) (क) श्लोक सख्या ३५० तथा रचयिता पूर्णानन्द गिरि।
(ख) श्लोक स० ६०० ,, ,,
(ग) श्लोक स० ३५० ,, ,,
(घ) श्लोक स० ६०० ,, ,,

—अ० व० (क) ३५२६, (ख) ३४४६, (ग) १२०६०, (घ) १०१८४

(३) इसके रचयिता म० म० ब्रह्मानन्द परमहस परिव्राजक-शिष्य पूर्णानन्द परम हस हैं। इसमे मन्त्र, वीज, पूजा, होम, पुरश्चरण, मन्त्रोद्धार, यन्त्रोद्धार, ध्यान, कवच, पूजा-स्थान आदि विपयो का निरूपण है। यह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की आद्य साधन-पद्धति कही गयी है। —रा० ला० ३६८

(४) पूर्णानन्द कृत, श्लोक स० ५२५, पूर्ण।

—डे० का० ३८७ (१८८२-८३ ई०)

(५) (क) पूर्णानन्द कृत। इसमे कई उल्लाम हैं। ८ म उल्लास मे पञ्चतत्त्व-शोधन का प्रतिपादन है। (ख) श्लोक स० लगभग २५८, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० २५४, अपूर्ण। —म० वि० (क) २५७७५ (ख) २५९८७, (ग) २६६७२

(६) पूर्णानन्द परमहस विरचित। —कैट् कैट् १।२२१

उ०—कालिकासपर्याविधि (काशीनाथ कृत) मे।

तत्त्वामृततरङ्गिणी

लि०—श्रीनाथ-शिष्य कुलानन्दनाथ विरचित। ७ तरङ्गो मे पूर्ण, श्लोक स० लगभग ७००। इसकी रचना १६६० शकाब्द मे हुई। इसमे प्रतिपादित विषय हैं—गुरुशिष्य-लक्षण, शिष्य-सवोधन, जीव-चित्त सवाद, छह आम्नायो का विवेचन, प्रकृति और पुरुप का विवेचन तथा अभेद निरूपण, आत्मविवेक आदि। —नो० स० ४।१०४

तत्त्वार्थचिन्तामणि

लि०—यह वसुगुप्त कृत स्पन्दसूत्र की कल्लटकृत टीका है।

—कैट् कैट् १।२२१

उ०—स्पन्दप्रदीपिका, शिवसूत्रविमर्शिनी, प्रत्यभिज्ञाहृदय, तन्त्रालोक तथा तन्त्रालोक-टीका जयरथी मे ।

तत्त्वावबोध

लि०—ब्रह्मयामलान्तर्गत, श्लोक स० १३०, पूर्ण ।

—स० वि० २४७५७

तत्त्वोत्पादनविधि

लि०—देवीपूजाविधि आदि के साथ सलग्न। —स० वि० २६२५४

तन्त्र (?)

लि०—त्रिपुरसुन्दरी-मन्त्र-गर्भ सहस्रनाम (रुद्रयामल से गृहीत) तथा देवीरहस्य। इनकी सम्मिलित श्लोक स० २००० है। —अ० व० १२१८०

तन्त्रकल्पद्रुम

उ०—सदाशिव दीक्षित कृत कर्पूरस्तोत्र-टीका मे ।

तन्त्रकोष

लि०—(१) वीरभद्र विरचित। इसमे अकार आदि मातृका वर्णो का यथायोग्य अर्थ कहा गया है। जैसे—'अ श्रीकण्ठ केशवश्चापि निवृत्तिश्च स्वरादिक ।' इत्यादि।

—नो० स० ३।१२१

(२) वीरभद्र विरचित। —म० रि० १६५

तन्त्रकौमुदी (१)

लि०—(१) गोविन्द ठक्कुर-पुत्र देवनाथ ठक्कुर तर्कपञ्चानन कृत (ये कूचविहार के राजा मल्लदेव नरनारायण के सभापण्डित थे। द्रष्टव्य न्यायचर्चा) श्लोक स० २४८५। इसमे वर्णित विषय हैं—तन्त्रशास्त्र का प्रामाण्यस्थापन, मन्त्रो का स्त्रीत्वादि निरूपण, दीक्षाकाल निरूपण, कलावती दीक्षादिविधि, दीक्षित के नियम आदि, दीक्षा मे पूजाविधि, पुरश्चर्यादिविधि, आसन आदि का निरूपण, मुद्राओ के लक्षण, जपमाला, जपविधि, विविध मन्त्रो का निरूपण, कौलयोगविधि, दस मन्त्र-सस्कारो का निरूपण, कौलो की आह्निकविधि, भूतशुद्धि प्रकार, मातृकादिन्यासविधि, अन्तर्यागविधि, षट्कर्मविधि निरूपण आदि। —रा० ला० २०१०

(२) यह विविध तन्त्रो से सगृहीत है। देवियो के विभिन्न रूपो की पूजा आदि इसमे वर्णित हैं। इसकी पत्र सख्या २५० है एव इसके निर्माता देवनाथ है।

[इसका रचना काल १६ वी ई० शताब्दी है।] —वी० कै० १३४६

उ०—तन्त्रसार मे।

तन्त्रकौमुदी (२)

लि०—(१) यह हर-गौरी सवादरूप है। इसकी श्लोक स० ४४१२ है। इसमे वर्णित विपय है—ब्रह्म-निरूपण, कालिका ही ब्रह्म है, यह कथन, मतभेद से २७ प्रकार की महाविद्याओ का कथन, पूर्व, पश्चिम आदि भेद से छह आम्नायो का वर्णन, उनकी उत्पत्ति और विभाग का वर्णन, काली मूर्ति ग्रहण की कथा, उग्रतारा, नील सरस्वती आदि के रूप धारण का विवरण, विद्या-माहात्म्य, जगत्सृष्टि-प्रकरण, शिव-शक्त्यात्मक तीन गुणो से ब्रह्मा, वष्णु और रुद्र की उत्पत्ति, ५० वर्णरूपा देवी के शरीर से माधव, गोविन्द, कृष्ण आदि की उत्पत्ति, कीर्ति, कान्ति, लज्जा, लक्ष्मी आदि की उत्पत्ति, पृथिवी आदि की उत्पत्ति, धर्म और अधर्म की उत्पत्ति, स्थावर, जगम आदि की सृष्टि आदि। —रा० ला० २१९०

(२) पूर्ण। —व० प० १३८१

तन्त्रगन्धर्व

लि०—दत्तात्रेय कृत। श्लोक स० ४५७५, पटल ४२। इसमे वर्णित मुख्य मुख्य विषय ये हैं—महादेवजी का देवीजी से गौतमोक्त शास्त्र की अग्राह्यता कथन, शक्तिमन्त्र, पञ्चमी विद्या का माहात्म्य, त्रिपुराकवच, त्रिपुरसुन्दरी के मन्त्र आदि, त्रिपुरा देवी की पूजा, पोडश मातृकान्यास, करशुद्धि आदि, पोडशोपचार पूजा आदि, साङ्गवहिर्यागविधान, खेचरी आदि विविध मुद्राओ का वर्णन, पूजोपचार, मद्यविशेष आदि, प्रकटादि शक्ति विशेप की पूजा, जपविधान, वटुकादि विधान, गेपिका देवी की पूजाविधि, कुमारी पूजा और उसका फल, गुरु-शिष्यलक्षण, दीक्षाविधि, पुण्य क्षेत्रादि का निरूपण, पुरश्चरण-विधि, मुद्राधारणविधि, हसमन्त्र-जप, होमविधि, पूजाधिष्ठान स्थान कथन, कुलाचारादि का वर्णन, रात्रि मे शक्ति विशेष की पूजा, कुलपूजा आदि। —रा० ला० २४४

उ०—शाक्तानन्दतरङ्गिणी मे।

तन्त्रचन्द्रिका (१)

लि०—रामचन्द्र चक्रवर्ती कृत, श्लोक स० ४०६४, अपूर्ण।

—स० वि० २६३४६

तन्त्रचन्द्रिका (२)

लि०—रामगति सेन कृत। —ए० वं० ६२७४

तन्त्रचिन्तामणि

लि०—(१) इसके निर्माता है नेपाल नरेश के अमात्य नवमीसिंह। इसमे ४० प्रकाश हैं। उनमे अनेक तन्त्र ग्रन्थो के नाम, उनकी उत्पत्ति, सत्ययुग आदि के भेद से पृथक्-पृथक् मार्ग, आगमो की श्रेष्ठता, सृष्टि की उत्पत्ति का क्रम, कालिका और कृष्ण, तारा और राम की एकरूपता, दश विद्याओ का निर्णय, शिव और शक्ति की उपासना, श्यामा की सर्वमूलता आदि विविध विषय वर्णित हैं। —ए० व० ६२१७

(२) इस प्रति मे केवल ३००० श्लोक है, अपूर्ण। —अ० व० १०२५२

(३) इसमे विविध प्रकार की तान्त्रिक देवियो की पूजा के लिए विभिन्न प्रकार के नियम-मार्गो का प्रतिपादन है। —वी० कै० १३४५

उ०—पुरश्चर्यार्णव और आगमतत्त्वविलास मे। सर्वोल्लासतन्त्र के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रो मे अन्यतम है।

तन्त्रचूडामणि

लि०—(१) यह ग्रन्थ पूर्ण है। इसकी श्लोक स० ८२ है।

—स० वि० २४६६७

(२) इसके रचयिता का नाम रामचन्द्र है। —कैट् कैट् १।२२२

(३) (क) श्लोक स० ६६, पूर्ण। चन्द्रचूडामणि मे महापीठ निरूपण मात्र है। इसमे ५१ पीठो का वर्णन है। (ख) श्लोक स० ७०, पूर्ण। इन प्रतियो मे लिपिकर्ता की भूल से तन्त्रचूडामणि के स्थान पर चन्द्रचूडामणि लिखा गया है।

—ए० वं० (क) ५९५६, (ख) ५९५७

उ०—शाक्तक्रम, तन्त्रसार, कुलप्रदीप, ताराभक्तिसुधार्णव, तारारहस्यवृत्ति तथा आनन्दलहरी की तत्त्ववोधिनीटीका मे। 'तन्त्रचूडामणौ पीठनिर्णय' रा० ला० ४४० मे भी इसका उल्लेख है।

तन्त्रचूडामणिसार

लि०—इसमे तान्त्रिक पूजा का विवरण तथा दिव्यौघ, सिद्धौघ और मानवौघ का सक्षिप्त वर्णन है। —ए० वं० ५९५८

तन्त्रजीव

उ०—कालिकासपर्याविधि मे ।

तन्त्रजीवन

लि०— —कैट् कैट्. १।२२२

तन्त्रदर्पण (१)

लि०—(१) नित्यानन्द के शिष्य सच्चिदानन्दनाथ कृत। वास्तव मे इसके रचयिता रघुनाथ है जिनके पिता का नाम है वालो पण्डित और पितामह का नाम है शेषरग। प्रतीत होता है कि ये सच्चिदानन्द के शिष्य थे। —भ० रि० १६६

(२) उन्मन्यानन्दनाथ-शिष्य सच्चिदानन्दनाथ कृत।

—कैट् कैट् १।२२२

तन्त्रदर्पण (२)

लि०—रघुनाथ कृत। —कैट् कैट् ३।४८

तन्त्रदीप

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे ।

तन्त्रदीपनी

लि०—परम निरञ्जन काशीनाथानन्दनाथ के शिष्य रामगोपाल शर्मा कृत। निर्माण काल सवत् १६२६ वि०। ११ उल्लासो मे पूर्ण। इसमे प्रतिपादित विषय है—तत्त्वज्ञान आदि का विवेचन, सामान्यपूजा, विष्णु, सूर्य आदि के मन्त्र, श्रीविद्या आदि के मन्त्र, पूजा आदि का प्रतिपादन, छिन्नाप्रकरण, तारिणी आदि का प्रकरण, मञ्जुघोषा आदि के मन्त्रो का निर्णय, स्तोत्र, कवच आदि का विचार, पूजा के उपचार आदि का निर्णय, विजयाकल्प आदि, कुण्डादि का निरूपण आदि। —नो० स० २।७९

तन्त्रदीपिका (१)

लि०—(१) आगम वागीश के पौत्र, हरिनाथ के पुत्र श्रीगोपाल विज्ञ विरचित, श्लोक स० ११७१५। इसमे प्रतिपादित विषय है—दीक्षा की आवश्यकता, सद्गुरु-लक्षण, शिष्य-लक्षण, महाविद्या आदि का स्वरूप, सिद्धमन्त्र आदि के लक्षण, दीक्षा-काल, नक्षत्र-चक्र आदि, दीक्षा, महादीक्षा और उपदेश मे भेद, सर्वसाधारण नित्य पूजाविधि, आह्निक

कृत्य, तन्त्रोक्त विधि से प्रात कृत्य स्नान, तर्पण आदि का निरूपण, प्राणायाम, पूजा मे विहित और अविहित पुष्प, पूजा का अधिकरण, नैमित्तिक, काम्य आदि पूजा विधियाँ, परमयोगियो की मोक्ष पूजाविधि, जपादिविधि, अन्त पूजा (मानस पूजा) विधि, नौ प्रकार के कुण्डो का निरूपण, कुण्डो का विशेष फल कथन, काम्य होम के लिए कुण्ड, होम-विधि, जपमाला, चन्द्र और सूर्य ग्रहण के अवसर पर किये जाने वाले पुरश्चरण, मन्त्रो के विविध सस्कारो की विधि, सर्वतोभद्र मण्डल का निरूपण आदि। —रा० ला० २२०२

(२) कृष्णानन्द आगम वागीश के पौत्र, हरिनाथ-पुत्र गोपाल पञ्चानन कृत।

—ए० व० ६२३०

(३) इसमे प्रतिपादित विषय हैं—दीक्षा शब्द का अर्थ विवेचन, सब आश्रमो मे दीक्षा की आवश्यकता, गुरुपद का अर्थ, गुरु के लक्षण, दोषयुक्त गुरु और तत्प्रदत्त मन्त्र की त्याज्यता कथन, शिष्य-लक्षण, निषिद्ध शिष्य लक्षण, महाविद्याओ का निर्देश, पिता आदि से मन्त्र-ग्रहण का निषेध, निर्बीज मन्त्र के लक्षण आदि, स्वप्नलब्ध मन्त्र की विशिष्टता आदि। यह विशाल ग्रन्थ लगभग २०००० श्लोको का होगा।

—नो० स० १।१३८

तन्त्रदीपिका (२)

लि०—मुकुन्द शर्मा विरचित। उत्तरतन्त्र के उत्तरकल्पान्तर्गत। देवी-ईश्वर सवाद-रूप। इस ग्रन्थ की श्लोक स० ८७५ है। इसमे वर्णित विषय है—गुरु-लक्षण, मन्त्रत्यागनिन्दा, निन्द्य गुरु, शिष्य-लक्षण, दीक्षा-लक्षण, शूद्रदीक्षा का निषेध, दीक्षा की प्रशसा, सिद्ध विद्या, कुलाकुल चक्र, राशिचक्र, नक्षत्रचक्र, अकथहचक्र, वैदिक मन्त्र का त्याग, अकडमचक्र, ऋणी धनी चक्र, दीक्षा-काल, माला-निर्णय, आसन-भेद, माला-सस्कार, पुरश्चरण, भक्ष्य-नियम, पुरश्चरण-प्रयोग, ग्रहण-पुरश्चरण, मन्त्र-सस्कार, अभिषेक-मन्त्र, सक्षेपदीक्षा, अन्य दीक्षाएँ, स्नानादि-विधि, सामान्य पूजा, पीठपूजा, भुवनेश्वरी-मन्त्र, अन्नपूर्णा-मन्त्र, श्यामा-मन्त्र, छाग आदि की बलि, प्राण-प्रतिष्ठा, दुर्गा और तारा के मन्त्र, तारा प्राणायाम, अनेक देवदेवियो के मन्त्र, कवच आदि।

—रा० ला० ११७१

तन्त्रदेवप्रकाश

उ०—मन्त्रमहार्णव मे।

तन्त्रनिबन्ध

लि०—(१) विविध तन्त्र ग्रन्थो का सग्रह। इसमे गुरुमहिमा, विविध चक्र, दीक्षा-काल, मालानिर्णय, विविध आसन, देवता-गायत्रो, मन्त्रसस्कार, यन्त्रसस्कार, माला-सस्कार आदि एव विविध देवी-देवताओ के मन्त्र, ध्यान, स्तोत्र, कवच आदि विषय वर्णित है।
—ए० व० ६२६६,६७

(२) अपूर्ण।
—व० प० ८५२

तन्त्रप्रकाश

लि०—गोविन्द सार्वभौम विरचित। इसमे दीक्षा, पुरश्चरण आदि वहुत-सी तान्त्रिक विधियाँ वर्णित है। तारा, त्रिपुरा प्रभृति देवियो की पूजा का विवरण दिया गया है।
—ए० व० ६२०७

उ०—रघुनन्दन कृत आह्निकतत्त्व तथा व्रतप्रकाश मे।

तन्त्रप्रदीप (१)

लि०—जगन्नाथ चक्रवर्ती विरचित, नौ परिच्छेदो मे पूर्ण। इसकी श्लोक स० लगभग ४५०० वतलायी गयी है। इसमे वर्णित विपय है—मन्त्र और दीक्षा पदो की व्युत्पत्ति, गुरु, शिष्य आदि के लक्षण, दीक्षाकाल, दीक्षा-प्रयोग आदि का निर्देश, पुरश्चरण, ग्रहण के समय के पुरश्चरण आदि का निरूपण, राम, विष्णु, सूर्य आदि के मन्त्रो का निरूपण, उनके स्तोत्र, कवच आदि का निरूपण, यन्त्र-सस्कार निरूपण, नित्य होम आदि की विधि, कुण्डादि का निरूपण आदि।
—नो० स० १।१३९

लि०—तन्त्रप्रदीप पर तन्त्रदीपप्रभा नामक व्याख्यान, सनातन तर्काचार्य कृत।
—नो० स० २।८०

उ०—तन्त्रसार मे।

तन्त्रप्रदीप (२)

लि०—(१) यह धीरसिह-पौत्र राघवेन्द्र-पुत्र गदाधर कृत शारदातिलक का व्याख्यान है। यह व्याख्यान शारदातिलक के २५ वें प्रकाश, भुवनप्रकाश, तक पूर्ण है।
—रा० ला० २१७२

तन्त्रप्रमोद

लि०—रामभद्र-पुत्र श्रीरामेश्वर विरचित, यह २६८ श्लोको का ग्रन्थ ७ पटलो मे पूर्ण है। इसमे निम्न निर्दिष्ट विपय प्रतिपादित है—कुण्ड-निर्णय, स्रुवादि-निर्णय, अग्नि-

सस्कार, होमविधि, सक्षेप होमविधि, हवनीय वस्तुओ के परिमाण आदि, सक्षेप दीक्षा-विधि आदि । —रा० ला० २६०

तन्त्रभूषा

लि०—मडोपनामक जयराम-पुत्र श्रीकाशीनाथ विरचित । इसमे तन्त्रो की वेद-मूलकता प्रतिपादित है । —ए० व० ६२२७

तन्त्रभेद

(कादिमत का)

उ०—सौन्दर्यलहरी-टीका लक्ष्मीधरी मे ।

तन्त्रभैरवी

श्रीकण्ठी के अनुसार यह चतु षष्टि (६४) आगमो मे अन्यतम है ।

तन्त्रमणि

लि०—काशीश्वर विरचित । इसमे ४ पटल है । उनमे वर्णित विषय नीचे निर्दिष्ट है—गुरु और शिष्य के लक्षण आदि, कुल-अकुल चक्रो का विचार, राशिचक्र आदि, दीक्षा के मास, तिथि आदि का निरूपण, माला-सस्कार आदि, पुरश्चरण आदि, दीक्षा-प्रयोग आदि, सकल मन्त्रो की गायत्री, सामान्य पूजापद्धति । सव मन्त्रो के वीज आदि । तारा-पूजा-प्रयोग आदि, यन्त्र आदि, मन्त्रसिद्धि के उपाय आदि, वलिदानविधि आदि आदि ।

—नो० स० ३।१२२

तन्त्रमन्त्रप्रकाश

उ०—शाक्तानन्दतरङ्गिणी मे ।

तन्त्रमहार्णव

लि०—इस ग्रन्थ मे १७०० श्लोक तथा २९ पटल है । —अ० व० १०७६१

उ०—गोरक्षसिद्धान्त-सग्रह मे ।

तन्त्रमाला

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे ।

तन्त्रमुक्तावली

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे ।

तन्त्ररत्न (१)

लि०—(१) इसका नामान्तर तन्त्ररत्नदीपिका भी है। नवद्वीपनिवासी कृष्ण-विद्यावागीश भट्टाचार्य की यह रचना ५ पटलो मे पूर्ण है। अनेक प्रधान-प्रधान तन्त्रो का अवगाहन और विवेचन कर उनका सारभूत यह उत्तम ग्रन्थ रचा गया है।

—इ० आ० २५७३

(२) श्रीकृष्ण विद्यावागीश कृत। इसमे १८०० श्लोक और ५ पटल हैं। उनमे निम्न निर्दिष्ट विषय प्रतिपादित हैं—चक्रविचार, दीक्षाकाल नियम, सर्वतोभद्र, मण्डलादि, साङ्गोपाङ्ग पूजन आदि की विधि, मातृकान्यास आदि का निरूपण।

—रा० ला० २४०

(३) इसमे भी उपर्युक्त सब विषय अविकल रूपसे वर्णित है।

—वी० कै० १३४९

(४) इसमे प्रधान रूप से तारा और काली की पूजा का विवरण है। शेष विवरण रा० ला० २४० के तुल्य है। —ए० ब० ६२०३

तन्त्ररत्न (२)

लि०—(१) शिवराम कृत। इसमे गुरु और शिष्य के लक्षण, नक्षत्र-चक्र, अकथह-चक्र, अकडमचक्र, ऋणि-धनिचक्र, विद्यारम्भ मे वार और तिथि का नियम, नक्षत्र, लग्न, पक्ष और मास का निर्णय, मन्त्र-नमस्कार, दीक्षा-प्रयोग, उपदेश, पञ्चायतनी दीक्षा, पुरश्चरण, कूर्मचक्र, ग्रहण के समयके पुरश्चरण का सकल्प, विष्णुगायत्री, गोपाल-गायत्री आदि विषय वर्णित है। —ए० ब० ६२१०

तन्त्ररत्न (३)

लि०—सहजानन्द-शिष्य (पुत्र ?) आनन्दनाथ विरचित, विविध तन्त्रो का यत्न-पूर्वक अवलोकन कर ग्रन्थकार मे इसमे श्रीचक्रविधि लिखी है। ससारसागर को पार करने की नौका रूप उक्त श्रीचक्रविधि को प्राप्त कर कौलिकश्रेष्ठ ससारसागर के पार होते हैं। इसमे वर्णित विषय है—कौलिकोपनिषत्, कौलिकस्वरूप, आत्मरहस्य, कौलिक-प्रतिष्ठा, कौलिको मे शक्ति की प्रधानता, कौलिकेश्वरो तथा कौलिकेन्द्रो के लक्षण आदि एव पञ्चमकारविधि, विविध शक्तियो का निरूपण आदि।

—नो० स० ११४०

तन्त्ररत्न (४)

लि०—नरोत्तम शुक्ल कृत। —कैट्. कैट् १।२२२

तन्त्रराज (१)

लि०—यह काशीराम विद्यावाचस्पति भट्टाचार्य की कृति है। इसमे गुरु तथा शिष्य के लक्षण, दीक्षा-ग्रहण की तिथि आदि विषय प्रतिपादित हैं।—नो० स० ३।१२३

तन्त्रराज (२)

(कादिमत)

लि०—(१) इसकी श्लोक स० ४०४० है। इसमे निम्न लिखित विषय वर्णित हैं—विद्या-प्रकरण, दक्षिणाम्नाय, उत्तराम्नाय, भाषा की सृष्टि और स्थिति, स्वप्नावती-माहात्म्य आदि, मधुमती का सिद्धिप्रकार, ककारादि का फल, अनन्तसुन्दरी का माहात्म्य, पूजा प्रकार, तान्त्रिक स्नान आदि, वेदी-प्रकार, यन्त्रादि के निर्माण की विधि, श्रीचक्र के दर्शन आदि का माहात्म्य, व्यापकादि न्यास, कामकलाध्यान आदि, अमाय, अनहङ्कार आदि १० प्रकार के पुष्प, अहिंसा, इन्द्रियनिग्रह आदि ५ प्रकार के पुष्प, ६४ उपचार तथा १६ उपचारो का उल्लेख, पुष्प आदि का निरूपण, कहाँ मानसी पूजा करनी चाहिए, इस विषय का निरूपण, वस्त्र, धूप, दीप आदि के लक्षण, नैवेद्य मे देय वस्तुएँ, नैवेद्य के लिए पात्र विशेष, पादुका आदि के दान के मन्त्र, पञ्चायतन-पूजन- प्रकरण, देवी के तर्पण मे अगुलियो का निरूपण, गुरुपङ्क्तिपूजा की आवश्यकता, षडङ्गपूजा-प्रकरण, योगिनी, डाकिनी, शाकिनी आदि की संख्या का कथन, पूजा मे दिशा का निर्णय, अतिरहस्य योगिनी पूजा का प्रकरण, बलिदानविधि, आरार्तिकविधि, कायिक, वाचिक और मानसिक नमस्कार, पुरश्चरण-प्रकरण, पञ्चवागेश्वरी, पञ्चकामदुघेश्वरी आदि की पूजा-विधि, मुद्रा-प्रकरण आदि। —रा० ला० ३३८२

(२) इसमे विविध तान्त्रिक विषय वर्णित हैं। पन्ने २२५।

—व्री० कै० १३४७

(३) यह मौलिक तान्त्रिक ग्रन्थ है। इसको कादिमत भी कहते हैं। यह ३६ पटलो मे पूर्ण है। इ० आ० २५३८ देखे। —क० का० २६

(४) तन्त्रराज (कादिमत या षोडशनित्यातन्त्र) उमा-महेश्वर संवादरूप, पन्ने २००, पटल ३६। म० द० ५६३२

(५) श्लोक स० १४१९, अपूर्ण। —र० म० ४८९७

(६) श्लोक स० ४०००, पत्रे ८०। —डे० का० ३६२

(७) (क) श्लोक स० ३६००, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ४९०२, तन्त्रराज कादिमतीय सवत् १६३० की लिखी हुई प्रति, पूर्ण। (ग) श्लोक स० १२२८, अपूर्ण।
—स० वि० (क) २४१७२, (ख) २५६७८, (ग) २६१५९

(८) ब्रह्मज्ञानमहातन्त्रराज से यह अभिन्न है। —कैट् कैट् १।२२२

उ०—पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, आगमकल्पलता, ललितार्चन-चन्द्रिका, कालिका-सपर्याविधि (काशीनाथ कृत) तथा तन्त्रसार मे।

तन्त्रराज-टीकाएँ

(१) मनोरमा—सुभगानन्दनाथ कृत इनका वास्तविक नाम श्रीकण्ठेश था। ये काश्मीर महाराज के कर्मचारी थे। प्रपञ्चमारसिंह नाम से भी इनकी प्रसिद्धि थी। इसकी पूर्ति प्रकाशानन्द ने की। —ज० का०, इ० आ०

(२) सुदर्शना—प्रेमनिधि पन्त की ३य पत्नी प्रेममञ्जरी कृत।

(३) शिवराम कृत टीका।

तन्त्रराजोत्तर

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे।

तन्त्रलीलावती

लि०—कर्णसिंह विरचित। केवल ३ पटल तक। —रा० पु० ४८९७

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे।

तन्त्रलेश

लि०—(१) श्लोक स० ११००, अपूर्ण। —स० वि० २३८८२

(२) नित्यानन्द कृत। —कैट् कैट् १।२२२

तन्त्रवटधानिका

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

तन्त्रविद्याक्रम

लि०—श्लोक स० २४०। —डे० का० २३० (१८८३-८४ ई०)

तन्त्रविधानमुक्तावली

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

तन्त्रशेखर

उ०—तारामक्तिसुधार्णव तथा पुरश्चर्यार्णव में।

तन्त्रसंक्षेपचन्द्रिका

लि०—भवानीशङ्कर वन्द्योपाध्याय विरचित। ग्रन्थ की पुष्पिका में वन्द्यघटीय भवानीशङ्करदेव विरचिता लिखा है। इसमें वर्णित विषय हैं—शिष्यलक्षण, गुरुलक्षण, साधक के कर्तव्य, अकडमचक्र, राशिचक्र और कुलाकुलचक्रनिरूपण, दीक्षाकाल, माला-निर्णय, मन्त्र के १० संस्कार, तान्त्रिक सन्ध्या, दुर्गादि की गायत्री, पूजा, प्राणायाम आदि का निरूपण, पुरश्चरण निरूपण, अन्नपूर्णा आदि के मन्त्रों का निरूपण, श्यामा-पूजा प्रकरण, ऋष्यादि न्यासों का निरूपण, दुर्गाशतनामस्तोत्र, श्यामास्तोत्र, शिवस्तुति, कवच आदि, नक्षेप होम, कूर्मादिचक्रों का निरूपण, सर्वतोभद्र, मण्डल आदि का निरूपण, पञ्चायतनी दीक्षा का निरूपण तथा कुण्ड-विधान। —नो० सं० २।८१

तन्त्रसंग्रह

लि०—(१) इसमें तान्त्रिक दीक्षा, गुरु का सदाचार, दीक्षा का समय आदि विषय वर्णित हैं। —ए० ब० ६२६१

(२) —कैट्. कैट्. ३।४८

तन्त्रसद्भाव

उ०—शिवसूत्रविमर्शिनी तथा चिद्वल्ली में।

तन्त्रसमुच्चय

लि०—(१) (क) रविजन्मा विरचित। श्लोक सं० १५००। (ख) केवल ग्यारह पटल मात्र, श्लोक सं० १००। (ग) केवल दो पटल, श्लोक सं० ५००।

—अ० ब० (क) ७८९०, (ख) १८२३ (ख), (ग) ७८८७ (क)

(२) —कैट्. कैट्. १।२१२

उ०—अभिनवगुप्त ने इसका उल्लेख किया है। —कैट्. कैट्. २।४७

तन्त्रसार

लि०—(१) अभिनवगुप्त कृत, श्लोक स० ७७२, पूर्ण।

—डे० का० २३० (१८८३-८४ ई०)

(२) अभिनव गुप्त कृत, (क) पन्ने ४६, पूर्ण। (ख) पन्ने ३७, पूर्ण।

—डे० का० (क) ४४७, (ख) ४४८ (१८७५-७६ ई०)

(३) अभिनवगुप्त कृत —कैट् कैट् १।२२२,२।४७

तन्त्रसार (१)

लि०—(१) महामहोपाध्याय श्रीकृष्णानन्द भट्टाचार्य विरचित यह ग्रन्थ तान्त्रिक वाङमय का सारभूत है। इसके परिच्छेदो के विषय मे मतभेद है। कोई इसके ४ परिच्छेद कहते है और कोई ५ परिच्छेद मानते है। —इ० आ० २५७४

(२) कृष्णानन्द विरचित। इसमे योगिनी-साधन, कामेश्वरी-साधन, वगलामुखी, कर्णपिशाची-मन्त्र, मञ्जुघोषा-मन्त्र, मातगी-मन्त्र, उच्छिष्ट चाण्डाली-मन्त्र, धूमावती-मन्त्र, भद्रकाली-मन्त्र, उच्छिष्ट गणेश-मन्त्र आदि विषय वर्णित है।

—ए० व० ६१८९

(३) म० म० कृष्णानन्द भट्टाचार्य विरचित। यह तान्त्रिक वाङमय का सार है। इसमे मन्त्र, न्यास, शाक्त और वैष्णव दोनो के विविध देवी देवताओ की पूजाविधि प्रतिपादित है। —बी० कै० १३५०

(४) कृष्णानन्द कृत, (क) पन्ने ३६४, पूर्ण। (ख) अपूर्ण।

—ज० का० (क) १०२३, (ख) १०२४

(५) (क) कृष्णानन्द कृत, श्लोक स० १००००। ४ (चार) प्रतियाँ पूर्ण है। ५ (पाँच) प्रतियाँ अपूर्ण है—(ख) श्लो० २१००, (ग) श्लो० ७०००, (घ) श्लो० १०००, (ङ) श्लो० ४००० तथा (च) श्लो० ३००।

—अ० व० (क) १३६९४, ४९९५, ३४४९ और ३४५० (ख) १३६३७, (ग) ८१५९, (घ) ८०११, (ङ) १०१४४, (च) ३४४८

(६) आगमवागीश कृष्णानन्द विरचित यह २७२ पन्नो का वृहत् तान्त्रिक सग्रहग्रन्थ है। इसमे तन्त्रो के गुह्यतम तत्त्वो पर प्रकाश डाला गया है।

—क० का० २७, २८ और २९

(७) कृष्णानन्द भट्टाचार्य कृत, (क) पन्ने २६२, पूर्ण। (ख) शेष दो प्रतियाँ अपूर्ण हैं।
—अ० प० (क) ४८, (ख) ३१४,९०१

(८) कृष्णानन्द वागीश भट्टाचार्य कृत। ३ प्रतियाँ हैं, तीनो पूर्ण हैं।
—र० म० ४९३२, ४९०१ और ४९०७

(९) कृष्णानन्द विरचित, अपूर्ण। श्लो० स० ३६००। जिज्ञासुओं और साधको के सौकर्य के लिए सम्पूर्ण तन्त्रार्थ इसमे सक्षेपत सकलित है।
—तै० म० ६७१२

(१०) दीक्षाविधि, माला-शोधन, मन्त्र-शोधनविधि, श्लोक स० २५५, अपूर्ण।
—र० म० ५००९

(११) कृष्णानन्द वागीश भट्टाचार्य विरचित, श्लोक स० ८७६२, पूर्ण।
—डे० का० ३८८ (१८८२-८३ ई०।

(१२) कृष्णानन्द वागीश भट्टाचार्य कृत, श्लोक स० लगभग ९५६८ पूर्ण।
—स० वि० २३८५४

[स वि मे ३६ प्रतियाँ और है उनमे कई पूर्ण और कई अपूण हैं।]

(१३) (क) कृष्णानन्द कृत तथा अमृतानन्द द्वारा परिवर्द्धित, बृहत् तन्त्रसार कृष्णानन्द कृत तथा लघु तन्त्रसार, तन्त्रसार मे सम्प्रोक्षणविधि। (ख) तन्त्रसार मे दीक्षाविधि, माला-शोधन, मन्त्र-शोधनविधि आदि। (ग) तन्त्रसार मे विष्णु-पूजा-प्रकरण। —कैट् कैट् (क) १।२२२-३, (ख) ३।४८, (ग) २।४७

उ०—शाक्तानन्दतरङ्गिणी मे।

तन्त्रसार (२)

लि०—सुब्रह्मण्य विरचित, श्लोक स० २५००। १५ पटलो मे पूर्ण। इसमे ५ पटलो से विष्णु की, ४ पटलो से शिव की, ३ पटलो मे स्कन्द की, २ पटलो से दुर्गा की और १ पटल से शास्ता की पूजा वर्णित है। —ट्रि० कै० १०२४ (ख)

तन्त्रसार (३)

लि०—सिद्धनाथ कृत, श्लोक स० २८८, अपूर्ण, —स० वि० २५४५२

तन्त्रसार (४)

लि०—(१) मुकुन्दलाल कृत, (२) रामभद्र कृत, (३) रामानन्द तीर्थ कृत।
—कैट्, कैट् १।२२३

तन्त्रसारपरिशिष्ट

लि०—यतिवर विरचित। यदि गुरुकुल का व्यक्ति छोटी अवस्था का भी हो तो भी उसे गुरु बना लेना चाहिए। ज्ञानवृद्ध ब्राह्मण अपने से कनिष्ठ हो तो भी उसे गुरु बना लेना चाहिए। दीक्षा का समय, दीक्षा योग्य मन्त्र का विचार, मन्त्र के दस सस्कार, आगमतत्त्वविलास मे उक्त दीक्षाविधि, मन्त्रचैतन्य कथन, मन्त्रेन्द्रिय ज्ञान कथन, सप्ताङ्ग पुरश्चरण का प्रतिपादन, ग्रहण-व्यवस्थादि, कलियुग मे होम का निषेध, मिश्रित आचार, गुरु-ध्यान, गायत्री-ध्यान आदि, तान्त्रिक सन्ध्या की नित्यता, विशेष पूजा, अन्तर्यागमुद्रा, तान्त्रिक लिङ्गपूजा, काम्यपूजादि, दीपान्वित पूजा की व्यवस्था, रटन्ती-पूजा व्यवस्था, अजपामन्त्रप्रयोगादि, सीता, राधा आदि के मन्त्र, ताराष्टक का व्याख्यान, कवच आदि।

—नो० स० ३।१२४

तन्त्रसारपूजापद्धति

लि०—इसमे तन्त्रसार के अनुसार मध्वाचार्य के हृत्कमलनिवासी लक्ष्मीनारायण देव की पूजापद्धति वर्णित है। —ए० ब० ६४९५

तन्त्रसारसंग्रह

लि०—(१) श्लोक स० ४४०, पूर्ण। —स वि २५४२३

(२) श्लोक स० १५५४, आनन्दतीर्थ विरचित, पूर्ण।

—स० वि० २५५१४

(३) आनन्दतीर्थ विरचित।

—कैट् कै० १।२२३, २।४७,

(४) तन्त्रसारसग्रह-टीका। —ए० ब० ६१८५, ८६

तन्त्रसारस्वत

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

तन्त्रसिद्धान्तकौमुदी

लि०—भडोपनामक श्रीजयरामभट्ट-पुत्र वाराणसी-गर्भसभव काशीनाथ विरचित। इस ग्रन्थ मे तीन प्रकाश है। उनमे क्रमश शाम्भव उपाय, शाक्त उपाय और आणव उपाय प्रदर्शित है। —ए० ब० ६२२२

तन्त्रहृदय

लि०—(१) मडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथ विरचित श्लोक स० १५०। यह दक्षिणाचारविषयक ग्रन्थ है। —अ० व० १०५९६

(२) अनन्त-शिष्य नागपुरवास्तव्य जयराम-पुत्र काशीनाथ भट्ट विरचित। इस पर ग्रन्थकार की स्वरचित टीका है। —रा० पु० ७७११

(३) काशीनाथ विरचित, श्लोक स० २११, पूर्ण।

—म० वि० २४७८८

उ०—कृष्णानन्द कृत तन्त्रसार मे।

तन्त्राधिकार

लि०—(१) पञ्चरात्र तन्त्रो का प्रामाण्य सिद्ध करने के लिए यह ग्रंथ निर्मित है। दो प्रतियाँ है। —तं० म० ३५९–६०

तन्त्राधिकारिनिर्णय

लि०—(१) भट्टोजि कृत, श्लोक म० ६२४, पूर्ण। दो प्रतियाँ है।

—र० म० ४८६१, ४९६२

(२) (क) भट्टोजि कृत। (ख) यह ग्रन्थ पञ्चरात्र के अनुयायियो द्वारा उपयोग मे लाये जाने वाले तान्त्रिक अधिकारो के अनुसन्धान पर लिखा गया है।

—कैट् कैट् (क) १।२२३, २।४७, (ख) ३।४८

तन्त्राभिधान

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

तन्त्रामृत

लि०—(१) (क) कुलमणि शुक्ल कृत।

(ख) रामभद्र कृत। —कैट्. कैट् १।२४८

(२) रामभद्रकृत। – कैट् कैट् ३।४८

उ०—आगमतत्त्वविलास मे।

तन्त्रार्णव

उ०—तन्त्रसार मे।

तन्त्रालोक (सटीक) (१)

लि०—(१) मूलकार—अभिनवगुप्त, टीकाकार—जयरथ ।

—रा० ला० १७५५

(२) पूर्ण । —डे० का० ४४९ (१८७५-७६ ई०)

[डे का मे ४ प्रतियाँ और है जिनमे २ पूर्ण और २ अपूर्ण है जिनकी स या क्रमश पूर्ण–४५० और ४५२ है, अपूर्ण ४५१ और ४५३ ।]

तन्त्रालोकटीका (२)

लि०—यह अभिनव ुप्त कृत तन्त्रालोक पर जयरथ कृत टीका है।

तन्त्रालोकविवेक

लि०—श्लोक म० २५६२, अपूर्ण । —ग० वि० २६६९२

तन्त्रावलोक

उ०—योगिनीहृदय-दीपिका मे ।

तन्त्रोक्तचिकित्सा

लि०—शिव-पार्वती मवादरूप, श्लोक स० ८८८। इसमे बहुत-से रोगो की ओप-धियो के साथ जगद्वशीकरण, वीर्यकरण, स्थूलीकरण, सर्वविषहरण, स्त्रीवन्ध्यात्वहरण, आदि विषय भी प्रतिपादित है। —रा० ला० ६४४

तन्त्रोत्तरतन्त्र

उ०—वीरसिंह कृत वीरसिंहावलोक मे ।

तन्त्रोत्तरप्रदीप

यह वातुलतन्त्र का एक अश है। द्रष्टव्य मायिदेव का अनुभवसूत्र ।

तन्त्रोपतन्त्रनाम

लि०— —कैट् कैट् १।२२३

तपस्विराज

उ०—शिव उपाध्याय कृत विज्ञानभैरवटीका मे ।

तप्तमुद्राविद्रावण

लि०—उमामहेश्वराचार्य-पुत्र भास्कर दीक्षित विरचित, श्लोक स० १६००, अपूर्ण।
—अ० व० ६२८८

तरुणीविलास

लि०—श्लोक स० ९४। —अ० व० ३५२७

तान्त्रकुण्डसिद्धिप्रयोग

लि०— —कैट्. कैट् १।२२८

तान्त्रिककृत्यविशेषपद्धति

लि०—इसमे पशुदानविधि, शिवाबलि-प्रकार, कुमारीपूजा, पञ्चतत्त्वशोधन तथा पात्रवन्दन इत्यादि तान्त्रिक विधियो की पद्धति वर्णित है।

तान्त्रिकपूजापद्धति

लि०—(१) श्लोक स० २५०। इसमे वर्णित विषय है—तान्त्रिक सन्ध्याविधि, वैष्णवाचमनविधि, सामान्य अर्घ्यस्थापन, करन्यास और अङ्गन्यास, शरीर के भीतर स्थित चतुर्दलपद्म मे व,श,ष,स आदि चारवर्णो का न्यास नव अङ्ग-प्रत्यङ्गो मे मातृकान्यास, छह अङ्गो मे केशव आदि, कीर्ति आदि देवतायुगल का न्यास, फिर वही पर प्राणादि, मत्स्यादि तत्त्वो का न्यास, प्राणायाम, देवता पीठ न्यास, मानस पूजा, शख स्थापनादि प्रकार, पीठपूजा, देवतापूजन आदि। —रा० ला० ९२४

(२) (क) श्लोक स० २६७२, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ६४३, अपूर्ण।
—स० वि० (क) २४९७५, (ख) २५४९१

[स० वि० मे २ प्रतियाँ स० २५४९० तथा २५६८६ की और है। ये अत्यन्त अपूर्ण है।]

तान्त्रिकप्रयोग

लि०—श्लोक स० ८८, अपूर्ण। —स० वि० २४१५०

तान्त्रिकप्रयोगसंग्रह

लि०—श्लोक स० ९२५, पूर्ण। इसमे काम्य शिवलिङ्ग-पूजाविधि, काम्य-प्रयोग, स्तोत्र, कवच आदि विविध विषयो का सग्रह है। —स० वि० २४५६०

तान्त्रिकप्रातःकृत्य

लि०—श्लोक स० ४०, अपूर्ण। इसमे त्रिपुरसुन्दरीकल्पोक्त तान्त्रिक स्नानविधि और पूजा प्रतिपादित है। —स० वि० २५४१२

तान्त्रिकप्रायश्चित्तविधि

लि०—श्लोक सं० १३०, अपूर्ण। —स० वि० २३९४०

तान्त्रिकभूतशुद्धि

लि०—श्लोक स० १५०। —अ० व० ११८१६

तान्त्रिकसन्ध्याविधि

लि०—(१) श्लो० स० ५००, पूर्ण। —अ० व० १०४२६

[अ० व० मे ३ प्रतियाँ स० १३४९, ९५३० तथा ५६९२ और है। वे सव अपूर्ण प्रतीत होती है]

(२) वैदिक सन्ध्या करने के अनन्तर तान्त्रिक सन्ध्या का विधान तथा उसका प्रयोग इसमे निर्दिष्ट है। —म० द० ५६३९

(३) पूर्ण। —व० प० ४२९

(४) श्लोक स० लगभग ७३, अपूर्ण। —स० वि० २६२१८

तान्त्रिकहवनपद्धति

लि०—प्रकाशानन्दनाथ कृत, (क) श्लोक स० १५०,। (ख) श्लोक स० २००।
—अ० व० (क) ९९८०, (ख) ११२८० (ग)

तान्त्रिकहोमविधि

लि०—श्लोक स० १००, इसका नामान्तर—शावाग्निहोमविधि भी है।
—अ० व० ८८४२

तान्त्रिकाग्निमुखप्रयोग

लि०—श्लोक स० १३४, पूर्ण। —स० वि० २४७९०

तारकब्रह्मपटल-गुह्यनिरूपण

लि०— —कैट् कैट् २।४८

ताराकर्पूरस्तोत्र

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

ताराकल्प

लि०— —कैट् कैट् १।२२९

तारापद्धति

लि०—(१) श्लोक म० ६००, पूर्ण। इनमे सक्षेपत तारा की पूजापद्धति वर्णित है। —ए० ब० ६३३३

(२) (क) श्लोक स० ६००, पूर्ण। (ख) श्लोक म० ३००, अपूर्ण।
—अ० व० (क) ९००६, (ख) ९९६७

(३) नारायण कृत, देखे, उग्रतारापद्धति। —कैट् कैट् १।२२९

तारापूजनवल्लरी

लि०— —कैट् कैट्. १।२२९

तारापूजापद्धति

लि०—(१) ताराभक्तिसुधार्णव से गृहीत। इसमे तारादेवी की पूजाविधि तथा प्रयोग वर्णित है। —नो० स० १।१४७

(२) (क) श्लोक स० २५६, प्रात कृत्य से लेकर जपरहस्य तक। (ख) श्लोक सं० ८७०, पूर्ण। (ग) श्लोक म० लगभग ५४७, अपूर्ण। (घ) श्लोक म० ३१४, अपूर्ण। (ङ) श्लोक स० लगभग २४४, अपूर्ण।
—स० वि० (क) २६४४३, (ख) २६५८१, (ग) २४७९९, (घ) २५१४५, (ङ) २६६२३

(३) —कैट् कैट् १।२२९ तथा २।४८

तारापूजाप्रयोग

लि०—अपूर्ण। इसमे तारा देवी की पूजापद्धति वर्णित है।
—ए० व० ६३३४

तारापूजारसायन

लि०—भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथ कृत, श्लोक स० २८०, पूर्ण। इसमे तारा पूजापद्धति तथा साधक के प्रात कृत्य आदि वर्णित है। —ए० व० ६३३०

ताराप्रकरण

उ०—रघुनन्दन कृत मलमासतत्त्व मे।

ताराप्रदीप

लि०—(१) लक्ष्मणदेशिक विरचित, (क) श्लोक स० १२६०,५ पटलो मे पूर्ण। (ख) पाँचवाँ पटल मात्र है। इसकी पुष्पिका मे रचयिता का नाम यादवाचार्य लिखा है।
—ए० व० (क) ६३२२, (ख) ६३२३

(२) छ पटलो मे पूर्ण। इसमे प्रतिपादित विषय यो है—तारा के मन्त्र आदि, पूजा-सकेत आदि, मारण, उच्चाटन आदि के मन्त्रो का सकेत, साधन-सकेत, नाना मन्त्रो का प्रतिपादन एव अन्तर्याग, वहिर्याग आदि का निरूपण। —नो० स० ३।१२८

(३) लक्ष्मणदेशिक कृत। अपूर्ण। —व० प० १३९३

(४) लक्ष्मणदेशिक कृत। ५ पटलो मे पूर्ण। उनमे प्रतिपादित विषय है—१म पटल मे मन्त्रसाधना का विवरण, २ य मे पूजासकेत, ३ य मे मन्त्रसकेत, ४र्थ मे साधन-सकेत एव पञ्चम मे नाना मन्त्र प्रतिपादित है। —रा० ला० २३६

(५) श्लोक स० ९००, ५ पटलो मे पूर्ण। विषय—१म पटल मे गुरु, शिष्य आदि के लक्षण, २ य मे पूजा, ज्ञान आदि का प्रतिपादन, ३ य मे तारा महाविद्या की १३ अवान्तर महामूर्तियो का निरूपण, ४ र्थ मे मारण, उच्चाटन आदि के विविध उपायो का वर्णन तथा ५म मे मन्त्रसाधना के विविध प्रभेदो का वर्णन। —रा० ला० २८४

(६) ५ पटलो मे शाक्तो के सिद्धान्त, आचार और नियम जो तारापूजन मे आवश्यक है उनका इसमे प्रतिपादन है। इसके कर्ता लक्ष्मणदेशिक है।

—वी० क० १३५२

ताराभक्तितरङ्गिणी (१)

लि०—(१) (क) विमलानन्दनाथ विरचित, श्लोक स० २००० (अनुक्रमणिका सहित)। (ख) आद्यन्तहीन, अपूर्ण। —अ० व० (क) ११११, (ख) १२६८६

(२) विमलानन्द कृत। श्लोक स० लगभग २०००। —र० म० ४९३०

(३) सप्तशतिका-विधान विमलानन्दनाथ कृत। —कैट् कैट् २।४८

ताराभक्तितरङ्गिणी (२)

लि०—(१) प्रकाशानन्दनाथ कृत। यह ४ तरङ्गो मे है। इसमे कुल धर्मानुसार तारा देवी की पूजाविधि विवृत है। —वी० कै० १३५६

(२) प्राकाशानन्दनाथ विरचित। —कैट कैट् १।२२९

ताराकल्पलता

लि०—नारायणभट्ट विरचित। —कैट्. कैट् १।२२९

उ०—कालिकासपर्याविधि (कालीनाथ कृत) मे।

ताराकल्पलता पद्धति

लि०—विद्यानन्द (श्रीनिवास) शिष्य नित्यानन्द (नारायणभट्ट) विरचित, श्लोक म० ६४०, अपूर्ण। —र० म० ४८८१

ताराक्षोभ्यसंवाद

लि०—(१) श्लोक सं० ३००। यह तारा और अक्षोभ्य (शङ्कर) का सवाद रूप है। इसमे तारा देवी का माहात्म्य वर्णित है। —रा० ला० ३६१

(२) अक्षोभ्य-तारा संवाद रा० ला० ४०५ से यह अभिन्न है।

—कैट् कैट् १।२२९

तारातत्त्व

लि०— —कैट् कैट्. १।२२९

तारातन्त्र

लि०—(१) यह भैरव-भैरवी सवादरूप है। इसमे प्रतिपादित विषय है—पञ्चाक्षर उग्रतारा महामन्त्र का माहात्म्य, वुद्ध रूपी जनार्दन द्वारा अनुष्ठित प्रात कृत्यो का निरूपण, विविध पूजाओ मे मानसिक और यान्त्रिक पूजाविधि, कुलाचार आदि का प्रतिपादन, पुरश्चरण निरूपण आदि। —नो० सं० १।१४६

(२) तारा की पूजा आदि पर रचित, भैरव-भैरवी सवाद रूप तथा छह पटलो मे पूर्ण।

—क० का० ७६ (ङ)

(३) इसमे तारा देवी की पूजा विधि वर्णित है। —वी० कै० १३५५

(४) (क) छह पटलो मे पूर्ण। अपूर्ण। (ख) इस सग्रह मे एक अपूर्ण प्रति और है। —व० प० (क) १३९८, (ख) ७४०

(५) श्लोक स० १५०, पूर्ण। यह ग्रन्थ छह पटलो मे राजशाही की वीरेन्द्र रिसर्च सोसाइटी मे प्रकाशित हो चुका है (सन् १९१३ ई० मे)।

—ए० व० ५९२९

(६) (क) इस प्रति की श्लोक स० १९६ कही गयी है फिर भी यह अपूर्ण कही गयी है। इसके अतिरिक्त १ प्रति और है (ख) उसकी श्लोक स० १६८ है, और वह पूर्ण कही गयी है। —स० वि० (क) २४४७०, (ख) २४७२९

(७) छह पटलो मे पूर्ण। —कैट् कैट् ३।४९

उ०—कौलिकार्चनदीपिका, पुरश्चर्यार्णव, कालिका-सपर्याविधि, सर्वोल्लासतन्त्र तथा तन्त्रसार मे। सर्वोल्लास के अनुसार यह चतु षष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है।

तारापञ्चाङ्ग

लि०—(१) श्लोक स० १३००, पूर्ण। इसमे १ तारासहस्रनाम, २ तकारादि तारासहस्रनाम, ३ मन्त्रसिद्धि का उपाय, ४ होम, ५ तारापटल, ६ तारास्तव, ७. ताराकवच, ८ स्तोत्र, भूतशुद्धि, भूशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, अन्तर्मातृकान्यास, वहिर्मातृकान्यास—ये विषय वर्णित हैं। —ए० व० ६३३१

(२) देवी-भैरव सवादरूप। इसमे १ तारापटल, २. तारापूजापद्धति, ३ तारासहस्रनाम (तारार्णवीय), ४ त्रैलोक्यमोहन नामक ताराकवच (भैरवीतन्त्रोक्त), ५ महोग्रतारास्तवराज (ताराकल्पीय) ये विषय वर्णित है। इनमे तारादेवी की महिमा तथा उनके सहस्रनाम, कवच, स्तवराज आदि की सर्वोत्कृष्टता, सर्वविध उत्कर्षप्रदता वर्णित है। —नो० स० २।८२

(३) श्लोक स० ३००, अपूर्ण। —अ० व० १२८१६

(४) (क) श्लोक स० लगभग ११००, पूर्ण। (ख) श्लोक स० लगभग ११०० पूर्ण, इसमे (क) की अपेक्षा आरभ मे पाठ भेद दिखायी देता है।
—र० म० (क) ३४९३, (ख) ४८२९

(५) (क) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक स० २०८, पूर्ण (?)। (ख) श्लोक स० ५१२, अपूर्ण। —स० वि० (क) २५४४०, (ख) २६४२२

(६) नरसिह कृत (?)। —कैट् कैट् १।२२९

तारापटल

लि०—(१) श्लोक स० ७२, अपूर्ण। —स० वि० २४५६४

(२) —कैट् कैट् १।२२९

ताराभक्तितरङ्गिणी (३)

लि०—(१) नदिया के महाराज कृष्णचन्द्र की प्रेरणा से काशीनाथ द्वारा विरचित। इसकी श्लोक स० ६४५ तथा तरग सं० ६ है। इसके १म तरङ्ग मे नदिया के महाराज कृष्णचन्द्र का वशवर्णन किया गया है, २य से ५ म तक मोक्षोपायो का निरूपण है एव छठे तरग मे कतिपय स्तुतियो द्वारा ताराभक्ति तथा तारा के शरणागतो की ससारनिवृत्ति वर्णित है। —रा० ला० १६०७

(२) काशीनाथ द्वारा सन् १६८२ ई० मे विरचित। —कैट् कैट्. १।२२९

ताराभक्तिसुधार्णव

लि०—(१) कीर्तिकर, तत्पुत्र हरिहर, तत्पुत्र रुचिकर, रुचिकर-प्रपौत्र, श्रीकृष्ण-पौत्र, गदाधर-पुत्र नरसिंह कृत। श्लोक स० ११२०४, २२ तरगो मे पूर्ण। उनमे प्रतिपादित विषय है—शिवा और शिव के सवाद द्वारा मन्त्र-माहात्म्यवर्णन, मन्त्रोद्धार प्रकार आदि, गुरु और शिष्य के लक्षण, दीक्षाविधि, दीक्षा के लिए देश, काल आदि का निरूपण, वास्तुयागविधि, तारा, कलावती और वेधमयी दीक्षाएँ, पूर्णाभिषेक, समयाचार, यन्त्र आदि कथन, दिव्य और वीर, पशु भाव आदि का निरूपण, नित्यकर्मविधि, विविध न्यास, मन्त्रादि की शुद्धि, तारागुरु-निरूपण, तत्त्वशुद्धि, वटुक के लिए वलिदान आदि, आवाहन, ताराध्यान, उपचारविधि, पाँच प्रकार की महामुद्राएँ, विविध मुद्राएँ, आवरणपूजादि, वलिदान, नित्यहोम, पञ्चम यागविधि, पूजादिन के कृत्य, कुमारी-पूजा, विविध विद्याओ के ध्यान, न्यास, कवच आदि। —रा० ला० ३३१२

(२) नृसिंह ठक्कुर कृत। इसमे तारा या तारिणी देवी का पूजन-क्रम निर्दिष्ट है। यह शाक्त तन्त्र है। इसमे ८ तरग हैं। —इ० आ० २५९६

(३) गदाधर-शिष्य नरसिंह ठक्कुर कृत। इसमे ८ तरग हैं। दीक्षाविधि—विविध दीक्षाएँ, उनके उपयोगी काल—मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण, लग्न आदि—का निर्णय आदि। —ए० व० ६२२६

(४) यह तन्त्रग्रन्थ रुद्रयामल, तत्त्वबोध, तन्त्रचूडामणि, मत्स्यसूक्त, तारार्णव आदि ग्रन्थो का अवलोकन कर म० म० नरसिंह ठक्कुर द्वारा सगृहीत है। इसमे ११ तरग हैं। —क० का० ३१, ३

(५) इसमे तारा की पूजा से सबन्ध रखने वाले विविध मन्त्र, मुद्रा, न्यास, ध्यान, स्तोत्र आदि विविध विषय वर्णित है। —वी० कै० १३५१

(६) ठक्कुर श्रीनरसिंह कृत। (क) श्लोक स० ७५००, तरग ११। (ख) श्लोक स० १५००, अपूर्ण, तरग १२ से १५ तक। (ग) श्लोक स० ३०००, अपूर्ण। (घ) श्लोक स० ५००, १२ वॉ तरग मात्र। (ङ) श्लोक स० १५००, तरग ७ से १० तक, अपूर्ण।

—अ० व० (क) ८१२७, (ख) ९१४३, (ग) १०२००, (घ) १०७८२, (ङ) १०६१६

(७) नरसिह ठक्कुर कृत (क) श्लोक स० लगभग ५२८०, अपूर्ण। पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध दो खण्डो मे विभक्त इसमे तरङ्ग १ से १४ तक है। (ख) श्लोक स० लगभग ६२५, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० २६५, अपूर्ण। (घ) श्लोक स० ३७८, अपूर्ण, ११ वॉ तरग मात्र।

—स० वि० (क) २४९८६, (ख) २४१८५, (ग) २६२१३, (घ) २६२१४

(८) (क) गदाधर-पुत्र नरसिह विरचित। २० तरङ्गो मे पूर्ण। (ख) २० तरङ्गो मे, नरसिह ठक्कुर विरचित। 'ताराभक्तिसुधार्णवे पूजापद्धति'। (ग) नरसिंह ठक्कुर कृत।

—कैट् कैट् (क) २।४८, (ख) ३।४९, (ग) १।२२९

तारारहस्य (१)

लि०—(१) तनुभवसुत (?) ब्रह्मानन्द परमहस विरचित, रचना-काल शकाव्द १७३५। इसमे वर्णित विषय है—प्रात कृत्य, मन्त्रोद्धार, शिवलिङ्गपूजा, पूजा, होम, जप, तत्त्वादि का रहस्य, पुरश्चरण आदि का निरूपण तथा एकजटा के स्तोत्र, कवच आदि।

—नो० स० १।१४८

(२) ब्रह्मानन्द गिरि तीर्थकृत। पूर्ण।

—ज० का० १०२७

(३) ब्रह्मानन्द परमहस कृत (क) श्लोक स० लगभग २०००। (ख) श्लोक स० लगभग ११८२, अपूर्ण। २य पटल से ८ म पटल तक, विषयसूचीयुत। (ग) श्लोक स० लगभग ४८१, अपूर्ण। (घ) श्लोक स० २०७३, पूर्ण, १४ पटलो मे।

—स० वि० (क) २६३९३, (ख) २५९६९, (ग) २६३१५, (घ) २६३९४

(४) ब्रह्मानन्द कृत।

—कैट् कैट् ३।४९

तारारहस्य (२)

लि०—(१) श्रीकिशोरपुत्र श्रीराजेन्द्र शर्मा द्वारा विरचित। यह २२ परिच्छेदो मे पूर्ण है, इसकी श्लोक स० १३०० है। इसके प्रथम ३ परिच्छेदो मे प्रात कृत्य, गुरुस्तोत्र आदि का विवरण है, ४र्थ मे स्नान आदि का विधान, ५म मे स्थान-शुद्धि, ६ष्ठ मे प्राणायाम

विधि, ७म मे भूतशुद्धि, कालपुष्प आदि का निरूपण, ८म, ९ म और १० म मे मानस पूजा का विवेचन, ११ श मे मन्त्र आदि का विवेचन तथा १२ श मे अर्घ्य-शोधन विशेष निरूपण, १३श मे देवी पूजा का निरूपण, १४श मे पूजा मे पुष्प आदि का विचार, तारा स्तोत्र आदि विविध विषय वर्णित है। —नो० म० २।८३

(२) २० परिच्छेदो मे राजेन्द्र शर्मा विरचित ।

—कैट्. कैट् ३।४९

ताराहस्यवृत्तिका

लि०—(१) लम्बोदर-पौत्र कमलाकर-पुत्र गौडीय शङ्करागमाचार्य विरचित। १५ पटलो मे पूर्ण। उनके विषय है—नित्य पूजा मे प्रमाण, दीक्षाविधि, पुरश्चरण, नैमित्तिक कर्म का निर्णय, काम्यनिर्णय, रहस्यनिर्णय, कुमारीनिर्णय, पुरश्चरणरहस्य, देवी के मन्त्र और विद्या का निर्णय, देवी-स्तोत्र, देवी-माहात्म्य, सम्यग् भावो का निर्णय, नित्य पूजा-प्रयोग, होमविधि तथा मन्त्रो का वासना तत्त्व निर्णय आदि। —इ० आ० २६०३

(२) तारा देवी के पूजा-विवरण से पूर्ण। —ए० व० ६३२०

(३) गौडदेशीय शङ्कराचार्य द्वारा विरचित, इसमे १५ पटल है।

—ने० द० १।१०७६ (झ)

(४) गौडभूमिनिवासी म० म० श्रीशङ्कराचार्य विरचित। इसका नामान्तर 'वासनातत्त्वबोधिनी' है। इसमे तारा के पूजनादि विषय वर्णित है।

—रा० ला० ५१२

(५) यह शङ्कराचार्य विरचित ताराहस्य की टीका (?) है। इन शङ्कराचार्य की महामहोपाध्याय उपाधि भी लिखी है। यह पूरे १५ पटलो पर व्याख्या है।

[वास्तव मे ग्रन्थकार शङ्कर आगमाचार्य है।] —बी० कै० १३५३

(६) (क) पन्ने ७२, पूर्ण। (ख) पन्ने ५२, अपूर्ण। (ग) पन्ने ११७, पूर्ण।

—व० प० (क) १०८, (ख) ७३२, (ग) १२६८

(७) (क) यह तान्त्रिकसग्रह ग्रन्थ (ताराहस्यविवृत्ति) १५ पटलो मे पूर्ण है लम्बोदर पौत्र, कमलाकर-पुत्र गौडदेशवासी शङ्कराचार्य कृत यह टीका ताराहस्य की व्याख्या है।

(ख) ताराहस्यतन्त्र की यह टीका १५ पटलो मे पूर्ण है। नित्य पूजा, दीक्षाविधि, पुरश्चरण, काम्यनिर्णय, रहस्यनिर्णय, कुमारीपूजा, पुरश्चरणरहस्य, तन्त्रनिर्णय, स्तोत्र

आदि विपय इसमे वर्णित है एव नीलतन्त्र, वीरतन्त्र, मत्स्यसूक्त, भैरवीतन्त्र, महाभैरवी-तन्त्र, विज्ञानेश्वरसहिता, विशुद्धेश्वरतन्त्र आदि के वचन प्रमाणरूप से उद्धृत है।

—क० का० (क) ३३, (ख) ७६(३)

(८) (क) श्लोक स० २०० (पटल ३ से ८ तक), अपूर्ण। (ख) श्लोक स० २०००, पटल १ से १५ तक, अपूर्ण। शङ्कर कृत। —अ० व० (क) १७००, (ख) २९२

(९) कमलाकर-पुत्र शङ्कर विरचित (क) श्लोक स० २५००, पूर्ण। (ख) श्लोक स० १४५२, पटल स० १ से ९ तक, अपूर्ण।

—र० म० (क) ४९६५, (ख) ४९७३

(१०) शङ्कर आचार्य विरचित, पूर्ण।

[इसमे दी हुई पत्र स० (१–८) गलत मालूम पड़ती है। उसके अनुसार ग्रन्थ का आकार बहुत लघु होता है परन्तु यह १५ पटलो मे पूर्ण ग्रन्थ २५०० श्लोकात्मक है यह ऊपर दिखलाया गया है।] —स० वि० २३९३९

(११) (क) ताराहस्यवृत्तिका १५ पटलो मे पूर्ण, कमलाकर-पुत्र शङ्कर कृत। (ख) ताराहस्यवृत्तिका या वासनातत्त्ववोधिका (नी ?) वगाल के शङ्कराचार्य द्वारा विरचित। (ग) ताराहस्यवृत्तिका—कमलाकर-पुत्र शङ्कराचार्य कृत।

—कैट् कैट् (क) २।४८, (ख) १।२२९, (ग) ३।४९

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे।

तारार्चन

लि०— —कैट् कैट् १।२२९

तारार्चनकल्पवल्ली

लि०—श्लोक स० ९०, अपूर्ण। —स० वि० २६२५९

तारार्चनचन्द्रिका

लि०—जगन्नाथ भट्टाचार्य विरचित। श्लोक स० ४५०, पूर्ण। इसमे तारा देवी की पूजापद्धति के साथ-साथ उपासक (साधक) के प्रात कालीन देवी-ध्यान आदि कृत्य वर्णित है। —ए० व० ६३२६

तारार्चनतरङ्गिणी

लि०—रामकृती विरचित, श्लोक स० ११००, अपूर्ण। इसमे चार तरग है। उनमे तारा देवी की पूजा विस्तार से वर्णित है। —ए० वं० ६३२९

ताराणंव

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव तथा तारारहस्यवृत्ति मे।

ताराविलासोदय

लि०—(१) वासुदेव कविकङ्कण चक्रवर्ती कृत, श्लोक स० ९००, १० उल्लासो मे पूर्ण। इसमे तारा-पूजा विस्तार मे प्रतिपादित है। —ए० व० ६३२७

(२) वासुदेव कविचक्रवर्ती कृत। श्लोक स० ७९३, उल्लास १०। उनमे प्रतिपादित विषय है—तारादेवी के पूजन का फल, मन्त्र, वासना और काल का विचार, तारा-पूजन का क्रम, पुरश्चरणविचार, होमयज्ञविधि, तारा-मन्त्र के न्यास का प्रकार, तारास्तोत्रविवेक, तारामन्त्र-न्यास, ताराकवच, सिद्धविद्या, शिवाबलि आदि का विवरण, तारा के विषय की अथर्वश्रुति का विवरण आदि। —रा० ला० १६०२

(३) १० उल्लासो मे पूर्ण। चीनक्रममन्त्रवारिधि के आधार पर वासुदेव कविकङ्कण चक्रवर्ती-विरचित यह ग्रन्थ तारा की उपासना का प्रतिपादक है। —क० का० ३०

ताराविशेषप्रकरण

लि०— —कट् कैट् १।२२९

ताराषट्पदी

उ०—आगमाचार्य शङ्कर विरचित तारारहस्यवृत्तिका मे।

तारासहस्रनामव्याख्या—अभिधार्थचिन्तामणि

लि०—लक्ष्मीधर पुत्र विश्वेश्वर विरचित। —कैट् कैट् २।४८

तारासहस्रनामस्तोत्र

लि०—बालाविलासतन्त्रान्तर्गत। इसमे तारा के तकारादि सहस्र नाम है। कुछ स्तकारादि भी दीख पडते हैं। दे० 'तकारादिस्वरूप'। —ए० व० ६६६३–६५

तारासूक्ति या तारासूक्त

लि०—(१) शक्तिसगमतन्त्र से गृहीत। श्लोक स० १०००, ६ठे से ११ वे पटल तक, अपूर्ण। —अ० व० ६८६८

(२) श्लोक स० १७५०, पूर्ण। शक्तिसङ्गमतन्त्रान्तर्गत। —स० वि० २३९३६

(३) तारास्तुति रूप। —बी० कै० १३५४

तारिणीकल्प

उ०—तन्त्रसार मे ।

तारिणीतन्त्र

उ०—शक्तिरत्नाकर, पुरश्चर्यार्णव, तन्त्रसार तथा ताराभक्तिसुधार्णव मे ।

तारिणीतारक ब्रह्मकूटाष्टोत्तरशतसहस्रनामस्तोत्रराज

लि०—नीलतन्त्र के उत्तर खण्ड के अन्तर्गत शिव-पार्वती सवादरूप। इसमे तारा देवी के तकारादि अष्टोत्तर और सहस्र नाम वर्णित है। —नो० स० ३।१२९

तारिणीनिर्णय

उ०—तन्त्रसार तथा पुरश्चर्यार्णव मे ।

तारिण्यष्टक

लि०—श्रीरामजय विरचित। इसमे स्तोत्र के बहाने तारिणी देवी का माहात्म्य वर्णित है। —नो० स० १।१४९

तारैकजटार्चनपद्धति

लि०—श्लोक स० २४०, पूर्ण। —स० वि० २६५८०

तारोपनिषत्

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव मे ।

तिमिरचन्द्रिका

लि०—(१) रामरत्न कृत। श्लोक स० ६५०। इसमे तान्त्रिक पूजा का विवरण तथा तान्त्रिक साधक के दैनिक कृत्यो का विवरण दिया गया है। इसमे वर्णित विषय है—दीक्षादिनिर्णय, प्रात कृत्यनिर्णय, दन्त-धावनादिनिर्णय, अन्तर्यागादिविधिनिर्णय, स्थान-शोधन आदि पूर्वक पूजा का निर्णय, निशापूजन आदि, शिवलिङ्गार्चन आदि।

—ए० व० ६२०८

(२) १७ उल्लासो मे श्लोक स० लगभग १५०० कही गयी है। ऊपर कहे गये विषयो के अतिरिक्त यन्त्रादिनिर्णय, मालादिनिर्णय, नित्यजपादिनिर्णय, कुण्डादिनिर्णय तथा साधननिर्णय विषय इसमे अधिक वर्णित है। —नो० स० ४।१११

(३) रामरत्न कृत। —कैट् कैट् ३।५०

तिरस्करिणीमन्त्र

लि०—श्लोक स० १०० । —अ० व० १०८१७

तीक्ष्णकल्प

लि०—द्विजश्रेष्ठ चन्द्रप्रतापी राजा श्रीराधामोहन द्वारा स्वय रचित या उनकी प्रेरणा से किसी अन्य विद्वान् के द्वारा रचित ग्रन्थ शकाब्द १७३२ मे आविर्भूत हुआ। इसमे ५ पटल और लगभग ३००० श्लोक है । इसमे वर्णित विषय—प्रात काल के जप, पूजा आदि की विधि, यन्त्र आदि का विवरण, आसन-शुद्धि, मातृकाध्यान आदि, ध्यान-विधि, न्यास आदि का विवरण, एकजटा की पूजा, पूजा के उपचार आदि, मन्त्राभिषेक, नित्या के साधक स्तव आदि, पुरश्चरण के स्थानो का निर्देश, माया के स्तोत्र आदि, मुद्रा आदि का निरूपण आदि । —नो० स० ३।९०

तुरीयोपस्थानविधि

लि०—पन्ने ५ । —रा० पु० ५७२२

तुलातन्त्र

उ०—चतुर्वर्गचिन्तामणि के दानखण्ड मे ।

तूर्णयाग

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे ।

तृचकल्पपद्धति

लि०—वैद्यनाथ कृत । रोगो की समूल निवृत्ति पूर्वक शीघ्र आरोग्यलाभ के लिए तृचकल्प मे उक्त रीति के अनुसार तृच का न्यासपूर्वक मण्डल लेखन, पीठपूजन, प्रधान-मूर्तिपूजा इत्यादि विषय इसमे वर्णित है । —नो० स० १।११३

तृचभाष्य

लि०—भास्कर राय कृत । श्लोक स० ४०, अपूर्ण ।

—अ० व० ६०१५

तृचभास्कर

लि०—(१) भास्करराय भारती कृत । यज्ञ कर्मो मे उपयोग मे आनेवाली मुद्राओ के लक्षण इसमे प्रतिपादित हैं । —ए० व० ६५७५

(२) (क) भास्कर कृत। (ख) गम्भीरराज-पुत्र भास्कर राय कृत।

—कैट् कैट् (क) १।२३४, २।४९, (ख) ३।५०

तृचाकल्प या तृचकल्प

लि०—(१) (क) श्लोक स० ३५०। (ख) श्लोक स० ५।

—अ० ब० (क) ७९८९, (ख) १३९१०

(२) (क) तृचकल्पे सूर्यनमस्कारपद्धति। (ख) तृचकल्पे सूर्यनमस्कार। (ग) तृचकल्प या अर्घदानपद्धति।

—कैट् कैट् (क) १।२३४, (ख) २।४९, (ग) ३।५०

तोडलतन्त्र

लि०—(१) उमा-महेश्वर सवादरूप। श्लोक स० ५०० और पटल (उल्लास?) ११। इसमे दस महाविद्याओ के पूजन, पुरश्चरण, होम आदि विषय प्रतिपादित है।

—रा० ला० ३८५

(२) इसमे १० उल्लास है। यह विविधतन्त्रसग्रह और सुलभतन्त्रप्रकाश मे प्रकाशित हो चुका है। रा० ला० ३८५ मे इसके ११ उल्लासो का उल्लेख है।

—ए० ब० ५९३८

(३) यह दश महाविद्याओ की उपासना पर मौलिक तन्त्र ग्रन्थ है। यह १० उल्लासो मे पूर्ण है। इसके एक अश का 'वद्धयोनिमहामुद्रा' के नाम से रा० ला० ९९५ मे उल्लेख है।

—क० का० ३४

(४) दशम उल्लास पर्यन्त, पूर्ण। —त्र० प० २२

(५) शिवप्रोक्त, पूर्ण। —ज० का० १०२८

(६) (क) श्लोक स० ४७५, उल्लास १–१० तक, पूर्ण। (ख) उल्लास १०, पूर्ण।

—स० वि० (क) २६३७९, (ख) २६४११

(स० वि० मे ४ प्रतियाँ और है—२४४५०, २४६१८, २४७४३ और २६४४०)। सर्वोल्लास के अनुसार यह चतु षष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है।

उ०—प्राणतोपिणी, लक्ष्मीधरी—सौन्दर्यलहरी की टीका, शाक्तानन्दतरङ्गिणी मे तथा रा० ला० ९९५ मे (तोडलतन्त्रे वद्धयोनिमहामुद्रा)।

तोडलानन्द

उ०—सौभाग्यभास्कर मे।

तोलडोत्तर

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

तोषिणी

लि०—यह तान्त्रिक सग्रहग्रन्थ है। इसमे कुल्लुका, सेतु और महासेतु का वर्णन है। ये तन्त्र के पारिभाषिक शब्द है। —रा० ला० ६४०

त्रिकतन्त्रसार या त्रिकसार

उ०—त्रिकसार का प्रत्यभिज्ञाहृदय तथा स्पन्दप्रदीपिका मे।

उ०—त्रिकतन्त्रसार का परात्रिंशिका मे।

त्रिकहृदय

उ०—शिवसूत्रविमर्शिनी मे।

त्रिकारिका

उ०—तन्त्रमहार्णव मे।

त्रिकुण्डीश्वरतन्त्र

उ०—Oxford १०९ (क) के अनुसार गौरीकान्त ने इसका उल्लेख किया है।

—कैट् कैट् १।२३७

त्रिकूटापञ्चाङ्ग

लि०— —कैट्. कैट् १।२३७

त्रिकूटारहस्य

(श्रीविद्यासाधन मे वामाचार का वर्णन)

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत। श्लोक स० १८० तथा पटल ११। इसमे सूर्य-ग्रहण, चन्द्रग्रहण, भूकम्प, नवरात्र, कन्या की सक्रान्ति आदि अवसरो पर श्रीविद्या की पूजा का वर्णन है। इन अवसरो पर की गयी श्रीविद्यापूजा का विशिष्ट फल प्रतिपादित है।

—ए० व० ५८८२

(२) त्रिकूटारहस्य की विषय-सूची—सूर्यग्रहण तथा चन्द्रग्रहण के अवसर पर की जाने वाली त्रिकूटा (श्रीविद्या) पूजाविधि, भूकम्प आदि अवसरो पर की जानेवाली त्रिकूटा-पूजा की विधि, वासन्त नवरात्र पर की जानेवाली त्रिकूटा-पूजाविधि, शारद नवरात्र मे त्रिकूटा-पूजाविधि, कन्यासक्रान्ति पर की जानेवाली पूजाविधि, स्तभनादिविधि, दीपदानविधि, शक्तिपूजाविधि, श्रीविद्या के मन्त्रोद्वार आदि, त्रिकूटा का निरूपण, पुरश्चरणविधि, कुलाचारविधि, वामाचारविधि, कामेश्वर के मन्त्रोद्धार आदि, त्रिकूटोद्धारविधि, त्रिकूटा की नित्य पूजा, त्रिकूटा गायत्री, समयपूजा, पञ्चरत्नेश्वरी की पूजा, कवच, चिन्तामणिकवच, जगन्मङ्गलकवच आदि। —नो० स० २।१५५

(३) (क) श्लोक स० १०००, पटल ३२। (ख) श्लोक स० १०००, पटल ३२। (ग) श्लोक स० १०००, पटल ३२, पूर्ण।

—अ० व० (क) ९१४४, (ख) ७३१३, (ग) ११७२४

(४) रुद्रयामलोक्त, (क) अपूर्ण। (ख) पूर्ण।

—रा० पु० (क) ५१३८, (ख) ६६२१

(५) शिव-पार्वती सवादरूप यह तन्त्रग्रन्थ ३२ पटलो मे पूर्ण है। सब कामनाओ को पूर्ण करनेवाला तन्त्र-मन्त्रो का एकमात्र सागर यह ग्रन्थ श्रीविद्याका परम तत्त्व रूप है। इसमे प्रतिपादित विषय हैं—श्रीमन्त्रोद्धार, त्रिकूटा के विषय मे निर्णय, श्रीविद्या-पुरश्चरणविधि, कुलाचार, कामेश्वर के मन्त्रोद्धार का निर्णय, नित्य पूजाविधि, चन्द्र और सूर्य ग्रहण पर की जाने वाली पूजा की विधि आदि। —म० द० ५६४०, ४१

(६) त्रिकूटारहस्य तन्त्रराज, श्लोक स० ७६०। —डे० का० २३१

(७) (क) श्लोक स० ५४०, पूर्ण (?)। (ख) श्लोक स०, ५७० पूर्वार्द्धमात्र, पूर्ण। इनके अतिरिक्त ५।६ प्रतियाँ और दी गयी है पर सबमे श्लोक स० के अङ्को की भूल प्रतीत होती है।

—स० वि० (क) २३९३८, (ख) २३९६९

(८) त्रिकूटारहस्य तन्त्रराज, शिवा-शिव सवादरूप, श्लोक स० ५८५, पटल ३२। इसमे वर्णित विषय हैं—शिवपार्वती सवादरूप से श्रीविद्या-मन्त्र की उद्धारविधि का प्रतिपादन, त्रिकूटा का निरूपण, पुरश्चरणविधि, कुलाचारविधि, नित्य कामेश्वर-मन्त्र के उद्धार की विधि, नित्य पूजाविधि, सूर्य-ग्रहण के अवसर की पूजा का प्रकार, चन्द्रग्रहण कालीन पूजाविधि का प्रकार, भूकम्प के समय की पूजाविधि, चैत्र के नवरात्र की पूजाविधि, शारदीय नवरात्र की पूजाविधि, नवरात्र मे कुमारीपूजनविधि, कन्या-

मे पूजा का विधान, स्तभन आदि षट्कर्मो का प्रतिपादन, पमेचरत्नेश्वरी विद्याविधि, दीपदानविधि, शक्तिपूजाविधि, चिन्तामणि कवच, वज्रपञ्जर कवच, जगन्मङ्गल कवच, जगन्मोहन कवच, जगदीश कवच, काम्य कवच, त्रिविक्रम, त्रैलोक्यभूषण, विरूपाक्ष कवच आदि कवचो का प्रतिपादन। —रा० ला० २२६६

(९) रुद्रयामल से गृहीत, इस पर काशीनाथभट्ट और मुकुन्दलाल विरचित टीकाएँ है। —कैट् कैट् १।२३७

(१०) —म० रि० १८९

त्रिकूटार्चनपद्धति

लि०—इसका दूसरा नाम त्रिपुरार्चनपद्धति भी है। श्लोक स० ६२०।

—र० म० ४७४१

त्रिदशडामर

लि०—देवी-भैरव सवादरूप, इसमे २४००० श्लोक और ८२ पटल है। देवताओ की सिद्धि के लिए तथा साधु जनो के हितार्थ दुष्ट जीवो के विनाशक डामर का निर्माण हुआ। —ए० ब० ५८६१

त्रिपुरतापिन्युपनिषत्

लि०—श्लोक स० १५०, अपूर्ण। यह प्राय अड्यार से प्रकाशित शाक्त उपनिषदो मे त्रिपुरतापिनी उपनिषद् के अनुसार ही है। इसमे परिच्छेद-सूचक पुष्पिका नही है।

—ए० ब० ६१६४

त्रिपुरभैरवीपञ्चाङ्ग

लि०—(१) विश्वसारतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० ३८० पूर्ण।

—र० म० ४८२६

(२) विश्वसारतन्त्रान्तर्गत। —कैट् कैट् २।५०

त्रिपुरभैरवीपूजन, (१) त्रिपुरभैरवीपूजापद्धति (२)

लि०—(१) श्लोक सं० ३५, पूर्ण। (२) चन्द्रशेखर कृत, श्लोक स० १२५, अपूर्ण।

—स० वि० (१) २५४५३, (२) २६६१९

त्रिपुरसुन्दरीक्रमपद्धति

लि०—श्लोक स० ८००, अपूर्ण। —अ० ब० ९९४९

त्रिपुरसुन्दरीतत्त्वविद्यामन्त्रगर्भसहस्त्रनाम

लि०—(१) रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० २९२, आरम मे खण्डित, अपूर्ण । —र० म० ९७०

(२) विश्वसारतन्त्रान्तर्गत । —कैट् कैट् २।५०

त्रिपुरसुन्दरीतन्त्र

लि०—(१) शिव-पार्वती सवादरूप यह तन्त्र १०१ कल्पो मे पूर्ण है। पार्वतीजी के यह पूछने पर कि भगवन्, आप किस अभीष्टप्रद मन्त्र का जप करते है। मनोकामना पूर्ण करने वाले किस देवता की नित्य आराधना करते है। मानवो को शीघ्र अभीष्ट प्रदान करनेवाली, सव पापो को मिटाने वाली, महाज्ञानप्रद तथा अज्ञानविनाशिनी कौन देवी है ? यह सव मुझसे कहने की कृपा करे। महादेवजी ने वतलाया एक ही परम शिव, जो निर्गुण, निष्कल, नित्य, शुद्ध, वुद्ध है और जगत्स्वामी है उनकी शक्ति उनसे अभिन्न श्रीत्रिपुरा है। वह सर्वार्थसिद्धिप्रदा है । —म० द० ५६४२ से ४७ तक

(२) —कैट् कैट् १।२३७

त्रिपुरसुन्दरीत्रैलोक्यमोहनकवच

लि०—यह तन्त्र गन्धर्वतन्त्रान्तर्गत उमा-महेश्वर सवादरूप है। राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी का त्रैलोक्य को मोहित करने वाला यह कवच गन्धर्वतन्त्र का एक अश है। —वी० कै० १३५८

त्रिपुरसुन्दरीदीपदानविधि

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, उमा-महेश्वर सवादरूप। इसमे त्रिपुरसुन्दरी देवी के निमित्त प्रज्वलित दीपदान की विधि वर्णित है। श्री श्रीत्रिपुरसुन्दरी देवी के लिए दीपदान कर ऋषियो ने त्रैलोक्य को वश मे किया था। —वी० कै० १३१६

त्रिपुरसुन्दरीन्यास

लि०—(१) (क) श्लोक स० ४००। (ख) श्लोक स० ४००।

—अ० व० (क) ११७८९ (क), (ख) ११७८९ (ख)

(२) श्लोक स० ३६, अपूर्ण। —स० वि० २६६६१

त्रिपुरसुन्दरीपञ्चाङ्ग

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लो० स० ३५०। —अ० व० ९७५८

(२) रुद्रयामलान्तर्गत , षोडशीपञ्चाङ्ग भी इसका नामान्तर है। श्लोक स० २०४०, पूर्ण। —र० म० ४८१४

(३) श्लोक स० ५७५, अपूर्ण। —स० वि० २४१२१

(४) —कैट् कैट् १।२३७

त्रिपुरसुन्दरीपटल (पञ्चाङ्ग के अन्तर्गत)

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक स० २५०, पूर्ण। इसमे श्रीविद्या की पूजा-विधि प्रतिपादित है। —ए० व० ५८८१

(२) श्लोक स० लगभग १०, अपूर्ण। —स० वि० २५६८८

त्रिपुरसुन्दरीपद्धति

लि०—(१) शिवरामभट्ट विरचित।

(२) (क) श्लोक स० १०००, अपूर्ण। विद्यानन्द विरचित।

(ख) श्लोक सं० ७२५। १८ पद्धतियाँ पूरी हैं १९ वी चालू है। आत्मानन्द विरचित। (ग) श्लोक स० ६००, अपूर्ण।

—अ० व० (क) १९६१, (ख) ५३४०२, (ग) ५७१५

(३) श्लोक स० २९०, पूर्ण। यह ऊपर निर्दिष्ट त्रिपुरसुन्दरीपद्धति से भिन्न प्रतीत होती है। —र० म० ४८७५

(४) महीधर विरचित, अपूर्ण।

[स० वि० मे ३ प्रतियाँ और हैं सबकी सब अपूर्ण]। —स० वि० २४३७४

(५) त्रिपुरापद्धति भी इसका नामान्तर है। —कैट् कैट् १।२३७, ३।५१

त्रिपुरसुन्दरीपूजन

लि०—श्रीकर विरचित। —कैट् कैट् १।२३७

त्रिपुरसुन्दरीपूजा

लि०—(१) श्लोक सं० ७८, अपूर्ण। —स० वि० २५८२५

(२) —कैट्. कैट्. २।५०

(३) —म० रि० १९०

त्रिपुरसुन्दरीपूजाक्रम

लि०— —कैट् कैट् १।२३७

त्रिपुरसुन्दरीपूजापद्धति

लि०—(क) शङ्करानन्दनाथ विरचित, श्लोक स० ४८०, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ३६८। यह पूजापद्धति मन्त्रमहोदधि मे उक्त पूजापद्धति के तुल्य है। पूर्ण।

—स० वि० (क) २४००४, (ख) २४३३१

[स० वि० मे और भी कई पूर्ण तथा अपूर्ण प्रतियाँ है]।

त्रिपुरसुन्दरीपूजार्चनक्रमपद्धति

लि०—पूजानन्द विरचित। श्लोक स० ६००। —अ० व० २२५५

त्रिपुरसुन्दरीपूजाविधान

लि०—श्रीदत्त विरचित, श्लोक स० ३३। —अ० व० १२२२४

त्रिपुरसुन्दरीपूजाविधि

लि०—(१) भास्करराय कृत, श्लोक स० ६००, अपूर्ण।

—अ० व० २४७६

(२) —कैट् कैट् १।२३७, २।५०, ३।५७

(३) —म० रि० १९२

त्रिपुरसुन्दरीमन्त्रनामसहस्र

लि०—शिव-कार्तिकेय सवादरूप, वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत। पूर्णानन्द परमहस सगृहीत। इसमे त्रिपुरसुन्दरी का सहस्रनामस्तोत्र वर्णित है। —रा० ला० ७४५

त्रिपुरसुन्दरीमन्दिर

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

त्रिपुरसुन्दरीमहामन्त्र

लि०—श्लोक स० १५। —अ० व० ११८०९

त्रिपुरसुन्दरीमालामन्त्रपञ्चदशक

लि०—श्लोक स० ८००। —अ० व० ६४६९

त्रिपुरसुन्दरीयजनपद्धति

लि०—श्लोक स० ६०० । —अ० व० ८४९९

त्रिपुरसुन्दरीयागविधि

लि०— —म० रि० १९३

त्रिपुरसुन्दरीवरिवस्याविधि

लि०—भासुरानन्दनाथ विरचित । श्लोक स० ३५०, अपूर्ण ।
—अ० व० ५६१०

त्रिपुरसुन्दरीसंकोचार्चारत्नावली

लि०—कृष्णभट्ट कृत, श्लोक स० २०० । —अ० व० १०६३२

त्रिपुरसुन्दरीसपर्या

लि०—श्लोक स० ७३०, अपूर्ण । —स० वि० २४९८०

त्रिपुरसुन्दरीसर्वस्व

लि०—श्लोक स० १३०, अपूर्ण । —स० वि० २४५८८

त्रिपुरसुन्दरीस्तोत्र

लि०—(१) इसमे तीन स्तोत्र और एक कवच है। स्तोत्र रुद्रयामलान्तर्गत शिवकृत है, कवच रुद्रयामलान्तर्गत उमा महेश्वर सवादरूप है। कवच का नाम त्रैलोक्यमोहन है। वह महा पातको का विनाशक है। उसके पाठ से शस्त्राघात का भय नही रहता और चिरायुष्य प्राप्त होता है । —क० का० ३५

(२) यह महादेव-कार्तिकेय सवादरूप है। इसमे पराशक्ति महात्रिपुरसुन्दरी के गुप्ततम सहस्र नाम वर्णित है । —इ० आ० २६०१

(३) त्रिपुरसुन्दरीसहस्रनामस्तोत्र। यह वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत महादेव-कार्तिकेय सवादरूप है । —ने० द० ३।२५३ (ग)

त्रिपुरसुन्दरीहृदय

लि०—वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० २१० । —अ० व० १७८

त्रिपुरसुन्दर्यर्चनपद्धति

लि०—(१) श्लोक स० २८०, अपूर्ण । —स० वि० २५५५२

(२) भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथ विरचित। इसमे दक्षिणामूर्तिसहिता मे उक्त महात्रिपुरसुन्दरी-पूजाक्रम प्रतिपादित है। —ए० ब० ६३५५

त्रिपुराकल्प

लि०—(१) आदिनाथ आनन्दभैरव कृत। यह शाक्त आगम १६ पटलो मे पूर्ण है। उनमे वर्णित विषय हैं—मन्त्रोद्धार, अनुष्ठानविधि, चक्रपूजा, न्यासविधि, चक्र-न्यासविधि, ध्यान तथा आत्मपूजाविधि, पूजामण्डप मे दीक्षा, चक्रपूजा का क्रम, षोडशार-पूजा, नैवेद्यविधि, पूजाप्रयोग, पूजाद्रव्यनिरूपण, मुद्रानिरूपण, जपयज्ञविधि आदि।

—म० द० ५६४८–५०

(२) —कैट् कैट् ३।५१

त्रिपुराकवच

लि०—(१) सर्वार्थसाधनकवच भी इसका नामान्तर है। जिसका तात्पर्य है—पाठमात्र से सब पुरुषार्थो को प्राप्त करानेवाला—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त करानेवाला। —ने० द० १।१३७६ (घ)

(२) दे०, त्रिपुरसुन्दरी। —कैट् कैट् १।२३७

त्रिपुराजपहोमविधि

लि०—(१) वामकेश्वरतन्त्र से गृहीत।

—ने० द० १।१६४८ (ङ)

(२) इसमे त्रिपुरा देवी की प्रसन्नता के लिए मन्त्र-जप तथा अग्नि मे चरुहवन आदि की विधि प्रतिपादित है। यह वामकेश्वरतन्त्र का एक भाग है।

—वी० कै० १३६६

त्रिपुरान्तकशिवपूजा

लि०—(१) लिङ्गार्चनतन्त्रान्तर्गत। इसमे त्रिपुरान्तक शिव की पूजाविधि वर्णित है।

—नो० स० १।१५६

त्रिपुरापञ्चाङ्ग

लि०— —कैट् कैट् १।२३७

(१) त्रिपुराकल्प —म० द० ५६४८ से ५० तक

" कैट् कैट् ३।५१

(२) त्रिपुरापद्धति —रा० ला० १६१७

,, —अ० व० ३४५२

,, —स० वि० २४३०६

स्मार्ताराम कृत, आठ मयूखो मे पूर्ण, नामान्तर–सुभगाचरित कहा जाता है।

—कैट् कैट् १।२३७, ३।५१

(३) त्रिपुराकवच —ने० द० ११।३७६ (घ)

,, —कैट् कैट् १।२३७

(४) त्रिपुरासहस्रनाम —ए० व० ६६६७

,, —कैट्. कैट् १।२३८

(५) त्रिपुरास्तव —ने० द० ११।३७६ (न)

त्रिपुरास्तवराज —कैट् कैट् १।२३८

त्रिपुरापटल

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, पूर्ण, श्लोक स० ७७।

—स० वि० २५१३७

(२) —कैट् कैट् १।२३७

त्रिपुरापद्धति

लि०—(१) श्लोक स० ४००। —अ० व० ३४५२

(२) पार्वती-शङ्कर सवादरूप, श्लोक स० ५१९। इसमे त्रिपुरसुन्दरी के मन्त्रोद्धार का प्रकार निर्देशपूर्वक ध्यान, स्तोत्र, कवच तथा पुरश्चरण की प्रणाली बतलाते हुए उनका प्रयोग प्रतिपादित है। —रा० ला० १६१७

(३) स्मार्ताराम कृत, श्लोक स० ९४०।

—डे० का० ३५६ (१८७९–८० ई०)

(४) (क) श्लोक स० १५१ पूर्ण (?)। (ख) श्लोक स० १२४८, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० २३५, अपूर्ण। ये तीन के तीन पृथक्-पृथक् ग्रन्थ प्रतीत होते है।

—स० वि० (क) २६५३४, (ख) २४३०६, (ग) २६५३६

(५) स्मार्ताराम कृत, आठवें मयूख मे समाप्त, सुभगाचरित्र नाम से प्रख्यात।

—कैट्. कैट् १।२३७, ३।५१

(६) दो प्रतियां है। —म० रि० १८४, १८५

त्रिपुरापुरश्चरणप्रकार

लि०—मीमानन्दनाथ कृत, श्लोक स० ३८८, पूर्ण।

—स० वि० २३९४८

त्रिपुरापूजनक्रम

लि०—इसमे त्रिपुरसुन्दरी की पूजाविधि वर्णित है।

—बी० कै० १३५९

त्रिपुरापूजा

(मुद्रासग्रहसहित)।

लि०—विमलानन्द भारती विरचित, श्लोक स० १४०, पूर्ण।

—स० वि० २५२८१

त्रिपुरापूजापद्धति

लि०—इसमे त्रिपुरा देवी की पूजा विस्तार से प्रतिपादित है। बहुत-से स्तोत्र विभिन्न तन्त्रग्रन्थो से इसमे उद्धृत हैं। सौभाग्य कवच वामकेश्वरतन्त्र से, अन्नपूर्णेश्वरीपञ्चाशिका-कल्पवल्ली रुद्रयामल से तथा राजराजेश्वरीध्यान रुद्रयामल से।

—ए० ब० ६३७२

त्रिपुराबालापटल

लि०—विश्वसारोद्धारान्तर्गत, श्लोक स० ९७, पूर्ण। —स० वि० २५८२६

त्रिपुराबालापद्धति

लि०—श्लोक स० ५००। —अ० ब० ९९८३

त्रिपुराभैरवी

उ०—आगमतत्त्वविलास मे।

त्रिपुरामहिमा

लि०—भास्करराय कृत टीकायुक्त। —कैट् कैट् १।२३७

त्रिपुरामाहात्म्य

लि०—श्लोक स० ३८६८, पूर्ण, विवरण मे ज्ञानखण्ड लिखा है। (यह त्रिपुरारहस्य का माहात्म्य-खण्ड और ज्ञान-खण्ड तो नही है ?) —स० वि० २४९६०

त्रिपुरारहस्य (ज्ञानखण्ड)

लि०—पन्ने १०६। —रा० पु० ५६५९

त्रिपुरारहस्य (माहात्म्य-खण्ड)

लि०—श्लोक स० ५२००, पन्ने २१०। —अ० व० ५५८२

त्रिपुरारहस्य (इतिहास-खण्ड) अप्राप्य है।

त्रिपुराराधनविधिकल्प

लि०— —म० रि० १९६

त्रिपुरार्चनदीपिका

लि०—सर्वानन्द कृत। —कैट् कैट् १।२३८

त्रिपुरार्चनपद्धति (१)

लि०—कैवल्यानन्द कृत, श्लोक स० १४६२, पूर्ण।

—स० वि० २३९८१

त्रिपुरार्चनपद्धति (२)

लि०—इसे त्रिकूटार्चनपद्धति भी कहते हैं। इसके रचयिता शिवराम हैं।

—कैट् कैट् २।५०

त्रिपुरार्चनमञ्जरी

लि०—केशवानन्द विरचित, श्लोक स० ३७०, —अ० व० ६०६

त्रिपुरार्चनरहस्य

लि०—(१) ज्ञानार्णवान्तर्गत दक्षिणामूर्तिसहिता के अनुसार ब्रह्मानन्द विरचित। श्लोक स० १०५०। इसमे विषय यो वर्णित है—प्रात ब्राह्म मुहूर्त मे देशिक का कर्तव्य निरूपण, गुरु-पूजाविधि, अजपाजप की विधि, स्नानविधि, तर्पणविधि, त्रिपुरायजनविधि, त्रिपुरापूजा की पद्धति, उसमे गणेश-न्यास, योगिनीन्यास आदि विविध न्यासो का निरूपण, चक्रसिहासन के ऊपर स्थित सुन्दरी की पूजा का प्रयोजन आदि कथन, कुलदीपविधि, शान्त्यष्टक वर्णन आदि। —रा० ला० २४८७

(२) दे०, महात्रिपुरार्चनरहस्य। —कैट् कैट् २।५०

[हठयोगप्रदीपिका के टीकाकार ब्रह्मानन्द ये ही है।]

त्रिपुरार्चनविधि

लि०— —कैट् कैट् १।२३८

त्रिपुरार्चारहस्य

लि०—विमलानन्दनाथ कृत, श्लोक स० ८००। —अ० ब० १०५५३

त्रिपुरार्णव

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका सौभाग्यवर्धिनी, सौभाग्यभास्कर, ललितार्चनचन्द्रिका, चैतन्य-गिरि कृत विष्णुपूजापद्धति, तन्त्रसार, आगमकल्पलता, ताराभक्तिसुधार्णव तथा पुरश्चर्यार्णव मे।

त्रिपुरार्णवचन्द्रिका

लि०—रामलिङ्ग कृत। —कैट् कैट् १।२३८

त्रिपुरावरिवस्याविधि

लि०—कैवल्याश्रम विरचित। —कैट् कैट् १।२३८

त्रिपुराषोडशीतन्त्र

लि०—श्लोक स० २५००। —अ० ब० १२१७४

त्रिपुरासमुच्चय

उ०—सुन्दरदेव ने इसका उल्लेख किया है। दे०, त्रिपुरासारसमुच्चय। इस पर गोविन्दशर्मा विरचित टीका भी है। —कैट् कैट् १।२३८

त्रिपुरासर्वस्व

लि०—(क) श्लोक स० लगभग ५००, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० २१०, अपूर्ण।
—स० वि० (क) २४५८५, (ख) २४५८७

त्रिपुरासहस्रनामस्तोत्र

लि०—महातन्त्रमानसोल्लासान्तर्गत हर-कार्तिकेय सवादरूप। श्लोक स० २००, पूर्ण। —ए० व० ६६६७

त्रिपुरासारतन्त्र

लि०—(१) नामान्तर—श्रीसारतन्त्र। शिव-पार्वती सवादरूप यह तन्त्र १० पटलो मे पूर्ण है। दस महाविद्याओ का प्रतिपादन, महामन्त्र विवरण, मन्त्रो के अर्थ आदि कथन,

पूजा की विधि आदि, गुरु द्वारा प्रदत्त मन्त्र के गोपन की विधि, योग के उदय का प्रतिपादन, पूजाक्रम आदि, षट्कर्मो (मारण, मोहन आदि) के साधन का प्रकार, अन्तर्याग आदि का कथन इत्यादि विषय इसमे वर्णित है। —नो० सं० २१९२

यह सर्वोल्लास मे चतु षष्टि (६४) तन्त्रो मे अन्यतम कहा गया है।

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, प्राणतोषिणी, सर्वोल्लास, ललितार्चनचन्द्रिका और कालिकासपर्याविधि (काशीनाथकृत) मे।

त्रिपुरासारसमुच्चय

लि०—(१) नागभट्ट कृत। इन्हे भट्ट नाग भी कहा गया है। श्लोक स० ९००, अपूर्ण। इस पर गोविन्द शर्मा कृत टीका है। इस प्रति मे ३ से ६ तक ४ ही पटल है।

—ए० व० ६३३५

(२) नागभट्ट कृत। इसमे ग्रन्थकार ने गुरु-परम्परा से उपदिष्ट कुलनायिका त्रिपुरा का आराधनक्रम बतलाया है। विषय—त्रिपुरा की उत्पत्ति, न्यास आदि का निरूपण, नाडी आदि का निरूपण, नाडी आदि की स्थिति का निरूपण, त्रिपुरा के यन्त्र आदि का निरूपण आदि। —नो० स० ११५७

(३) नागभट्ट कृत। श्लोक स० ५७ (३य पटल के आरभ तक ही)।

—अ० व० १३४०२ (ग)

(४) नागभट्ट कृत। —रा० पु० ५६

(५) आचार्य नागभट्ट कृत। इसमे त्रिपुरसुन्दरी की पूजाविधि प्रतिपादित है।

—बी० कै० १३६०

(६) नागभट्ट विरचित। १० पटलो मे पूर्ण। श्री त्रिपुरादेवी की दैनिक पूजा पर यह रचा गया है। —म० द० ५६५१-५२

(७) सटीक, नागभट्ट कृत। —ज० का० १०३०

(८) सटीक, श्लोक सं० ६०। —डे० का० ३५७ (१८७९-८० ई०)

(९) (क) भट्टनाग कृत, श्लोक स० ४६०, अपूर्ण। (ख) नागभट्ट कृत श्लोक स० ७८८, पूर्ण। —स० वि० (क) २४१४५, (ख) २४१८७

(१०) नागभट्ट कृत, गोविन्द कृत पदार्थादर्श टीका युक्त।

—कैट् कैट् ११२३८, ३१५१

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव, पुरश्चर्यार्णव, ललितार्चनचन्द्रिका तथा तन्त्रसार मे। रघुनन्दन ने भी तीर्थतत्त्व मे इसका उल्लेख किया है।

त्रिपुरासारसमुच्चय की टीकाएँ —

लि०—(१) गोविन्दाचार्य कृत। श्लोक स० ११३५। इस टीका का नाम पदार्थादर्श है। यह पूरे १० पटलो मे है। —रा० ला० ४८२

(२) सम्प्रदायदीपिका टीका पूरे १० पटलो मे है।

—म० द० ५६५३–५४

(३) सम्प्रदायदीपिका, श्लोक स० १०८०। अङ्गन्यास, करन्यास, आवाहनी मुद्रा से आवाहन, स्थापनी मुद्रा से स्थापना, सनिधिकरणी मुद्रा से सनिधान करने के अनन्तर अर्घ्य आदि १६ उपचारो से मूलमन्त्र द्वारा पूजा, आरार्ति, प्रणाम, परिवार-देवताओ की पूजा आदि प्रतिपादित है। —ट्रि० कै० १०४३ (ख)

(४) (क) गोविन्द शर्मा कृत सम्प्रदायप्रदीपिका नामक टीका से युक्त त्रिपुरासार-समुच्चय (नागभट्ट कृत) श्लोक स० १६१५ पूर्ण। (ख) दीपिका नाम की टीका (गोविन्द शर्मा कृत) सहित त्रिपुरासारसमुच्चय श्लोक स० लगभग १०००, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २४०५०, (ख) २५८७२

(५) गोविन्द शर्मा कृत पदार्थादर्श टीका।

—कैट् कैट् १।२३८, ३।५१

(६) त्रिपुरासारसमुच्चय टिप्पण। अमृतानन्दनाथ कृत।

—न्यू कैट् कैट्

त्रिपुरासिद्धान्त

लि०—(१) श्रीविद्यान्तर्गत उमा-महेश्वर सवादरूप। त्रिपुरा देवी के सम्बन्ध मे स्वीकृत कतिपय सिद्धान्तो पर यह पुस्तक है। केवल १ म अध्याय मात्र।

—म० द० ५६५५

(२) त्रिपुरासिद्धान्त मे सुवर्णाकर्षणभैरवस्तोत्र। —कैट् कैट् १।२३८

उ०—सौभाग्यभास्कर मे।

त्रिपुरास्तव

लि०—रुद्रयामल से गृहीत। —ने० द० १।१३७६ (न)

त्रिपुरास्तवराज

लि०— —कैट् कैट् ११२३८

त्रिपुरास्नानादिनित्यकर्मविधि

लि०— —ने० द० १।१५८४ (च)

त्रिपुराहृदय

लि०—(१) श्लोक स० २२१। —अ० व० १०७४१
(२) विन्दुयामल से गृहीत। —कैट् कैट् ११२३८
(३) रुद्रयामल से गृहीत। —कैट् कैट् २१५१

त्रिपुरेश्वरीयजनबलिदानविधि

लि०—नित्यातन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० लगभग १६०, अपूर्ण। इसका लिपिकाल मवत् १७०४ वि० है। —स० वि० २४५७२

त्रिभङ्गचरित्र

लि०—कृष्णयामलान्तर्गत वलराम-कृष्ण सवादरूप। इसमे त्रिभङ्गरूप कृष्ण का वर्णन है। इसकी श्लोक सख्या ११२ है। पूर्ण। —ए० वं० ५८९१

त्रिविक्रम

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

त्रिविधान

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

त्रिशक्तिपद्धति

लि०— —कैट् कैट् ११२३९

त्रिशक्तिपूजाविधि

लि०—त्रिकूटारहस्यान्तर्गत। श्लोक स० ५९५, पूर्ण।
—स० वि० २५३४२

त्रिशक्तिरत्न तथा त्रिशक्तितन्त्र

उ०—पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, आगमतत्त्वविलास तथा तारामक्तिसुधार्णव मे।

त्रिशक्तिरत्नाकर

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से

त्रिशक्तिलक्ष्मीमन्त्रानुष्ठानपद्धति

लि०—श्लोक स० १४८, पूर्ण। —स० वि० २६६००

त्रिशती

लि०—(१) इसमे ललिता देवी के ३०० नाम हैं। उनपर श्री शङ्कराचार्य की त्रिशती-नामार्थप्रकाशिका व्याख्या है। यह ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है।

—ए० ब० ६६६८

(२) ब्रह्माण्डपुराण के उत्तर खण्डान्तर्गत ललितोपाख्यान से गृहीत देवीस्तोत्र। इसपर वज्रराज की टीका है। —कैट् कैट् १।२३९

उ०—सौभाग्यभास्कर मे।

त्रिशतीकालोत्तर

उ०—शैवपरिभाषा (शिवाग्रयोगीन्द्रज्ञान शिवाचार्य कृत) मे।

त्रिशतीनामार्थप्रकाशिका

लि०—(१) शङ्कराचार्य कृत। —रा० पु० ५८०६

(२) ब्रह्माण्डपुराण के उत्तरखण्डान्तर्गत ललितोपाख्यान से गृहीत देवीस्तोत्र त्रिशती पर शङ्कराचार्य विरचित यह टीका है। —कैट् कैट् १।२३९-४०

त्रिशतीस्तोत्रटीका

लि०—श्लोक स० ६७०, अपूर्ण। श्रीशङ्कराचार्य कृत। —ए० ब० ६६६९

त्रिशरीरभैरव

उ०—क्षेमरप्ज ने इसका उल्लेख किया है। —कैट् कैट् १।२४०

त्रिशिखाविमर्शिनी

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

त्रिशिखाशास्त्र

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

त्रिशिरोभैरव

उ०—शिवसूत्रविमर्शिनी, तन्त्रालोक, तन्त्रालोक-टीका जयरथी तथा महार्थमञ्जरी-परिमल मे ।

त्रिशिरोमत

उ०—प्रत्यभिज्ञाहृदय तथा तन्त्रालोक मे ।

त्रिष्टुब्विनियोगक्रम

लि०—(क) श्लोक स० ४०० । सकल सुख प्रदान मे कामधेनु रूप, शत्रुओ तथा पापो को निश्शेष करने मे प्रलयानल तुल्य सकलनिगमसारविद्या रूप त्रिष्टुप् का गुप्ततम विनियोगक्रम इसमे प्रतिपादित है ।

(ख) श्लोक स० १०४६, शेष पूर्ववत् ।

—ट्रि० कै० (क) ९८४, (ख) १००४ (ख)

त्रैपुरपद्धति

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से ।

त्रैपुरसूत्र

उ०—सौभाग्यभास्कर मे ।

त्रैलोक्यमङ्गलकवच

लि०—(१) नारदपञ्चरात्रान्तर्गत, पूर्ण । —व० प० ४६८

(२) सनत्कुमारतन्त्रान्तर्गत (क) श्लोक स० ५६, पूर्ण । (ख) श्लोक स० वही, पूर्ण ।

—र० म० (क) ११३८, (ख) १००५

(३) (क) नारदपञ्चरात्र के ज्ञानामृतसार से गृहीत ।

(ख) सनत्कुमारसहिता से गृहीत ।

—कैट् कैट् ११२४०

(४) सनत्कुमारतन्त्र से गृहीत तथा बृहद्गौतमीय तन्त्र से गृहीत ।

—कैट् कैट् २१५१, ३१५२

त्रैलोक्यमोहन (१)

उ०—आगमतत्त्वविलास मे ।

त्रैलोक्यमोहनकवच (२)

(१) लि०—(क) श्लोक स० १४० (५ अन्य स्तोत्रो के साथ)।
(ख) श्लोक स० ७०। (ग) श्लोक स० ७०। (घ) श्लोक स० ५०।
(ङ) श्लोक स० ७०० तकारादितारासहस्रनाम के साथ।
—अ० व० (क) ३५३०, (ख) ३५२९, (ग) ३५२८, (घ) १०३४३
(ङ) ११२८४

(२) गुरुकवच, पूर्ण। —व० प० ५३२ (क)

(३) रुद्रयामलान्तर्गत उमा-महेश्वर सवादरूप। —ए० व० ५८१५

(४) रुद्रयामलान्तर्गत (क) श्लोक स० लगभग ५१। (ख) श्लोक स० ६०, पूर्ण।
—र० म०

त्रैलोक्यमोहनकवच-व्याख्या

लि०—(१) श्लोक स० १२०।
—डे० का २३२ (१८८३-८४ ई०)

(२) —ए० व० ६७२

त्रैलोक्यमोहनकालिकाकवच

लि०—रुद्रयामल मे गृहीत। —कैट् कैट् ३।५२

त्रैलोक्यमोहनतन्त्र

लि०—(क) श्लोक स० ११५, पूर्ण। (ख) अपूर्ण।
—स० वि० (क) २४०५६, (ख) २४६०९

त्रैलोक्यविजयकथा

लि०— —कैट् कैट् १।२४०

त्रैलोक्यविजयकवच

लि०—(१) (क) सेवकराम कृत, श्लोक स० ४०।
(ख) रुद्रयामल से गृहीत श्लोक स० ३०
—अ० व० (क) ३५३१, (ख) ५०२९६

(२) —कैट् कैट् १।२४०, ३।५२

त्रैलोक्यविजयनामकनृसिंहकवच

लि०— —कैट् कैट् १।२४०

त्रैलोक्यसार

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव तथा आगमतत्त्वविलास मे। हेमाद्रि ने दानखण्ड मे, रघुनन्दन ने तिथितत्त्व मे तथा नीलकण्ठ ने दानमयूख मे इसका उल्लेख किया है।

त्र्यम्बकतन्त्र

लि०—त्र्यम्बकतन्त्र मे महामृत्युञ्जयकल्प। कैट् कैट् २।५०.

त्र्यबम्बकतन्त्र तथा त्रोतलोत्तर

लि०—(१) आक्सफोर्ड १०९ (क) के अनुसार गौरी कान्त द्वारा उल्लिखित।
—कैट् कैट्. २।२४१

त्र्यम्बकमन्त्र

लि०—श्लोक स० ५०। —अ० व० ३४५३

त्वरितरुद्रविधान

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक स० १३२, पूर्ण।
—स० वि० २३८५०

त्वरितरुद्रविधि

लि०—(१) गङ्गासुत प्रोक्त। इसमे त्वरित रुद्र की पूजा का विस्तार से विवरण दिया गया है। पूजा के प्रमाण और प्रयोगविधि दोनो प्रदर्शित हैं।
—ए० व० ६४६४

(२) पूजाविधि, होम, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मणभोजन इत्यादि विषय इसमे प्रतिपादित है। यह उत्तम पुरश्चरण है। —नो० म० ३।१३७-३८

त्वरिताज्ञान

यह ग्रन्थ त्वरिता की पूजा पर रचित है।

उ०—देवनाथ ने तन्त्रकौमुदी मे इसका उल्लेख किया है।
—कैट् कैट् १।२४१

त्वरितास्तोत्र

लि०—त्वरिता काली का एक रूप भेद है। तन्त्रसार मे जिनकी पूजा दक्षिणाचार मे दी गयी है। यह स्तोत्र उनसे सम्वन्ध रखता है। ने० द० १।२२६ (क)

दक्षिणकालिकाकल्प

लि०—दे०, काल्यष्टक, —कैट् कैट् १।२४२

दक्षिणकालिकाकवच

(१) लि०—(क) (१) कालतन्त्र से गृहीत।
(२) भैरवतन्त्र से गृहीत।
(ख) (३) वीरभद्रतन्त्र से गृहीत।
—कैट् कैट् (क) १।२४१, (ख) ३।५२

दक्षिणकालिकादीपदानविधि

लि०—ब्रह्मयामल से गृहीत। श्लोक स० ३२, पूर्ण। शिवाबलि भी इसमे सनिविष्ट है।
—स० वि० २५३९९

दक्षिणकालिकादीपपटल

लि०—अगस्त्यसहिता से गृहीत। —कैट् कैट् ३।५२

दक्षिणकालिकानित्यपूजालघुपद्धति

लि०—(१) रामभट्ट कृत, श्लोक स० ५००। —अ० व० ३५३२

(२) श्रीमद्देशिकमण्डलमुकुटमाणिक्यकान्तिमञ्जरीकान्तिविराजितचरणकमल रामभट्ट विरचित। इसमे दक्षिण कालिका की दैनिक पूजाविधि सक्षेपत प्रतिपादित है एव पञ्चमकारो के सेवन मे ब्राह्मण की स्वच्छन्दता मे सकोच किया गया है।
—वी० कै० १२५६

दक्षिणकालिकानित्यपूजाविधि

लि०—(१) यह भी दक्षिणकालिका की दैनिक पूजाविधि का प्रतिपादक निवध है। —वी० कै० १२५७

(२) कालिकार्चादीपिका भी इसका नामान्तर है।
—कैट् कैट् १।२४२

दक्षिणकालिकापञ्चाङ्ग

लि०—(१) रुद्रयामल से गृहीत। श्लोक स० १५००।

—अ० व० १३७८२

(२) श्लोक स० ७५। —डे० का० ३५८ (१८७९-८० ई०)।

दक्षिणकालिकापद्धति

लि०—(१) (क) श्लोक स० १०००। (ख) श्लोक स० २८०, दाशरथि कृत।

—अ० व०, (क) ९४९१, (ख) ८०४

(२) इसमे दक्षिणकालिका की पूजापद्धति वर्णित है। उसके अनुसार यथाविधि देवी की पूजा कर, साधको को प्रसाद बाँट कर तथा स्वय भी ग्रहण कर अपने को देवी रूप समझता हुआ वैष्णवाचारपरायण होकर यथासुख विहार करे, यो सक्षेप मे ग्रन्थ-प्रतिपाद्य विषय है। —बी० कै० १२५८

(३) (क) श्लोक स० १९२, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० २६२, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० १२६, अपूर्ण। (घ) श्लोक स० २२८, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २५४८६, (ख) २५८२४, (ग) २६२६१, (घ) २६२६२

दक्षिणकालिकापूजनपद्धति

लि०—रामभट्ट विरचित, श्लोक स० ३४५, पूर्ण।

—स० वि० २६५४८

दक्षिणकालिकापूजनप्रयोग

लि०— —कैट् कैट् १।२४२

दक्षिणकालिकापूजापद्धति

लि०—(१) अपूर्ण। —ए० व० ६३१५

(२) श्लोक स० ९००। —अ० व० ८०४०

(३) यह दक्षिण कालिका की पूजापद्धति का प्रतिपादक निबन्ध ग्रन्थ है। इसमे दक्षिण कालिका पूजा का निरूपण कर अन्तमे निर्वाण मन्त्र दिया गया है। जिसका मणिपूर मे ध्यानपूर्वक जप करने का निर्देश है। —बी० कै० १२५९

(४) अपूर्ण। —ब० प० ५०७

(५) (क) श्लोक स० ७८४, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० १५० पूर्ण (?)। (ख) श्लोक स० २१४ अपूर्ण। (घ) श्लोक स० ४७२ पूर्ण।

—स० वि० (क) २३८८४, (ख) २४४५५, (ग) २४५५१, (घ) २४८०४

[स वि मे ६ प्रतियाँ और है जिनकी सख्या—२४८६०, २४९८८, २५६३२, २५७८३ २६२५० तथा २६३०६ है।]

दक्षिणकालिकापूजाविधि

लि०—श्लोक स० ३६, अपूर्ण। —स० वि० २४८३८

दक्षिणकालिकार्चनपद्धति

लि०—(१) त्रैलोक्यनाथ कृत। कालिका के उपासको की दैनिक चर्या के साथ कालीपूजा का विशेष विवरण इसमे दिया गया है। —ए० ब० ६३१०

(२) श्लोक स० ८३६, पूर्ण। —स० वि० २६४१९

(३) —कैट् कैट् ३।५२

दक्षिणकालिकाविधि

लि०—श्लोक स० २९०, अपूर्ण। —स० वि० २४५७६

दक्षिणकालिकासंक्षेपपूजाप्रयोग

लि०—हरकुमार ठाकुर विरचित, श्लोक स० ४६८। इसमे आसन-शुद्धि आदि के साथ पुरश्चरग आदि की विधि वर्णित है। —रा० ला० २५५

दक्षिणकालिकासपर्याकल्पलता

लि०—(१) सुन्दराचार्य विरचित। इसका निर्माण काल तथा निर्माण स्थान यो कहा गया है—गगनगज-महेन्द्रैर्गण्यमाने शकाब्दे अर्थात् शकाब्द १४८० मे वाराणसी मे इसकी रचना हुई। इसमे दक्षिगकालिका की साङ्गोपाङ्ग पूजा प्रतिपादित है।

—वी० कै० १२६०

(२) सुन्दराचार्य कृत, श्लोक स० ७५, अपूर्ण। निर्माणकाल शकाब्द १४८०

—स० वि० २६६७०

(३) सुन्दराचार्य ने इसकी रचना १५५९ ई० मे की। —कैट् कैट् १।२४२

दक्षिणकालिकासहस्रनामस्तोत्र

लि०—(१) कालीकुलसर्वस्वान्तर्गत शिव-परशुराम सवादरूप। श्लोक स० ३६७। इसमे दक्षिणकालिका के सहस्र नाम वर्णित है। सद्‌गुरुभक्तिपूर्वक महाकाली के चरणो पर दत्तचित्त होकर जो इसका पाठ करता है मुक्ति, मुक्ति और भक्ति सदा उसके करस्थ रहती है। —रा० ला० ६८५

(२) कालीकुलसर्वस्वान्तर्गत। —कैट् कैट् १।२४२

दक्षिणकालिकास्तव

लि०—एकवीरकल्पान्तर्गत। जो इस स्तव का पाठ करता है उसके घर मे लक्ष्मी खेलती है और वह सर्वत्र विजयी होता है। इस स्तोत्र का नाम सर्ववाञ्छाप्रद है। —नो० स० १।१५८

दक्षिणकालिकास्तोत्र

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत चन्द्रचूडोक्तसहिता से गृहीत। यह राजराजेश्वरी अनिरुद्ध सरस्वती दक्षिणकालिका देवी का ससारतारक स्तोत्र है। —ए० व० ६६३७

दक्षिणकालिकास्वरूपाख्यस्तोत्रराजपश्वाचारटीका

लि०—(१) सदम्वष्ट कृत। —नो० स० १।१५९

दक्षिणकालिकास्वरूपस्तोत्र

(२) दक्षिणकालिका स्वरूप स्तोत्र, वीरतन्त्र के श्यामाकल्पान्तर्गत। दो प्रतियाँ है। दोनो पूर्ण है। —व० प० (क) १०६८, २१०

(३) पश्वाचार विहित टीका। —कैट् कैट् ३।५२

दक्षिणकालीककारादिसहस्रनाम

नामान्तर—सुन्दरीशक्तिदान। आदिनाथ कृत।

लि०—(क) यह महाकालसहिता का अश है।

(ख) लिपिकाल १७७० वि०। —म० रि० (क) २००, (ख) २०१

दक्षिणकालीकल्प

लि०—श्लोक स० ७००। —अ० व० ९०६

दक्षिणकालीकवच

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। —कैट् कैट् ३।५२

दक्षिणकालीतन्त्र

लि०—दे०, Katalog der Sanskrıt Handscrıft Unıversıty Bıblıothek ın Leıpzıg १२९५, १।

—कैट् कैट् ३।५२

दक्षिणकालीदीपदानविधि

लि०—श्लोक स० ७५। —अ० व० ५०५८

दक्षिणकालीनित्यपूजनपद्धति

लि०— —कैट् कैट् १।२४२

दक्षिणकालीपटल

लि०—(१) श्लोक स० १८४, पूर्ण। —स० वि० २५२२१
(२) —कैट् कैट् १।२४२

दक्षिणकालीपद्धति

लि०— —कैट् कैट् १।२४२

दक्षिणकालीपूजा

लि०—श्लोक स० ७५०। —अ० व० ५३४७

दक्षिणकालीपूजापद्धति या श्यामारत्न

लि०—(१) यादवेन्द्र कृत। —कैट् कैट् १।२४२
(२) श्लोक स० ४२१, अपूर्ण। —स० वि० २४३१९

दक्षिणकालीपूजाविधि

लि०—श्लोक स० १५५, अपूर्ण। —स० वि० २६२४८

दक्षिणकालीविधि

लि०—यह काली की विविध पुरश्चरण-क्रियाओ का प्रतिपादक सग्रह है।

—ए० व० ६३

दक्षिणामूर्तितन्त्र

उ०—देवनाथ द्वारा रा० ला० २०१० (तन्त्रकौमुदी) मे तथा प्राणतोषिणी और आगमकल्पलता मे ।

दक्षिणामूर्तिदीपिका

लि०—भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथभट्ट विरचित। इसमे दक्षिणामूर्ति शिव की नित्य और नैमित्तिक पूजाओ की प्रक्रिया वर्णित है। उक्त पूजा के पूर्व पूजक के कर्तव्य प्रात कृत्यो का प्रतिपादन है।　—ए० व० ६४५३

दक्षिणामूर्तिपञ्चाङ्ग

लि०—श्लोक स० ८००। अपूर्ण।　—अ० व० १०८३२

दक्षिणामूर्तिपटल

लि०—(१) श्लोक स० ८५, पूर्ण।　—स० वि० २३९८९

(२)　—कैट् कैट्. १।२४२, ३।५२

दक्षिणामूर्तिपद्धति

लि०—(१) श्लोक, स० ११५, पूर्ण।　—स० वि० २५५३१

(२)　—कैट् कैट् १।२४२

दक्षिणामूर्तिपूजा

लि०—श्लोक स० १०८, पूर्ण।　—स० वि० २५२९७

दक्षिणामूर्तिपूजापद्धति

लि०—सुन्दराचार्य विरचित, श्लोक स० ५२५, अपूर्ण।　—स० वि० २६२८४

दक्षिणामूर्तिमन्त्रमाला

लि०—श्लोक स० ७०।　—अ० व० २६८७

दक्षिणामूर्तिमन्त्रविधान

लि०—श्लोक स० १९६, अपूर्ण।　—स० वि० २५८३०

दक्षिणामूर्तिमन्त्रार्णव

लि०—शङ्कराचार्यकृत।　—कैट् कैट्. १।२४२

दक्षिणामूर्तिमन्त्रोद्धार

लि०—मार्कण्डेय कृत शतकाण्डात्मक मार्कण्डेयपुराणान्तर्गत २य परिस्पन्द मे उक्त। श्लोक स० ७८ पूर्ण। —स० वि० २५८७

दक्षिणामूर्तिशेखर

लि०—श्लोक स० ३६८, पूर्ण। —स० वि० २५५३२

दक्षिणामूर्तिसंहिता

लि०—(१) शिव-पार्वती सवादरूप। ६४ पटलो मे पूर्ण। इसके कतिपय मुख्य-मुख्य विषयो का विवरण यो दिया गया है—एकाक्षरलक्ष्मी-पूजाविधि, महालक्ष्मी-पूजा, त्रिशक्तिमहालक्ष्मीयजनविधि, अपने मे स्थित अक्षर परम ज्योति विद्या की आराधना, प्रणव विद्या के पर-निष्कल भेदो की आराधना, अजपानामविधान, मातृका-पूजासाधन-विधि, त्रिपुरेश्वरी-समाराधनविधि, कामेश्वरी-पूजाविधि आदि।

—इ० आ० २५८३

(२) इसमे शक्ति के विभिन्न स्वरूपो की पूजा-विधि वर्णित है। विशेष विवरण के लिए इ० आ० २५८३, व० प० १३७८ और क० का० ३७ देखे। इसके पटलो की स० किसी-किसी प्रति मे ६६ दी गयी है। उनका अन्तिम अश प्रस्तुत प्रति के अन्तिम अश से मिलता है। —ए० व० ६०५४

(३) ५ प्रतियाँ है। जिनमे (क) सज्ञक ४ की श्लोक स० १५०० और (ख) १ की श्लोक स० ११५० दी गयी है। —अ० व० (क) ५६२३ आदि, (ख) ३४५१

(४) यह मौलिक तान्त्रिक ग्रन्थ है। इसमे विविध देवियो की पूजा, उपासना आदि वर्णित है। यह ६६ पटलो मे पूर्ण है। प्रारभिक तीन पटलो मे लक्ष्मी की पूजा, उसके विविध रूपो मे वर्णित है। ४र्थ मे साम्राज्यलक्ष्मी की पूजा आदि, ५म और ६ष्ठ पटलो मे ब्रह्मविद्या की पूजा, ७ वे मे अजपा, ८ वे मातृकापूजा वर्णित है। ९ वें पटल मे पूर्वाम्नाय का विवरण, १०वे मे ललितादेवी की पूजा तथा ११ वे मे कामेश्वरी की पूजा आदि वर्णित है। —क० का० ३७

(५) ३६ पटल पर्यन्त। —वं० प० १३७८

(६) श्लोक स० १५०, पूर्ण। —र० म० ४८५४

(७) श्लोक स० ६८४, २५ पटल तक। —डे० का० ३८९

दक्षिणकालीसहस्रनाम

लि०— —कैट् कैट् १।२४२

दक्षिणाकल्प

लि०—हरगोविन्द तन्त्रवागीश कृत। इसमे १००० श्लोक तथा कुछ अधिक १३ परिच्छेद मिलते है। इनमे मुख्यत पुरुष और प्रकृति-भेद तथा शाक्तो की प्रशसा, दक्षिण-काली का मन्त्रोद्धार, प्रात कृत्य—स्नान, तिलक, सन्ध्याविधि आदि, पूजा-स्थान का निर्णय, दिशानियम, शिवपूजादि विधान, गुरुपूजा, स्तोत्र आदि, दक्षिणकालिका-पूजा, मन्त्र आदि का प्रतिपादन, ये विषय वर्णित हैं। —रा० ला० २९१

दक्षिणाचारचन्द्रिका

लि०—भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथ विरचित, श्लोक स० १०००।
—अ० व० १०६७३

दक्षिणाचारतन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० १३००, अपूर्ण। —स० वि० २३९१३
(२) —कैट् कैट् १।२४२
(३) श्लोक स० १२००। —अ० व० ९६५९
उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

दक्षिणाचारतन्त्रटीका

लि०—(१) नाम—गूढार्थादर्श, भडोपनामक काशीनाथभट्ट विरचित। इसमे २६ पटल है। —ए० व० ६१४०

(२) २६ पटलो मे पूर्ण, काशीनाथभट्ट अनन्त के शिष्य थे, परवर्ती काल मे इनका नाम शिवानन्द था। —म० रि० २०७

दक्षिणाचारदीपिका

लि०—भडोपनामक काशीनाथभट्ट विरचित। श्लोक सं० ५००।
—अ० व० ८३१२
(२) काशीनाथ विरचित। —कैट् कैट् १।२४२

दक्षिणाचारविधि

लि०—कालीरहस्यान्तर्गत, इसमे वाम और दक्षिण मार्ग से देवी कालीजी की पूजाविधि वर्णित है। —क० का ७६ (२)

दक्षिणाचैतन्य

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से

दक्षिणचैतन्यगूढार्थादर्श

लि०—काशीनाथभट्ट कृत। —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से

दक्षिणामूर्तिकल्प

लि०—(क) वामदेवसहितान्तर्गत, श्लोक स० लगभग ३०५, अपूर्ण। (ख) नारदीय, श्लोक स० लगभग १९०, पूर्ण। (ग) श्लोक स० १३८, अपूर्ण।
—स० वि० (क) २५४१०, (ख) २५८०२, (ग) २५८१२

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा ललितार्चनचन्द्रिका मे।

दक्षिणामूर्तिकवच

लि०— —कैट् कैट् २।५१

दक्षिणामूर्तिकाण्ड

लि०—शतकाण्डात्मक मार्कण्डेयपुराण के २६ वे काण्ड के अन्तर्गत, १ से ४ परिच्छेद, श्लोक स० लगभग ९३, अपूर्ण। —स० वि० २५०५३

दक्षिणामूर्तिकौस्तुभ

लि०—भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथभट्ट विरचित। इसमे दक्षिणामूर्ति शिव की पूजा का विवरण दिया गया है। प्रारभ मे उपासक के प्रात कृत्यो का निरूपण है। इसकी श्लोक स० ९१ है। —ए० व० ६४५२

दक्षिणामूर्तिचन्द्रिका

लि०—(१) काशीनाथभट्ट कृत। इसकी श्लोक स० २००० तथा पटल स० १५ है। अनुक्रमणी तथा यन्त्र सहित। —अ० व० १०६६०

(२) काशीनाथ कृत, श्लोक स० ११५५, अपूर्ण। —स० वि० २४९७४

(८) श्लोक स० लगभग २१२७, पूर्ण। —सं० वि० २३८५१
(९) —कैट् कैट् ११२४२
(१०) —म रि २०४

उ०—सौभाग्यभास्कर, सुन्दरीमहोदय, आगमतत्त्वविलास, तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, प्राणतोपिणी, ताराभक्तिसुधार्णव, ललितार्चनचन्द्रिका मे। रघुनन्दन ने भी दीक्षातत्त्व मे इसका उल्लेख किया है।

दक्षिणामूर्तिसहस्रनाम

लि०— —कैट् कैट्. ११२४२, ३।५२

दक्षिणामूर्तिस्तव-व्याख्याएँ :—

लि०—(१) (क) प्रवन्धमानसोल्लास सुरेश्वराचार्य कृत, श्लोक स० ४००, १० उल्लासो मे पूर्ण।

(ख) मानसोल्लासवृत्तान्तविलास, रामतीर्थ कृत, श्लोक स० १०५०।

(ग) तत्त्वसुधा, स्वयप्रकाशयति विरचित, श्लोक स० ४००, पूर्ण।

—ट्रि० कै० (क) ११०१ (क), (ख) ११०१ (ख), (ग) ११०२ (क)

(२) (क) दक्षिणामूर्तिस्तोत्रार्थप्रतिपादक, प्रकाशात्मा विरचित।

(ख) वेदान्तरत्नमाला

(ग) पूर्णानन्दतीर्थ विरचित

(घ) नारायणतीर्थ विरचित —कैट् कैट् ११२४२

दक्षिणामूर्तिस्तोत्र

लि०—(१) श्लोक स० ४८, इसमे केवल मूल स्तुति ही है। इसकी व्याख्याएँ अन्यत्र दी गयी है। इसके रचयिता श्रीशङ्कराचार्य है।

—ट्रि० कै० ११०२ (ग)

(२) (क) शङ्कराचार्य विरचित। (ख) ब्रह्माण्डपुराण से गृहीत। (ग) सुरेश्वर कृत। (घ) नवनाथयोगी कृत। —कैट् कैट् ११२४२

दक्षिणावर्तशंखकल्प

लि०—दक्षिणावर्त शख एक प्रकार की निधि है। इसके घर मे आने पर धनधान्य की समृद्धि हो जाती है, सम्पत्तियो का अम्बार लग जाता है, ऐसी लोक-प्रसिद्धि है। उक्त शखके सम्बन्ध मे कतिपय विधियाँ इसमे वर्णित है। —वी० कै० १२६१

दण्डिनीरहस्य

लि०—सदाशिव द्विवेदी विरचित। —कैट् कैट् १।२४३

दत्तात्रेयकल्प

लि०—(१) (क) श्लोक स० २००। इसमे नृसिहमालामन्त्र, ज्वरमन्त्र, शूलिनी-मन्त्र, सुदर्शनमन्त्र आदि हैं। (ख) श्लोक स० ६००।

—अ० व० (क) १३३३६, (ख) १८२५

(२) —कैट् कैट् ३।५३

दत्तात्रेयकवच

लि०—(१) सर्वज्ञ कृत। यह योगिराजवज्र कवच भी कहलाता है। श्लोक स० ४०।

—अ० व० ५६८६

(२) डामरेश्वरतन्त्र से गृहीत। —कैट् कैट् १।२४४

(३) —म० द०

दत्तात्रेयचन्द्रिका

लि०— —कैट् कैट् १।२४४

दत्तात्रेयतन्त्र

लि०—(१) यह ईश्वर-दत्त सवादरूप है। इसमे जादूगरी तथा मारण, मोहन आदि तान्त्रिक क्रियाएँ प्रतिपादित हैं। डामर, ऊर्ध्वसामादितन्त्र, काकचण्डीश्वर, राधा-तन्त्र, उच्छिष्टतन्त्र, धारातन्त्र तथा अमृतेश्वरतन्त्र के वचन इसमे उद्धृत किये गये हैं। यह २२ पटलो मे पूर्ण है। मारण, मोहन, स्तम्भन, विद्वेषण, वशीकरण, आकर्पण, इन्द्रजाल-कौतुकदर्शन, यक्षिणीसाधन, रसायन, कालज्ञान, निविदर्शन वन्ध्यापुत्रोत्पादन आदि विषय इसमे प्रतिपादित हैं। —ने० द० २।२४६ (क)

(२) ईश्वर-दत्तात्रेय सवादरूप इस तन्त्र मे ६४४ श्लोक तथा २२ पटल हैं। इसमे प्रतिपादित विषय हैं—मारण के उपाय, मोहन के उपाय, स्तम्भन के उपाय, आसन-स्तभन, वुद्धि-स्तभन, सेना-स्तभन, मेघ-स्तभन, गर्भ-स्तभन, उच्चाटनोपाय, वशीकरण के उपाय, स्त्रीवशीकरण, पतिवशीकरण, राजवशीकरण, आकर्पणोपाय, इन्द्रजालकौतुकदर्शन के उपाय, यक्षादि-मन्त्रो के साधन, रसायनविधि, कालज्ञान के उपाय, प्रचुर आहार करने

के उपाय, केश गिरा देने की विधि, निधि दर्शन का उपाय, गर्भाधानविधि, मृतवत्सा, काकवत्सा आदि के दोषो की शान्ति के उपाय, वाजीकरण के उपाय आदि।

—रा० ला० १८५०

(३) शिव-दत्तात्रेय सवादरूप। दत्तात्रेय के प्रश्न करने पर भगवान् शिव द्वारा प्रोक्त यह तन्त्र २० पटलो मे है। मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, विद्वेषण, आकर्षण, वन्ध्या के पुत्र जनन, मृतवत्सा के दीर्घायु पुत्रोत्पादन, विविध इन्द्रजाल दर्शन के उपाय, अग्नि, व्याघ्र, सर्प आदि के भयनिवारण के विविध उपाय तथा उनकी प्रयोगविधि इसमे निर्दिष्ट है। —क० का० ३६

(४) विवरण रा० ला० १८५० मे देखे। इसके ३० पटल वाले तथा २६ पटलवाले एकाधिक सस्करण प्रकाशित हो चुके है। इसकी हस्तलिखित प्रतियो मे भी कोई-कोई २२ पटलो की और कोई २५ पटलो की मिलती है।

—ए० व० ६०७९

(५) १८ पटल पूरे, १९ वे पटल का कुछ अश इसमे है। अपूर्ण।

—त्र० प० ४९६

(६) (क) श्लोक स० ६५०, पटल १७, अपूर्ण।
(ख) श्लोक स० २५०, अपूर्ण।

—अ० व० (क) ३४५५, (ख) १०७२०

(७) (क) श्लोक स० ६००, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ६२४, पूर्ण। (ग) श्लोक सख्या ४४८, २० पटल तक पूर्ण। (घ) श्लोक स० ६२८, पूर्ण।

[इनके अतिरिक्त स० वि० मे २ दर्जन पूर्ण और अपूर्ण प्रतियाँ और है।]

—स० वि० (क) २३८५३, (ख) २३९२५, (ग) २४२७३, (घ) २४६५५

(८) ईश्वर कृत। —ज० का० १०३२

(९) श्लोक स० ४६०, पूर्ण। —र० म० ४९१३

(१०) दत्तात्रेयतन्त्रे अनाहारपटल इत्यादि। —कैट् कैट् १।२४४

(११) छह प्रतियाँ है। —म० रि० २०८ मे २१३ तक

दत्तात्रेयपटल

लि०—(१) श्लोक स० ४५०। —अ० व० ३४५६

(२) —कैट् कैट् १।२४४

दत्तात्रेयपद्धति या दत्तार्चनकौमुदी

लि०—(१) चैतन्यगिरि कृत। —कैट् कैट् १।२४४, २।५२

दत्तात्रेयपूजन

लि०—सन्तोषानन्द कृत। —कैट् कैट् १।२४४

दत्तात्रेयपूजापद्धति

लि०—श्लोक स० ४०२, अपूर्ण। —स० वि० २६६६९

दत्तात्रेयमहापूजावर्णना

लि०— —कैट् कैट् १।२४४

दत्तात्रेयमालामन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० २०। —अ० व० १२१६८

(२) —कैट्. कैट् १।२४४

(३) मूर्ख, —म० द० ६३७६

दत्तात्रेयवज्रकवच

लि०—श्लोक स० ९०। —अ० व० ७०७६ (क)

दत्तात्रेयशतनाम

लि०— —कैट् कैट् १।२४४

दत्तात्रेयषट्पञ्चाशतीस्तोत्र

लि०— —कैट् कैट् १।२४४

दत्तात्रेयसंग्रह

लि०—श्लोक स० ३८०, पूर्ण। —स० वि० २४३७०

दत्तात्रेयसहिता

लि०—(१) श्लोक स० २२५। इसमे यम, नियम आदि विविध-योगाङ्गनिरूपण-पूर्वक वहुत-से योगोपाय प्रतिपादित हैं। —रा० ला० २५१

(२) साकृति-दत्तात्रेय सवादरूप। विवरण देखो ऊपर रा० ला० २५१ मे। यह ग्रन्थ योग का प्रतिपादक है। —ए० व० ६१०२

(३) —कैट् कैट् १।२४४

उ०—प्राणतोपिणी, सौभाग्यभास्कर तथा स्मृत्यर्थसग्रह मे।

दत्तात्रेयसहस्रनाम

लि०—(१) भाष्य टीका देवजी भट्ट कृत।

—कैट् कैट् १।२४४, २।५२

लि०—(२) (क) शङ्कराचार्य कृत।

(ख) ब्रह्माण्डपुराण से गृहीत —कैट् कैट् ३।५३

दत्तात्रेयसिद्धिसोपान

(१) लि०—गोरक्षसिद्धिहरणशावरान्तर्गत। श्लोक स० २००, अपूर्ण।

—अ० व० १२६२१

दत्तात्रेयहृदय

लि०—(१) —कैट् कैट् १।२४४

(२) रुद्रयामल से गृहीत —कैट् कैट् ३।५३

दत्तात्रेयहृदयस्तोत्र

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत शिव-पार्वती सवादरूप यह ४२ श्लोको का भगवान् दत्तात्रेय हृदय नामक स्तोत्र है। —नो० स० २।९६

दत्तार्चनकौमुदी

लि०—दे०, दत्तात्रेयपद्धति। —कैट् कैट् १।२४४

दत्तार्चनचन्द्रिका

लि०—(१) कृष्णानन्दसरस्वती-शिष्य रामानन्द विरचित। यह तीन परिच्छेदो मे पूर्ण है। इसमे त्रिपुरा जापद्धति वर्णित है। —ए० व० ६३५३

(२) नाम—दत्तार्चनाविधिचन्द्रिका, रामानन्द यति विरचित।

—कैट् कैट् ३।५३

दशमहाविद्या

लि०—इसमे महाविद्याओ के दशावतार निरूपित है। श्लोक स० १३, पूर्ण।

—स० वि० २५०६४

दशमहाविद्याकुलार्चाविधि

लि०—श्लोक स० ३०, अपूर्ण। —स० वि० २४७८०

दशमहाविद्याप्रयोगविधि

लि०—श्लोक स० ३२५, अपूर्ण ।

—स० वि० २३९६६

दशविधभूतावेशप्रकार

लि०—श्लोक स० ६७, अपूर्ण ।

—स० वि० २६२६४

दशविधमहाविजय

लि०—

—कैट् कैट् १।२४८

दाक्षिण्यतन्त्र

लि०—

—कैट् कैट् १।२४८

दानभागवत

लि०—कुबेरानन्द कर्णि कृत । श्लोक स० १६००, अपूर्ण ।

—अ० व० ३६७३

दारुणसप्तक

लि०—उमा-महेश्वर सवादरूप आकाशतन्त्रोक्त। इसमे परम गुप्त रिपुनाशन मन्त्र की रविवार से लेकर मङ्गलवार तक जप कर ने की विधि वर्णित है।

—नो० स० ३।१४१

दाशरथीयतन्त्र

लि०—(१) यह वैष्णव तन्त्र है। इसके मूल प्रवक्ता दशरथ-पुत्र राम हैं। यह रामोपासना पर है। इसके दो भाग हैं—पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध। पूर्वार्द्ध मे ५९ अध्याय हैं और उत्तरार्द्ध मे ४५ अध्याय हैं। उत्तरार्द्ध का नामान्तर है सौभाग्यविद्योदय। पूर्वार्द्ध मे कहा गया है कि दाशरथीयतन्त्र अनुत्तरब्रह्मतत्त्वरहस्य नामक श्रुतिसग्रह के अन्तर्गत है। इसमे अष्टाक्षर मन्त्र का माहात्म्य वर्णित है। सिद्धाश्रम मे इसका प्रवचन विभाण्डक-सुत ऋष्यशृङ्ग ने उद्दालक आदि ऋषियो के प्रति किया था। उत्तरार्द्ध मे श्रीविद्या, लक्ष्मी, महालक्ष्मी, त्रिशक्ति और साम्राज्यशक्ति—इनमे से श्रीविद्या का माहात्म्य वर्णित है। इसके अनन्तर पाशुपती, वैष्णवी तथा त्रैपुरी दीक्षाओ का वर्णन है एव दक्षिणामूर्ति द्वारा उपदिष्ट लवनाविज्ञान का भी वर्णन है। २८ वे अध्याय से ४५ वे अध्याय तक राजराजेश्वरी विद्या का माहात्म्य वर्णित है।

—इ० आ० २५५८

(२) यह वैदिक सिद्धान्तो पर आधृत तान्त्रिक ग्रन्थ है। इसका नामान्तर वेदार्थ-सग्रह है। मूलत इसके वक्ता श्रीरामचन्द्र हैं। उन्होने अयोध्या मे अपने दर्शनो के लिए आये हुए ऋषियो तथा लोकपाल आदि के लिए इसका उपदेश किया। तदुपरान्त ऋष्य-शृङ्ग ऋषि ने सिद्धाश्रम मे ऋषियो की परिषत् मे इसका प्रवचन किया। इसके दो भाग है—पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध यानी १म और २ य। १म भाग मे ६० पटल और २य मे ४५ हैं। शेष विवरण के लिए इ० आ० २५५८ देखे। —क० का० ३८

(३) श्लोक स० ९६७२, एक पन्ना कम है, अपूर्ण। शकाब्द १६७६ मे लिखित, यह गौतमीयतन्त्र भाग १ से अभिन्न है। —र० म० ४८८६

(४) नामान्तर—वेदार्थसारसग्रह। श्लोक स० ४८९०, अपूर्ण।

—स० वि० २३८४९

(५) —कैट् कैट् १।२५२, २।५२

दिक्पालपूजाबलिदानविधि

लि०—श्लोक सं० १००। —अ० व० ९०१

दिव्यतन्त्र

उ०—देवनाथ द्वारा रा० ला० २०१० (तन्त्रकौमुदी) मे इसका उल्लेख किया गया है। —कैट् कैट् १।२५४

दिव्यशाबरतन्त्र

लि०—इस प्रति मे १४ चौदह पीठ (अध्याय) हैं। यह ग्रन्थ शाबरतन्त्र के नाम से अरुणोदय और इन्द्रजाल-सग्रह मे मुद्रित हो चुका है। —ए० व० ६०९१

दिव्यसाम्राज्यदीक्षामन्त्र

लि०—श्लोक स० ७०। —अ० व० ५६२१

दिव्यसारस्वततन्त्र

लि०—गुह्यतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० ८०। इसकी अन्तिम पुष्पिका मे २४ वे पटल की समाप्ति दीखती है। इससे ज्ञात होता है कि इसकी पटल सख्या २४ से कम नही है।

—ट्रि० कै० ९६८ (क)

उ०—आगमकल्पलता मे।

दीक्षा-काल

लि०—(१) श्लोक स० ५०। —अ० ब० ११३

(२) श्लोक स० ७५, अपूर्ण। —स० वि० २४८६०

दीक्षाकालविचार

लि०—श्लोक स० ३७, अपूर्ण। —स० वि० २३९६७

दीक्षाक्रम

लि०—(१) कालीसोपानोल्लासान्तर्गत। श्लोक स० ३००। —अ० ब० ५७१०

(२) शक्ति की उपासना मे अधिकार प्राप्ति के लिए साधक को दी जानेवाली दीक्षा की विधि इसमे वर्णित है। ग्रन्थारम से यह उमा-महेश्वर सवादरूप प्रतीत होता है। —म० द० ५६५६

(३) —कैट् कैट् १।२५४

दीक्षाक्रमरत्न

लि०— —कैट् कैट् १।२५४

दीक्षाग्रहणकालादिवर्णन

लि०—श्लोक स० १२६, पूर्ण। —स० वि० २५५४२

दीक्षाङ्गभूतसिद्धादिशोधनप्रकार

लि०—श्लोक स० २३७, अपूर्ण। —स० वि० २५३३७

दीक्षातत्त्व

लि०—श्लोक स० ३००, पूर्ण। —स० वि० २५२१२

दीक्षातत्त्वप्रकाशिका

लि०—श्लोक स० ३८०, पूर्ण। —स० वि० २५४६२

दीक्षादर्श

लि०—वामदेव-पुत्र देवज्ञान कृत। —कैट् कैट् ३।५५

उ०—तन्त्रदीपिका मे।

दीक्षादशरूपकारिका

लि०— —कैट् कैट् १।२५४

दीक्षादानविधि

लि०—श्लोक स० ३९, अपूर्ण। —स० वि० २६५०६

दीक्षानिर्णय

लि०— —कैट् कैट् ३।५५

दीक्षापत्र

लि०—पूर्ण। —डे० का० ४५४ (१८७५-७६ ई०)

दीक्षापद्धति

लि०—(१) त्रिपुरसुन्दरी की तान्त्रिक उपासना मे अधिकार-प्राप्ति के लिए साधक को दी जानेवाली दीक्षा के नियम, विधि आदि का इसमे प्रतिपादन है।

—बी० कै० १२६३

(२) श्रीहसानन्दनाथ योगी विरचित, श्लोक स० २२५, पूर्ण। इसमे ३ परिच्छेद हैं। पञ्चक्रमसूत्र मे सिद्धान्त, दीक्षाक्रम, साधक तथा आचार्य के लक्षण, सिद्धाख्या दीक्षा, आचार आदि विषय इसमे वर्णित हैं। —ट्रि० कै० ११२७ (ज)

(३) (क) श्लोक सं० ५६, पूर्ण। (ख) वागीश्वर भट्टाचार्य कृत, श्लोक स० ४४५ अपूर्ण। (ग) श्लोक स० ३१५, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४५६७, (ख) २५१४९, (ग) २५२८२

(४) —कैट् कैट् १।२५४

(५) दे०, सक्षेपदीक्षा। —कैट् कैट् २।५४

दीक्षाप्रकाश

लि०—(१) जीवनाथ विरचित, श्लोक स० १८९८, पूर्ण।

—स० वि० २५६९३

(२) लिपिकाल १६७७ शकाब्द या १७५५ ई०। —ए० वं० ६३११

दीक्षाप्रकाशटीका

लि०— —ए० व० ६५११

दीक्षाप्रयोग

लि०—(१) इसमे शक्ति के उपासको की दीक्षा-पद्धति वर्णित है।

—ए० व० ६५२८

(२) (क) श्लोक स० ९०, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ३६, पूर्ण। (ग) श्लोक स० ४४ पूर्ण। (घ) श्लोक स० ७१ पूर्ण।

—स० वि० (क) २४४५६, (ख) २४६७३, (ग) २४७३२, (घ) २४७४९

(३) —कैट् कैट् २।५४

दीक्षाभेद

लि०—कुलार्णव से गृहीत, श्लोक स० १००। —अ० व० १०८२५

दीक्षामार्तण्ड

लि०—श्लोक स० १२ (२य मयूख मात्र)। —अ० व० १०७७२

दीक्षामासादिविचार

लि०— —कैट् कैट् १।२५४

दीक्षारत्न

लि०—शिवप्रसाद कृत। —कैट् कैट् १।२५४

दीक्षाविधान

लि०—(१) सपादलक्ष (१२५०००) श्लोकात्मक परमानन्दतन्त्रान्तर्गत उमा-महेश्वर सवादरूप, पूर्ण। इसमे शक्ति की उपासना मे अधिकार सिद्धि के लिए साधक की दीक्षाविधि वर्णित है। यह दीक्षा आम्नायदीक्षा के नाम से उल्लिखित है।

(२) श्लोक स० ८८, अपूर्ण। —स० वि० २५३५२

(३) दयाशङ्कर कृत। —कैट् कैट् १।२५४

दीक्षाविधि

लि०—(१) इसमे क्रियादीक्षा, वर्णदीक्षा, कलावती दीक्षा, स्पर्शदीक्षा, दृग्दीक्षा, वेधदीक्षा, शाक्तदीक्षा, यामलदीक्षा, पञ्चपञ्चिका दीक्षा, चरणदीक्षा, मेघ्यदीक्षा, कौशिकी-दीक्षा आदि दीक्षाएँ तथा पूर्णाभिषेक वर्णित है। —ए० व० ६५२७

(२) इसमे तन्त्रो मे प्रचलित दीक्षाओ की विधि प्रतिपादित है।

—ने० द० १।७३६ (घ)

(३) श्लोक स० १००, अपूर्ण। इसमे विविध दीक्षा की विधियाँ प्रतिपादित है। दीक्षा के तीन प्रकार, दीक्षा की मुक्तिहेतुता आदि विषय वर्णित है।

—ट्रि० कै० १०७५ (ग)

(४) (क) श्लोक सख्या ८०, पूर्ण। मन्त्रो के दशविध सस्कार। भी इसमे वर्णित हैं। (ख) श्लोक स० ५४, पूर्ण। (ग) श्लोक स० ३०४, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २४६४५, (ख) २५५१७, (ग) २५६८०

(५) —कैट् कैट्. १।२५४

(६) अघोरशिवाचार्य कृत। —कैट् कैट् ३।५५

दीक्षाविनोद

लि०—रामेश्वर शुक्ल विरचित। —कैट् कैट् १।२५४

दीक्षाविवेक

लि०—रामेश्वर विरचित। —कैट् कैट् १।२५४

दीक्षाशेखर

उ०—तन्त्रदीपिका मे।

दीक्षासंस्कार

लि०— —कैट्. कैट् १।२५४

दीक्षासेतु

लि०—रामशङ्कर कृत। —कैट् कैट् १।२५४

दीक्षाहोम

लि०—पिङ्गलातन्त्रान्तर्गत। श्लोक स० ३४, पूर्ण।

—स० वि० २४८४८

दीक्षोत्तर

शैवतन्त्र।

उ०—रामकण्ठकृत नरेश्वरपरीक्षा की टीका मे।

दीपकर्मरहस्य

लि०—उड्डामरतन्त्र मे कार्तवीर्यार्जुनविद्या के अन्तर्गत, श्लोक स० २५२, अपूर्ण।
—स० वि० २५८५८

दीपदानरत्न

लि०—प्रेमनिधि पन्त विरचित। —कैट् कैट् १।२५५

दीपदानविधि

लि०—(१) भैरवीतन्त्रान्तर्गत। इसमे वटुक भैरव के लिए दीपदानविधि वर्णित है। —ए० व० ६४८१

(२) (क) रामचन्द्र विरचित, श्लोक स० १११, पूर्ण। इसमे वटुक भैरव के निमित्त दीपदानविधि वर्णित है। (ख) भैरवतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० ६७, पूर्ण। इस दीपदानविधि के पूर्व भैरवपद भी जोडा गया है। अर्थात् ग्रन्थनाम भैरवदीपदानविधि कहा गया है। —स० वि० (क) २५३५८, (ख) २५३९६

(३) मेरुतन्त्र से गृहीत। —कैट् कैट् १।२५५, २।५५

दीपदीपिका

लि०—श्लोक स० १००० तथा पटल स० ८१ —अ० व० ११२४६

दीपप्रकाश

(१) लि०—नन्द-पुत्र दीनानाथ के प्रेम से (प्रेमनिधि पन्त द्वारा) शकाब्द १६४८ मे विरचित। इसमे कार्तवीर्य के लिए दीप अर्पण करने की विधि प्रतिपादित है। साथ ही वटुक-भैरव को दीप अर्पण की विधि भी दी गयी है। —ए० व० ६५११

(२) श्री प्रेमनिधि शर्मा कृत, श्लोक स० १०३६, इसमे तन्त्रोक्त नियमानुसार राज-राजेश्वरी के उद्देश्य से दीपदानविधि वर्णित है।

(३) दीपप्रकाश-टीका शब्दप्रकाश, प्रेमनिधि पन्त कृत, सहित। श्लोक स० २८३२, पूर्ण। —स० वि० २३९२८

(४) प्रेमनिधि पन्त विरचित, स्वरचित टीका शब्द-प्रकाश युक्त। जिसकी रचना १७५५ ई० मे हुई थी। —कैट् कैट् १।२५५

दीपोत्सवयन्त्रग्रन्थ

लि०—श्लोक सं० २९३, अपूर्ण। ग्रन्थ के आरम मे ग्रन्थ का नाम अन्य हाथ से लिखा हुआ है और सदिग्ध भी प्रतीत होता है। —र० म० ४९६७ (क)

दीप्तशास्त्र

लि०—१४ पटलो मे। —कैट् कैट् ३।५५

दीप्तागम

दश शिवागमो मे अन्यतम।

दीर्घायुःसाधनप्रकार

लि०—तोडलतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० ४०, पूर्ण।

—स० वि० २५८०५

दुर्गाकवच

लि०—(१) (क) जगद्धात्रीदूर्गापूजापद्धति से सश्लिष्ट दोनो की समिलित श्लोक स० ११८, अपूर्ण।

(ख) दुर्गानित्यपूजाविधि के साथ समिलित। सयुक्त श्लोक स० लगभग ६३०, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २५७८२, (ख) २५८३२

(२) (क) कुब्जिकातन्त्र से गृहीत, (ख) ब्रह्मयामल से गृहीत।

—कैट्. कैट् (क) १।२५६, (ख) २।५५

दुर्गाक्रियाभेदविधान

लि०—(१) महार्णवतन्त्र से गृहीत, श्लोक स० ९२४, १३ उपदेशो मे।

—अ० व० ६७३५

[इसके साथ (क) दुर्गा विश्ववालविधान। महा भैरव तन्त्रसे गृहीत, २१ उपदेशो मे, तथा (ख) स्नानविधि। शैवशूलिनीकल्प से गृहीत। ये दो पुस्तके और है।]

(२) १ से ९ उपदेश पर्यन्त, अपूर्ण (दुर्गाक्रियाभेदविधान)।

—स० वि० २५५७९

दुर्गादकारादिसहस्रनामस्तोत्र

लि०—कुलार्णवतन्त्रान्तर्गत। —कैट् कैट् १।२५६

दुर्गादादिनामस्तोत्र

लि०—(१) कुलार्णवतन्त्रान्तर्गत, यह स्तोत्र प्रकाशित हो चुका है।

—ए० ब० ६७०५

(२) शिव-पार्वती सवादरूप। यदि साधक देवता, गुरु और मन्त्र को अभिन्न मान कर इस स्तोत्र का पाठ करे तो उसे सर्वत्र सुखप्राप्ति होती है। इसमे दुर्गा देवी की दकारादि नामपदो से स्तुति की गयी है। —रा० ला० ४६१

(३) —कैट् कैट् १।२५६

दुर्गादीपदान

लि०— —स० वि० २५८३२

दुर्गादीपप्रयोग

लि०—श्लोक स० १०७, पूर्ण। इसके साथ कार्तवीर्यार्जुनदीपदानविधि भी समिलित है। —स० वि० २६२६६

दुर्गानामफल

लि०—इसमे 'दुर्गा' नाम के उच्चारण और जप का माहात्म्य वर्णित है। दुर्गा-नाम के उच्चारण और जप से महा दरिद्र भी धनी होकर अन्त मे शिवलोक मे सत्कार पाता है।

—रा० ला० ९९३

दुर्गानाममाहात्म्य

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, पूर्ण। —ब० प० ३८३ (ख)

(२) मायातन्त्रान्तर्गत। —कैट् कैट् १।२५६

दुर्गानित्यपूजाविधि

लि०—श्लोक स० ३३०, अपूर्ण। —स० वि० २५८३२

दुर्गापञ्चाङ्ग

लि०—(१) रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत देवीरहस्य मे उक्त देवी-भैरव सवादरूप। (१) दुर्गापूजाविधि, (२) दुर्गापूजापद्धति, (३) दुर्गासहस्रनाम, (४) दुर्गाकवच,

(५) दुर्गास्तोत्र इसके ५ पटलो मे ये ५ विषय वर्णित है। यह दुर्गासर्वस्व परम रहस्य है। —नो० स० २।१०२

(२) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक स० ३००। —अ० व० ११२९५

(३) श्लोक स० ४५२, पूर्ण। —र० म० ४९२३

(४) श्लोक स० १८०, अपूर्ण

(इसके अतिरिक्त स० वि० मे २ अपूर्ण प्रतियाँ २५१९५ तथा २५२२२ और है।)

—स० वि० २५८३१

(५) —कैट् कैट् १।२५६

दुर्गापटल

लि०—(१) श्लोक स० २९, पूर्ण। —स० वि० २४७०३

(२) —कैट् कैट् १।२५६

दुर्गापटलानुक्रम

लि०—श्लोक स० ११६, अपूर्ण। —सं० वि० २६१७६

दुर्गापद्धति

लि०— —कैट् कैट् १।२५६

दुर्गापुरश्चरणपद्धति

लि०— —कैट् कैट् २।५५

दुर्गापूजनपटल

लि०—रुद्रयामल उत्तरखण्ड के षष्ठाध्याय पर्यन्त, श्लोक स० २७०, पूर्ण।

—स० वि० २४११५

दुर्गापूजापद्धति

लि०— —कैट् कैट् १।२५६

दुर्गापूजाप्रयोग

लि०—भैरवतन्त्रान्तर्गत, पूर्ण। —सं० वि० २४५६२

दुर्गापूजाविधि

लि०—(१) इसमे क्रमानुसार जयदुर्गा पूजानुष्ठान का विवरण प्रतिपादित है।

—रा० ला० २३१

(२) श्लोक स० ६४, पूर्ण। —स० वि० २५७६०

(३) —कैट् कैट् १।२५६

दुर्गाप्रदीप

लि०—रङ्गनाथ-पुत्र नीलकण्ठ विरचित। श्लोक स० ३०००।

—अ० व० १०६७४

दुर्गाभक्तितरङ्गिणी या दुर्गास्तव (दुर्गोत्सव?) पद्धति

लि०—(१) इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि विद्यापति है। उन्होने मिथिलाधिपति भैरव-सिह (वीरसिह के भाई) की सरक्षकता मे यह ग्रन्थ रचा। इसमे दो तरङ्ग है। पहले मे ३२ श्लोको द्वारा सामान्य रूप से देवी-पूजाविधि वर्णित है तथा पूजा की निर्दिष्ट तिथियाँ वतलायी गई है एव २रे मे दुर्गोत्सव का प्रतिपादन है। इस पुस्तक मे सामग्री प्राय देवी-पुराण, कालिकापुराण, भविष्यपुराण आदि पुराणो से सगृहीत है। गौडनिबन्ध, शारदा-तिलक, शिल्पशास्त्र, शिवरहस्य आदि से भी उद्धरण लिये गये है।

—इ० आ० २५६४

(२) (क) नामत वीरसिंह (नरसिंह देव) मिथिलाधिपति द्वारा वास्तव मे विद्यापति द्वारा रचित। प्रस्तावना मे यह ग्रन्थ दुर्गोत्सवपद्धति कहा गया है।

(ख) नामत धीरमती, मिथिला के नरेश नारायण की पत्नी दर्प द्वारा वास्तव मे विद्यापति द्वारा रचित। —कैट् कैट् (क), १।२५६, (ख) २।५५

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा शक्तिरत्नाकर मे।

दुर्गाभक्तिप्रकाश

उ०—रघुनन्दन द्वारा निजनिर्मित तीर्थतत्त्व मे।

दुर्गाभक्तिलहरी

लि०—(१) रघूत्तम तीर्थ कृत। इसमे दुर्गाभक्ति, माहात्म्य आदि वर्णित है।

—रा० ला० २३४

(२) रघूत्तम कृत। श्लोक स० १७६९। इसमे प्रतिपादित विषय—पर ब्रह्म का भक्तो के ऊपर अनुग्रह करने के लिए दुर्गा आदि के रूप मे शरीर कल्पन, ज्ञानियो को भी दुर्गा का ही सेवन और भजन करना चाहिये, देवीकीर्तन-माहात्म्य आदि, देवी के १४ नामो

का निर्देश, देवी की माया सज्ञा का निरूपण, महामाया शब्द का अर्थ, दुर्गा के दर्शनो का फल वर्णन, दुर्गा को किये गये प्रणाम का फल, दुर्गा के स्मरण आदि का तथा दुर्गा के भक्त का माहात्म्य, नव अङ्गवाली भक्ति का लक्षण, शारदीय पूजा न करने मे दोष, दुर्गापूजन का फल, विशेष प्रतिमा मे पूजा का फल विशेष, देवी के कामाख्या आदि विविध रूपो का निरूपण, लक्ष्मी, गङ्गा, गौरी आदि मे भेद मानने मे दोष, शक्ति और शक्तिमान् मे अभेद कथन, दुर्गा का नित्यत्ववर्णनपूर्वक औपाधिक जन्मादि ग्रहण कथन आदि।

—रा० ला० २४८२

(३) —कैट् कैट् १।२५६

दुर्गामन्त्रविभागकारिका

लि०—श्लोक स० २१५, पूर्ण। —स० वि० २४०५२

दुर्गारहस्य

लि०—(१) इसमे १० पटल हैं, जिनमे मन्त्रविद्या-प्रकाश, पुरश्चर्याविधि, चक्रपूजाविधि आदि विषय प्रतिपादित है। —ए० व० ५९९० (३)

(२) अनेक पुस्तको के साथ समिलित। —स० वि० २५८३२

(३) (क) मार्कण्डेयपुराण से गृहीत

(ख) देवीरहस्य से गृहीत

—कैट् कैट् (क) २।५५, (ख) ३।५५

दुर्गाराधनचन्द्रिका

लि०—(क) श्लोक स० ७८४, पूर्ण। (ख) अपूर्ण।

—स० वि० (क) २४८३४, (ख) २४८३०

दुर्गार्चनकल्पतरु

लि०—(१) कृष्णानन्द-पुत्र दैवज्ञशिरोमणि लक्ष्मीपति विरचित, यह १० कुसुमों (परिच्छेदो) मे पूर्ण है। इसमे प्रतिपादित विषय हैं—व्यवस्था कुसुम, पूजा, पाठ आदि का निर्णय, प्रतिपदा के कृत्य, द्वितीया मे लेकर पञ्चमी पर्यन्त कृत्य, विल्व का अभिमन्त्रण, पत्रीप्रवेश कृत्य (?), अष्टमी कृत्य, वलिदान, कुमारीपूजन, कुमारी-लक्षण, नवमीकृत्य, दशमीकृत्य आदि। —ने० द० १।११०

(२) —कैट् कैट् १।२५६

दुर्गार्चनमाहात्म्य

लि०— —कैट् कैट् १।२५६

दुर्गार्चनामृतरहस्य

लि०—मथुरानाथ शुक्ल विरचित । —कैट् कैट् १।२५६

दुर्गावज्रपञ्जर

लि०—काशीखण्ड (स्कन्द पुराणान्तर्गत) के ७२ वे अध्याय से गृहीत, श्लोक स० ४६।
—अ० व० ७३१४

दुर्गावतीप्रकाश या समयालोक

लि०—पद्मनाभ कृत। —कैट् कैट् १।२५६

दुर्गाशतनामस्तोत्र

लि०—(१) विश्वसारतन्त्रान्तर्गत । पूर्ण —व० प० ९७२
(२) दुर्गाशतनाम, दुर्गानित्यपूजाविधि, कवच, रहस्य आदि अनेक पुस्तको के साथ।
—स० वि० २५८३२

दुर्गासहस्रनामस्तोत्र

लि०—(१) कुलार्णवतन्त्रान्तर्गत। पूर्ण। —व० प० १२०३
(२) कुलार्णव से गृहीत तथा मार्कण्डेयपुराण से गृहीत।
—कैट् कैट् १।२५६

दुर्गोत्सव

लि०—उमानन्दनाथ विरचित (क) श्लोक स० ७००। (ख) श्लोक स० ७००।
—अ० व० (क) ६२३६, (ख) ५५७८
उ०—अल्लादनाथ ने इसका उल्लेख किया है।
—कैट् कैट् १।२५६

दुर्गोत्सवकौमुदी

लि०—शम्भुनाथ विरचित । —कैट् कैट् १।२५६

दुर्गोत्सवचन्द्रिका

लि०—(क) रामचन्द्र क्षितिपति विरचित।
(ख) रामचन्द्र गजपति (उडीशा के राजा) कृत।
—कैट् कैट् (क) १।२५६, (ख) ३।५५

दुर्गोत्सवतत्त्व या दुर्गातत्त्व

लि०—रघुनन्दन कृत। —कैट् कैट् १।२५६

दुर्लभतन्त्र

(दुर्गानामपुरश्चरणविधि)

लि०— पूर्ण। —व० प० २३१

दुर्वासोमततन्त्र

उ०—Oxford १०९ (क) के अनुसार इसका उल्लेख है।
—कैट् कैट् १।२५६

दूतीयजनमन्त्र

लि०— —कैट्. कैट् ३।५५

दूतीयाग

लि०—दक्षिणामूर्तिसहिता से गृहीत। श्लोक स० ८।
—अ० व० ८४९८ (ग)

दूतीयागविधि

लि०—(क) श्लोक स० २०० (पञ्चम भाग)
(ख) ,, ६०
—अ० व० (क) ११००८, (ख) १७९

देवतापूजनक्रम

लि०—अनन्तराम कृत, मन्त्रमहोदधि के अनुसार। श्लोक स० ४००।
—अ० व० ११२३२

देवतार्चनपद्धति

लि०—(१) (क) श्लोक स० २५०। (ख) श्लोक स० २५०।

—अ० व० (क) ८६६५, (ख) १२१६६

(२) देवतार्चनापद्धति। —कैट् कैट् १।२५८

देवदर्शिसंहिता

लि०—चिदानन्दनाथ कृत। सर्वसम्मोहिनीतन्त्रान्तर्गत। श्लोक स० ८०, अपूर्ण।

—स० वि० २५३६१

देवदूतीपूजाविधि या नवदुर्गापूजाविधि

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। श्लोक स० २९६

—स० वि० २४३९०

देवपञ्चाङ्ग

लि०—श्लोक स० ३४, अपूर्ण। —स० वि० २५१३८

देवीपात्रदानविधि

लि०—श्लोक स० ५४, पूर्ण। —स० वि० २६३६८

देवामृतपञ्चरात्र

लि०—ब्रह्मा-सनत्कुमार सवादरूप। ११ पटलो मे पूर्ण।

—ने० द० १।१०७८ (ग)

देवालयप्रतिष्ठा

लि०—(१) पन्ने १६०, अपूर्ण। —तैं० म० ११३८७

(२) —कैट् कैट् १।२६०

देविकाक्रम

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

देविकासाधन

लि०—इसमे गृहस्थो द्वारा देविका देवी के साधन की विधि वर्णित है।

ने० द० १।१३५ (क)

देवी अर्गल, कीलक तथा सप्ततिकास्तोत्र

लि०—(१) श्लोक सं० ११२

(२) देवी अर्गल, कीलक, हृदय, ध्यान तथा कवच।

—अ० व० (१) १३४५० (ख), (२) ७१३३ (क)

देवीकल्प

उ०—अहल्याकामधेनु मे।

देवीकल्पलता

लि०— —कैट् कैट्. १।२६०

देवीकवच

लि०—(१) श्लोक सं० ७५ हरिहर ब्रह्म विरचित। इसमे जयादि देवियो का अङ्ग-प्रत्यङ्ग मे विन्यास बताया गया है। —रा० ला० ४५९

(२) —ए० व० ६४१२

(३) —ने० द० १।१४७३ (ग)

(४) (क) श्लोक सं० ५०। (ख) श्लोक सं० १५०। (ग) श्लोक सं० १८।

(घ) इसमे दशा पटल व्रत, गरुड पञ्चाक्षरी मन्त्र तथा गणनाथ कवच भी समिलित है।

—अ० व० (क) ५४०९, (ख) ३४५१, (ग) ७२५५, (घ) १३४३२।

देवीकवचस्तोत्रटीका

लि०—नारायणभट्ट कृत, श्लोक सं० १६०, पूर्ण।

—र० म० ४९५७ (क)

देवीकवचार्गलकीलकस्तोत्र

लि०—श्लोक सं० ११८, पूर्ण। —र० म० ४७६२

देवीकालोत्तर

लि०— —कैट् कैट् १।२६०

उ०—शैव परिभाषा (शिवाग्रयोगीन्द्रज्ञान शिवाचार्य कृत) मे।

देवीचक्रपद्धति

लि०— —कैट् कैट् ३।५६

देवीचरित्र

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत। यह नवरात्रोत्सव पर दुर्गापूजा का प्रतिपादक ग्रन्थ है। इसमे १३ अध्याय हैं। उमापूजाविधि, देवीप्रभाव, देवीरहस्य आदि विषय इसमे वर्णित हैं। —ए० व० ५८७९

(२) श्लोक स० १०००, रुद्रयामलान्तर्गत।

देवीतन्त्र

उ०—Oxford १०९ (क) के अनुसार इसका उल्लेख है। दे०, देवीमततन्त्र।

—कैट् कैट् १।२६०

देवीदीक्षाविधान

लि०—ऊर्ध्वाम्नायमिश्र अनुत्तरपरमरहस्य के अन्तर्गत ईश्वर-स्कन्द सवादरूप। ७ उल्लासो मे पूर्ण। इसमे बहिर्मातृका, अन्तर्मातृका, भूशुद्धि, प्रोक्षण आदि का प्रतिपादन करते हुए अजपामन्त्र से शुद्धात्मा शिष्य को ग्रहण कर श्रेष्ठ देशिक (गुरु) दीक्षा प्रदान करे यह प्रतिपादित है। —म० द० ५६५८

देवीनामविलास

लि०—श्रीकृष्णकौल-पुत्र साहिबकौल विरचित। इस ग्रन्थ की रचना सन् १६६७ ई० मे हुई। इसमे भवानी के सहस्रनामो मे से प्रत्येक नाम का अर्थ एक श्लोक द्वारा उत्तम रीति से वर्णित है। —ए० व० ६७०३

देवीनित्यपूजाविधि

लि०— —कैट् कैट् १।२६०

देवीनित्यविधि

लि०—श्लोक स० ७५०, अपूर्ण। —अ० व० ५५७६

देवीपद्धति

लि०—श्लोक स० ५००। —अ० व० ५५७३

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

देवीपरपूजाविधि

लि०— —कैट् कैट् १।२६०

देवीपरिचर्या

उ०—अहल्याकामधेनु मे।

देवीपूजनभास्कर (१)

लि०—(१) सिद्धान्त विरचित, श्लोक स० २००।

—अ० व० १०२३७

(२) —रा० ला० २५७५, २३९१

देवीपूजनभास्कर (२)

लि०—शम्भुनाथ कृत। —कैट् कैट् १।२६१

देवीपूजा

लि०—(१) इसमे देवी की पूजा के सम्बन्ध मे विशेषत देवी को विभिन्न वस्तुएँ भेट करने के अवसर पर बोले जाने वाले श्लोको का सग्रह है।

—ए० व० ६३९९

(२) गुरुपूजाविधि के साथ सश्लिष्ट, समिलित श्लोक स० लगभग ७२, पूर्ण।

—स० वि० २६६९३

देवीपूजापद्धति

लि०—(१) (क) श्लोक स० ११५०। (ख) श्लोक स० ६००।

—अ० व० (क) २३०४, (ख) ८०४१

(२) श्लोक स० ४००, पूर्ण, (ऊपर अङ्कित पुस्तक से यह भिन्न प्रतीत होती है)।

—र० म० ४५१०

(३) श्लोक स० ४७६, पूर्ण। —स० वि० २५६८२

(४) चैतन्यगिरि कृत। —कैट् कैट् ३।५६

देवीपूजाप्रकरण

लि०—निगमो से उद्धृत। श्लोक स० ३९५, पूर्ण।

—डे० का० ७६५ (१८८२–८३ ई०)

देवीपूजाविधान

लि०—पूर्ण, इसमे देवी की पूजाविधि वर्णित है। —म० द० ५६५९–६१

देवीपूजाविधि

लि०—(१) श्लोक स० ४३०, पूर्ण। —स० वि० २६२५४

(२) —कैट् कैट् १।२६१

देवीभक्तिरसोल्लास

लि०—जगन्नारायण विरचित, श्लोक स० २२२, यह ग्रन्थ दो भागो मे विभक्त है। १म मे स्तोत्र कीर्तन द्वारा नैष्कर्म्यसिद्धि का निरूपण है एव २य भाग मे विद्या स्वरूपादि कथन। —रा० ला० २१६८

देवीमततन्त्र

उ०—Oxford १०९ (क) मे उल्लिखित। दे०, देवीतन्त्र।

—कैट् कैट् १।२६१

देवीमहिम्नःस्तोत्र

लि०—(१) दुर्वासा कृत। इसमे त्रिपुरा देवी की महिमा वर्णित है।

—ए० ब० ६६७६

(२) इस पर नित्यानन्द विरचित व्याख्या है। —ए० ब० ६६७७

(३) दुर्वासा कृत। —कैट् कैट् १।२६१

देवीमाहात्म्य

लि०—महर्षि व्यास विरचित, पूर्ण। —ज० का० १०३७

देवीमाहात्म्यपाठविधि

लि०— —कैट् कैट् १।२६१

देवीमाहात्म्यमन्त्रविभागक्रम या कल्याणीतन्त्र

लि०— —कैट् कैट् १।२६२

देवीमाहात्म्यरहस्यविधि

लि०—इसमे रहस्यसहित देवीमाहात्म्य या सप्तशती (चण्डी) पाठ की विधि लोगो पर अनुग्रह करने की कामना से मार्कण्डेय प्रोक्त रीति से वर्णित है। —म० द० ५६६२

देवीमहोत्सव

लि०—तिमलभट्ट गोदातीरवासी के अनुज ब्रह्मेश्वर कृत।

—अ० व० १०५२३

देवीमानसपूजन (१)

लि०— —कैट् कैट् ११२६१

देवीमानसपूजा (२)

लि०—श्लोक स० ६७, अपूर्ण। —अ० व० २३०४ (क)

देवीमानसपूजाविधि

लि०— —कैट् कैट् ११२६१

देवीयामलतन्त्र

उ०—तारारहस्यवृत्ति, तन्त्रालोक, ताराभक्तिसुधार्णव तथा कुलप्रदीप मे। क्षेमराज ने भी इसका उल्लेख किया है दे०, Hall पे १९७।

देवीरहस्य या परादेवीरहस्य

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत। इसमे ६० पटल है एव पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध के भेद मे दो भाग है। प्रत्येक पटल का विवरण पृथक् दिया गया है।

—इ० आ० २५४६

(२) तन्त्रोक्त विशेष प्रक्रियाएँ, जो देवीपूजा करते समय पहले की जाती है, इसमे वर्णित है। —बी० कै० १२६२

(३) रुद्रयामलान्तर्गत, ६० पटलो में। यह कौल सम्प्रदाय से सम्बद्ध है। पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध भेद से इसके दो भाग हैं। पहले भाग मे २५ पटलो मे शाक्त मत के मुख्य मुख्य तत्त्वो पर प्रकाश डाला गया है। २य भाग मे ३५ पटलो द्वारा विभिन्न देवियो की पूजाविधियाँ प्रतिपादित है। —ए० व० २८८०

(४) श्लोक स० २०००, रुद्रयामल के अन्तर्गत, —अ० व० ८३००

(५) भैरव प्रोक्त, पन्ने २१७, अपूर्ण। —ज० का० १०४३

(६) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक स० लगभग ३४२५ (?) अपूर्ण।

—र० म० ५२९०

(७) (क) श्लोक स० १४८४, पूर्ण। (ख) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक स० २७३०, पूर्ण। —स० वि० (क) २३८४६, (ख) २३९२३

(८) इस सग्रह मे ३ प्रतियाँ हैं। —म० रि० २१८,२१९ और २२०

उ०—मन्त्रमहार्णव मे।

देवीरहस्य या वैकृतिकरहस्य

लि०—यह १२० श्लोकों मे पूर्ण है। इसमे चण्डिका की पूजाविधि, ध्यान आदि निरूपित हैं। —नो० स० २।१०६

देवीरहस्यतन्त्र

लि०—(१) यह रुद्रयामलान्तर्गत देवीरहस्य से भिन्न है, यह सूर्योपासनापरक है। —ए० व० ६००१

(२) श्लोक स० ४००, २६ से ३० पटल तक, ये ५ पटल गणपतिपरक है। —अ० व० १३६८०

(३) (क) रुद्रयामल से गृहीत, श्लोक स० १०००।
(ख) श्लोक स० १५००।

—अ० व० (क) ८९९६, (ख) १०६६४

(४) देवी-महादेव सवादरूप, श्लोक स० ६२१, २५ पटलो मे पूर्ण। यह सूर्यपञ्चाङ्ग तथा सूर्यकवच गुह्यातिगुह्य तथा शिवरूप कहा गया है। इसमे प्रतिपादित विषय—सूर्य के पञ्चाङ्ग मन्त्रो के उद्धार आदि, सूर्य की नित्य पूजा का रहस्य, सूर्यपूजापद्धति का सविस्तर प्रतिपादन, वज्रपञ्जर नामक सूर्यकवच कथन, सूर्यसहस्रनामवर्णन, तथा सूर्य के परमार्थ स्तोत्रो का प्रतिपादन आदि। —रा० ला० ४१६०

देवीविषयोपन्यास

लि०—इसमे देवी की उपासना से सम्बद्ध विविध विषयो का निरूपण किया गया है। —म० द० ५६६३

देवीसप्तपारायणक्रम

लि०—देवी-ईश्वर सवादरूप, इसमे देवी के सप्तपारायण स्तोत्र का प्रतिपादन है अथवा देवी के स्तोत्र-पारायण के सात प्रकार प्रदर्शित है।

—म० द० ५६६४

देवीसूक्त

लि०—(१) रुद्रयामल से गृहीत, श्लोक स० ८०।
(२) कामतन्त्र से गृहीत, श्लोक स० ६०।
—अ० व० (क) ३४५८, (ख) ५७०३

देवीसूक्तवर्णन

लि०—रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० ११०, पूर्ण।
—र० म० ५०२८ (ख)

देवीस्तोत्र

लि०— —डे० का० ४५५ (१८७५–७६ ई०)

देव्यागमतन्त्र

उ०—पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव तथा रामार्चनचन्द्रिका मे।

देव्या मत

लि०—दे०, देवीमततन्त्र। —कैट् कैट् १।२६१
उ०—शतरत्नसग्रह मे।

दौर्गानुष्ठानकलापसंग्रह

लि०—श्लोक स० ५५००। इसमे बीजाङ्कुरारोपण से लेकर तीर्थस्नानान्त दुर्गोपासनासम्बन्धी सपूर्ण क्रियाकलाप वर्णित है। —ट्रि० कै० ९६९

द्रव्यशोधन

लि०—(क) श्लोक स० ५०, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ३०, पूर्ण (?)।
—स० वि० (क) २५६३६, (ख) २५८३३

द्रव्यशोधनप्रकार

लि०—श्लोक स० ८०, पूर्ण। —स० वि० २६५२४

द्रव्यशोधनविधि

लि०—श्लोक स० ९०, अपूर्ण। —स० वि० २५३७७

द्वयसम्पत्ति

वामननाथ विरचित।

उ०—शिव उपाध्याय कृत विज्ञानभैरव-टीका मे।

द्वात्रिंशद्दीक्षाप्रयोग

लि०—इसमे शाक्त सप्रदाय मे प्रचलित दीक्षा-सम्बन्धी विविध प्रकार की ३२ विधियो का निरूपण है। —म० द० ५६६५

द्वादशमहागणपतिविद्या

लि०—कुलडामरान्तर्गत, श्लोक स० ११२, पूर्ण। —स वि २५३४०

द्वादशरश्मिपूजा

लि०—श्लोक स० १५००, अपूर्ण। —स० वि० २६५३३

द्वारादिपूजा

लि०—श्लोक स० २५०। —अ० ब० ११२०७

द्वाविंशतिपात्रविधि

लि०—इसमे कौलो की २२ पात्रविधियाँ वर्णित है। —स० वि० २४२६७

धनदाप्रयोग

लि०—(१) श्लोक स० ४२, अपूर्ण। —स० वि० २४४८४

(२) —कैट् कैट् ३।५८

धनदामन्त्र

लि०—(१) पूर्ण। —ब० प० ७००

(२) (क) श्लोक स० लगभग ६५, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३५, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २४१९९, (ख) २५८३४

धनदायक्षिणीप्रयोग

लि०—इसमे धनदा यक्षिणी की पूजाप्रक्रिया वर्णित है। यह पूजाप्रक्रिया अशत कृष्णानन्द के तन्त्रसार मे वर्णित पूजाप्रक्रिया से मिलती-जुलती है।

—ए० ब० ६४०२

धर्मप्रशंसा

लि०—श्लोक स० ५१ । —अ० व० १९९

धर्मवितान

लि०—मिश्र मूलचन्द्र-पौत्र, भवानीदास-पुत्र हरिलाल विरचित । विक्रम सवत् १७७९ मे अथवा १७२२ ई० मे रचा गया । —ए० व० ६२२८

धर्मशिवपद्धति

उ०—खेमराजकृत स्वच्छन्दतन्त्र-टीका उद्योत मे ।

धर्माचार्यस्तुति

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका सौभाग्यवर्द्धिनी मे ।

धातुसमीक्षा

लि०—शैवतन्त्र । दे०, षड्धातुसमीक्षा । —कैट् कैट् ३।५९

उ०—उत्पलाचार्य कृत स्पन्दप्रदीपिका मे ।

धूमावतीदीपदानपूजा

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, शिव-पार्वती सवादरूप । इसमे धूमावती देवी के निमित्त प्रज्वलित दीपदान पूजाविधि प्रतिपादित है । यह अत्यन्त गोपनीय है ।

—वी० कै० १३११

धूमावतीपञ्चाङ्ग

लि०—श्लोक स० ३२५, पूर्ण । —स० वि० २४८८५

धूमावतीपटल

लि०— —कैट् कैट् १।२७२

धूमावतीपूजापद्धति

लि०— —कैट् कैट् १।२७२

धूमावतीपूजाप्रयोग

लि०—धूमावती मन्त्रोद्धार भी इसमे सम्मिलित है । (क) श्लोक सं० ३८, पूर्ण । (ख) श्लोक स० १२५, पूर्ण । —स०वि० (क) २५९९३, (ख) २६४३१

ध्यानमाला

लि०— —कैट् कैट् ३।५९

ध्यानशतक

लि०—शेष विरचित। —कैट् कैट् १।२७३

ध्यानसाधन

लि०—कालीकुलतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० २५, पूर्ण।

—स० वि० २५७५६

ध्वजदण्डस्थापनविधि

लि०—कामिकान्तर्गत, श्लोक स० ६०। —अ० व० ६८३२ (ख)

ध्वजप्रतिष्ठादि

लि०—श्लोक स० १७३०, पूर्ण। इसमे ध्वजप्रतिष्ठाविधि प्रतिपादित है।

—ट्रि० कै० ९७०

ध्वनि

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

ध्वान्तदीपिका

लि०—सोमनाथभट्ट कृत। —कैट् कैट् १।२७४

दे०, अज्ञानध्वान्तदीपिका। —कैट् कैट् २।५९

नकुलीकल्प

लि०—(१) श्लोक स० ७५, पूर्ण। —स० वि० २५५४६

(२) —कैट् कैट् ३।५९

नकुलीन्यास

लि०—श्लोक स० ५६, पूर्ण। इसमे महासमष्टिन्यास भी समिलित है।

—स० वि० २५३११

नकुलीवागीश्वरीप्रयोग

लि०—श्लोक स० ९५, पूर्ण। —स० वि० २५८३६

नकुलीवागीश्वरीविधान

लि०—(१) (क) श्लोक स० १४४, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ३१ अपूर्ण।
—स० वि० (क) २५८३६, (ख) २५८३८
(२) —कैट् कैट् ११२७३

नकुलीश्वरीपद्धति

लि०—श्लोक स० १५०। —अ० व० ८३५९

नकुलेश्वरीमन्त्रविधान

लि०—त्र्यम्बक विरचित, श्लोक स० ६२, अपूर्ण। इसमे नकुलेश्वरी वागीश्वरी (दुर्गा) का मन्त्र और उसके पुरश्चरण का विधान कहा गया है।
—रा० ला० ९०६

नक्षत्रचक्र

लि०— —कैट् कैट् ३।५९

नखप्रकाश या नखप्रताप

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

नन्दिकेश्वरसंहिता

उ०—तन्त्रसार, ताराभक्तिसुधार्णव, आगमतत्त्वविलास तथा विष्णुपूजापद्धति (चैतन्यगिरि कृत) मे।

नन्दिशिखा

उ०—तन्त्रालोक तथा साम्बपञ्चाशिका-टीका (क्षेमराज कृत) मे।

नन्द्यावर्तमहातन्त्र

लि०—(क) श्लोक स० १००, केवल ८८ वाँ पटल। (ख) श्लोक स० ४००, अपूर्ण।
—अ० व० (क) ११११९ (ग), (ख) ३४९५

नयसंगीति

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

नरसिंहपञ्चाङ्ग

लि०—(१) रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० ४६८, पूर्ण।

—र० म० ४८१७

नरसिंहपरिचर्या

लि०— —कैट् कट् २।६०

नरसिंहपूजापद्धति

लि०—श्लोक स० ११४, अपूर्ण। —स० वि० २६६६२

नरेश्वरपरीक्षा

उ०—सर्वदर्शनसग्रह के शैवदर्शन मे।

नरेश्वरपरीक्षा-प्रकाश

लि० (१)—रामकण्ठ कृत, श्लोक स० २५००। —अ० व० १८२९

(२) सर्वदर्शनसग्रहान्तर्गत शैवदर्शन मे उल्लिखित नरेश्वरपरीक्षा पर नरेश्वर-परीक्षाप्रकाश नाम की टीका रामकण्ठ विरचित है। —कैट् कैट् १।२७९

नरेश्वरविवेक

परमेष्ठी विरचित।

उ०—Oxford २३९ के अनुसार वितस्तापुरी ने इसका उल्लेख किया है।

—कैट् कैट् १।२७९

नलिनीविजय

उ०—मन्त्रमहार्णव मे।

नवग्रहचिन्तामणि

लि०—श्लोक स० ६४०। —अ० व० १३३९०

नवग्रहमन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० १००। —अ० व० १३४६१

(२) (क) श्लोक स० १०, पूर्ण। (ख) श्लोक स० १८, पूर्ण।

—स० वि० (क) २३८८५, (ख) २५१८४

(३) —कैट् कैट् १।२८०

नवग्रहयन्त्र तथा नवग्रहकारिका

लि०—(१) वृहस्पति विरचित। (क) श्लोक स० ३०। (ख) श्लोक म० १५। (ग) श्लोक स० ६०।

—अ० व० (क) ८११२ (ख), (ख) ८११२(ग), (ग) ८११२ (घ)

(२) श्लोक सं० १९, पूर्ण। —म० वि० २४११४

नवग्रहसिद्धयन्त्रपूजाविस्तार

लि०—रुद्रयामलोक्त कृष्ण-युधिष्ठिर सवादरूप। इसमे नवग्रह-यन्त्र के निर्माण और पूजन की विधि वर्णित है। —ए० व० ५८८९

नवचक्रशेखर

उ०—प्राणतोषिणी मे।

नवचक्रेश्वर

उ०—तन्त्रसार मे।

नवचण्डीमहोत्सव

लि०— —कैट् कैट् १।२८१

नवदुर्गाकल्प

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

नवदुर्गापूजन तथा नवदुर्गापूजा

लि०— कैट् कैट् ३।६०

नवदुर्गापूजारहस्य

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, पार्वती-महादेव सवादरूप। ११ पटलो मे। प्रारभिक २ पटल प्रस्तावना के रूप मे है, शेष ९ पटलो में दुर्गा के शैलपुत्री आदि नौ रूपो की पूजा का विवरण दिया हुआ है। —ए० व० ५८८५

नवदुर्गापूजाविधि

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। नामान्तर—देवदूतीपूजाविधि। श्लोक स० २९५, पूर्ण।

—म० वि० २४३९०

नवरत्नमाला

लि०—शिवधर्मशास्त्र से गृहीत, श्लोक म० ९००। —अ० व० ५५६०

नवरत्नमाला-टीका

लि०—(१) गमीरराय-पुत्र भास्करराय विरचित टीका। नाम—मञ्जूषा।
—कैट् कैट् २।६१

(२) नवरत्नमालामञ्जूषा, गमीरराय-पुत्र भास्करराय नामान्तर भासुरानन्द विरचित, श्लोक स० २७५, पूर्ण। —स० वि० २४९४६

नवरत्नेश्वरतन्त्र

लि०—(१) शिव-पार्वती सवादरूप। इसमे कालिका के पूजन, ध्यान, जप आदि की विधि वर्णित है। —रा० ला० २१६

उ०—मन्त्रमहार्णव, तन्त्रसार, शक्तिरत्नाकर, शाक्तानन्दतरगिणी, प्राणतोषिणी तथा ताराभक्तिसुधार्णव मे।

नवरात्रकल्प

लि०—शिव-पार्वती सवादरूप। इसमे शारद नवरात्र के पुरश्चरण आदि का निरूपण है। —म० द० ५६६६

नवरात्रकृत्य

लि०—रुद्रयामल के उत्तरखण्डान्तर्गत, अध्याय ७ से ११ तक, श्लोक स० ३५७, पूर्ण।
—म० वि० २४१२६

नवरात्रनिर्णय

लि०—(१) श्लोक स० ४८। —अ० व० १०३१

(२) गोपालव्यास विरचित। —कैट् कैट् १।२८१

नवरात्रपूजापद्धति

लि०— —कैट् कैट् ३।६०

नवरात्रपूजाविधान

लि०—(१) शारद नवरात्र मे भगवती शक्ति की पूजा, पुरश्चर्या आदि का प्रतिपादक तन्त्रग्रन्थ। —म० द० ५६६७

(२) —कैट् कैट् १।२८१

नारायणपञ्चाङ्ग

लि०—विश्वसारतन्त्रान्तर्गत। श्लोक स० ३९२, पूर्ण। —र० मं० ४८२५

नारायणपदभूषण

लि०—श्लोक सं० ४००। —अ० व० ७९३७ (ग)

नारायणपदभूषणमाला (१)

लि०—वेङ्कटेश्वरसूरि-पुत्र शेषाद्रिशास्त्री कृत। श्लोक स० १००।

नारायणपदभूषणमाला (व्याख्या सहित) (२)

लि०—*व्याख्या-नाम—तत्त्ववाधाविधूनना, व्याख्याकार शेषाद्रिशास्त्री स्वयम्,* श्लोक सं० २०००।

नारायणपदभूषणतत्त्वमाला (३)

लि०—तत्त्ववाधा विधूनना नामक टीका युक्त। श्लोक स० २०००।

—अ० व० (१) १०७४४ (क), (२) १९७४४ (ख), (३) ७१०७

नारायणस्थान

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

नारायणार्चारत्नमाला

लि०—(१) भगवद्गोस्वामी कृत। इसमे तान्त्रिक रीति से नारायण-पूजापद्धति प्रतिपादित है। —क० का० ४०, ४१

(२) —कैट्. कैट् ३।६३

नारायणी

उ०—आगमकल्पलता मे।

नारायणीतन्त्र

उ०—पुरश्चर्यार्णव, प्राणतोषिणी, ताराभक्तिसुधार्णव, आगमकल्पलता तथा सर्वोल्लास मे।

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है।

नारायणीयतन्त्र

उ०—तन्त्रसार, आगमतत्त्वविलास तथा प्राणतोषिणी मे।

निगमकल्पद्रुम

लि०—(१) देवी-ईश्वर संवादरूप यह कौल सम्प्रदाय का ग्रन्थ १० पटलों में पूर्ण है। —ए० व० ६०५२, ५३

(२) श्लोक सं० ६००, शिव-पार्वती संवादरूप, १० पटलों में पूर्ण। उक्त पटलों में निम्न निर्दिष्ट विषय प्रतिपादित हैं—पञ्च मकारों की प्रशंसा, पञ्च मकारों की शुद्धि का कारण, परम साधन का निर्देश, स्त्री-माहात्म्य, उसके अङ्ग विशेषों के प्रभेद, उसके पूजनादि कथन, उसके साधन विशेषों का प्रतिपादन, स्वयं कुसुम का अभिधान, पञ्चतत्त्व आदि का शोधन, मांस विशेषादि कथन आदि। —रा० ला० २९३

(३) यह तान्त्रिक निबन्ध कौलाचार पर पार्वती जी ने शिवजी से, उनके प्रार्थना करने पर, कहा। यह १३ पटलों में पूर्ण है। —क० का० ४२

(४) श्लोक सं० २००, अपूर्ण। दो प्रतियाँ हैं। दोनों अपूर्ण हैं। —अ० व० १०२६१, १०११०

(५) (क) १९ पटल पर्यन्त पूर्ण। (ख) १० पटल पर्यन्त अपूर्ण। (ग) ७ म पटल पर्यन्त, अपूर्ण। —व० प (क) १४१०, (ख) १४१०, (ग) ८५१

(६) (क) श्लोक सं० २६६, पूर्ण (?)। (ख) श्लोक सं० २५२, दशम पटल तक पूर्ण। (ग) श्लोक सं० २८८। १ से १० पटल तक, पूर्ण। —स० वि० (क) २४८३३, (ख) २५२६१, (ग) २६४३०

(७) —कैट् कैट् १।२९५

उ०—सर्वोल्लास, तन्त्रसार तथा प्राणतोषिणी में।

निगमकल्पलता

लि०—(१) श्लोक सं० ५००, पटल २२, अपूर्ण। —अ० व० १०२२०

(२) श्लोक सं० ७२०, पटल १ से ३७ तक, अपूर्ण। —स० वि० २६३८६

उ०—सर्वोल्लास तथा प्राणतोषिणी में।

निगमकल्पसार

उ०—रा० ला० ५५८ में इसका उल्लेख है। —कैट् कैट् १।२९५

निगमकल्पानन्द

उ०—सर्वोल्लास मे ।

निगमतत्त्व

उ०—सर्वोल्लास मे ।

निगमतत्त्वसार

लि०—(१) (क) श्लोक स० १२५, केवल ३ य पटल तक इसमे मन्त्र, स्तोत्र आदि के साधन द्वारा सिद्धि-प्राप्ति कही गयी है।

(ख) आनन्दभैरवी और आनन्दभैरव सवादरूप यह ग्रन्थ ११ पटलो मे पूर्ण है। इसकी श्लोक स० ४३७ है। उक्त ११ पटलो मे निम्ननिर्दिष्ट विषय वर्णित है—तत्त्वसार और ज्ञानसार का निर्देश, मन्त्र आदि की साधना, स्तव और कवच का साधन, चण्डीपाठ का क्रम, प्राण, अपान आदि ५ वायुओ मे से किन्ही मे मन का संयोग होने पर मन का क्रिया-भेद हो जाता है, पञ्च तत्त्वो के शोधन का प्रकार, सविदा शोधनविधि आदि।

—रा० ला० (क) ४०७, (ख) ४१८४

(२) श्लोक स० २०० । —अ० व० १०१८६

(३) ११ पटलो मे पूर्ण। इसमे स्तोत्र, मन्त्र, चण्डीपाठविधि, पञ्च तत्त्वोकी शुद्धि आदि विषय वर्णित है । —ए० व० ६०४९, ५०

(४) आनन्दभैरव-आनन्दभैरवी संवादरूप। इसमे योगसार और तत्त्वसार का निरूपण, पञ्च तत्त्वो का माहात्म्य वर्णन, पञ्चतत्त्व आदि की शुद्धिविधि, योगविधि, मन्त्रादिसाधनविधि, स्तोत्रादि साधनविधि, कवचविधि, चण्डीपाठक्रम, मद्य, मांस आदि के शोधन की विधि, सविदा कल्प कथन, अशक्तो के लिए पञ्चतत्त्व विशेष की विधि, आदि विषय वर्णित है । —नो० स० २०३

(५) श्लोक स० ११०, शय्याशोधनपुरश्चरण आदि से तत्त्व शोधन पर्यन्त, पूर्ण ।

—स० वि० २४४३५

उ०—सर्वोल्लास मे ।

निगमलता (तन्त्र)

लि०—(१) इसकी कोई प्रति २४ पटलो मे पूर्ण है तो कोई २७ पटलो मे पूर्ण है और किसी की पूर्ति ४४ पटलो मे हुई है। इसमे बहुत-सी देव-देवियाँ वर्णित है—विरोचन,

शख, मामक, असित, पद्मान्तक, नरकान्तक, मणिधारिवज्रिणी, महाप्रतिसरा तथा अक्षोभ्य, ये कही पर ऋषिरूप मे वर्णित है। यह तन्त्र कौल पूजा का प्रतिपादक है।

—ए० व० ६०४७, ४८

(२) पार्वती-ईश्वर सवादरूप यह तन्त्र २४ पटलो मे पूर्ण है। इसमे पञ्च मकारोमे से प्रधानत पञ्चम मकार की ही विस्तारपूर्वक प्रयोगविधि प्रतिपादित है।

लतासाधनविधि, दिव्य, वीर आदि के लक्षण, पञ्च मकारो के साधन से ही मोक्ष प्राप्ति, भैरवीचक्र मे वर्णादि भेद नही रहता, पञ्चम मकारकी शोधनविधि, पुन पुन पान की विधि, योनि-पूजाविधि, ध्यान आदि, कालिका-पूजाविधि, आदि विषय इसमे वर्णित है।

—नो० स० १।२०४

(३) पार्वती-ईश्वर सवादरूप, श्लोक स० ७८४, पटल सख्या २५। इसमे कुलाचार के अनुसार स्त्रीसाधनव्यवस्था और उसके उपयोगी मन्त्र वर्णित है। अपूर्ण।

—रा० ला० ६९९

(४) पटल स० ४४, अपूर्ण। —व० प० १३१२

(५) केवल १८ वाँ पटल, अपूर्ण। —स० वि० २६३००

निगमसार

उ०—प्राणतोषिणी मे।

निगमसारनिर्णय

लि०—रमारमणदेव विरचित। यह कालीपूजा पर तान्त्रिक सग्रह ग्रन्थ है। इसमे प्रतिपादित विपय है—कालिका-मन्त्रविधान, कालिका के ध्यान, पूजन तथा सुविभूति कथन आदि।

—ने० द० २।३३३

निगमानन्द

उ०—सर्वोल्लास मे।

निगमामृतकल्प

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत श्लोक स० ८१, १म पटल पूर्ण।

—स० वि० २५०२५

नितान्ततन्त्र

लि०—प्रथम पटल मात्र, पूर्ण। रा ला ३८७ मे सक्षेप पुरश्चरण विधि के नाम से यह निर्दिष्ट है—"नितान्ततन्त्रे सक्षेपपुरश्चरणविधि" यह ग्रन्थ का नाम नही है प्रत्युत प्रथम पटल का विषय है। —व प १३९२

नित्यक्रम

लि०—श्लोक स० ४००। —अ० व० ११७८२

नित्यक्रिया

लि०—पन्ने ११८, अपूर्ण। —डे० का० ४५६ (१८७५-७६ ई०)

नित्यदीपविधि

लि०—(१) रुद्रयामल से गृहीत। श्लोक स० ४६०। —अ० व० ३४५९

(२) श्लोक स० १०४, पूर्ण। यह कार्तवीर्यार्जुनदीपदानविधि है। इसमे दत्तात्रेयतन्त्रान्तर्गत कार्तवीर्यनित्यपूजाविधि भी सम्मिलित है।

—स० वि० २५३६९

नित्यदीपविधिक्रम

लि०—हरिहराचार्य विरचित। श्लोक स० १५०।

—अ० व० ८०१० (ख)

नित्यनैमित्तिकतान्त्रिकहोम

लि०—हरिहराचार्याभिषिक्त नागरान्वयावतीर्ण श्रीचतुर्भुजाचार्य विरचित। इसमे नित्य तथा नैमित्तिक तान्त्रिक होमपद्धति वर्णित है। —ए० व० ६५३६

नित्यनैमित्तिकविधि

दे०, शक्तिसूत्र। —ने० द० १।६१९ (घ)

नित्यपूजन

लि०—श्लोक स० ५०। अन्त मे पुरुष-परम्परापूजन भी इसमे सन्निविष्ट है।

—अ० व० ३५३३

नित्यपूजापद्धति (शिव की)

लि०—श्लोक स० ३८२, पूर्ण। —स० वि० २३८७०

नित्यप्रयोगरत्नाकर

लि०—(१) प्रेमनिधि पन्त कृत, श्लोक स० ४००। —अ० व० ६०३८

(२) प्रेमनिधि पन्त कृत। —कैट् कैट् १।२९५

नित्यातन्त्र

लि०—(१) नित्या (तन्त्रसार मे उक्त) काली का एक भेद है। इस तन्त्र मे उनकी पूजा वर्णित है। —ने० द० १।२२६ (ग)

(२) (क) श्लोक स० १४६५, पूर्ण। लिपिकाल सवत् १७३० वि०।

(ख) श्लोक स० ५५२ ज्ञानार्णवान्तर्गत, पूर्ण।

—स० वि० (क) २३९४९, (ख) २४१८४

(३) दे०, षोडशनित्यातन्त्र। —कैट् कैट् १।२९६

उ०—सर्वोल्लासतन्त्र मे। सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुषष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है।

नित्यानुष्ठान

लि०—सौभाग्यकल्पद्रुम से गृहीत। श्लोक स० २००। —अ० ब० ११७१७

नित्यानुष्ठानपूजापद्धति

लि०— —कैट् कैट् १।२९६

नित्यापारायण

लि०—वुद्धिराज कृत। —रा० पु० ५७९४ (२)

नित्यार्चनविधि

लि०—(१) श्लोक सख्या १५०। —अ० ब० १२५५८

(२) श्रीकृष्णभट्ट कृत, श्लोक सख्या २२३, पूर्ण, मन्त्ररत्नाकरान्तर्गत।

—स० वि० २६६३२

नित्याषोडशिकाम्बुधि

लि०—यह तन्त्रराज का ही नामान्तर है। दे०, तन्त्रराज या कादिमत।

—क० का० ४३

नित्याषोडशिकार्णव

लि०—(१) वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत। इस पर भास्करराय कृत सतुवन्ध नाम की टीका है। —ए० ब० ६१४२

(२) (क) श्लोक स० ३१००, भास्करराय कृत सेतुवन्ध टीकासहित ।
(ख) श्लोक स० ३१००, भास्करराय कृत सेतुवध टीकासहित ।
(ग) श्लोक स० ३१००, भास्करराय कृत सेतुवन्ध टीकासहित ।
(घ) श्लोक स० १०००, योगिनीहृदयदीपिका टीकासहित, अमृतानन्दनाथ कृत ।

—अ० व० (क) ५५६६, (ख) १२४५२, (ग) ५५६४, (घ) १००५६

(३) वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत, ५ पटलो मे समाप्त । —क० का० ४

उ०—तन्त्रराजटीका मनोरमा मे ।

नित्याषोडशिकार्णवव्याख्यान या व्याख्या

लि०—(१) व्याख्यान का नाम—सेतुवन्ध, रचयिता भास्करराय (भासुरानन्द) यह टीका ५ विश्रामो मे पूर्ण है । —क० का० ४४

(२) व्याख्या नाम अज्ञात, व्याख्याकार शिवानन्द, श्लोक स० ३००, पूर्ण ।

—स० वि० २४८१७

नित्यासंहिता

उ०—ललितार्चनचन्द्रिका मे ।

नित्याहृदय

नामान्तर—योगिनीहृदय । यह नित्याषोडशिकार्णव का उत्तरार्द्ध है । द्रष्टव्य सेतुवन्ध पृ० ६ ।

नित्याह्निकतिलक

लि०—(१) श्रीकण्ठ-पुत्र मुञ्जक विरचित । इसमे कुब्जिका देवी की पूजा का विवरण है । इसका रचना-काल सन् ११९७ लिखा गया है । —ए० व० ६४३४

(२) श्रीकण्ठ-पुत्र मुञ्जक कृत । कुब्जिका काली का एक भेद है । इसमे कुब्जिका के उपासको के दैनिक कृत्य वतलाये गये है । यह पश्चिमाम्नाय का ग्रन्थ है । इसमे मुख्यतः ये विषय वर्णित हैं—

उत्तरीय सहित यज्ञोपवीत लक्षण, पञ्चप्रणवोद्धार, चार प्रकार के न्यास, कूटावर्णध्यान, ममयामन्त्रोद्धार, सन्ध्यावन्दनविधि, शान्तिवलि, मन्त्रपीठार्चन, शक्तिध्यान, पिण्डोद्धार महावलि आदि ।

—ने० द० १।१३२० (क) तथा २।३७७ (क)

नित्योत्सवतन्त्र

लि०—(१) यह विद्याकल्पसूत्र के नाम से रा० ला० १४६७ मे वर्णित है।

—ए० व० ६१७०

(२) (क) सोमानन्दनाथ कृत, श्लोक स० २१६, अपूर्ण।

(ख) उमानन्दनाथ विरचित, श्लोक स०, लगभग ८४०, पूर्ण।

(ग) उमानन्दनाथ विरचित, श्लोक स० लगभग ८४०, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४११९, (ख) २४६९७, (ग) २५१२०

(३) —कैट् कैट् १।२९६

नित्योत्सवनिबन्ध

लि०—(१) भास्करराय-शिष्य उमानन्दनाथ विरचित, यह ग्रन्थ परशुराम कल्पसूत्र, वैशम्पायनसहिता, सारसग्रह, भैरवतन्त्र आदि से सगृहीत है। इसमे दीक्षा, पूजा आदि का प्रतिपादन है। प्रस्तुत प्रति मे केवल दीक्षासमारम्भनिरूपण नाम का पहला उल्लास मात्र है। अपूर्ण। —क० का० ५६

(२) नत्वा श्रीभासुरानन्दनाथपादाम्वुजद्वयम्।

युनक्त्युमानन्दनाथो यौवनोल्लासमद्भुतम्॥

प्रस्तुत प्रति मे यौवनोल्लास नाम का केवल ३ य उल्लास है। इसमे आह्निकप्रकरण, सपर्याप्रकरण, होम, जप, मुद्रा, न्यास नैमित्तिक अर्चन नाम के ७ प्रकरण है।

—म० द० ५६६८

(३) लि०—(क) भास्करराय-शिष्य उमानन्दनाथ विरचित श्लोक स०

२५०० । (ख) ,, ,, ,, ,,

,, । (ग) ,, ,, ,, ,,

,, । (घ) ,, ,, ,, ,,

,, । (ङ) ,, ,, ,, ,,

ये (५) प्रतियाँ सभवत पूर्ण है।

—अ० ब० (क) १८३, (ख) ४६३७, (ग) ५५७२, (घ) ११४१०,

(ङ) १३१०६

(अ० ब० मे इनके अतिरिक्त ५ प्रतियाँ और है वे अपूर्ण है। ११४१० न० की प्रति मे कर्त्ता का नाम जगन्नाथ पण्डित कहा गया है।)

(४) —कैट्. कैट् ३।६३

[इसका रचना-काल कलिगताब्द ४८४६ या ४८७६ अथवा १७४५ ई० ।]

निधिदर्शन

लि०—(१) नैमिषनिवासी मालववाजपेयी श्रीराम विरचित, इसमे कई ऐन्द्रजालिक विधियाँ गुप्त निधियो तथा अन्य आकाङ्क्षित विषयो की प्राप्ति के लिए वर्णित है।

—ए० व० ६५५२

(२) निधिदर्शन आदि विविध योगसग्रह, श्लोक स० ५५१, अपूर्ण।

—सं० वि० २६३५२

निधिप्रदीप

लि०—(१) श्रीकण्ठाचार्य पण्डित कृत, श्लोक स० ४७४, पाँच परिच्छेदो मे।

—अ० व० ११०३४

(२) (क) श्लोक स० लगभग १५०, पूर्ण ।

(ख) श्रीकण्ठ पण्डित विरचित सिहशावरमहारत्नसारोद्धार के अन्तर्गत, श्लोक स० ४०५, पूर्ण। —स० वि० (क) २४१५४, (ख) २५८४१

निबन्धमहातन्त्र

लि०—(१) यह ग्रन्थदो भागो मे रचा गया है। पहले भाग मे ८७ पटल है। यह भाग दो कल्पो मे विभक्त है १ से ८२ पटल तक सारस्वत कल्प तथा ८३ से ८७ पटल तक श्यामा कल्प। दूसरे भाग मे ३३ पटल हैं। यह भाग ५ कल्पो मे विभक्त है। १म से ९ पटल तक महेश कल्प, १० से १८ पटल तक गणेश कल्प, १९ से २५ तक वैष्णव कल्प, २६ वे पटल मे सौर कल्प एव २७ वे से ३३ वे पटल तक शाक्त कल्प। —ए० व० ५९९२

(२) देवी-ईश्वर सवादरूप यह महातन्त्र चतु.षष्टि(६४)महातन्त्रो मे अन्यतम है। इसकी श्लोक सं० ७८३८ है। इसमे चार कल्प है—शिवकल्प, गणेशकल्प, सरस्वतीकल्प तथा शक्तिकल्प। इसमे विविध विषय प्रतिपादित है उनमे से कतिपय मुख्य-मुख्य उद्धृत किये जाते हैं—नीलस्वस्वती ही ब्रह्मज्योतिस्वरूप है, शक्ति, नारायण और ब्रह्म शब्द समानार्थक है, मनुष्य-जन्म की दुर्लभता, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के अर्जन केसाधन शरीर के रक्षण की विशेपरूप से आवश्यकता, ब्रह्म से लेकर स्तम्ब पर्यन्त चराचर जगत् की ५० वर्णात्मकता, नीलसरस्वती ध्वनि, नाद, वर्ण और मन्त्रात्मक ही है,यह कथन,

मन्त्र से ही ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि की उत्पत्ति है, नीलसरस्वती का वेदरूपत्व आदि वर्णन-पूर्वक परा, पश्यन्ती, मध्यमा, वैखरी रूप वाङमयीत्व कथन, गणेश, सूर्य, शिव, विष्णु और शक्ति रूप होने से पञ्च तत्त्वो मे भेद कथन, श्वेतवर्णा सरस्वती को, नील रूप प्राप्ति का वृत्तान्त, वलि के योग्य पशु, वलिदानविधि, देवीपूजा मे अधिकार, मासादि भक्षण-विवेक, तारा की पूजाविधि, योनिमुद्रा आदि विविध मुद्राओ के लक्षण,दीक्षा-विचार, महाचीनविधि, वीरसाधन, विविध साधनाएँ, उग्र काली आदि की पूजा-विधि,कुमारी-पूजा, पुष्पविवेचन, चीनक्रम का कथन, श्यामा-स्तोत्र आदि। —रा० ला० ४२६५

(३) ४ कल्प और ३३ पटलो मे (इसमे केवल २ य भाग का ही निरूपण है)।

—कैट् कैट् २।६४

निरुत्तरतन्त्र

लि०—(१) शिव-पार्वती सवादरूप, श्लोक स० २००० तथा पटल १५। इसमे प्रतिपादित विषय है—सक्षेपत दक्षिण कालिकाका माहात्म्य वर्णन, दक्षिण कालिका की पूजाविधि और मन्त्र, उनका कवच, पुरश्चरणविधि, रजनी देवी की पूजाविधि आदि, दक्षिण कालिका की अभिषेकविधि, पुन उनके अभिषेक का निरूपण, मन्त्रसिद्धि का प्रकार, शक्ति के विविध भेद, योगियो के विशेष विशेष साधनो का विधान, अन्य साधनो का निर्देश, सिद्धविद्या की साधना के उपयोगी शक्तिविशेषो का प्रतिपादन, कौलसाधना के अनुकूल वेश्याशक्ति-भेदो का प्रतिपादन, मद्य, मास, मीन, मुद्रा, मैथुन पञ्च मकारो की शुद्धि आदि। —रा० ला० २८५

(२) यह ग्रन्थ १५ पटलो मे तन्त्रसग्रह तथा सुलभतन्त्रप्रकाश मे प्रकाशित हो चुका है। —ए० व० ५९३५

(३) देवी-ईश्वर सवादरूप। विषय सूची—कालीकुल, श्रीकुल और पञ्च आम्नायो का निरूपण, कालीपूजा मे गुरुमन्त्र आदि का निरूपण, कलानिरूपण, दक्षिण कालिका के मन्त्र, ध्यान, पूजा आदि, महाकाल के ध्यान आदि, काली-स्तव और कवच, अजपानिरूपण, पुरश्चरणविधि, दिव्य, वीर और पशु भाव के भेद से पुरश्चरणो मे भेद, निर्गुण तथा सगुण भाव का चिन्तन, रात्रि-पूजाविधि, महानिशा आदि का निरूपण, वीराभिषेकविधि, अभिषेक के मन्त्र, सिद्ध मन्त्रो के लक्षण, गोप्य कर्म, राजचक्र और देवचक्र मे विशेषता, साधिका के लक्षण, तर्पण मे मुद्राविधि आदि।

—नो० स० १।२०६

(४) १५ पटल पर्यन्त, आरम्भ और मध्य मे कुछ खण्डित। शेप चार प्रतियाँ अपूर्ण हैं।
—व० प० ६०१

(५) शिवप्रोक्त, अपूर्ण । —ज० का० १०४६

(६) (क) श्लोक म० ६२४, पटल १ मे १३ तक, पूर्ण। (ख) पटल १ से १५ तक अपूर्ण।

[स वि० मे ५ प्रतियाँ अपूर्ण और हैं—जिनकी सख्या है—२४६७०, २५५४५, २५७४५, २६१४४ तथा २६४२७।]

—स० वि० (क) २६४३२, (ख) २६४७३

उ०—पुरश्चर्यार्णव, कालिकासपर्याविवि, प्राणतोपिणी, मन्त्रमहार्णव, सर्वोल्लास तथा शक्तिरत्नाकर मे।

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुपष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है।

निरुत्तरभट्टारक

लि०—देवी-भैरव सवादरूप। यह मुख्यत योगसवन्धी ग्रन्थ है। —ए० व० ५९३७

निर्णयामृत

लि०—(१) सिद्धलक्ष्मण-पुत्र अल्लादनाथ विरचित।

(२) रामचन्द्र विरचित। दे०, नो० स० भाग ११ की भूमिका पे० ४।

—कैट् कैट् ३।६४

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

निर्वाणगुह्यकालीसहस्रनाम

लि—वाम्लागुह्यकालिकातन्त्ररहस्यप्रकरणान्तर्गत।

—ए० व० ६६५०

निर्वाणतन्त्र

लि०—(१) चण्डी-शङ्कर सवादरूप। श्लोक स० ५२४, पटल सं० १८। इसमे वर्णित विपय है—महादेवजी का देवी पार्वतीजी से जगत् की उत्पत्ति का प्रकार कथन, सक्षेप मे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का वर्णन, ब्रह्मा, विष्णु आदि की उत्पत्ति, क्रम से सावित्री और लक्ष्मी के साथ उनका विवाह, भुवनसुन्दरी के साथ सदाशिव का विवाह वर्णन, जीव अनादि पुरुप के अंश हैं, यह कथन, चौरासी लाख जन्मो के उपरान्त मानव-जन्म लाभ का निरूपण, गायत्री के जप का माहात्म्य, गायत्रीपुरश्चरणविवि, सन्यासी आदि के लक्षण, गोलोक-

वर्णन, राधा का स्वरूप वर्णन, साकार द्विभुज महाविष्णु की मुरलीधरता, विविध लोको का वर्णन, पञ्च तत्त्वो का कथन, पुरश्चरणविधि, मन्त्रप्रकरण, अष्टादश उपचारो का निर्देश, समयाचारवर्णन आदि। —रा० ला० ३१८१

(२) यह ग्रन्थ तन्त्रसग्रह तथा मुलमतन्त्रप्रकाश मे (१४ पटलो मे) प्रकाशित हो चुका है। —ए० व० ५९१९

(३) चण्डिका-शङ्कर सवादरूप। विषयसूची—ब्रह्मनिरूपण, ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का वर्णन, मनुष्यो के जन्म, मृत्यु आदि का निरूपण, गायत्रीमन्त्र और गायत्री-माहात्म्य, षडङ्गन्यास के मन्त्रो का निरूपण, वृहद् ब्रह्माण्ड का लक्षण, योगाचार का निरूपण, सत्य आदि लोको का निरूपण, विष्णुस्तव आदि। —नो० स० १।२०८

(४) (क) १४ पटल पर्यन्त, पूर्ण। (ख) १४ पटल पर्यन्त, आरभ मे खण्डित, अपूर्ण, (ग) चौदह (१४) पटल पर्यन्त, पूर्ण।

—व० प० (क) ३५८, (ख) १३७, (ग) १६१४

(५) शिव प्रोक्त, अपूर्ण। —ज० का० १०४७

(६) केवल १३ वाँ और १४ वाँ पटल पूर्ण। —र० म० ४८६३

(७) (क) श्लोक स० ५४६ पूर्ण। (ख) श्लोक स० ६३०, पटल १से १४ तक। इसमे समोहनतन्त्र मे उक्त दश महाविद्याओ के दस अवतारो का प्रमाण भी समिलित है।

—स० वि० (क) २४८६२, (ख) २६४५२

[स० वि० मे कई प्रतियाँ अपूर्ण और भी है।]

(८) —कैट् कैट् १।२९८

उ०—प्राणतोषिणी, सर्वोल्लास तथा शक्तिरत्नाकर मे।

निर्वाणयोगपट

लि०—श्लोक स० लगभग १८, पूर्ण। —स० वि० २४२०१

निर्वाणयोगोत्तर

उ०—योगराज कृत परमार्थसार की टीका मे।

निर्वाणविधि

लि०—पूर्ण। —स० वि० २४८६१

निशाकुल

लि०—महार्थमञ्जरी-परिमल तथा तन्त्रालोक मे।

निशाचर

उ०—तन्त्रालोक मे ।

निशाचरपूजा

लि०—श्लोक स० ५०। इसमे निशाचर पूजन निरूपित है अर्थात् यह देवी की रात्रि-पूजापद्धति है। —रा० ला० ३६३

निशाचरपूजापद्धति

लि०— —कैट् कैट् १।२९९

निशाटन

उ०—योगराज कृत परमार्थसार टीका तथा तन्त्रालोक मे।

निशीचार

उ०—तन्त्रालोक मे।

निःश्वासकारिका

उ०—शतरत्नसग्रह मे।

निःश्वासतत्त्वसंहिता

लि०—मतङ्ग-ऋचीक सवादरूप। इसका १ म अर्द्ध भाग श्रौतसूत्र और २य अर्द्ध भाग गुह्यसूत्र कहलाता है। आरभ मे ४ लौकिक धर्म पटल है। मूल सूत्र मे ८ पटल, उत्तर सूत्र मे ५ पटल, नय सूत्र मे ४ पटल तथा गुह्यसूत्र मे १८ पटल है एव श्लोक सख्या ४५०० है। उद्धरार्द्ध गुह्यसूत्र मे उक्त १८ पटलो के अन्तर्गत सद्योजातकल्प, अघोरकल्प तथा तत्पुरुपकल्प भी प्रतिपादित है। —ने द १।२७७

निःश्वासतन्त्र

लि०— —ने० द० १।२७९

यह अष्टादश (१८) रुद्र आगमो के अन्तर्गत है।

निःश्वासाख्यमहातन्त्र

लि०— —कैट्. कैट् ३।६४

निःश्वासोत्तर

उ०—शतरत्नसग्रह मे।

निष्कलक्रमचर्या

लि०—शिवानन्द-पौत्र, चिदानन्द-पुत्र श्रीकण्ठानन्द मुनि विरचित, श्लोक स० २००। इसमे शैवमतानुसार पूजाविधि प्रतिपादित है। —ट्रि० कै० ११२७ (च)

नीलकण्ठकल्प

लि०—श्लोक स० ३५०। —अ० व० ९८२० (क)

नीलकण्ठस्तोत्र

लि०—(१) —रा० ला० २७५५

(२) —कैट् कैट् १।३०१

नीलकण्ठस्तोत्र

लि०—(१) डामरेश्वरतन्त्रान्तर्गत' यह मालामन्त्र की श्रेणी का स्तोत्र है। —ए० व० ६७४२

लि०—(२) —कैट् कैट् २।६५

नीलकण्ठस्तोत्रमन्त्र

(२) लि०—श्लोक स० ६५५, पूर्ण। —स० वि० २४३९७

नीलतन्त्र (१)

लि०—(१) भैरव-पार्वती सवादरूप। श्लोक स० ७१५ तथा पटल स० १५। यह ब्रह्मनीलतन्त्र से मिलता-जुलता है। —ए० व० ५९५०

(२) (क) श्लोक स० २००, पटल १० वे से १५ वे तक, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ६६०, इसमे पटलो की सख्या नही दी गयी है।

—अ० व० (क) १०१०७, (ख) ३४६४

(३) इसमे दक्षिण कालिका के पुरश्चरण, नैमित्तिक पूजन, कुलपूजा आदि की विधि वर्णित है। अपूर्ण। —रा० ला० २१५

(४) पटल स० १म से १२ श तक। —व० प० ६५०

(५) (क) श्लोक स० लगभग ४९०, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ७१०, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० लगभग २६०, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २४४५१, (ख) २४६१९, (ग) २४६४८

(६) —कैट् कैट् १।३०२

उ०—पुरश्चर्यार्णव, आगमकल्पलता, तन्त्ररत्न, ताराभक्तिसुधार्णव, तन्त्रसार, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, तारारहस्यवृत्ति, आगमतत्त्वविलास तथा प्राणतोषिणी मे।

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है।

नीलतन्त्र (२)

लि०—(१) शिव-पार्वती सवादरूप, श्लोक स० ७०० तथा पटल स० १७। यह विविधतन्त्रसग्रह तथा सुलभतन्त्रप्रकाश मे प्रकाशित हो चुका है। मुद्रित पुस्तक मे इनकी पटल स० १२ है परन्तु हस्तलिखित मे कही १५ तथा कही १७ है। दोनो का नाम एक होने पर भी विषय भिन्न-भिन्न प्रतीत होता है।

—ए० ब० ५९४९

(२) देवी-ईश्वर सवादरूप, श्लोक स० ५९५ तथा पटल स० १७। प्रतिपाद्य विषय है—नीलतन्त्र-माहात्म्य, इस तन्त्र के अनुयायियो के शय्यात्याग के अनन्तर कर्तव्य, देवी-स्मरण आदि, तान्त्रिक स्नान, मन्त्र-जप आदि की विधि, पूजा-स्थान का निर्णय, नीलदेवी की पूजाविधि, तन्त्र यन्त्र लिखन, भूतशुद्धि, यन्त्र-शक्ति देवता के ध्यानादि, मत्स्य, मास आदि नैवेद्यदान आदि। —रा० ला० ४६३

नीलसरस्वतीतन्त्र

उ०—मन्त्रमहार्णव तथा तन्त्रसार मे।

नीलसरस्वतीप्रयोगविधि

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक स० ९०, अपूर्ण।

—स० वि० २५४८०

नृत्येश्वरतन्त्र

लि०—इसमे परशुराम, रामभद्र, सुग्रीव, भीम, हनुमान् आदि सब युद्धवीरो का आवाहन और पूजन-विधि वर्णित है। ८ भैरव तथा ८ महाकाली के नामो के साथ उनके ध्यान और पूजन वर्णित है। —ने० द० १।१३२२

नृसिंहकल्प

लि०— —कैट्. कैट् १।३०४, २।६६

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे। रघुनन्दन ने भी तत्त्वसग्रह मे इसका उल्लेख किया है।

नृसिंहकवच

लि०—(१) प्रह्लाद विरचित, ब्रह्माण्डपुराणान्तर्गत यह कवच सर्वरक्षाकर तथा सब उपद्रवो का शमन करनेवाला कहा गया है। —ए० ब० ६७६२

(२) (क) श्लोक स० १७, नृसिंहपुराण से गृहीत।

(ख) श्लोक स० २७ ब्रह्मसहिता से गृहीत।

—अ० व० (क) ४४२६, (ख) ४४२८

(३) श्लोक स० ३५, पूर्ण। —स० वि० २४५५६

(४) (क) नारदपञ्चरात्र से गृहीत, ब्रह्मसहिता से गृहीत, ब्रह्माण्डपुराण से गृहीत। (ख) प्रह्लादसहिता से गृहीत। (ग) नृसिंहपुराण से गृहीत, पद्मपुराण से गृहीत।

—कैट् कैट् (क) १।३०४, (ख) २।६६, (ग) ३।६५

नृसिंहचरणार्चनपद्धति

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

नृसिंहतन्त्र

लि०— —वि० रि०

नृसिंहपञ्जर

लि०—आथर्वणरहस्य से गृहीत। —कैट् कैट् १।३०४

नृसिंहपटल

लि०—महीधर कृत। —कैट् कैट् १।३०४

नृसिंहपद्धति

लि०—(१) श्लोक स० २८७, अपूर्ण। लिपिकाल शकाब्द १५७८।

—स० वि० २५६४०

(२) —कैट् कैट् १।३०४

नृसिंहपरिचर्या

लि०—(१) श्लोक स० १२६, ५ पटलो मे पूर्ण। इसमे नृसिह-परिचर्या मे पवित्रारोपणविधि, उसका प्रयोग तथा नृसिंह-पूजा प्रतिपादित है।

—रा० ला० ४२३२

(२) कृष्णदेव विरचित, वैष्णवानुष्ठान-पद्धति से गृहीत।

—कैट् कैट् १।३०४, ३।६५

उ०—निर्णयसिन्धु तथा आचारार्क मे।

नृसिंहपरिचर्याप्रतिष्ठाकल्प

लि०— —कैट् कैट्. १।३०४

नृसिंहपूजापद्धति

लि०—(१) श्लोक स० २३५, अपूर्ण। —र० म० ३७४३

(२) श्लोक स० ३०६, अपूर्ण। —सं० वि० २४३४४

(३) वृन्दावन विरचित। —कैट्. कैट् १।३०५

नृसिंहमन्त्रपद्धति

लि०— —कैट् कैट्. १।३०५

नृसिंहमन्त्रराजपुरश्चरणविधि

लि०— —कैट् कैट् १।३०५

नृसिंहमालामन्त्र

लि०—(१) पत्रे १९। —रा० पु० ५५१६

(२) मार्कण्डेयपुराण से गृहीत। —कैट् कैट्. १।३०५

नृसिंहयोगपारिजात

लि०— —कैट् कैट्. २।६६

नृसिंहरत्नमाला

लि०—श्लोक स० २११५, अपूर्ण। —सं० वि० २५२४०

नृसिंहवज्रपञ्जर

लि०— —कैट् कैट् १।३०५

नृसिंहसुन्दरीकवच

लि०—सम्मोहनतन्त्रान्तर्गत उमा-महेश्वर सवादरूप यह कवच सर्वसिद्धिप्रद कहा गया है। —ने० द० ११४८

नृसिंहसुन्दरीविद्याविवरण

लि०—श्लोक स० २८, पूर्ण । —स० वि० २५५१९

नृसिंहाराधन

लि०— —कैट् कैट् १।३०५

नृसिंहाराधनरत्नमाला

लि०—(१) रामचन्द्र-पुत्र मेङ्गानाथ विरचित। इसमे ९ पटलो मे वैष्णव पूजाविधि वर्णित है। भूतशुद्धि, प्राण-प्रतिष्ठा, कलादि मातृकान्यास आदि विषय भी प्रतिपादित है। —इ० आ० २६१०

(२) श्लोक स० ९४०, १म से ६ ष्ठ पटल पर्यन्त, अपूर्ण।

—स० वि० २५६३८

नृसिंहार्चनपद्धति

लि०—ब्रह्माण्डानन्दनाथ कृत। —कैट् कैट् २।६६

नेत्रज्ञानार्णव

लि०—उमा-महेश्वर सवादरूप। इसमे ५९ पटल है।

—ए० व० ५८१८

नेत्रतन्त्र

उ०—क्षेमराज कृत विज्ञानभैरवतन्त्र मे।

नेत्रोद्योततन्त्र

लि०—(१) राजानक क्षेमराज विरचित, श्लोक स० ३२२, पूर्ण।

—डे० का० ३३२ (१८८३-८४ ई०)

(२) राजानक क्षेमराज कृत। —कैट् कैट् १।३०६

नैःश्वास

उ०—क्षेमराज ने इसका उल्लेख किया है, Hall पे १९८। —कैट् कैट् १।३०६

नौका

लि०—मन्त्रमहोदधि की टीका। दे०, मन्त्रमहोदधि।

—ए० व० ६२६१

पञ्चत्रिंशत्पीठिका

लि०—महागणपतिकल्प से गृहीत। —कैट्. कैट् १।३१४

पञ्चदशमालामन्त्र

लि०—श्लोक स० १२००, (खण्डित)। —अ० व० ३४६९

पञ्चदशमालामन्त्रविधि

लि०— —कैट् कैट् १।३१४

पञ्चदशयन्त्रमाहात्म्य

लि०—शिवकाण्डान्तर्गत, श्लोक स० १३०, पूर्ण। —र० म० ४७६३

पञ्चदशयन्त्रविधान

लि०—(क) श्लोक स० ७२, पूर्ण, रुद्रयामलान्तर्गत। (ख) श्लो० स० लगभग ५४, पूर्ण। —स० वि० (क) २६२२४, (ख) २६२२५

पञ्चदशाक्षरीविद्या-पारायणप्रकार

लि०—इसमे त्रिपुरसुन्दरी के सहस्रनामस्तोत्र के पारायण की विधि वर्णित है। —त्री० कै० १३००

पञ्चदशाक्षरीविद्याविधि

लि०—श्लोक स० ६५, पूर्ण। —स० वि० २६५५३

पञ्चदशाक्षर्यादिविद्या

लि०—(क) श्लोक स० ३५, पूर्ण। लिपिकाल १७३३ वि०। (ख) श्लोक स० १४, अपूर्ण। (ग) अपूर्ण। —स० वि० (क) २४२३०, (ख) २४२३१, (ग) २४२२९

पञ्चदशाख्ययन्त्रविधान

लि०—श्लोक स० ९२, पूर्ण। —स० वि० २६३५५

पञ्चदशाङ्कयन्त्रभेद

लि०—श्लोक स० ३०, अपूर्ण। —सं० वि० २५८४२

पञ्चदशाङ्कयन्त्रविधान

लि०—श्लोक स० ८०, पूर्ण। यह शिवताण्डव के अन्तर्गत है। —सं० वि० २४२१९

पञ्चदशाङ्कयन्त्रविधि

लि०—(क) श्लोक स० ४२०, पूर्ण। (ख) शिवताण्डवतन्त्रान्तर्गत, पूर्ण, श्लोक स० ७२। —स० वि० (क) २४२२०, (ख) २४२१८

पञ्चदशीतन्त्र

उ०—प्राणतोषिणी मे।

पञ्चदशीयन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० ५०। —अ० व० ११७६४

(२) श्लोक स० ८८, पूर्ण। —स० वि० २४१३८

पञ्चदशीयन्त्रकल्प

लि०—श्लोक स० ४९०, पूर्ण। —स० वि० २४२२६

पञ्चदशीयन्त्रविचार

लि०— —र० म० ३२९० (क)

पञ्चदशी यन्त्रविधान

लि०—(१) श्लोक स० ४४, अपूर्ण। —स० वि० २५४५१

(२) —कैट् कैट् १।३१४

पञ्चदशीयन्त्रविधि

लि०—(१) श्लोक स० २४, पूर्ण। —र० म० ३२९० (ख)

(२) श्लोक स० ७५, अपूर्ण। —स० वि० २४५७१

पञ्चदशीविद्यायन्त्रकारिका

लि०—श्लोक स० २१, अपूर्ण। —स० वि० २५६९८

पञ्चदशीविद्याविधि

लि०—श्लोक सख्या ८५, पूर्ण। —स० वि० २६६४९

पञ्चदशीविधान

लि०—(१) गौरी-शङ्कर सवादरूप, इसमे पञ्चदशी यन्त्र की निर्माणविधि वतलायी गयी है। —ए० व० ६१३९

(२) पन्ने २। —रा० पु० ५१२३ (५)

न्यास

लि०—(१) श्लोक स० ५०। —अ० व० ८४२८
(२) श्लोक स० १०, पूर्ण। —म० वि० २४१०६

न्यासकरण

लि०—श्लोक स० २५०। —अ० व० ११७१५

न्यासजाल

लि०—इसमे मूलमन्त्र से करन्यास तथा छह अङ्गन्यास कर 'शिवोऽहम्' ऐसी भावना करते हुए क्षोभण आदि नौ मुद्राएँ तथा पाशादि चार मुद्राएँ बाँध कर सर्वावयवरूप से काम-कलारूप अपना ध्यान कर, गवत्युत्थापन मुद्रा बाँध कर प्रात स्मरण मे उक्त प्रकार से कुण्डलिनी को जगाकर छह चक्रो के भेदनक्रम से ध्यान करते हुए अन्तर्याग कर सर्वाभरण-सयुक्त शक्ति का ध्यान करना चाहिए, यह प्रतिपादित है।

—म० द० ५६६९

न्यासपद्धति

लि०—श्लोक स० ६०७, अपूर्ण। —म० वि० २४३४७

न्यासपूजापद्धति

लि०—श्लोक स० ५२६, अपूर्ण। —स० वि० २५४७६

न्याससंग्रह

लि०—श्लोक स० १३००, अपूर्ण। —अ० व० ६१०

न्यासादिविधि

लि०—श्लोक स० १६, अपूर्ण। —म० वि० २५५०९

पक्षिराजकवच

लि०— —कैट्. कैट् ३।६७

पक्षिराजविधान

लि०—आकाशभैरवान्तर्गत, श्लोक स० ४८०।

—अ० व० ९१३

पञ्चकल्पतरु

लि०—रामानन्द तर्कपञ्चानन-पुत्र श्रीराघवदेव विरचित। श्लोक स० ८८३२ तथा सन्तानक, कल्पवृक्ष, हरिचन्दन, पारिजात और मन्दारक नाम के पाँच कल्पो मे पूर्ण। इसमे प्रतिपादित मुख्य-मुख्य विषय हैं—विविध चक्रो, महाविद्याओ, सिद्धविद्याओ, विविध आसनो, न्यासो तथा १६ (षोडश), ३८ (अष्टात्रिशत्) और ६४ (चतु षष्टि) उपचारो का वर्णन, दीक्षा, मन्त्र, मन्त्रसस्कार, दीक्षापद्धति, अध्वा का शोधन, कलावती आदि दीक्षाओ का निरूपण, देय मन्त्र, अदेय मन्त्र, पिता आदि से मन्त्र-ग्रहण मे दोष, अङ्कुरार्पणविधि, अग्निसस्कार आदि का निर्देश, कृष्ण के मन्त्र, पूजा आदि का विधान, मृत्युञ्जय आदि विविध मन्त्रो का विधान, शिवप्रकरण, गणेशप्रकरण आदि।

—रा० ला० ३३११

पञ्चचक्रतदाचारविधिनिरूपण

लि०—भगपूजाविधि से सलग्न, पूर्ण। —स० वि० २६३५४

पञ्चचक्रपूजन

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत शिव-पार्वती सवादरूप इस ग्रन्थ मे राजचक्र, महाचक्र, देवचक्र, वीरचक्र और पशुचक्र इन पाँच चक्रो के पूजन की विधि प्रतिपादित है।

—क० का० ५२

(२) रुद्रयामल से गृहीत। —कैट् कैट् ३।६७

पञ्चचक्रपूजाक्रमलता

उ०—कालिकासपर्याविधि (काशीनाथ कृत) मे।

पञ्चतत्त्वलयप्रकार

लि०—'योगज्ञान' से सलग्न। —स० वि० २६२५३

पञ्चतत्त्वशोधन

लि०—'शाक्ताभिषेक' से सलग्न। —स० वि० २५७६४

पञ्चतत्त्वशोधनप्रमाण

लि०—श्लोक स० १७४, पूर्ण। —स० वि० २६४५२

पञ्चतत्त्वशोधनविधि

लि०—श्लोक स० ६१, अपूर्ण। —स० वि० २४७६२

पञ्चदश्यङ्कविधि

लि०—शिवताण्डवतन्त्रान्तर्गत। श्लोक स० ५६, अपूर्ण।

—स० वि० २४३६२

पञ्चपात्रशोधन

लि०—श्लोक स० १०४, अपूर्ण। इसमे कौलो के २२ पात्रो की विधि भी वर्णित है। इसका नाम कही पञ्चपात्र-शोधन लिखा है और कही पञ्चतत्त्व-शोधन।

—स० वि० २४२६७

पञ्चप्रकारार्चा

लि०—गौतमीतन्त्र के अन्तर्गत। श्लोक स० १५, पूर्ण।

—स० वि० २६४७४

पञ्चमकारनिरूपण

लि०—श्लोक स० ६०। —अ० व० १०६३४

पञ्चमकारविवरण

लि०—मधुसूदनानन्द सरस्वती विरचित, श्लोक स० ३००।

—अ० व० १०९४९

पञ्चमकारसाधन

लि०—समयाचारतन्त्र के अन्तर्गत, श्लोक सख्या ६०, अपूर्ण।

—स० वि० २४५३८

पञ्चमकारादिद्रव्यशोधन

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

पञ्चमकारस्तुति

लि०—श्लोक स० ८०। —अ० व० ६०१२

पञ्चसौक्रमकल्पलता

लि०—श्रीनिवास विरचित। —कैट् कैट् १।३१५

पञ्चमीवरिवस्यारहस्य

(३) न्द्रयामन्द से गृहीत। —कैट्. कैट् १।३१५

पञ्चमीसाधन

लि०—ब्रह्माण्डयामल के अन्तर्गत हर-गौरी सवादरूप इस तन्त्रग्रन्थ मे उन शुभ और नित्य तान्त्रिक विधियो का प्रतिपादन किया गया है जिनसे साधक को सुख और दु ख दोनो की निवृत्ति होकर मुक्ति प्राप्त होती है। पञ्चमी विद्या पञ्चकूटरूपा है। वे पञ्च है—मद्य, मास, मत्स्य, मुद्रा आदि। —वी० कै० १३०१

पञ्चमीसुधोदय

लि०—मथुरानाथ शुक्ल कृत। —कैट् कैट् १।३१५

पञ्चमीस्तवराज

लि०—(१) श्लोक स० १८०। —अ० व० ५१४३

(२) रुद्रयामल के अन्तर्गत, श्लोक स० लगभग २००, पूर्ण।

—र० म० ४४७८

(३) रुद्रयामल से गृहीत। —कैट् कैट् १।३१५

दे०, वालापञ्चमीस्तवराज। —कैट् कैट् ३।६७

पञ्चमुखीवीरहनूमत्कवच

लि०—श्लोक स० १००। —अ० व० ६८१० (क)

पञ्चमुखीहनूमत्कवच

लि०—(१) रुद्रयामल से गृहीत। श्लोक स० ६०। —अ० व० ९००१

(२) श्लोक स० ६७, पूर्ण। —र० म० ५०३५

(३) —कैट् कैट् २।६९, ३।६७

(४) श्लोक स० लगभग १२०, पूर्ण। इसमे हनूमन्मन्त्र भी समिलित है।

—स० वि० २५६९९

पञ्चमुद्राप्रकरण

लि०— —कैट् कैट् ३।६७

पञ्चमुद्राशोधनपद्धति

लि०—चैतन्यगिरि विरचित। श्लोक स० ५१०, पूर्ण। इसमे लिङ्गपुराणोक्त सरस्वतीस्तोत्र भी समिलित है। —स० वि० २५५५६

पञ्चयामल

उ०—कुलप्रदीप मे।

पञ्चरत्नमाला

लि०—रामहोशिङ्ग, (?) विरचित। श्लोक स० १८०००।

—अ० व० २२५६

पञ्चरात्र

दे०, कपिलपञ्चरात्र, नारदपञ्चरात्र, हयग्रीवपञ्चरात्र तथा पाञ्चरात्र।

उ०—चतुर्वर्गचिन्तामणि, स्पन्दप्रदीपिका, मन्त्रकौमुदी तथा मन्त्ररत्नावली मे। सर्वदर्शनसग्रह, दानमयूख, स्मृत्यर्थसग्रह आदि मे भी इसका उल्लेख है।

पञ्चरुद्रप्रकारकथन

लि०—नन्दिकेश्वर-शतानन्द सवादरूप। इसमे पञ्चरुद्र का निरूपण, प्रकार कथन, उसके अधिकारी, कलशरुद्र-प्रकरण, मण्डपनिर्माण, तोरण और द्वारो का निर्माण, जप-प्रकरण, वेदीनिर्माण, ध्वजारोपण, कुण्डनिर्माण, सर्वतोभद्र-निर्माण, न्यास आदि विपय वर्णित है।

पञ्चरात्रोपनिषद् या पञ्चरात्रश्रुति

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

पञ्चवक्त्रपूजा या पञ्चवक्त्रपूजन

लि०—(१) (क) श्लोक स० १२०। (ख) श्लोक स० ३०।

—अ० व० (क) ३४७०, (ख) २३८९

(२) नामान्तर—महारुद्रपूजा। —कैट् कैट् २।६९

पञ्चविंशतियन्त्र

लि०—पूर्ण। —स० वि० २४२६१

पञ्चसूत्रनिर्णय

लि०—गौतमीतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० १०, अपूर्ण।

—स० वि० २५१७२

पञ्चस्तवी

लि०—(१) पूर्ण। —डे० का० ४५७ (१८७५-७६ई)

(२) इसमे ५ अध्यायो मे दुर्गास्तुति की गयी है। ये अध्याय है—लघुस्तव, सरसास्तव, घटस्तव, अम्वास्तव तथा सकलजननीस्तव। —कैट् कैट् १।३१७

पञ्चाक्षरकल्प

लि०— —कैट् कैट् १।३१७

पञ्चाक्षरीमुक्तावली

लि०—(१) विद्याकर-शिष्य सिद्धेश्वर पण्डित विरचित। यह ग्रन्थ ५ श्रेणियो (अध्यायो) मे वर्णित है। नित्य जप, नैमित्तिक जप, नित्य होमविधि, नैमित्तिक होमविधि, लघुदीक्षाविधि, देश, काल, जपस्थान, जपनियम, पुरश्चरणनियम इत्यादि वहुत-से विषय इसमे वर्णित है। —ए० व० ६४६२

(२) सिद्धेश्वर कृत, श्लोक स० ७६५, पूर्ण।

—र० म० ४८६९

पञ्चाक्षरीयन्त्रोपदेश

लि०—रुद्रयामल से गृहीत। —कैट् कैट् १।३१७

पञ्चाक्षरीविधान

लि०— —कैट् कैट् १।३१७

पञ्चाक्षरीविधि या पद्धति

लि०—श्लोक स० २५०। —अ० व० २००९

पञ्चाक्षरीषट्प्रयोग

लि०—चिदम्वरकल्प से गृहीत। —कैट् कैट् १।३१७

पञ्चामृत

उ०—सौन्दर्यलहरी-टीका लक्ष्मीवरी तथा अहल्याकामधेनु मे।

पञ्चामृततन्त्र

उ०—तन्त्रालोक तथा सौन्दर्यलहरी-टीका लक्ष्मीधरी मे।

पञ्चामृतमन्त्रविधि

लि०—श्लोक स० ९१, पूर्ण। —स० वि० २६३५६

पञ्चामृतीकरण

लि०— —कैट् कैट् २।७०

पञ्चाम्नायमन्त्र

लि०—श्लोक स० ८०, अपूर्ण। —स० वि० २५४८८

पञ्चायतन

लि०—श्लोक स० ३६, अपूर्ण। —स० वि० २४३६३

पञ्चाशत्सहस्त्रीमहाकालसंहिता

लि०—(१) शिव-पार्वती सवादरूप। इसमे कामकला काली की पूजा प्रतिपादित है। —तँ० म० ६७१९

(२) दे०, महाकालसहिता। —कैट् कैट् १।३१७

पञ्चाशद्वर्णस्वरूप

लि०—श्लोक स० ६३, अपूर्ण। —स० वि० २४३०९

पञ्चाशन्नाथमण्डल

लि०—दीक्षाविधि के साथ सलग्न, समिलित श्लोक स० ३०, अपूर्ण। —स० वि० २४४६५

पतिवशीकरणविधि

लि०—श्लोक स० १६, पूर्ण। —स० वि० २६४५३

पदनिर्णय

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे।

पदार्थादर्श

लि०—(१) यह लक्ष्मणदेशिक विरचित शारदातिलक की श्रीराघवभट्ट कृत व्याख्या है। —रा० ला० १७३३

(२) शारदातिलक-टीका राघवभट्ट कृत। —कैट् कैट्. १।३२१

पद्धतिरत्नमाला

लि०—(१) जालन्धरस्थ राघवानन्द कृत, (क) श्लोक सं० ५२५६, पूर्ण। (ख) श्लोक म० १३६०, अपूर्ण। —र० म० (क) ५२९३, (ख) ४९४७

(२) राघवानन्द विरचित यह ग्रन्थ ५ रत्नो मे पूर्ण है। —कैट् कैट् २।७०

पद्धतिविवरण

लि०—मुरारि विरचित, (क) श्लोक स० ३२५०, इसमे १२ आह्निक है और विविध देवदेवियो की पूजा-विधि वर्णित है। (ख) श्लोक स० २५२०, पूजा के मन्त्रो के प्रतीको के साथ पूजाविधि वर्णित है। इसमे ११ आह्निक है।

—ट्रि० कै० (क) ९७८, (ख) ९७९

पद्मकल्प

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

पद्मपुष्पाञ्जलिस्तोत्र

लि०—श्लोक स० २००, श्रीशङ्कराचार्य विरचित। इसमे पद्मपुष्पाञ्जलि द्वारा भगवती की स्तुति प्रतिपादित है। —रा० ला० ३७३

पद्मिनीमन्त्रसिद्धि

लि०—श्लोक स० १८, अपूर्ण। —स० वि० २४३८२

पद्मवाहिनी

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका सौभाग्यवर्द्धिनी, ताराभक्तिसुधार्णव तथा पुरश्चर्यार्णव मे।

परतन्त्र

उ०—तन्त्रालोक मे।

परतन्त्रहंसोपनिषद्

लि०—दे०, परमहसोपनिषद्। —कैट् कैट् १।३२४

परदेवीसूक्त

लि०—उड्डामरतन्त्र के अन्तर्गत, श्लोक स० ६६, पूर्ण।

—र० म० ९७१

परमरहस्य

लि०—(१) श्लोक स० ५०, अपूर्ण। —अ० व० ९९८९

(२) —कैट् कैट्. २।७२

परमशिवगृहिणीपूजनादिमार्ग

लि०—श्लोक स० २०००। १६ विश्रामो मे।

परमशिवसहस्रनाम

लि०—उमायामल के अन्तर्गत हर-गौरी सवादरूप। यह भगवान् शिव के गुप्ततम पवित्र शुभ सहस्र नामो का संग्रह है —ए० ब० ६७४४

परमहंसपञ्चाङ्ग

लि०—(१) रुद्रयामल के अन्तर्गत। इसमे (१) परमहसपटल (चैतन्यानन्द विरचित), (२) परमहसपद्धति (रुद्रयामलान्तर्गत), (३) परमहससहस्रनाम (प्रजापति-भैरव सवादरूप), तथा (४) परमहसस्तोत्र वर्णित है।

—ए० ब० ६५१६

(२) इसमे परम हस-कवच (रुद्रयामलान्तर्गत हर-गौरी सवाद-रूप) शरीर के विभिन्न अङ्गो की रक्षा के लिए वर्णित है। —ए० ब० ६८०५

(३) शिव-पार्वती सवादरूप रुद्रयामलीय निम्नाङ्कित ५ विषय वर्णित है—(१) परमहसपटल (२) परमहसपद्धति, (३) परमहंससहस्रनाम, (४) परमहस-कवच तथा (५) परमहसस्तोत्र। —नो० सं० २।१२५

(४) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक स० ५७८ पूर्ण। —र० मं० ४८१५

(५) —कैट् कैट्. १।३२५

(६) परमहसकवच। यह परमहस के नामो का श्लोकात्मक सग्रह है जिससे शरीर के विभिन्न अवयवो की रक्षा तथा रोगनिवृत्ति की जाती है।

—बी० कै० १३०२

(७) परमहंस कवच, रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक स० ४८, पूर्ण।

—र० म० १०८१

(८) परमहंसपटल, रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० ६४, पूर्ण।

—स० वि० २३८८६

परमहंसपद्धति

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत शिव-पार्वती सवादरूप। इसमे परमहस (परब्रह्म परमात्मा) की पूजाप्रक्रिया वर्णित है। आरंभ मे उपासक के प्रातःकालीन कर्तव्यो का निर्देश किया गया है। —ए० ब० ६५१५

(२) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० १९२, पूर्ण। —र० मं० १०६५

परमहंसमन्त्रविधि

लि०—डामरखण्ड से गृहीत। —कैट् कैट् ३।७०

परमहंसविधि

लि०—इसमे गुरुस्तोत्र है। जो गुरुस्तोत्र गुरुपञ्चाङ्ग मे है उसमे और इसमे कोई भेद नही है। परमहसजनविधि तथा परमहससहस्रनामस्तोत्र, जो परमहसपञ्चाङ्ग मे है, इसमे कहे गये है। —ए० ब० ६५१७

परमागमचूडामणि

लि०—(१) नामान्तर—परमागमचूडामणिसहिता। यह नारदपञ्चरात्र के अन्तर्गत है। इसमे ९५ पटल है। प्रत्येक पटल का विवरण इ० आ० मे दिया गया है। नारद पञ्चरात्र मे निम्न लिखित ६ सहिताएँ है—(१) लक्ष्मीसहिता, ज्ञानामृतसारसहिता, (३) परमागमचूडामणि (सहिता), (४) पौष्करसहिता, (५) पाद्मसहिता तथा (६) वृहद्ब्रह्मसहिता इनके अतिरिक्त, (७) सात्वतसहिता तथा परमसहिता का भी उल्लेख मिला है। —इ० आ० २५३०

(२) नारदपञ्चरात्र का एक भाग। —कैट् कैट् १।३२५, २।७२

(३) —म० रि० २५२

परमानन्दतन्त्र

लि०—(१) देवी-भैरव सवादरूप। इसमे २५ उल्लासो द्वारा तन्त्रो का अवतरण, तन्त्रभेदो का निर्णय, श्रीविद्या का स्वरूप निर्देश, बाला का मन्त्रोद्धार कथन, बाला-सन्ध्यान्त विधि-कथन, द्वार पूजासे लेकर न्यास पर्यन्त विधि वर्णन आदि विविध विषय प्रतिपादित है। —ए० बं० ५९९८

(२) यह भी उपर्युक्त पुस्तक से प्राय मिलता है। —ए० ब० ६८१६

(३) (क) श्लोक स० १०००, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ३०००, पूर्ण।
—अ० व० (क) १०७७६, (ख) ११७४५

(४) उमा-महेश्वर सवादरूप यह सब आगमो मे श्रेष्ठ तथा सवा लाख श्लोकात्मक है। इसका मन्त्रखण्ड १८ उद्रेको मे पूर्ण है। इसमे विविध प्रकार की दीक्षाएँ, पूर्ण-अभिषेक आदि विधियाँ प्रतिपादित है। —म० द० ५६७०–७३

(५) (क) श्लोक स० ११६४८, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ५२०, अपूर्ण। (ग) सर्वतन्त्रसारान्तर्गत। श्लोक स० ३७६३, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४०३५, (ख) २५१०२, (ग) २६३१८

(६) इस पर शिवजी की व्याख्या है।

—कैट् कैट् १।३२५, ३।७०

उ०—सौभाग्यभास्कर मे।

परमानन्दतन्त्रटीका

लि०—(१) टीका का नाम सौभाग्यानन्दसन्दोह, टीकाकार महेश्वरानन्दनाथ, श्लोक सं० १२०००। —अ० व० १०६५१

(२) श्लोक सं० १८२१६, पूर्ण। —स० वि० २३९२०

(३) शिवजी कृत टीका। —कैट् कैट् १।३२५

परमार्थसंग्रह

लि०—अभिनव गुप्त विरचित। दे०, परमार्थसार।

—कैट् कैट् १।३२६

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

परमार्थसार

लि०—(१) अभिनव गुप्त विचिपत। —इ० आ० २२३५

(२) इसका आधारकारिका नाम भी है। यह अभिनव गुप्त विरचित शैवतन्त्र है। इस पर अभिनव गुप्त तथा वितस्तापुरी निर्मित दो टीकाएँ है। वितस्तापुरी निर्मित टीका का नाम 'पूर्णाद्वयमयी' है। टीकाकार का असली नाम योग या योगराज है। ये वितस्तापुरी के निवासी थे, अत विस्तापुरी कहे गये। —कैट् कैट् १।३२६ तथा २।७५

उ०—मञ्जूषा तथा महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

परमार्थसारसंग्रह

लि०—(१) अभिनव गुप्त विरचित, श्लोक सख्या १०४।

—अ० व० १८२४ (ग)

(२) इस पर योगराज की पूर्णाद्वयमयी व्याख्या है। —कैट् कैट् ३।७०

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

परमार्थसारसंग्रहविवृति

लि०—मूलकार—अभिनव गुप्त तथा विवृत्तिकार क्षेमराज। पूर्ण।

—डे० का० ४५९ (१८७५।७६ ई०)

परमेशतन्त्र

उ०—शक्तिरत्नाकर मे।

परमेशस्तोत्रावली

लि०—यह उत्पलदेव विरचित शैवतन्त्र है। इस पर क्षेमराज कृत व्याख्या है—अद्वयस्तुतिसूक्ति नाम की। —कैट् कैट् १।३२६

उ०—रत्नकण्ठ द्वारा स्तुतिकुसुमाञ्जलि मे।

परमेशस्तोत्रावलि वृत्ति

लि०—मूलकार उत्पलदेव तथा वृत्तिकार क्षेमराज। पूर्ण

—डे० का० ४५८ (१८७५।७६ ई०)

परमेश्वरसंहिता

लि०— —कैट् कैट् १।३२६

परमेश्वरीमततन्त्र

लि०— —ने० द० १।१६४७ (घ)

परशुरामकल्पसूत्र

लि०—(१) (क) श्लोक स० ६००। (ख) श्लोक स० ६००। (ग) श्लोक स० २५० (११ वे से १८ वे खण्ड तक)। (घ) श्लोक स० ६००। (ङ) श्लोक स० १५० अपूर्ण। (च) श्लोक स० २५० (खण्ड ११ से १८ तक)। (छ) श्लोक स० ४००, अपूर्ण। (ज) श्लोक स० ६००। (झ) श्लोक म० ६००।

—अ० ब० (क) १३१००५, (ख) ९१६१, (ग) ९७०१, (घ) ४६३७, (ङ) ६१८८, (च) ६८३६, (छ) ७६२४, (ज) १०६८५, (झ) १०६९०

(२) पत्रे ४८। —रा० पु० २। ७७०८

(३) शाक्त तन्त्रों के कतिपय मूल सिद्धान्त इसमे वर्णित हैं।

—म० द० ५६७४, ७५

(४) परशुरामसूत्र भी इसका नामान्तर है। —कैट् कैट् १।३२७, २।७२

परशुरामकल्पसूत्रवृत्ति

लि०—(१) वृत्ति का नाम सौभाग्योदय और वृत्तिकार का नाम रामेश्वर है। श्लोक सं० ५०००। —अ० व० १३१०७

(२) (क) रामेश्वर कवि विरचित, श्लोक स० ५९६५, पूर्ण। (ख) श्लोक स० १३१२, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० ३४८२, अपूर्ण। (घ) श्लोक स० २७६८, अपूर्ण। —स० वि० (क) २३९२७, (ख) २४९५७, (ग) २४९५८, (घ) २६१८६

पराक्रम

उ०—प्राणतोपिणी मे।

पराख्यतन्त्र

इसकी श्लोक सं० २००० है।

उ०—शतरत्नसमुच्चय मे।

परातन्त्र

लि०—(१) नामान्तर-करवीरयाग। यह ईश्वर-देवी सवादरूप है। —इ० आ० २५९०

(२) यह पार्वती-ईश्वर सवादरूप है। इसमे ४ पटल है। पूर्वाम्नाय, दक्षिणाम्नाय, उत्तराम्नाय, ऊर्ध्वाम्नाय आदि छह आम्नाय वर्णित है। —ए० व० ५९५३

(३) —कैट् कैट् २।७२

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा शतरत्नसमुच्चय मे।

परात्रिंशिका

लि०—(१) अभिनव गुप्त विरचित, पूर्ण। —डे० का० ४६० (१८७५।७६ ई०)

(२) शैव ग्रन्थ, सोमेश्वर विरचित अभिनव गुप्त कृत व्याख्यासहित। —इ० आ० १४१२

(३) शैवतन्त्र, सोमेश्वर विरचित अभिनव कृत व्याख्या सहित। —कैट् कैट् १।३२७

परादेवीरहस्य (तन्त्र)

लि०—(१) रुद्रयामल के अन्तर्गत, श्लोक स० २५५, पूर्ण। —स० वि० २५४३३
(२) —कैट् कैट् १।३२७

परानन्दतन्त्र

लि०—(१) इस तन्त्र का परिमाण, पुष्पिका के अनुसार, सवालाख है। परन्तु यह ग्रन्थ सुलभ नही है। प्रस्तुत प्रति उसके २य पाद का एक अशमात्र है। इसमे ३२ दीक्षाएँ वर्णित हैं। —क० का० ८८

(२) द्वितीय पाद मे द्वात्रिंशत् (३२) दीक्षाम्नाय-क्रम। —कैट् कैट् ३।७०

परानन्दमत

लि०—इस ग्रन्थ मे तन्त्र के परानन्द-सम्प्रदाय के दृष्टिकोण का प्रदर्शन किया गया है। —ए० व० ५९८२

परानिष्कला

लि०— —कैट् कैट् ३।७०

परापञ्चाशिका

उ०—योगिनीहृदयदीपिका मे।

परापद्धति

लि०—नामान्तर–परापूजापद्धति। श्लोक स० २३५, अपूर्ण। —स० वि० २५२५२

परापूजाप्रयोग

लि०—इस ग्रन्थ मे सकल्प,न्यास और जप के अनन्तर परापूजा कर मासयुक्त शक्ति-पात्री का अर्पण इत्यादि सविधि वर्णित है। —म० द० ५६७६

पराप्रवेशिका

लि०—(१) (क) पत्रे ४, पूर्ण। (ख) पत्रे २।
—डे० का० (१) ४६१, (२) ४६२, (१८७५।७६ ई०)

(२) (क) श्लोक स० २२३। भुवनमालिनीतन्त्र के अन्तर्गत, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ४८, अपूर्ण। —स० वि० (क) २५२००, (ख) २५२०२

उ०—रत्नकण्ठ द्वारा स्तुतिमुमाञ्जलि मे।

पराप्रसादपद्धति

लि०—नामान्तर–क्रमोत्तम। निजात्मप्रकाशानन्द कृत, श्लोक सं० ५००।

—अ० व० १०६६७

पराप्रसादमन्त्रजपविधि

लि०—श्लोक स० २५॥, पूर्ण। —स० वि० २६६१३

पराप्रसादमहामन्त्र

लि०— कैट् कैट् ३।७०

परामत

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

परासूक्त

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

परास्तोत्र

गोरक्ष अथवा महेश्वरानन्द कृत।

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

परिभाषामण्डल

लि०—नामान्तर—ललितासहस्रनाम। रचयिता नृसिंहयज्वा। श्लोक स० ३००।

—अ० व० १०३४५

परोक्षदीक्षाप्रकाशन

लि०—श्लोक स० १९०, पूर्ण। —स० वि० २४९४५

पर्यन्तपञ्चाशिका

लि०—अभिनवगुप्ताचार्य कृत। इसमे मन्त्र और मुद्राओ का रहस्य प्रतिपादित है।

—ट्रि० कै० १२२७ (ख)

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

पवनविजय या स्वरोदय

लि०—(१) इसमे नाडी और तत्त्वो का विवरण है।

—ए० व० ६१०४, ६१०५

(२) नामान्तर—स्वरोदय। (क) श्लोक स० ४१०, पूर्ण। इसमे ९ प्रकरण है। (ख) श्लोक स० ५२५, पूर्ण। —र० म० (क) १०८९, (ख) ४८८९

(३) ईश्वर-पार्वती सवादरूप। श्लोक स० ४९४। पार्वतीजी ने शिवजी से सर्वसिद्धिकर ज्ञान कहने की कृपा कीजिये यो प्रार्थना की। इस पर शिवजी ने स्वरोदय शास्त्र का आदेश दिया। इसमे दाहिनी और बायी नासिका के छिद्र से निकली श्वास वायु से युद्ध, वशीकरण, रोग आदि कतिपय कार्यो मे शुभाशुभ फल का ज्ञान होता है, यह प्रतिपादित है। —रा० ला० ४८४, ४८५

पल्लवदीपिका

लि०—(१) श्रीकृष्ण विद्यावागीश भट्टाचार्य विरचित। श्लोक स० १९६। इसमे मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, स्तभन आदि की विधि वर्णित है। —रा० ला० ६९२

(२) श्लोक स० १५५, अपूर्ण। —स० वि० २४६१०

पशुसंकुल

उ०—प्राणतोषिणी मे।

पश्चिम (तन्त्र)

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

पात्रग्रहणमन्त्र

लि०—श्लोक स० ३२, पूर्ण। —स० वि० २६६२६

पात्रपूजा

लि०—देवी शक्ति की पूजा मे उपयुक्त होनेवाले पात्र विशेष की पूजाविधि इसमे वर्णित है। —म० द० ५६७७

पात्रवन्दन

लि०—(१) पन्ने २, पूर्ण। —डे० का० (१८७५।७६ ई०)

(२) देवीरहस्यान्तर्गत, (क) श्लोक स० ४२, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ४०, पूर्ण। —स० वि० (क) २४४७२, (ख) २६१८९

पात्रवन्दननवस्तोत्र

लि०—रुद्रयामल के अन्तर्गत। —ने० द० २।पे० २०७

पात्रवन्दना

लि०—शाक्ताभिषेकविधि के अन्तर्गत पञ्चतत्त्वशोधन, पूर्णाभिषेक, संस्कार तथा शान्तिस्तोत्र के साथ। —स० वि० २५७६४

पात्रवन्दनादि

लि०—पूजापद्धति के अन्तर्गत। —स० वि० २६४९८

पात्रवन्दनाविधि

लि०—श्लोक स० ६२, पूर्ण। —स० वि० २५३६०

पात्रशुद्धि

लि०—हरिहर विरचित। —कैट् कैट् १।३३३

पात्रस्तवविधि

लि०—रुद्रयामल के अन्तर्गत, श्लोक स० २२०, पूर्ण।

—स० वि० २४०३३

पात्रविवरण

लि०—इसमे शक्ति की पूजा मे उपयुक्त श्रीपात्र, शक्तिपात्र, भोगपात्र आदि पात्रो का विवरण दिया गया है। —म० द० ५६७८

पात्रस्थापनविधि

लि०—पन्ने ६। —रा० पु० २१५७५७

पात्रासादनविधि

लि०—श्लोक स० ४१, पूर्ण। —सं० वि० २५७१६

पादसूत्र

लि०—रहस्याम्नाय के अन्तर्गत। श्लोक स० ५९, पूर्ण।

—स० वि० २५५४४

पादुकापञ्चकटीका

कालीचरणविरचित।

पादुकोदय

गोरक्ष या महेश्वरानन्दकृत।

उ०—महार्थमञ्जरीपरिमल में।

पाद्मतन्त्र या पाद्मसंहिता

लि०—(१) नारदपञ्चरात्रान्तर्गत। इसमे चार पाद है—(१) ज्ञानपाद, (२) योगपाद, (३) क्रियापाद और (४) चर्यापाद। प्रत्येक पाद के अध्याय और विषयो का विवरण (इ० आ० मे) दिया है। यह नारदपञ्चरात्रान्तर्गत सहिताओ मे ५ वी सहिता है।

—इ० आ० २५३२

(२) नामान्तर-पञ्चरात्रोपनिषद् भी है। श्लोक स० ९०००। यह कण्व तथा कण्वाश्रमवासी ऋषियो का सवाद रूप है। यह कण्व को सवर्त से प्राप्त हुआ था। इसके ज्ञान, योग, क्रिया और चर्या ये चार पाद है। ज्ञानपाद १२ अध्यायो मे, योगपाद ५ अध्यायो मे क्रियापाद ३२ अध्यायो मे एव चर्यापाद ३३ अध्यायो मे पूर्ण है।

—तै० म० २९६

(३) नारदपञ्चरात्रान्तर्गत। —कैट् कैट् ३।७१

पारमेश्वरतन्त्र

श्रीकण्ठी के अनुसार यह अष्टादश (१८) रुद्रागमो मे अन्यतम है।

लि०—(१) यह शिवाद्वैतसिद्धान्त वीरशैवसम्प्रदाय का ग्रन्थ है। इसमे २३ पटल है। यह पार्वती-परमेश्वर सवादरूप है। लिङ्गधारण, शिवाग्निजनन, दीक्षाविधान, पञ्चाक्षरविधान, लिङ्ग-लक्षण, वीरशैव का वैशिष्ट्य आदि विषय इसमे वर्णित है।

—ए० व० ५८०८

(२) उमा-महेश्वर सवादरूप। पार्वतीजी ने पूछा—भगवन्, मेरु कैसे उत्पन्न हुआ ? उसका उद्धार कैसे हुआ ? उसका कितना बडा विस्तार है जिसमे चराचर जगत् उत्पन्न हुआ ? छह प्रकार के कुलाम्नाय, सोलह न्यासो से युक्त महामुद्रा विद्या तथा अनेक प्रकार के विस्मयो से युक्त जगत् मेरु के मध्य मे कैसे व्यवस्थित है ? वागीश्वरी, महामाया, चामुण्डा, कुलनायिका, मृत्युञ्जया महाकाली, त्रोतुला, त्रिपुरभैरवी आदि देवियाँ मेरु से कैसे उत्पन्न हुई ? इत्यादि प्रश्नो का इसमे उत्तर दिया गया है। ऊपर वर्णित ए० व० ५८०८ मे २३ पटल तक का भाग है, इसमे २४ से लेकर ३९ पटल तक का अश है। प्रो० बेडल (पे ३७) मे इसके ४१ वे और ४२ पटल का पता चलता है। इस प्रकार यह ४२ पटल या उससे अधिक पटलो मे पूर्ण है। —न० द० २। पे ४६-४८, ३।३६४ (छ)

उ०—प्राणतोषिणी तथा वीरशैवानन्दचन्द्रिका मे।

पारमेश्वर संहिता

लि०—(१) श्लोक स० लगभग ८०००। इसमे ज्ञानकाण्ड और क्रियाकाण्ड—दो काण्ड है। १ म ज्ञानकाण्ड १ अध्याय मे पूर्ण है और २ रा क्रियाकाण्ड २५ अध्यायो मे पूर्ण है। इसका रचनाकाल लगभग १८१० कहा गया है।

—तै० म० २५७

(२) —कैट् कैट् १।३३४ २।७४

उ०—प्राणतोपिणी तथा वीरशैवानन्दचन्द्रिका मे।

पारमेश्वरीय

लि०— —कैट् कैट् १।३३४

पारमेश्वरीमततन्त्र

लि०—(१) —ने० द० (पे ८५) १।१६४७ (घ)

(२) यह ९ करोड श्लोकात्मक तन्त्र कई पटलो मे पूर्ण है। इसका १७ वाँ पटल अघोरा-निर्णयपरक है। —ने० द० २ पे० ११५

पारानन्दसूत्र

लि०—(क) श्लोक स० २०००। (ख) श्लोक स० २०००।

—अ० व० (क) १००९३, (ख) ११७९६

पारायणक्रम

लि०— —कैट् कैट् १।३३५

पारायणविधि

लि०—(१) (क) श्लोक स० ३००। (ख) श्लोक स० ३००। (ग) सौभाग्य-तन्त्र से गृहीत। श्लोक स० ४५०, पटल ३ से १२ तक।

—अ० व० (क) ५६७२, (ख) ११०२५, (ग) १३४५४

(२) सौभाग्यतन्त्र के अन्तर्गत, श्लोक स० ३१५ पूर्ण (?)

—म० वि० २४९१५

(३) सौभाग्यतन्त्र से गृहीत। —कैट् कैट् १।३३५

पार्थिवचिन्तामणि

लि०—श्लोक स० २८४, अपूर्ण। —स० वि० २४६१३

पार्थिवपूजनविधि

लि०— —कैट् कैट् १।३३५, २।७४

पार्थिवपूजा

लि०—रुद्रयामल के अन्तर्गत। श्लोक स० ९३, पूर्ण। लिपिकाल स० १८१२।
—स० वि० २४३३३

पार्थिवपूजाविधि

लि०—(१) सौभाग्यतन्त्र के अन्तर्गत, श्लोक स० २८०, पूर्ण।
—र० म० १०२९

(२) सौभाग्यतन्त्र से गृहीत। —कैट् कैट् २।७४

पार्थिवलिङ्गपूजनविधि

लि०—(१) शिव-पार्वती सवादरूप। इसमे पार्थिव (मृण्मय) शिवलिङ्गपूजनविधि प्रतिपादित है। यह ग्रन्थ किसी अज्ञात तन्त्र से सगृहीत है। इसकी श्लोक स० ३४० है।
—रा० ला० ९१६

(२) —कट, कैट् १।३३५

पार्थिवलिङ्गपूजाराधन

लि०— —कैट् कैट् १।३३५

पार्थिवलिङ्गपूजाविधि

लि०—इसमे पार्थिवशिवलिङ्गपूजाविधि वर्णित है। यह ग्रन्थ रुद्रयामल तथा अन्यान्य तन्त्रग्रन्थो से सगृहीत है। पूर्वोक्त पार्थिवलिङ्गपूजनविधि से यह भिन्न प्रतीत होता है। —क० का० ४७

पार्थिवशिवकवच

लि०—(१) पन्ने २, पूर्ण। —व० प० १२५५

(२) महादेव-पार्वती सवाद-रूप, उन्मत्तभैरवीतन्त्रोक्त। इसमे सर्वकामार्थसिद्धिप्रद पार्थिवशिवकवच के माहात्म्य आदि का वर्णन किया गया है।

पार्थिवशिवपूजाविधि

लि०—पूर्ण। —व० प० ४५९

पार्थिवार्चनचूड़ामणि

लि०—भूपालेन्द्र नवमीसिंह विरचित। ग्रन्थकार ने गुरुओ का मत जानकर वैदिक, तान्त्रिक, कौलिक तथा वामक शिवपूजाविधि के विवेचनार्थ इस ग्रन्थ का निर्माण किया। सन् १७१५ मे इस ग्रन्थ की रचना हुई। —ने० द० २।३१९ (च)

पार्थिवेश्वरचिन्तामणि

लि०— —कैट् कैट् १।३३६

पार्थिवेश्वरपूजनविधि

लि०— —कैट् कैट् १।३३६

पार्थिवेश्वरपूजाविधि

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक स० ७२, अपूर्ण।

—स० वि० २४७७३

(२) रुद्रयामल से गृहीत, नामान्तर—पार्थिवलिङ्गपूजाविधि।

—कैट् कैट् २।७५

पार्वतीहरसंवाद

उ०—आगमकल्पलता मे।

पाशुपततन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० १०००। —अ० व० ६७७५

(२) नन्दिकेश्वर प्रोक्त, नन्दिकेश्वर-दधीचि सवादरूप, श्लोक स० १७००। इसमे शिव, स्कन्द, देवी और अन्यान्य देवताओ की पृथक्-पृथक् पटलो द्वारा पूजाविधि प्रतिपादित है। —ट्रि० कै० ९८३

पिङ्गलतन्त्र

श्रीकण्ठी के मतानुसार चतुःषष्टि (६४) तन्त्रो मे अन्यतम।

पिङ्गलातन्त्र

उ०—तन्त्रसार मे।

पिङ्गलामत

लि०—पिङ्गला-भैरव सवाद रूप यह ब्रह्मयामल का एक अश है। इसमे आगम,शास्त्र, ज्ञान और तन्त्र का लक्षण प्रतिपादित है। यह ग्रन्थ पश्चिमाम्नाय से सम्बद्ध है। इसमे आठ प्रकरण हैं—१ प्रश्नप्रकरण, २ सामान्यलिङ्गप्रकरण, ३ साधनलिङ्गाधार-प्रकरण, ४ प्रतिमाधिकारप्रकरण, ५ पीठाधिकारप्रकरण, ६ वाराधिकारप्रकरण, वास्त्वधिकारप्रकरण आदि। —ने० द० २।३७६ (ख)

उ०—आगमतत्त्वविलास, आगमकल्पलता, हेमाद्रि, प्राणतोषिणी, ताराभक्ति-सुधार्णव, पुरश्चर्यार्णव तथा सौभाग्यभास्कर मे। रघुनन्दन तथा विट्ठल दीक्षित ने भी इसका उल्लेख किया है।

पिङ्गलामृत

उ०—तन्त्रसार मे।

पिचुभैरवीतन्त्र

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रो मे अन्यतम है।

—(तन्त्रालोकटीका)

पिच्छिलातन्त्र

लि०—(१) यह पूर्व और उत्तर—दो खण्डो मे विभक्त है। उनमे क्रमश २१ और २४ पटल पाये जाते हैं। इस तन्त्र मे मुख्यतया कालीपूजाविधि वर्णित है। साथ ही साथ आनुषङ्गिक रूप से यन्त्र, मन्त्र आदि का भी प्रतिपादन किया गया है।

—ए० व० ५९९१

(२) श्लोक स० १८६ (?), पटल १४। उनके प्रतिपाद्य विषय गुरुभक्ति का निरूपण, काली-माहात्म्य कथन, दुर्गा के मन्त्र की महिमा, कृष्णमन्त्र आदि की विधि, वन्ध्यात्व निवर्तक यन्त्र आदि का निरूपण, वशीकरण, उच्चाटन आदि की विधियाँ, चोर को पकडने की विधि, विष दूर करने की विधि, दिव्य, वीर और पशुभाव का निरूपण, अभीष्ट सिद्धि के लिए काली-मन्त्रजप की विधि, नित्य पूजाविधि, दुर्गामन्त्रनिरूपण आदि। —रा० ला० २१८८

(३) (क) श्लोक स० २०, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० २१२, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४३८६, (ख) २६०२८

उ०—सर्वोल्लास, प्राणतोषिणी, तन्त्रसार तथा आगमतत्त्वविलास मे।

पीठनिरूपण

लि०—शिव-पार्वती सवाद रूप। 'सती' नाम से प्रसिद्ध भगवती द्वारा दक्षयज्ञ मे अपना शरीर त्याग करने पर भगवान् महादेवजी ने उस देह के टुकडे-टुकडे कर उन्हे विभिन्न प्रदेशो मे फेक दिया। वे ही प्रदेश पीठ नाम से विख्यात है। उन्ही का विवरण इस पुस्तक मे किया गया है। कहाँ-कहाँ कौन पीठ किस नाम से प्रख्यात है इसका निरूपण इसमे है।

—रा० ला० ९९९

पीठचिन्तामणि

लि०—रामकृष्ण विरचित। —कैट् कैट् १।३३८

पीठनिर्णय या महापीठनिरूपण

लि०—(१) तन्त्रचूडामणि से गृहीत। —ए० व० ६१८१

(२) पार्वती-शिव सवादरूप, तन्त्रचूडामणि के अन्तर्गत। ५१ विद्याओ की उत्पत्ति इसमे वर्णित है। सती के शरीर के अवयव गिरने से उत्पन्न हुए पीठ-स्थानो मे स्थित शक्ति, भैरव आदि का प्रतिपादन है। इसकी श्लोक स० ८० है। भगवान् शिवजी के प्रश्न पर सर्वज्ञानमयी माता पार्वतीजी ने यह उनके प्रति कहा। —रा० ला० ४४६

(३) पन्ने ४, पूर्ण। —व० प० ४०२

(४) तन्त्रचूडामणि के अन्तर्गत श्लोक स० ७०, पूर्ण।

—स० वि० २५०२०

पीठपूजाविधि

लि०—दक्ष-यज्ञ मे सतीजी के देहत्याग के बाद जहाँ-जहाँ उनके शरीर के अवयव गिरे उन पीठो पर होनेवाली तान्त्रिक क्रियाएँ इसमे वर्णित हैं।

—ने० द० १।४९१

पीठमाला

लि०—श्लोक स० ४५, अपूर्ण। —स० वि० २६४६८

पीठशक्तिनिर्णय

लि०— —कैट् कैट् १।३३८

पीठाधिदेवता-नाम

लि०—श्लोक स० ६४, पूर्ण। —स० वि० २४०१३

पीताम्बरापद्धति

लि०—(१) इसमे पीताम्बरा देवी के मन्त्र, जप, ध्यान, पूजा, मुद्रा, होम आदि का प्रतिपादन है। —बी० कै० १३०३

(२) श्लोक स० १५५, अपूर्ण। —स० वि० २३८८७

पीताम्बरापूजापद्धति

लि०—(१) श्लोक स० ११९६, पूर्ण। —स० वि० २५२७९

(२) —कैट् कैट् २।७५

पीतासपर्याविधि

लि०—इसमे वगलामुखी की पूजा विस्तार से प्रतिपादित है।

—ए० व० ६३९६

पीयूषरत्नमहोदधि

लि०—अकुलेन्द्रनाथ विरचित। —ए० व० ६६१९

पुत्रेष्टिप्रयोग

लि०—नीलतन्त्र से गृहीत, श्लोक स० २७, पूर्ण। —स० वि० २५२४६

पुरश्चरण

लि०—(१) (क) गोपीनाथ पाठक विरचित श्लोक स० ४००।

(ख) श्लोक स० ८०। —अ० व० (क) १२५, (ख) ५०८०

(२) गोपीनाथ पाठक विरचित, श्लोक स० ३९६, पूर्ण।

—स० वि० २५७०३

पुरश्चरणकारिका

लि०—श्लोक स० ६०, पूर्ण। —स० वि० २६१७५

पुरश्चरणकौमुदी

लि०—(१) माधवाचार्य-पुत्र मुकुन्द पण्डित विरचित, श्लोक स० १३०५, अपूर्ण।

—र० म० ४८७८

(२) विद्यानन्दनाथ विरचित, श्लोक स० ५३७, पूर्ण।

—स० वि० २५२८४

(३) मुकुन्द विरचित। —कैट् कैट् १।३३८, २।७५

पुरश्चरणकौस्तुभ

लि०—अहोवल विरचित। इसमे पापनिवृत्ति करने वाले व्रतादि का प्रतिपादन तथा उनकी विधियो का वर्णन है। —त्री० कै० १३०७

पुरश्चरणचन्द्रिका

लि०—(१) विबुधेन्द्राश्रम-शिष्य देवेन्द्राश्रम विरचित (क) श्लोक स० १२००, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० १३००। (ग) श्लोक स० १३००।

—अ० व० (क) ५८५६, (ख) ९६४०, (ग) १०६८८

(२) देवेन्द्राश्रम कृत। —रा० पु० ५६६१

(३) मान्त्रिकचक्रवर्त्ती देवेन्द्राश्रम कृत, श्लोक स० १४६६। विषय—भक्ति निरूपण, गुरुभक्ति-प्रशसा, कौलिकाचारनिरूपण, आसन, माला, मुद्रा तथा कौलारोपादि-विधि, गुरुवन्दन आदि, भूतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, प्राणायाम, पीठन्यास आदि की विधि, अन्तर्याग, आत्मपूजन, शखस्थापन, वाह्यपूजन आदि की विधियाँ। मन्त्रार्थसिद्धि के उपाय, कुण्ड तथा होम की विधि आदि। —रा० ला० २३९९

(४) परमहस परिव्राजकाचार्य विबुधेन्द्राश्रम-शिष्य देवेन्द्राश्रमकृत।

—ने० द० १।१३६१

(५) इसमे पुरश्चरण तथा उससे सम्बद्ध विषय वर्णित हैं।

—ने० द० २।३१९ (ई०)

(६) यह कौल ग्रन्थ है। इसमे कुण्डमण्डप रचना, पूजा, जप, होम, तर्पण, अभि-षेक, ब्राह्मणभोजन आदि की विधि वर्णित है। —ए० बं० ६५३१

(७) पुरश्चरण के स्वरूप आदि का निरूपण, पुरश्चरणविधि, नैमित्तिक पुरश्चरण-निरूपण, ग्रहण के अवसर के पुरश्चरण आदि का निरूपण, मन्त्र-प्रबोधज्ञान आदि का कथन इत्यादि विषय इसमे वर्णित हैं। —नो० स० ३।१२६

(८) (क) देवेन्द्राश्रम कृत, श्लोक स० ८२५, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ८९५, होम, तर्पण, अभिषेक, ब्राह्मण-भोजनविधि पर्यन्त पूर्ण। (ग) श्लोक स० ९३१ देवेन्द्राश्रम कृत, पूर्ण। (घ) गोपीनाथ पाठक कृत, श्लोक स० ३५०, पूर्ण।

—स० वि० (क) २३९०६, (ख) २४१४३, (ग) २६२८०, (घ) २६३६२

(९) (१) देवेन्द्राश्रम कृत

(२) माधव पाठक कृत (?)

(९) विबुधेन्द्राश्रम (शिष्य ?) —कैट् कैट् १।३४०

(१०) देवेन्द्राश्रम विरचित। —कैट् कैट् ३।७२

उ०—प्राणतोषिणी, ताराभक्तिसुधार्णव, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, आगमकल्पलता तथा तन्त्रसार मे। रघुनन्दन ने भी आह्निकतत्त्व मे इसका उल्लेख किया है।

पुरश्चरणदीपिका

लि०—(१) चन्द्रशेखर विरचित। —ए० व० ६५३२

(२) चन्द्रशेखर विरचित। ५ प्रकाशो मे पूर्ण एव शकाव्द १५१२ मे रचित (वर्षे द्वादशसयुक्ते पञ्चदशशते गते)। सब तन्त्रो के मत जान कर तथा सद्‌गुरुओ की शुभ समति लेकर यह सब मन्त्रो की पुरश्चरणदीपिका रची गयी। यह कलिकाल का अज्ञान-तिमिर हरने वाली है। —नो० स० २।१२७

(३)–(क) चन्द्रशेखर विरचित।

(ख) काशीनाथ विरचित।

(ग) रामचन्द्र विरचित। —कैट् कैट् १।३४०

पुरश्चरणपद्धति

लि०—(१) श्लोक स० १००, (खण्डित)। —अ० व० १२८६८

(२) श्लोक स० २६०, अपूर्ण। —स० वि० २६५३५

(३) —कैट् कैट् १।३४०

पुरश्चरणपद्धतिमाला

उ०—पद्मनाभ ने इसका उल्लेख किया है। —कैट् कैट् १।३४०

पुरश्चरणप्रपञ्च

लि०—(१) सहजानन्दनाथ विरचित, श्लोक स० २५०।

—अ० व० ११०३९

(२) सहजानन्द कृत, श्लोक स० ४००, पूर्ण। —स० वि० २६२०७

(३) सहजानन्दनाथ कृत। —कैट् कैट् १।३४०

पुरश्चरणप्रयोग

लि०—(१) श्रीनिवास विरचित, श्लोक स० ३००।

—अ० व० ११४०३

(२) (क) श्लोक स० ८६, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ६४। (ग) श्लोक स० ५४, अपूर्ण। —स० वि० (क) २४७१०, (ख) २६४६९, (ग) २६६५२

(३) —कैट् कैट् ३।७२

पुरश्चरणप्रयोगादर्श

लि०—सर्वानन्दिक साधु साग्निक ज्ञानानन्द भट्टाचार्यात्मज वासुदेव सार्वभौम विरचित। अपूर्ण।

—व० प० १३०९

पुरश्चरणबोधिनी

लि०—इसमे विविध पुरश्चरणो का विस्तार से वर्णन किया गया है। इस ग्रन्थ के रचयिता टैगोर परिवार के थे, जो महाराज सर यतीन्द्रमोहन टैगोर के पिता सर महाराज प्रद्योत कुमार टैगोर के पितामह थे। यह शकाब्द १७३५ मे रची गयी। बगला लिपि मे मे यह मुद्रित भी हो चुकी है। —ए० व० ६५३४

पुरश्चरणरसोल्लास

लि०—(१) पार्वती-महादेव सवादरूप यह पुरश्चरण विषयक ग्रन्थ १० पटलो मे है।

—क० का० ४९

(२) (क) ९ पटल पूर्ण। १० म पटल का कुछ भाग अपूर्ण।

(ख) ९ पटल पूर्ण १०म पटल का कुछ भाग, अपूर्ण।

—ब० प० (क) १३१४, (ख) १३३०

(३) श्लोक स० ५२५, १म से ९ म तक ९ पटल पूर्ण। —स० वि० २६४७६

(४) पार्वती-महेश्वर सवादरूप, इसमे १० पटल है तथा दीक्षा, दश महाविद्याओ की उपासना आदि का प्रतिपादन है। —ए० व० ५९७८

(५) देव-देवी सवाद रूप, श्लोक ४८८ और पटल १०। भगवन्, पुरश्चरण कर्म का रहस्य मुझे बतलाइए यो देवी की प्रार्थना पर भगवान् शिवजी ने इसका प्रतिपादन किया। इसमे प्रतिपादित विषय है—पुरश्चरण-स्वरूप, दीक्षा-प्रशसा, श्मशान मे मन्त्रसाधनविधि, श्रीपञ्चमी को दीक्षाग्रहण मे दोष, काली आदि १० महाविद्याओ का माहात्म्य, सुषुम्ना मे स्थित रहस्य विशेष, दैवी दीक्षा आदि का निरूपण, सहस्रारपद्म का स्वरूप, स्थान आदि का निर्देश, मन्त्रदीक्षा के उपयुक्त तिथि आदि का निरूपण आदि।

—रा० ला० ४५७

(६) १० पटलो में। —कैट् कैट् १।३४०, ३।७२

उ०—प्राणतोषिणी तथा कालिकासपर्याविधि मे।

इसका नाम पुरश्चर्यारसोल्लास भी है।

पुरश्चरणरहस्य

लि०—कालीतन्त्र के अन्तर्गत श्लोक स० ४३, पूर्ण। —स० वि० २४२४९

पुरश्चरणलहरीतन्त्र

लि०—नारद-सुभगा सवाद रूप यह ग्रन्थ ५ पटलो मे पूर्ण है। उपासक के प्रात काल के कृत्य आदि का प्रतिपादन, रुद्राक्ष धारण-फल आदि का निरूपण, वर्ण-पूजनविधि, जप-विधि आदि, पुरश्चरण के अन्त मे कर्तव्य कर्म आदि विषय इसमे प्रतिपादित है।

—नो० स० २।१२८

पुरश्चरणविधि (१)

लि०—(१) शैव माधव-पुत्र शैव गोपीनाथ विरचित। इसमे पुरश्चरण, तत्सम्बन्धी दीक्षा, गुरु और शिष्य की परीक्षा, मन्त्र-सस्कार आदि विषय वर्णित है। श्लोक स० ४००, पूर्ण। —ए० व० ६५३०

(२) (क) श्लोक स० ४००। (ख) श्लोक स० ४००।

—अ० व० (क) ३४७२, (ख) ८३६६

(३) श्लोक स० लगभग ४००, पूर्ण। —र० म० ११७४

(४) माधव-पुत्र गोपीनाथ विरचित। कैट् कैट् २।७६, ३।७२

पुरश्चरणविधि (२)

लि०—(१) श्लोक स० ४०, पूर्ण। इसमे पुरश्चरणविधि का सक्षेप मे प्रतिपादन है।

—ए० व० ६५३५

(२) श्लोक स० ५०। —अ० व० ३४६६

(३) (क) गौतमीयतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० १६५, पूर्ण। (ख) शैवार्चनदीपिका के अन्तर्गत नारायण विरचित, श्लोक स० ३४३, पूर्ण। (ग) सुन्दराचार्य कृत श्लोक स० ८८, पूर्ण। (घ) कुमारीकल्पादितन्त्रान्तर्गत, ग्रहणकालिक पुरश्चरणविधि श्लोक स० २०, पूर्ण। (ङ) श्लोक स० ६५, पूर्ण। (च) श्लोक स० ११०, पूर्ण। (शीतलाकवच, शत्रुनिग्रहप्रयोग ये दो भी इसमे समिलित है, अत श्लोक स० भी समिलित हीहै)। (छ)

श्लोक स० ३९५, पूर्ण। (ज) श्लोक स० ८३, अपूर्ण। (झ) श्लोक स० १५० (विपरीत प्रत्यङ्गिरा प्रयोग भी इसमे समिलित है अत यह श्लोक सख्या भी समिल्ति ही है)। (ञ) श्लोक स० २२६, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २५२४३, (ख) २८०३२, (ग) २५७०२, (घ) २५८१८, (ङ) २६१७९, (च) २६४६१, (छ) २६४५७, (ज) २५६५४, (झ) २६३२९, (ञ) २६४१७

(४) लि०—श्लोक स० १९२, पूर्ण। —र० म० १०४५

पुरश्चरणविधि (३)

लि०—(१) स्वतन्त्रतन्त्र के अन्तर्गत हर-गौरी सवादरूप। श्लोक स० ६०। भगवन्, देवाधिदेव, सिद्धिप्रद सब मन्त्र जिससे सिद्ध होते है वह सिद्धि का हेतु उपाय मुझसे कहने की कृपा कीजिए, पार्वती की इस प्रार्थना पर भगवान् महेश्वर ने उत्तर दिया कि कामना विशेष पर अमुक-अमुक दिशाओ की ओर मुँह कर एकाग्रचित्त होकर मन्त्र-जप करना चाहिए एव साथ ही यह भी वतलाया कि विशेष विशेष-नक्षत्रो मे किये गये मन्त्र-जप की सख्याओ का विशेष फल होता है जिससे शीघ्र मन्त्र-सिद्धि होती है। —रा० ला० ४५०

(२) स्वतन्त्रतन्त्र से गृहीत। —कैट् कैट् १।३४०

पुरश्चरणविवेक

लि०—(१) उत्तरतन्त्र के अन्तर्गत, श्लोक स० ६३, पूर्ण।

—ए० व० ५९८७

(२) उत्तरतन्त्र के अन्तर्गत परमरहस्य उमा-महेश्वर सवादरूप यह तन्त्रपुरश्चरण सुलभ के उपायो का प्रतिपादक है। —रा० ला० ४६०

पुरश्चरणादिप्रयोग

लि०—इसमे पुरश्चरण के स्थान, आहार आदि के नियम, जप-सख्यानियम आदि का निर्णय किया गया है। —म० द० ५७७२

पुरश्चर्याकौमुदी

लि०—माधवाचार्य विरचित। —कैट् कैट् २।७६

पुरश्चर्यारसाम्बुनिधि

लि०—मन्त्रशास्त्रप्रवीण शैलजा मन्त्री द्वारा रचित, श्लोक सं० ८७९, पुरश्चरण-विधि, इन्द्रादि के आवाहन की विधि, क्षेत्रपाल आदि के लिए वलिदानविधि, पापनिवृत्ति

के लिए सावित्री जप की विधि,सकल्प, जप आदि का क्रम,कुल्लुका, सेतु आदि का निरूपण, जिह्वाशुद्धि की विधि, श्यामा, तारा, त्रिपुरसुन्दरी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, वगला, मातङ्गी आदि की जपसख्या का निरूपण, होम, तर्पण,ब्राह्मण-भोजन आदि की विधि, मन्त्र के स्वप्न, जागरण आदि का निरूपण, वलिदानविधि, रहस्यपुरश्चरण-विधि, तारिणीस्तोत्र, चौरमन्त्र आदि का निर्देश, कामिनीतत्त्व, मन्त्रसिद्धि के लक्षण तथा उसके उपाय आदि विषय इसमे वर्णित है। —रा० ला० २९०४

पुरश्चर्यार्णव

लि०—(१) नेपाल के महाराजाधिराज प्रतापसिंहशाह विरचित। ग्रन्थरचना-काल स० १८३१ वि०। विविध आगम, उपनिषत्, स्मृतियाँ, पुराण, ज्योतिषशास्त्र, शालिहोत्र तथा नाना प्रकार की पद्धतियो का भली भाँति अवलोकन कर ग्रन्थकार ने इसका निर्माण किया, यह १२ तरगो मे पूर्ण है। इसमे छह आम्नायो के देवता, आम्नायो के आचार का निर्णय, दीक्षा के देश और काल,वास्तुयाग,कुण्डमण्डपादि निर्णय पूर्वक अङ्कुरार्पण, दीक्षा-विधि मे गुरुपूजनपूर्वक देवतापूजन, क्रियावत् दीक्षाविधि, क्रियादीक्षा-प्रयोगपूर्वक दीक्षा के भेदो का निर्णय, सामान्य पुरश्चरणविधि, मन्त्रसिद्धि के लक्षण, उपाय आदि विषय वर्णित है। —ने० द०१।३७६

(२) प्रतापनारसिंहशाह कृत, श्लोक स० २००००।

—अ० व० १०६३८

(३) प्रतापशाहदेव कृत। (क) प्रथम तरङ्गमात्र। (ख) २य से ९म तरग पर्यन्त। (ग) १० म से १२ तरङ्ग पर्यन्त। रचनाकाल स० १८३१ वि०।

—रा० पु० (क) ५६५४, (ख) ५६५५, (ग) ५६५६

पुरश्चर्याविधि

लि०—(१) नितान्ततन्त्रान्तर्गत पार्वती-महेश्वर सवादरूप। श्लोक स० ८४, अपूर्ण। यह सक्षिप्त पुरश्चर्याविधि परमोक्षप्रदायिनी है। इसके आचरण से साधक के अशेष पापो का विनाश, मन्त्रसिद्धि, कामनासिद्धि तथा ज्ञानसिद्धि होती है, इसमे सन्देह नही।

—ए० व० ६०३६

(२) श्लोक स० २१८, पूर्ण। —स० वि० २५०९४

पुरसुन्दरीमन्त्रादि

लि०—श्लोक स० ४५०, अपूर्ण। —अ० व० १०२०४

पुरस्क्रियाचर्या

उ०—रघुनन्दन द्वारा तिथितत्त्व् मे ।

पुरुषवश्याधिकार

लि०—श्लोक स० १५, अपूर्ण । —स० वि० २५१८९

पुलिन्दिनीप्रयोग

लि०—शिवसारोद्धार के अन्तर्गत, श्लोक सं० १६, पूर्ण ।

—स० वि० २५८४५

पुष्पचिन्तामणि

लि०—यह तान्त्रिक निवन्ध ४ प्रकाशो मे पूर्ण है । विविध देवी-देवताओ मे से किसके पूजन के लिए कौन पुष्प या पत्र विहित है और कौन प्रतिषिद्ध है यह विषय इसमे विस्तार के साथ वर्णित है ।

इसमे प्रतिपादित मुख्य-मुख्य विषय—सामान्यत पुष्पो का विवरण, शिवपूजन मे पुष्पनिर्णय, विभिन्न पुष्पो से पूजा करने का भिन्न-भिन्न फल, शिवपूजा मे विहित पत्र-पुष्प और निषिद्ध पत्र-पुष्प, नवग्रहो की पूजा मे विहित और निषिद्ध पत्र-पुष्प, विष्णु-पूजा मे विहित और निषिद्ध पत्रपुष्प, दुर्गापूजा मे विहित और निषिद्ध पत्र और पुष्प । भिन्न-भिन्न पुष्पो को चढाने का फल, विशेष पुष्पो की मालाओ का फल, प्रतिमा के पुष्पार्चन का फल, देवी के लिए विहित और निषिद्ध पुष्प । दक्षिण काली तथा नील सरस्वती के लिए विहित और निषिद्ध पत्र-पुष्प आदि ।

—ने० द० ११९६६

पुष्पपत्रार्चनविधि

लि०—बृहत्तन्त्र-कौमुदी से गृहीत, श्लोक स० ६७ । —अ० व० ४०२७

पुष्पनामप्रश्नविधि

लि०—अक्षरचूड़ामणि के अन्तर्गत । श्लोक स० ३२, पूर्ण । इसमे भैरवतन्त्रान्तर्गत विपरीत प्रत्यङ्गिरा महामन्त्र भी सन्निविष्ट है । —स० वि० २६६५३

पुष्पमाला

लि०—(१) रुद्रधर विरचित । इसमे देवपूजार्थ कौन पुष्प विहित (उपयुक्त) और कौन निषिद्ध है यह प्रतिपादित है । रा० ला० १९९८

(२) —कैट् कैट् १।३४३

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे।

पुष्पमाहात्म्य

लि०—रहस्यकल्लोलिनी के अन्तर्गत। इसमे यह वर्णित है कि विशेष-विशेष पुष्प विशेष-विशेष देवियो को प्रिय हैं। उनके द्वारा उनका अर्चन करने से मुक्ति, महाकीर्ति, वल आदि नाना प्रकार के अभीष्ट पदार्थ प्राप्त होते है। —इ० आ० २६१४

(२) पश्चिमाम्नाय, उत्तराम्नाय, सिद्धिलक्ष्मी, दक्षिणाम्नाय, नीलसरस्वती तथा ऊर्ध्वाम्नाय की देवियो को कौन पुष्प चढाना, कौन शुभफलप्रद और कौन अशुभफलदायक हैं यह वर्णन इसमे किय गया है एव किस महीने मे महादेव जी को कौन पुष्प चढाना चाहिए यह भी इसमे प्रतिपादित है। —नें० द० २।३२८ (च)

पुष्परत्नाकरतन्त्र

लि०—भूपालेन्द्र नवमीसिंह विरचित यह ग्रन्थ ८ पटलो मे पूर्ण है। विहित पुष्पो का विवरण, निषिद्ध पुष्पो का विवरण, गणेश और शिवपूजा मे ग्राह्य पुष्पो का विवरण, विष्णुपूजा मे ग्राह्य पुष्पो का विवरण, विशेष-विशेष पुष्पो द्वारा पूजन करने का फल, सूर्य आदि नवग्रह और पितरो के उपयुक्त पुष्पो का विवरण, भवानी, दुर्गा, गायत्री तथा सरस्वती के पूजायोग्य पुष्पो का विवरण, दक्षिणाम्नाय और क्षिणाम्नाय मे उपयुक्त पुष्पो का विवरण, उत्तराम्नाय, ऊर्ध्वानाम्नाय और अवआम्नाय मे उपयोगी पुष्पो का विवरण इत्यादि विषय इसमे वर्णित हैं। —नें० द० २।२४३ (क)

पुष्पसारसुधानिधि

उ०—अहल्याकामधेनु मे।

पुष्पाञ्जलिविधान

लि०—श्लोक स० ५०, पूर्ण। इसमे विविध देवी-देवताओ को पुष्पाञ्जलि चढाने के मन्त्र हैं। कुछ मन्त्रो के ऋषि, छन्द, देवता आदि भी प्रतिपादित हैं।

—ट्रि० कै० ९८४ (क)

पुष्पाध्याय

लि०—श्लोक स० १२०। —अ० व० ४४४१

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे।

पुष्पिणीस्तोत्र

लि०—कालिकाप्रस्थान्तर्गत, श्लोक सं० २५, पूर्ण। इसमें रजस्वला के दर्शन, सभाषण, स्मरण और संसर्ग की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की गयी है।

—ए० व० ६७३३

पुस्तकेन्द्र

उ०—नरपति ने इसका उल्लेख किया है। —कैट्. कैट्. १।३४३

पूजनप्रयोगसंग्रह

लि०—(१) इसमें उपासक के प्रात.कृत्यादि दैनिक कृत्यों के साथ देवी-पूजा प्रयोग संगृहीत है। —ए० व० ६३११

(२) श्लोक सं० ५६०, अपूर्ण। —र० म० ४८८०

(३) श्लोक सं० ३९५, पूर्ण, शिव रचित। लिपिकाल १७५१ वि०।

—सं० वि० २५२८३

पूजाकाण्ड

लि०— —कैट्. कैट् १।३४३

पूजादिविधि

लि०—श्लोक सं० २३००। —अ० व० ९९१२

पूजादीपिका

लि०—गोस्वामी सर्वेश्वरदेव रचित, श्लोक सं० ७३८, अपूर्ण।

—सं० वि० २५१०१

पूजान्यासविधि

लि०— —कैट् कैट् १।३४३

पूजापद्धति

लि०—(१) इसमें आरंभ में उपासक के करणीय प्रात काल आदि के दैनिक कृत्य प्रतिपादित हैं। तदनन्तर भगवान् कृष्ण की तान्त्रिक पूजा का विवरण दिया गया है।

—ए० वं० ६४३६

(२) (क) नवानन्दनाथ विरचित। श्लोक सं० ४५०।

(ख) श्लोक स० ४००, अपूर्ण ।

—अ० व० (क) १०७००, (ख) १२८२६

(३) (क) श्लोक स० ५०, अपूर्ण । (ख) श्लोक स० १८०, पूर्ण । (ग) श्लोक स० ४६४, अपूर्ण । (घ) श्लोक स० ६३, पूर्ण । (ङ) श्लोक स० ५१०, अपूर्ण ।

—स० वि० (क) २४०७१, (ख) २५८००, (ग) २५९६८, (घ) २६४०७, (ङ) २६५८७

(४) दे०, तान्त्रिकपूजापद्धति । —कैट् कैट् १।३४३

पूजापुष्करिणी

लि०—चन्द्रशेखर शर्मा विरचित यह ग्रन्थ ७ वीचियो (अध्यायो) मे पूर्ण है। इसमे तान्त्रिक उपासक की दैनिक चर्या वर्णित है।

पूजाप्रदीप (१)

लि०—ठक्कुर देवनाथ—पिता गोविन्द ठक्कुर कृत ।

—कैट् कैट् १।३४३, २।७६

उ०—शाक्तानन्दतरगिणी, रघुनन्दन कृत एकादशीतत्त्व तथा आगमतत्त्वविलास मे।

पूजाप्रदीप (२)

उ०—आगमकल्पलता तथा शारदातिलकटीका राघवभट्टी मे ।

पूजाप्रयोग

लि०—पूर्ण । —स० वि० २६३२८

पूजाप्रयोगसंग्रह

लि०—श्लोक स० ३९०, अपूर्ण, लिपि-काल स० १७५२ वि० ।

—स० वि० २३९९२

पूजारत्न

लि०—(१) सत्यानन्द कृत (क) पत्रे २१२। (ख) पत्रे ६, प्रथम मयूख मात्र।

—रा० पु० (क) ५६३८, (ख) ५७९५ (१)

(२) बुद्धिराज सम्राट् कृत, इसमे त्रिपुरसुन्दरी की पूजा प्रतिपादित है।

—कैट् कैट्. १।३४३

उ०—सामराज दीक्षित कृत। काव्यमाला नवम गुच्छक पृ० १४० मे इसका उल्लेख है । —कैट् कैट् २।७६

पूजारत्नाकर

लि०—(१) मिथिला नरेश के सान्धि-विग्रहिक (सन्धि और विग्रह के) मन्त्री चण्डेश्वर टक्कुर विरचित, श्लोक स० २७३२। इसमे वर्णित विषय—साधारणत देवपूजा-विधि, पूजा के देश आदि का विचार, मण्डल, वलिदान आदि की विधि, पुष्प चुनने की विधि, वेदी और मण्डप का निर्माण, नैवेद्य का निर्माण, सूर्यपूजा अवश्य करणीय है, सूर्यपूजा का फल, पूजाधिकारी के नियम आदि, सूर्यमन्दिर का परिष्कार करने का फल, ब्रह्मस्नान, पञ्चगव्य वनाने की विधि, स्नान कराने और पूजा करने का फल, सूर्य के लिए अर्घ्यदान की विधि, पञ्चोपचार पूजाविधि, चन्दन, पुष्प आदि का विचार, धूप, दीप, नैवेद्य, वस्त्र, अलङ्कार आदि का निवेदन, सूर्य की नित्य पूजा, विभिन्न सूर्यमूर्तियो मे सूर्य की पूजाविधि, सूर्यरथयात्रा, सौर धर्म कथन, शिवपूजाविधि विविध मूर्तियो पर, रुद्राक्षधारण, पञ्चोपचार शिवपूजा, घृताभिषेक महास्नानादि की विधि, पुष्पादि का विचार, शिवपूजा के वार, विष्णुपूजा, दुर्गा-पूजा, कुमारी-पूजा आदि-आदि। —रा० ला० २३८८

(२) चण्डेश्वर विरचित। —कैट् कैट् पे ३४३

पूजारहस्य

उ०—महार्थमञ्जरी परिमल मे।

पूजाविधान

लि०—श्लोक स० ३२, अपूर्ण। —स० वि० २६६४१

पूजाविधि या सपर्याविधि

लि०—(१) रामचन्द्र विरचित, श्लोक स० ३००।

—अ० व० ८०५३

(२) श्लोक स० १५१, पूर्ण। —स० वि० २४८९९

(३) कालीपूजा मे सम्बन्ध रखनेवाली विधियाँ इसमे वर्णित हैं। इसका नामान्तर 'निरुत्तरोक्तविधि' दिया हुआ है। —ए० व० ६३१७

(४) —ने० द० ११११७६ (ग)

(५) श्लोक स० ४८०। —डे० का० २३४ (१८८३-८४ ई०)

पूतनाविधान

लि०—(१) कमलाकर के शान्तिरत्न मे जो विषय वर्णित है प्राय वही इसमे प्रतिपादित है। इसमे पूतना, जो वालको मे वहुत उत्पात करती है, के झाड-फूक का वर्णन है। —ए० व० ६५६३

(२) —कैट् कैट् १।३४३, २।७६

पूर्णदीक्षाक्रम

लि०—श्लोक स० १००। —अ० व० ८३७८

पूर्णदीक्षापद्धति

लि०—पारानन्दतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० ४००, अपूर्ण।

—अ० व० १०६६९

पूर्णपद्धति

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

पूर्णयाग

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा आगमकल्पलता मे।

पूर्णानन्दचक्रनिरूपणटीका

लि०—चन्द्रद्वीपान्तर्गत वत्सपुर ग्रामवासी रामवल्लभ शर्मा विरचित, श्लोक स० ७५०। यह पूर्णानन्द विरचित मूलाधार प्रभृति छह चक्रो का निरूपण करनेवाले चक्र-निरूपण या अन्य नाम के ग्रन्थ की व्याख्या है। ग्रन्थकार ने लिखा है—

पूर्णानन्दोदितानन्दनिर्वाहाङ्कुरकारिकाम्।
विशदा कुरुते तूर्णं द्विज श्रीरामवल्लभ ॥ —रा० ला० ४५२

पूर्णाभिषेक

लि०—(१) पारानन्दतन्त्र के अन्तर्गत, श्लोक स० २५०, अपूर्ण।

—अ० व० ८२९६

(२) —कैट् कैट् १।३४३

पूर्णाभिषेकदीपिका

लि०—अर्वकालीय वशीय रामनाथ-पुत्र आनन्दनाथ विरचित, लगभग २००० श्लोकात्मक। कलिकाल मे आगमोक्तपूजा का विधान, चार आश्रमो के कुलाचार का पूर्णा-

भिषेक, विभिन्न प्रकार के अभिषेक, केवल अभिषेक, चक्रानुष्ठानाभिषेक, गुरुनिर्णय, कुल-धर्म-प्रशसा, कौलिक-लक्षण, कौलिक ज्ञान की प्रशसा, कौलपूजा का फल, गृहस्थ कौल का लक्षण, वीर का लक्षण, दिव्य वीर पूजा का कालनिर्णय, योगानुष्ठान, कामकलानिर्णय, तत्त्व-ज्ञान निर्णय, कौलो के कम्बल आदि आसनो का वर्णन, कौलयोगिरहस्य, माला-निर्णय, कलि मे पश्वाचार का अभाव, दिव्य और वीरो के पुरश्चरण का विधान आदि विषय इसमे वर्णित है। —नो० स० ३।१६०

पूर्णाभिषेकपटल

लि०—उत्तरतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० १५९।

—अ० व० १६९३

पूर्णाभिषेकपद्धति

लि०—श्लोक स० १५०। —अ० व० ५७०४

(२) (क) अनन्तभट्ट विरचित तथा मुरारिभट्ट विरचित दोनो पूर्ण। (ख) श्लोक स० ७७७॥, पूर्ण। (ग) श्लोक स० २२४, पूर्ण। (घ) श्लोक स० १४०, पूर्ण। कामाख्यातन्त्रान्तर्गत ७ म पटलस्थ शाक्ताभिषेक पद्धति भी इसमे समिलित है। (ङ) श्लोक स० ६५, अपूर्ण। (च) श्लोक स० २३०, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४८१४, (ख) २४८८०, (ग) २४८८१, (घ) २५७३१, (ङ) २६११९, (च) २६६२७

(३) नामान्तर—उपदेश दीक्षा विधि, चैतन्यगिरि अवधूत विरचित। यह शिष्य की तान्त्रिक दीक्षा पर लिखा गया है। —कैट् कैट्. २।७७

(४) आनन्दनाथ विरचित। —कैट् कैट् ३।७३

(५) —कैट् कैट् १।३४३

पूर्णाभिषेकप्रयोग

लि०—श्लोक स० ४४, अपूर्ण। —म० वि० २६०९३

पूर्णाभिषेकविधि

लि०—(१) (क) श्लोक सं० ८४, अपूर्ण। (ख) श्लोक सख्या २००।

—अ० व० (क) १३४५९, (ख) १३६५५

(२) श्लोक स० ३०२, अपूर्ण। —र० म० १०६०

(३) (क) श्लोक स० २४०, पूर्ण। (ख) तन्त्रराज मे उक्त, श्लोक स० २५४, पूर्ण। —स० वि० (क) २४२८१, (ख) २५४३१

(४) —कैट् कैट् २।७७

पूर्णाभिषेकषडाम्नायमन्त्रादि

लि०—स्फुट पन्ने। इनमे नृसिंहसुन्दरीमहामन्त्र, दशमहाविद्या, दशावतारो के दश-श्लोक, शिववलिविधि, नाभि-विद्योद्धार तथा तन्त्रोक्त हवनपद्धति लिखी है।

—रा० पु० ५१९५

पूर्णाभिषेकसंस्कारविधि

लि०—पूर्ण। —स० वि० २५७६४

पूर्णाभिषेकामृततन्त्र

लि०—दशमहाविद्याओ को उत्पत्ति नाम का ११वाँ पटल, पूर्ण।

—वं० प० १४१६

पूर्वतन्त्र

उ०—इसका उल्लेख किया गया है। —Oxford (आक्सफोर्ड) १०९

पूर्वपञ्जिका

अभिनवगुप्त विरचित

उ०—इसका इ० आ० (पे० ८४०) मे उल्लेख किया गया है।

—कैट् कैट्. २।७७

पूर्वपाक्षिकी

उ०—मालिनीविजय मे।

पूर्वशास्त्र

मालिनीविजय का नामान्तर। मालिनीविजय त्रिकशास्त्र का प्रधान ग्रन्थ है।

उ०—इसका क्षेमराज ने उल्लेख किया है। —कैट् कैट् १।३४५

पूर्वाम्नाय

लि०—श्लोक स० ३०, अपूर्ण। —स० वि० २४३५४

पूर्वाम्नायतन्त्र

लि०—श्रीरत्नदेव कृत यह छोटा-सा तान्त्रिक सग्रहग्रन्थ है। इसके नाम से प्रकट होता है कि यह सग्रह पूर्वाम्नाय ग्रन्थो से सगृहीत किया गया है। इसमे २८ तान्त्रिक क्रियाओं की प्रयोगविधि वर्णित है।

प्रतिपाद्य विषय—पाँच प्रणव न्यास, दक्षकरन्यास, अष्टाङ्गन्यास, शब्दराशिन्यास, त्रिविद्याङ्गन्यास, षडङ्गन्यास, द्वादश अङ्गन्यास, जलस्मरण, भूतशुद्धि, गुरुमण्डलपूजा, ध्यान, पाँच पीठ, पाँच अवधूत आदि, तीन भोगविद्याएँ, गायत्री, रत्नदेवार्चन, ध्यान, तीन गुहाएँ आदि। —ने० द० ११०९

पूर्वाम्नायषडाम्नाय-विचार

लि०—श्लोक स० १७६, अपूर्ण। —स० वि० २५३५५

पूर्वाम्नायादि

लि०—श्लोक स० ३५०। —अ० व० ८४९४

पैङ्गलतन्त्र

उ०—सौभाग्यभास्कर तथा आगमतत्त्वविलास मे।

पौष्करसंहिता

लि०—(१) नारदपञ्चरात्रान्तर्गत, इसमे ४३ अध्याय हैं। यह नारदपञ्चरात्रान्तर्गत सहिताओं मे ४र्थ सहिता है। विशेषविवरण द्रष्टव्य— —इ० आ० २५३१

(२) नारदपञ्चरात्र का एक भाग।

—कैट् कैट् ११३४६, २१७४

पौष्करा

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

पौष्करागम या पौष्करतन्त्र अथवा पौष्कर

लि०—(१) यह शैवतन्त्र चार पादो मे विभक्त है—१. ज्ञानपाद, २ योगपाद, ३. क्रियापाद और ४ चर्यापाद। ज्ञानपाद मे ८ पटल हैं। निम्नलिखित विषय उनमे वर्णित हैं—प्रतिपदार्थनिर्णय, विन्दुपटल, मायापटल, पशुपदार्थ, कालादिपञ्चक, पुस्तत्त्व, प्रमाणाधिकार तथा तन्त्रोत्पत्ति। योगपाद और क्रियापाद का ही दूसरा नाम सर्वज्ञानोत्तर है एवं चर्यापाद का नाम मतगपारमेश्वरतन्त्र है। —इ० आ० २६०६

(२) पौष्कर (ज्ञानपाद) श्लोक स० १०० । २ य और ३ य पटल मात्र ।
—अ० व० ६८२७ (ग)

(३) पौष्कर—शैवागम से गृहीत इस पर उमापति शैवाचार्य की टीका है ।
—कैट् कैट् १।३४६

उ०—स्पन्दप्रदीपिका, तारारहस्यवृत्ति, शारदातिलक-टीका राघवभट्टी, शतरत्न-समुच्चय, तन्त्रालोक तथा नरेश्वरपरीक्षा मे ।

प्रकटयोगिनी

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे ।

प्रकाशोदय

लि०—शिवानन्द विरचित । यह तन्त्रो मे उपदिष्ट मुख्य-मुख्य सिद्धान्तो का सग्रह-ग्रन्थ है । —बी० कै० १३०५

प्रकीर्णाशतन्त्र

लि०—ईश्वरप्रोक्त, पत्रे २४, —ज० का० १०५१

प्रचण्डचण्डिकासहस्रनामस्तोत्र

लि०—विश्वसारतन्त्रान्तर्गत हर-गौरी सवाद रूप । इसमे प्रचण्डचण्डिका (दुर्गाभेद) का सहस्रनामस्तव है । —बी० कै० १३०४

प्रचण्डभैरव

उ०—जन्ममरणविचार मे ।

प्रज्ञालहरीस्तोत्र

लि०—श्लोक स० २२०, इसमे देवी की स्तुति प्रतिपादित है ।
—ट्रि० कै० ११०५

प्रणवकल्प

लि०—(१) श्लोक स० २७०, पूर्ण, स्कन्दपुराणान्तर्गत । इसमे प्रणवस्तवराज, प्रणवकवच, प्रणवपञ्जर, प्रणवहृदय, प्रणवानुस्मृति, ओङ्काराक्षरमालिकामन्त्र, प्रणव-मालामन्त्र, प्रणवगीता, प्रणव के अष्टोत्तरशत नाम, प्रणव के षोडश नाम तथा यतियो का मानसिक स्नान आदि विषय वर्णित है। यह ग्रन्थ प्रणव या ॐ की उपासना-विधि से सम्बन्ध रखता है । —ए० ब० ६५१९

(२) स्कन्दपुराणान्तर्गत सूत-शौनक संवाद रूप यह ग्रन्थ प्रणव की महिमा का विस्तार से प्रतिपादन करता है। यह ५ अध्यायों में पूर्ण है। इस ग्रन्थ की श्लोक सं० ६४२ कही गयी है। —रा० ला० २२९०

(३) सव्याख्य, व्याख्या का नाम प्रकाश, श्लोक सं० २००० । —अ० व० ६६९० (क)

(४) (क) वैष्णवसंहिता (स्कन्दपुराण) के अन्तर्गत, श्लोक सं० ४६०, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० ९८, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० ३९४। इसमे अङ्गस्तुति, प्रणवस्तवराज-कवच-पञ्जर-हृदय-अनुस्मृति, ओंकाराक्षरमातृकामन्त्र, प्रणवगीता, अष्टोत्तरशतनाम, षोडशनाम इत्यादि विषय वर्णित है ए० व० ६५१९ की तरह। (घ) श्लोक सं० ८७।।, अपूर्ण। इसमे अङ्गस्तुति, प्रणवस्तवराज, प्रणवकवच, प्रणवपञ्जर तथा प्रणवहृदय है। (ङ) श्लोक सं० ३२०, पूर्ण। इसमे प्रणव माला मन्त्र आदि ९ विषय है।

—म वि (क) २३०३१, (ख) २४३७०, (ग) २४७८७, (घ) २५००९, (ङ) २५२४२

(५) (क) वैष्णवसंहिता (स्कन्दपुराण) से गृहीत। गङ्गाधर सरस्वती कृत प्रकाश टीका सहित। —कैट् कैट् .१।३४८

(ख) (।) वैष्णवसंहिता (स्कन्दपुराण) से गृहीत।

(।।) शौनक कृत, हेमाद्रि कृत टीका सहित —कैट् कैट् २।७७

प्रणवकल्पप्रकाश

लि०—(क) गङ्गाधरेन्द्र सरस्वती भिक्षु विरचित। श्लोक सं० १०९७, अपूर्ण। इसमे प्रणवहृदय सटीक प्रणव के अष्टोत्तरशत नाम, प्रणव के षोडश नाम, प्रणवपञ्जर, प्रणव-मालामन्त्र, प्रणवगायत्री सटीक, प्रणवस्तवराज सटीक, प्रणवाक्षरमालामन्त्र, प्रणवानुस्मृति तथा प्रणवसहस्रनाम ये विषय प्रतिपादित है। (ख) श्लोक सं० २७७, अपूर्ण।

—म० वि० (क) २६६८२, (ख) २६६८३

प्रणवजपविधि

लि०—श्लोक सं० ५२, अपूर्ण। —मं० वि० २४५३७

प्रणववर्णन

लि०—श्लोक सं० १९, अपूर्ण। —म० वि० २५९७८

प्रणववासनाप्रकार

लि०—श्लोक स० ७५, अपूर्ण। —स० वि० २४२७८

प्रणवविचार

लि०—श्लोक स० ५६, पूर्ण। —स० वि० २४४७३

प्रणवविधान

लि०—श्लोक स० ९४, पूर्ण। —स० वि० २४२३६

प्रणवविधि

लि०—(क) श्लोक स० १६, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ३०, अपूर्ण।
—स० वि० (क) २४३८१, (ख) २६६७७

प्रतितन्त्रदर्पण

लि०— —कैट् कैट् १।३४९

प्रतिष्ठाकौमुदी

लि०—(१) श्लोक स० १५००, अपूर्ण। —अ०व० १०९५६ (ख)
(२) शङ्कर विरचित। —कैट् कैट् १।३५०

प्रतिष्ठाकौस्तुभ

लि०—(१) शेष शर्मा द्वारा विरचित, श्लोक स० ४००।
—अ० व० ८७५७
(२) —कैट् कैट् १।३५०

प्रतिष्ठातन्त्र (१)

लि०—(१) निश्वासमहातन्त्र के अन्तर्गत, उमा-महेश्वर सवाद रूप, ७० पटलो मे पूर्ण। इसमे प्रतिपादित विषय है—१ प्रश्न-पटल, २ स्थापक तथा स्थपति के लक्षण, ३ लिङ्गयोनि-पटल, ४ रत्नज लिङ्ग का लक्षण, ५ पार्थिव लिङ्ग का लक्षण, ६ वनप्रवेश-पटल, ७ वृक्षलक्षण-पटल, ८ पापाणलक्षण-पटल, ९ वनाधिवास-पटल, १० वृक्ष-ग्रहण-पटल इत्यादि ७० पटलो के विषय पृथक्-पृथक् प्रतिपादित है। लिंगादि-निर्माण, विविध देव-प्रतिमा लक्षण, हिताहित लक्षण, जीर्णोद्धार-प्रतिष्ठा, प्रासाद तथा मन्दिर-निर्माण आदि विषय विस्तारपूर्वक इसमे वर्णित है। —ने० द० १।८४, २।१२

(२) (क) श्लोक स० ४५० (केवल ९ पटल)। (ख) श्लोक स० २१००, (दोलारोपण पर्यन्त)। (ग) श्लोक स० २०००, अपूर्ण।

—अ० व० (क) १०२८३, (ख) ६७४३, (क), (ग) ६८३२ (क)

(४) दे०, मयमत। —कैट् कैट् ११३५०

प्रतिष्ठातन्त्र (२)

लि०—(१) सुप्रभेदान्तर्गत, महेश्वर-महागणपति सवाद रूप। श्लोक स० १३२०। इसमे मुख्य रूप से विमान, स्थापनविधि प्रतिपादित है। रत्नदीक्षाविधान, अष्टमीभजन-विधि, क्षेत्रपालार्चनविधि, योग पादादि नाडीचक्र आदि और भी विविध विषय इसमे प्रतिपादित है। —ट्रि० कै० ९८६

(२) आदिपुराण के अन्तर्गत देवोद्भव, श्लोक स० १३७००, पूर्ण। इसमे शिवभाग, विष्णुभाग, शिवविष्णुभाग, ब्रह्मभाग, विघ्नभाग, शास्तृभाग, स्कन्दभाग, रविभाग, कन्य-काभाग, मातृभाग, शेषभाग, पूजाभाग यो १२भाग है तथा प्रत्येक भाग मे १२ आश्वास है। कुल १४४ आश्वास है। तन्त्रो की उत्पत्ति, तन्त्र-लक्षण, तन्त्रो की सख्या, तन्त्रो की शिष्य-सख्या, उनके नाम आदि वहुत-से अन्य विषय भी उपर्युक्त विषयो के साथ इसमे वर्णित है। —ट्रि० कै० ९८७

प्रतिष्ठातिलक

लि०—(१) श्लोक स० ५००। —अ० व० ११०९२

(२) ब्रह्मसूरि विरचित। —कैट् कैट् २।७८

प्रतिष्ठापद्धति या आचार्यचन्द्रिका

लि०—(१) त्रिविक्रम सूरि विरचित, (क) श्लोक स० २०००। (ख) श्लोक स० २०००। (ग) श्लोक स० १८५०, अपूर्ण।

—अ० व० (क) २२७३, (ख) ११०८४, (ग) १०२८३ (ख)

(२) श्लोक स० ६००, विविध आगमो के आधार पर निर्मित।

—अ० व० ६८३८

(३) (क) (१) त्रिविक्रमभट्ट विरचित।

(२) शङ्करभट्ट विरचित। —कैट् कैट् २।७८

(ख) (१) अनन्तभट्ट या वापूभट्ट विरचित।

(२) त्रिविक्रमभट्ट विरचित।

(३) नीलकण्ठभट्ट विरचित।

(४) महेश्वरभट्ट विरचित।

(५) राधाकृष्ण विरचित। —कैट् कैट् १।३५०

(ग) त्रिविक्रमभट्ट विरचित। —कैट् कैट् ३।७४

प्रतिष्ठाप्रयोग

लि०—कमलाकर कृत, श्लोक स० १८०। —अ० व० ५०३५

प्रतिष्ठालक्षणसारसमुच्चय

लि०—ईशानशिव-शिष्य वैरोचनि विरचित। श्लोक स० ३५००, ३२ पटलो मे पूर्ण।
—ने० द० २।३५१

प्रतिष्ठाविधि

लि०—श्लोक स० २२००। —अ० व० १०३३०

प्रतिष्ठाविधिदर्पण

लि०—नरसिह यज्वा द्वारा विरचित, श्लोक स० १६००।
—अ० व० ९८४८ (क)

प्रतिष्ठासारसंग्रह

लि०—(१) राघ सगृहीत। इसमे देवता-प्रतिष्ठाविधि प्रतिपादित है। अन्तिम पुष्पिका वाक्य से प्रतीत होता है कि कुमारी-पूजाविधि भी इसमे वर्णित है।
—ने० द० (पे ७८) १।१६३३ (ठ)

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव, पुरश्चर्यार्णव, आगमकल्पलता तथा ललितार्चनचन्द्रिका मे।

हेमाद्रि, देवनाथ, विट्ठल दीक्षित तथा नीलकण्ठ ने भी इसका उल्लेख किया है।

प्रतृचप्रयोग

लि०—श्लोक स० १२०, पूर्ण। —स० वि० २५६४१

प्रत्यक्षफलप्रयोग

लि०—शाबरतन्त्रीय, श्लोक स० २१, अपूर्ण।
—स० वि० २४७८२

प्रत्यङ्गिरा

लि०— —कैट् कैट् १।३५१

प्रत्यङ्गिराकल्प

लि०—(१) (क) श्लोक स० २००, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ६००। (ग) श्लोक स० १०००। (घ) श्लोक स० २५०। (ङ) श्लोक स० १२५ (इसमे केवल मन्त्र और स्तोत्र है)। (च) श्लोक स० २५०।

—अ० व० (क) ६०४९, (ख) १०६८७, (ग) १०७३३, (घ) १०९४१, (ङ) ५६७८, (च) ५६

(२) (क) श्लोक स० ४०, पूर्ण, पिप्पलादशाखीय। (ख) श्लोक स० ११०, अपूर्ण। —स० वि० (क) २४६८८, (ख) २५०७६

(३) —कैट् कैट् १।३५१

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

प्रत्यङ्गिरातत्त्व

लि०—कृष्णनाथ कृत। —कैट् कैट् १।३५१

प्रत्यङ्गिरापञ्चाङ्ग

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत उमा-महेश्वर सवाद रूप। इसमे १ प्रत्यङ्गिरा-पूजा-पद्धति, २ सर्वार्थसाधनकवच, ३ प्रत्यङ्गिरासहस्रनाम तथा ४ प्रत्यङ्गिरास्तोत्र वर्णित है। —ए० व० ६४३०

(२) जगन्मङ्गल नामक सर्वरक्षाकर प्रत्यङ्गिराकवच। —ए० व० ६७१५

(३) प्रत्यङ्गिराकवचादि, श्लोक स० १००। —अ० व० १०१५१

(४) प्रत्यङ्गिरापञ्चाङ्ग, (क) श्लोक स० ५८६, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ६६, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० ७५६, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २३८८८, (ख) २४०१५, (ग) २४५१२

(५) रुद्रयामलान्तर्गत। —कैट् कैट् १।३५१

प्रत्यङ्गिरापटल

लि०—(क) रुद्रयामल के अन्तर्गत, श्लोक स० १०१, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ३८।

—स० वि० (क) २४६४४, (ख) २४६५३

प्रत्यङ्गिरापद्धति

लि०—(क) श्लोक स० ३६०। (ख) श्लोक स० १०००, अपूर्ण।

—अ० व० (क) ५७३५, (ख) ५५६२

प्रत्यङ्गिरापूजामन्त्रोद्धारकवच

लि०—पूर्ण।

—व० प० २२५

प्रत्यङ्गिराप्रयोग

लि०—(१) (क) श्लोक स० ६०, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ४८, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० ४४, अपूर्ण। (घ) श्लोक स० ७०, पूर्ण। (ङ) चण्डोग्रशूलपाणि विरचित, श्लोक स० ७०, पूर्ण। (च) श्लोक स० १५४, पूर्ण। (छ) श्लोक स० १४०, पूर्ण। कुब्जिका-तन्त्र के अन्तर्गत।

—स० वि० (क) २४०९९, (ख) २४१००, (ग) २४४४५, (घ) २४६२९, (ङ) २५३०६, (च) २५३०९, (छ) २५३१५

(२)

—कैट् कैट् १।३५१

प्रत्यङ्गिरामन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० १५, अपूर्ण।

—र० म० १११०

(२) (क) श्लोक स० ५१, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ७५ (प्रतङ्गिरास्तोत्र के साथ), अपूर्ण। (ग) श्लोक स० १३॥, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४४७७, (ख) २५७००, (ग) २६१९८

(३)

—कैट् कैट् १।३५१

प्रत्यङ्गिरामन्त्र और पूजा

लि०—श्लोक स० ७०। इसमे कृष्णमन्त्र, इन्द्राक्षीमन्त्र, विद्यापोडशाक्षरीमालामन्त्र, पञ्चमुखहनुमत्कवच तथा श्रीरुद्रचक्र का प्रतिपादन है। —अ० व० १३३८२ (क)

प्रत्यङ्गिरामन्त्रप्रयोग

लि०—(१) पैप्पलादशाखीय, श्लोक स० ४५०।

—अ० व० ५६५२

(२) पिप्पलादशाखोक्त, श्लोक स० ६८, पूर्ण।

—स० वि० २६३६१

प्रत्यङ्गिरामन्त्रविधान

लि०—श्लोक स० ९०, अपूर्ण।

—स० वि० २४४७६

प्रत्यङ्गिरामन्त्रोद्धार

लि०—(१) पूर्ण। —व० प० १५९९

(२) श्लोक स० १२१, पूर्ण, कुब्जिकातन्त्रान्तर्गत।

—स० वि० २४७४२

प्रत्यङ्गिरायन्त्रकल्प

लि०—लोक स० ३००। —अ० व० ५६४९

प्रत्यङ्गिरायन्त्रविधान

लि०— —कैट् कैट् २।७८

प्रत्यङ्गिरायन्त्रोद्धार

लि०—श्लोक स० १५०। —अ० व० ११६४७ (क)

प्रत्यङ्गिराविधान

लि०—(१) (क) श्लोक स० ४००। (ख) श्लोक स० २५०।

—अ० व० (क) ५६७०, (ख) ५६०८

(२) (क) श्लोक स० ५५, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० १२०, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २५०८२, (ख) २५२८०

प्रत्यङ्गिराविधि

लि०—श्लोक सं० ४०७, अपूर्ण। —स० वि० २५३५९

प्रत्यङ्गिराशास्त्र

लि०— —ने० द० २ पे० २४४

प्रत्यङ्गिरासिद्धिमन्त्रोद्धार

लि०—(१) श्लोक सं० १०१।

—डे० का० २३५ (१८८३–८४ ई०)

(२) (क) चण्डोग्रशूलपाणि विरचित, श्लोक स० १११, पूर्ण।

(ख) श्लोक स० ७५, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २४५५८, (ख) २४७३०

प्रत्यङ्गिरासूक्त

लि०—कृष्णनाथ विरचित व्याख्या सहित । —कैट् कैट् १।३५१, २।७८

प्रत्यङ्गिरासूक्तमन्त्र

लि०—पन्ने १९ । —रा० पु० ७६४४

प्रत्यङ्गिरासूक्तमन्त्रजप

लि०—श्लोक स० ३० । —अ० व० ११७१८

प्रत्यङ्गिरासूक्तमन्त्रप्रयोग

लि०—पिप्पलादशाखीय, श्लोक स० ९०, पूर्ण । —स० वि० २५८४६

प्रत्यङ्गिरास्तोत्र

लि०—(१) महातन्त्रराजान्तर्गत यह स्तोत्र मालामन्त्र की शैली का है । पहले इसमे प्रस्तावना है तथा अन्त मे फलश्रुति । —ए० व० ६७१२–१४

(२) शत्रुनाशन, रोगनिवृत्ति, मारण आदि कई विषयो के लिए इसका उपयोग विधिभेद से वर्णित है । —नो० स० ४।१८८

(३) विश्वसारोद्धारान्तर्गत, चण्डोग्रशूलपाणि विरचित, श्लोक स० ९५, क्षत-विक्षत ।

(४) (क) श्लोक स० १०८, पूर्ण । (ख) श्लोक स० २३८, पूर्ण । यह (क) से भिन्न है । —र० म० (क) ५०३८, (ख) १०५२

(५) प्रत्यङ्गिरामन्त्र के साथ समिलित, अपूर्ण । —स० वि० २५७००

(६) —कैट्. कैट् १।३५१, २।७४

प्रत्यभिज्ञा

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे ।

प्रत्यभिज्ञासूत्र

लि०—दे०, ईश्वरप्रत्यभिज्ञासूत्र । —कैट् कैट् १।३५१

प्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी (बृहती वृत्ति)

लि०—(क) आचार्य उत्पल–अभिनव गुप्त कृत, पूर्ण ।

(ख) ,, ,, (लघुवृत्ति) ,,

(ग) ,, अपूर्ण

—डे० का० (क) ४६४, (ख) ४६५, (ग) ४६६ (१८७५।७६ ई०)

(घ) प्रपञ्चसारविवरण, नारायण कृत। श्लोक स० ४४००।
(ङ) ,, देवदेव कृत। ,, ७०००।
(केवल २५ वे पटल तक)।
—अ० व० (क) १२५०१, (ख) ३२७७, (ग) ३२७६, (घ) ३३०६, (ङ) १०८३९

(५) प्रपञ्चसार-व्याख्या तत्त्वप्रदीपिका, नागस्वामी कृत, श्लोक स० १४००।
—ट्रि० कै० १०७२७

(६) (क) प्रपञ्चसारदीपिका, एकादश पटलमात्र पर अपूर्ण, श्लोक स० ४५।
(ख) प्रपञ्चसारटीका, सरस्वतीतीर्थ कृत, श्लोक स० २८९४, अपूर्ण।
(ग) प्रपञ्चसारटीका, जगद्गुरु (?) कृत
—स० वि० (क) २४३२४, (ख) २५८४७, (ग) २६१९७

(७) प्रपञ्चसारविवरण, पद्मपादाचार्य विरचित, श्लोक स० २७७२, अपूर्ण।
—स० वि० २५२६२

(८) प्रपञ्चसारसवन्धदीपिका, श्लोक स० ५२१७ (२ रे से ३२ वे पटल तक) अपूर्ण। —स० वि० २५६४३

(९) प्रपञ्चसारविवरण, ज्ञानस्वरूप विरचित प्रपञ्चसार टीका १ म से १६ वे पटल तक। लिपिकाल १७८५ वि०। —इ० आ० २५६२

(१०) प्रपञ्चसारविवरण, प्रपञ्चसार की व्याख्या। प्रेमानन्दभट्टाचार्य शिरोमणि विरचित।

उ०—केशवकृत क्रमदीपिका पर गोविन्दभट्टाचार्य कृत व्याख्या मे।

प्रपञ्चसारसंग्रह

लि०—(१) विश्वेश्वर सरस्वती-शिष्य गीर्वाणेन्द्र सरस्वती विरचित। (क) श्लोक स० १३२००। (ख) श्लोक स० १००००, अपूर्ण।
—अ० व० (क) ७७९६, (ख) ११४८८

(२) गीर्वाणेन्द्र कृत। यह तन्त्रग्रन्थ पूजा आदि धार्मिक कृत्यो का प्रतिपादक है।
—क० का० ५०

(३) विश्वेश्वर सरस्वती-शिष्य गीर्वाणेन्द्र सरस्वती कृत, श्लोक स० १५२९५, केवल २ पन्ने कम है, शेप पूर्ण। (विश्वेश्वर सरस्वती के गुरु अमरेन्द्र सरस्वती थे।)
—र० म० ४९३४

(४) (क) श्लोक स० १४३६४, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ५७८, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० ४५४५, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २३८३८, (ख) २४३०७, (ग) २४९४९

प्रबोधपञ्चदशिका

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

प्रबोधमिहिरोदय

लि०—विन्ध्यपुरवासी सर्वविद्यामहामहोपाध्याय श्रीमत्तर्कवागीश भट्टाचार्य के अनुकम्पापात्र कायस्थमित्र रामेश्वरतत्त्वानन्द द्वारा प्रकटित। इसकी रचना शकाब्द १५९७ मे हुई। यह ८ अवकाशो मे पूर्ण है। विविध तन्त्रो, स्मृतियो और पुराणो से यह सगृहीत है। इसके ८ अवकाशो के विषय यो निर्दिष्ट है—१म—भ्रम ज्ञान का कारण, २ य—कर्त्ता, कारण और कार्य का विवेचन, ३य—परम ब्रह्म का निर्णय, ४ र्थ—ब्रह्माण्ड के जन्म, स्थिति और सहार का निर्णय, ५ म—जीव की स्थिति, ६ष्ठ—ब्रह्मविद्याविनिर्णय, ७म—अर्चनविधान, तथा ८म—आचार का प्रतिपादन। अज्ञानतिमिर-ध्वस द्वारा ये मुक्ति के मार्ग है, इसलिए यह ग्रन्थ सब शास्त्रो का सिद्धान्त तथा ज्ञान का कारण कहा गया है। इसमे रुद्रयामल, तत्त्वयामल, विष्णुपुराण, गीता, कुलार्णवतन्त्र आदि से प्रमाण उद्धृत है।

—क० का० ४९

प्रभाकौल

उ०—महार्थमञ्जरीपरिमल मे।

प्रयोगक्रमदीपिका

प्रपञ्चसार पर पद्मपादाचार्य की टीका के ऊपर टीका।

प्रयोगपारिजात

उ०—प्राणतोपिणी मे।

प्रयोगमञ्जरी

लि०—(१) श्लोक स० ४२०। —अ० ब्र० ७९८४ (ख)

(२) (क) शिवपुर सद्ग्रामवासी काश्यपगोत्र अष्टमूर्ति-पुत्र श्रीरवि विरचित। (ख) श्लोक स० १९५०। इसमे जीर्ण मन्दिरो के जीर्णोद्धार की विधि, शिव तथा अन्यान्य देवदेवी-मूर्तियो की पुन प्रतिष्ठाविधि प्रतिपादित है। यह २१ पटलो मे पूर्ण है।

प्रत्यभिज्ञाहृदय

लि०—क्षेमराज विरचित, पूर्ण।

—डे० का० ४६७, (१८७५-७६ ई०)

प्रथमतन्त्र

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव तथा पुरश्चर्यार्णव मे।

प्रदोषपूजा

लि०—श्लोक स० २०० । —अ० व० १३६४४

प्रदोषपूजाविधि

लि०— —कैट् कैट् १।३५१

प्रद्योत

लि०—प्रयोगमञ्जरी की व्याख्या त्रिविक्रम विरचित, (क) श्लोक स० ४१०० पटल २१ वे तक, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ३७००। ग्रन्थकार ने लिखा है—

त्रिविक्रमोऽहं मञ्जर्या व्याख्या कुर्वे यथाश्रुतम् ।
तिरोहितार्थवाक्यानां पदानां वा यथामति ।।

इसमे रणचर्या, ज्ञानक्रिया, योगानुष्ठान, फलसिद्धि के उपाय, प्रतिष्ठा विधि आदि विषय प्रतिपादित हैं। —ट्रि० कै० ९९४

प्रपञ्चसार (सटीक)

लि०—(१) श्रीशङ्कराचार्य विरचित। तान्त्रिक अर्चना-पूजा के विषय पर, ३६ पटलो मे पूर्ण। —इ० आ० २५६१

(२) इस पर प्रपञ्चसारविवरण तथा प्रपञ्चसारसम्बन्धदीपिका—नामक दो टीकाएँ हैं। १म के कर्ता ज्ञानस्वरूप और २य के कर्त्ता उत्तमबोध (उत्तमबोध ?) हैं।

—ए० व० ६१७२ से ६१७६ तक

(३) (क) श्लोक स० २००० (मध्य और अन्त मे खण्डित)। (ख) श्लोक स० २००० (२४ वें पटल तक)। (ग) श्लोक स० ३००० (पहला और २रा पृष्ठ नही है)। (घ) श्लोक स० २५०० (३२ वे पटल तक)।

—अ० व० (क) १०६५२, (ख) ५१४५, (ग) ८०१७, (घ) ११३०८७

(४) इसमे ३३ पटल है। —ने० द० १६३३ (ढ)

(५) यह ३६ पटलो मे पूर्ण है। इसमे मूलक्रिया आदि की प्रकृति का निरूपण शिर, पाद आदि छह अङ्गो से पूर्ण जीव की बाह्य और आभ्यन्तर वृत्तियो का निरूपण, वर्णो के वीजस्वरूप का निरूपण, दीक्षाविधि, दीक्षा-ग्रहण के नियम, अक्षर-देवताओ के नाम निर्देशपूर्वक प्रवर आदि का कथन, प्राणाग्निहोत्रविधान इत्यादि विविध विषयो का वर्णन है। —नो० स० २।१२९-३०

(६) शङ्कराचार्य विरचित, श्लोक स० ३५३७, पूर्ण।

—र० म० ४९३१

(७) शङ्कराचार्य विरचित, पटल स० ३३ तथा श्लोक स० १५००। इस पर प्रपञ्चसार सग्रह नाम की टीका है। उसकी श्लोक स० १६००० है—तैं० म० १२००८

(८) (क) शङ्कराचार्य विरचित, श्लोक स० ३३०८, पूर्ण। (ख) श्लोक स० १०७९, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० २९१६, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २३९८०, (ख) २४२५५, (ग) २६६९५

(९) यह वृहत् और लघु भेद से दो प्रकार का है। इस पर ३ टीकाएँ है—(१) गीर्वाणयोगीन्द्र कृत, (२) ज्ञानस्वरूप कृत, (३) कर्ता का नाम अज्ञात। इसका देवनाथ ने रा० ला० २०१० (तन्त्रकौमुदी) मे उल्लेख किया है। —कैट् कैट् १।३५२

उ०—सौभाग्यभास्कर, तन्त्रसार, प्राणतोषिणी, ताराभक्तिसुधार्णव, आगमकल्पलता, ललितार्चनचन्द्रिका, आह्निकतत्त्व, आगमतत्त्वविलास तथा दान यूखम मे।

प्रपञ्चसार की टीकाए

लि०—(१) प्रपञ्चसारसम्बन्धदीपिका उत्तमप्रकाश-शिष्य उत्तमवोध कृत।

—नो० स० ४।१६४

(२) प्रपञ्चसार-व्याख्या—विज्ञानोद्योतिनी, श्लोक स० ६८००। यह शङ्कराचार्य विरचित सर्वागमसारभूत प्रपञ्चसार की व्याख्या ३० पटलो तक है।

—ट्रि० कै० ९८० (ख)

(३) प्रपञ्चसारविवरण, विज्ञानेश्वर विरचित।

—ट्रि० कै० ९८० (ग)

(४) (क) प्रपञ्चसारविवरण, पद्मपादाचार्य विरचित, श्लोक स० २९००।

(ख) ,, ,, ,, ,,

(ग) ,, ज्ञानस्वरूप कृत श्लोक स २४००।

(ख) श्लोक स० ४२५, अपूर्ण। इसमे ७ पटल पूरे तथा ८ वाँ अपूर्ण है। यह श्रीरवि विरचित प्रतीत नही होता। विषय—मूर्ति-निर्माण आदि, प्रतिष्ठा आदि ही प्रतीत होते है। —ट्रि० कै० (क) ९९१, (ख) ९९२

प्रयोगरत्नाकर (१)

लि०—(१) इसका नामान्तर है भक्तव्रातसतोपक। उमापति-पुत्र प्रेमनिधिपन्त विरचित। इसमे ९ रत्न (अध्याय) है—नित्यप्रात क्रियारत्न, नित्यतन्त्रस्नानरत्न, नित्यसन्ध्यारत्न, नित्यपूर्णतर्पणरत्न, सस्थावेदिरत्न, नित्यपूर्णभूतशुद्ध्यादिरत्न, नित्यपूर्ण-मातृकान्यासरत्न नित्यपूर्णमन्त्रविन्यासरत्न तथा नित्यान्तर्यागरत्न। —इ० आ० २५९५

(२) इस ग्रन्थ मे ३ प्रवाह (भाग) है—नित्य प्रवाह, नैमित्तिक प्रवाह और उत्तर (काम्य) प्रवाह। नित्य मे २१ रत्न (अध्याय) है, नैमित्तिक प्रवाह मे ४ रत्न है एव उत्तर प्रवाह मे २४ रत्न है। इसके कर्ता है उमापति-पुत्र गुणवतीगर्भज प्रेमनिधि, इनका जन्मस्थान कूर्माचल है, पन्तकुल मे जन्म हुआ था एवं वाराणसी मे निवास था।

—ए० व० ६५१०

(३) नामान्तर—भक्तव्रात सतोपक। प्रेमनिधि पन्त विरचित।

—कैट् कैट् १।३५६, २।७९, ३।७६

प्रयोगरत्नाकर (२)

लि०—(१) गौतमगोत्र कविता-स्वयवरपति श्रीकण्ठकाव्य-पुत्र श्रीवासुदेव विरचित, श्लोक स० ३४५०। इसमे ग्रथकार ने समोहनादि तन्त्रो का अवलोकन कर तथा स्वय भी अनुभव कर वशीकरण आदि १० तान्त्रिक कर्मो का प्रतिपादन किया है।

—ट्रि० कै० ८९५

(२) श्लोक स० २०४२, अपूर्ण। (इसके कर्ता का नामनिर्देश न होने से यह किसकी कृति है यह सदिग्ध ही है)। —स० वि० २४१८९

प्रयोगसरणि

लि०—(१) नागेश विरचित, श्लोक स० २००। —अ० व० २२५८

(२) नागेश विरचित। —कैट् कैट् १।३५६

प्रयोगसाधन

लि०—श्लोक स० ११२, अपूर्ण। —स० वि० २५७०१

उ०—आगमतत्त्वविलास, आगमकल्पलता, ताराभक्तिसुधार्णव, पुरश्चर्यार्णव, ललितार्चनचन्द्रिका तथा शारदातिलक-टीका राघवभट्टी मे।

प्रयोगसार

लि०—(१) गोविन्द विरचित। यह पूर्व और उत्तर दो भागो मे विभक्त है। दोनो मे २७-२७ पटल है।

(क) श्लोक स० ३७५०। यह २७ पटलो मे पूर्ण है। स्वप्नविचार, वशीकरण आदि तान्त्रिक कर्म तथा शकुनविचार प्रभृति विषय इसमे वर्णित है।

(ख) श्लोक स० ४०००। इसमे वशीकरण आदि के विविध उपाय प्रदर्शित है।

(ग) श्लोक स० ३५००, शेष पूर्ववत्।

(घ) श्लोक स० १४००, इसमे पहले वन्ध्यादोष आदि की निवृत्ति के उपाय वर्णित है।

(ङ) श्लोक स० १३००, इसमे स्त्रियो के वन्ध्यात्व दोष के कारण तथा उनकी निवृत्ति के उपाय, विषनिवृत्ति आदि विषय वर्णित है। इसमे १२ ही पटल है।

(च) श्लोक स० ४३००। इसकी अन्तिम पुष्पिका मे 'प्रयोगसारे' अष्टाचत्वारिंशत्पटल' लिखा है। इससे प्रतीत होता है इनमे कुछ पूर्व भाग और कुछ उत्तर भाग के पटल है। इसमे भी तान्त्रिक षट् कर्मो के उपायादि प्रतिपादित है।

—ट्रि०कै० (क) ९९६ से (च) १००१ तक

(२) —कैट् कैट् ३७६

प्रशस्तिभूतिपादकृतग्रन्थ

उ०—तन्त्रालोक-टीका जयरथी मे।

प्रश्नतन्त्र

लि०—केरलसिद्धान्त के अन्तर्गत, श्लोक स० ३६०, अपूर्ण।

—स० वि० २५३४६

प्रश्नविधान

लि०—पुरश्चर्यार्णव मे सप्तशती के श्लोको का प्रश्न विधान। श्लोक स० २०, पूर्ण।

—स० वि० २४४८३

प्रश्नेश्वरतन्त्र

लि०—श्लोक स० ३९२, पूर्ण, केरलसिद्धान्त के अन्तर्गत।

—स० वि० २५०९०

प्रस्तारसहस्राक्षरी

लि०—श्लोक स० ६० । —अ० व० ११७६८

प्रस्तावसंग्रह

लि०—श्लोक स० ३७८, पूर्ण । इसमे आरम्भ मे उड्डीश का प्रथम उपदेश है।
—स० वि० २४४७८

प्राणतोषिणी

लि०—(१) प्राणकृष्ण विश्वास जमीदार खडडह कलकत्ता की सहायता से रामतोषण शर्मा ने इसका निर्माण किया। इसमे सब तन्त्रो का सार प्रतिपादित है। सहयोगी तथा निर्माता—दोनो के नामो के आद्यन्त अक्षरो से इसका नामकरण हुआ।
—रा० ला० ९२५

(२) रामतोषण विद्यालङ्कार कृत, पूर्ण । —व० प० १३७३

(३) (क) रामतोषण भट्टाचार्य विरचित, श्लोक स० १८६०, अपूर्ण ।
(ख) प्राणतोषिणीतन्त्र, श्लोक स० १७१, अपूर्ण ।
—स० वि० (क) २४९७७, (ख) २६४९४

(४) यह तान्त्रिक विधियो पर विस्तृत सग्रहग्रन्थ है । रामतोषण शर्मा ने १८२१ ई० मे इसका निर्माण किया। —कैट् कैट् १।३६१

प्राणप्रतिष्ठा

लि०—(१) पूर्ण । भूतशुद्धि से सश्लिष्ट । —स० वि० २३८९४
(२) —कैट् कैट् १।३६१

प्राणप्रतिष्ठापद्धति

लि०— —कैट् कैट् १।३६१

प्राणप्रतिष्ठामन्त्र

लि०—(१) (क) पाण्डुरगदीक्षित विरचित, श्लोक स० २६, पूर्ण ।
(ख) श्लोक स० २३, पूर्ण । (ग) गोपालपटल से सश्लिष्ट गोपालपद्धति आदि के साथ। —स० वि० (क) २५३९५, (ख) २६२०१, (ग) २६४४५
(२) —कैट् कैट् १।३६१, २।८१

प्राणाग्निहोत्र

लि०—(१) ईश्वर-कार्तिकेय सवाद रूप। यह योगपरक तन्त्रग्रन्थ है।

—ए० व० ५९९० (प)

(२) —कैट् कैट् २।८१

प्राणेश्वरीकल्प

लि०—(१) प्राणेश्वरी देवी (दुर्गा देवी) की पूजाविधि इसमे वर्णित है।

—बी० कै० १३०६

प्रायश्चित्त

लि०—यह परानन्दतन्त्र का २३ वा अध्याय है, श्लोक स० ३०० ।

—अ० व० ५७०९

प्रायश्चित्तविधि

लि०—श्लोक स० ८००, कामिकतन्त्र, क्रियाक्रमद्योतिका तथा दीक्षाशास्त्र से सगृहीत । —अ० व० ७०३३ (ख)

प्रायश्चित्तविधिपटलादि

लि०—श्लोक स० २००० । यह ग्रन्थ प्रतिष्ठा और उत्सवविधि पर है ।

—अ० व० ६८३४

प्रायश्चित्तसमुच्चय

लि०—ईश्वरशिव-शिष्य श्रीहृदयशिव कृत । इसमे साधको की पाप-विशुद्धि के लिए आगम मे उपदिष्ट प्रायश्चित्त सक्षेप रूप से वर्णित है। —ने० द० १।१२९७

प्रासाददीपिकामन्त्रटिप्पन

लि०—यह तान्त्रिक सग्रहग्रन्थ है । इसमे मन्दिरप्रतिष्ठा आदि विविध विषय वर्णित है। यह २८ आह्निको मे पूर्ण है। इसमे प्रतिपादित विषय ये है—

स्नानादि कृत्य, सूर्यपूजा, भूतशुद्धि अन्तर्याग, लिङ्गशुद्धि, त्वरितापूजा, परिवारपूजा, पूजाविधि, भोजनविधि नित्यविधि, पवित्रकाधिवासन, पवित्रकविधि, दमनकविधि, समयदीक्षा, विशेषदीक्षा, निर्वाणदीक्षाधिवासन, निर्वाणदीक्षा, निर्वाणदीक्षा के भेद, आचार्य का अभिषेक, दीक्षोद्धार, अन्त्येष्टि, श्राद्धविधि, शिवाष्टक, प्रतिष्ठाधिवासन, प्रतिष्ठाविधि, प्रासादप्रतिष्ठा, विष्णुप्रतिष्ठा तथा गृहप्रतिष्ठा । —ने० द० १।१४५६

प्रासादपरापद्धति

लि०—श्लोक स० २०००। —अ० व० १०७११

प्रेतकारिणीतन्त्र

उ०—ताराभक्तिसुवार्णव मे।

प्रेमप्रबन्ध

लि०—प्रेमराज विरचित। श्लोक स० १५००। अपूर्ण। —अ० व० ९९७०

प्रोद्‌गीथागम

यह अष्टाविंशति (२८) रुद्रागमो मे अन्यतम है।

लि०—(१) फेत्कारीय या फेरवीय भी इसके नामान्तर हैं। इसमे मारण, मोहन, उच्चाटन आदि षट् कर्मो का प्रतिपादन है। तन्त्रसग्रह और सुलभतन्त्रप्रकाश मे (२० पटलो मे) इसका प्रकाशन हो चुका है। —ए० व० ५९८१

(२) शङ्कर-पार्वती सवादरूप। दक्षिण कालिका का दक्षिणत्व और शिवारूढत्व का निरूपण, विविध मन्त्रो का निरूपण, उग्रतारा, त्रिपुरा आदि की उत्पत्ति, दशमहाविद्याओ की उत्पत्ति, कालिका का महाविद्यात्व, पूजाविधि आदि, भुवनेश्वरी आदि महाविद्याओ का निरूपण, गुरुक्रमनिरूपण, प्रचण्डचण्डिका के बीजमन्त्र, पूजन आदि का निरूपण, षोडशाक्षर आदि मन्त्रो का निरूपण इत्यादि विषय इसमे वर्णित हैं। —नो० स० १।२४४

(३) २२ पटलो तक, अपूर्ण। मुद्रित पुस्तको मे २० ही पटल है। —ब्र० प० ८३९

(४) ईश्वर प्रोक्त, पत्र ३४। —ज० का० १०५४

(५) (क) श्लोक स० ९७२, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ११५३ अपूर्ण (?)। (ग) भैरव प्रोक्त, श्लोक स० १२०० अपूर्ण (?)। (घ) अपूर्ण।

—स० वि० (क) २४८२३, (ख) २५९७३, (ग) २५१००, (घ) २६३९२

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव, पुरश्चर्यार्णव, प्राणतोषिणी, मन्त्रमहार्णव, ललितार्चनचन्द्रिका, श्यामारहस्य, तारारहस्यवृत्ति, आगमतत्त्वविलास, सर्वोल्लास तथा तन्त्रसार मे।

फेत्कारीतन्त्र

लि०—श्लोक स० २००। —अ० ब० १०६२७ (ग)

उ०—श्यामारहस्य तथा कालिकासपर्याविधि मे।

फेत्कारीय

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव तथा तन्त्रसार मे।

फेरवीय

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव, पुरश्चर्यार्णव तथा तारारहस्यवृत्ति मे।

बकारादिबालात्रिपुरसुन्दरीरहस्य

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत। पूर्ण। —र० म० ११३३

(२) रुद्रयामल से गृहीत। —कैट् कट् २।८२

बटुकदीपदान

लि०—श्लोक स० ३६, अपूर्ण। —स० वि० २६६८०

बटुकदीपदानप्रकार

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, पूर्ण, श्लोक स० १७६।

—स० वि० २४००८

बटुकदीपदानप्रयोग

लि०—बटुक-पूजापद्धति के साथ। अपूर्ण। दोनो की समिलित श्लोक स० ४५।

—स० वि० २५८४९

बटुकदीपदानविधि

लि०—(क) श्लोक स० ९६, पूर्ण। (ख) अपूर्ण। (ग) रुद्रयामलीय, श्लोक स० ७०, पूर्ण। —स० वि० (क) २५४१७, (ख) २५५२, (ग) २६६५०

बटुकदीपविधि

लि०—श्लोक स० २४, अपूर्ण। —स० वि० २४८७०

बटुकनाथपद्धति

लि०—पूर्ण। —व० प० १३८५

बटुकन्यास

लि०—श्लोक स० १४, अपूर्ण। —स० वि० २५९१०

बटुकपञ्चाङ्ग

लि०— —कैट् कैट् १।३६६

बटुकपञ्जर

लि०— —कैट् कैट् १।३६६

बटुकपञ्चाङ्गप्रयोगपद्धति

लि०—(१) श्लोक स० १२४८, पूर्ण।

—डे० का० ३९० (१८८२-३ ई०)

(२) —कैट. कैट् १।३६६

बटुकपटल

लि०—श्लोक स० ६४, पूर्ण। —स० वि० २४६९६

बटुकपूजनपद्धति

लि०—(क) रामभट्ट विरचित, श्लोक स० १४६, अपूर्ण।
(ख) श्लोक स० ६०, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० २८, अपूर्ण।
—स० वि० (क) २५९०५, (ख) २५९११, (ग) २६०७१

बटुकपूजनयन्त्रोद्धार

लि०—(क) पूर्ण। (ख) श्लोक स० ३९, अपूर्ण।
—स० वि० (क) २६०५७, (ख) २६०६१

बटुकपूजादेवता

(वीरसावन देवता सहित)

लि०—श्लोक स० ६६, पूर्ण। —स० वि० २५९०६

बटुकपूजापद्धति

लि०—(१) (क) इसमे वटुकदीपदानप्रयोग भी समिलित है। श्लोक स० ६८, अपूर्ण। (ख) वालम्भट्ट कृत, श्लोक स० २०५, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० ३१५, अपूर्ण। (घ) श्लोक स० ५६, अपूर्ण,

—स० वि० (क) २५८४०, (ख) २५९०७, (ग) २५९०८, (घ) २५९१२

(२) —कैट् कैट्. १।३६६, २।८२

बटुकभास्कर

लि०—(१) (क) रमानाथ विरचित श्लोक स० ६००० ।
(ख) श्लोक स० २१००, अपूर्ण ।

—अ० व० (क) ९४९९, (ख) ३४९४

(२) रमानाथ विरचित, श्लोक स० ८३९४, पूर्ण ।

—स० वि० २४९६१

बटुकभैरवकल्प

लि०—इसमे क्षेत्रपालकल्प भी समिलित है। श्लोक स० १७०, पूर्ण ।

—स० वि० २५९१३

बटुकभैरवतन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० १२५५, अपूर्ण । —स० वि० २४५८०
(२) —कैट् कैट् १।३६६
उ०—सौन्दर्यलहरी-टीका लक्ष्मीधरी मे ।

बटुकभैरवतरङ्ग

लि०—इसमे बटुकभैरव-पूजन का विस्तार मे प्रतिपादन है।

—ए० व० ६४७८

बटुकभैरवदीपदान

लि०—(१) इसमे बटुकभैरव के लिए प्रज्वलित दीपदानप्रयोग वर्णित है।

—बी० कै० १३६८

(२) भैरवीतन्त्र मे गृहीत । —कैट् कैट् १।३६६, २।८२

बटुकभैरवदीपदानविधि

लि०—श्लोक स० ५६, पूर्ण । —स० वि० २५९१५

बटुकभैरवदीपविधि

लि०—श्लोक स० २४२, अपूर्ण । —स० वि० २५९१४

बटुकभैरवपञ्चाङ्ग

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक स० ३६२, पूर्ण ।

—र०म० ४८५०

(२) (क) श्लोक स० १२८, पूर्ण (?)। (ख) श्लोक स० २३४, पूर्ण।

—स० वि० (क) २३९३५, (ख) २४१८८

(३) —कैट् कैट् १।३६६

बटुकभैरवपद्धति

लि०—(१) (क) श्लोक स० ३००। (ख) श्लोक स० ५४०। (ग) श्लोक स० ५५०। —अ० व० (क) ९१४५, (ख) ५५९७, (ग) ९९०

(२) मन्त्रचिन्तामणि प्रोक्त, पत्रे २३। —रा० पु० ५००४

बटुकभैरवपुरश्चरणविधि

लि०—उद्दण्डमाहेश्वरतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० ७३६, पूर्ण।

—स० वि० २३८३९

बटुकभैरवपूजन

लि०—श्लोक स० १८, अपूर्ण। —स० वि० २५०५८

बटुकभैरवपूजनविधि

लि०—श्लोक स० १८०, पूर्ण। —स० वि० २६६६५

बटुकभैरवपूजापद्धति

लि०—(१) विश्वसारोद्धारतन्त्र मे उक्त, पत्रे २७।

—रा० पु० ४१३५

(२) (क) श्लोक स० १३२, पूर्ण। (ख) इसमे दत्तात्रेयतन्त्र भी सम्मिलित है दोनो की श्लोक स० १२५४, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० ६४५, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४४९६, (ख) २५२५०, (ग) २५९१८

(३) वामदेवसहिता से गृहीत। —कैट् कैट् १।३६६

बटुकभैरवपूजाप्रयोग

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक स० २१२, पूर्ण।

—स० वि० २५०७७

बटुकभैरवपूजाविधि

लि०—

—कैट् कैट् ३।७८

बटुकभैरवबकारादिसहस्रनाम

लि०—विश्वसारोद्धार मे रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत देवी-हर सवादरूप। इसमे वटुक भैरव के वकारादि सहस्रनाम वर्णित हैं। —ए० व० ६७५०

बटुकभैरवमन्त्रपुरश्चरणसंख्याविचार

लि०—श्लोक स० २०८, अपूर्ण। —स० वि० २५९८२

बटुकभैरवमन्त्रप्रयोग

लि०—श्लोक स० ६२, पूर्ण। —स० वि० २६२७२

बटुकभैरवविधान

लि०—(१) मन्त्रचिन्तामणि मे उक्त, श्लोक स० ३७०, पूर्ण। —स० वि० २६१५१

(२) शिवागमसार से गृहीत। —कैट् कैट् १।८२

बटुकभैरवसहस्रनाम

लि०—(१) भैरवतन्त्र से गृहीत।

(२) रुद्रयामल से गृहीत। —कैट् कैट् १।३६६, २।७८

बटुकभैरवापदुद्धरणपटल

लि०— —कैट् कैट् १।३६६

बटुकमालामन्त्र

लि०—इसमे वटुकभैरव-मालामन्त्र वर्णित है। —ए० व० ६४७९

बटुकस्तवपुरश्चरणप्रयोग

लि०—श्लोक स० ५७, अपूर्ण। —स० वि० २६०७०

बटुकादिबलिदानविधि

लि०—ज्ञानार्णव मे गृहीत, श्लोक स० ५१, पूर्ण। —स० वि० २६४५९

बटुकार्चन

लि०—इसमे वटुक भैरव के पुरश्चरण, पूजा और दीपदान का वर्णन किया गया है। —ए० व० ६४८०

बटुकार्चनचन्द्रिका

लि० (१)—श्लोक स० ६०० । —अ० व० १०९६१

(२) श्रीनिवास विरचित । —कैट् कैट् १।३६६

बटुकार्चनदीपिका

लि०—(१) काशीनाथ विरचित, श्लोक स० ६९६, अपूर्ण ।

—स० वि० २४००७

(२) काशीनाथभट्ट विरचित । —कैट् कैट् १।३६६

बटुकार्चनपद्धति

लि०—(१) इसका दूसरा नाम भैरवार्चनचन्द्रिका भी है। बालभट्ट विरचित, श्लोक स० १५०० । —अ० व० १०६५३

(२) (क) बालभट्ट विरचित, श्लोक स० १८, अपूर्ण । (ख) श्लोक स० ३५, अपूर्ण । —स० वि० (क) २६०५४, (ख) २६०५५

बटुकार्चनसंग्रह

लि०—भट्ट दिवाकर-पौत्र, रामभट्ट-पुत्र बालम्भट्ट (भट्ट ?) कृत यह ग्रन्थ ८ अर्चनो (अध्यायो) मे पूर्ण है। इसमे बटुकभैरव की पूजा का विस्तार से वर्णन किया गया है तथा तान्त्रिक सक्षिप्ततर नित्य होम, भस्मसाधन, स्तोत्र, कवच, सहस्रनाम के समग्र आवर्तन पर विचार, दिशा-नियम, शान्ति आदि काम्य कर्मो मे पूजाविधान आदि विषय भी वर्णित हैं। —ए० व० ६४६६

बटुकोपासनविधि

लि०—श्लोक स० १७०, अपूर्ण । —स० वि० २६२८६

बद्धयोनिमहामुद्राकथन

लि०—(१) तोडलतन्त्र के अन्तर्गत यह शिव-पार्वती संवादरूप है। यह तोडल तन्त्र का ३ रा और ४ था पटल ही है। इनमे से पहले मे तारा की पूजा मे उपयोगिनी बद्ध-योनि नाम की मुद्रा का उपदेश, मन्त्र आदि तथा उनके जप आदि का प्रकार वर्णित है एव दूसरे मे तारापूजनपद्धति वर्णित है। इसकी श्लोक स० १५० है।

—रा० ला० ११६

बलिकल्प

लि०—श्लोक स० ४२५, अपूर्ण । इसमे देवी चण्डिका के लिए बलिप्रदान-विधि प्रतिपादित है । —ट्रि० कै० १०२७ (ग)

बलिदान

लि०—श्लोक स० ८० । —अ० ब० ४५१२

बलिदानमन्त्र

लि०—इसमे बटुक, क्षेत्रपाल, योगिनी तथा गणपति के लिए बलि प्रदान के मन्त्र वर्णित हैं । —ए० ब० ६२८२

बलिदानविधि

लि०—श्लोक स० ४८, पूर्ण । —स० वि० २६३०५

बलिविधान

लि०—राघवभट्ट विरचित (कालीतत्त्वान्तर्गत), श्लोक स० ३२८, अपूर्ण ।

—स० वि० २४३५३

बलिविधि

लि०—यह बटुकन्यास के साथ है। दोनो की सम्मिलित श्लोक स० १४ दी गयी है । दोनो अपूर्ण हैं । —स० वि० २५११०

बसवराजीय

लि०—वीरमाहेश्वरसारोद्धार से गृहीत, श्लोक स० १७००, अपूर्ण ।

—अ०ब० ७११६

बहिर्मातृकातन्त्र

लि०— —कैट् कैट् ३।७८

बहुदैवत्य (तन्त्र)

लि०—आरवाटकुलवासी यज्ञ-पुत्र नारायण विरचित । श्लोक स० ४९४० । यह ४ पटलो मे पूर्ण है। ईश्वरादि देवताओ की पूजाविधि इसमे वर्णित है।

—ट्रि० कै० १००५

उ०—सर्वदर्शनसग्रह के शैवदर्शन मे ।

बालबोधतन्त्र

लि०—काशीनाथ विरचित, श्लोक सं० ६००। —अ० व० ११२४३ (ख)

बालभैरवसहस्रनाम

लि०—रुद्रयामल से गृहीत। —कैट् कैट्. ३।७८

बालभैरवीदीपदान

लि०—भैरवीतन्त्र के अन्तर्गत। इसमें बालभैरवी, जो दुर्गा का एक रूप है, के लिए प्रज्वलित दीपप्रदान की विधि प्रतिपादित है। —बी० कै० १२४२

बालरक्षणविधान

लि०—कपिलसंहिता से गृहीत। —कैट्. कैट् १।३७२

बालभैरवीसहस्रनाम

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, हर-गौरी संवादरूप। इसमें सहस्र नामों द्वारा बालभैरवी की स्तुति की गयी है। —नो० सं० १।२४६

बालरत्नावली

लि०—ज्ञानशिव विरचित। —कैट् कैट् ३।७९

बालाकल्प

लि०—दामोदर त्रिपाठी विरचित। —कैट्. कैट् १।३७२

बालाकल्पलता

लि०—श्लोक सं० ५८, अपूर्ण। —सं० वि० २४१२४

बालाकवच

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० १६। —अ० व० ११४२०

(२) सिद्धयामलतन्त्र से गृहीत। —कैट् कैट् १।३७२, ३।७९

बालाखड्गमाला

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, गौरी-ईश्वर संवाद रूप। श्लोक सं० ६५। इसमें बाला त्रिपुरसुन्दरी का परमात्मा द्वारा प्रकीर्तित परम गुह्य मालामन्त्र (स्तुति रूप) प्रतिपादित है। —ट्रि० कै० ११०६ (सी)

बालाजप

लि०—(१) इसमे त्रिपुरसुन्दरी देवी के विविध मन्त्र और बीजमन्त्रो के जप की विधि प्रतिपादित है। पन्ने ४। —क० का० ९०

बालातन्त्र

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा आगमतत्त्वविलास मे।

बालात्रिपुरसुन्दरीकवच

लि०—(१) सिद्धयामल से गृहीत, श्लोक स० २०।

—अ० व० ६०२६ (ख)

(२) —कैट् कैट् ३।७९

बालात्रिपुरसुन्दरीजपहोमादि

लि०—श्लोक स० ३०। —अ० व० १३९१३

बालात्रिपुरसुन्दरीपद्धति

लि०—(१) मन्त्रमहोदधि से गृहीत। इसमे त्रिपुर-सुन्दरी के उपासको की आह्निक क्रियावली तथा तान्त्रिक विधियो का वर्णन है।

—इ० आ० २६०२

(२) —कैट् कैट् ३।७९

बालात्रिपुरसुन्दरीनित्यपुरश्चरण (पूर्वखण्ड)

लि०—श्लोक स० ६०। —अ० व० ८८६९

बालात्रिपुरसुन्दरीनित्यपूजापद्धति

लि०—रुद्रयामल मे गृहीत, श्लोक स० ६००। —अ० व० ८०५४

बालात्रिपुरसुन्दरीपञ्चाङ्ग

लि०—(१) श्लोक स० ३००। —अ० व० १०७३७

(२) श्लोक स० ४०५, अपूर्ण। —स० वि० २६२७१

(३) (बालासहस्रनाम मात्र) यह रुद्रयामल के अन्तर्गत उमा-महेश्वर सवादरूप है। इसमे बाला त्रिपुरसुन्दरी देवी के हजार नाम वर्णित हैं।

—क० का० ९२

(४) (क) (बालात्रिपुरसुन्दरीहृदय) यह ज्ञानार्णवतन्त्र के अन्तर्गत है। इसकी श्लोक स० ३५ है। बालात्रिपुर-सुन्दरी की पूजा इसमे प्रतिपादित है।

(ख) (वालात्रिपुरमुन्दरीकवच) यह विश्वसारतन्त्रान्तर्गत देवी-ईश्वर सवाद-रूप है। श्लोक स० २०। इसमे वाला सुन्दरी की स्तुति के साथ उपासक (साधक) द्वारा स्वशरीर के विविध अवयवो की रक्षा की जाती है।

—ट्रि० कै० (क) ११०६ (ग), (ख) ११०६ (घ)

(५) (क) (वालास्तवराज) श्लोक स० १०। इसमे त्रिपुरसुन्दरी देवी की स्तुति प्रतिपादित है। (ख) (वालात्रिपुरसुन्दरीस्तवराज) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक ३०। (ग) (वालास्तोत्र) श्लोक स० ३०, रुद्रयामलान्तर्गत। (घ) (वालाष्टोत्तरशत नाम) श्लोक स० ३६।

—ट्रि० कै० (क) ११०६ (ङ), (ख) ११०६ (च), (ग) ११०६ (क)

बालात्रिपुरसुन्दरीपद्धति

उ०—मन्त्रमहोदधि मे।

बालात्रिपुरसुन्दरीपूजनप्रयोग

लि०— —कैट् कैट् १।३७२

बालात्रिपुरसुन्दरीपूजाक्रम

लि०—इसमे वाला त्रिपुरसुन्दरी की पूजा का विवरण वर्णित है।

—म० द० ५६७९

बालात्रिपुरसुन्दरीपूजापद्धति

लि०—(क) श्लोक स० ६८, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ९३, पूर्ण। इसमे भूतशुद्धि भी वर्णित है। —स० वि० (क) २४१७८, (ख) २६०७८

बालात्रिपुरसुन्दरीपूजाविधि

लि०—इसमे वाला त्रिपुरसुन्दरी की पूजाविधि साङ्गोपाङ्ग वर्णित है।

—म० द० ५६८०

बालात्रिपुरसुन्दरीमन्त्र

लि०—श्लोक स० २५, अपूर्ण। —स० वि० २६६८५

बालात्रिपुरसुन्दरीमन्त्रजपविधि

लि०—श्लोक स० २६, पूर्ण। —सं० वि० २६४१५

बालात्रिपुरसुन्दरीमन्त्रविधि

लि०—श्लोक स० २०। —अ० व० १३९१४

बालात्रिपुरसुन्दरीसंक्षिप्तपूजा

लि०—श्लोक स० ४००। —अ० व० १६८०

बालात्रिपुरापञ्चाङ्ग

लि०—श्लोक स० ११५४, पूर्ण। —र० म० ११४९

बालात्रिपुरापटल

लि०—(१) रुद्रयामल से गृहीत, श्लोक स० १५०। —अ० व० १६९४

(२) (क) ज्ञानार्णव से गृहीत, श्लोक स० ६०, पूर्ण।

(ख) श्लोक स० ८४, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४४१९, (ख) २४६२१

बालात्रिपुरापद्धति

लि०—(१) ज्ञानार्णव से गृहीत। श्लोक स० २००।

—अ० व० १३६४०

(२) (क) श्लोक स० ९८, अपूण। (ख) श्लोक स० २१७, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २५७०९, (ख) २६०५६

बालात्रिपुरापूजनपद्धति

लि०—श्लोक स० १०००। —अ० व० १०४२२

बालात्रिपुरापूजा

लि०—ज्ञानार्णव से गृहीत, श्लोक स० ६००। —अ० व० ५३३९

बालात्रिपुरापूजापद्धति

लि०— —कैट् कैट्. ३।७९

बालात्रिपुरापूजाप्रकार

लि०—शिवभट्ट-सुत विरचित। श्लोक स० २००, पूर्ण। —स वि ५२३०२

बालात्रिपुराराधनविधि

लि०—श्लोक स० २८०। —अ० व०६५९

बालात्रिपुरार्चनपद्धति

लि०—श्लोक सं० २०० । —अ० व० १२७०

बालात्रिपुरासंक्षेपार्चनपद्धति

लि०—श्लोक स० २२० । —अ० व० ११४

बालात्रिपुरासपर्यापद्धति

लि०—श्लोक स० ९०० । —अ० व० ५३०८

बालादित्य

लि०—त्रिपुरापूजा की पद्धति के निर्देशक इस ग्रन्थ मे ९ मयूख है। अन्तिम (९ म) मयूख मे स्तोत्र प्रतिपादित है । —ए० व० ६३६९

बालादेवीपूजाप्रयोग

लि०—यह तन्त्रनिवन्ध भी बाला त्रिपुरसुन्दरी की पूजा के सम्बन्ध मे प्रकाश डालता है । —क० का० ९१

बालापञ्चाङ्ग

लि०—(१) श्लोक स० ६०० । —अ० व० ३४७३

(२) रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० ८५२, पूर्ण । —र० म० ४८१९

(३) (बालाकवच मात्र) इसमे बाला त्रिपुरसुन्दरी की स्तुति के साथ साधक के शरीर के विविध अङ्गो की रक्षा का विधान है। —क० का० ८७

(४) (बालासहस्रनाम मात्र) श्लोक स० २३० । इसमे बाला त्रिपुरसुन्दरी की दिव्य सहस्र नामो द्वारा स्तुति की गयी है। —ट्रि० कै० ११०६ (क)

बालापटल

लि०—(१) श्लोक स० ७५, पूर्ण । —म० वि० २४८३५

(२) —कैट् कैट् ३१७९

बालापद्धति

लि०—(१) (क) श्लोक सं० २०० । (ख) श्लोक स० ४३० । (ग) श्लोक स० ४३० । (घ) श्लोक सं० ४३० । (ङ) श्लोक सं० ९०, रुद्रयामल से गृहीत । (च) श्रीनिवास विरचित, श्लोक स० ४५० । यह श्रीनिवास विरचित शिवार्चनचन्द्रिका का

२२ वाँ पटल है। (छ) चैतन्यगिरि कृत, श्लोक स० ९६०। (ज) चैतन्यगिरि विरचित, श्लोक स० ९६०। (झ) दक्षिणामूर्तिसहिता से गृहीत, श्लोक स० १५०।

—अ० व० (क) ९०४, (ख) ९८०, (ग) २०८, (घ) ५७३३, (ङ) ५३३८, (च) ५७५८, (छ) ६७०, (ज) ८०५१, (झ) ८०५२

(२) —भ रि २८९

(३) इसमे बाला देवी की साङ्गोपाङ्ग सपर्या वर्णित है। सहस्रदल-कर्णिका मे बाला की सब उपचारो द्वारा मानसिक पूजा कर तत्-तत् मन्त्रो से कुलदीपग्रहण आदि का प्रतिपादन किया गया है। —म० द० ५६८१ से५६८३ तक

(४) दामोदर त्रिपाठी द्वारा विरचित, श्लोक स० ३११, पूर्ण।

—स० वि० २४०१७

(५) चैतन्यगिरि अवधूत कृत। —कैट् कैट् २।८४

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे चैतन्यगिरि अवधूत का उल्लेख है।

बालापद्धतिकवचादि

लि०—श्लोक स० २५५, पूर्ण। —र० म० १०७५

बालापरमेश्वरीमालामन्त्र

लि०— —कैट् कैट् ३।७९

बालापूजनपद्धति

लि०—(१) (क) श्लोक स० २५०। (ख) ईश्वरानन्द-शिष्य अमृतानन्द विरचित, श्लोक स० २५०। —अ० व० (क) ८०८, (ख) १३४३६

बालापूजनविधि

लि०— श्लोक स० २०२, अपूर्ण। —स० वि० २४१५९

बालापूजा

लि०—श्लोक स० ३०। —अ० व० ३४७४

बालापूजापद्धति (१)

लि०—(१) इसमे उपासक द्वारपूजा आदि पूर्वाङ्ग का अनुष्ठान कर श्रीपात्र को उठा कर श्रीदेवी को अर्पण कर स्वय ग्रहण करे, कौलपात्र दे एव शान्तिपाठस्तव करे। तदुपरान्त नीराजन करे, यों पूजाविधि वर्णित है। —म० द० ५६८४

वालापूजापद्धति (२)

(२) (क) विद्याराय कमलाकर विरचित, श्लोक सं० १३०।
(ख) श्लोक स० १५०। (ग) श्लोक स० ७००, रुद्रयामल से गृहीत।
—अ० व० (क) ७२, (ख) ६७८, (ग) १६८३

बालापूजाविधान

लि०—महात्रिपुरासिद्धान्त के अन्तर्गत उमा-महेश्वर सवाद रूप इस ग्रन्थ मे, दस दिक्पाल तथा द्वारपालो की पूजा कर एकाग्रचित्त से भूतशुद्धि करना, यन्त्र लिखना, यन्त्र के मध्य मे विन्दु लिखना, त्रिकोण तथा पट्कोण लिखना वतलाया गया है। दक्षिण ओर परोत्तम पूजा-द्रव्य की स्थापना कर उसके दक्षिण ओर कलश स्थापन का विधान किया गया है। इस तरह सागोपाङ्ग पूजा कर उपासक के सकल मनोरथ सिद्ध होते है, यह कहा गया है। —म० द० ५६८५–८६

बालामन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० ४०। इस ग्रन्थ के अन्त मे त्रिपुरा-गायत्री भी सनिविष्ट है।
—अ० व० ३४७५

(२) (क) श्लोक स० १९, पूर्ण। (ख) विमलानन्दतरगिणीतन्त्रातर्गत, श्लोक स० ७८, पूर्ण। —सं० वि० (क) २४५९७, (ख) २४५९८

वालार्चनचन्द्रिका (१)

लि०—श्लोक स० ४७०, पूर्ण। —स० वि० २६५३९

बालार्चनचन्द्रिका (२)

लि०—लालचन्द्र विरचित, श्लोक स० ९२६, पूर्ण।
—स० वि० २४०१८

वालार्चनदीपिका

लि०—लालचन्द्र कृत, श्लोक स० ९६६, पूर्ण। —सं० वि० २४०१८

वालार्चनपद्धति

लि०—यह वाला त्रिपुरसुन्दरी की पूजनपद्धति है। —ए० व० ६३७०
उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

बालार्चाकल्पवल्लरी

लि०—दामोदर त्रिपाठी विरचित, श्लोक स० १५८, अपूर्ण।

—स० वि० २४८३६

बालार्चाक्रमदीपिका

लि०—(१) श्लोक स० ७००। —अ० व० ३५३४

(२) श्लोक स० ३८५, अपूर्ण। —स० वि० २५२६९

(३) इसमे बाला त्रिपुरसुन्दरी की पूजा का क्रम भली भाँति विस्तार के साथ प्रतिपादित है। —क० का० ८९

बालार्चापद्धति

लि०—(१) श्लोक स० १७८, पूर्ण। —स० वि० २५३०१

(२) नीकण्ठ विरचित। —कैट् कैट् १।३७२

बालाविलासतन्त्र

लि०—(१) इस तन्त्र मे कालमुखी-विश्वकील रामकवच, तकारादि स्वरूप सहस्रनाम आदि अन्यान्य स्तोत्र और कवच प्रतिपादित ह। —व० प० ११९२

(२) कालमुखी-विश्वकीलकवच मात्र। —कैट् कैट् १।३७२

उ०—कालिकासपर्याविधि मे।

बालाशापविमोचनमन्त्र

लि०—श्लोक स० १०, पूर्ण। —स० वि० २४१२६

बालाहृदयमन्त्रप्रयोग

लि०—श्लोक स० २०, अपूर्ण। —स० वि० २६२७४

बालिकार्चनदीपिका

लि०—शिवरामाचार्य विरचित। —कैट् कट् १।३७३

बाह्यमातृकान्यास तथा महाषोढान्यास

लि०—ऊर्ध्वाम्नायान्तर्गत यह विरूपाक्ष परमहस परिव्राजक द्वारा सिद्ध किया हुआ है। इसमे अकार आदि ५० वर्णो से शरीर स्थित मुख आदि स्थानो मे न्यास का विधान है। श्लोक स० १५०। —रा० ला० ३५७

बाह्यान्तःपूजाविचार

लि०—श्लोक स० ३०, पूर्ण। —स० वि० २६१०९

बिन्दुचक्र

श्रीकण्ठी के अनुसार चतुःषष्टि (६४) तन्त्रो मे अन्यतम।

बिन्दुबीजादिविमर्श

लि०—श्लोक स० १८०, अपूर्ण। —स० वि० २६६९४

बिन्दुयामल

लि०—त्रिपुराहृदय मात्र। —कैट् कैट् १।३७३

बिन्दुसारतन्त्र

योगरत्नावली का मूलग्रन्थ। —ए० व० ६६०२

विन्ध्यवासिनीपूजाप्रयोग

लि०—यह ग्रन्थ विन्ध्यवासिनी देवी की पूजा-प्रक्रिया का निर्देशक है। देवी की पूजा के नियमो का प्रतिपादन करते हुए भगवती के शूलिनी नाम का भी इसमे सक्षेपत कृष्णानन्द के तन्त्रसार के अनुसार निर्देश किया गया है। —ए० व० ६३९८

बिम्बप्रतिबिम्बवाद

लि०—अभिनवगुप्त विरचित, पूर्ण। —डे० का० ४६९ (१८७५-७६ ई०)

बिम्बागम

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची मे।

बिल्वफलहवनप्रयोग

लि०—श्लोक सं० १२५। —अ० व० ११७५५

बिल्वमूलसाधन

लि०—पूर्ण। —स० वि० २४८५५

बीजकोष (१)

लि०—(१) दक्षिणामूर्ति प्रोक्त। ऋषिवृन्द के प्रश्न पर दक्षिणामूर्ति ने इस बीजकोष का प्रतिपादन किया है। इसमे अकार से लेकार तथा क्षकार पर्यन्त मातृकावर्णो मे मन्त्रबीजत्व का निरूपण है। —रा० ला० २५७२

(२) इस ग्रन्थ मे तन्त्रो मे प्रयुक्त होने वाले विविध वीजो के नाम और रूप दिये गये है। —ए० व० ६२९६–६२९८

(३) दक्षिणामूर्ति विरचित, श्लोक स० १८८, पूर्ण।

(४) दक्षिणामूर्ति प्रोक्त। दक्षिणामूर्ति कृत वीजकोपोद्धारटीकासहित।

—कैट् कैट् १।३७४

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

बीजकोष (२)

लि०—(१) भूतभैरवतन्त्र से गृहीत। —ए० व० ६१४५

(२) क्रोधीशभैरव विरचित यह ग्रन्थ भैरवतन्त्र के अन्तर्गत है। इसमे ॐ श्री इत्यादि २४ वीजमन्त्रो का उद्धार प्रतिपादित है। —रा० ला० ४७९

बीजचिन्तामणि

लि०—हर-गौरी सवादरूप। श्लोक स० २८० और पटल स० ९। इसमे प्रतिपादित विषय है—वर्णो की प्रशसा, वर्णतत्त्व, वीजमन्त्र, मन्त्रो के उद्धार, वासना, मन्त्रचैतन्य निरूपण, ध्यान विशेष आदि। —रा० ला० २६४

उ०—मन्त्रमहार्णव तथा प्राणतोषिणी मे।

बीजनिघण्टु

लि०—इसका दूसरा नाम मन्त्रनिघण्टु है।

—कैट् कैट् १।३७४, २।८४, ३।८०

बीजमुक्तावली

उ०—शक्तिरत्नाकर मे इसका उल्लेख है। —कैट् कैट् १।३७४

बीजवर्णसंकेत

लि०—(१) इसमे विभिन्न वीज-मन्त्रो के नाम और स्वरूप का वर्णन है एव वीज-मन्त्रो, जो तन्त्रो मे प्रयुक्त होते है, की सूची (तालिका) भी दी गयी है।

—ए० व० ६२९६–६२९८

(२) श्लोक स० ६३, अपूर्ण। —स० वि० २५५६७

बीजवर्णाभिधानटीका

लि०—गौरमोहनभट्ट विरचित। —नो० स० ३।२७८

बीजव्याकरणमहातन्त्र (सटीक)

लि०—यह शिव-पार्वती सवादरूप है। इसमे छह अध्याय हैं। चक्र-विचार, मास आदि का निर्णय, दीक्षाविधि, पुरश्चरण, जपमाला-सस्कार, कालीपूजा, नित्यहोमविधि, कालीकवच, दक्षिणकालीकवच, कुमारीपूजा, कालिकासहस्रनाम, तारामन्त्रप्रकरण, तारावामना, ताराष्टक, नीलसरस्वतीकवच, कुलसर्वस्वनामस्तोत्र आदि अनेक विषय वर्णित हैं।

इस पर उपलब्ध टीकाएँ—

(१) महातन्त्रभावार्थदीपिका खिरिदेशनिवासी रामानन्ददेव शर्मा वाचस्पति भट्टाचार्य (चैतन्यसिह, मल्लमहीन्द्रपुत्र के समकालीन) द्वारा विरचित।

(२) शैवव्याकरणीयसग्रहभावार्थटीका-टिप्पणी रामतनुशर्मा (रामानन्द वाचस्पति भट्टाचार्य शिष्य) विरचित। —इ० आ० २५७१

(३) इस पर रामानन्ददेव शर्मा की टीका है। उस पर उनके शिष्य रामतनु की व्याख्या है। —कैट् कैट्. २।८४

बीजसंकेत

लि०— —कैट् कैट् ३।८०

बीजागमसारसंग्रह

लि०—विनायकरहस्यान्तर्गत श्लोक स० २०००, अपूर्ण।

—अ० व० ११३९६

बीजाभिधान

लि०—(क) श्लोक सं० ७६, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ५१, पूर्ण। वर्णोच्चारणविधि भी इनमे सम्मिलित है। —स० वि० (क) २६१३५, (ख) २६४५४

बीजार्णवतन्त्र

उ०— शाक्तानन्दतरङ्गिणी मे। —कैट् कैट् १।३७४

बीजोपबीजकूटोपकूट

लि०—श्लोक स० २७६, पूर्ण। —स० वि० २६१५७

बृहत्तन्त्र

लि०— —कैट् कैट्. ३।८०

बृहत्तन्त्रकौमुदी

उ०—सौभाग्यभास्कर मे ।

बृहत्-श्रीक्रमसंहिता

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव तथा तन्त्रसार मे ।

बृहत्सिद्धान्तसार

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे ।

बृहत्सुधातन्त्र

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से ।

बृहत्स्तवराज

उ०—तन्त्रसार मे ।

बृहदुत्तरतन्त्र

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे ।

बृहद्गौतमीय

लि०—(१) शौनकादि-नारद सवादरूप । ३६ पटलो मे समाप्त । इसमे वैष्णवो की प्रशसा, अवतार होने मे कारण आदि, कृष्ण-मन्त्र की प्रशसा, वीज आदि के स्मरण का प्रकरण, दशाक्षर मन्त्र का ज्ञान, फल आदि, चिन्तन-स्थान का निरूपण, वृन्दावन के ध्यान आदि, आचमन, आसन, भूतशुद्धि, मातृकान्यास आदि, सृष्टिन्यास आदि, गुरुमाहात्म्य, दीक्षा का क्रम, गृहस्थ आदि की दीक्षाविधि, कृष्ण-मन्त्र के जप की विधि आदि वहुत विपय वर्णित हैं । —नो० स० १।२४८

(२) २५वे पटल तक पूर्ण । —त्र० प० १३८२

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा प्राणतोपिणी मे ।

बृहद्ज्ञानार्णव

उ०—तारारहस्यवृत्ति मे ।

बृहद्भूतडामरतन्त्र

लि०—(१) उन्मत्तभैरवी-उन्मत्तभैरव सवादरूप । २५ पटलो मे । इन्द्रजालादिसग्रह रसिकमोहन चटर्जी सम्पादित कलकत्ता सन् १८७९मे मुद्रित प्रति मे १५ ही पटल है ।

कालात्मक सिद्धचक्रभेद, सुन्दरीमन्त्र, सुन्दरीध्यान, भूतिनीसाधन, कालरात्रिसाधन, महाभूतचेटिकासाधन, कात्यायनीसिद्धिसाधन आदि कई विषय इसमे प्रतिपादित है।

—ए० व० ५८६०

(२) (क) इसमे २२ पटल पूरे है तथा २३ वे पटल का कुछ अंग है, अपूर्ण।
(ख) २५ वे पटल पर्यन्त, पूर्ण। —व० प० (क) १८६, (ख) १३९४

बृहद्मत्स्यसूक्त

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा मन्त्रमहार्णव मे।

बृहद्योनितन्त्र

लि०—(१) पार्वती-ईश्वर सवादरूप। इसमे बृहद्योनितन्त्र का माहात्म्य, प्रकृति की योनिरूपता, सर्वदेवमयता तथा सर्वतीर्थमयता का प्रतिपादन, उसमे सब शक्तियो की स्थिति, उसके पूजन से लक्षपीठ-पूजा की फल-प्राप्ति कथन, उसकी पूजा के काल आदि का निरूपण, उसके नाम-कीर्तन का फल कथन, महादेव की लिङ्गरूपता कथन, आश्विन शुक्ल नवमी को तत्-तत् नामो से युक्त गीत गाने पर विशेष फल-प्राप्ति कथन, पञ्चतत्त्वो मे योनि की पूजाविधि, योनिमुद्रा आदि तथा षट्चक्रों मे उसके चिन्तन का फल, योनिकवच, मन्त्र, ध्यान आदि का प्रतिपादन, कुलज्ञान से मोक्ष-प्राप्ति कथन इत्यादि विषय वर्णित है।

—नो० स० १।२४९

(२) (क) श्लोक स० ५००। (ख) श्लोक स० ३००। (ग) श्लोक स० २००।
—अ० व० (क) १०१७९, (ख) १०१९०, (ग) १०२४६

(३) १०म पटल पर्यन्त पूर्ण। —व० प० १३८९

उ०—सर्वोल्लास मे।

बृहद्योनिरहस्य

उ०—प्राणतोषिणी मे।

बृहद्रुद्रयामल

लि०—(१) श्रीकृष्ण-नारद सवादरूप। ४ खण्डो मे है। इसके २ य खण्ड मे ३० अध्याय और ४र्थ खण्ड मे ५ अध्याय हैं। —ए० व० ५८६६, ५८६७

(२) पञ्चाननदेव की उत्पत्ति किससे होती है, नारदजी के इस प्रश्न पर भगवान् द्वारा पञ्चानन के जन्म आदि तथा भूमिप्रवेश आदि का निरूपण, ब्राह्मण पर दण्ड आदि का

निरूपण, ब्राह्मण के शोक को दूर करना, पूजा-प्रकाश आदि का निरूपण, मालिकोपाख्यान, मृतपुत्रदान आदि, द्विजागमन आदि, वर-प्रार्थना आदि, नरध्वज की पुत्रोत्पत्ति, नरध्वज को परम आनन्द, यात्रा के आरम्भ का निरूपण, दूतवव, वीरसेनवध आदि का निरूपण आदि वहुत विपय हैं। —नो० स० ११२५०

बृहन्निधिदर्शन

लि०—इस ग्रन्थ की विषय-सूची देखने मे प्रतीत होता है कि यह पूर्ववर्णित निधिदर्शन के तुल्य ही है। निधि-कर्म मे उत्तम सहायको तथा निन्द्य सहायको का वर्णन, निधि-स्थानो का वर्णन आदि विषय इसमे वर्णित हैं। —ए० व० ६५६५

बृहन्निर्वाणतन्त्र

लि०—(१) चण्डिका-शङ्कर सवादरूप यह तन्त्र १४ पटलो मे पूर्ण है। उनमे प्रतिपादित विपय हैं—ब्रह्माण्ड-वर्णन, सृष्टिनिरूपण, प्रकृति की प्रशसा, गोलोकादि का कथन, ज्ञान-पद्मकथन, उक्त पद्म के ऊपरी भाग का विवरण, तत्त्व-ज्ञान कथन, वैष्णव तत्त्व कथन, दशाक्षर मन्त्र का माहात्म्य, अवधूत-लक्षण कथन आदि।

—रा० ला० २७४

बृहन्नीलतन्त्र

लि०—(१) यह शिव-पार्वती सवादरूप महातन्त्र चतुष्षष्टि (६४) महातन्त्रो मे अन्यतम तथा २३ पटलो मे पूर्ण है। श्लोक स० ३२२५। इसमे प्रतिपादित प्रमुख विपय हैं—नील सरस्वती बीज आदि, स्नान, तिलक आदि का प्रकार, एक लिङ्ग स्थान का लक्षण, साधन योग्य स्थान, नील सरस्वती पूजाविधि, पुष्प, त्रिविध गुरु, बलिदान-मन्त्र, सन्ध्या का प्रकार, अष्टाङ्गप्राणायाम-लक्षण, दीक्षाविधि, दीक्षाकाल, स्थान, नक्षत्र आदि का निरूपण, पुरश्चरणविधि, काम्यपूजाविधि, द्विजो के लिए सुरापान मे प्रायश्चित्त, पीठपूजाविधि, कौलिकार्चन-माहात्म्य, शक्तिपूजाप्रकार, कालिका, रटन्ती, अन्नपूर्णा आदि की पूजाविधि, षट्कर्मनिरूपण, ज्योती-रूप दर्शन के उपाय, निग्रह के उपाय, वशीकरण, शान्तिस्तोत्र आदि। —रा० ला० १६५५

(२) श्लोक स० २०००। —अ० व० १०१६०

(३) महाकाल भैरव प्रोक्त। —ज० का० १०५८

(४) श्लोक स० ३२१४, पूर्ण। —स० वि० २४९७६

उ०—प्राणतोषिणी मे।

वोधपञ्चाशिका

लि०—अभिनव गुप्त कृत। पूर्ण।

—डे० का० ४७० (१८७५–७६ ई०)

वोध-विलास

लि०—हर्षदत्तसूनु कृत। पूर्ण। —डे० का० ४७२ (१८७५–७६ ई०)

ब्रह्मज्ञानतन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० १२०। —अ० व० १०२६९

(२) यह उमा-महेश्वर सवादरूप है। पृथिवी, जल, तेज, वायु और आकाश ये पाँच तत्त्व किससे उत्पन्न होते हैं फिर सृष्टि कहाँ लीन हो जाती है? पार्वतीजी के इत्यादि प्रश्नो का उत्तर देते हुए भगवान् शङ्कर ने इसमे शारीरिक पदार्थों मे चन्द्र, सूर्य आदि बाह्य पदार्थों की भावना आदि मे ज्ञानोत्पादन का प्रकार वतलाया है। श्लोक स० १२०।

—रा० ला० ४११

उ०—प्राणतोषिणी मे।

ब्रह्मज्ञाननिरूपण

लि०—श्लोक स० १५६, अपूर्ण। —स० वि० २६६९१

ब्रह्मज्ञानमहातन्त्रराज

लि०—(१) यह शिव-पार्वती सवादरूप है। —ए० व० ५९८८

(२) पार्वतीजी के इस प्रश्न पर कि किससे सृष्टि होती है, किससे उसका विनाश होता है और सृष्टि-सहार मे वर्जित ब्रह्मज्ञान कैसे होता है? भगवान् का तान्त्रिक क्रम से ब्रह्मज्ञान कथन।

—रा० ला० ४०८

(३) पाँचवें पटल तक। अपूर्ण। —व० प० १६२५

(४) —कैट् कैट् १।३८०

उ०—प्राणतोषिणी मे।

ब्रह्मज्ञानशास्त्र

लि०—नन्दीश्वर भाषित। इसमे अनहत नाद १० प्रकार का वतलाया गया है।

—ए० व० ६१२७

ब्रह्मतान्त्रिक

लि०—श्लोक स० ६०६। इसमे गायत्री तथा अन्यान्य मन्त्रो के ऋषि, छन्द, देवता, बीज, शक्ति, तत्त्व, वर्ण, स्वर, मुद्रा, फल, कीलक आदि दिये गये है।

—ट्रि० कै० १००७

ब्रह्मनारदसंवाद

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

ब्रह्मनिरूपण

लि०—(१) चण्डिकाशकर सवादरूप। यह विभिन्न तन्त्रो के खण्डो (भागो) से निर्मित है। सृष्टि, चक्र, नाडी और शक्ति की पूजा का प्रतिपादन करता है।

—ए० व० ६२७६

(२) अपूर्ण। —र० म० ९८९

ब्रह्मयामल

लि०—(१) किवदन्ती है कि पूर्ण ब्रह्मयामल १२५००० श्लोकात्मक है और वह तन्त्र के पूर्वाम्नाय, दक्षिणाम्नाय, पश्चिमाम्नाय, उत्तराम्नाय, ऊर्ध्वाम्नाय आदि छहो आम्नायो से सम्बद्ध है। यह केवल १२००० श्लोकात्मक उसका एक अश मात्र है और सभवत केवल पश्चिमाम्नाय से ही सम्बद्ध है। यह १०१ पटलो मे पूर्ण है। पुष्पिका मे लिखा है—'महाभैरवतन्त्रे विद्यापीठे ब्रह्मयामले नवाक्षरविधाने पिचुमते द्वादशसाहस्त्रिके एकोत्तरशततम पटल।' श्लोक स० ३५०, अपूर्ण।

—ने० द० २।३७०

(२) शिव और ब्रह्मा सवादरूप। १२५००० श्लोकात्मक विद्यापीठ पर अवतारित ब्रह्मयामल के ४ अध्याय भर इसमे है। —ट्रि० कै० ११०३ (ख)

उ०—तारारहस्यवृत्ति मे।

ब्रह्मयामलतन्त्र या यामलतन्त्र

लि०—(१) स्वरोदय स्वरशास्त्रविषयक ग्रन्थ है। मात्रास्वरचक्र, वर्णस्वरचक्र, जीवस्वरचक्र, राशिस्वरचक्र, भेदनस्वरचक्र, ऋतुस्वरचक्र, पक्षस्वरचक्र, तिथिस्वरचक्र आदि ५७ स्वरचक्रो का इसमे वर्णन है। —ए० व० ५८९२

(२) ब्रह्मयामलतन्त्रे आचारसारप्रकरण, ब्रह्मयामलतन्त्रे ऊर्ध्वजननशाति, ०गुह्य कवच, ०चैतन्यकल्प, ०जानकीत्रैलोक्यमोहनकवच, ०त्रैलोक्यमगल सूर्यकवच, ०नारायण-

प्रश्नावली, ०रकारादि सहस्रनाम, ०रामकवच, ०रामत्रैलोक्यमोहन कवच, ०राम-सहस्रनाम, ०सर्वतोभद्र चक्र, ०सूर्यकवच। —कैट्. कट् १।३८२

(३) ब्रह्मयामलतन्त्रे गायत्रीकवच, ०त्रैलोक्यनाथमोहन कवच, ०दुर्गाकवच। —कैट् कैट् २।८६

श्रीकण्ठी के अनुसार यहचतुष्षष्टि (६४) तन्त्रो मे अन्यतम है।

ब्रह्मशम्भुपद्धति

(ब्रह्मशम्भु विरचित) —कैट् कैट् ३।८२

उ०—वेदज्ञान द्वारा आत्मार्थपूजापद्धति मे इसका उल्लेख किया गया है।

ब्रह्मशापविमोचनमन्त्र

लि०—श्लोक स० १५, पूर्ण। ब्रह्मास्त्रविद्या भी इसमे समिलित है। —स० वि० २४२७९

ब्रह्मसंहिता

लि०—(१) यह कपिञ्जल-मार्कण्डेय सवादरूप, मारर्कण्डेय-नारद सवादरूप और ब्रह्म-नारद सवादरूप है। यह वैष्णव तन्त्र है। अन्य वैष्णव तन्त्रो के समान यह भी दक्षिण भारत मे ही प्रसिद्ध है। इसका दूसरा नाम वैष्णवरहस्य है। इसमे वहुतसे व्रत प्रतिपादित हैं, जो अव भारतवर्ष मे धारावाहिक रूप से प्रचलित है। अन्त मे इसमे मन्दिर और मूर्ति-निर्माण के विषय मे भी कहा गया है।

इसके विषय हैं—शारीरिकव्रतकल्पना, नव व्यूहावतार, पुण्यविधिनिर्णय, चातुर्मास्य व्रतविधान, पवित्रारोहण, जयन्त्यष्टमीव्रत, युगावतारव्रत, मासोपवास, भीष्मपचक-कल्पव्रत, यमपुरीमार्ग, यमदूत, नरकयातना आदि। —ने० द० १।३८० (ख)

(२) यह कृष्णपूजा पर रचा गया है। कहा जाता है कि इसमे १०० अध्याय हैं। इसमे वहुत-से उपनिषदो के उद्धरण उद्धृत हैं। इस पर रूपगोस्वामी की दिग्दर्शिनी टीका है।

ब्रह्मसहिता मे गोपालकवचपञ्जर तथा नृसिहकवच। —कैट् कैट् ३।८२

उ०—पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, तन्त्रसार तथा आगमतत्त्वविलास मे।

ब्रह्मसन्धान.

लि०—शिव-स्कन्द सवादरूप। २८ पटलो मे पूर्ण। उत्क्रान्ति-निर्णय, त्रिस्थानो मे स्थित ब्रह्म का निर्णय, प्राणनिर्णय, दो अयनो का निर्णय, ग्रहणनिर्णय, निष्प्रपञ्च समरस, भूतो की उत्पत्ति पर विचार आदि विविध विषय इसमे वर्णित है। —ए० वं० ५९९०

ब्रह्मसिद्धान्त या ब्रह्मसिद्धान्तपद्धति

लि०—(१) श्लोक स० ५००। इसमे प्रतिपादित विषय है—अनाम और अव्यक्त तत्त्व का निरूपण, उसके गुण, ब्रह्माण्डपिण्ड और उसके गुण, ब्रह्माण्डपिण्ड से शिव की उत्पत्ति, शिव से भैरव, भैरव से श्रीकण्ठ आदि की उत्पत्ति, उनसे पञ्च तत्त्व रूप प्रकृति-पिण्ड की उत्पत्ति, क्षुधा, तृपा आदि का कथन, अन्त करण और उसके गुणो का कथन, सत्त्व, रज और तम, महाकाल जीवात्मक पञ्चकुलेश और उसके गुणो का कीर्तन, जाग्रत्, स्वप्न, सुपुप्ति आदि अवस्थाओ का निरूपण, इच्छा, क्रिया आदि पाँच गुणो मे प्रत्येक के पाँच पाँच गुणो का निरूपण, कर्म, काम, चन्द्र, सूर्य, अग्नि—इन पाँचो का, इनके गुणो और कलाओ का कथन। —रा० ला० ७७०

(२) —कैट् कैट् १।३८३, २।८६

ब्रह्माण्डकल्प

लि०—इसमे रासायनिक विधि से चाँदी बनाना, पारे की विविध औषधियाँ बनाना एव अन्यान्य ऐन्द्रजालिक कारनामे प्रतिपादित है।

शनि या भौम-वार को नरमुण्ड (मनुष्य की खोपडी) लावे। उसका जतन से कपड-छान चूर्ण कर मिट्टी के चिकने वर्तन मे रखे इत्यादि बहुत-सी विधियाँ कही गयी है।

—बी० कै० ४२५१

ब्रह्माण्डज्ञानतन्त्र

लि०—पार्वती-ईश्वर सवादरूप। श्लोक स० २४०। पाँच पटलो मे पूर्ण है। इसमे ब्रह्मतत्त्व का निरूपण है। —रा० ला० २४८

ब्रह्माण्डज्ञानमहाराजतन्त्र

लि०— —कैट् कैट् १।३८७

ब्रह्माण्डतन्त्र

लि०— —कैट् कैट् १।३८७

ब्रह्माण्डनिर्णय

लि०—ब्रह्मयामल मे उक्त, ईश्वर-पार्वती सवादरूप। इसमे सक्षेपत सृष्टि-प्रकरण पर प्रकाश डाला गया है। —नो० स० ४।१८३

ब्रह्माण्डयामल

लि०—पञ्चमी-साधन मात्र। —कैट्. कैट् १।३८८

ब्रह्मास्त्रकल्प

लि०— —कैट् कैट् १।३८९

ब्रह्मास्त्रकवच

लि०— —कैट् कैट् १।३८९

ब्रह्मास्त्रकार्यसाधन

लि०— —कैट्. कैट् १।३८९

ब्रह्मास्त्रपद्धति

लि०—कृष्णचन्द्र विरचित। —कैट् कैट् १।३८९

ब्रह्मास्त्रपूजन

लि०—मयूर पण्डित विरचित, श्लोक स० ४८९, पूर्ण।

—स० वि० २४००२

ब्रह्मास्त्रविद्या

लि०—(१) यह मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, उन्मादन आदि के सम्बन्ध मे वगलामुखी देवी की पूजा-प्रक्रिया का प्रतिपादक है।

—ए० व० ६३९३

(२) दक्षिणामूर्तिसहिता के अन्तर्गत, श्लोक स० १४०, पूर्ण।

—स० वि० २५९७३

ब्रह्मास्त्रविद्यानित्यपूजा

लि०—शिवानन्द यति के शिष्य द्वारा विरचित, इसमे वगलामुखी देवी के उपासको द्वारा पालनीय (करणीय) प्रात कृत्यो का प्रतिपादनपूर्वक वगलामुखी की पूजा-प्रक्रिया वर्णित है। —ए० व० ६३९४

ब्रह्मास्त्रविद्यापूजापद्धति

लि०— —कैट् कैट् १।३८९

ब्रह्मास्त्रविधानपद्धति

लि०— —कैट् कैट्. १।३८९

ब्रह्मास्त्रसहस्रनाम

लि०—श्लोक स० १८१ । —अ० व० १२६१७

ब्रह्मास्त्रसूत्र (दीपिका)

लि०—शाङ्खायन विरचित, सूत्र स० १४५ । —अ० व० १२३७९

ब्राह्मणचिन्तामणितन्त्र

लि०—(१) पटल स० १४, पूर्ण । —व० प० २९९

(२) श्लोक स० १८३, पूर्ण, (पटल १ से ३ तक) ।

—स० वि० २५२५७

ब्राह्मीकला

यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रो मे अन्यतम है ।

ब्राह्मीतन्त्र

उ०—यह उल्लिखित है । —कैट् कैट् १।३८९

भक्तव्रातसंतोषक

लि०—इसका दूसरा नाम प्रयोगरत्नाकर है। इसके रचयिता प्रेमनिधि पन्त हैं ।

—कैट् कैट् २।७९

भक्तिकुलसर्वस्व

लि०—शिव-पार्वती सवादरूप। पार्वतीजी के यह प्रश्न करने पर कि जिस साधन से साधको को उत्तम गति प्राप्त होती है ? भगवन्, वह साधन मुझे बताने की कृपा कीजिए। भगवान् शिवजी ने उत्तर मे कहा—पूजा, ध्यान, जप, वलि, न्यास, धूपदीप, भूतशुद्धि, पुष्प, चन्दन, हवन आदि के विना जिस साधन से देवी प्रसन्न होती है और साधको का कल्याण होता है, वह तारा-सहस्रनाम है । उसी सहस्रनाम का इसमे प्रतिपादन किया गया है । —नो० स० ४।१८७

भक्तितन्त्र

उ०—सौभाग्यभास्कर मे ।

भक्तिमञ्जरी

उ०—आगमतत्त्वविलास मे ।

भक्त्यानन्दैकाक्षरपद्धति

लि०—श्लोक स० ३००, (२ प्रकरण मात्र)। —अ० व० ८०५०

भगपूजाविधि

लि०—श्लोक स० ८८, अपूर्ण। —स० वि० २६३५४

भगमालिनीसंहिता

लि०—यह नित्याषोडशिकार्णव का एक भाग है। द्वात्रिंशत्कोटिविस्तीर्णे नित्याषोडशिकार्णवे तन्त्रे भगमालिनीसंहितायाशतसाहस्रिकायाम्। —इ० आ० २५४१

भगवतीपूजाविधि

लि०—इसमें दुर्गादेवी की पूजाविधि प्रतिपादित है। —क० का० ५३

भगवत्युत्तरतन्त्र

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

भगवत्स्तुति

लि०—रामकृष्णानन्दतीर्थ-शिष्य सत्यज्ञानानन्द तीर्थयति कृत।

—इ० आ० २६२७

भगवद्वस्त्रमन्त्रपटल

लि०—डामरतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० ३०, पूर्ण। —र० म० १०५३

भगवन्नामामृतरसोदय

लि०—(१) विश्वाधिकेन्द्र-शिष्य बोधेन्द्र सरस्वती कृत, श्लोक स० ३००।

—अ० व० ६६८०

(२) —कैट् कैट्. १।३९४

भद्रकालीचिन्तामणि

लि०—(१) श्लोक स० १४६४, अपूर्ण। —र० म० ४८४५

(२) श्लोक स० ८१०। —इ० का० २३७

(३) —म रि २८५

भद्रकालीपञ्चाङ्ग

लि०—श्लोक स० ३७४, पूर्ण। —र० म० ४८४४

भद्रकालीप्रयोग

लि०—वीरतन्त्र के १४ वें पटल के अन्तर्गत, पूर्ण। यह ललितारहस्य के साथ समिलित है। —स० वि० २५७५१

भद्रकालीसहस्रनाम

लि०— —म० रि० २०७

भद्रतन्त्र

लि०—देवी-शिव सवादरूप। इसमे वशीकरण, मोहन, मारण, उच्चाटन आदि के साधनार्थ मन्त्र और विधियाँ निर्दिष्ट है। —ए० व० ६०८९

भद्रदीपक्रिया

लि०—श्लोक स० १५५०। सात्वत आदि विविध तन्त्रो मे वर्णित दीपाराधन क्रिया का इसमे उल्लेख है। —ट्रि० कै० १००९ (क)

भद्रदीपदीपिका

लि०—नारायण कृत। श्रीकण्ठ प्रस्तुत ग्रन्थकार के प्रेरक थे। ग्रन्थकार ने अपने पिता की आज्ञा से कोलभूपाल द्वारा अनुष्ठित यज्ञ मे भाग लिया था। यह भद्रदीपक्रिया नारायण से पृथ्वी और नारद को प्राप्त हुई। उन्होंने इसका अपने भक्तो मे प्रचार किया। इससे मनुष्यो के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चारो पुरुषार्थ शीघ्र सिद्ध हो जाते हैं।

—ट्रि० कै० १०१०

भर्गशिखा

उ०—तन्त्रालोक, शिवसूत्रविमर्शिनी तथा साम्बपञ्चाशिका मे।

भवानीकवच

लि०—(१) श्लोक स० १५, रुद्रयामल से गृहीत, इसकी तीन प्रतियाँ हैं।

—अ० व० ३४७७, ८७९१ और १३८६८

(२) रुद्रयामलान्तर्गत। श्लोक स० २८, पूर्ण।

—र० म० १०९४ (क)

(३) —कैट् कट् १।३९९, ३।८५

भवानीपञ्चाङ्ग

लि०—रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत। श्लोक सं० ६३०, पूर्ण।

—र० म० ४८१९

भवानीपूजापद्धति

लि०—(१) रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत। श्लोक सं० २२०, अपूर्ण।

—र० म० ४८६६

(२) —कैट् कैट् ११३९९

भवानीप्रयोग

लि०—श्लोक सं० लगभग ७०, पूर्ण। भवानीयन्त्र भी इसके साथ संलग्न है।

—म० वि० २६५५४

भवानीसहस्रनामपटल

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक सं० ७८, अपूर्ण। —स० वि० २६६७५

भवानीसहस्रनामबीजाक्षरी

लि०—श्लोक सं० ३३६। —डे० का० २३६

भवानीस्तवराज

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत। —ए० व० ६७०२

(२) —कैट् कैट्. ११३९९

भवानीस्तवशतक

लि०—श्लोक सं० १५०। सौ श्लोकों वाले इस भवानी-स्तव से सौ कमलों द्वारा देवीपूजा करने पर प्रचुर पुण्यलाभ होता है। —रा० ला० ३७८

भवानीसहस्रनामस्तोत्र

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत। यह स्तोत्ररत्नाकर २य भाग में प्रकाशित हो चुका है। —ए० व० ६७००

(२) पूर्ण। —व० प० १६००

(३) (क) श्लोक सं० २२४, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० १९०, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० ७५९ पूर्ण।

—र० म० (क) ५०३४ (ज), (ख) ४७६७ (ख), (ग) १०४४

(४) रुद्रयामल से गृहीत, श्लोक स० २०३, अपूर्ण। —डे० का० ७६६

(५) रुद्रयामल से गृहीत। दे०, मकारादिसहस्रनाम।

—कैट् कैट् १।३९९, २।९०, ३।८६

भागेशमत

उ०—जन्ममरणविचार मे।

भारद्वाजसंहिता या भरद्वाजसंहिता

लि०—(१) इसमे चार अध्याय है। उनके अतिरिक्त इसमे एक परिशिष्ट है। उसमे भी चार अध्याय हैं। —इ० आ० २५३५

(२) ४००० श्लोकात्मक यह सहिता चार अध्यायो मे पूर्ण है। इसमे न्यासोपदेश विस्तार से वर्णित है। —नो० स० ४।१९७

(३) इसमे वर्णित विषय है—आत्मसमर्पण ही भगवान् को प्रसन्न करने का उत्तम उपाय है, यह कथन, सब वर्णो के अधिकार, शरणागति का स्वरूप, दीक्षादि-विधि, प्रपन्न पुरुष की वृत्ति का निरूपण आदि। —रा० ला० २८१९

(४) इसमे कुल ८ अध्याय है। चार अध्यायो मे न्यासोपदेश है और चार अध्यायो मे परिशिष्ट। श्लोक स० ६८०। —ट्रि० कै० १०११

(५) पञ्चरात्र, इसमे कार्तिक-माहात्म्य है। —तँ० म० १९४४

(६) चार अध्यायो मे। —कैट् कैट् २।९०

भावचिन्तामणि (१)

लि०—(१) इसमे ६ पटल है तथा बालको की जन्मकुण्डली के अच्छे-बुरे फल उनमे वर्णित हैं। यह किसी बडे ग्रन्थ का एक अशमात्र प्रतीत होता है जो सभवत सन्तान-कल्पदीपिका के नाम से प्रसिद्ध है। —ए० ब० ६०३७

(२) श्लोक स० १३३। यह केवल षष्ठ(छठा)पटल मात्र है। इसका नामान्तर—सन्तानदीपिका भी है। यह ग्रन्थ छह पटलो मे पूर्ण है। इसमे वर्णित विषय है—पुत्र की उत्पत्ति मे प्रतिबन्धक शाप के मोचन का प्रतिपादन तथा पुत्रोत्पादक ग्रहयोग का वर्णन।

—रा० ला० १५२०

(३) भावचिन्तामणि या सन्तानदीपिका। —कैट् कैट् १।४०७

भावचूड़ामणि (२)

लि०—(१) रामकण्ठ-शिष्य विद्यानाथ कृत। इसमे दिव्य, वीर और पशुभाव के सकेत और उनके भेद वर्णित हैं। दिव्य, वीर और पशुक्रम मे ब्रह्म की प्राप्ति कराने वाले भावो के लक्षण भी कहे गये हैं। —नो० स० ४।२००

(२) विद्याकण्ठ (?) कृत। श्लोक स० लगभग ३४००, पूर्ण।

—र० म० ५२२१

(३) इसमे दिव्य, वीर और पशु नाम से प्रसिद्ध पूजा-भेदो का वर्णन है (केवल १२ वाँ पटल उपलब्ध है)। —ए० व० ६२७२

उ०—पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, आगमकल्पलता, तारारहस्यवृत्ति, सर्वोल्लास, आगमतत्त्वविलास, कुलप्रदीप, ताराभक्तिसुधार्णव, तन्त्रसार तथा रहस्यार्णव मे।

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुष्षष्टि (६४) तन्त्रो मे अन्यतम है।

भावचूड़ामणिसंग्रह

लि०—विद्याकण्ठ कृत। —कैट् कैट् २।९३

भावदीपिका

लि०—पुष्कर-पौत्र तथा जनार्दन-पुत्र अच्युत वीर विरचित। सकल साधनाओ मे भाव की आवश्यकता है। भाव को जाने बिना किसका किस कर्म मे अधिकार है यह जानना सभव नही है। ऐसी स्थिति मे सब लोग भ्रष्ट से होकर जाति, धन आदि सभी का वेदविरुद्ध रूप मे उपयोग करते है। इसलिए बडी सावधानी के साथ भाव का इसमें निरूपण किया गया है। दिव्य, वीर और पशु के क्रम से भाव तीन प्रकार के होते हैं। उन भावो को क्रम से उत्तम, मध्यम और अधम जाति के अन्तर्गत माना गया है। इसमे भाव के निर्णय से ही साधक सिद्धिलाभ करता है, यह विचार करते हुए ब्रह्मज्ञान से ही अभीष्ट सिद्धि हो सकती है यह निरूपित है। —नो० स० ४।२०१

भावनाप्रयोग

लि०—भास्करराय कृत, श्लोक स० ३४०, पूर्ण। —स० वि० २५०६९

भावनिरूपण

लि०—इसमे भावचूडामणि, निरुत्तरतन्त्र तथा कुब्जिकातन्त्र के उद्धरण हैं। रामगति सेन की तन्त्रचन्द्रिका, जो तन्त्रसग्रहग्रन्थ है, का सभवत यह एक भाग है।

—ए० व० ६२७४

भावनिर्णय

लि०—शङ्कराचार्यकृत, श्लोक स० २००, पूर्ण । —स० वि० २५१५०

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा भक्तिसुधातरङ्गिणी मे ।

भावनिर्णयोपाख्यान

लि०—श्लोक म० २०० । —अ० व० १०१५६

भावनोपनिषत्प्रयोगविधि

लि०—(१) भास्करराय विरचित प्रयोगविधि नामक टीका सहित भावनोपनिषत् । यह प्रकाशित हो चुका है । अन्य विवरण उसमे देखे । जप-प्रयोग इसमे अलग से सलग्न है । उसमे लिखा है—पात्रासादन तथा कुलदीपनिवेदनान्त पूजा कर जप करना चाहिए ।

—ए० व० ६१३३

(२) भास्करराय कृत । —कैट् कैट् ३।८८

भावप्रकाशपरिशिष्ट

उ०—मन्त्रमहार्णव मे ।

भावसार

लि०—इसमे अध्यायो के वदले अभिप्राय है । केवल १म अभिप्राय ही उपलव्ध है । विषय है—परा विद्या की साधनविधि । —नो० स० ४।२०२

भावार्थदीपिका (१)

लि०—यह ब्रह्मानन्द कृत आनन्दलहरी-टीका है ।

—कैट् कैट् १।४०९

भावार्थदीपिका (२)

श्रीरामानन्द वाचस्पति भट्टाचार्य कृत वीजव्याकरणमहातन्त्र की टीका ।

—इ० आ० २५७१

भुवनमालिनीकल्प

लि०— —कैट् कैट् १।४१३

भुवनाधिपतिमन्त्रकल्प

लि०—श्लोक स० १९००, अपूर्ण । —अ० व० ६८०५

भुवनेशीकल्पलता

लि०—राघवभट्ट-पौत्र, महादेवभट्ट-पुत्र वैद्यनाथभट्ट विरचित। इसमे भुवनेश्वरी के उपासक द्वारा पालनीय दैनिक कृत्यो का तथा भुवनेश्वरी की पूजा का विवरण दिया गया है।

दमन-पूजा, पवित्रार्चा, शारदी पूजा, कुमारियो की पूजा, होम-द्रव्य और उनका परिमाण, माला-सस्कार, मन्त्रो के १० सस्कार आदि विषय इसमे निरूपित है। —ए० व० ६३८३

भुवनेशीजपविधि

लि०—श्लोक स० ४८, पूर्ण। —स० वि० २५५०३

भुवनेशीतन्त्र

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

भुवनेशीपद्धति

लि०—महादेव विरचित। इसमे भुवनेश्वरी की पूजापद्धति प्रतिपादित है। —ए० व० ६३८५

भुवनेशीपारिजात

लि०—श्लोक स० ३३०, अपूर्ण। —स० वि० २५७०९

उ०—शारदातिलक-टीका राघवभट्टी तथा रघुनन्दन कृत मलमासतत्त्व मे।

भुवनेशीप्रकाश

लि०—काशीनाथरथ-पुत्र श्रीवासुदेवरथ विरचित। इसमे भुवनेश्वरी देवी की पूजा का विवरण प्रतिपादित है। —ए० व० ६३८२

भुवनेश्वरीकल्प

लि०—(१) श्लोक स० ३००। —अ० व० १७२६ (ख)

(२) रुद्रयामल से गृहीत। —कैट् कैट् १।४१४

भुवनेश्वरी-कवचादि

लि०—(१) श्लोक स० २००। —अ० व० १०६१२ (क)

(२) (क) आगमसार से गृहीत। (ख) रुद्रयामल से गृहीत भुवनेश्वरी कवच मात्र। —कैट कैट् १।४१४

भुवनेश्वरीक्रमचन्द्रिका

लि०—अनन्तदेव विरचित । श्लोक स० ६७२, पूर्ण । ३ य पटल पर्यन्त ।
—स० वि० २५७०७

भुवनेश्वरीनित्यपूजापद्धति

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत । —सं० वि० २६३७३

भुवनेश्वरीतन्त्र

लि०— —ने० द० २।३१५ (ख)

उ०—तन्त्रकौमुदी तथा आगमतत्त्वविलास मे ।

भुवनेश्वरीदण्डक

लि०—सिद्धानन्द कृत । —कैट् कैट् १।४१४

भुवनेश्वरीदीपदान

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, शिव-पार्वती सवादरूप । इसमे भुवनेश्वरी देवी के निमित्त प्रज्वलित दीपप्रदानविधि प्रतिपादित है । —बी० कै० १३१०

भुवनेश्वरीपञ्चाङ्ग

लि०—(१) इसमे १ भवनेश्वरीपटल, जो रुद्रयामलान्तर्गत दशमहाविद्यारहस्य मे उमा-महेश्वर सवादरूप से वर्णित है, २ भुवनेश्वरीपूजापद्धति, ३ भुवनेश्वरीसहस्र-नाम, ४ भुवनेश्वरीस्तोत्र, ५ भुवनेश्वरीकवच आदि वर्णित हैं । —ए० व० ६३८४

(२) श्लोक स० ६०० । —अ० व० ९५९६

(३) रुद्रयामलान्तर्गत, (क) श्लोक स० ७६८, पूर्ण । (ख) श्लोक स० ४४० ।
—र० म० (क) ४८१३, (ख) ३८८७

(४) रुद्रयामलान्तर्गत । —रा० पु० ७०५६

(५) (क) श्लोक स० ३३८, अपूर्ण ।(ख) श्लोक स० ३००, अपूर्ण । इसमे स्तोत्र, कवच, सहस्रनाम, मन्त्रोद्धार, पूजा आदि विषय वर्णित हैं ।
—स० वि० (क) २४३३७, (ख) २५०७१

सिद्धेश्वरीपटल

लि०—(१) (क) श्लोक स० १५३, पूर्ण। हरिहरात्मक स्तव तथा वज्रसूची उपनिषद् भी इसमे समिलित हैं। (ख) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक स० १००, भुवनेश्वरी-नित्य-पूजापद्धति सहित, पूर्ण। —स० वि० (क) २४१३३, (ख) २६३७३

(२) —कैट् कैट् १।४१४

भुवनेश्वरीपद्धति

लि०—(१) (क) श्लोक स० ७७, पूर्ण। (ख) श्लोक स० १५०, पूर्ण। (ग) श्लोक स० ९६, पूर्ण। सभी प्रतियाँ एक दूसरी मे पृथक् प्रतीत होती हैं।

—स० वि० (क) २४०३१, (ख) २४२००, (ग) २५२०५

(२) परमानन्द नाथ कृत। —कैट्. कैट्. १।४१४, २।९५

(३) (क) श्लोक स० ९६०। (ख) श्लोक स० ७००। (ग) श्लोक स० १४०।

—अ० व० (क) ८३६, (ख) १२०४८, (ग) ५६८८

(४) रुद्रयामलान्तर्गत। —रा० पु० ७०५६

भुवनेश्वरीपूजा

लि०—(१) इस ग्रन्थ मे भवनेश्वरी-पूजा, ग्रहण के समय किया जाने वाला पुरश्चरण तथा विविध देवताओ के बीजमन्त्र प्रतिपादित है। —क० का० ७१

(२) (क) श्लोक स० ७५, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ५०, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २४९९४, (ख) २४९९५

भुवनेश्वरीपूजापद्धति

लि०—(१) (क) श्लोक स० ३५०। (ख) श्लोक स० ७००। (ग) श्लोक स० १३००, अपूर्ण। —अ० व० (क) १०८३४, (ख) १०५६४, (ग) ३४८०

(२) श्लोक स० ८५, अपूर्ण। —स० वि० २६३६६

(३) शारदातिलक से गृहीत। —कैट् कैट् ३।८९

भुवनेश्वरीप्रयोग

लि०—श्लोक स० १४४, अपूर्ण। —स० वि० २६०१६

भुवनेश्वरीमन्त्रपद्धति

लि०—वासुदेव विरचित, श्लोक सं० ७६५, अपूर्ण।

—सं० वि० २५२९१

भुवनेश्वरीमन्त्रविधि

लि०—श्लोक स० ५३, अपूर्ण। —स० वि० २४२१४

भुवनेश्वरीरहस्य (१)

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, पार्वती-शिव सवादरूप। इसमे २६ पटल हैं। उनमे विस्तारपूर्वक भुवनेश्वरी की पूजा तथा मन्त्रो का प्रतिपादन है।

—ए० व० ५८८३

(२) (क) श्लोक स० २५००, रुद्रयामल से गृहीत। (ख) श्लोक स० २५००, रुद्रयामल से गृहीत। —अ० व० (क) १०६९०, (ख) ९९५०

(३) रुद्रयामलान्तर्गत (क) श्लोक स० ३४१७, पूर्ण। (ख) ७ म पटल से २४ वे पटल पर्यन्त, अपूर्ण। —स० वि० (क) २४२०१, (ख) २५६४५

(४) रुद्रयामल से गृहीत, २६ पटलो मे।

—कैट् कैट् १।४१४

(५) भुवनेश्वरीरहस्य या भुवनेश्वरीसर्वस्व रुद्रयामल का अश।

—इ० आ० २६०५

भुवनेश्वरीरहस्य (२)

लि०—कृष्णचन्द्र कृत। —कैट् कैट् १।४१४

भुवनेश्वरीवरिवस्यारहस्य

लि०—मथुरानाथ शुक्ल विरचित। —कैट् कैट् १।४१४

भुवनेश्वरीशान्तिप्रयोग

लि०— —कैट् कैट् १।४१४

भुवनेश्वरीसपर्या

लि०—उमानन्द विरचित, श्लोक स० ४३०।

—अ० व० ६५५

भुवनेश्वरीसहस्रनामस्तोत्र

लि०—मेरुविहारतन्त्रान्तर्गत, शिव-पार्वती सवादरूप। इसमे भुवनेश्वरी देवी के सहस्र नाम वर्णित है। —रा० ला० ७४३

भुवनेश्वरीस्तव-टीका

लि०—उपेन्द्रभट्ट-वंशोद्भव श्रीगौरमोहन विद्यालङ्कार भट्टाचार्य विरचित। इसमे भुवनेश्वरीस्तव का व्याख्यान है। —नो० म० ३।२०६

भुवनेश्वरीस्तोत्र

लि०—(१) पृथ्वीधराचार्य विरचित, श्लोक स० १३०, पूर्ण।

—र० म० ४४९२

(२) शम्भुनाथ-शिष्य पृथ्वीधराचार्य कृत, सटीक। टीकाकार—श्रीदत्त-पौत्र दामोदरदत्त-पुत्र पद्मनाभदत्त। टीका नाम—सिद्धान्तसरस्वती टीका।

—डे० का० ३५९ (१८७९।८० ई०)

(३) पृथ्वीधराचार्य कृत, पद्मनाभ कृत टीका युक्त। श्लोक सं० लगभग १५४० षट्पञ्चाशिका (पृथुयश कृत) आदि ४ अन्य ग्रन्थों सहित।

—डे० का० २३८ (१८८३-८४ ई०)

(४) भुवनेश्वरीस्तोत्र या सिद्धसारस्वतस्तोत्र, पृथ्वीधराचार्य कृत। इस पर पद्मनाभ कृत टीका है। —कैट् कैट् १।४१४

भुवनेश्वरीस्तोत्र और कवच

लि०—यह स्तोत्र शारदातिलक मे और कवच रुद्रयामल से उद्धृत है।

—ए० व० ६७०४

भुवनेश्वर्यर्चनपद्धति

लि०—(१) पृथ्वीधराचार्य कृत, श्लोक स० १७८, पूर्ण।

—स० वि० २५४३५

(२) —कैट् कैट् १।४१४

भूतक्षोभ

उ०—तन्त्रालोक मे।

भूतडामरतन्त्र

लि०—(१) यह चतुःषष्टि (६४) मूल तन्त्रोमे अन्यतम है। इसको तान्त्रिक निबन्धकारो ने अपने निबन्धो मे बहुधा उद्धृत किया है; किन्तु इसकी पूर्ण हस्तलिखित प्रति अतिदुर्लभ है। प्रस्तुत प्रति मे केवल १४ पटल बतलाये गये है। यह सर्वथा

अपूर्ण है। श्लोक स० ५१२। इसमे प्रतिपादित विषय है—भूतडामर का विवरण, मारण मन्त्रो का प्रतिपादन, सुन्दरीसाधन, पिशाचीसाधन, कात्यायनीमन्त्र-साधन, सिद्धिसाधन, अप्सरसी-साधन, यक्षिणी-साधन, अष्टनागिनी-साधन, किन्नरी-साधन, परिपन्मण्डल की क्रोधविधि, अपराजिता आदि का ससिद्धिसाधन आदि। —रा० ला० १५९८

(२) यह ६४ मौलिक महातन्त्रो मे अन्यतम है। तान्त्रिक ग्रन्थो के रचयिताओ ने प्रचुर मात्रा मे इसके उद्धरण लिये है। इसकी पूर्ण प्रति अत्यन्त दुर्लभ है, इसलिए इसका परिमाण (श्लोक और पटलसख्या आदि) अज्ञात है। —क० का० ५१

(३) इसके १५ पटलो के विषय यो प्रदर्शित है। भूतडामर के सम्बन्ध मे परिचय, दीक्षाविधि, सुन्दरी की तान्त्रिक पूजा, पिशाची की रहस्य पूजा (उसे अपने वश मे करने के लिए), कात्यायनी की रहस्य पूजा, केङ्करी की रहस्य पूजा, चेटिका की रहस्य पूजा, भूतिनी की रहस्य पूजा, अप्सराओ की रहस्य पूजा, यक्षिणी की रहस्य पूजा, आठ नागिनियो की रहस्य पूजा, किन्नरियो की तान्त्रिक पूजा, अपराजिता की पूजा आदि।

—बी० कै० १२५९

(४) यह उन्मत्तभैरव-उन्मत्तभैरवी सवादरूप है। —ए० व० ५८४९

(५) (क) श्लोक स० १०००, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० १०५०।

—अ० व० (क) ९१६८, (ख) १३६९६

(६) इसमे इन्द्रजाल, विविध देवदेवी-साधना आदि तान्त्रिक विधियाँ वर्णित है। यह महातन्त्र है। इसके १५ पटलो मे वर्णित विषय है—सुन्दरी-साधन, पिशाचिनी तथा चेटिका के मन्त्र का साधन, कात्यायनी-साधन, देवता-साधन, भूतिनी-साधन, स्वर्णवती-साधन, अप्सरा-साधन, यक्षिणी-साधन, नागिनी-साधन, किन्नरी-साधन आदि।

—ने० द० २।२४६ (ख)

(७) (क) १५ पटलो तक पूर्ण। (ख) अपूर्ण।

—व० प० (क) ७८४१, (ख) १३०२

(८) श्लोक स० ७००, पटल १ से १५ तक, पूर्ण। —स० वि० २६४५६

(९) नाम—भूतडामरमहातन्त्रराज। उन्मत्तभैरवी-उन्मत्तभैरव सवादरूप यह महातन्त्र १५ पटलो मे पूर्ण है। —इ० आ० २५५१

(१०) इसके अन्त मे यक्षडामर भी है। —म० रि० २९५

उ०—मन्त्रमहार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, आगमतत्त्वविलास, तथा प्राणतोषिणी मे।

भूतभूतिनीसाधनविधि

लि०—भूतडामरतन्त्र मे उक्त। पन्ने ७४। —रा० पु० ५४२९

भूतभैरव या भूततन्त्र

लि०—(१) परमहस पारिव्राजक क्रोवीशभैरव कृत । इसमे भूतडामर तथा-यक्षडामर मे अवर्णित वीजो का विधान है एव अकार से लेकर क्षकार पर्यन्त वर्णो (मातृकाक्षरो) की सज्ञा भी निर्दिष्ट है। —ए० व० ५८५७

(२) —कैट् कैट् १।४१४, २।९५, ३।८९

उ०—(भूतभैरवतन्त्र का) तन्त्रसार तथा आगमतत्त्वविलास मे।

भूतलक्षण

लि०— —कैट् कैट् १।४१४

भूतलिपि-उद्धारक्रम

उ०—योगिनीहृदयदीपिका मे।

भूतलिपिमातृकापूजाविधि

लि०—श्लोक स० ३०। —अ० व० ११८२४ (घ)

भूतविवेक

लि०— —कैट् कैट्. १।४१४

भूतशुद्धि

लि०—(१) दो प्रतियाँ हैं—(क) पन्ने ११ और (ख) पन्ने ७।

—रा० पु० (क) ६४१६, (ख) ७००३

(२) भूतशुद्धि क्या है और किस प्रकार की जाती है? आत्मरक्षा किस प्रकार करनी चाहिए एव मातृकान्यास कव करना चाहिए? ये सव विषय इसमे वर्णित हैं।

—म० द० ५६८७ से ९० तक

(३) श्लोक स० १२०, पूर्ण (प्राणप्रतिष्ठा, अन्तर्मातृका और वहिर्मातृका सहित)

—स० वि० २५८६०

[स० वि० मे इसकी पूर्ण तथा अपूर्ण १॥ दर्जन प्रतियाँ और हैं।]

भूतशुद्धितन्त्र

लि०—(१) १म से १३वे पटल तक पूर्ण। —ब० प० १३०३

(२) श्लोक स० लगभग १२५, पटल १म से ४ र्थ तक पूर्ण।

—स० वि० २५७५४

(३) (क) हर-पार्वती सवादरूप। श्लोक स० ७६०, इसमे १७ पटल है और तत्त्वत्रय का वर्णन है। (ख) १६ पटल पूर्ण १७ वाँ अपूर्ण।

—ए० व० (क) ५९८३, (ख) ५९८४

उ०—पुरश्चर्यार्णव, कौलिकार्चनदीपिका, कालिकासपर्याविधि तथा शाक्तानन्द-तरङ्गिणी मे।

(सभवत भूतशद्धितन्त्र दो होगे। एक मे पटल स० १७ कही गयी है और दूसरे मे १३।) —स०

भूतशुद्धि आदि

लि०—(१) (क) श्लोक स० ८०। (ख) श्लोक स० १५०, अपूर्ण। इसका [(ख) का] नाम भूतशुद्धयादि लिखा है।

—अ० व० (क) ३४७८, (ख) ११७४३

(२) आदि पद से प्राणप्रतिष्ठा और मातृकान्याम गृहीत होते हैं।

—रा० पु० ४१८१

(३) श्लोक स० ३३, पूर्ण। आदि पद से केवल प्राणप्रतिष्ठा गृहीत है।

—स० वि० २३८९४

भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठा

लि०—(१) इसमे दो तान्त्रिक क्रियाओ—भूतशद्धि और प्राणप्रतिष्ठा की पद्धति वर्णित है। —ए० व० ६५६७

(२) (क) भूतशुद्धि-प्राणप्रतिष्ठा, (ख) भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठाविधि, (ग) भूतशद्धि-प्राणप्रतिष्ठा-मातृकान्यास, (घ) भूतशुद्धि-मातृकान्यासादि, (ङ) भूतशुद्धया-दय, (च) भूतशुद्धयादि, (छ) भूतशुद्धयादिप्रयोग, (ज) भूतशुद्धयादिविधि— ये ८ पुस्तके प्राय एक ही प्रकार के विषय की है। क्रमश उनकी स० नीचे दी जाती है।

—स० वि० (क) २३८९४, (ख) २६२७९, (ग) २५३५०, (घ) २६५५८, (ङ) २६०८३, (च) २६६१४, (छ) २६१६२, (ज) २५६८३

भूतितन्त्र

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

भूतिरुद्राक्षमाहात्म्य

लि०—(१) परमहंस परिव्राजक अभिनवनारायण सरस्वती-शिष्य परमशिवेन्द्र सरस्वती विरचित। इसमे शिवजी की प्रीति के लिए विभूति के उपयोग तथा रुद्राक्ष-धारण की अत्यन्त आवश्यकता वर्णित है। —ए० व० ६५५३

भूतोच्चाटनविधि

लि०—श्लोक स० १३, अपूर्ण। —स० वि० २५६९४

भूतोड्डामर

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से

भूतशुद्धि या भूशुद्धि

लि०—श्लोक स० १२५। —अ० व० १३९१९

भूपसमुच्चयतन्त्र

लि०— कैट् कैट् १।४१५

भूलक्षणपटल

लि०— —कैट् कैट् १।४१५

भृगुपटल

लि०— —कैट् कैट् १।४१५

भृगुसंहिता

लि०— —कैट् कैट्. १।४१५

भृङ्गीशसंहिता

लि०—दे०, अमरनाथपटल। —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से

भेदवादनवारण

नामान्तर—भेदवाद विदारिणी

लि०—अभिनव गुप्त कृत, पूर्ण। —डे० का ४७१ (१८७५–७६ ई०)

उ०— ग्रन्थकार ने ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी मे इसका उल्लेख किया है।

भेदिका

(भावार्थदीपिका-टीका)

रामतनु शर्मा द्वारा, जो मूलग्रन्थकार के शिष्य थे, विरचित। —इ० आ० २५७२

भैरवडामर

उ०—सच्चिदानन्द सरस्वती कृत ज्ञानप्रदीप मे।

भैरवतन्त्र

लि०—(१) ईश्वर-पार्वती सवादरूप। इसमे वह्निसाधन, सूर्यसाधन, धूमसाधन, शीतसाधन, मेरुसाधन आदि मन्त्रसिद्धि के उपाय वर्णित है। हारकतन्त्र इसी तन्त्र का एक भाग प्रतीत होता है। —ए० व० ६०४१

(२) (१) भैरवतन्त्र मे (क) आनन्दकाण्ड।
,, (ख) दक्षिणकालीकवच।
,, (ग) बीजकोष।
,, (घ) श्यामाकवच।
,, (ङ) वटुकभैरवसहस्रनाम।
,, (च) सरस्वतीसहस्रनाम।

—कैट् कैट् १।४१७, ३।९७

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, ताराभक्तिसुधार्णव, श्यामारहस्य तथा आगमतत्त्वविलास मे।

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रो मे अन्यतम है।

भैरवतन्त्रमन्त्रसंकेतसंग्रह

लि०— म० रि०

भैरवदीपदान

लि०—(१) श्लोक स० १००। —अ० व० ३४५७

(२) —कैट् कैट् १।४१७

भैरवदीपदानविधि (१)

लि०—(१) उमा-महेश्वर सवादरूप। श्लोक स० २२। इसमे वटुकभैरव-दीपदानविधि और उसका फल वर्णित है। —रा० ला० ४० ४४

(२) भैरवीतन्त्रान्तर्गत। विवरण ऊपर दिया है—रा. ला ४०४४ मे। इसमे वटुकभैरव के प्रति दीपदानविधि वर्णित है। —ए० व० ६०४२

(३) भैरवतन्त्रीय, श्लोक स० ६७, पूर्ण। —म० वि० २५३१६

भैरवदीपदानविधि (२)

लि०—रामचन्द्र कृत। —कैट् कैट्. ३।९०

भैरवदीपविधि

लि०—श्लोक स० ६७, पूर्ण। लिपिकाल म० १७९० वि०।

—म० वि० २६५९६

भैरवनाथतन्त्र

उ०—Oxford (आक्सफोर्ड) १०८ (ख) के अनुसार इसका उल्लेख है।

—कैट् कैट् १।४१७

भैरवपद्धति

लि०—(१) मुख्य मुख्य तन्त्रो से सगृहीत। इसमे भैरव की पूजा के लिए निम्न निर्दिष्ट रीति से निर्देश है—साधक रविवार को ब्राह्ममहूर्त मे दक्षिणाङ्ग मे उठकर इष्टदेव भैरव का स्मरण करते हुए बाँये पैर को भूमि पर रख, आवश्यक कृत्य कर, हाथ पैर धोकर और रात्रि के वस्त्र बदल कर, भैरव-स्वरूप का ध्यान कर मन्त्र का एक लक्ष जप कर उसका दशाश होम नमक मिली सरसो से करे। —बी० कै० १२४८

(२) (क) श्लोक स० ६८, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ७७, प्रयोगसारान्तर्गत, अपूर्ण। (ग) श्लोक म० ५२६, अपूर्ण (?)।

—सं० वि० (क) २३८९६, (ख) २६०२२, (ग) २६०७४

(३) (क) श्लोक स० २५०, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ९०। (ग) श्लोक स० ६००, अपूर्ण। (घ) श्लोक स० ४००, अपूर्ण।

—अ० व० (क) २०१, (ख) ३४८१, (ग) ३४७९, (घ) ११११३

(४) (क) मन्त्रचिन्तामणि से गृहीत तथा (ख) रुद्रयामल से गृहीत।

—कैट्. कैट् १।४१७

भैरवपुरश्चरणविधि

लि०—शिवागमसार मे उक्त। —रा० पु० ५००५

भैरवपूजन

लि०—श्लोक स० ६० । —अ० व० ८४७८

भैरवपूजापद्धति

लि०—(१) रामचन्द्र विरचित । इसमे पूजक (साधक) द्वारा अवश्य करणीय प्रात कृत्यो से लेकर साङ्गोपाङ्ग वटुकभैरवपूजापद्धति प्रतिपादित है। ज्ञात होता है, यह कृष्णभट्ट कृत भैरवपूजापद्धति के आधार पर लिखी गयी है ।

—ए० व० ६४६७

(२) श्लोक स० ३६०, पूर्ण। —स० वि० २३८९५

भैरवप्रयोग

लि०— —कैट् कैट् १।४१७

भैरवनामावली

लि०— —कैट् कैट् १।४१७

भैरवयामल

लि०—(१) भैरवस्तवमात्र, पूर्ण।

—डे० का० ४७५ (१८७५-७६ ई०)

(२) भैरवयामलान्तर्गत—भैरवस्तव तथा सुवर्णाकर्षणभैरवस्तोत्र।

—कैट् कैट् १।४१७

(३) —कैट् कैट् २।९५

(४) भैरवयामल मे दक्षिणकालिकास्तव । —कैट् कैट् ३।९०

उ०—चिद्वल्ली तथा सौन्दर्यलहरी की टीका अरुणामोदिनी मे ।

भैरवसंहिता

उ०—देवनाथ द्वारा तन्त्रकौमुदी मे ।

भैरवसपर्याविधि

लि०—मथुरानाथ शुक्ल कृत । —कैट् कैट् १।४१७

भैरवसहस्रनाम

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत । —कैट् कैट् १।४१७

भैरवस्तव

लि०—(१) अभिनवगुप्त कृत, पूर्ण ।

—डे० का० ४७६ (१८७५-७६ ई०)

(२) (क) अभिनवगुप्त कृत, (ख) भैरवयामलतन्त्र से गृहीत ।

—कैट् कैट्. १।४१७

भैरवस्तवपाठविधि,
भैरवस्तवपुरश्चरण-श्लोकसंख्यानिर्णय,
भैरवस्तवपुरश्चरणविधानानुक्रमणी,
भैरवस्तवराजपठनविधि,
भैरवस्तवराजानुष्ठानविधि ।

लि०—ये प्राय एक ही प्रकार के विषयो की कई पुस्तके है। इनके न० है—

—सं० वि० २६०७३, २६०७५, २६०५१, २६०५७, २६०५०

भैरवस्तवराज

लि०–विश्वसारोद्धारान्तर्गत, पार्वती-परमेश्वर सवादरूप । इसमे वटुकभैरव का अष्टोत्तरशतनामस्तव कहा गया है। —नो० स० ३।२०८

भैरवस्तवादिप्रकरण

लि०—श्लोक स० १४६, पूर्ण ।

—डे० का० २२४ (१८८३-८४ ई०)

भैरवानुकरणस्तोत्र

क्षेमराज कृत ।

उ०— ग्रन्थकार द्वारा स्वरचित साम्बपञ्चाशिका की टीका मे ।

भैरवाराधन

लि०—पूर्ण । —डे० का० ४७७ (१८७५-७६ ई०)

भैरवार्चन

लि०—(१) —ने० द० १।१६४८ (ठ)

(२) —कैट्. कैट् १।४१७

भैरवार्चापारिजात

लि०--बघेलवशीय श्रीजैत्रसिंह कृत। यह १४ स्तबको में पूर्ण है। इसमे भैरव-पूजा साङ्गोपाङ्ग वर्णित है।

(२) श्रीजैत्रसिंहदेव कृत, श्लोक स० ३६५७, एक पन्ने के सिवा पूर्ण ।

--र म ४९७१

(३) (क) श्रीजैत्रसिंह कृत

(ख) श्रीनिवासाचार्य कृत। ---कैट् कैट् १।४१७

भैरवीकवच

लि०---रुद्रयामल से गृहीत। श्लोक स० ३०।

---अ० व० ८०७१ (ग)

भैरवाष्टक

(१) भैरवाष्टक के नाम---वटुकभैरव, सिद्धभैरव, ककालभैरव, कालभैरव, कालाग्निभैरव, योगिनीभैरव, महाभैरव और शक्तिभैरव। इनके मत के प्राधान्यानुसार ये आठ तन्त्र है। लक्ष्मीधरी (सौन्दर्यलहरी की टीका) के अनुसार।

(२) किसी मत से असिताङ्ग, रुरु, चण्ड, क्रोध, उन्मत्त, कपाली, भीषण और सहार ये आठ भैरवो के नाम है। उनके अनुसार आठ तन्त्र है। द्रष्टव्य, सेतुबन्ध।

(३) किसी-किसी के मत मे (भास्करराय के मत मे) अष्ट भैरवो का एक ही तन्त्र है। वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत भैरवाष्ट का यह अर्थ है।

(४) ब्रह्मयामल के अनुसार दक्षिणाम्नाय के अन्तर्गत विद्यापीठ से ससृष्ट ८ भैरव है। उनके नाम---स्वच्छन्द, क्रोध, उन्मत्त, उग्र, कपाली, झकार, शेखर और विजय है। द्रष्टव्य, P C Bagchi कृत Studies in Tantras Part I

भैरवीतन्त्र

लि०---अपूर्ण । ---त्र० प० ८९५

उ०---प्राणतोषिणी, तारामक्तिसुधार्णव, तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, आगमतत्त्वविलास, आगमकल्पलता, रहस्यार्णव, ललितार्चनचन्द्रिका, तन्त्ररत्न, श्यामारहस्य तथा सर्वोल्लास मे।

श्रीकण्ठी तथा सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रो मे अन्यतम है।

भैरवीपटल

शारदातिलककार विरचित।

उ०—शारदातिलक-टीका राघवभट्टी मे।

भैरवीयतन्त्र

उ०—तन्त्रसार मे।

भैरवीरहस्य

लि०—मुकुन्दलाल विरचित। —कैट् कैट्. १।४१७

भैरवीरहस्यविधि

लि०—हरिराम कृत। —कैट् कैट् १।४१७

भैरवाष्टक

लि०—(१) काशीनाथ कृत। श्लोक स० ६८, पूर्ण।

—र० म० १०४९ (ख)

(२) श्लोक स० १२२, अपूर्ण, तन्त्रोत्तम के साथ। कर्ता का नाम नही दिया गया है। —स० वि० २५३८१

भैरवाष्टोत्तरशतनामपुरश्चरणविधि

लि०—विश्वसारोद्धार के अन्तर्गत। श्लोक स० २८, पूर्ण।

—स० वि० २५९०४

भैरवीशिखा

श्रीकण्ठी के अनुसार यह चतु:षष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है।

भोगमोक्षप्रदीपिका

उत्पलाचार्य कृत।

उ०—इसका ग्रन्थकार ने स्वरचित स्पन्दप्रदीपिका मे उल्लेख किया है।

मकुटतन्त्र

लि०—श्लोक स० २८०, २य पटल। —अ० व० ६८२७ (ग)

मकुटागम

लि०—(१) इसके कुछ ही खण्ड हैं। पन्ने ८८। —तँ० म० ११४२८

(२) —कैट् कैट्. १।४१९, २।९६

मङ्गलचण्डीपूजापद्धति

लि०—श्लोक स० ७०, पूर्ण।

—स० वि० २५००३

मङ्गलविधि

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। इसमे मङ्गल ग्रह की तान्त्रिक पूजा वर्णित है।

—ए० व० ५८९१

मङ्गलव्रतपूजाविधि

लि०—

—रा० पु० ६७२३

मङ्गला

श्रीकण्ठी के अनुसार यह चतु षष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है।

मङ्गलाशास्त्र

उ०—Oxford (आक्सफोर्ड) २३९ (क) के अनुसार वितस्तापुरी ने इसका उल्लेख किया है।

—कैट् कैट् १।४२०

मङ्गलापूजाविधि

लि०—(क) श्लोक स० १८०५। (ख) श्लोक स० २२५।

—अ० व० (क) १३९१८, (ख) १३९२५

मण्डलदेवता

लि०—

—कैट् कैट् १।४२०, २।९६

मण्डलदेवताविधि

लि०—श्लोक स० ५६।

—अ० व० १११३६

मत

श्रीकण्ठी के अनुसार यह चतु षष्टि (६४) तत्रो के अन्तंगत है।

मतङ्ग पारमेश्वर (महातन्त्र)

लि०—(१) क्रियापाद मे ११ पटल हैं। इसका उपदेश मतङ्ग मुनि के लिए भगवान् हर ने किया। इसके उक्त पटलो के विषय हैं—१, दयोद्घाटन, (२ से ४ तक के पटलो के विषय नही दिये हैं।) ५. शक्तिपटल, ६ पुप्रधानेश्वर-साधन प्रकरण, ७ विद्यापटल, ८ मायातत्त्व, ९ कलातत्त्व, १० विद्यातत्त्व और ११ रागपटल।

—इ० आ० २६०६

(२) यह तान्त्रिक रीति-रिवाजो पर पूर्ण प्रकाश डालता है। यह महातन्त्र की शैली का ग्रन्थ है। —तैं० म० २३

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

मतङ्गपारमेश्वरतन्त्र

लि०—(१) मतङ्ग-परमेश्वर सवादरूप यह मौलिक तन्त्र (शैवागम) विद्यापाद, क्रियापाद, योगपाद और चर्यापाद—चार पादो मे पूर्ण है। विद्यापाद मे २५, क्रियापाद मे १५, योगपाद मे ७ तथा चर्यापाद मे ९ पटल है। विवरण दे०, इ० आ० पे. ९०५ मे। इस पर एक टीका देखी गयी है। क० का० तथा तै० म० के अनुसार इस मे १२००० मे अधिक श्लोक हैं, फिर भी यह पूर्ण नही है।

(२) यह विद्यापाद, क्रियापाद, उपायपाद और सिद्धिपाद—इन चार पादों मे विभक्त है। विद्यापाद पर नारायण-पुत्र रामकण्ठ कृत टीका है।

मतङ्गवृत्ति (१)

लि०—(१) नारायणकण्ठ-शिष्य (पुत्र ?) रामकण्ठभट्ट कृत, श्लोक स० ८४८७, पूर्ण।

—डे० का० २३५ (१८८३–८४ ई०)

(२) रामकण्ठभट्ट कृत। —कैट्. कैट् १।४२१

उ०—रत्नत्रयपरीक्षावृत्ति मे।

मतङ्गवृत्ति (२)

अघोर शिवाचार्य-गुरु सर्वात्मवृत्ति कृत।

मतङ्गशास्त्र

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

मतसार

लि०—(१) इसमे बाला कुब्जिका देवी की पूजाविधि प्रतिपादित है। यह १० पटलो मे पूर्ण है। इसमे प्रतिपादित विषय हैं—कुब्जिकास्तोत्र, भैरवस्तोत्र, अभिषेक, शब्दराशि-फल, दण्ड, काण्ड आदि पञ्च अभिषेक, प्रस्तार दीक्षाविधि, पञ्च प्रणवोद्धार ध्यान, पशुपरीक्षा आदि। —ने० द० १।१५१२

(२) सवा लाख से भी अधिक श्लोको की महासंहिता के अन्तर्गत १२ हजार श्लोको का यह मतसार तन्त्र है। इसका २य नाम विद्यापीठ है। इसमे २३ या अधिक पटल हैं। ऊपर जितना विवरण दिया गया है वह इसके अशमात्र का प्रतीत होता है। यह तन्त्र पश्चिमाम्नाय से सबन्ध रखता है। इसके विपय हैं—आज्ञाप्रसाद, ब्रह्मविष्णु दीक्षा, इन्द्रानुग्रह, न्यासक्रम, शव्दराशि, मालिनी-उद्धार, विद्याप्रकाशोद्धार, शङ्करविन्यास, युगनाथ नामोद्धार आदि। —ने द २।३७९, ३।२७५

मतोत्तरतन्त्र

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी मे।

मतोत्सव

लि०—रुद्रयामल के अन्तर्गत, उमा-महेश्वर सवादरूप। श्लोक स० ११००, ३० अध्याया मे पूर्ण। इसमे मारण, मोहन, उच्चाटन, स्तम्भन, वशीकरण और उनके उपयोगी यन्त्र वर्णित हैं। उनकी विधि प्राय हिन्दी मे लिखी गयी है।

—ए० व० ५८६८

मत्स्यतन्त्र

उ०—रघुनन्दन द्वारा प्रायश्चित्ततत्त्व मे इसका उल्लेख किया गया है। दे०, मत्स्य-सूक्त। —कैट् कैट् १।४२२

मत्स्यसूक्त (तन्त्र)

लि०—(१) पराशर-विरूपाक्ष सवादरूप। इसमे १० पटल हैं। तारा, महोग्रतारा कल्परहस्य, पूजाविधि आदि विषय इसमे वर्णित हैं। —ए० व०५९१७

(२) श्लोक स० १००, केवल ४ पटल। अ० व० १०६२७ (ख)

(३) —कैट् कैट् १।४२२, २।९७, ३।९१

उ०—तन्त्रसार, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, तारारहस्यवृत्ति तथा आगमतत्त्वविलास मे। रघुनन्दन और कमलाकर ने भी अपने ग्रन्थो मे इसका उल्लेख किया है।

मत्स्यसूक्तमहातन्त्र

लि०—(१) इस प्रति मे ३५ से लेकर ६० पटल हैं। —ए० व० ५९९७

(२) ३५ वे पटल से ६० वें पटल तक ही प्राप्त, आगे और पीछे खण्डित है, इसकी श्लोक स०३९६० है। इसमे प्रतिपादित विपय हैं—अशौच-व्यवस्था, प्रायश्चित्त, भद्रकाली आदि का पूजन आदि। —रा० ला०६०८

(३) श्लोक स० ३००० । —अ० व० १०१०९

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, प्राणतोपिणी, आगमकल्पलता तथा तारारहस्यवृत्ति मे ।

मत्स्यसूक्तविधान

लि०—विनियोगदीपिका से गृहीत, श्लोक स० १०० । —अ० व० ३४८२

मत्स्योत्तरतन्त्र

लि०— यह यौगिक क्रियाओ का प्रतिपादक तन्त्रग्रन्थ है ।

—ए० व० ५९९०

मद्गीत

श्रीकण्ठी के अनुसार यह अष्टादश (१८) रुद्रागमो के अन्तर्गत है ।

मधुपर्कादि

खि०—श्लोक सस्या १०० । —अ० व० ७४५६

मनुसंहिता

उ०—आगमतत्त्वविलास मे ।

मधुवाहिनी

कल्लट कृत, शैवागम ग्रन्थ ।

मनोनुशासन

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल और सेतुवन्ध मे

मनोरमा (१)

लि०—(१) कादिमत-टीका सुभगानन्दनाथ तथा प्रकाशानन्दनाथ विरचित । दे०, कादिमत ।

(२) कादिमत-टीका सुभगानन्दनाथ उर्फ प्रपञ्चसारसिंहराज प्रकाश विरचित ।

(क) श्लोक स० ११२९३, अपूर्ण ।

(ख) श्लोक स० १६३०, अष्टम (८ म) पटल तक ।

(ग) श्लोक स० ४९५८, अपूर्ण ।

—र० म० (क) ४८८८, (ख) ४८९३, (ग) ४८९०

(३) कादिमत-टीका सुभगानन्दनाथ कृत, तन्त्रराज की टीका पटल १ से २२ तक सुभगानन्दनाथ कृत, पटल २३ से ३६ तक उनके शिष्य प्रकाशानन्द कृत।

—कैट् कैट् ११४२९

मनोरमा (२)

लि०—आनन्द-लहरी व्याख्या (मनोरमा) श्लोक स० ११०। सच्चिदानन्द-शिष्य सहजानन्दनाथ विरचित।

मन्त्रकमलाकर

लि०—(१) रामकृष्णभट्ट-पुत्र कमलाकरभट्ट कृत। इसमे दीक्षाविधि, महागणपति-पद्धति, गणेशमन्त्र, रामपूजाविधि, राममन्त्रोद्धार, कार्तवीर्य-दीपदानप्रयोग, कार्तवीर्यार्जुन-पद्धति, वन्ध्यात्व की निवृत्ति, वन्दिमोक्षप्रयोग, सर्प-विष को उतारना, कार्तवीर्य-सहस्रनामस्तोत्र, मन्त्रौषध-प्रकरण आदि विविध विषय वर्णित है।

—ए० व० ६२३८

(२) कमलाकरभट्ट कृत, श्लोक स० ४५०५, पूर्ण। —स० वि० २४८८५

(३) कमलाकर कृत। —कैट् कैट् ११४२९

मन्त्रकल्पलता

लि०—यह ८ तरङ्गो मे है। इसमे महाविद्या आदि देवियो तथा देवो के मन्त्र और मन्त्रो के ऋषि, छन्द, देवता आदि वर्णित है। —बी० कै० १२९१

मन्त्रकारिका

लि०—श्लोक स० ७७, अपूर्ण। —स० वि० २४३०४

मन्त्रकाशीखण्ड

लि०—इसपर नीलकण्ठ चतुर्धर की व्याख्या है। दे०, मन्त्रभागवत।

—कैट् कैट् ११४२९,

मन्त्रकोश (१)

लि०—(१) आशादित्य त्रिपाठी विरचित। (क) श्लोक सख्या ५०००, खण्डित। (ख) श्लोक ५०००, खण्डित। (ग) श्लोक स० १५०० (११ वे परिच्छेद से १५ वे तक)।

—अ० व० (क) २२४९, (ख) १०६७८, (ग) २२१०८

(२) मन्त्रकोश अथवा मन्त्ररत्नावली आशादित्य त्रिपाठी कृत, श्लोक स० ४४००, अपूर्ण। लिपिकाल सवत् १६३० वि०।   —डे० का० ३५७ (१८८०-८१ ई०)

(३) अथवा मन्त्ररत्नावलीकोश—आशादित्य कृत,।   —कैट् कैट् १।४२९

(४) (क) श्लोक स० ३१२४, पूर्ण। (ख) श्लोक स० १६५, पूर्ण। (ग) सग्रहकर्ता आदित्य (आशादित्य ?) त्रिपाठी। श्लोक स० २९७६, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २३९११, (ख) २३९६२, (ग) २४९६८

(५) आशादित्य त्रिपाठी कृत।   —कैट् कैट् २।९८

(६) दे०, वीरभद्रतन्त्र, आशादित्य कृत।   —कैट् कैट् ३।९२

मन्त्रकोश (२)

लि०—(१) म० म० जगन्नाथ भट्टाचार्य विरचित, श्लोक स० २७९। इसमे वर्णो की उत्पत्ति के प्रकार का वर्णन करते हुए तन्त्रोक्त सकेत मे उनके पर्याय प्रतिपादित है।

—रा० ला० २३७८

(२) जगन्नाथ चक्रवर्ती विरचित।   —ब० प० १५४८ (ख)

(३) जगन्नाथ भट्टाचार्य कृत।   —कैट् कैट् १।४२९

मन्त्रकोश (३)

लि०—दक्षिणामूर्ति कृत।   —कैट् कैट् १।४२९

मन्त्रकोश (४)

लि०—विनायक कृत।   —कैट् कैट् १।४२९

मन्त्रकोश (५)

लि०—वामकेश्वर तन्त्र से गृहीत।   —कैट्. कैट् १।४२९

मन्त्रकोशकल्प

लि०—श्लोक स० १५००।   —अ० ब० २२४८

मन्त्रकौमुदी

देवनाथ ठक्कुर तर्कपञ्चानन कृत।

लि०—(१) (क) श्लोक स० १००, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ४८, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २५००२, (ख) २५०१४

(२) श्रीदेवनाथ कृत । —कैट्. कैट् १।४२९

इसका समाप्ति-काल लक्ष्मण स० ४०० है।

मन्त्रक्रमावली

लि०—(क) श्लोक स० ३०० । (ख) श्लोक सख्या ३५० ।

—अ० व० (क) ८३६७, (ख) ८३०२

मन्त्रखण्ड

लि०— —कैट् कैट् १।४२९

मन्त्रगणपतितत्त्वरत्न

लि०— —कैट् कैट् १।४२९

मन्त्रगणेशचन्द्रिका

लि०—इसमे महागणपति, लक्ष्मीविनायक, वक्रतुण्ड, विद्यागणपति, शक्तिगणेश, हेरम्वगणपति, हरिद्रागणेश आदि विभिन्न गणेशो की पूजापद्धति वर्णित है।

—ए० व० ६५०६

मन्त्रगीर्वाण

लि०—(क) यह मन्त्रविपयक किसी विशाल ग्रन्थ का एक अश प्रतीत होता है। इसके आरभ मे लिखा है—अथ सुदर्शनविधि । यह अपूर्ण है। (ख) अत्यन्त जीर्ण, वीच-वीच मे कीडो से कटा है ।

—तै० म० (क) १२०२१, (ख) १२०२२

मन्त्रचक्र

श्रीकण्ठी के अनुसार यह चतुपष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है।

मन्त्रचन्द्रिका (१)

लि०—(१) जगन्निवास-पुत्र जनार्दन गोस्वामी विरचित। इसमे १२ प्रकाश है एव पञ्च देवो की पूजा तथा मन्त्रो का प्रतिपादन है। —ए० व० ६२३२

(२) जगन्निवास-पुत्र जनार्दन गोस्वामी विरचित। श्लोक स० २५१३, अपूर्ण।

—र० म० ४८५३

(३) श्लोक स० १८६९, पूर्ण । —डे० का० ७३० (१८८३-८४ ई०)

(४) जगन्निवास-पुत्र जनार्दनभट्ट कृत, (क) श्लोक स० १२००, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० १५००, खण्डित। (ग) श्लोक स० १५००।

—अ० व० (क) ८३०७, (ख) ९६६०, (ग) ९६७७

मन्त्रचन्द्रिका (२)

लि०—(क) श्लोक स० २१०, पुरश्चरणविधि भी साथ मे सलग्न है, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ६२, पूर्ण। —म० वि० (क) २३९६०, (ख) २६९६१

मन्त्रचन्द्रिका (३)

लि०—(१) भडोपनामक शिवरामभट्ट-पौत्र जयरामभट्ट-पुत्र वाराणसीगर्भसभूत काशीनाथ विरचित। यह ग्रन्थ साधारण तान्त्रिक विधियो से पूर्ण है। विविध देवियो के मन्त्र तथा पूजा का इसमे प्रतिपादन किया गया है। इसमे प्रतिपादित विषय है—दीक्षा-विधान, सामान्य पूजाविधि, गणेश-मन्त्रविधान, कृष्ण-मन्त्रविधान, राम-मन्त्र आदि वैष्णव मन्त्रो की विधि, लक्ष्मी-मन्त्र आदि, वागीश्वरी-मन्त्रविधि, महाविद्या-मन्त्रविधि, शैव सुब्रह्मण्यादि मन्त्रोका विधान आदि। —ए० व० ६२४०

(२) काशीनाथ विरचित (क) श्लोक म० १५००, पुरश्चरण और मन्त्रसहित। (ख) श्लोक सं० १५००। —अ० व० (क) ८३१६, (ख) १०६८१

(३) इसमे ९ प्रकाश है। ९ प्रकाशो के विषय इस प्रकार वर्णित है—१ गणेश, वक्रतुण्ड, वीरगणेश, लक्ष्मीगणेश, शक्तिगणेश, हरिद्रागणेश के मन्त्र आदि का निरूपण, २ वाग्वादिनी, हसवागीश्वरी, बाला, भैरवी, कामेश्वरी, राजमातङ्गी के मन्त्र आदि का प्रतिपादन, ३ भुवनेश्वरी, दुर्गा, जयदुर्गा, लक्ष्मी, अन्नपूर्णा के मन्त्र आदि, ४ अश्वारूढा, गौरी, ज्येष्ठलक्ष्मी, वह्निवासिनी, शिवदूती, त्रिकण्टकी, बगलामुखी के मन्त्र आदि, ५ उग्रतारा, दक्षिणकालिका, धूमावती, भद्रकाली, महाकाली, उच्छिष्टचाण्डालिनी, धनदयक्षिणी के मन्त्र आदि, ६ वराह, सुदर्शन, पुरुषोत्तम के मन्त्र कथन, ७ हृषीकेश, श्रीधर, नृसिह, राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान् आदि के मन्त्र आदि, ८ गोपाल, कामदेव, कार्तवीर्यार्जुन, सूर्य, चन्द्र आदि के मन्त्र, ९ शिव, दक्षिणामूर्ति, मृत्युञ्जय, अघोर, नीलकण्ठ, क्षेत्रपाल, वटुक आदि के मन्त्र। —रा० ला० ९११ तथा १६०९

मन्त्रचिन्तामणि (१)

लि०—(१) इसमे वटुकभैरव-मन्त्रविधान वर्णित है। श्लोक सं० ९३२। इसमे प्रतिपादित विषय हैं—वटुक भैरव मन्त्र के ऋषि, देवता, छन्द आदि का वर्णन, पुरश्चरण,

पुरश्चरण-प्रयोग, मन्त्र-सन्ध्या आदि, गायत्री आदि, वह्निर्मातृका आदि का निरूपण, सिंह बीजन्यास आदि कथन, विशेप अर्घ्य स्थापन आदि की विधि, प्रमथ आदि आवरण देवों की पूजा, रुद्राक्षमालाभिमन्त्रणविधि, वलिदान-विधि, सात्त्विक और राजस भेद से वलि के दो प्रकार, लक्षण आदि कथन, दीपदानविधि, आकर्पण, विद्वेपण आदि कर्मो मे दीप के लिए घृत, तेल आदि के भेद का कथन, धारण मन्त्र के लक्षण, सात्त्विक ध्यान कथन अनन्तर राजस-ध्यान कथन, वन्ध्या की चिकित्सा, प्रज्ञाप्राप्ति के निमित्त ओपधि, आपदुद्धरण आदि । —रा० ला० १६१९

(२) (क) श्लोक स० ९०० । (ख) श्लोक स० २००, केवल देवताप्रतिप्ठा-विधि मात्र। —अ० व० (क) ६०२, (ख) ४९९९

(३) श्लोक स० २७५, अपूर्ण । —स० वि० २४३०५

(४) इसमे वटुक भैरव की पूजा वर्णित है। —कैट् कैट्. १।४२९

मन्त्रचिन्तामणि (२)

लि०—(१) शिवराम शुक्ल कृत, श्लोक स० १८९, पूर्ण ।
—स० वि० २३८४२

(२) (क) आदिनाथ कृत।
(ख) नित्यनाथ कृत।
(ग) नृसिंहाचार्य कृत।
(घ) शिवराम कृत। —कैट् कैट् १।४२९

(३) इसमे श्रीराम-पूजा आदि वर्णित है। —कैट्. कैट् २।९८

मन्त्रचूड़ामणि

लि०—(१) —कैट् कैट् १।४२९

(२) चूडामणितन्त्र मे गोपालसुन्दरीविद्या । —कैट् कैट् ३।९२

उ०—पुरश्चर्यार्णव, तन्त्रसार, ताराभक्तिसुधार्णव तथा तारारहस्यवृत्ति मे।

मन्त्रजपविधान

लि०—श्लोक स० ४५ । —अ० व० ३४८३

मन्त्रजपविधि

लि०— —कैट् कैट् २।९८, ३।९२

मन्त्रतन्त्रनेत्र

उ०—कुण्डकौमुदी मे।

मन्त्रतन्त्रप्रकाश

उ०—पुरश्चर्यार्णव, प्राणतोषिणी, ताराभक्तिसुधार्णव, शारदातिलक-टीका राघवभट्टी, मन्त्रदर्पण, ललितार्चनचन्द्रिका, कालिकासपर्याविधि, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, एकादशीतत्त्व, हेमाद्रि—चतुर्वर्गचिन्तामणि के परिशेषखण्ड तथा नारायणोपनिषद् मे।

मन्त्रतन्त्रमेरुरत्नावली

लि०— —कैट्. कैट् १।४३०

मन्त्रदर्पण

लि०—(क) श्लोक स० १०२३८, पूर्ण। (ख) वागीश्वर शर्मा विरचित, श्लोक स० १२४, अपूर्ण। —स० वि० (क) २४४१७, (ख) २५७७३

उ०—तन्त्रकौमुदी तथा आगमतत्त्वविलास मे।

मन्त्रदीक्षाविचार

लि०—श्लोक स० ३०१, अपूर्ण। —स० वि० २४०६७

मन्त्रदीपिका

लि०—(१) (क) श्रीकृष्ण शर्मा द्वारा विरचित, श्लोक स० १३६२, पूर्ण, (ख) श्लोक स० ४००, दशम प्रकाश मात्र, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० ४२०, अपूर्ण।
—स० वि० (क) २५५१८, (ख) २६१४६, (ग) २६२०२

(२) दे०, मन्त्रार्थदीपिका। —कैट् कट् १।४३०

मन्त्रार्थदीपिका

लि०—५ प्रकाशो मे, यशोवर कृत। —कैट् कैट् ३।९२

मन्त्रदेवप्रकाशिका

लि०—(१) परमाराध्य-पौत्र लक्ष्मीधर सूरि-पुत्र श्रीविष्णुदेव विरचित। इसमे दीक्षा, होम तथा अन्यान्य तान्त्रिक विधियाँ, विविध देवियो की पूजा और मन्त्र वर्णित है। यह ३२ पटलो मे पूर्ण है। —ए० व० ६२३४

(२) (क) श्लोक स० ३०००, खण्डित। (ख) श्लोक स० ११०० (२२ पटल पूरे, २३ वाँ शुरू)। —अ० व० (क) १०४७४, (ख) ६८८५

(३) यह ३२ पटलो मे पूर्ण है तथा इसकी श्लोक स० ४११६ है। विषय है—मन्त्रस्वरूप निरूपण, मन्त्र शब्द से ब्रह्मविद्या का प्रतिपादन किया गया है, यह कथन, देवता स्वरूप, सगुण ब्रह्म का स्वरूप, ब्रह्मविद्या के अगभूत साकारपरक मन्त्रो का विरोध-परिहार, विविध मन्त्र, न्यास आदि। —रा० ला० २८१५

(४) (क) श्लोक स० २२८, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० २७०, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० २६९७, पूर्ण (?) ,(घ) श्लोक स० ३२७६, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २३९०५, (ख) २३९०९, (ग) २४२९३, (घ) २४८२४

(५) विष्णुदेवकृत, श्लोक स० ३५४०, अपूर्ण।

—तं० म० ६७०१

(६) मन्त्रदेवप्रकाशिका या मन्त्रदेवताप्रकाशिका। यह बृहत् और लघुभेद से दो प्रकार की है। —कैट् कैट् ११४३०

उ०—पुरश्चर्यार्णव, तन्त्रसार, सौन्दर्यलहरी की टीका सौभाग्यवर्द्धिनी, ताराभक्ति-सुवार्णव तथा शाक्तानन्दतरङ्गिणी मे।

मन्त्रनेत्र

उ०—आगमकल्पलता तथा तन्त्रकौमुदी मे।

मन्त्रपद्धति (१)

लि०—(१) इसमे भूतशुद्धि, विविध प्रकार के न्यास, पुरश्चरण, दीक्षा और विभिन्न वैष्णवी देवियो की पूजा का प्रतिपादन किया गया है। इसमे ७ कल्प है।

—ए० व० ६२७९

(२) श्रीदत्त कृत, श्लोक स० २००, अपूर्ण।

—अ० व० ११६६३

मन्त्रपद्धति (२)

लि०—सोमनाथ कृत। —कैट् कैट् ११४३०

मन्त्रपारायण

लि०—(१) श्लोक स० १६०, पूर्ण (?)। (इसमे त्रिपुरोपनिषद् भी समिलित है)। —डे० का० ३९१ (१८८२-८३ ई०)

(२) श्लोक स० १८०, अपूर्ण। —स० वि० २४६२७

(३) मन्त्रपारायण मे विद्यार्थदीपिका। —कैट्. कैट्. १।४३०

उ०—कैवल्याश्रम ने इसका उल्लेख किया है।

मन्त्रपारायणक्रम

लि०—(१) इसमे मन्त्र-जप के नियम वतलाये गये है। —ए० व० ६२८०

(२) —कैट् कैट् १।४३०

मन्त्रपारायणप्रयोग

लि०—श्लोक स० ५२६, पूर्ण। वुद्धिराज विरचित। —म० वि० २४२३२

मन्त्रपारायणविधि

लि०— —कैट् कैट् २।९८

मन्त्रपुरश्चरण

लि०—गोविन्द कविकङ्कण कृत। —कैट् कैट्. ३।९२

मन्त्रपुरश्चरणप्रकाश

लि०—श्लोक स० २८०।

—डे० का० २३९ (१८८३-८४ ई०)

मन्त्रप्रकरण

लि०—पूर्ण। —डे० का० ४७८ (१८७५-७६ ई०)

मन्त्रप्रकाश

लि०—शावर मन्त्रो पर सोमनाथभट्ट विरचित। —कैट् कैट् १।४३०

उ०—पुरश्चर्यार्णव,शारदातिलक-टीका राघवभट्टी तथा चतुर्वर्गचिन्तामणि के परिशेप खण्ड मे।

मन्त्रप्रदीप (१)

लि०—रचिपति-पुत्र आगमाचार्य हरिपति विरचित, श्लोक स० ४६४०, पटल स० १५। विपय—दीक्षा की आवश्यकता, सिद्ध आदि मन्त्रो का निर्णय, अकडमादिचक्रविधि, नाडीविधि, राशिचक्र, नक्षत्रचक्र, ऋण धन जिज्ञासा, कुल, अकुल आदि का विचार, मन्त्रो के वालादि भेद, मन्त्र-सस्कार, दीक्षा का समय, देश,गुरु, शिष्य आदि का निरूपण, दीक्षाविधि, ग्रहण-काल आदि की दीक्षा, नवग्रहहोमविधि, वागीश्वरी, भुवनेश्वरी, नित्या,

दुर्गा,बाला, गणेश, चन्द्र, कार्तिकेय आदि के मन्त्र, सर्वदेवता-प्राणप्रतिष्ठा, प्रशस्त आसन, श्रीकण्ठादि न्यास, मालाद्रव्य, जपविधि, माला-सस्कार, त्रिशक्ति-पूजा, छिन्नमस्ता, उग्रतारा, उच्छिष्टचाण्डाली के पूजन आदि कथन, सुन्दरी तथा त्रिपुरसुन्दरी की पूजा-विधि, नवदुर्गा-पूजाविधि आदि । —रा० ला० २०११

मन्त्रप्रदीप (२)

लि०—काशीनाथ भट्टाचार्य विरचित श्लोक स० १२०७ तथा परिच्छेद स० ४ है। मन्त्रार्थ, मन्त्रचैतन्यकरण, योनिमुद्रा निरूपण आदि विषय इसमे वर्णित है।

—रा० ला० ७४७

मन्त्रप्रयोग

लि०—(१) (क) श्लोक स० १२७, अपूर्ण। (ख) दुर्गासप्तशती का एक दूसरा प्रयोग। श्लोक स० २६, पूर्ण। —स० वि० (क) २३९१०, (ख) २६०६९

(२) श्लोक स० ५००, अपूर्ण। इसमे मन्त्रो का सग्रह और उनकी प्रयोगविधि प्रतिपादित है । —ट्रि० कै० १०९४ (ङ)

मन्त्रप्रयोगतन्त्र

लि०— —कैट् कैट् १।४३०, ३।९२

मन्त्रभागवत (सटीक)

लि० (१)—मूल-सग्रहकार तथा व्याख्याकार चतुर्धर नीलकण्ठ,श्लोक स० ११००।

—अ० व० १३६२४

(२) गोविन्द सूरि-पुत्र नीलकण्ठ कृत मन्त्ररहस्यप्रकाशिका नाम की टीका सहित। इसमे राम और कृष्ण के चरितानुसारी वेदमन्त्रो का व्याख्यान है।

—रा० ला० १५११

(३) यह २०० वैदिक मन्त्रो का सग्रह है। इस पर मन्त्ररहस्यप्रकाशिका नाम की गोविन्द सूरिपुत्र नीलकण्ठ चतुर्धर कृत टीका है। टीकाकार ने उक्त मन्त्रो को राम और कृष्ण परक लगाया है। —कैट् कैट् १।४३०, २।९८, ३।९२

मन्त्रभूषण

उ०—अहल्याकामधेनु मे ।

मन्त्रमञ्जूषा

लि०—रामभारती-शिष्य त्रिविक्रम भट्टारक विरचित। (क) श्लोक स० १५००। (ख) श्लोक स० १५०० (यन्त्र सहित)। (ग) श्लोक स० १५००। (घ) श्लोक स० १०००, अपूर्ण। —अ० व० (क) १०६०१, (ख) १०४३२, (ग) १३१४५, (घ) ९६३९

मन्त्रमयूख

लि०— —कैट् कैट् ११४३०

मन्त्रमहोदधि

लि०—(१) राजा लक्ष्मीनृसिंह की सरक्षकता मे सवत् १६४५ मे इसका निर्माण हुआ था। इसके निर्माता रत्नाकर के पौत्र, रामभक्त के पुत्र महीधर है। यह २५ तरङ्गो मे पूर्ण तान्त्रिक पूजा का विवरणात्मक ग्रन्थ है। इस पर ग्रन्थकार की ही स्वरचित नौका टीका है। —इ० आ० २५७६

(२) महीधर विरचित, श्लोक स० ३७६६ तथा तरङ्ग स० २२। विषय—प्रात कृत्य निरूपणपूर्वक भूतशुद्धि आदि का निरूपण, गणेश के मन्त्र आदि का निरूपण, काली, सुमुखी आदि के मन्त्र, तारा के मन्त्र आदि, तारा के विभिन्न मन्त्र, छिन्नमस्ता के मन्त्र, यक्षिणी के मन्त्र, पूजा आदि का निरूपण, बाला, लघुश्यामा आदि के मन्त्र आदि, अन्नपूर्णा के मन्त्र आदि, महाविद्या, श्रीविद्या आदि का निरूपण, हनूमान् के मन्त्र आदि, विष्णु, शिव, सूर्य, कार्तवीर्य आदि के मन्त्र आदि का निरूपण, कालरात्रि, चण्डिका, ताम्रचूडा आदि के मन्त्रो का निरूपण नित्य पूजा के प्रकार आदि का कथन आदि। —रा० ला० १२५६

(३) इसमे विविध मन्त्र और यन्त्र, जो देवी-देवताओ की पूजा मे व्यवहृत होते है, वर्णित हैं। —बी० कै० १२९२

(४) २५ तरङ्गो मे पूर्ण, ग्रन्थ की श्लोक सख्या ३०००। इसके प्रारभ मे ग्रन्थकार ने लिखा है अनेक तन्त्रो का अवलोकन कर मै (महीधर) मन्त्रमहोदधि का प्रतिपादन करता हूँ। इसमे प्रतिपादित विषय है—उपासक के प्रात कालीन कृत्य, भूतशुद्धि, गणेशमन्त्र, काली, सुमुखी तथा तारा के मन्त्र, तारामन्त्र-भेद कथन, छिन्नमस्ता आदि के मन्त्र कथन, यक्षिणी आदि के मन्त्र निरूपण, बाला, लघुश्यामा के मन्त्रो का निरूपण, अन्नपूर्णा आदि के मन्त्र कथन, बगला आदि के मन्त्र कथन, श्रीविद्या के मन्त्र कथन, सुन्दरी की पूजाविधि, हनूमान् जी के मन्त्र, विष्णु, शिव, सूर्य आदि के मन्त्र, पवित्रारोपण, मन्त्रशोधन, षट्कर्म आदि का निरूपण आदि। —तै० म०, Tantric Litrature, Vol XIII

(५) (क) श्लोक स० ३५५३, पूर्ण। निर्माण-काल स० १६४५ वि०।
(ख) श्लोक स० २६४०, अपूर्ण।

—र० म० (क) ४९०२, (ख) ४८७७

(६) रत्नाकर-पौत्र नाथूभट्ट-पुत्र महीधर (शुक्ल यजुर्वेद-भाष्यकार) विरचित। इसमे २५ तरङ्ग है। उनमे प्रतिपादित विषयो की सूची ग्रन्थारम मे विस्तारपूर्वक निरूपित है। —क० का० ५६–६०

(७) (क) श्लोक स० ३४८०, पूर्ण। (ख) महीधर कृत, श्लोक स० ३२०२, पूर्ण (?) इत्यादि ४५ प्रतियाँ है। —स० वि० (क) २४०७९, (ख) २४१५८

(८) महीधर ने सन् १५८९ मे इसका निर्माण किया।

—कैट् कैट् ११४३०

(९) महीधर कृत, (क) श्लोक स० ३०००। (ख) श्लोक स० ५०००, नौका टीका सहित। टीकाकार भी स्वय ग्रन्थकार ही है। (ग) श्लोक स० ५०००, नौका टीका सहित। (घ) श्लोक स० ५०००, स्वय ग्रन्थकार रचित नौका टीका सहित।

—अ० व० (क) ३५३५, (ख) १४८४, (ग) ९३२६, (घ) ११४००

(१०) महीधर कृत, चार प्रतियाँ है।

—रा० पु० ४४४४, ५७४४, ५७४८, ६६५६

उ०—मन्त्रमहार्णव, कालिकासपर्याविधि तथा सुन्दरीमहोदय मे।

मन्त्रमहोदधि की टीकाएँ

(क) (१) नौका टीका ग्रन्थकार कृत, (२) पदार्थादर्श काशीनाथ कृत, (३) मन्त्रवल्ली गङ्गाधर कृत। —रा ला (१) १७१३, (२) १७१४, (३) २७७६

(ख) मन्त्रमहोदधि पर नौका टीका है, यह ग्रन्थकार द्वारा स्वय रचित टीका पूरे २५ तरङ्गो तक है। —वी० कै० १२९३

(ग) मन्त्र महोदधि पर एक काशीनाथकृत टीका और है—

नत्वा श्रीदक्षिणामूर्तिचरणाम्भोरुहद्वयम्।
काशीनाथ प्रकुरुते टीका मन्त्रमहोदधे॥

—ए० व० ६२५४, ६२५६

(घ) नौका टीका सहित। रचना-काल स० १६४५ वि०।

—रा० ला० १७१३

(ङ) नौका तथा पदार्थादर्श ये दो टीकाएँ इसमे प्रतिपादित हैं। —ग० ग्रा० १७१४

(च) (१) नौका, महीधर कृत, (२) पदार्थादर्श, काशीनाथ कृत।

—स० वि० (१) २३९४७ आदि १० प्रतियाँ तथा (२) २४३४१ आदि ३ प्रतियाँ है।

मन्त्रमहोदय

उ०—प्राणतोषिणी मे।

मन्त्रमार्तण्ड

लि०—रामभट्ट कृत, श्लोक स० १०, अपूर्ण। —स० वि० २६०४९

मन्त्रमाला

लि०—(१) इसमे विशेष-विशेष देवियो के मन्त्रो का सग्रह तथा तन्त्रसारानुसारी क्रियाएँ, ऋषि, न्यास, ध्यान आदि का वर्णन है। ये सब मन्त्र आदि भुवनेश्वरी, अन्नपूर्णा, पद्मावती, जयदुर्गा और लक्ष्मी के हैं। —ए० व० ६२७८

(२) इसमे विशेष-विशेष देवी-देवताओ के तान्त्रिक मन्त्रो का सग्रह किया गया है।

—बी० कै० १२९४

(३) —कैट् कैट् १।४३०

मन्त्रमुक्तामणि

लि०—श्लोक स० २००। —अ० व० ११२

मन्त्रमुक्तावली (१)

लि०—(१) परमहस परिव्राजकाचार्य अनन्तप्रकाश के शिष्य पूर्णप्रकाश विरचित। इसमे २५ पटल है एव उनमे बहुत-सी तान्त्रिक विधियाँ—दीक्षा, विभिन्न देवियो के पुरश्चरण, पूजा, मन्त्र आदि—वर्णित है। —इ० आ० २५८२

(२) श्लोक सख्या ५०००। २५ पटलो मे दीक्षा, पुरश्चरण, पूजा आदि तान्त्रिक विधिया वर्णित है। —ए० व० ६२३९

(३) (क) श्लोक स० ७०००, अनन्तप्रकाश-शिष्य पूर्णप्रकाश कृत, पूर्ण।

(ख) श्लोक स० १५००, अपूर्ण।

—अ० व० (क) ८९३९, (ख) ९५३७

(४) (क) पूर्णप्रकाश कृत।

(ख) रामचन्द्र कृत। —कैट् कैट् १।४३०

(५) —कैट् कैट् २।९८, ३।९३

उ०—पुरश्चर्यार्णव, आगमकल्पलता, ताराभक्तिसुधार्णव, ललितार्चनचन्द्रिका, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, कुण्डमण्डपसिद्धि, मन्त्ररत्नावली, शारदातिलक की टीका राघवभट्टी तथा आगमतत्त्वविलास मे। पद्मनाभ तथा रघुनन्दन ने भी अपने ग्रन्थ मे इसका उल्लेख किया है।

मन्त्रमुक्तावली (२)

लि०—(१) पार्वती-महेश्वर सवादरूप । इसके १६ पटलो मे विविध मन्त्र, ध्यान, न्यास, कवच, सहस्रनामस्तोत्र वर्णित है तथा १७ वे पटल मे छिन्नमस्ता का सहस्रनाम दिया गया है। सभव है इसमे १७ से अधिक पटल हो किन्तु यह इ० आ० २५८२ से मेल नही खाता । —ए० व० ६२७७

(२) (क) श्लोक स० १००। (ख) श्लोक स० १००। (ग) श्लोक स० १००।

—अ० व० (क) ५१४०, (ख) ८४०२, (ग) ८८३७

(३) श्लोक स० २२४, पूर्ण । —डे० का० ३९२ (१८८२-८३ ई०)

(४) (क) श्लोक स० ७२, पूर्ण। (ख) श्लोक स० लगभग ७२, पूर्ण। (ग) श्लोक स० ७२ पूर्ण। (घ) श्लोक स० ७२, पूर्ण। (ङ) श्लोक स० ७०, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४३६९, (ख) २५२२०, (ग) २५३२७, (घ) २५३७२ (ङ) २५६७७

मन्त्रमुक्तावलीविधि

लि०—(१) तन्त्रसारोक्त । इसमे भुवनेश्वरी, अन्नपूर्णा, त्रिपुरा, अदूरिता, महिषमर्दिनी, जयदुर्गा, श्री, हरिद्रागणेश, सूर्य, अग्नि, विष्णु, रामचन्द्र, वासुदेव, नृसिह, वराह, कृष्ण, शिव, क्षेत्रपाल, भैरव, भद्रकाली आदि के विविध मन्त्र, वीरसाधना आदि के मन्त्र, मारण, मोहन आदि के मन्त्र एव अदर्शन-मन्त्र प्रतिपादित है। इस प्रकार यह कतिपय मन्त्रो का सग्रहग्रन्थ है। —नो० स० ३।२१३

(२) इसमे कुछ अधिक १९ पटल है, अपूर्ण। गुरु शिष्य-लक्षण, दीक्षा-विचार, महामन्त्रो के अक्षरो का विचार तथा स्वरूप निर्देश, दीक्षा का प्रकार, प्राणायामादि का विचार, विशेष-विशेष देवताओ के मन्त्र आदि का विचार आदि विषय वर्णित हैं।

—क० का० ६१ से ६३ तक

(३) पन्ने १५, पूर्ण । —त्र० प० १५४८ (क)

मन्त्रमोहनादिक्रिया

लि०— —कैट् कैट्.३।९३

मन्त्रयन्त्रचिन्तामणि

लि०—श्लोक स० ६४० । —अ० व० ३४८५

मन्त्रयन्त्रप्रकाश

उ०—कृष्णानन्दकृत तन्त्रसार मे ।

मन्त्रयन्त्रविधि

लि०—श्लोक स० ३८४, अपूर्ण । —स० वि० २६२२६

मन्त्रयन्त्रादिसंग्रह

लि०—श्लोक स० लगभग १६००, अपूर्ण । —स० वि० २४५१८

मन्त्रयोगप्रकाश

लि०—शिवसंहिता से गृहीत । —कैट् कैट्. १।४३०

मन्त्ररत्न

लि०—अनन्त पण्डित विरचित । —कैट् कैट् १।४३०

मन्त्ररत्नदीपिका

उ०—अहल्याकामधेनु मे ।

मन्त्ररत्नप्रकाश

लि०— —कैट्. कैट् १।४३०

मन्त्ररत्नप्रदीपिका

लि०—शार्ङ्गधर मिश्र-प्रकाशिका के अन्तर्गत, श्लोक स० १२०, पूर्ण ।
—स० वि० २६०८२

मन्त्ररत्नमञ्जूषा

लि०—(१) श्लोकसं० १६०, अपूर्ण । —र० मं० ४५०४

(२) त्रिविक्रमभट्ट विरचित , श्लोक स० ८१०, पूर्ण ।
—डे० का० ३९३ (१८८२-८३ ई०)

(३) त्रिविक्रमभट्ट कृत । —म रि ३१०, ३११

(४) ८पटलो मे। त्रिविक्रम भट्टारक कृत —कैट् कैट् १।४३०

मन्त्ररत्नाकर (१)

लि०—(१) चतुर्भुजाचार्य-शिष्य विजयराम आचार्य विरचित।

—इ० आ० २५८८

(२) इसमे १४ या १६ तरङ्ग हैं। उनमे केवल श्रीराधा के मन्त्र और स्तोत्र वर्णित है। इस ग्रन्थ पर एक टीका उपलब्ध है जो ग्रन्थकार कृत ही है। —ए० ब० ६२३६

(३) इसमे १६ वे (सोलहवे) तरङ्ग मे कार्तवीर्योपासना का विवरण है।

—ए० ब० ६२३७

(४) (क) विजयरामकृत, (ख) मथुरानाथ (यदुनाथ ?) कृत।

—कैट् कैट् १।४३०-३१

(५) विजयरामकृत, तरग १३, टीका-मन्त्ररत्नाकरमहापोत विजयराम कृत, केवल १म तरग पर। —कैट् कैट् २।९८, ३।९३

(६) —म० रि० ३१२

मन्त्ररत्नाकर (२)

लि०—(१) गौडदेशीय महामहोपाध्याय विद्याभूपण भट्टाचार्य-पुत्र श्रीयदुनाथ-चक्रवर्ती कृत। यह १० तरङ्गो मे पूर्ण है। प्रत्येक तरङ्ग मे कई पटल है। कुल पटलो की सख्या ४९ तक दीख पडती है। इसमे दीक्षा, चक्रविवेचन, माला-ग्रथनप्रकरण, आसन-विधि, मन्त्रशुद्धि-प्रकरण, प्रमाण-विवेचन, वास्तुयाग-प्रकरण, मण्डपनिर्माण, सर्वतोभद्र-मण्डल-विधि, मन्त्रदोषकथन, वर्णमयी दीक्षा की विधि, कलावती दीक्षा, मुद्राप्रकरण, दश विद्या, मातृकाप्रपञ्च, भुवनेश्वरीपूजा-प्रकरण, हरिद्रागणपति-मन्त्र, चन्द्रमन्त्र, धूमावती-मन्त्र, कौलेश भैरवी, चैतन्य भैरवी, कामेश्वरी भैरवी, पट्कूटा भैरवी, नित्या भैरवी, रुद्रभैरवी, भुवनेश्वरी भैरवी, अन्नपूर्णेश्वरी भैरवी आदि बहुत-से विषय प्रतिपादित है। —ए० ब० ६१९२

(२) यदुनाथकृत, श्लोक स० ९४८८, अपूर्ण। —स० वि० २५११६

मन्त्ररत्नाकर (३)

लि०—कृष्णभट्ट कृत, श्लोक स० ३५०। —अ० ब० १३७३

मन्त्ररत्नाकरविवरण—मन्त्ररत्नाकरमहापोत

लि०—चतुर्भुज-शिष्य विजयरामाचार्य कृत, श्लोक स० १०२४, प्रथम तरङ्गमात्र, पूर्ण। —र० म० ४८५५

मन्त्ररत्नावली (१)

नामान्तर—मुरत्नावली, मनुरत्नमाला या मन्त्ररत्नमाला।

लि०—(१) जगद्वल्लभ भट्टाचार्य-शिष्य विद्याधर शर्मा विरचित। यह शारदा-तिलक से सगृहीत ग्रन्थ १० पटलो मे पूर्ण है। इनमे योनिमुद्रा-निरूपण, राशि आदि का विचार, दीक्षा आदि का निरूपण, दीक्षा के १म दिन का कृत्य, होम आदि, विष्णु-पूजा-विधि, द्वादशाक्षर मन्त्र की विधि, हयग्रीव-मन्त्रविधि वामन-मन्त्रविधि, यन्त्रधारण आदि का निरूपण, वराहमन्त्र-निरूपण गोपाल आदि सब मन्त्रो की विधि, न्यासादि-विधि, उमा-महेश्वरादि के पूजन की विधि, मृत्युञ्जयविधि आदि विविध विषय वर्णित है। —नो० स० ११२७२

(२) मूर्तिशर्मा के पौत्र जगद्धर के पुत्र विद्याधर कृत। —कैट् कैट् ३।९३

मन्त्ररत्नावली (२)

लि०—(१) भास्कर मिश्र विरचित विविध तान्त्रिक विषयो का प्रतिपादक यह ग्रन्थ २६ उल्लासो मे पूर्ण है। कीर्तिसिंह की प्रेरणा से भास्कर मिश्र ने इसकी रचना की। इसमे २६ उल्लासो के विषय यो प्रतिपादित है—१ मन्त्रो के बालादि भेद, नक्षत्र प्रकार और ऋणशोधन, दीक्षा प्रकार,कुण्ड-निर्माण, भूमि पर पाँच रगो मे श्रीचक्र का पूरण तथा वायस्य देवता की पूजा, समयाचार, होमविधि, मन्त्रो के दस सस्कार नित्य सृष्टि, स्थिति, लय, अपिधान और अनुग्रह रूप पञ्चकृत्यकारी शिव की स्तुति, विविध मुद्राएँ, कूर्मचक्र, विद्यापूजन, रत्नपूजाविधान, काम्य कर्म न्यासविधि, दक्षिणापुण्य, वारादिभेद, प्राणाग्निहोत्रविधि, मात्रिक मन्त्र, शिरोमन्त्र, भुवनेश्वरी-मन्त्र, त्वरिता-मन्त्र, दुर्गामन्त्र, गणपति-मन्त्र तथा वर-मन्त्र। —इ० आ० २५८०

(२) महाराज कीर्तिसिंह की आज्ञा से भास्कर मिश्र ने इसका निर्माण किया। पुष्पिका मे लिखा है—'महाराजाधिराजश्रीमत्कीर्तिसिंहविरचिताया मन्त्ररत्नावल्या पञ्चचत्वारिंश उल्लास।' ग्रन्थ की समाप्ति पर 'मिश्रश्रीभास्कराख्येन कीर्तिसिंहस्य चाज्ञया। मन्त्ररत्नावली नाम क्रियते बालबोधिनी ॥' लिखा है। इससे ज्ञात होता है कि भास्कर मिश्र द्वारा अपने आश्रयदाता महाराज कीर्तिसिंह के नाम से रचित विविध तान्त्रिक विषयो का प्रतिपादक यह सग्रह ग्रन्थ ४५ उल्लासो मे पूर्ण है। इसमे ज्ञानार्णव, जयद्रथयामल, मन्त्रमुक्तावली, तन्त्रराज, पञ्चरत्नतन्त्र, प्रपञ्चसार, शारदातिलक आदि के वाक्य प्रमाण रूप से उद्धृत किये गये है।

(३) भास्कर मिश्र कृत, मन्त्ररत्नावली मे यक्षिणी तथा वेताल का साधन।

—कैट् कैट् १।४३१

(४) भास्करमिश्र कृत, कैट् कैट् २।९८, ३।९३

(५) लिपिकाल १७१४ वि०, ४५ उल्लासो मे। —भ रि ३१३

मन्त्ररहस्य

लि०—(१) (क) श्लोक स० ९२ पूर्ण। (ख) श्लोक स० १६३८, अपूर्ण। (दोनो भिन्न २ हैं) २ य मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत कहा गया है पर मुद्रित पुस्तको मे यह नही है।

—स० वि० (क) २५९३८, (ख) २६१८४

(२) सौम्योपयन्तृ कृत। —कैट् कैट् १।४३१

मन्त्ररहस्यप्रकाश

लि०—(क) मन्त्ररामायण-व्याख्या नीलकण्ठ चतुर्धर कृत, श्लोक स० २३६६, पूर्ण। (ख) सरला (रामायण-व्याख्या) श्लोक स० १६१९, पूर्ण।

—र० म० (क) ३९१८, (ख) ३९१७

मन्त्ररहस्यप्रकाशिका

लि०—दे०, मन्त्रभागवत। —कैट् कैट् १।४३१

मन्त्रराज

लि०—चन्द्रचूड विरचित, श्लोक स० १३५, पूर्ण।

—स० वि० २४३६८

उ०—आगमतत्त्वविलास मे।

मन्त्रराजपद्धति

लि०—श्लोक स० ३२६, पूर्ण। —स० वि २५९२४

मन्त्रराजरहस्यदीपिका

लि०—(१) श्लोक स० २०००। —अ० व० ५३१५

(२) श्लोक स० ९८०, अपूर्ण। —स० वि० २५९२३

मन्त्रराजविद्योपासनाक्रम

लि०—श्लोक स० २४२, पूर्ण। —स० वि० २५९२६

मन्त्रराजसमुच्चय

लि०—काशीनाथ विरचित (क) श्लोक स० ९९४४, पूर्वार्द्धमात्र, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ५८५०, उत्तरार्द्धमात्र, पूर्ण।

—स० वि० (क) २६०३३, (ख) २६०३४

मन्त्रराजसाधनप्रकार

लि०—श्लोक स० ४५, अपूर्ण। —स० वि० २५९२८

मन्त्रराजानुष्ठानक्रम

लि०— —कैट् कैट् १।४३१

मन्त्रराजार्थदीपिका

लि०—लघुस्तव-टीका, हरदत्त मिश्र विरचित।

—कैट् कैट् २।९८

मन्त्ररामायण

लि०—(१) यह तान्त्रिक मन्त्रो का सग्रहात्मक ग्रन्थ है। सग्रहकर्ता नीलकण्ठ चतुर्धर। —वी० कै० १५९५

(२) मूल और टीका नीलकण्ठ कृत। —कैट् कैट् १।४३१

(३) इस पर (क) मन्त्ररहस्यप्रकाशिका टीका नीलकण्ठ कृत है। (ख) सरला-टीका शरणकवि कृत है। —कैट् कैट्. २।९८

मन्त्रलीलावती

उ०—तारारहस्यवृत्ति मे।

मन्त्रवल्लरी

लि०—(१) यह महायुकरोपनामक वीरेश्वरभट्ट अग्निहोत्री के पौत्र सदाशिव-भट्ट के पुत्र भगवद्भक्त-किङ्कर गङ्गाधर विरचित मन्त्रमहोदधि-टीका है। इसकी श्लोक स० ४३४७ है। यह टीका २२ तरङ्गो तक पूरे ग्रन्थ मे है।

—रा० ला० २७७६

(२) यह मन्त्रमहोदधि की गङ्गाधर विरचित टीका है।

—कैट् कैट् १।४३१

मन्त्रवार्तिकटीका

रामकण्ठ २य कृत

उ०—मोक्षकारिका मे।

मन्त्रवारिधि

लि०—भास्कर-पुत्र टीकाराम विरचित। —कैट् कैट् २।९८

मन्त्रविधान

लि०—कात्यायनीतन्त्र से गृहीत। —कैट् कैट् २।९८

मन्त्रविधि

लि०—(१) श्लोक स० ७५। इसमे देव-देवियो की पूजा के समय उच्चारण किये जानेवाले मन्त्र प्रतिपादित हैं। —ट्रि० कै० १०२६ (ख)

(२) —कैट् कैट् १।४३१

मन्त्रविभाग

लि०—भास्कर कृत। —कैट् कैट् १।४३१

मन्त्रवैभव

लि०—श्लोक स० ३६४, अपूर्ण। —स० वि० २५९७६

मन्त्रव्यक्ति

लि०—मन्त्राक्षर आदि को व्यक्त करते हुए मन्त्राक्षर आदि का माहात्म्य इसमे प्रतिपादित है। —नो० स० १।२७३

मन्त्रव्याख्याप्रकाशिका (कात्यायनीतन्त्र की टीका)

लि०—(१) रङ्गभट्ट-पुत्र नीलकण्ठ विरचित, श्लोक स० लगभग ७१०। २० वे से २३ वे पटल तक ४ पटलो की टीका पूर्ण। —र० म ५२९५

(२) कात्यायनीतन्त्र की टीका नीलकण्ठ कृत।

—कैट् कैट् २।९८

मन्त्रशापविमोचन

लि०—शिवरहस्य से गृहीत, श्लोक स० २०। —अ० ब० ४४५१

मन्त्रशास्त्र

लि०—(१) (क) श्लोक स० २२००। (ख) श्लोक स० १०००, अपूर्ण।
—अ० ब० (क) २३९१, (ख) ५५४४ (ख)

(२) ऊर्ध्वाम्नाय मात्र, श्लोक स० ३८०, पूर्ण।
—डे० का० ३९४ (१८८२-८३ ई०)

(३) श्लोक स० २७०, अपूर्ण। —डे० का ७०७ (१८८२-८३ ई०)

(४) कमलाकर कृत, मन्त्रशास्त्र मे ऊर्ध्वाम्नाय मात्र।
—कैट् कैट्. १।४३१

(५) —कैट् कैट् २।९८, ३।९३

मन्त्रशास्त्रप्रत्यङ्गिरा

लि०— —कैट् कैट् १।४३१

मन्त्रशास्त्रसारसंग्रह

लि०—(१) तँजोर के तुलाजीराज विरचित, सवत् १७६५-८८ के मध्य इसका निर्माण हुआ था। (क) श्लोक सं० लगभग २५४४, पूर्ण। (ख) पूर्ण। (ग) अत्यन्त जीर्णशीर्ण, पूर्ण। (घ) पत्रे ११३। (ङ) १ म अध्याय उपोद्घात, २य अध्याय शिव-विषय-प्रतिपादन, ३ य अध्याय वैष्णव-प्रकरण, ४ र्थ अध्याय देवी-विषयक, ५ म अध्याय मोक्ष-विषयक।

—तँ० म० (क) ६६९८, (ख) ६६९९, (ग) १२१७०, (घ) १२१७१
(ङ) ६६९१

(२) तुलाजीराज (तुलसीराज) विरचित। —कैट् कैट् १।४३१

मन्त्रशुद्धि

लि०— —कैट् कैट् २।९८

मन्त्रशुद्धिप्रकरण

लि०—कौन मन्त्र किस व्यक्ति के लिए अनुकूल या प्रतिकूल है, इस विषय का इस ग्रन्थ मे प्रतिपादन किया गया है। अपने नक्षत्र, तारा, राशि और कोष्ठ के अनुकूल मन्त्रो का जप करना चाहिए, यह इसका प्रतिपाद्य विषय है। —ए० ब० ६२८४

मन्त्रशुद्धिप्रकार

लि०—श्लोक स० ८२, अपूर्ण। —स० वि० २५९२९

मन्त्रशुद्धयादिसंग्रह

लि०—श्लोक स० लगभग १६६३, अपूर्ण। —स० वि० २५४९८

मन्त्रशोधन

लि०—(१) इसमे नौ प्रकार का मन्त्र-शोधन प्रतिपादित है। श्लोक स० ४०, पूर्ण।
—स० वि० २४७८४

(२) कान्ताकर विरचित। —कैट् कैट् १।४३१

मन्त्र-संग्रह

लि०—(१) यह ५ प्रकाशो मे पूर्ण है। इसमे मारण आदि तान्त्रिक क्रियाओ के मन्त्रो का हिन्दी मे प्रतिपादन है। —ए० व० ६२८९

(२) इसमे लोगो को वश मे लाने के लिए शाबर मन्त्र तथा ओषधियाँ वर्णित है।
—ए० व० ६५५९

(३) (क) श्लोक स० ३८००, खण्डित। (ख) श्लोक स० ६००। (ग) श्लोक स० ३५०। (घ) श्लोक स० ४००।
—अ० व० (क) २६५६ (ख), (ख) ३४४७, (ग) ५६५९, (घ) ११२२३

(४) (क) श्लोक स० २५७, अपूर्ण। (ख) भानुमतीचरितान्तर्गत, श्लोक स० १६४, पूर्ण। (ग) शावर तन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० ४६८, पूर्ण। (घ) शावर तन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० ४१, अपूर्ण। (ङ) श्लोक स० १७५, पूर्ण।
—स० वि० (क) २४३८७, (ख)–(घ) २४५०१ से २४५०३ तक, (ङ) २५५७८

मन्त्रसंस्कार

लि०—श्लोक स० १०॥, पूर्ण। —स० वि० २६२०९

मन्त्रसंस्कारशोधन

लि०—श्लोक स० १२५। —अ० व० ५१४७

मन्त्रसद्भाव

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे।

मन्त्रसाधना

लि०—नागार्जुनकृत, श्लोक स० ११०, पूर्ण। —स० वि० २४००६

मन्त्रसार

लि०—(१) (क) सिद्धनाथ (नित्यनाथ सिद्ध ?) कृत, श्लोक स० ७३०, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ३२०, अपूर्ण। —स० वि० (क) २५४३९, (ख) २४३७७

(२) (क) दामोदर कृत, (ख) नित्यनाथ कृत, मन्त्रसार मे कौतूहलविद्या तथा मन्त्रसार मे सिद्धिखण्ड। —कैट् कैट् १।४३१

(३) (क) उत्पलदेव कृत। (ख) नित्यनाथ कृत, मन्त्रसार मे सिद्धिखण्ड। —कैट् कैट् ३।९३

(४) नित्यनाथ कृत। लिपिकाल शकाब्द १६००। —म० रि० ३१८

मन्त्रसारसंग्रह

लि०—मन्त्रसार-सग्रह या मन्त्रसारपद्धति शिवराम विरचित। —कैट् कैट् २।९८

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव तथा रामार्चनचन्द्रिका मे।

मन्त्रसारसमुच्चय

लि०—(१) पूर्णानन्द कृत, (क) श्लोक स० ७०००, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ८००, अपूर्ण। —अ० व० (क) ८१५८, (ख) ८९३२

(२) पूर्णानन्द कृत। —कैट् कैट् १।४३१

(३) (क) पूर्णानन्द कृत, (ख) काशीनाथ कृत। —कैट् कैट् २।९८

मन्त्रसारोद्धार

लि०—नित्यनाथ कृत। —कैट् कैट् ३।९३

मन्त्रसिद्धान्तमञ्जरी

लि०—भडोपनामक काशीनाथभट्ट विरचित। यह ग्रन्थ तीन भागो मे विभक्त है। —ए० व० ६२२४

मन्त्रसिद्धिप्रकार

लि०—श्लोक स० ५४, अपूर्ण। —स० वि० २४५७७

मन्त्रसिद्धिप्रयोग

लि०—श्लोक स० ८, अपूर्ण। —स० वि० २६०८७

मन्त्रसिद्धिभाण्डागार

उ०—मन्त्रमहार्णव मे।

मन्त्रसिद्धिलक्षण

लि०—गौतमीतन्त्रोक्त। रा० पु० ४८५८

मन्त्राक्षरमाला या मानसपूजा

लि०— —कट् कैट् १।४३१

मन्त्राक्षरीभवानीसहस्रनामस्तोत्र

लि०—श्लोक स० ५४०। —डे० का० २४० (१८८३-८४ ई०)

मन्त्राभिधान (१)

लि०—यदुनन्दन भट्टाचार्य कृत। इसमे यकारादि मातृकावर्णो के देवता और अर्थ का प्रतिपादन है। —नो० स० ३।२१७

मन्त्राभिधान (२)

लि०—(१) भैरवी-भैरव सवादरूप। नन्द (नन्दन ?) भट्टाचार्य कृत (नन्दन भट्टाचार्य कृत किस आधार पर लिखा, यह समझ मे नही आता)। इसमे मन्त्रो के भेद तथा मन्त्रो मे व्यवहृत मातृकावर्णों के नाम दिये गये हैं। —क० का० ६४

(२) नन्दनभट्ट कृत। —कैट् कैट् ३।९३

मन्त्रदशसंस्कार

लि०—श्लोक स० ३०, पूर्ण। —स० वि० २४७३५

मन्त्राङ्गनिरूपण

लि०—श्लोक स० लगभग ५०, अपूर्ण। —स० वि० २६४०९

मन्त्राराधनदीपिका

लि०—(१) कसारि मिश्र-पुत्र यशोधर विरचित। इसमे १० प्रकाश हैं।

—इ० आ० २५८१

(२) इसमे १६ प्रकाश है, इसका रचनाकाल शकाब्द १४८० है। इसमे तान्त्रिक विधियाँ—दीक्षा, वास्तुयाग तथा विविध देवियो की पूजा वर्णित है। —ए०ब० ६२३३

(३) यशोधर कृत, श्लोक स० ३९४,। —स० वि० २५९३०

मन्त्रार्णफलश्रुति

लि०—श्लोक स० ५२, अपूर्ण। —स० वि० २५१५९

उ०—आगमकल्पलता मे।

मन्त्रार्थदीपिका

लि०—(१) गोविन्द न्यायवागीश भट्टाचार्य कृत। इसमे कतिपय मन्त्रो की व्याख्या की गयी है। —नो० स० ४१२०९

(२) गोविन्द न्यायवागीश भट्टाचार्य विरचित। श्लोक म० ७३७८। मन्त्रार्थ के प्रकाशक वहुत मे ग्रन्थ हैं फिर भी सव का सार ग्रहण कर इसमे कुछ कहा जाता है। विषय—शाक्त, शैव, आदि पञ्च देवोपासको के हितार्थ विविध मन्त्रो के उद्धार, मन्त्र आदि का निरूपण, विविध चक्रो का निरूपण, मन्त्रो के दोष की निवृत्ति के लिए उपाय का निर्देश, काली, तारा आदि के विविध मन्त्र, भैरवी, भुवनेश्वरी, मातङ्गी, विपुला, इन्द्राणी, मङ्गला, चण्डी आदि के यन्त्र, देवप्रतिष्ठा, मन्त्रसस्कार आदि।

—रा० ला० ३३०५

मन्त्रार्थदीपिका या सारसंग्रह

लि०—(१) श्रीहर्ष कवि विरचित। इसमे प्रतिपादित विषय है—हरचक्रनिर्णय, अकथहचक्रनिर्णय, ऋणी और धनी चक्र का निर्णय, नक्षत्र-गण-मैत्री का विचार, राशि-चक्र का निरूपण, भौतिक चक्र कथन, अकडमचक्र का निरूपण, कूर्मचक्र का निरूपण, दीक्षाफल कथन, गुरु-लक्षण तथा शिष्यलक्षण का निर्देश, दीक्षा मे मास, तिथि, नक्षत्र, लग्न, तीर्थस्थान आदि का निर्णय आदि। —नो० स० ११२७४

(२) हर्षकवि विरचित। श्लोक स० ७३०, अपूर्ण। —स० वि० २५५६५

मन्त्रार्थनिर्णय

लि०—श्रीविश्वनाथसिंह विरचित। इसमे राममन्त्र तथा रामपूजा की सर्वोत्कृष्टता प्रमाणों द्वारा सिद्ध की गयी है। —ए० व० ६४९४

मन्त्रार्थभाष्य

लि०— —कैट. कैट् १।४३१

मन्त्रिणीरहस्य

लि०— —कैट्. कैट् १।४३१

मन्त्रोद्धार

लि०—(१) इसमे छह पटल है। उनमे तन्त्रोक्त मन्त्रो के रहस्य, अक्षर, पदो तथा बीजमन्त्रो का प्रतिपादन किया गया है। यह मौलिक तन्त्र प्रतीत होता है।

—ने० द० १।१६३३ (ङ)

(२) वैष्णवतन्त्रसार से गृहीत, श्लोक स० ३००, अपूर्ण।

—अ० व० ३५४०

(३) श्लोक स० ४०५। —डे० का० २४१ (१८८३–८४ ई०)

(४) (क) श्लोक स० २७२, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ६२, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २६२९०, (ख) २६५७३

मन्त्रोद्धारकोश या उद्धारकोश

लि०—दक्षिणामूर्ति विरचित, ७ कल्पो मे, दे०, उद्धारकोश। (ख) श्रीहर्षकृत।

—कैट् कैट् १।४३१, २।९८, ३।९३

मन्त्रोद्धारदीपिका

लि०—श्लोक स० ११७, अपूर्ण। —स० वि० २४८१३

मन्त्रोद्धारप्रकरण

लि०—अखण्डानन्द विरचित। —कैट् कैट् १।४३२

मन्थानभैरव (तन्त्र)

लि०—(१) श्रीनाथ-श्रीवक्रा सवादरूप। इसमे प्रतिपादित विषय है—क्षेत्रपाल-मन्त्र, भैरव-ध्यानसूत्र, महामूर्ति भैरव के आठ वदनो मे चतु षष्टि कलाचक्र, योनि-सस्कारविधि, स्रुक्स्रुवसस्कारविधि, घृतसस्कारविधि आदि।

इसमे पटल नही है। उनके स्थान पर आनन्द है। वीच-वीच मे अधिकरण और सूत्र (पटलो के स्थान पर) दिये गये है। ये सव मिलाकर ४५ तक पहुँचे है तदुपरान्त ग्रन्थ खण्डित है। —ने० द० १।२७९

(२) यह कौलतन्त्र है। इसमे ९९ पटल और २४००० श्लोक है।

—ए० व० ५८१९

उ०—नित्योत्सव तथा पुष्परत्नाकर-तन्त्र मे।

मन्युसूक्तविधान

लि०—विनियोगदीपिका मे गृहीत, श्लोक स० १०० । —अ० व० ३४८२

मयूरशिखाकल्प

लि०—श्लोक स० ५० । —अ० व० ७४५५

मरीच (चिह्न) कल्प

लि०—कल्पार्णवान्तर्गत, श्लोक स० २३, पूर्ण । —स० वि० २४४०६

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे ।

मरीचितन्त्र

लि०— —कैट् कैट् १।४३३

मल्लारिकल्प

लि०—मार्तण्डभैरवतन्त्र मे गृहीत, (क) श्लोक स० ३६०० । (ख) श्लोक स० ६०० । (ग) श्लोक सं० ३०० (४८ मे ५३ उल्लास पर्यन्त) ।

—अ० व० (क) ५६००, (ख) ५६०२, (ग) ५७०६

मल्लादर्श

लि०—प्रेमनिधि पन्त कृत । —कैट् कैट् १।४३३

मल्लारितान्त्रिकसन्ध्या

लि०—श्लोक स० १३०, अपूर्ण । —अ० व० ५७१४

मल्लारियन्त्रमन्त्रपद्धति

लि०—ब्रह्माण्डपुराण मे गृहीत, श्लोक स० ४० । —अ० व० ४४५४

महाकपिलपञ्चरात्र

उ०—पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, शारदातिलक-टीका राघवभट्टी तथा तारा-भक्तिसुधार्णव मे । रघुनन्दन ने देवप्रतिष्ठातत्त्व मे तथा विट्ठल दीक्षित ने भी इसका उल्लेख किया है ।

महाकालपञ्चाङ्ग

लि०—(१) इसमे (१) महाकालपटल, (२) महाकालपद्धति, (३) मन्त्रगर्भ-कवच, (४) महाकालसहस्रनाम तथा महाकालस्तोत्र हैं । ये श्रीविश्वसारोद्धारतन्त्र के ३४ से ३७ वें पटल में वर्णित हैं ।

—ए० व० ६४७७

(२) महाकालकवच, श्लोक स० ५७। —अ० व० ३४२३ (ग)

(३) महाकालकवच, गन्धर्वतन्त्रान्तर्गत, पूर्ण।

—व० प० ४६०

(४) महाकालपञ्चाङ्ग रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक स० ४४८, पूर्ण।

—र० म० ४८२८

(५) महाकालपञ्चाङ्ग, रुद्रयामलान्तर्गत।

—कैट् कैट् २।९९

(६) महाकालकवच, (क) उत्तरतन्त्र से गृहीत,
(ख) रुद्रयामल से गृहीत।

—कैट् कैट् १।४३३

महाकालपञ्चरात्र

लि०—श्लोक स० ९४५, पूर्ण।

—स० वि० २४५६३

महाकालभैरवतन्त्र

(शरभकवच मात्र)

लि०—

—कैट् कैट् १।४३४, २।९९

महाकालयोगशास्त्र

(खेचरीक्रिया मात्र)

लि०—आदिनाथ विरचित।

—कैट् कैट् १।४३४

महाकालसंहिता

लि०—(१) इसके वहुत-से स्तोत्र और मन्त्र अन्यान्य स्थलो मे भी दृष्टिगोचर होते हैं।

—ए० व० ६८१८

(२) कालीसहस्रनामस्तोत्र, कालीस्वरूपसहस्रनामस्तोत्र आदि इसमे हैं। इसकी तीन प्रतियाँ हैं।

—व० प० ४९८, १६१३, १६२७

(३) (क) श्लोक स० ६८१० पूर्ण। (ख) पूर्ण।

—स० वि० (क) २४७०७, (घ) २४८९७

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव तथा कालिकासपर्याविधि मे।

महाकालसंहिता में षोडशपात्र

लि०—तान्त्रिक पूजा मे उपयुक्त तथा विशेष विधि से निर्दिष्ट सख्या वाले पात्रो मे निहित मद्य की विशुद्धि के लिए मन्त्र इसमे वर्णित है। —ए० व० ६०५८

महाकालसंहिताकूट

लि०—आदिनाथदेव विरचित। —कैट् कैट् १।४३४

महाकालीतन्त्र

लि०—(१) महादेव-पार्वती सवादरूप। पार्वतीजी के यह प्रार्थना करने पर कि आपने मुझसे जो यह देवदुर्लभ विद्या कही उसके ज्ञानमात्र से ही मैं कृतार्थ हो गयी हूँ, किन्तु हे नाथ, उसके तन्त्र, मन्त्र आदि मुझे ज्ञात नही है। उन्हे कहने की कृपा करे। महादेवजी ने महाकाली के तन्त्र, मन्त्र, पूजन, ध्यान आदि का निरूपण किया।

—रा० ला० २१७

(२) इसका नामान्तर—महाकालीमततन्त्र है। —कैट् कैट् १।४३४

महाकालीप्रस्ताररराजकवच

लि०—रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० १२४, पूर्ण। —र० म० ११२५

महाकालीपद्धति

लि०—श्लोक स० १९८, अपूर्ण। —स० वि० २६२९२

महाकालीमत

लि०—ऋषि-ईश्वर सवादरूप। आदि शिव ने ऋषिवरो के लिए इसका उपदेश किया। दु ख-दारिद्रय मे प्रपीडित ब्राह्मण किस उपाय से दुर्गति से छुटकारा पावे इस प्रश्न पर शिवजी ने देवदुर्लभ इस निधिशास्त्र का, जो अत्यन्त गोपनीय है, उन्हे उपदेश दिया। इसमे गुप्त निधियो को ढूढ निकालने की विधि वर्णित है। श्लोक स० १७५।

—ट्रि० कै० १०१३ (क)

महाकाशभैरवकल्प

शरभेश्वरकवच मात्र

लि०—दे०, आकाशभैरवकल्प। —कैट् कैट् १।४३४

महाकालीसूक्त

लि०—(१) रुद्रयामल से गृहीत। श्लोक स० २७०, पूर्ण।

—डे० का० ३९५ (१८८२–८३ ई०)

(२) कालीतन्त्र से गृहीत।

—कैट् कैट् ३।९३

महाकुल

उ०—जन्ममरणविचार मे।

महाकुलकुलान्तक

उ०—मन्त्रमहार्णव मे।

महाकौलक्रमपञ्चचक्रसदाचारविधिनिरूपण

लि०—श्लोक स० १०१, पूर्ण।

—स० वि० २४४७५

महाकौलज्ञानविनिर्णय

मत्स्येन्द्रपाद कृत

लि०—श्लोक स० ७२६, पहले के दो पन्ने नही है, अपूर्ण।

—ने० द० २।३६२ (ज)

महाक्रमार्चन

लि०—अनन्तानन्ददेव-शिष्य अजितानन्दनाथ विरचित। इसमे कुब्जिका के उपासको के प्रात कृत्यो के साथ कुब्जिका देवी की पूजा का विस्तार से वर्णन है।

—ए० व० ६४३५

महाक्रमार्णवपद्धति

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

महागणपतिकल्प

लि०—(१) शङ्करनारायण विरचित। श्लोक स० १०००, खण्डित।

—अ० ब० ६७५९

(२) श्लोक स० ४००, पूर्ण। इसमे महागणपति के न्यास, ध्यान, पूजा, हवन, जप, स्तुति आदि का प्रतिपादन किया गया है। इसका फल भी पुमर्थपुष्कलफला लक्ष्मी की प्राप्ति बतलाया गया है।

—ट्रि० कै० १०१४

(३) महागणपतिकल्प मे पञ्चत्रिंशत्पीठिका।

—कैट् कैट् १।४३५

महागणपतिक्रम

लि०—(१) दाईदेवसम्प्रदाय के अनन्तदेव द्वारा विरचित। इसमे पूजक के प्रात -क्रुत्य आदि के साथ महागणपति की पूजा का विवरण वर्णित है।

—ए० बं० ६५०५

(२) अनन्तदेव विरचित। इसमे महागणपतिप्रयोग प्रतिपादित है।

—रा० ला० ४१४४

महागणपतिपञ्चाङ्ग

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक स० ३०९, अपूर्ण।

—स० वि० २४००५

महागणपतिपद्धति

लि०—श्लोक स० ३३२, अपूर्ण। —स० वि० २५२९३

महागणपतिपूजापद्धति

लि०—(१) श्लोक स० १०५, अपूर्ण। —स० वि० २४३२३

(२) —कैट् कैट्. २।९९

महागणपतिमहामन्त्र

लि०—श्लोक स० १०। —अ० व० १०२११ (ख)

महागणपतिमालामन्त्र

लि०—वीरचिन्तामणितन्त्र मे गृहीत, श्लोक स० ६०।

—अ० व० १३६४३

महागणपतिरत्नदीप

लि०—ब्रह्मेश्वर विरचित। श्लोक स० ४००।

—अ० व० ३४३६

महागणपतिलघुमालामन्त्रजप

लि०—श्लोक स० १८, पूर्ण। —स० वि० २४०७०

महागणपतिविद्या

लि०—(१) श्लोक स० १४५, पूर्ण। —स० वि० २४१४९

(२) —कैट् कैट्. १।४३५

महागणपतिविधान (पञ्चाङ्ग)

लि०—रुद्रयामल मे उक्त । —रा० पु० ५०४९

महागणपतिसहस्रनाम

लि०—(१) शिव-गणेश सवादरूप। श्लोक स० २००। यह गणेशपुराण के उपासनाखण्डान्तर्गत है। त्रिपुरासुर के वध के समय विघ्ननिवृत्ति के लिए शिवजी के पूछने पर गणपति ने अपने पिता शिवजी से यह कहा। —रा० ला० ८९०

(२) (क) गणेशपुराण से गृहीत तथा

(ख) पद्मपुराण से गृहीत। —कैट् कैट् १।४३५

महागणेशमन्त्रपद्धति

लि०—विश्वेश्वर-शिष्य श्रीगीर्वाणेन्द्र विरचित। —कैट् कैट् ३।९४

महागुह्यतन्त्र

लि०—इसमे गुह्यकाली की गुह्य पूजा प्रतिपादित है। गुह्यकाली नेपाल मे प्रसिद्ध हैं। यह सारा तन्त्र अत्यन्त रहस्य तथा १२००० श्लोकात्मक कहा गया है। किन्तु इसका अत्यन्त रहस्य जो गुह्यातिगुह्य भाग है उसमे १३०० श्लोक हैं।—ने० द० २।३७७(ए)

महागौरीपूजापद्धति

लि०—श्लोक स० १४०, अपूर्ण। —र० म० ११२९

महाचीनक्रमाचार

लि०—(१) नामान्तर—चीनाचारतन्त्र या आचारसारतन्त्र अथवा आचारतन्त्र। शिव-पार्वती सवादरूप यह ७ पटलो मे पूर्ण है। यह गुह्य तन्त्र है। इसका विषय है वशिष्ठाराधित भगवती तारा की उपासना।

प्रसिद्धि है कि वशिष्ठजी ने कामाख्यामण्डलवर्ती नीलाचल मे दीर्घ काल (१०,००० वर्ष) तक सयम पूर्वक भगवती तारा की उपासना की, किन्तु भगवती का अनुग्रह प्राप्त नही हुआ। तदनन्तर वशिष्ठजी ने तारा को शाप दिया जिससे तारा की उपासना सफल नही होती। कहा जाता है कि चीनाचार को छोड कर अन्य साधना से तारा प्रसन्न नही होती। एकमात्र बुद्धरूपी विष्णु ही उनकी आराधना और आचार जानते हैं। यह जानकर वशिष्ठ चीन देश मे बुद्ध रूपी विष्णु के समीप उपस्थित हुए। उनका वेदवाह्य आचार देख वशिष्ठ

मन ही मन वडे विस्मित हुए। वशिष्ठ जी के सोच-विचार मे पडने पर आकाशवाणी हुई। उसने कहा कि तारा की आराधना मे यही आचार सर्वोत्तम है। दूसरे आचार से वह प्रसन्न नही होती, यह सुन कर वे बुद्ध रूपी विष्णु को नमस्कार कर तारादेवी की आराधनाविधि जानने के लिए बद्धाञ्जलि होकर उनके सामने खडे रहे। बुद्धरूपी विष्णु ने तारादेवी की उपासना का विधान उन्हे बतलाया।

प्रसगत स्त्रियो की पूज्यता का उल्लेख करते हुए नौ (९) कन्याओ का उन्होने निर्देश किया। वे नौ कन्याएँ हैं—नटिका, पालिनी, वेश्या, रजकी, नापिताङ्गना, ब्राह्मणी, शूद्र-कन्या, गोपाल-कन्या तथा मालाकार-कन्या। —इ० आ० २५६३

(२) दे०, चीनाचारसारतन्त्र। —कैट् कैट् २।९९, ३।९४

महाचीनतन्त्र

उ०—प्राणतोषिणी मे।

महातन्त्र

लि०—वासिकेश्वर विरचित। श्लोक स० ४५०, खण्डित।

—डे० का० २३६ (१८८३–८४ ई०)

उ०—आगमतत्त्वविलास मे।

महातन्त्रराज

लि०—पार्वती-शिव सवादरूप। श्लोक स० २४३। श्री पार्वतीजी के यह पूछने पर कि हे देव किससे जगत् की सृष्टि होती है, किससे वह सृष्टि विनष्ट होती है एव ब्रह्मज्ञान कैसे होता है? भगवान् शिवजी ने पार्वतीजी के प्रश्नो का उत्तर देते हुए तन्त्रसम्मत ब्रह्मज्ञान का निरूपण इसमे किया है। —रा० ला० ६४२

महात्रिपुरसुन्दरीपद्धति

लि०— —कैट् कैट् ३।९४

महात्रिपुरसुन्दरीपादुकार्चनक्रमोत्तम

लि०—(१) निजात्मप्रकाशानन्द कृत। इसमे त्रिपुरसुन्दरी की पूजाविधि वर्णित है।

—इ० आ० २६००

(२) निजात्मप्रकाशानन्द कृत। —कैट् कैट् २।९९

महात्रिपुरसुन्दरीपूजापद्धति

लि०—श्लोक स० ५००, पूर्ण। —ए० व० ६३७१

महात्रिपुरसुन्दरीपूजाविधि

लि०—श्लोक स० ७०, अपूर्ण। —स० वि० २६५५१

महात्रिपुरसुन्दरीवरिवस्याविधि

लि०—भासुरानन्दनाथ कृत, श्लोक स० ४३६, पूर्ण। —स० वि० २४८०३

महादेवतन्त्र

लि०—दे०, शिवतन्त्र। —कैट् कैट् १।४३७

उ०—सौन्दर्यलहरी-टीका लक्ष्मीधरी मे।

महादेवपञ्चाङ्ग

लि०—विश्वसारतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० २९६, पूर्ण। —र० म० ४८४१

महादेवीपूजापरिमल

लि०—श्लोक स० ५६०, पूर्ण। —स० वि० २४००३

महाद्वादशीविचार

लि०—पूर्ण। —डे० का० ४७९ (१८७५-७६ ई०)

महानयपद्धति

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

महानयप्रकाश या महार्थप्रकाश

लि०—(१) पन्ने ३०, पूर्ण। —डे० का० ४८० (१८७५-७६ ई०)

(२) शितिकण्ठनाथ कृत। —कैट् कैट् १।४३८, २।१००

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

महानिर्णयतन्त्र (महानिरयतन्त्र ?)

लि०— —कैट् कैट् १।४३८

महानिर्वाणतन्त्र

लि०—(१) इसमे १म भाग के १९ पटल है। यह बहुत जगहो से प्रकाशित भी हो चुका है। —ए० ब० ६०३९

(२) आद्या-सदाशिव सवादरूप यह दो भागो मे विभक्त है—पूर्वकाण्ड और उत्तरकाण्ड। यह पूर्व काण्डमात्र है। इसमे १४ उल्लास (पटल ?) है। उनमे प्रति-

पादित विषय—भगवती आद्या का महादेवजी से जीवो के निस्तार के उपाय के विषय मे प्रश्न, परब्रह्म की उपासना के क्रम द्वारा जीवो का निस्तार हो सकता है यो भगवान् शिवजी का उत्तर, परब्रह्म की उपासना, प्रकृति-साधना का उपक्रम, देवी के दशाक्षर मन्त्र का उद्धार, कलश-स्थापन, तत्त्व-संस्कार, श्रीपात्रस्थापन, होम, चक्रानुष्ठान, कुलतन्त्र-कथन, वर्णाश्रमाचार, कुशकण्डिका, दस सस्कारो की विधि, वृद्धि श्राद्ध, अन्त्येष्टि, पूर्णाभिषेक आदि कथन, अपने तथा पराये अनिष्टकारी पापो का प्रायश्चित्त आदि।

—रा० ला० २८९

(३) पन्ने ९९, अपूर्ण। —ब० प० १२९

(४) आद्या-सदाशिव सवादरूप यह दो खण्डो मे विभक्त है—पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध। यह केवल उत्तरार्द्ध मात्र है। इसमे १४ उल्लास हैं। १म मे कलियुग मे पतित जीवों के उद्धार के लिए भगवती द्वारा महादेवजी के प्रति प्रश्न, २ य मे महादेवजी का परम ब्रह्मोपासनाक्रम विषयक उत्तर, ३ य मे परमब्रह्मोपासना का वर्णन, ४र्थ मे प्रकृति-साधना का उपक्रम, ५ म मे मन्त्रो के उद्धार, सस्कार आदि, ६ ष्ठ मे पात्र-स्थापन, होम, चक्रानुष्ठान, ७ म मे कुल-तत्त्व कथन, ८ म मे वर्णाश्रम के आचार, ९ म मे कुशकण्डिका, दशविध सस्कार, १० म मे पूर्णाभिषेकादि, ११ श मे अपने और पराये पापो का प्रायश्चित्त, १२ श मे सनातन व्यवहार कथन, १३ वे मे वास्तु, ग्रहयाग एव १४ वे मे शिवलिङ्ग स्थापन आदि।

—क० का० ५५

(५) सदाशिव प्रोक्त, पूर्ण। —ज० का० १०६६

(६) पूर्वकाण्ड मात्र, पन्ने १४९। —रा० पु० ६२६२

उ०—प्राणतोषिणी तथा सर्वोल्लास मे।

[सर्वोल्लास तन्त्र मे महानिर्वाण तन्त्र के वचन उद्धृत है। परन्तु सर्वोल्लासतन्त्र मे उद्धृत वचन महानिर्वाणतन्त्र के किसी भी मुद्रित सस्करण मे उपलब्ध नही होते। इससे किसी-किसी का यह अनुमान है कि मुद्रित ग्रन्थ उक्त तन्त्र का १म खण्डमात्र है। इसका उत्तर खण्ड Sir John Woodroffe, सर जॉन वुडरफ, ने किसी नेपाली पण्डित के निकट देखा था। (द्रष्टव्य, सर्वोल्लासतन्त्र की भूमिका दिनेशचन्द्र भट्टाचार्य लिखित]।

महानीलतन्त्र

लि०—हर-गौरी संवादरूप। इसमे ३१ पटल है। शिव और शक्ति की महिमा तथा उनके मन्त्रो का प्रतिपादन है। —रा० ला० २१५

महान्यास

लि०—(१) (क) श्लोक स० ३१२। (ख) श्लोक स० ३३०।

—अ० व० (क) १२४६१ (ञ), (ख) ६११८

(३) —कैट् कैट् १।४३८

महापञ्चरात्र

उ०—हेमाद्रि ने चतुर्वर्गचिन्तामणि के परिशेष खण्ड मे इसका उल्लेख किया है।

—कैट् कैट् २।१००

महापथकल्प

लि०—श्लोक स० ८३१। —अ० व० ६८६२

महापीठनिरूपण

लि०—महाचूडामणितन्त्र के अन्तर्गत, शिव-पार्वती सवादरूप। इसमे ५१ महापीठो का वर्णन है। —ए० व० ५९५६

महापीठनिर्णय

लि०—महाचूडामणि के अन्तर्गत, श्लोक स० ९३, पूर्ण।

—स० वि० २४२१०

महाप्रत्यङ्गिराकल्प

लि०—श्लोक स० ३७००। —अ० व० ७८५६

महाबल

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

महाभिषेकविधिपटल

लि०—श्लोक स० ५०। —अ० व० ६८३२ (ग)

महाभैरवतन्त्र

लि०— —कैट् कैट् ३।९५

उ०—सौन्दर्यलहरी-टीका लक्ष्मीधरी मे।

महामायातन्त्र

उ०—सर्वोल्लास में।

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतु पष्टि (६४) तन्त्रो मे अन्यतम है।

महामायाष्टक

लि०— —ने० द० ११९६८८ (ञ)

महामायाशंवरतन्त्र

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी मे।

महामायास्तव

लि०—इसमे शिव-शक्ति का सामरस्य प्रतिपादित है।

—ने० द० ११९६३३ (ज) तथा ११९६४५ (ञ)।

महामालासंस्कार

लि०—श्लोक स० २४, पूर्ण। —स० वि० २६२९६

महामुण्डमालातन्त्र

लि०—शिव-पार्वती सवादरूप यह १२ पटलों मे पूर्ण तथा ८०० श्लोकात्मक है। इसमे दिव्य, वीर और पशुओ के आचार, भावसाधन, समयाचार आदि का निरूपण, दुर्गा-माहात्म्यवर्णन, शाक्तो की प्रशसा, दुर्गापूजा-विधान, केवल दुर्गा के पूजन से सर्वसिद्धि कथन, पुष्प आदि का माहात्म्यवर्णन, पुष्प-विशेष से पूजा मे वैशिष्ट्य कथन आदि विषय वर्णित है। —नो० स० ४।२१२

महामृत्युञ्जयकल्प

लि०—(१) —कैट् कैट् १।४४१

(२) त्र्यम्बकतन्त्र से गृहीत। —कैट् कैट् २।१०१

महामृत्युञ्जयजपविधि

लि०—(१) श्लोक स० ७२, पूर्ण। —स० वि० २५०७९

(२) दे०, मृत्युञ्जयविधि। —कैट् कैट् ३।९५

महामृत्युञ्जयमन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० १००। —अ० त्र० ६०५५

(२) श्लोक स० २१। —स० वि० २६२०८

महामृत्युञ्जयविधि

लि०—(१) इसमे महामृत्युञ्जय मन्त्र की जपविधि रोगो से मुक्ति पूर्वक दीर्घ जीवन-लाभ के लिए वर्णित है। —ए० बं० ६४७२

(२) —कैट् कैट् १।४४१

महामोहस्वरोत्तर

उ०—आगमतत्त्वविलास मे।

महामोक्षतन्त्र

लि०—(१) शङ्करी-शङ्कर सवादरूप। यह तन्त्र ६४ पटलों मे पूर्ण तथा लगभग ३००० श्लोकात्मक है। पिण्ड और ब्रह्माण्ड की एकरूपता, अन्तर्यागादि के विषय मे दिशाओ का विचार, अठारह महाविद्याओ की उत्पत्ति, अठारह भैरवो की उत्पत्ति, कालिका के शववाहन होने मे कारण, शिवलिङ्ग की उत्पत्ति, शिवजी के शवरूप होने मे कारण, शिवजी की पृथिवी आदि आठ मूर्तियो की कथा, योनिवीज, लिङ्गवीज, महावीज, व व कह कर गाल वजाने का माहात्म्य, कालीस्वरूप ककारादिशतनामस्तोत्र, तारा, एकजटा, नीलसरस्वती के स्वरूप, तकारादि शतनामस्तोत्र आदि अनेक विषय वर्णित है।

—नो० स० १।२७८

(२) ६४ पटलों मे। —कैट् कैट् ३।९५

महाम्नाय

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

महायोनिकवच

लि०—कालीकुलामृततन्त्र के साथ। —स० वि० २६०४१

महारसायनविधि (१)

लि०—नामान्तर—काकचण्डेश्वरीमत, काकचण्डेश्वरी या काकचामुण्डा। यह भैरवी-ईश्वर सवादरूप है। —इ० आ० २५८७

महारसायनविधि (२)

लि०—महादेव कृत। यह कतिपय तन्त्रो से सगृहीत प्रतीत होता है। इसमे तान्त्रिक वैद्यक वर्णित है। —कैट् कैट् १।४४१, २।१०१, ३।९५

महाराज्ञीकवच

लि०—रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत, (क) श्लोक स० ६०, पूर्ण, (ख) श्लोक स० ६२, पूर्ण। —र० म० (क) ११५४, (ख) ५०१३ (ग)

महारात्रिचण्डिकाविधान

लि०— —कैट् कैट् १।४४१

महाराज्ञीप्रादुर्भाव

लि०—मृङ्गीशसहिता से गृहीत। —कैट् कैट् २।१०१

महारुद्रमञ्जरी

लि०—भट्ट श्रीत्यगल-पुत्र मालजी नामान्तर वेदाङ्गराय विरचित, श्लोक स० १६००।
—अ० व० ९६४१

महार्णवतन्त्र

लि०— —कैट् कैट् १।४४२

उ०—मन्त्रमहार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव मे।

महार्णवकर्मविपाक

लि०—श्लोक स० ८००। —अ० व० ९९५ (ख)

महार्थप्रकाश या महानयप्रकाश

लि०—(१) (क) पन्ने १८, पूर्ण। (ख) पन्ने ३८, पूर्ण।
डे० का० (क) ४८१, (ख) ४८२, (१८७५–७६ ई०)

(२) शितिकण्ठ कृत, (क) श्लोक स० ११६१। (ख) श्लोक सं० १३८० दोनों अपूर्ण प्रतियाँ हैं। —डे० का० (क) २३७, (ख) २३८ (१८८३-८४ ई०)

(३) दे०, महानयप्रकाश। —कैट् कैट् १।४४२

महार्थमञ्जरी (सटीक)

लि०—(१) महेश्वरानन्द विरचित। श्लोक स० ३००। यह ग्रन्थ परिमल टीका के साथ अनन्तशयन सस्कृत ग्रन्थावली मे प्रकाशित हो चुका है। उक्त टीका ५२ वें श्लोक तक ही है। —ट्रि० कै० १०६५ (ग)

(२) (क) टीका रहित, पूर्ण। (ख) महेश्वरानन्दकृत टीका सहित, पूर्ण।
—डे० का० (क) ४८३, (ख) ४८४, (१८७५-७६ ई०)

(३) (क) महार्थमञ्जरी टीका (टीकाकार अज्ञात) पूर्ण। (ख) महार्थमञ्जरी-टीका भद्रेश्वर विरचित।

—डे० का० (क) ४८५, (ख) ४८६, (१८७५-७६ ई०)

(४) मूल और टीका दोनों महेश्वरानन्द कृत, टीका का नाम परिमल, श्लोक स० ९३२, पूर्ण । —डे० का० २३९ (१८८३–८४ ई०)

(५) महार्थमञ्जरी-परिमल। श्लोक स० १००, पूर्ण।

—डे० का० २४० (१८८३–८४ ई०)

(६) (क) इस पर मूलकार की स्वरचित एक टीका है। (ख) महार्थमञ्जरी-परिमल। (ग) भद्रेश्वर रचित टीका। (घ) क्षेमराज कृत टीका।

—कैट् कैट् १।४४२, २।७१ और ३।९५

महाविद्यासारचन्द्रोदय

लि०—(१) महन्त योगिराज राजपुरी कृत, श्लोक स० २०३०। आरभ के ३ पन्ने नही है। —र० म० ४८५९

(२) महन्त योगिराज राजपुरी रचित। —कैट् कैट् १।४४३

महार्थोदय

गोरक्ष अथवा महेश्वर विरचित।

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

महालक्ष्मीकल्प

लि०— —कैट् कैट् १।४४२, २।१०१

महारात्र्यादिनिर्णय समयाचारनिर्णययुत

लि०—श्लोक स० ३०४, पूर्ण। —स० वि० २४५०५

महालक्ष्मीपञ्जरमन्त्र

लि०—श्लोक स० २४, पूर्ण। —स० वि० २५४०१

महालक्ष्मीपद्धति

लि०—(१) महालक्ष्मीपद्धति, श्लोक स० ४५०।

—कैट् कैट् १।४४२, २।९५

(२) प्रकाशानन्द विरचित। —अ० व० ३४८६

महालक्ष्मीपूजा

लि०— —कैट् कैट् ३।९५

महालक्ष्मीपूजाकल्पवल्ली

लि०—श्री गोविन्द विरचित, श्लोक स० ५००, प्रकाश म० ४ ।

—अ० व० ८०३१

महालक्ष्मीपूजापद्धति

लि०—श्लोक स० २०० । —अ० व० ५५४६

महालक्ष्मीबाह्यपूजनपद्धति

लि०— —कैट् कैट् २।१०१

महालक्ष्मीमाहात्म्य

लि०— —ने० द० १।१३७६ (क)

महालक्ष्मीमाहात्म्यव्याख्यानसमुच्चय

लि०—गालव ऋषि रचित। यह १६ अध्यायो मे समाप्त है।

—ने० द० १।१६४५ (ढ)

महालक्ष्मीमतभट्टारक

लि०—उमा-महेश्वर सवादरूप। यह २४००० श्लोकात्मक महामन्त्रसार नाम के तान्त्रिक ग्रन्थ का एक अश है। इसमे १८०० श्लोक और १० आनन्द हैं।

—ने० द० १।१३२० (द)

महालक्ष्मीरत्नकोष

लि०—(१) शङ्कर विरचित, (क) श्लोक स० १७५, केवल ६०, ६७ और ६८ वाँ अध्याय। (ख) श्लोक स० ३०००। —अ० व० (क) १३३८३, (ख) १०३०१

(२) यह ब्रह्मा और महेश्वर सवादरूप है। शिवजी से यह देवी को प्राप्त हुआ। इसकी श्लोक स० ४५८० और अध्याय स० १०५ है। —तै० म० ६७०३

(३) शङ्कराचार्य विरचित। —कैट् कैट् १।४४२, २।१०२

महालक्ष्मीव्रत या महालक्ष्मीचरित

लि०—श्रीराम कविराज कृत। यह ५ अध्यायो मे पूर्ण है।

—ने० द० १।१३२० (ज)

महालक्ष्मीव्रतकथा

लि०— —ने० द० ११६४५ (त)

महालक्ष्मीव्रतमाहात्म्यव्याख्यान

लि०— —ने० द० १९१० (घ)

महालक्ष्मीसूक्त

लि०— —कैट् कैट् १४४२

महालक्ष्मीहृदयस्तोत्र

लि०—(१) अथर्वणरहस्यान्तर्गत। —ए० व० ६७२७

(२) महालक्ष्मीहृदय, श्लोक स० १०७। अथर्वणरहस्य से गृहीत।

—अ० व० ५७३१

(३) महालक्ष्मीहृदय या महालक्ष्मीहृदयस्तोत्र, अथर्वणरहस्य से गृहीत।

—कैट् कैट् १४४२, २१०२

महालिङ्गयन्त्रविधि

लि०—श्लोक स० १००। —अ० व० १०३८२ (ख)

महालिङ्गार्चनपद्धति

लि०—श्लोक स० ६०। —अ० व० ९९५ (ख)

महालिङ्गार्चनप्रयोगविधि

लि०—शिवरहस्य से गृहीत। —कैट् कैट् २१०२

महावाक्यदर्शनसूत्र (कारिकासहित)

लि०—सूत्र स० ३९९, कारिका स० ५९२। —अ० व० ११२३९

महाविद्या

लि०—(१) पत्रे ५५। —रा० पु० ५८३२

(२) यह महाविद्या काली आदि की पूजा का प्रतिपादक है। द्रंष्ट्राओं से भीषण, कृष्णवर्णा, पञ्चमुखी, त्रिनेत्रा, दशभुजा, लम्बे ओठों वाली, अरुणवस्त्र, खड्ग, मुसल, शूल, माला, वाण इन अस्त्रों को धारण की हुई काली देवी की पूजाविधि, मन्त्र आदि इसमें वर्णित है। —क० का० ९३

(३) —कैट् कैट् १४४२, २१०२

महाविद्यासारचन्द्रोदय

लि०—महन्त योगिराज राजपुरी कृत। —र० म०

महाविद्याप्रयोग

लि०—(१) श्लोक स० ७४, अपूर्ण। —स० वि० २५६११

(२) श्लोक स० १५० । —अ० व० ६०२५ (क)

महाविद्यादशश्लोकीविवरण

लि०—पन्ने ४ । —रा० पु० ४७९६

महाविद्यादीपकल्प

लि०—(१) शिव-पार्वती सवादरूप। इसमे ब्रह्मस्वरूपिणी महाविद्या के लिए प्रज्वलित दीपदानविधि वर्णित है। महाविद्या के जप, पूजन आदि भी इसमे वर्णित है।

—डी० कै० १२९०

महाविद्यापारायणविधि

लि०—पन्ने २७। —रा० पु० ५६३६

महाविद्याप्रकरण

लि०—नरसिंह विरचित। —कैट् कैट् १।४४३

महाविद्यामन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० १००, अपूर्ण। —अ० व० ११८१५

(२) वाञ्छाकल्पलता के अन्तर्गत। रक्तचामुण्डामन्त्र इसका नामान्तर है। श्लोक स० २३, पूर्ण। —म० वि० २४१०९

महाविद्यारत्न

लि०—हरिप्रसाद माथुर विरचित। श्लोक स० ९६९, पूर्ण।

—स० वि० २४९२१

महाविद्याषोडशाक्षरी

लि०—श्लोक स० ३५। इसमे यक्षीदुर्गामन्त्र, वगलाविधान, कार्तवीर्यार्जुन-मन्त्र आदि भी है। —अ० व० १३३८२ (डी)

महाविद्यासहस्रनाम

लि०—मृत्युञ्जयतन्त्रान्तर्गत, अपूर्ण । —व० प० १३९७

महाविद्यास्तुति

लि०—श्लोक स० १०० ।

—अ० व० ३४८७

महाशङ्खमालासंस्कार

लि०—(१) इसमे शक्तिपूजा मे उपकरणभूत शखमाला का लक्षण, उसका शोधन-प्रकार, धारणविधि आदि। शखमाला गूथने के लिए सूत का विवरण सनत्कुमारसहिता से उद्धृत है—कपास का सूत सब काम, अर्थ और मोक्ष का प्रदानकर्ता है। ब्राह्मण-कन्याओ का काता हुआ सूत बहुत उत्तम है। चारो वर्णो के लिए क्रमश सफेद, लाल, पीला और काला सूत उत्तम है। सब वर्णो के लिए लाल सूत सर्वेप्सित प्रदान करनेवाला कहा गया है।

—रा० ला० ९९८

(२) (क) श्लोक स० ५४, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ३९, पूर्ण। चषकपात्रशोधन भी इसमे सम्मिलित है।

—स० वि० (क) २५७५२, (ख) २६१४२

महाशक्तिन्यास

लि०—(१) श्लोक स० २०० ।

—अ० व० ३६५८

(२) श्लोक स० ३५० ।

—अ० व० १३६७०

महाशैवतन्त्र

लि०—(१) अपूर्ण ।

—तं० म० ११४२५

(२) श्लोक स० लगभग ८२०, अपूर्ण ।

—स० वि० २३९९०

(३) महाशैवतन्त्र मे आकाशभैरवकल्पान्तर्गत गणेशस्तोत्र पञ्चावरण-स्तोत्र मात्र ।

—कैट् कैट् १।४४३

महाशैवतन्त्र—आकाशभैरवकल्प

लि०—(१) उमा-महेश्वर सवादरूप। इसमे १म कल्प मे १ से ११ अध्याय, २ य कल्प मे १ से १५ अध्याय एव ३ य कल्प मे १ से ५० अध्याय है। यह अतिरहस्य शैवतन्त्र है।

—ए० व० ५८९५

(२) नारदजीने कैलास-शिखर पर शिवजी से निवेदन किया—भगवन् देवाधिदेव, मुझे शूलिनी-मन्त्र का माहात्म्य सुनने की इच्छा है। उसका क्या बीज है, क्या अङ्ग है, क्या स्वरूप है, कौन मुनि है, क्या विधान है, क्या उसका कर है और क्या उद्धार है। यह सब मन्त्रो का हृदय कहा गया है। इस पर शङ्करजी ने शूलिनी (दुर्गा) के पूजन, माहात्म्य आदि का प्रतिपादन किया। यह २० उपदेशो मे पूर्ण है।

—क० का० ५४

महाषोडशीसहस्रनाम

लि०— —कैट् कैट् २।२१७

महाषोढान्यास

लि०—(१) (क) श्लोक स० १८०। (ख) श्लोक स० २५०।
—अ० व० (क) ५६१३, (ख) ११९९५

(२) विरूपाक्ष विरचित, श्लोक स० २००। वाह्यमातृका-न्यास भी इसमे समिलित है। यह ऊर्ध्वाम्नाय के अन्तर्गत है। इसमे करन्यास, अङ्गन्यास आदि की विधि निर्दिष्ट है। —रा० ला० ३८२, ३५६

(३) अपूर्ण। —र० म० ९६

(४) (क) श्लोक स० ४०, पूर्ण। (ख) श्लोक स० १४५, पूर्ण। वरणविद्यान्यास तथा षोडश मूलविद्यान्यास भी इसमे समिलित है। (ग) श्लोक स० २९, अपूर्ण।
—स० वि० (क) २४७००, (ख) २५९३१, (ग) २६०४०

(५) ऊर्ध्वाम्नाय से गृहीत। —कैट् कैट् ३।९६

महासंमोहनतन्त्र

लि०—श्लोक स० २५०। इसमे तान्त्रिक सिद्धान्तो का विस्तार से प्रतिपादन किया गया है। यह १० पटलो मे पूर्ण है। —ट्रि० कै० १०१६ (क)

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी मे।

महासरस्वतीसूक्त

लि०— —कैट् कैट् १।४४३

महासिद्धामोघक्रियाप्रयोग

लि०—शाङ्ख्यायनतन्त्र से गृहीत। —कैट् कैट् १।१०२

महासुन्दरीतन्त्र

उ०—वाल्मीकिरामायण की नागेशभट्ट कृत टीका रामाभिरामीय तथा अहल्या-कामधेनु मे।

महास्वच्छन्दतन्त्र

उ०—योगिनीहृदयदीपिका तथा सौभाग्यभास्कर मे।

महास्वच्छन्दसंग्रह

उ०—योगिनीहृदयदीपिका मे।

महास्वच्छन्दसारसंग्रह

लि०—देवी-भैरव सवादरूप। इसमे शक्ति देवी की पूजा के सम्बन्ध मे विस्तृत विवरण दिया गया है। मन्त्रोद्धार, मन्त्रविद्या, न्यासमन्त्र आदि बहुत विषय वर्णित है। इसमे ४५ पटल हैं। —म० द० ५६९१–९२

महिषमर्दिनीतन्त्र

लि०—शङ्कर-पार्वती सवादरूप, यह १० पटलो मे है।

—नो० स० ११२८२

उ०—शाक्तानन्दतरङ्गिणी तथा प्राणतोषिणी मे।

महिषमर्दिनीपञ्चाङ्ग

लि०—(१) इसमे—१ महिषमर्दिनीपटल, २ महिषमर्दिनीकवच, ३ महिषमर्दिनीसहस्रनाम, ४ महिषमर्दिनीस्तोत्र तथा महिषमर्दिनीपद्धति आदि वर्णित है।

—ए० व० ६४३३

(२) श्लोक स० १४४, पूर्ण। —स० वि० २४८८६

महिषमर्दिनीसहस्रनाम

लि०—ईश्वर प्रोक्त। —ए० व० ६७०६

महिषमर्दिनीस्तवरहस्यप्रकाश

लि०—जगदीश पञ्चानन भट्टाचार्य कृत। यह महिषमर्दिनीस्तव का व्याख्यान है।

—नो० स० ११६०

महिषमर्दिनीस्तोत्रटीका

लि०—कालीचरण कृत। —कैट् कैट् ३।९६

महेन्द्रजाल

लि०—पट्टनाथ विरचित, श्लोक स० १५०। —अ० व० ८२९५

महेश्वरकवच

लि०—पूर्ण। —व० प० ४६६

महेश्वरतन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० ३२०० (खण्डित)। —अ० व० १२२६१
(२) —कैट् कैट्. २।२१७

महोग्रतन्त्र

उ०—आगमतत्त्वविलास मे।

महोग्रताराकल्प

उ०—पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव तथा तारारहस्यवृत्तिका मे।

महोग्रतारामन्त्रविधान

लि०—श्लोक सख्या लगभग १२०, अपूर्ण। —स० वि० २४३००

महोच्छुष्मभैरवतन्त्र

दे०, उच्छुष्मभैरवतन्त्र।
श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है।

महोड्डीशतन्त्र

लि०—पार्वती-परमेश्वर सवादरूप यह तन्त्र लगभग ५०० श्लोकात्मक है। इसमे वशीकरण, उच्चाटन, मोहन, स्तभन, शान्तिक, पौष्टिक आदि विविध तान्त्रिक कर्म कहे गये है। जिनमें उन्मादन, विद्वेषण, अन्धीकरण, मूकीकरण, शरीरसकोचन, स्तन्धी-करण, भूतज्वरोत्पादन, शस्त्र और शास्त्र को दूषित (वेकार) कर देना, नदी आदि का जल शोष लेना, दही, शहद आदि नष्ट कर देना, हाथी, घोडे आदि को क्रुद्ध वना देना, सर्प का विष नष्ट कर देना, वेताल-सिद्धि, खडाऊँ की सिद्धि आदि भी कई विधियाँ है।

—नो० स० १।२८३

मातङ्गिनीपद्धति

लि०—(१) रामभट्ट विरचित, श्लोक स० ५५०। पूजाकाण्ड मात्र।

—अ० व० १००

(२) रामभट्ट कृत। —कैट्. कैट्. १।४४७

मातङ्गीकल्प

लि०—श्लोक स० ३२, पूर्ण। —स० वि० २४२०२

मातङ्गीकवच

लि०—(१) श्लोक स० ४२ । —अ० व० ८७७०

(२) यह सौभाग्यलक्ष्मीकल्प का १० वाँ पटल है।

—कैट्'कैट् ३।९७

मातङ्गीक्रम

लि०—कुलमणि शुक्ल कृत । —कैट् कैट् १।४४७

मातङ्गीडामर

लि०—हर-गौरी सवाद रूप। इसमे उच्चाटन, मारण, मोहन, वशीकरण, आकर्षण, तथा विद्वेषण का वर्णन विशेष रूप से किया गया है।

मातङ्गीतन्त्र

लि०— —कैट् कैट् २।१०३

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे ।

मातङ्गीदीपदानविधान

लि०—रुद्रयामल से गृहीत। —कैट् कैट् १।४४७

मातङ्गीदीपदानविधि

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, शिव-पार्वती सवादरूप। इसमे देवी मातङ्गी के लिए प्रज्वलित दीपदान-विधि प्रतिपादित है और साथ ही साथ मातङ्गी के मन्त्र, उनके ऋषि, छन्द, देवता आदि, करन्यास, अङ्गन्यास आदि के साथ देवी-पूजा का भी विवरण दिया गया है। —वी० कै० १३१३, १२९६

मातङ्गीध्यान, न्यास आदि

लि०—श्लोक स० ९८, अपूर्ण। —स० वि० २४२०४

मातङ्गीपञ्चाङ्ग

लि०—श्लोक स० ३५३, अपूर्ण। —स० वि० २४२०३

मातङ्गीप्रयोग

लि०—श्लोक स० १६४, पूर्ण। 'घटस्थापनप्रमाण' भी इसमे सम्मिलित है।

—सं० वि० २६४८३

मातङ्गीमन्त्रपद्धति

लि०—शिवानन्दभट्ट कृत। —कैट् कैट् २।१०३

मातङ्गीरहस्य

लि०— —कैट् कैट् १।४४७

मातङ्गीविद्या

लि०—श्लोक स० ६५, पूर्ण। —स० वि० २५९३२

मातङ्गीश्यामाकल्प

लि०—श्लोक स० ११५, पूर्ण। मातङ्गीमन्त्र भी इसमे समिलित हैं।
—स० वि० २५२१८

मातृकाकवच

लि०—चिन्तामणितन्त्रान्तर्गत। देवी-ईश्वर सवादरूप। इसका दूसरा नाम मातृकाश्रीजगन्मङ्गल है। इसमे शरीर के विभिन्न अङ्गो की रक्षा के लिए विभिन्न वर्णो का विनियोग कहा गया है। —ए० व० ६७३१

मातृकाकेशवनिघण्टु

लि०—महीधर विरचित। —डे० का०

मातृकाकोष

लि०—(१) इसमे भी अक्षरो के नाम सज्जनो के उपकार के लिए वर्णित हैं। इसके धारण से मनुष्य को मन्त्रोद्धार मे क्षमता प्राप्त होती है। —ए० व० ६२९५

(२) श्रीमच्चतुर्भुजाचार्य-शिष्य कृत, श्लोक स० २७०। यह मातृकाकोष सब कोषो मे परमोत्तम है। इसके धारण से मनुष्य मन्त्रोद्धारण मे समर्थ होता है। इसमे अकारादि अक्षरो के मान्त्रिक पर्याय कहे गये हैं। —रा० ला० ४२५

(३) इसमे ओंकार आदि मन्त्रो तथा मातृकावर्णो के नाम दिये गये है। कादि-मत मे पार्वतीजी के प्रति शिवजी ने अकार से लेकर क्षकार तक जो वर्णसज्ञा कही थी, वही यहाँ कही गयी है। इसके कर्ता का नाम ज्ञात नही हो सका।

—क० का० ६५

(४) पूर्ण। —र० म० ४०४

मातृकाक्षरनिघण्टु

लि०—महीधर विरचित, श्लोक स० ६६।

—डे० का० २४३ (१८८३–८४ ई०)

मातृकाचक्रविवेक

लि०—(१) स्वतन्त्रानन्दनाथ कृत। इसमे वर्णमालिका की प्रतिनिधिभूत शक्ति देवी का परमरहस्य मातृकार्थस्वरूप स्पष्टतया प्रतिपादित है। यह छह खण्डो मे पूर्ण है। उनके नाम हैं—१ तात्पर्यविवेक, २ सुषुप्तिविवेक, ३ स्वप्नविवेक, ४ जाग्रद्-विवेक, ५ तुर्यविवेक तथा ६ मातृकाचक्र-सग्रह।

—म० द० ५६९३, ५६९४

(२) शिवानन्द कृत (?), श्लोक स० १९०, पूर्ण।

—स० वि० २५५६३

[सभवत यह मातृकाचक्रविवेक ला व्याख्यान होगा, न कि मातृकाचक्रविवेक —स०]

मातृकाचक्रविवेकव्याख्या

लि०—शिवानन्द कृत। मातृकाचक्रविवेक नाम का निबन्ध परम्परा द्वारा प्राप्त महामन्त्र के अर्थोपदेश मे अत्यन्त श्लाघ्य है। उक्त ग्रन्थ के उपदेश से ही बोध हो सकता है और वह सिद्धजनो का परमप्रिय ग्रन्थ है, इसलिए शिवानन्द नामक महात्मा ने उस पर सुबोध वृत्ति लिखने की कृपा की।

—म० द० ५६९५, ९७

मातृकाजगन्मङ्गलकवच

लि०—(१) देवीश्वर सवादरूप यह चिन्तामणितन्त्रान्तर्गत है। श्लोकस० १२५। इसमे मातृकाकवच तथा उसके धारण की प्रशसा प्रतिपादित है।

—रा० ला० ४८६

(२) भूतशुद्धितन्त्रान्तर्गत, पूर्ण। —व० प० ११९४

मातृकातन्त्र

उ०—सर्वोल्लास तथा आगमतत्त्वविलास मे।

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रो मे अन्यतम है।

मातृकानिघण्टु (१)

लि०—(१) महीदास कृत, श्लोक स० ६३, पूर्ण। —स० वि० २४६९२

(२) महीधराचार्यकृत, श्लोक स० ५५, पूर्ण। —स० वि० २५६४८

(३) नामान्तर—तन्त्रकोश। श्लोक स० ८३, पूर्ण। —स० वि० २५८२९

(४) श्लोक स० २१५, अपूर्ण। —स० वि० २४२६२

(५) श्लोक स० १४०, पूर्ण। —स० वि० २६३२१

(६) (क) श्लोक स० ८८, पूर्ण। (ख) श्लोक स ९३, पूर्ण। (ग) श्लोक स. ८१, पूर्ण। (घ) श्लोक स० ८५, पूर्ण। (ङ) श्लोक स० ८०, पूर्ण। (च) श्लोक स ६६, पूर्ण। (छ) श्लोक स० ८७, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४१५३, (ख) २४१६५, (ग) २५२०३, (घ) २५९३३, (ङ) २५९३४, (च) २६२१५, (छ) २४१५३

(७) लि०— —कैट् कैट् २।२१७

(८) (क) महीदास विरचित, श्लोक स० ६२, पूर्ण।

(ख) महीधराचार्य विरचित, श्लोक स० ५५, पूर्ण।

(ग) नामान्तर—तन्त्रकोश, श्लोक स० ८०, पूर्ण।

(घ) श्लोक स० ८४ पूर्ण, श्लोक स० ८०, पूर्ण।

(ङ) श्लोक स० १४०, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २४६९२, (ख) २५६४८, (ग) २५८२९, (घ) २५९३३, (ङ) २६३९१ आदि।

(९) ५९ श्लोको मे पूर्ण। क० का० की प्रति मे ६५ श्लोक है, पर अन्तिम श्लोक, जिसमे कर्ता का नामोल्लेख है, नही है। परन्तु इ० आ० मे वह श्लोक है। तान्त्रिक टेक्स्ट मे यह प्रकाशित हो चुका है। इसके ३५ और ४० वे पेज पर अन्तिम पुष्पिका मे इसके कर्ता का नाम महीधर दिया गया है किन्तु अन्तिम श्लोक मे कर्ता का नाम महीदास कहा गया है। —ए० ब० ६२५७–५९

(१०) —कैट् कैट् १।४४१, २।२१६

मातृकानिघण्टु (२)

लि०—श्रीमद्दिग्गिकमण्डलीमुकुटमाणिक्योपम परमहस आचार्य विरचित। इसमे मातृका-बीज आदि का निरूपण किया गया है। —नो० स० ३।२२७

मातृकानिघण्टु (३)

लि०—(१) नृसिह विरचित ।

—रा० पु० ५०००

(२) दे०, मन्त्राभिधान ।

—क० का० ६८

मातृकानिघण्टु (४)

आनन्दतीर्थ कृत ।

—कैट् कैट् ३।९७

मातृकान्यास

लि०—(१) (क) श्लोक स० ७०, पूर्ण, (ख) श्लोक स० ७००, अपूर्ण ।

—अ० व० (क) ५१४९, (ख) १०८३३

(२) अपूर्ण ।

—व० प० ७०४

(३) (क) श्लोक स० १८०, पूर्ण । (ख) श्लोक स० ७८, पूर्ण । (ग) श्लोक स० ३०, पूर्ण । (घ) श्लोक स० ३४, पूर्ण । (ङ) श्लोक स० ४०, पूर्ण । (च) श्लोक स० ९२, अपूर्ण । (छ) श्लोक स० १३६, पूर्ण । (ज) श्लोक स० ५२, पूर्ण । (झ) श्लोक स० ५४, पूर्ण ।

—स० वि० (क) २४०७६, (ख) २४५९१, (ग) २४६८३, (घ) २४७७०, (ङ) २४८४६, (च) २५०४१, (छ) २५५६२, (ज) २५७३७, (झ) २६०४१

मातृकान्यासविधि

लि०—(क) श्लोक स० १९, पूर्ण । (ख) श्लोक स० ५७, पूर्ण । (ग) श्लोक स० १०२, अपूर्ण । —स० वि० (क) २४४४७, (ख) २४७७१, (ग) २५२३८

मातृकान्यासाङ्गुलिनियम

लि०—श्लोक स० १८, पूर्ण ।

—स० वि० २४७६७

मातृकापूजन

लि०—(१) इसमे गौरी आदि षोडश मातृकाओ की पूजा प्रतिपादित है ।

—बी० कै० १२९७

(२)

—कैट् कैट् १।४४७, २।१०३

मातृकाभिधान

लि०—श्लोक स० २१५, पूर्ण ।

—स० वि० २३९६८

मातृकाभूतलिपि

लि०—श्लोक स० १६, अपूर्ण । —स० वि० २५९३६

मातृकाभेदतन्त्र

लि०—(१) चण्डिका-शङ्कर सवादरूप, १४ पटलो मे पूर्ण । श्लोक स० ५८६। सोना-चाँदी वनाने के उपाय, सन्तानोत्पत्ति-नियम, कुण्डलिनी भोगो को भोगती है जीव नही, ऐसा विचार कर भोजन करने से भोजन मोक्ष-साधन होता है, यह प्रतिपादन, देह के भीतर स्थित कुण्ड आदि, शिवनिर्माल्य की अग्राह्यता मे हेतु, मद्य-पान की प्रशसा, पारद-भस्म करने के उपाय, पारद-भस्म की महिमा, चन्द्र और सूर्य के ग्रहण का रहस्य, चामुण्डा के मन्त्र और उसकी आराधनाविधि, त्रिपुरा के मन्त्र, पूजा, स्तोत्र आदि का प्रतिपादन, पारद के शिवलिङ्ग का माहात्म्य आदि विपय इसमे वर्णित है ।

—रा० ला० ४२०५

(२) यह मूल तन्त्र है। इसमे शाक्त आचार वर्णित है। सोना-चाँदी वनाने की विधि, मातृगर्भ मे पुत्रोत्पत्ति आदि कई विपय भी इसमे प्रतिपादित है। १४ पटलो मे यह पूर्ण है। —क० का० ८६

(३) (क) श्लोक स० ५५४, पूर्ण। (ख) श्लोक स० २८६, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० ४३२, अपूर्ण। (घ) श्लोक स० ५५०, अपूर्ण। (ङ) अपूर्ण। (च) श्लोक स० लगभग ६०, अपूर्ण ।—स० वि० (क) २४७२२, (ख) २४९१०, (ग) २६०६५, (घ) २६४३९, (ङ) २६४४०, (च) २६४४४

(४) श्लोक स० ५००, पूर्ण। यह तन्त्र विविधमूलतन्त्र तथा विविध-तन्त्रसग्रह के नाम मे १५ पटलो मे वगाक्षरो मे छप चुका है। —ए० व० ५८२३

(५) पार्वती-शङ्कर सवादरूप। इसका १४ पटलो मे पूर्ण होने का उल्लेख किया गया है। मव रत्नो के निर्माण की विधि, यदि किसी को सुवर्ण की आकाङ्क्षा हो तो उसके लिए युग-भेद मे जप, पूजा आदि का नियम निर्देश, पुत्रोत्पादन कारण, नाभिपद्म आदि का निरूपण, भोग से मोक्ष-प्राप्ति कथन, कुण्डलिनी के मुख मे आहुति-क्रम कथन, होमकुण्ड-विधि, आहुति का परिमाण, व्राह्मणो का कारण (वारुणी) पान मे अधिकार कथन, व्राह्मण-लक्षण कथन, कारण की ग्रहणविधि, शिवनिर्माल्य की ग्रहणविधि, गङ्गामाहात्म्य कथन, मुरादेवी का माहात्म्य कथन आदि वहुत विपय वर्णित है। —नो० स० ११२८४

(६) यह शिव प्रोक्त है। पन्ने १९, सम्पूर्ण। —ज० का० १०६८

(७) मातृकाभेदतन्त्रे यज्ञसूत्रविधानम्। —कैट् कैट् १।४४८

उ०—शक्तिरत्नाकर, सर्वोल्लास, प्राणतोषिणी तथा कालीसपर्याविधि मे।

मातृकार्णनिघण्टु

लि०—नारायणदीक्षित-पुत्र भानुदीक्षित विरचित। मातृकावर्णसग्रह और मातृकार्णवनिघण्टु भी इसका नाम कहा गया है। —र० म० ४८५८

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव तथा तारारहस्यवृत्ति मे।

मातृकार्णव

उ०—तन्त्रसार, आगमतत्त्वविलास तथा तारारहस्यवृत्तिका मे।

मातृकाविधि

लि०—यह भैरवयामल का द्वितीय उल्लास है। श्लोक स० ६६।

—स० वि० २५०१८

मातृकाशकुनावली

लि०—यह रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत है। श्लोक स० ६४, अपूर्ण।

—र० म० ११७५

मातृकासरस्वतीमहामन्त्र

लि०—श्लोक स० २५। —अ० व० १०२११ (ख)

मातृकाहृदय

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका सौभाग्यवर्धिनी तथा भावार्थदीपिका मे।

मातृकोदय

उ०—प्राणतोषिणी मे।

मातृभेद या मातृकाभद

दे०, मातृकाभेदतन्त्र।

मातृरोदन

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चतु षष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है।

मातृसद्भाव या मातृकासद्भाव

लि०—(क) श्लोक स० ३१५०, अपूर्ण। पुष्पिका मे इसके २७ पटल कहे गये हैं। सब यामलो की अपने सामर्थ्यानुसार आलोचना कर सबका सार सग्रह-रूप यह ग्रन्थ बनाया गया है। इसमे पूजा के विभिन्न प्रकार तथा न्यास, मुद्रा आदि के विभिन्न प्रकारो के लक्षण दिये गये हैं।

(ख) श्लोक स० १६००, अपूर्ण। यह १३ वे पटल तक ही है।

—ट्रि० कै० (क) १०१७, (ख) १०१७(ख)

उ०—परात्रिशिका तथा तन्त्रालोक मे।

मानसपूजन (१)

लि०—(१) इसमे ५२ श्लोक या मन्त्र हैं। यह श्रीशङ्कराचार्य विरचित मानसिक पूजन, जो रा० ला० २२३६ मे वर्णित है, से मिलता-जुलता है।

—ए० ब० ६६७४

मानसपूजन (२)

लि०—(१) चतुर्भुजाचार्य-शिष्य श्री विजयरामाचार्य विरचित, श्लोक स० ४५०। इसमे जयदुर्गास्तोत्र वर्णित है। —रा० ला० १९३

(२) चतुर्भुजाचार्य-शिष्य विजयरामाचार्य कृत।

—अ० ब० १३३७५ (क)

लि०—(१) मानसपूजा श्लोक स० १२६। —कैट् कैट् १।४५१

(२) श्लोक स० २५, पूर्ण। —स० वि० २६१३२

मानसपूजापद्धति (देवी की)

लि०—श्लोक स० ४८, अपूर्ण। —स० वि० २४८६७

मानसपूजाविधि

लि०—श्लोक स० २७, अपूर्ण। —स० वि० २५७४९

मानसार्चन

लि०—पूर्णानन्द गिरि विरचित। श्लोक स० ६७, अपूर्ण।

—सं० वि० २६११०

मानसिकस्नान

लि०—श्लोक स० २२। इसमे मानसिक स्नान और उनका फल वर्णित है।
—ट्रि० कै० ११०२ (ख)

मानसोपचारपूजापद्धति

लि०— —कैट् कैट् १।४५२

मानसोल्लास

लि०—(१) मानसोल्लास-वृत्तान्ताख्य टीका सहित। मानसोल्लास श्रीशङ्कराचार्य कृत दक्षिणामूर्ति की स्तुति पर व्याख्यान है। दूसरा (मानसोल्लासवृत्तान्त) पूर्व व्याख्यान की व्याख्या है। पूवव्याख्याकार हैं शङ्कराचार्य-शिष्य विश्वरूपाचार्य और २ य व्याख्याकार हैं रामतीर्थ। —रा० ला० १७६३

(२) मानसोल्लासविलाससहित, श्री शङ्कराचार्यजी ने दक्षिणामूर्ति-स्तोत्र के व्याज से समस्त वेदान्तरहस्य जिन दस श्लोको से आविष्कृत किया उन दस श्लोको का तत्त्व शङ्कराचार्य-शिष्य विश्वरूपाचार्य ने मानसोल्लास से व्यक्त किया। उस पर रामतीर्थ ने उक्त व्याख्या की। —रा० ला० १७८३

(३) मानसोल्लास सटीक टीकाकार रामतीर्थ। —रा० पु० ५६११

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका सौभाग्यवर्धिनी, आगमतत्त्वविलास तथा ताराभक्ति-सुधार्णव मे।

मानाङ्गुलमहातन्त्र

उ०— शाक्तानन्दतरङ्गिणी मे

मायातन्त्र

लि०—(१) हर-पार्वती सवादरूप। —ए० ब० ५९८५

(२) यह तन्त्र १७ तटलो मे है। पुष्पिका मे "मायातन्त्रे सप्तदश पटल" लिखा है। १७ वे पटल के विषय—भावादिनिरूपण, भुवनेश्वरी कवच, चण्डीपाठविधि, चण्डी-पाठ-फल आदि, दिव्य, पशु आदि तीन भावो का निरूपण तथा कलियुग मे ज्ञानोपाय निरूपण वर्णित हैं। —नो० स० १।२८५

(३) इसमे ७ पटल तथा ३२० श्लोक हैं। ७ पटलो के विषय हैं क्रमश —मायो-त्पत्ति, मायाराज (?) देवी के यन्त्र, स्तोत्र आदि का विधान, मन्त्रपुरश्चरण, दुर्गा नाम के उच्चारण का फल, योगतत्त्व तथा अन्यान्य यन्त्र। —रा० ला० २१४

(४) श्लोक सं० ३००, खण्डित। —अ० व० १०२१७

(५) केवल ९ म पटल का कुछ अंश, पन्ने १३, अपूर्ण।

—ब्र० प० ११२

(६) श्लोक स० २८६, पूर्ण। —र० म० ४९६३

(७) (क) १ से ७ पटल तक पूर्ण, श्लोक स० २५५। (ख) श्लोक स० १६५, अपूर्ण। —स० वि० (क) २४७१३, (ख) २५५६१,

(८) मायातन्त्रे दुर्गानाममहात्म्यम्। —कैट् कैट् १।४५२

उ०—प्राणतोषिणी, तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, शक्तिरत्नाकर, तारारहस्यवृत्ति, आगमतत्त्वविलास तथा सर्वोल्लास मे।

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुष्षष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है।

मायाबीजकल्प (ह्रीकारकल्प)

लि०—पन्ने ३। —रा० पु० ६४१३

मायाबीजकल्प

लि०—शक्तिदास विरचित, पूर्ण। —डे० का० ४८७ (१८७५-७६)

मायावामनसंहिता

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

मायिभैरवतन्त्र

उ०—Oxford (आक्सफोर्ड) १०९ (A) के अनुसार इसका उल्लेख है।

—कैट् कैट् १।४५२

मारणप्रयोग

लि०—(१) श्लोक सं० १२०, पूर्ण। —अ० व० ५१५०

(२) यक्षिणीप्रयोगान्तर्गत, श्लोक सं० ३०, पूर्ण। —स० वि० २५५११

मारणादिप्रयोग

लि०—दत्तात्रेयतन्त्र के अन्तर्गत, श्लोक स० १४५, अपूर्ण।

—स० वि० २६१५३

मारुतिमन्त्रविधान

लि०—श्लोक स० २७, पूर्ण। —स० वि० २४३९८

मार्जारीतन्त्र

लि०—पार्वती-ईश्वर सवादरूप इस तन्त्र मे उच्छिष्टगणेशपूजासम्बन्धी १० श्लोक हैं। —ए० ब० ५८९७

मार्तण्डदीपिका

उ०—अहल्याकामधेनु मे।

मार्तण्डभैरव

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे।

मार्तण्डमाहात्म्य

लि०—(१) भृङ्गीशसहिता के अन्तर्गत, पन्ने १५। —रा० पु० ५७८०
(२) भृङ्गीशसहिता से गृहीत। —कैट् कैट् २।१०४

मालापञ्चदशक्रम

लि०—श्लोक स० ३०, अपूर्ण। —स० वि० २५०५२

मालाप्रकरण

लि०—तन्त्रसारान्तर्गत, श्लोक स० १६३, अपूर्ण। —स० वि० २५३१२

मालामन्त्रमणिप्रभा

लि०—कोङ्कणस्थ रङ्गनाथ विरचित। श्लोक स० लगभग ५००, पूर्ण। यह श्री-विद्याविवरणमालामन्त्र की व्याख्या है। त्रिपुरार्णव के अन्तर्गत मालामन्त्रोद्धार नामक १८ वे तरङ्ग के अन्तर्गत है। —स० वि० २४९२५

मालामन्त्रसंग्रह

लि०—श्लोक स० ३७०, अपूर्ण। —स० वि० २४५९२

मालाविधानतन्त्र

लि०—(१) इसमे विविध प्रकारो से मालामन्त्र के जपादि का प्रतिपादन है। —नो० स० २।२१७
(२) श्लोक स० १६, पूर्ण। —स० वि० २४७४०

मालाविवेक

लि०—अपूर्ण। —स० वि० २५१५७

मालाशोधन

लि०— —कैट्. कैट् १।४५४

मालासनदीपिका

लि०—इसमे सभवत माला और आसन के विषय मे विचार किया गया है।

—कैट् कैट् १।४५४

मालासंस्कार

लि०—(१) श्लोक स० २०। इसमे कहा गया है—प्राणप्रतिष्ठापूर्वक माला का सस्कार करना चाहिए। सर्वत्र नौ कोने के (नवकोण) पीपल के पत्ते पर माला की स्थापना करनी चाहिए। इसमे माला धारण के लिए अपेक्षित अनुष्ठान का प्रतिपादन है।

—रा० ला० ३८०

(२) (क) श्लोक स०५७, अपूर्ण। (ख) यह सनत्कुमारसहिता के अन्तर्गत है। श्लोक स० २०, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० ६५, पूर्ण। (घ) श्लोक स० ४८, पूर्ण। (ङ) श्लोक सं० २७, पूर्ण।

—स० वि० (क) २३८९८, (ख) २४०६८, (ग) २४१४२, (घ) २४६९९, (ङ) २४७३७

(३) —कैट् कैट् १।४५४

मालासंस्कारप्रयोग

लि०—श्लोक स० ३६, पूर्ण। —स० वि० २६३४०

मालासंस्कारविधि

लि०—श्लोक सं० २५, पूर्ण। —स० वि० २६४६४

मालिनीतन्त्र

उ०—पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, फेत्कारिणीतन्त्र, आगमतत्त्वविलास, ताराभक्तिसुधार्णव तथा सर्वोल्लास मे।

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है।

मालिनीविजय

नामान्तर—श्रीपूर्वशास्त्र। मालिनीमत त्रिकशास्त्र का सार है। त्रिकशास्त्र दश शिवागम, अष्टादश रुद्रागम और चतुःषष्टि भैरवागम का सार है।

लि०—पत्रे ४२, पूर्ण । —डे० का० ४८८ (१८७५-७६ ई०)

उ०—तन्त्रसार, योगिनीहृदयदीपिका, महार्थमञ्जरी-परिमल, स्पन्दविवृति, शक्ति-रत्नाकर, स्पन्दप्रदीपिका तथा आगमतत्त्वविलास मे ।

मालिनीविजयोत्तर

लि०—गोविन्दाश्रम सगृहीत । —ए० व० ५८२१

उ०—तन्त्रालोक मे ।

मालिनीविजयवार्त्तिक

अभिनव गुप्त कृत ।

यह मालिनीविजयतन्त्र की प्रथम कारिका का व्याख्यान है ।

माहेश्वरतन्त्र

लि०—यह तन्त्र उमा-शिव सवादरूप है । पूर्व और उत्तर खण्डो के रूप मे इसके दो भाग है । उत्तर खण्ड मे ५१ पटल है, उनमे कृष्ण-कथा, कृष्ण-महिमा तथा कृष्ण-पूजा-विधि का वर्णन है । —ए० व० ६०३३

उ०—वीरसिंहावलोक तथा शाक्तानन्दतरङ्गिणी मे ।

माहेश्वरीतन्त्र

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी मे ।

माहेश्वरीविद्या

लि०—इसमे वहुत-से इन्द्रजाल या जादूगरी के मन्त्र है । उनके साथ नृसिंहसहस्र-नाम भी सम्मिलित है । —ए० व० ६२८७

मिथुनमालामन्त्र

लि०—श्लोक स० १६२, अपूर्ण । —स० वि० २४७१३

मीनादिशोधनविधि

लि०—श्लोक स० ३२, अपूर्ण । पात्रवन्दना भी इससे सलग्न है ।

—स० वि० २६६५६

मुकुटसंहिता

उ०—इसका अभिनव गुप्त ने उल्लेख किया है । —इ० आ० पे० ८४०

मुकुटागम

दे०, मुकुटसंहिता ।

किरणागम के अनुसार अष्टादश (१८) रुद्रागमो मे अन्यतम । किसी-किसी के मतानुसार यह १० शिवागमो के अन्तर्गत है ।

उ०—शतरत्नसग्रह तथा स्वच्छन्द-तन्त्रसग्रह पर क्षेमराज की टीका मे ।

मुकुन्दकेलि

गोरक्ष या महेश्वरानन्द कृत ।

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे ।

मुक्तिमहानन्दकथा

लि०—(१) श्लोक स० ८७८, अपूर्ण । —र० म० ४८५८

मुक्तिसोपान

लि०—(१) अखण्डानन्द विरचित । इसमे छिन्नमस्ता देवी की उत्पत्ति तथा पूजा का विस्तृत वर्णन है । —ए० व० ६३८६

(२) श्लोक स० लगभग १०७५, अखण्डानन्द विरचित, पूर्ण । —स० वि० २३९०२

(३), अखण्डानन्द विरचित । —कैट् कैट्. १।४६०

मुखविम्ब

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह अष्टादश (१८) रुद्रागमो के अन्तर्गत है ।

मुखशोधनविधि

लि०—यह काली आदि के मन्त्रजप का अङ्गभूत है तथा सेतु, महासेतु, कुल्लूकादि निरूपण भी इनमे है । श्लोक स० ३५, पूर्ण । —स० वि० २६४०४

मुख्याम्नायरहस्य

उ०—योगिनीहृदयदीपिका मे

मुख्याम्नायविधि

उ०—योगिनीहृदयदीपिका मे ।

मुण्डमाला

लि०—श्लोक सख्या १८९, पूर्ण । लिपिकाल स० १७११ वि० ।

—म० वि० २३८४४

मुण्डमालातन्त्र

लि०—(१) शिव-पार्वती सवादरूप यह तन्त्रग्रन्थ शक्ति-पूजा विशेषत दशमहा-विद्यापूजा विषयक है। इसमे १५ पटल हैं। महाविद्याओ मे से प्रत्येक की उपासना का फल भी इसमे पृथक्-पृथक् रूप से वर्णित है। —ए० व० ५९७२

(२) श्लोक स० १८७। इसमे ६ पटल तक का ही अश है। प्रतिपाद्य विषय हैं—भुवनेश्वरी आदि कुछ महाविद्याओ का प्रतिपादन, रुद्राक्ष आदि कुछ मालाओ के निर्माण का प्रकार, जपस्थान, आसन आदि का प्रतिपादन, मत्स्य, बकरा आदि के बलिदान का प्रकार, मन्त्र-पुरश्चरणविधि तथा भुवनेश्वरीपूजन का प्रकार आदि।

—रा० ला० ४६९

(३) देव-देवी सवादरूप। श्लोक स० ४१६, पटल स० ६, अपूर्ण। पहले देवराज द्वारा सावित एकाक्षरी विद्या का निरूपण, अक्षमाला के नाम और फल, साधना योग्य स्थान, निवेदन योग्य वस्तुएँ, बलिदान, दीक्षाविधि, गुरु के लक्षण, पूजा, यन्त्र आदि। इसकी पटल १ म से ६ष्ठ तक की ही प्रति प्राप्त है। —रा० ला० ७४०

(४) श्लोक स० ३००, अपूर्ण। —अ० व० १०२३९

(५) (क) ११ पटल पर्यन्त, अपूर्ण। (ख) ८ पटल तक, अपूर्ण।

—ब० प० (क) ९२५ (क), (ख) १४१४

(६) श्लोक स० ६०, अपूर्ण। —र० म० ४८६५ (ख)

(७) (क) श्लोक स० ९६, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० २१६, पूर्ण। (ग) छठे पटल तक पूर्ण, श्लोक स० ३००।

—स० वि० (क) २४४५९, (ख) २४९०७, (ग) २६२२९

(८) —कैट् कैट् ३।९९

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी, ताराभक्तिसुधार्णव, शक्तिरत्नाकर, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, आगमतत्त्वविलास तथा सर्वोल्लास मे।

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुष्षष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है।

मुद्रा (करण)

लि०—(१) (क) वामकेश्वरतन्त्र से गृहीत, श्लोक स० ४०, पूर्ण।
(ख) मुद्रा (करण) श्लोक स० १२०, पूर्ण।

—अ० ब० (क) ३५३९, (ख) ८२९४

(२) श्लोक स० १४१, इसमे 'मुद्रा' शब्द की निरुक्ति, भिन्न-भिन्न देवताओ के लिए भिन्न-भिन्न मुद्राओ का निर्देश तथा उनके लक्षण प्रतिपादित है। —रा० ला० ४२०३

मुद्राज्ञान

लि०—श्लोक स० ९, पूर्ण। —स० वि० २६०४३

मुद्रानिघण्टु

लि०—वामकेश्वरतन्त्र मे गृहीत। —कैट् कैट् ३।९९

मुद्रापटल

लि०—कालोत्तरान्तर्गत। —ए० ब० ५८९८

मुद्राप्रकरण

लि०—(१) इसमे कृष्णानन्द कृत तन्त्रसार का मुद्रा प्रकरण निर्दिष्ट है।

—ए० ब० ६५७६

(२) मुद्राओं से देवताओ को प्रसन्नता होती है एव पापराशि भाग खडी होती है। इसलिए मुद्रा सर्वकर्मसाधिका कही गयी है। पूजा, जप, ध्यान, आवाहन, नैवेद्य-निवेदन आदि मे मुद्रा आवश्यक है। इसमे 'मुद्रा' की निरुक्ति यो की है—'मोदनात् सर्वदेवाना द्रावणात्पापसन्तते। तस्मान्मुद्रेति सा ख्याता सर्वकर्मार्थसाधिनी॥'

—रा० ला० ४२०३

(३) इसमे मुद्राओ के लक्षण और विनियोग कहे गये है, अकुश, कुम्भ, अग्निप्राकार, मालिनी, धेनु, शख, योनि, मत्स्य, आवाहनादि विविध मुद्राएँ प्रतिपादित है।

—म० द० ५७९६

(४) श्लोक स० १९२, पूर्ण —स० वि० २४४१५

(५) —कैट् कैट् ३।९९

मुद्राप्रकार

लि०—श्लोक स० १०, अपूर्ण। —सं० वि० २४६३२

मुद्राप्रकाश

लि०—(१) श्रीरामकिशोर विरचित। ग्रन्थकार का जन्मकाल १७५२ शकाब्द है। साधारण मुद्राओ के निर्णय के साथ-साथ उमेशमुद्रा, उपेन्द्रमुद्रा, गजाननमुद्रा, शक्ति-मुद्रा आदि मुद्राओं का निर्णय भी इसमे किया गया है। इस ग्रन्थ मे छह परिच्छेद है।

—ए० व० ६५७३

(२) श्लोक स० ४०५। इसमे मुद्रा शब्द की निरुक्ति पूर्वक मुद्राओ के प्रमाण, लक्षण आदि का प्रतिपादन किया गया है। अंकुश, कुन्त, तत्त्व, कालकर्णी, वासुदेवाख्या, सौभाग्यदण्डिनी, रिपुजिह्वासना, कूर्म, त्रिखण्डा, शालिनी, मत्स्यमुद्रा, आवाहनी, स्थापनी आदि बहुत-सी मुद्राएँ इसमे प्रतिपादित है। —रा० ला० १८६६

(३) श्लोक स० १५०, अपूर्ण। —अ० व० १७३४

(४) (क) श्रीरामकिशोर कृत, श्लोक स० ६०५, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ५८१, पूर्ण, श्रीरामकिशोर कृत।

—स० वि० (क) २४८२०, (ख) २६२१९

(५) (क) रामकिशोर कृत
(ख) कृपाराम कृत। —कैट् कैट् १।४६१

मुद्रार्णव

लि०—श्रीरामकृष्ण विरचित। —कैट् कैट् १।४६१

मुद्रार्णवलक्षणटीका

लि०— —कैट् कैट् १।४६१

मुद्रालक्षण

लि०—(१) श्लोक सख्या ११५, पूर्ण। —अ० व० १०६२३

(२) (क) श्लोक स० २६४, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ८०, पूर्ण। (ग) श्लोक स० २४, पूर्ण। (घ) श्लोक स० २२, पूर्ण।

—स० वि० (क) २३८९९, (ख) २४६३१, (ग) २५४२४, (घ) २६०४४

(३) कृष्णनाथ विरचित। —कैट् कैट् १।४६१

मुद्रालक्षणसंग्रह

लि०—पौण्डरीकभट्ट विरचित, श्लोक स० ३५२, पूर्ण। —स० वि० २५८८७

मुद्राविचार

लि०—श्लोक स० ९६, पूर्ण। —स० वि० २५३३३

मुद्राविधान

लि०—श्लोक स० १४५, पूर्ण। —स० वि० २५२०७

मुद्राविधानलक्षण

लि०—इसमे वनमालिका, शखसज्ञिका आदि मुद्राओ के लक्षण और माहात्म्य वर्णित है। —म० द० ५७९७

मुद्राविधि

लि०—(१) श्लोक स० २८, पूर्ण। —स० वि० २५२९६

(२) (क) पञ्चरात्रागम से गृहीत

(ख) पञ्चदेवप्रकाशिका से गृहीत। —कैट् कैट् १।४६१

(३) —कैट् कैट् २।१०६

मुद्राविवरण

लि०—(१) इसमे तन्त्रराज, प्रयोगसार, लक्षणसग्रह, राजतन्त्र आदि तान्त्रिक ग्रन्थो से अकुशमुद्रा, कुभमुद्रा, अग्निप्राकारमुद्रा, ऋष्यादिन्यासमुद्रा, षडङ्गमुद्रा, मालिनी-मुद्रा, शखमुद्रा, मत्स्यमुद्रा, आवाहनादि नौ मुद्राएँ, ७ गणेशमुद्राएँ, १० शाक्तमुद्राएँ, १९ वैष्णवमुद्राएँ, १० शैवमुद्राएँ, ५ गन्धादिमुद्राएँ, चक्रमुद्रा, ग्रासमुद्रा, प्राणादि ५ मुद्राएँ, ७ जिह्वामुद्राएँ, भूतवलिमुद्रा, नाराचमुद्रा, नमस्कारमुद्रा, सहारमुद्रा, ९७ मुद्राएँ, पाशमुद्रा, गदामुद्रा, शूलमुद्रा तथा खड्गमुद्रा वर्णित है। फिर इनके लक्षण कहे गये है।

—ए० व० ६५७८

(२) श्लोक स० १००। —अ० व० ३४८८

(३) —कैट् कैट्. १।४६१, २।१०६

मूर्तिलक्षण

लि०—(१) श्लोक स० ६५०, अपूर्ण। पार्थिवलिग-पूजाविधान पर्यन्त।

—अ० व० १७२० (ख)

(२) मूर्त्तिनिर्माण पर, गरुडसहिता से गृहीत।

—कैट् कैट् १।४६४

मूलतन्त्र

श्रीकण्ठी के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

मूलप्रकाश

लि०—प्रेमनिधि विरचित। —कैट् कैट् १।४६४

मूलविद्या

लि०—श्रीविद्याख्य मूलविद्या का एक भेद। —कैट् कैट् ३।१००

मूलशान्ति

लि०—शिवप्रसाद विरचित, श्लोक स० १५०, पूर्ण। —अ० व० ७४४४

मृगेन्द्रटीका

मृगेन्द्रवृत्ति

लि०—विद्याकण्ठ-पुत्र (या शिष्य) भट्ट नारायणकण्ठ कृत। (क) श्लोक स० ३२२० पूर्ण। (ख) श्लोक स० लगभग ७७५, अपूर्ण।

—र० म० (क) ४३८७, (ख) १९९९

मृगेन्द्रागम (सटीक)

उ०—रामकण्ठ ने नरेश्वरपरीक्षाप्रकाश मे तथा सायण ने सर्वदर्शनसग्रह मे इसका उल्लेख किया है। यह शैव तन्त्र है।

मृगेन्द्रतन्त्र

लि०—इस पर अघोरशिवाचार्य विरचित मृगेन्द्रवृत्तिदीपिका टीका है। टीका के नाम से ज्ञात होता है कि दीपिका नारायण कण्ठ कृत टीका पर टीका है।

—कैट् कैट् ३।१००

उ०—शतरत्नसग्रह मे।

मृगेन्द्रवृत्तिदीपिका

अघोरशिव कृत नारायणी वृत्ति के ऊपर व्याख्या।

उ०—रत्नत्रयवृत्ति मे।

मृगेन्द्रतन्त्रविवृति

लि०—श्लोक स० ३७५, पूर्ण। —स० वि० २५९३७

मृगेन्द्रोत्तर

लि०—(१) श्लोक स० १७५०। यह ग्रन्थ २७ पटलो मे पूर्ण है। इसमे शिवजी की पूजा तथा महिमा प्रतिपादित है। —ट्रि० कै० १०१८

(२) कामिकोपभेद से गृहीत। इस पर नारायण कण्ठ भट्ट कृत टीका है।
—कैट् कैट् १।४६४

मृडानीतन्त्र

लि०—शिव-पार्वती सवादरूप। श्लोक स० ३८०। पार्वतीजी (अम्बिकाजी) के शिवजी से यह प्रार्थना करने पर कि भगवन्, आपके अनुरक्त भक्तो को आपकी अर्चा-पूजा करने मे जिससे साहाय्य प्राप्त हो ऐसा कोई दारिद्रय-नाशकारी उपाय कहने की कृपा करे। इस पर शिवजी ने स्वर्ण बनानेकी प्रक्रिया का वर्णन किया। और और रसायन विधियाँ भी बतलायी। उन्ही सबका इसमे प्रतिपादन है। यह प्रति १२ पटलो तक ही है।
—ट्रि० कै० १०१९ (क)

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव तथा प्रयोगामृत मे।

मृतकक्षोभतन्त्र

उ०—तन्त्रालोक मे।

मृतसंजीवनी

लि०—श्लोक स० ६१६। यह आद्या काली देवी का त्रैलोक्य-विजय नाम का परम अद्भुत शक्तिशाली कवच है। यदि कोई इसे सोने के तावीज मे मढ कर धारण करे तो उसे कल्याण, धन, कीर्ति, दीर्घ आयु आदि सब कुछ प्राप्त होता है। यदि कोई प्रात काल नियम से इसका पाठ करे तो उसका सारा दारिद्रय मिट जाता है। सब पाप, अकाल मृत्यु, सब सकट नष्ट हो जाते है। प्रति दिन तीन बार जो इसका पाठ करता है वह मोक्ष को प्राप्त होता है। इस प्रकार इसमे दीर्घजीवन का उपाय, विविध मन्त्र, औषध आदि का प्रतिपादन है। —रा० ला० २८८५

मृतसंजीवनीविद्या

लि०—इसमे शुक्रोपासित मृतसजीवनी विद्या भी है। श्लोक स० ४४, अपूर्ण।
—सं० वि० २४३७९

मृतसंजीवनी सुधा

लि०—श्लोक स० ११।।, पूर्ण। योगिनीतन्त्र के सप्तम पटल के अन्तर्गत।

—स० वि० २६४६५

मृतितत्त्व

लि०— —कैट् कैट्. १।४६५

मृतितत्त्वानुस्मरण

लि०—श्लोक स० २५५। —डे० का० २४४ (१८८३–८४ ई०)

मृत्युकालज्ञानोपाय

लि०—श्लोक स० ५४, अपूर्ण। —स० वि० २५४७९

मृत्युजिदमृतीशविधान या मृत्युजिदमृतेशतन्त्र

लि०—पार्वती-परमेश्वर सवादरूप यह ग्रन्थ २४ अधिकारो (अध्यायो) मे पूर्ण है। इसमे प्रतिपादित विषय हैं—मन्त्रावतार, मन्त्रोद्धार, यजमानाधिकार, दीक्षाधिकार, अभिषेक-साधन, स्थूलाधिकार, सूक्ष्माधिकार, कालवञ्चन, सदाशिव, दक्षिण चक्र, उत्तर तन्त्र, कुलाम्नाय, सर्वविद्याधिकार, सर्वाधिकार, व्याप्ति-अधिकार, पञ्चाधिकार, वश्य-कर्षणाधिकार, राजरक्षाधिकार, इष्टपाताद्यधिकार, जीवाकर्षणाधिकार, मन्त्रविचार, मन्त्रमाहात्म्य आदि। —ने० द० १।२८५ (ख)

उ०—क्षेमराज ने इसका उल्लेख किया है। —कैट् कैट् १।४६५

मृत्युजिद्भट्टारक (अमृतेशतन्त्र)

उ०—शिवसूत्रविमर्शिनी तथा प्रत्यभिज्ञाहृदय मे।

मृत्युञ्जयगीता

लि०— —कैट्. कैट् ३।१००

मृत्युञ्जयजपविधान

लि०—इसमे मृत्युञ्जय-जप की विधि वर्णित है। यह जप दीर्घायु की प्राप्ति तथा रोगादि उपद्रवो की निवृत्ति के लिए किया जाता है। —ए० व० ६४७३, ६४७४

मृत्युञ्जयजपविधि

लि०—(१) श्लोक स० ४८, अपूर्ण। —र० म० ११६८

(२) दे०, महामृत्युञ्जय-जपविधान। —कैट् कैट् ३।१००

मृत्युञ्जयतन्त्र

लि०—(१) शिव-पार्वती सवादरूप। यह महातन्त्रो मे अन्यतम है। पार्वतीजी ने शिवजी से पूछा—भगवन्, जिस ज्ञान से मोक्ष हो उसे सक्षेपत कहने की कृपा करे। इस पर शिवजी ने इस तन्त्र का उन के प्रति प्रतिपादन किया। इसकी श्लोक सख्या ३०० है और ४ अध्याय है।

इसमे प्रतिपादित विषय है—देहोत्पत्ति-क्रमकथन, देह की ब्रह्माण्डरूपता का प्रतिपादन, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, समाधि—इन छह योगाङ्गो के लक्षण आदि का वर्णन।
—रा० ला० ४२०४

(२) विवरण रा० ला० ४२०४ मे दे०। —ए० व० ५९७६

(३) —कैट् कैट् १।४६५, ३।१०७

मृत्युञ्जयपञ्चाङ्ग

लि०—(१) यह देवीरहस्यान्तर्गत शिव-पार्वती सवादरूप है। इसमे निम्नलिखित मृत्युञ्जयसम्बन्धी पाँच अङ्ग वर्णित है।

(१) मृत्युञ्जयपटल, (२) मृत्युञ्जयपद्धति, (३) मृत्युञ्जयसहस्रनाम, (४) मृत्युञ्जयकवच तथा (५) मृत्युञ्जयस्तोत्र। —नो० स० २।१६८

(२) देवीरहस्यान्तर्गत, श्लोक स० ५६०। —र० म०

(३) देवीरहस्य से गृहीत। —कैट् कैट् ३।१००

मृत्युञ्जयपटल

लि०—श्लोक स० १५०, पूर्ण। —स० वि० २४१७०

मृत्युञ्जयमन्त्रोद्धारटीका सारदाख्या

लि०—(१) —नो० स० १।२९२

(२) गीर्वाण योगीन्द्र विरचित श्लोक सख्या १००, अपूर्ण।
—अ० व० ९९१६ (डी)

मृत्युञ्जययन्त्र

लि०—सब रोगो की शान्ति तथा विजयाकाक्षियो की विजय के लिए जो मृत्युञ्जय यन्त्र है उसके निर्माण का प्रकार इसमे दिया गया है। इस पर टीका भी है।
—ए० व० ६५८८, ६५८९

मृत्युञ्जययन्त्रविधान

लि०—श्लोक स० ४२, पूर्ण । —स० वि० २६३३२

मृत्युञ्जयविधान

लि०—श्लोक स० १४०, अपूर्ण । —अ० व० ७१८१

मृत्युञ्जयविधि

लि०—(१) (क) इसमे मृत्युञ्जय-मन्त्र के जप, जो दीर्घ जीवन प्राप्ति तथा रोगादि उपद्रवो की शान्ति के लिए किया जाता है, की विधि वर्णित है ।

(ख) कमलाकरभट्ट विरचित शान्तिरत्नाकर का यह एक भाग है । इसमे शिवजी के विशेष-विशेष मन्त्रो का शान्तिक, पौष्टिक आदि कर्मो मे उपयोगार्थ नियम आदि वर्णित है । —ए० व० (क) ६४७५, (ख) ६४६९

(२) श्लोक स० ७० । —अ० व० ७१४३

मृत्युञ्जयसंहिता

लि०—शम्भु प्रोक्त । —ने० द० १।३३९

मृत्युलाङ्गूल

लि०— —कैट् कैट् २।२१८

मृत्युलाङ्गूलमन्त्र

लि०—श्लोक स० २० । —अ० व० ७२८७ (च)

मेघमाला

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत उमा-महेश्वर सवादरूप यह ग्रन्थ ११ अध्यायो मे है । इसमे राजादिफलाध्याय, शनैश्वर-क्रियाफलाध्याय, राशिगत ग्रहोत्पात फलाध्याय, सक्रान्तिफलाध्याय, ग्रहो के उदय और अस्त के फलाध्याय, मासफलाध्याय, काकरुतफलाध्याय आदि विषय वर्णित है । —ए० व० ५८७५

(२) रुद्रयामलान्तर्गत शिव-पार्वती सवादरूप यह ग्रन्थ मेघो के प्रकार, उनके कार्य, उनके गर्जन का फल आदि का प्रतिपादन करता है । यह ११ अध्यायो मे पूर्ण है । —क० का० ८२

(३) यह रुद्रयामलान्तर्गत शिव-पार्वती सवादरूप है । इसमे मेघप्रभेद, मेघगर्जन, काकरुत आदि का फलाफल निर्दिष्ट है । —वी० कै० १३१४

(४) रुद्रयामलान्तर्गत श्लोक म० १०४४, पूर्ण । —र० म० ३९९६

(५) रुद्रयामल से गृहीत । —कट्. कैट् १।४६६

मेधादक्षिणामूर्तिकल्प

लि०—शारदातिलकान्तर्गत । श्लोक स० ४०, पूर्ण ।

—स० वि० २५३३९

मेधादीक्षा

लि०—शक्तिसंगमतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० ९८, पूर्ण ।

—स० वि० २४१३०

मेधादीक्षाप्रकरण

लि०—ज्ञानार्णव से गृहीत । —कैट् कैट् ३।१००

मेरुचन्द्रतन्त्र

उ०—आगमतत्त्वविलास मे ।

मेरुतन्त्र

लि०—(१) यह शिव-पार्वती संवादरूप महातन्त्र ३५ प्रकाशो मे पूर्ण है । शिवजी द्वारा उपदिष्ट १०८ तन्त्रो मे इसका स्थान सबसे ऊँचा है, इसलिए इसका नाम मेरतन्त्र है। जलन्धर के भय मे मेरु की शरण मे गये हुए देवता और ऋषियो के लिए शिवजी ने इसका उपदेश दिया था । इसमे प्रतिपादित प्रधान-प्रधान विषय है—व्यवस्थाप्रकाश, संस्कार-प्रकाश, दीक्षा-प्रकाश, होमविधिप्रकाश, आह्निक-प्रकाश (या आम्नायरहस्य), पुरश्चर्या-प्रकाश, सिद्धिस्थिरीकरण-प्रकाश, मुद्रालक्षण-प्रकाश, पार्थिवपूजनविधि-प्रकाश, पुरश्चर्याकौलिकाचार, कलिसस्थित सविधि मन्त्रकथनप्रकाश, वेदमन्त्रप्रकाश, नवग्रह-मन्त्रकथन, प्रत्यङ्गिरामन्त्रकथन, वैदिकमन्त्रकथन, दक्षिणाम्नाय गणपतिमन्त्रकथन, ऊर्ध्वाम्नाय गणपतिमन्त्रकथन, पश्चिमाम्नाय गणपतिमन्त्रकथन, उत्तराम्नाय गणपति-मन्त्रकथन, सूर्यमन्त्र, नवग्रहमन्त्र, ब्राह्मयाद्यष्टशक्तिमन्त्र, दश दिगीशो के मन्त्र, दीप-विधि आदि। यह वाममार्गी और दक्षिणमार्गी दोनो को समान रूप से मान्य है ।

—इ० आ० २५७०

(२) यह ग्रन्थ ३५ प्रकाशो मे पूर्ण है। इसका खेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई द्वारा, १९०८ ई० मे प्रकाशन भी हो चुका है। अन्य विवरणो के लिए इ० आ० २५७० देखे ।

—ए० व० ६०४३, ६१५५

(३) श्लोक स० ८०० (मन्त्र-खण्ड मात्र)। —अ० ब० २६५६ (क)

(४) मेरुभट्टारक। यह महातन्त्र सात करोड श्लोकात्मक या शब्दात्मक कहा गया है। मालूम होता है यही मूल मेरुतन्त्र है।

—ने० द० भाग २ य की भूमिका पृ० २६ तथा २। पेज ११५

(५) मेरुतन्त्र, श्लोक स० लगभग १५०००। व्यवस्था-प्रकाश, विधवा विवाह कथन, सस्कार-प्रकाश, दीक्षा-प्रकार कथन, होमविधि, आह्निक-प्रकाश, पुरश्चर्या-प्रकाश, सिद्धि-स्थिरीकरण-प्रकाश आदि विषय इसमे प्रतिपादित है।

—नो० स० १।२९४, २।१६९

(६) यह ५० प्रकाशो मे पूर्ण है। शिव-पार्वती सवादरूप यह मेरुपर्वत पर स्थित देवता और ऋषियो की सभा मे प्रतिपादित महातन्त्र है। —क० का० ६९

(७) यह महातन्त्र है। प्रकाशित भी हो चुका है।

—बी० कै० १२६७

(८) श्लोक स० १५८०१, केवल ४४—४६ तक। —र० म० ४९६

(९) (क) श्लोक स० १४६०, पूर्ण, (?)। (ख) श्लोक स० १९५६, अपूर्ण, दशम प्रकाश तक। (ग) श्लोक स० ५७५ (११ वा प्रकाश मात्र)। (घ) श्लोक स० १६०३०, पूर्ण, पञ्जिकासहित। (ङ) १३ वाँ प्रकाश मात्र, श्लोक स० ४७२। इसमे वैदिक मार्ग के अनुसार नवग्रह-पूजा का प्रकार बतलाया गया है।

—स० वि० (क) २३९००, (ख) २३९७३, (ग) २३९७४, (घ) २५६६४, (ङ) २६३६९

(१०) —कैट् कैट् १।४६६, ३।१००

(११) मेरुतन्त्र मे दीपदानविधि। —कैट् कैट् २।१०८

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा प्राणतोषिणी मे।

मेरुविरहतन्त्र

भुवनेश्वरीसहस्रनामस्तोत्र।

लि०— —कैट् कैट् १।४६७

मेरुसाधना

लि०—श्लोक सख्या ४००। —अ० ब० १०५०८

मैरालतन्त्र

उ०—सौभाग्यभास्कर मे।

मोक्षलक्ष्मीसाम्राज्यतन्त्र

लि०—(१) काण्डद्वयातीत योगी विरचित। मालूम होता है इसके द्वारा तान्त्रिक और वेदान्त सिद्धान्त मे सामञ्जस्य स्थापित करने का प्रयत्न किया गया है। पत्रे २२३। —तं० म० १२१८८

मोक्षसोपानटीका

लि०—इसके रचयिता तथा मूल ग्रन्थ, जिस पर यह टीका रची गयी है, का नाम ज्ञात नही। —ने० द० १।१४९८

(२) काण्डद्वयातीत योगी कृत। —कैट्. कैट् १।४६८

मोक्षोपायतन्त्र

उ०—महार्थमञ्जरी की टीका परिमल मे।

मोहचूडोत्तर

उ०—हेमाद्रि ने दानखण्ड मे, नीलकण्ठ ने दानमयूख मे तथा कमलाकर ने निर्णय-सिन्धु मे इसका उल्लेख किया है।

मोहनतन्त्र

लि०—श्लोक स० १२९५, अपूर्ण। —स० वि० २४५२८

मोहनप्रयोग

उ०—मन्त्रमहार्णव मे।

मोहशूरोत्तर

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव तथा कुण्डकल्पलता मे।

—इ० आ० पे ११४९

मोहिनीतन्त्र

लि०— —कैट् कैट् १।४६८, २।१०८

यक्षडामर

लि०—भैरव प्रोक्त श्लोक स० लगभग ४००, पूर्ण। लिपिकाल स० १९१४ वि०।

—स० वि० २४४८९

उ०—प्राणतोषिणी तथा आगमतत्त्वविलास मे।

यक्षडामरबीजकोष

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

यक्षिणीकल्प

लि०—(१) किरकिणीमततन्त्रान्तर्गत। यह तन्त्र यक्षिणी-साधना के विषय मे है।

—ए० व० ६०२८

(२) (क) श्लोक स० लगभग ४५, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० लगभग १००।

—स० वि० (क) २५३७६, (ख) २६३५३

यक्षिणीतन्त्र

उ०—प्राणतोपिणी मे।

यक्षिणीपद्धति

लि०—मल्लीनाथ कृत, श्लोक स० ३०। यह रत्नमालाशाबरतन्त्र से गृहीत है।

—अ० व० ८३७०

यक्षिणीप्रयोग

लि०—(१) श्लोक स० १००।

—अ० व० १२३२७ (क)

(२) (क) श्लोक स० लगभग १५५, अपूर्ण। (ख) श्लोक सख्या ४५, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २५२८८, (ख) २५३६४

यक्षिणीसाधन

लि०— पूर्ण।

—व० प० ५७४

यक्षिणीसाधनविधि

लि०—श्रीनाथ विरचित, श्लोक स० लगभग ४०, पूर्ण। —स० वि० २५७१८

यजनावली

लि०—यह नौ प्रकरणो मे पूर्ण है। इसकी श्लोक स० १४०० है। इसमे विष्णु भगवान् की अर्चा-पूजा वर्णित है।

—ट्रि० कै० १०२० (क)

यज्ञसूत्रप्रमाण

लि०—मातृकाभेदतन्त्र के अन्तर्गत, चण्डिका-शङ्कर सवादरूप यह मातृकाभेदतन्त्र का ११ वाँ पटल है। इसमे कितना लम्बा यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए इत्यादि का विधान है। इसकी श्लोक स० ३४ है।

—रा० ला० ९९२

यन्त्रकल्प

लि०—यन्त्रचिन्तामिणि के अन्तर्गत, हर-गौरी सवादरूप। इसमे प्रतिपादित विषय —अभीष्ट फलप्रद विविध यन्त्रो की विधि, जिनमे से ये मुख्य है—मोहनयन्त्र, राजवशीकरणयन्त्र, जीवनपर्यन्त स्वामी को वश मे रखने वाला यन्त्र, दिव्य स्तम्भनयन्त्र, राजकीयमोहनयन्त्र, दुष्टवशीकरणयन्त्र, मृत्युञ्जययन्त्र, धनिकवशीकरणयन्त्र, विवाद मे विजय कराने वाला यन्त्र, जगद्वशीकरणयन्त्र, भृत्यवशीकरणयन्त्र, स्वामी को वश मे करने वाला कालानलयन्त्र, कोपहरण करने वाला यन्त्र, स्त्रीसौभाग्यप्रद यन्त्र, प्रियवशीकरणयन्त्र, कामराजयन्त्र, कामिनीमदनभञ्जनयन्त्र, राजाङ्गना को वश मे करने वाला यन्त्र, आकर्षणयन्त्र, प्रियदर्शनयन्त्र, मानिनीकर्षणयन्त्र, मुखस्तमनयन्त्र आदि।

—नो० स० १।२९७

यन्त्रचिन्तामणि (१)

लि०—(१) दामोदर पण्डित विरचित। यह नौ पीठिकाओ मे पूर्ण है। इसमे मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण तथा विपत्ति से मोचन करानेवाले विविध प्रकार के यन्त्रो का वर्णन है। —क० का० ७६ (क)

(२) पञ्चमपीठिका के कुछ अश तक, अपूर्ण। —व० प० १०९८

(३) गङ्गाधर पुत्र दामोदर विरचित, श्लोक स० ८५०, पूर्ण। —र० म० ४९१९

(४) दामोदर पण्डित कृत श्लोक स० ६९६।

—डे० का० २४५ (१८८३—८४ ई०)

(५) गङ्गाधर-पुत्र दामोदर कृत। यह ग्रन्थ नौ पीठिकाओ मे पूर्ण है। इसकी प्रथम और २य पीठिकाओ मे ग्रन्थकार का वृत्तान्त तथा इस ग्रन्थ के मूल आधारो तथा कतिपय अन्यान्य सामान्य विषयो का निर्देश है। अवशिष्ट ७ पीठिकाओ मे विभिन्न यन्त्रो के विभिन्न कार्य—वशीकरण, आकर्षण, विद्वेषण, मारण, उच्चाटन, शान्ति और मोक्ष—कहे गये है। —ए० व० ६५७९

(६) (क) श्लोक स० ७००। (ख) श्लोक स० ७००। (ग) श्लोक स० ७००। (घ) श्लोक स० ७००। (ङ) श्लोक स० ७००। (च) श्लोक स० ७००, (छ) श्लोक स० ७००।

—अ० व० (क) १९११, (ख) ५६२७, (ग) ७१३७, (घ) ९७४९, (ङ) ९१४६ (च) १३४०२ (छ) ३४४६

(७) श्लोक स० १३२०, इसमे वशीकरण, मारण, स्तभन, उच्चाटन आदि की विधियाँ वर्णित हैं। —रा० ला० २५७

(८) (क) दामोदरभट्ट कृत, श्लोक स० लगभग ९३०, अपूर्ण। (ख) दामोदर-भट्ट कृत श्लोक स० लगभग १०००, पूर्ण। लिपिकाल शकसवत्सर १७१०। (ग) श्लोक स० ६७५, पूर्ण (?)। लिपिकाल सवत् १८०७ वि०। (घ) दामोदर कृत, श्लोक स० ८४०, पूर्ण। लिपिकाल सवत् १८५३ वि०। (ङ) दामोदर कृत। श्लोक स० ७८५, पूर्ण। —स० वि० (क) २४२५२, (ख) २४४१३, (ग) २५१८३, (घ) २५४२७, (ङ) २६१९३

यन्त्रचिन्तामणि (२)

लि०—श्लोक स० ५८५, पूर्ण। —स० वि० २४१७६

यन्त्रचिन्तामणि (३)

लि०—नामान्तर—यन्त्रराजागमशास्त्र। श्यामाचार्य विरचित,श्लोक स० लगभग १४४०, लिपिकाल १८३१ वि०। —स० वि० २५४२६

[इनके अतिरिक्त ४ पुस्तके स० वि० सग्रह मे और हैं, जिनकी स० २३९०८, २४४१६ तथा २५४४१ है? ये सब प्राय अपूर्ण हैं]।

यन्त्रचिन्तामणि (४)

(वश्याधिकार मात्र)

लि०—हर-गौरी सवादरूप। इसमे प्रतिपादित विषय है—महामोहनयन्त्र, राज-मोहनयन्त्र, मृत्युञ्जययन्त्र, शत्रुस्वानुकूलकर यन्त्र, क्रोधशमनयन्त्र, स्त्रीसौभाग्यकर यन्त्र, स्त्रीवश्यकर यन्त्र, मदनमर्दनयन्त्र, कामराजयन्त्र। —नो० स० १।२९८

यन्त्रपूजनप्रकार

लि०—इसमे विविध देव-देवियो के यन्त्रो के पूजन का प्रकार प्रतिपादित है। —वी० कै० १३७१

यन्त्रप्रकार

लि०—श्लोक स० लगभग ३०, पूर्ण। —स० वि० २३८७७

यन्त्रप्रतिष्ठाविधि

लि०—श्लोक स० लगभग ५०, अपूर्ण। —स० वि० २५९३९

यन्त्रभेद

लि०—श्लोक स० १२५। इसमे विभिन्न तन्त्रो मे गुप्त विभिन्न यन्त्रो का, जिनसे तान्त्रिक जन अपना मनोवाञ्छित सिद्ध करते है, भलीभाँति विशद रूप से प्रतिपादन किया गया है। —ट्रि० कै० १०२६ (घ)

यन्त्रमन्त्रसंग्रह

लि०—श्लोक स० लगभग १६००, अपूर्ण। —स० वि० २५८६३

यन्त्रराज या यन्त्रराजागमशास्त्र

नामान्तर—यन्त्रचिन्तामणि (३)।

लि०—(क) श्यामाचार्य विरचित। श्लोक स० लगभग १५००, पूर्ण। (ख) श्लोक स० २४२, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० २२५, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २३८४५, (ख) २४३४८, (ग) २४५७८

यन्त्रलेखनप्रकाश

लि०—श्लोक स० १५७। —अ० व० १३४२५

यन्त्रविधान

लि०—शिव प्रोक्त, श्लोक स० लगभग १६०, पूर्ण। —स० वि० २३८६९

यन्त्रसंग्रह

लि०—(१) इसमे वागीश्वरी, छिन्नमस्ता, विन्ध्येश्वरी, बालात्रिपुरसुन्दरी, श्रीविद्या और गणेश के यन्त्र उल्लिखित है। —ए० व० ६५८५

(२) (क) श्लोक स० लगभग ११५, अपूर्ण। (ख) इसमे विविध यन्त्र उल्लिखित है। (ग) इसमे रामयन्त्र, श्यामायन्त्र, कृष्णयन्त्र, प्रसवयन्त्र, गोपालयन्त्र, बगलामुखीयन्त्र, श्मशानकालीयन्त्र, भुवनेश्वरीयन्त्र एव अन्नपूर्णा, बटुकभैरव, गुह्यकाली, तारा, वागीश्वरी तथा गणेश के यन्त्र उल्लिखित है।

—स० वि० (क) २४१३७, (ख) २४९८३, (ग) २५७६६

यन्त्रशोधनविधि

लि०—इसमे यन्त्रशोधन की विधि, यन्त्रशोधनप्रयोग तथा शेष विषय यन्त्रसंस्कार नामक पुस्तक मे प्रतिपादित विषयो के तुल्य है। —ए० व० ६५९१

यन्त्रसंस्कार

लि०—(१) इसमे यन्त्रसस्कार के सम्बन्ध मे तान्त्रिक प्रमाण तथा प्रयोग दोनो प्रतिपादित है। —ए० व० ६५९०

(२) श्लोक स० लगभग २५, अपूर्ण। —स० वि० २४३७२

यन्त्रसंस्कारपद्धति

लि०—कामेश्वरतन्त्रान्तर्गत, अपूर्ण। —र० म० ४७५८

यन्त्रसार

लि०—इसकी श्लोक स० ३८०० है। इसमे वैदिक और तान्त्रिक विविध यन्त्रो के निर्माण का प्रकार प्रदर्शित है। —ट्रि० कै० १०२१

यन्त्रावली

लि०—श्लोक स० ५००। इसमे यन्त्रो के निर्माण का प्रकार और यन्त्र दोनो का प्रतिपादन है। —अ० व० ७६७९

यन्त्रोद्धार

लि०—श्लोक स० लगभग २५, अपूर्ण। —स० वि० २४१३९

यन्त्रोद्धारपटल

लि०—सुदर्शनसहितान्तर्गत, श्लोक स० लगभग १४०, अपूर्ण।

—स० वि० २५४०४

यामलतन्त्र

उ०—कुलप्रदीप, श्यामारहस्य, तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव तथा तारा-भक्तिसुधार्णव मे।

यामलाष्टकतन्त्र

(१) अर्थरत्नावली के अनुसार ८ आठ यामलो के नाम—१ ब्रह्मयामल, विष्णुयामल रुद्रयामल, लक्ष्मीयामल, उमायामल, स्कन्दयामल, गणेशयामल और जयद्रथयामल। द्रष्टव्य—सेतुबन्ध।

लि०—(१) श्लोक स० ४२००। —अ० व० १३७६५

(२) पार्वती-परमेश्वर सवादरूप, (क) प्रारभिक पटल यो है—महासिद्ध ध्यान, पार्वतीप्रश्न, यामलसृष्टि, विश्वसृष्टि, विष्णुसृष्टि, ब्रह्मसृष्टि, जगत् के आयु काल की क्लृप्ति, चतुर्दशानन्द सभूत यमलस्वरूप आदि। (ख) पटल १ से १०० तक। (ग) पटल १ से ११० तक।

—तं. कै (क) १२३२२, (ख) ९३३५, (ग) ९३३६

रुद्रयामल, स्कन्द०, ब्रह्म०, विष्णु०, यम०, वायु०, कुवेर०, इन्द्र० (ब्रह्मयामल के अनुसार ये ८ यामल विद्यापीठ के अन्तर्गत है।) द्रष्टव्य, वागची का Studies in Tantric Literature

यामलोद्धार

उ०—आगमकल्पलता मे।

युद्धजयार्णवतन्त्र

लि०—(१) भट्टोत्पल विरचित इसमे १० पटल है जिनमे स्वरोदय का प्रतिपादन है। यद्यपि यह शिव-पार्वती सवादरूप है, तथापि शिवप्रसाद से प्राप्त इसे भट्टोत्पल ने भूलोक मे अवतारित किया, इसीलिए यह भट्टोत्पल विरचित कहा गया है।

—ए० व० ६१०९

(२) पत्रे स० ८१ मे उक्त युद्धजयार्णव मे १० पटल है। यह स्वरोदयसम्बन्धी है। इ० आ० न० १०८०।८१ से यह पूरा मिलता है, किन्तु पे० न० १ मे उक्त युद्धजयार्णव भिन्न विषय का तान्त्रिक ग्रन्थ प्रतीत होता है। सभवत इसमे पूजा तथा अन्य तान्त्रिक विषय वर्णित हो। इसमे कितने पटल है इसका भी ठीक पता नही चलता।

—ने० द० १।७२ और १।१६३४ (छ)

(३) शिव-पार्वती सवादरूप होने पर भी पूर्वोक्त न्याय से यह भट्टोत्पल विरचित कहा गया है। इसमे १० पटल है। —ने० द० २।३६० (ख)

योगकल्पलतिका

लि०—श्रीकृष्णदेव विरचित। यह ग्रन्थ योगविषयक प्रतीत होता है। इसमे योग का लक्षण यो किया है—'ऐक्य जीवात्मनोराहुर्योग योगविशारदा।' अर्थात् योग मे निष्णात पुरुष जीवात्मा और परमात्मा की एकता (अभेद) को योग कहते है।

—ए० व० ६६०३

योगगुह्य

लि०—यह कण्ठनाथ द्वारा स्वर्ग से भूमि मे अवतारित है। इसमे तान्त्रिक योग की शिक्षा दी गयी है। —ने० द० १।२२६ (छ)

योगजागम

दश (१०) शिवागमो मे अन्यतम।

उ०—वीरशैवानन्दचन्द्रिका मे।

योगज्ञान

लि०—श्लोक स० लगभग ५०, पूर्ण। लिपिकाल वगसवत् ११७४। इसमे पञ्चतत्त्व लय-प्रकार वर्णित है। —स० वि० २६२५३

योगतारावली

लि०—श्रीशङ्कराचर्य कृत, श्लोक स० २९, पूर्ण। इसमे विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाओ का प्रभाव वर्णित है। यह शङ्करग्रन्थावली मे वाणीविलास प्रेस श्रीरगम् से प्रकाशित हो चुका है। —ए० व० ६८०७

योगपीठ

लि०—इसमे कुलालिका पर आरूढ होने के लिए क्रम का प्रतिपादन है।

—ने० द० १।१४७३ (घ)

योगबीज

लि०—(१) शिव-पार्वती सवादरूप। यह नाथसम्प्रदायानुसारी योग का प्रतिपादन करता है। —ए० व० ६११६

(२) श्लोक स० लगभग १५०, पूर्ण। —स० वि० २३९९७

योगरत्नमाला (सटीक)

लि०—मूलकार नागार्जुन, टीकाकार गुणाकर।

(क) श्लोक स० ४८०। (ख) श्लोक स० ४८०।

—अ० व० (क) १४१३, (ख) ८३०३

योगरत्नावली

लि०—(१) श्रीकण्ठ शम्भु विरचित। इसमे १० परिच्छेद है। प्रारम्भिक दो परि-

च्छेदो मे वहुत-सी ऐन्द्रजालिक क्रियाएँ वर्णित है। ३ य मे त्रिपुरानित्यार्चनविधि तथा ४ र्थ परिच्छेद मे अभिषेकविधि आदि विषय वर्णित है। —ए० व० ६६०१

(२) श्रीकण्ठ शिवाचार्य विरचित (क) श्लोक स० ३७००। (ख) श्लोक स० ३५० (४ र्थ परिच्छेद मात्र)। (ग) श्लोक स० ३७००।

—अ० व० (क) ६१८, (ख) ३५३६, (ग) ५७८९

(३) श्रीकण्ठ शम्भु कृत। ३ य परिच्छेद पर्यन्त, पूर्ण। —र० म० ३२९४ (क)

(४) श्लोक स० लगभग १७००, अपूर्ण। —स० वि० २३९६५

योगशास्त्र

दत्तात्रेय विरचित।

उ०—आनन्दलहरी की टीका तत्त्वबोधिनी मे।

योगसंचार

उ०—अभिनवगुप्त कृत तन्त्रसार मे।

योगसागर

लि०—शुक्र-भृगु सवादरूप। इसमे मुख्य रूप से ५० योगो का वर्णन है। भवयोग, सौम्ययोग, यातुवान्ययोग, भीष्मयोग, जीमूतयोग, जययोग आदि योगो और उनके फलो का भी प्रतिपादन किया गया है। —ए० व० ६११४

योगसार (१)

लि०—शिव-पार्वती सवादरूप। इसमे ११ परिच्छेद है। उनमे योगियो द्वारा सम्पादनीय वहुत-सी विधियाँ वर्णित है। शरीरस्थित षट्चक्र दर्शनोद्दीपन, मूलाधार-स्थित देवता आदि का कथन, वाणलिङ्गोपाख्यान, हृदयकमल के ध्यान, पूजन आदि विविध विषय वर्णित है। —ए० व० ६११५

योगसार (२)

लि०—श्री लक्ष्मण ज्योतिर्वित्पुत्र हरिशङ्कर विरचित। इसके १म अध्याय मे गुरु के महत्त्व का वर्णन और २य मे कुम्भक का वर्णन है।

—ए० व० ६५९९

योगसार (३)

लि०—गङ्गानन्द विरचित। इसमे योग का मुख्य सिद्धान्त वर्णित है।

—ए० व० ६६२१

योगसार (४)

लि०—शिव-पार्वती सवादरूप। इसमे नौ परिच्छेद है। विषय—शिवजी के प्रति देवी का ब्रह्मस्वरूप कथन, ब्रह्म की योगगम्यता कथन, नीरोग का ही योग मे अधिकार है यह प्रतिपादन करते हुए व्याधियो के विनाश का उपाय कथन, तृष्णानाश का उपाय, अनाहारीकरण का उपाय, मल-मूत्रविनाशन का उपाय, शुक्रस्तभन का उपाय, आलस्यशमन का उपाय, निद्रानिवृत्ति का उपाय, इन्द्रियो के निग्रह का उपाय, मन्त्रसिद्धि कथन, इष्ट विद्याओ के मन्त्र कथन, पुरश्चरणविधि, भक्ष्य, अभक्ष्य, आसन आदि का निरूपण, जपमाला का निरूपण, जप की गणना के लिए निषिद्ध द्रव्यो का निर्देश, वर्णमाला कथन, त्रिविध योग का निरूपण, शरीरस्थ चक्रो का निरूपण, षट्चक्र के देवताओ के ध्यान, पूजा आदि की विधि इत्यादि प्रतिपादित है। —नो० स० १।३०१

उ०—प्राणतोषिणी तथा पुरश्चर्यार्णव मे।

योगसारतन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० ४५०, पटल स० १४। —अ० व० १०२६३

(२) ४ र्थ परिच्छेद से लेकर १४ वें परिच्छेद पर्यन्त, अपूर्ण। —व० प० १३१३

योगसारसमुच्चय

लि०—(१) इसका अकुलागममहातन्त्र भी नामान्तर है। यह शिव-पार्वती सवादरूप है। इसमे १० पटल हैं। पार्वतीजी ने साङ्ख्ययोग तथा अकुलागम के साधको के कर्तव्य के विषय मे जो-जो प्रश्न किये भगवान् शिवजी ने उनका इसमे उत्तर दिया है।

—इ० आ० २५६५

(२) अकुलागममहातन्त्र से गृहीत, ९ म पटल पर्यन्त।

—डे० का० ३९६, (१८८२–८३ ई०)

(३) अकुलागमतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० ३९०, पूर्ण। —स० वि० २५६५०

योगसिद्धान्त

लि०—विष्णु-शिव सवादरूप। श्लोक स०१८०, पूर्ण। —ए० व० ६१२३

योगसिद्धान्तमञ्जरी

लि०—भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथ विरचित। श्लोक स० १५०, पूर्ण। इसमे योग का प्रतिपादन है।

यथा —शिवशम्म्वात्मक ज्ञान जगुरागमवेदिन ।

योगाध्याय

लि०—भूपति समारचन्द्र विरचित। भाषा टीका सहित, अपूर्ण। —र० म० ४९९६

योगार्णव (१)

लि०—(१) हरिशङ्कर विरचित। नाना मतो मे विभूषित विविध शास्त्रो का गभीर अध्ययन कर ग्रन्थकार ने इस योगार्णव नामक ज्ञानमार्ग का काशीराज के प्रबोधार्थ निर्माण किया। —ए० व० ६६००

उ०—प्राणतोषिणी मे।

योगार्णव (२)

नामान्तर—योगसारसग्रह ।

लि०—दामोदराचार्य विरचित, श्लोक स० ३३०। —म० वि० २५६५१

योगावलीतन्त्र

लि०—(१) महादेव प्रोक्त। इसमे स्त्री, पुरुष और नपुसक के जन्म मे कारण, शरीरो मे मास, हड्डी आदि की उत्पत्ति का काल, देहस्थित वायु आदि का निरूपण, नाडियो का निरूपण, नाडी आदि की स्थिति का निरूपण, वायु, नाडी आदि के निरोध आदि से चिन्तन का उपाय कथन। —नो० स० १।३०३

(२) श्लोक स० २७२, पटल स० ५। हर-गौरी सवादरूप इस तन्त्र मे देहोत्पत्ति आदि का निर्वचन करते हुए योग आदि का निरूपण किया गया है। —रा० ला० २५९

योगिनाथ (ग्रन्थकर्त्ता ?)

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

योगिनीचक्रपूजन

लि०—श्लोक स० २००। —डे० का० (१८८३-८४ ई० का सग्रह)

योगिनीजालशंबर

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी मे।

योगिनीतन्त्र (१)

लि०—(१) देवी-ईश्वर सवादरूप। इसमे १म और २ य दो भाग हैं। १म भाग मे १९ पटल है। २य भाग का नाम कामरूपनिर्णय है। उसमे १४ पटल हैं। २य भाग मे ४ पीठो का विवरण भी दिया हुआ है। इससे ज्ञात होता है कि उड्यान पीठ का आविर्भाव सत्ययुग मे, पूर्णशैल का त्रेता मे, जालन्धर का द्वापर मे तथा कामरूप या कामाख्या का आविर्भाव कलियुग मे हुआ। —इ० आ० २५५५

(२) कलकत्ता और वम्वई मे १८८७ ई० मे इसका मुद्रण हो चुका है।

—ए० व० ६०१९

(३) योगिनीतन्त्र, २य भाग, श्लोक स० ३५१०, पटल स० ९। इसमे प्रतिपादित विषय—योगिनीतन्त्र का माहात्म्य आदि कथन, काली का रूप वर्णन, गुरु-माहात्म्य, दीक्षाविधि, पूजा, जप आदि के काल आदि का कथन, काली, तारा आदि विद्याओ का अभेद कथन, दिव्य, वीर आदि भावो का निरूपण। —रा० ला० २२१३

(४) कामरूपाधिकार या कामरूपनिर्णय। शिव-पार्वती सवादरूप। योगिनीतन्त्र दो भागो मे विभक्त है, यह पहले कहा जा चुका है। इसके १म भाग मे १९ पटल हैं और २ य भाग का नाम कामरूपाधिकार या कामरूपनिर्णय है। यह १४ पटलो मे पूर्ण है। इसका भी पूर्व मे निरूपण हो चुका है। इस प्रति मे उक्त २ य भाग का ही कुछ अश है।

—क० का० ७०

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुषष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है।

(५) (क) श्लोक स० लगभग १४७२, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ३७८, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० लगभग ११२, काशीमाहात्म्यमात्र, पूर्ण। (घ) श्लोक स० ८८, सोलहवाँ पटलमात्र। (ङ) श्लोक स० १६५०, पूर्वार्द्ध १ से १९ पटल तक पूर्ण। (च) द्वितीय भाग मे नवम पटल मात्र, श्लोक स० लगभग ५५, अपूर्ण। (छ) केवल १६ वाँ पटल मात्र श्लोक स० लगभग ६५, अपूर्ण। (ज) केवल १६ वाँ पटल पूर्ण, श्लोक स० ८८। (झ) श्लोक स० ७७, सोलहवाँ पटल मात्र, पूर्ण। (ञ) श्लोक स० १७०, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २४४६१, (ख) २४८९०, (ग) २४९१२, (घ) २५०२९,

(ङ) २५६५२, (च) २५८८१, (छ) २५९८४, (ज) २५९९१, (झ) २६११७, (ञ) २६३४३

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, प्राणतोषिणी, ताराभक्तिसुधार्णव, आगमकल्पलता, ललितार्चनचन्द्रिका, तत्त्वबोधिनी (आनन्दलहरी की टीका), कालिकासपर्याविधि तथा सर्वोल्लास मे।

योगिनीतन्त्र (२)

लि०—श्लोक स० २८०० और पटल स० १०। —अ० व० १०२५९

योगिनीदशा

लि०—रुद्रयामल से गृहीत, श्लोक स० १८७। —अ० व० ९३५७

योगिनीदशाविभाग

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक स० लगभग ५००, अपूर्ण। —स० वि० २४३३६

योगिनीन्यास

लि०—श्लोक स० लगभग २००, अपूर्ण। इसमे सौभाग्यविद्येश्वरी-महामन्त्र तथा महाषोढान्यास आदि भी सनिविष्ट है। —स० वि० २५८५९

योगिनीपूजा

लि०—श्लोक स० १००, पूर्ण। इसमे चौसठ योगिनियो की पूजाविधि, महाबलि आदि का वर्णन है। —ए० ब० ६४४८, ६४४९

योगिनीभैरव

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी मे।

योगिनीमत

उ०—तन्त्ररत्न मे।

योगिनीमन्त्रयन्त्रादि

लि०—श्लोक स० लगभग ५०, चतुःषष्टि योगिनियो के नाम भी इसमे सनिविष्ट है। —स० वि० २५६१०

योगिनीविजय या योगिनीविजयस्तवराज

लि०—(१) देवदेव भैरव प्रोक्त। यह स्तव भोग और मोक्ष दोनो का देने वाला है। पिप्पलाद मुनि ने इसे भूमि पर उतारा। —ए० ब० ६७२९

(२) ब्रह्मयामलान्तर्गत, शेष पूर्ववत्। —ने० द० १।१५४२

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतु षष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है।

योगिनीसाधन

लि०—भूतडामरतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० लगभग ६०, पूर्ण।

—स० वि० २५७५५

योगिनीसाधनाप्रयोग

लि०—श्लोक स० लगभग ११५, पूर्ण। —स० वि० २४८५२

योगिनीहृदय (सटीक)

लि०—(१) व्याख्या दीपिका के रचयिता पुण्यानन्दनाथ-शिष्य अमृतानन्द। (क) श्लोक स० २७०० अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ३०००। (ग) श्लो० स० ३०००। (घ) श्लोक स० ३०००।

—अ० व० (क) ३४९०, (ख) ५७९३, (ग) १०६९६, (घ) १०८५५

(२) योगिनीहृदय मूल मात्र। देवी-शङ्कर सवादरूप, श्लोक स० ५००, पटल स० ६। उनके विषय ये हैं—१ श्रीचक्रसकेत, २ मन्त्रसकेत, ३ पूजासकेत, ४ मन्त्रोद्धार, ५ दीक्षाकालनिर्णय आदि तथा ६ वीरसाधना। —रा० ला० २८२

(३) ईश्वर प्रोक्त, पूर्ण। —ज० का० १०७१

(४) देवी-शङ्कर सवादरूप। वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत यह ग्रन्थ त्रिपुरा देवी के चक्र-सकेत, मन्त्रसकेत और पूजासकेत से युक्त तीन उपदेशो मे समाप्त है। मनुष्य जब तक पूर्वोक्त सकेतो का ज्ञान प्राप्त नही करता तब तक त्रिपुराचक्र मे परमाज्ञाधर नही हो सकता। —म० द० ५७०२

(५) श्लोक स० लगभग ३०६, अपूर्ण। —स० वि० २४०४४

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी, ललितार्चनचन्द्रिका, महार्थमञ्जरी-परिमल तथा ताराभक्तिसुधार्णव मे।

योगिनीहृदयतन्त्र

लि०—श्लोक स० लगभग १००, केवल सृष्टिसंकेत तथा पूजासकेत नाम के २य और ३ य दो पटल। —मं० वि० २५९८५

योगिनीहृदयदीपिका

लि०—(१) यह योगिनीहृदय की अमृतानन्दनाथ रचित दीपिका टीका है।
—ए० वं० ५९४६

(२) पुण्यानन्दनाथ-शिष्य अमृतानन्द रचित, श्लोक स० १०००।
—अ० व० ५७२९

(३) इसमे योगिनी-हृदय की तात्पर्यविवृत्ति है। यह १५०० श्लोकात्मक है।
—रा० ला० २८३

(४) योगिनीहृदय पर योगीन्द्र पुण्यानन्द-शिष्य अमृतानन्द योगिप्रवर कृत दीपिका टीका है, ३ य सकेतपर्यन्त। —क० का० ७२

(५) योगिनीहृदय पर अमृतानन्द कृत व्याख्या दीपिका नाम की है।
—बी० कैं० १३७२

(५) योगिनीहृदय, जो वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत और देवी-शकर सवादरूप है, पर पुण्यानन्दनाथ-शिष्य अमृतानन्दनाथ योगिप्रवर रचित दीपिका टीका है। इस टीका के निर्माता अमृतानन्दनाथ ही हैं, न कि पुण्यानन्दनाथ। निम्नलिखित मूल ग्रन्थस्थ श्लोक इसमे प्रमाण है—

तदनेकार्थसन्दर्भान्नानासंकेतसकुलम्।
विवृणोत्यमृतानन्द शिवयोरेव शासनात्॥

—म० द० ५७०८, ५७०९

(७) यह अमृतानन्द योगिप्रवर कृत दीपिका टीका २य सकेत तक पूर्ण है।
—र० म० ४९००

(८) आनन्दनाथ (?) योगिप्रवर कृत, पूर्ण।
—डे० का० ३९७ (१८८२-८३ ई०)

(९) योगिनीहृदय की दीपिका व्याख्या पुण्यानन्दनाथ योगिप्रवर कृत है।
[उपर्युक्त श्लोकानुसार यह लिखना भ्रान्तिमूलक ही प्रतीत होता है]।
—म० द० ५७०३ से ५७०७ तक

(१०) (क) अमृतानन्दनाथ विरचित, श्लोक स० लगभग १२३०, अपूर्ण। लिपिकाल १७१२ वि०। (ख) अमृतानन्दनाथ विरचित, श्लोक सं० लगभग १४००, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४९६६, (ख) २५०९९

योगिन्यादिपूजनविधि

लि०—श्लोक स० लगभग ३६०।

—डे० का० २४६ (१८८३–८४ ई०)

योगेशीसहस्रनामस्तोत्र

लि०—रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत विष्णु-हर सवादरूप यह २०० श्लोकात्मक है। इसमे योगेशी देवी का महस्रनामस्तोत्र तथा उसका पाठ करने का फल वर्णित है।

—रा० ला० ८७८

योनिकवच

लि०—(१) उमा-महेश्वर सवादरूप यह नीलतन्त्र के अन्तर्गत है और 'त्रैलोक्य-विजय' नाम से प्रसिद्ध है। इसके प्रारभ मे कुलचूडामणितन्त्रान्तर्गत लघुयोनिस्तव है।

—ए० व० ६७३५

(२) पुरश्चरणरसोल्लास मे योनिमुद्राप्रकरण के साथ सन्निविष्ट।

—स० वि० २६४७६

योनिगह्वरतन्त्र

लि०—यह श्री ज्ञाननेत्र द्वारा भूलोक मे प्रकाशित हुआ। देवी-महादेव सवादरूप यह नाथसम्प्रदाय से सबद्ध प्रतीत होता है। नाथसम्प्रदाय का गुरु-क्रम भी इसमे वर्णित है। यह उत्तराम्नाय का १६००० श्लोकात्मक तन्त्र है। —ए० व० ५९०३

योनितन्त्र

लि०—(१) इसमे ८ अध्याय (पटल ?) है। —ए० व० ५८९९

(२) हर-पार्वती सवादरूप इसमे १७ पटल है। योनिपूजा-प्रशसा, पूज्य और अपूज्य योनियो का विचार, अक्षतयोनि के पूजन मे दोप, पञ्चतत्त्व-विधि, कौलो मे उत्तम, मध्यम आदि का भेद कथन, योनि मे महाविद्या की उपासनाविधि, तत्त्व से तिलकविधि, तत्त्व से

पूजा की विधि, वीरसाधनविधि, आसन की उपासना, अन्तर्याग, मन्त्रराज आदि की विधि, कालीको प्रसन्न करनेवाले उपचार आदि, वीरपुरश्चरणविधि, पञ्चतत्त्वशोधनविधि, पूजा स्थान आदि का निरूपण, साधनविधि आदि विषय वर्णित है।

—नो० स० ११३०४

(३) श्लोक स० १९०, पूर्ण। —र० म० ४९८१ (क)

(४) हर-पार्वती सवादरूप, श्लोक स० ३०५, इसमे ८ ही पटल है। विषय—योनिपीठ की प्रधानता, हरिहर आदि का योनि से सभव (जन्म) कथन, शक्ति-मन्त्र की उपासना कर योनिपूजा न करने मे दोष, दिव्यभाव और वीरभाव की प्रशसा, योनिपूजाविधि, रजकी, नापिताङ्गना आदि ९ कन्याओ का कथन, योनिपूजा के स्थान, काल और नैवेद्य, योनिपूजा का फल कथन, राम, कृष्ण आदि की योनि-उपासकता, वैदिक, वैष्णव, शैव, दक्षिण और वाम सिद्धान्त की कौल शास्त्रो मे उत्तरोत्तर प्रधानता। श्राद्ध मे कौलिको को भोजन कराने का फल, योनिदर्शन का माहात्म्य, योनितत्त्व की प्रशसा, वीरसाधन-विधान, वीरसाधनकाल मे नायिका की उर्वशी तुल्यता, कलियुग मे योनिपूजन ही श्रेयस्कर है। —रा० ला० ३१८५

(५) आरभ से ८ वे पटल तक, पूर्ण। —व० प० १३८८

उ०—मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी, सर्वोल्लास तथा कालिकासपर्याविधि मे।

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतु षष्टि (६४) तन्त्रो मे अन्यतम है।

(६) (क) श्लोक स० लगभग १७५, १ से ६ पटल तक, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० लगभग ११२, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० लगभग २३०, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४७१२, (ख) २४९०९, (ग) २६०२९

योनिमन्त्रचिन्तामणितन्त्र

लि०—देवी-ईश्वर सवादरूप इसमे केवल १ ही पटल है। इसमे योनिपूजा वर्णित है। योनिकवच भी इसमे वर्णित है। —ए० व० ६०४६

योनिमुद्रा

लि०—(क) श्लोक स० लगभग ९०, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० लगभग १४४। बिल्वमूलसाधन भी इसमे सनिविष्ट है। (ग) श्लोक स० १२०, पूर्ण। इसमे षट्चक्र-निर्णय तथा अभिलाषाष्टक भी सनिविष्ट है।

—स० वि० (क) २४०६९, (ख) २४८५५, (ग) २५०२८

योनिमुद्राकवच

लि०—चैतन्यप्रकाश से गृहीत। श्लोक स० ३५। —अ० व० १२२८२ (ख)

योनिमुद्राप्रकरण

लि०—पुरश्चरणरसोल्लास ग्रन्थ मे सनिविष्ट। —स० वि० २६४७६

योनिस्तव

लि०—कुलचूडामणितन्त्रान्तर्गत। यह स्तोत्र मुद्रित कुलचूडामणितन्त्रं मे उपलब्ध नही होता है। —ए० व० ५८२९

रकारादिरामसहस्रनाम

लि०—(१) श्रीब्रह्मयामल से गृहीत। उमा-महेश्वर सवादरूप। इसमे श्रीराम-चन्द्रजी के रकारादि सहस्र नाम प्रतिपादित है। —नो० स० ३।२४३

(२) ब्रह्मयामलान्तर्गत, उमा-महेश्वर सवादरूप। विशेष विवरण देखे Oxford (आक्सफोर्ड) न० १५२ मे। —ए० व० ६७६९

रक्तचामुण्डामन्त्रविधि

लि०—(क) श्लोक स० १२, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० २१, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २५७१९, (ख) २६५६८

रक्तागम

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चतु षष्टि (६४) आगमो मे अन्यतम है।

रघुनाथप्रतिष्ठाविधि

लि०—श्लोक स० ३०। —अ० व० ४०४५

रजस्वलामन्त्रोद्धार

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत कालीतन्त्रस्थ। श्लोक स० लगभग ४०, अपूर्ण।

—स० वि० २५०६०

रजस्वलास्तोत्र

लि०—(१) रुद्रयामल के अन्तर्गत, उमा-महेश्वर सवादरूप।

—ए० व० ६७३२

(२) कालीप्रस्तार से गृहीत, श्लोक स० १७। —अ० व० ८४९५ (ख)
(३) पूर्ण। —रा० पु० ९६ (ख)
(४) कुलचूडामणि के अन्तर्गत, पूर्ण। —त्र० प० २२३

रतिशेखर आगम

उ०—परात्रिंशिका-टीका मे।

रत्नकोश

लि०—नृसिहपुरी परिव्राजक विरचित। श्लोक स० ३५००, अपूर्ण।
—डे० का० (१८७९–८० ई०)

रत्नत्रय

रामकण्ठ श्रीकण्ठ कृत।

रत्नदेव

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल तथा महामोक्षतन्त्र मे।

रत्नपञ्चकावतार

लि०—देवी-भैरव सवादरूप यह एक मौलिक तन्त्र है। इसमे देवी (कुब्जिका) और भैरव सवादक है एव पाँच रत्नो— कुल, अकुल, कौल, कुलाष्टक तथा कुल-पट्क—का वर्णन है। इसकी श्लोक स० १२००० और पटल स० ११ है। यह रत्न-पञ्चकावतार-श्रीमत्सहिता का सार से भी सार अंश है। इसके मुख्य वर्ण्य विपय पूर्वोक्त पाँच रत्न, पूजा और मन्त्र है। उन्ही का स्पष्टीकरण इसमे किया गया है।
—ने द. १।१५५२

रत्नपरीक्षा तथा मणिपरीक्षा

लि०—इसमे रत्न और मणियो के लक्षण, धारण मे शुभाशुभ फलदान आदि विषय वर्णित हैं। —इ० आ० २६१८

रत्नमाला

लि०—इसमे स्तुति के व्याज से भगवती के रूप, गुण, माहात्म्य आदि का वर्णन किया गया है। —नो० स० १।३०६

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल, तत्त्वबोधिनी आनन्दलहरी-टीका मे।

रत्नावली

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे।

रश्मिप्रकरण

लि०—श्लोक स० लगभग १९०, अपूर्ण। —स० वि० २४५१०

रश्मिमालामन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० ९०। —अ० व० ५६८२

(२) यह गायत्री आदि मन्त्रो का सग्रहरूप तन्त्रनिवन्ध है। इसमे ध्यान, मुद्रा आदि के साथ विविध मन्त्रो का निर्देश है। —क० का० ७३

(३) श्लोक स० लगभग १००, पूर्ण। —स० वि० २४३३९

रसकर्ममञ्जरी

लि०—राजाराम तर्कवागीश विरचित। इसमे मारण, मोहन, उच्चाटन, विद्वेषण, स्तमन आदि षट् कर्मो की काल आदि के नियम से सामान्य विधि, त्र्यम्बकादि प्रयोग तथा शान्तिविधि वर्णित है। इसमे सभवत ३ पटल है। —नो० स० ३।२४५

रसकल्प

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, उमा-महेश्वर सवादरूप। इसमे पारद से विविध रसो के निर्माण का प्रतिपादन है। रसशोधन, रसमारण, सत्त्वपातन तथा सर्वलौह द्रुति-पातन आदि विषय इसमे वर्णित है। —ए० व० ५८७१

(२) रुद्रयामल के अन्तर्गत, पूर्ण। —व० प० १०८३

रसरत्नाकर

लि०—(१) पार्वती और शखगुप्त के पुत्र नित्यनाथ सिद्ध विरचित यह ग्रन्थ ५ खण्डो मे पूर्ण है। वे है—रसखण्ड, रसेन्द्रखण्ड, सिद्धखण्ड आदि। इसमे मारण, मोहन, स्तभन, उच्चाटन, वशीकरण आदि छह तान्त्रिक कर्म (षट्कर्म) वर्णित है।

—ए० व० ६५४६, ६५४९

(२) मन्त्रखण्ड मात्र, नित्यनाथ कृत, श्लोक स० १८००। लिपिकाल सवत् १७४३ वि०। —डे० का० (१८८०–८१ ई०)

(३) रुद्रयामल से गृहीत, श्लोक स० ५७८।

—इ० का० २४८ (१८८३-८४ ई०)

(४) श्लोक स० लगभग २७५, पूर्ण। —स० वि० २६७०५

रसवतीशत

लि०—धरणीधर विरचित। शक्तिरूप रसवती के प्रति इसमे ११९ श्लोक कहे गये है। —इ० आ० २६२६

रसहृदय (तन्त्र) सटीक

लि०—(१) चन्द्रवशी हैहयकुल के श्रीमदन (किरातदेशाधिपति) के लिए भिक्षु गोविन्द विरचित। टीकाकार—महेशमिश्र-पुत्र चतुर्भुज। इसमे १९ अववोध है।

—इ० आ० २६१७

(२) श्री गोविन्द भगवच्छ्रीपाद विरचित, श्लोक स० ६७५, पूर्ण। यह १८ पटलो मे पूर्ण है। इसमे पारद की अपूर्व महिमा वर्णित है—पारद मूर्च्छित होकर रोग हरता है, वन्धन का अनुभव कर मुक्ति देता है और मर कर अमर कर देता है। पारद से वढकर करुणासिन्धु दूसरा कौन है इत्यादि। इसमे रसायनविधि वर्णित है।

—ट्रि० कै० १०१९ (ग)

रसाङ्कुश

लि०—रहस्यसहिता के अन्तर्गत देवी-ईश्वर सवादरूप इस तन्त्र का मुख्य प्रतिपाद्य विषय रसायनविधि है। इसमे सुवर्ण वनाने की विधि वर्णित है। यह छह पटलो मे पूर्ण है। —ट्रि० कै० १०१९ (ख)

रसान्वय

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

रसाम्नाय

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से

रसार्णवकल्प

लि०—रुद्रयामल के अन्तर्गत। इसमे शिवपूजा तथा पारद के विविध रासायनिक निर्माणो का प्रतिपादन है। इसमे कोई विभाग, परिच्छेद या अध्याय नही है। कलकत्ते मे प्रकाशित रसार्णव से इसका कुछ भी मेल नही मिलता। —ए० व० ५८७०

रसोपनिषद्

लि०—श्लोक स० ४००। इसमे रसोपनिषद् शास्त्र की शिष्य-परम्परा प्रतिपादन पूर्वक रसायनविधि वर्णित है। इसके २५ विरतियो (अध्यायो) मे विभक्त होने की बात अन्तिम पुष्पिका से ज्ञात होती है। —ट्रि० कै० १०१९ (घ)

रहस्यकल्लोलिनी

इसका उल्लेख पुष्पमाहात्म्य नामक पुस्तक मे 'पुष्परहस्य रहस्यकल्लोलिन्याम्, रहस्यकल्लोलिन्या पुष्परहस्यम्' इत्यादि रूप मे किया गया है। —इ० आ० २६१४

रहस्यतन्त्र

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची मे।

रहस्यनाम

उ०—सौभाग्यभास्कर मे।

रहस्यनामसहस्रविवृति

लि०—वुद्धिराज विरचित। श्लोक स० लगभग ३००, पूर्ण।

—स० वि० २५९७४

रहस्यपुरश्चरणविधि

लि०—स्वतन्त्रतन्त्रान्तर्गत। श्लोक स० लगभग ८८, पूर्ण। लिपिकाल १७१८ शकसवत्सर। —स० वि० २६४६७

रहस्यप्रकाश

लि०—११ पटल पर्यन्त। पूर्ण। —त्र० प० १३७९

रहस्यमाला

उ०—तारारहस्यवृत्ति मे।

रहस्यशास्त्र

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

रहस्यसिद्धिसोपान

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका सौभाग्यवर्धिनी मे।

रहस्यस्तोत्र

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

रहस्यातिरहस्यपुरश्चरण

लि०—श्लोक स० १००। इसमे श्मशान आदि मे विशिष्ट पुरश्चरण की विधि प्रतिपादित है। —रा० ला० ३५५

रहस्याम्नाय

उ०—चिद्वल्ली मे।

रहस्यार्णव

लि०—(१) त्रिगर्त (लाहोर) देशाधिपति जयचन्द नरेन्द्र की प्रेरणा से हृदयानन्द-शिष्य वनमाली विरचित। इसमे १५ पटल है। उनमे निम्नलिखित विषय प्रतिपादित है—गुरु-क्रमविधान (गुरु-निर्णय), त्रिविध भाव का निर्णय, कुमारी-पूजन (कुमारिका-कल्प), कुलाचार (समयाचार), पीठपूजाविधि, निशीथपूजापद्धति, पाण्डव-महापूजा-पद्धति, द्रौपदी-सस्कार, पुरश्चर्याक्रम, चित्राडीपटल, बलिदानविधि, विभूति-धारण-विधि, अन्तर्यागविधि, योगवर्णन, रहस्योक्त द्रव्यशोधनविधान आदि। विविध तन्त्रो का अवलोकन कर यह ग्रन्थ सगृहीत किया गया है। —इ० आ० २५८१

(२) १५ पटल तक, अपूर्ण। —व० प० १४०८

रहस्योच्छिष्ट सुमुखीकल्प

लि०—शिव-पार्वती सवादरूप। इसमे पहले उच्छिष्ट गणपति-मन्त्र के ऋषि, छन्द, देवता, बीज और शक्ति वर्णित हैं। इसी प्रकार अन्यान्य देव-देवियो के भी मन्त्रो के ऋषि, छन्द, देवता आदि कहे गये होगे। इसके अन्त मे लिखा है कि इसके विधान से साधको के सब कार्य सदा सिद्ध होते है तथा दीर्घ आयु प्राप्त होती है। किसी-किसी ने इसे "रहस्यो-च्छिष्ट गणपतिकल्प" पढा है। —बी० कै० १२७८

राजकल्पद्रुम

लि०—राजेन्द्र विक्रमदेव शाह विरचित। यह ग्रन्थ १४ पटलो मे पूर्ण है। इसमे प्रतिपादित विषय है—दीक्षा-प्रयोग, पुरश्चरण-निर्णय, द्वारपूजादि मातृकान्यासान्त, पीठपूजादि लोकपालान्त पूजा कथन, अग्नि का प्रादुर्भाव, हवन, यजुर्वेदविधानोक्त धनुर्वेद-मन्त्र दीक्षा प्रकरण, पूजापटल आदि। —ने० द० १।२३२

राजभैरवसूत्र

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे ।

राजराजेश्वरनित्यदीपविधिक्रम

लि०—हरिराय विरचित । श्लोक स० लगभग २५०, पूर्ण । लिपिकाल १८१८ वि० । शिवपञ्चाक्षरमन्त्रविधि भी इसमे सनिविष्ट है । —स० वि० २६२३८

राजराजेश्वरीकवच

लि०—वामकेश्वरतन्त्र से गृहीत, श्लोक स० ९२ । —अ० व० ८४९६

राजराजेश्वरीतन्त्र

(शाक्ताभिषेक मात्र, दे०,शाक्ताभिषेक ।)

लि०—(१) पूर्ण । —व० प० १३०६

(२) अभिषेकाध्यायमात्र । श्लोक स० लगभग २००, अपूर्ण ।

—स० वि० २४६२२

उ०—आगमतत्त्वविलास मे ।

राजराजेश्वरीपूजाविधि

लि०—(क) श्लोक स० लगभग ४००, अपूर्ण । (ख) श्लोक स० २००, अपूर्ण ।

—स० वि० (क) २४५६१, (ख) २६४५०

राजराजेश्वरीमन्त्रोद्धार

लि०—श्लोक स० २५ । —अ० व० ९९८५ (क)

राजीसाधन

लि०—इसमे सुवर्ण बनाने की विधि वर्णित है । —ए० व० ६५६६

राजेश्वरीतन्त्र

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से ।

राजेश्वरीस्तव

लि०—यह नामसिद्धान्तनिर्णय ग्रन्थ के साथ सनिविष्ट ।

—स० वि० २५६४९

राज्ञीदेवीपञ्चाङ्ग

लि०—(क) श्लोक स० २५२। (ख) श्लोक सं० ५३२।

—डे० का० (क) २४९, (ख) २५० (१८८३-८४ ई०)

राज्ञीनित्यपूजापद्धति

लि०—यह दो भागो मे विभक्त है। १ म भाग मे राज्ञी के उपासक के करणीय स्नान, सन्ध्या, तर्पण आदि प्रात कृत्यो का उल्लेख है और २य भाग मे राज्ञी देवी की पूजाविधि वर्णित है।

—ए० व० ६४०१

राज्ञीपञ्चाङ्ग

लि०—रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० ४९४, पूर्ण। —र० म० ४८४६

रात्रिनिर्णय

लि०—श्लोक स० लगभग २२, अपूर्ण। —स० वि० २५२६४

राधाकृष्ण-अष्टोत्तरशतनाम

लि०—श्रीरासतन्त्रान्तर्गत, पूर्ण। —वं० प० ४६७

राधाकृष्णपञ्चाङ्ग

लि०—विश्वसारतन्त्र के अन्तर्गत, श्लोक स० ४४८, पूर्ण।

—र० म० ४८२३

राधातन्त्र

लि०—(१) कौलसम्प्रदाय से सम्बद्ध यह तन्त्र ३५ पटलो मे पूर्ण है।

—ए० वं० ६७०२

(२) पटल १८ मे ३२ तक, श्लोक स० २५०, अपूर्ण। —अ० व० १०१०८

(३) वासुदेवरहस्य के अन्तर्गत हर-पार्वती सवादरूप, श्लोक स० १२०। इसमे कुलाचारसमत पूजा, जप आदि प्रतिपादित हैं। —रा० ला० ३८३

(४) यह शक्ति के उपासको के पूजन, जप आदि का निरूपण करनेवाला निबन्ध तन्त्र है।

—क० का० ७३

(५) ईश्वर प्रोक्त, पूर्ण। —ज० का० १०७४

(६) (क) श्लोक स० ३७५, अपूर्ण। (ख) वासुदेवरहस्यान्तर्गत। श्लोक स० लगभग २३३० गणना से। अपूर्ण। (ग) श्लोक स० १८७५, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४८७६, (ख) २५९५२, (ग) २६३९१

उ०—कालिकासपर्याविधि तथा सर्वोल्लास मे।

राधासहस्रनाम

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, शिवनारद सवादरूप, श्लोक स० ३१७। इसमे राधा के नाम-माहात्म्य के वर्णन के व्याज से उनके हजार नाम वर्णित हैं।

—रा० ला० ३१२४

राधिकासहस्रनाम

लि०—(१) नारदपञ्चरात्र के अन्तर्गत, पूर्ण। —व० प० ६६०

(२) सनत्कुमारसहिता के अन्तर्गत, पूर्ण। —व० प० २०५

रामकवच या रामत्रैलोक्यमोहनकवच

लि०—(१) ब्रह्मयामलान्तर्गत गौरीतन्त्रोक्त, उमा-महेश्वर सवादरूप। इसका नाम त्रैलोक्यमोहनकवच है। —ए० व० ६७७४

(२) (क) श्लोक स० १००, ब्रह्मयामल से गृहीत।

(ख) श्लोक स० २८, ब्रह्मयामल से गृहीत।

—अ० व० (क) ३५३७ (ख) ५०८३

(३) पूर्ण। —व० प० ४१०

(४) रामकवच वज्रपञ्जर नामक। यह यन्त्रात्मक है। —स० वि० २६३७२

रामचतुरक्षरमन्त्रपद्धति

लि०—श्लोक स० लगभग ६०, पूर्ण। लिपिकाल १८१९ वि०।

—स० वि० २६६०६

रामचन्द्रपूजापद्धति

लि०—(क) श्लोक स० लगभग १३५, खण्डित। (ख) श्लोक स० लगभग १००, पूर्ण। (ग) श्लोक स० लगभग ६२, पूर्ण। प्रतीत होता है ये सब पुस्तके पृथक् पृथक् हैं।

—स० वि० (क) २४९९९, (ख) २५७७१, (ग) २६०९८

रामचन्द्रपूजाविधि

लि०—पूर्ण। —व्र० प० ५०६

रामनामलिखनविधि

लि०—(१) रुद्रयामल के अन्तर्गत। इसमे रामनाम लिखने की विधि तथा इसका फल साङ्गोपाङ्ग वर्णित है। —ए० वं० ५८८६

(२) रुद्रयामल के अन्तर्गत गौरी-ईश्वर सवादरूप। इसमे राम-नाम लिखने की विधि कही गयी है। अधिक सख्या मे लिखने पर फल विशेप कहा गया है।

—रा० ला० ४२१७

(३) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक स० ४५, पूर्ण। —र० म० ११२१

रामनामलिखनविधिप्रयोगचक्र

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। श्लोक स० ३८, पूर्ण। —स० वि० २४७६६

रामपञ्चाङ्ग

लि०—श्लोक स० ६०८, पूर्ण। —र० म० ४८११

रामपद्धति

लि०—(१) नृसिंहाश्रम-शिष्य लक्ष्मीनिवास विरचित, पत्रे १८।

—रा० पु० ५८७८

(२) श्लोक स० लगभग ४२०, अपूर्ण। —स० वि० २६५०८

रामपूजापद्धति

लि०—(१) (क) श्रीरामोपाध्याय विरचित, पत्रे १६१।

(ख) नृसिंहाश्रम-शिष्य श्रीनिवास विरचित, पत्रे २९।

—रा० पु० (क) ६७४२, (ख) ६८०४

(२) लोक स० ६१६, खण्डित। —र० मं० ४६०२

रामपूजाप्रकार

लि०—श्लोक स० लगभग १६५, अपूर्ण। लिपिकाल १६०४ वि०।

—स० वि० २६६५९

राममन्त्रपद्धति

लि०—श्लोक स० १२१, पूर्ण। —र० म० ५०३७

राममन्त्रविधि

लि०—रुद्रयामलोक्त, श्लोक स० ५६, पूर्ण। —स० वि० २३९७१

राममन्त्राराधनविधि

लि०—श्लोक स० लगभग १९५, अपूर्ण। —स० वि० २५१६८

राममालामन्त्रविधि

लि०—श्लोक स० लगभग ५५, अपूर्ण। —स० वि० २६६११

रामयन्त्र

लि०—श्लोक स० लगभग १५, अपूर्ण। —स० वि० २५८८३

रामरक्षाबीजमन्त्रप्रयोग

लि०—श्लोक स० लगभग ७२, पूर्ण। —स० वि० २६५५९

रामषडक्षरमन्त्र

लि०—(क) श्लोक स० १०, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ३४, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० १४, अपूर्ण। —स० वि० (क) २४४५४, (ख) २४५६८, (ग) २६००४

रामसहस्रनाम

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, हर-गौरी, सवादरूप। इसमे राम के सहस्रनाम अकारादि क्रम से वर्णित है। इसका प्रकाशन कवचमाला मे हो चुका है।

—ए० ब० ६७६५

(२) लिङ्गागमान्तर्गत, उमा-महेश्वर सवादरूप। यह गुह्य से भी गुह्यतर कहा गया है। यह स्तोत्ररत्नाकर मे (मद्रास १९२७ मे) प्रकाशित हो गया है।

—ए० ब० ६७६८

(३) प्रथम शिव-पार्वती सवादरूप, तदुपरान्त विनायक-सनत्कुमार सवादरूप। यह सहस्रनाम द्विजहत्यापापहर अतीव पुण्य कहा गया है।

—म० द० ८९६४

(४) शिव-पार्वती सवादरूप। श्लोक स० २७७। श्रीरामचन्द्रजी के गुण, माहात्म्य आदि का वर्णन करते हुए उनके सहस्र नाम तथा उनके पाठ का फल इसमे वर्णित है

—रा० ला० ४२२५

रामानुष्ठान

लि०—श्लोक स० लगभग ५०, पूर्ण। —स० वि० २६००३

रामार्चनचन्द्रिका (१)

लि०—(१) मुकुन्दवन-शिष्य आनन्दवन विरचित। साङ्गोपाङ्ग रामपूजा का प्रतिपादक यह तन्त्र ५ पटलो मे पूर्ण है। उक्त पटलो मे प्रतिपादित विषय है–१. पूजासम्बन्धी विविध विषय तथा राम-मन्त्रोद्धार, २ आचमन आदि साधारण कर्तव्य कथन पूर्वक विविध न्यासो का प्रतिपादन, ३ ध्यान, होम, पात्रासादन, अन्तर्याग, पीठपूजा, स्तोत्र आदि, ४ आठ प्रकार के यन्त्र आदि। —इ० आ० २६०७

(२) पटलै पञ्चभि प्रोक्ता श्रीरामार्चनचन्द्रिका।
आनन्दवननाम्ना हि यतिना हरितुष्टये॥

अर्थात् हरि की प्रसन्नता के लिए आनन्दवन नामक यति ने रामार्चनचन्द्रिका का पाँच पटलो से वर्णन किया। इसमे वर्णित विषय है—गुरु-शिष्य के लक्षण, सुप्तप्रबोधक काल आदि का वर्णन, राशि-शुद्धि आदि, मन्त्र के सस्कार आदि, राम और सीता के ध्यान आदि, बीज आदि का अर्थ निरूपण, मास, नक्षत्र आदि की शुद्धि का निरूपण, होमविधि आदि, दीक्षाप्रकरण आदि, तिलकधारणविधि आदि, दिन के २य भाग के कृत्य, चार शुद्धियाँ भूतशुद्धि आदि, न्यास आदि का निरूपण, ध्यान, पूजाप्रयोग आदि, तीर्थधारण आदि, दिन के छठे भाग के कर्म, पुरश्चरण आदि। —नो० स० ११३१८

(३) आनन्दवन कृत, अपूर्ण। —बं० प० ११३, १७३

(४) मुकुन्दवन-शिष्य आनन्दवन कृत। (क) श्लोक स० १२००, केवल २ पटल। (ख) श्लोक स० २५००, पूर्ण। (ग) श्लोक स० २५००, पूर्ण। (घ) श्लोक स० १००० (३ पटल पूरे ४र्थ चालू)। (ङ) श्लोक स० ६०० (४र्थ और ५म पटल)। (च) श्लोक स० ६०, अपूर्ण। (छ) श्लोक स० १५०० (३ पटल पूरे चौथा पटल चालू)। (ज) श्लोक स० २५०० पूर्ण। (झ) श्लोक स० १२० केवल रामार्चनविधि।

—अ० व० (क) ८५, (ख) १३०४१, (ग) २२७०, (घ) १९९८, (ङ) १०५२७, (च) १२९७९, (छ) १०५६३, (ज) १४९७, (झ) ५११५२

(५) पाँच पटलो मे पूर्ण यह ग्रन्थ मुकुन्दवन-शिष्य आनन्दवन द्वारा विरचित है। इसमे अगस्त्यसहिता, अथर्वणरहस्य, श्रीरामोत्तरतापिनीय, गौतमीयतन्त्र, देव्यागम, नारदतन्त्र आदि के वचन उद्धृत हैं। —क० का० ७४, ७५

(६) मुकुन्दवन-शिष्य आनन्दवन कृत, (क) श्लोक स० २७६९, पूर्ण। (ख) श्लोक स० २५२३, पूर्ण। (ग) श्लोक स० २१७०, पूर्ण। (घ) श्लोक स० ६८२, अपूर्ण, आदि और अन्त रहित।

—र० म० (क) ४७४४, (ख) ४७४०, (ग) ४७२२, (घ)४७०८

(७) (क) आनन्दवनयति कृत, श्लोक स० लगभग १४१५, पूर्ण। (ख) आनन्द-वन कृत, श्लोक स० लगभग ८८५, अपूर्ण। (ग) आनन्दवनयति कृत, श्लोक स० लगभग २४६०, (खण्डित)। —स० वि० (क) २४१५२, (ख) २६६७१, (ग) २३९७९

रामार्चनचन्द्रिका (२)

लि०—भविष्योत्तरपुराणान्तर्गत, श्लोक स० लगभग २०५०, अपूर्ण।

—स० वि० २६६६६

रामार्चनदर्पण

लि०—इसमे त्रिपुरसुन्दरी की पूजा आदि का विधान है। पन्ने १२२।

—रा० पु० ५७९२

रामार्चनपद्धति

लि०—(१) श्लोक स० लगभग २६६, अपूर्ण। —स० वि० २५५९२

(२) प्रकाशानन्दनाथ-शिष्य गोविन्ददशपुत्र कृत। श्लोक स० ११००। निर्माण-काल शकाब्द १६६४। —अ० ब० ५१५३

रामार्चनसोपान

लि०—शिवलालशर्मा द्वारा विरचित। श्लोक स० ६००। लिपिकाल १८५० वि०।

—अ० ब० १३०३८

रामार्चापद्धति

लि०—श्लोक स० लगभग ३८०, अपूर्ण। —स० वि० २६५४९

रामार्चासरणि

लि०—श्लोक स० लगभग ५५०, पूर्ण। लिपिकाल १६०७ वि०।

—स० वि० २६५२६

रावणोड्डीश

लि०—दे०, वीरभद्रमहातन्त्र। —ए० व० ५८४६

रावणचेटक

लि०—(१) आगमोक्त। यह शावरमन्त्र की तरह रावणमन्त्र है ॐ नमो भगवते दशकण्ठाय दशशीर्षाय दशाननविंशतिनेत्रवराय एकादशजिह्वाष्टादशश्रोत्रनवनासाविंशत्योष्ठाय इत्यादि। इसमे इसी तरह निम्ननिर्दिष्ट चेटक भी है—रावणचेटक के अतिरिक्त रञ्जकचेटक, भृङ्गिचेटक, विश्वावसुचेटक, चोलाचेटक, कुम्भकर्णचेटक, वाचाटचेटक, विश्वचेटक, रक्तकम्बलचेटक, क्षोभचेटक, सागरचेटक, निशाचरचेटक, चुञ्चुकचेटक, सुपथचेटक, प्रेरकचेटक, भवचेटक तथा अर्जुनचेटक। इनमे से अर्जुनचेटक, कुम्भकर्णचेटक आदि कतिपय के नमूने भी रावणचेटकवत् दिये है।

—नो० स० १।३१९

(२) श्लोक स० लगभग ८१, पूर्ण। लिपिकाल १९२७ वि०।

—स० वि० २४५०६

रावणोड्डीशडामरतन्त्रसार

लि०—यह गौरी-शङ्कर सवादरूप है। इसमे नृपति का आकर्षण, उन्मादन, विद्वेषण, उच्चाटन, ग्रामोच्चाटन, जलस्तभन, अग्निस्तभन, अन्धीकरण, मूकीकरण, स्तब्धीकरण आदि के बहुत-से प्रयोग वर्णित है। —ए० व० ५८४७

रासगीता

लि०—श्लोक स० १३७। इसमे रासोत्सव के अवसर पर श्रीराधा और श्रीकृष्ण की स्तुति की गयी है। —रा० ला० २११३

रासोल्लासतन्त्र

लि०—(१) नारदप्रोक्त, श्लोक स० २६०। इसमे श्रीकृष्ण का राससकीर्तनस्तोत्र, रासलीलास्वरूपवर्णन, रासगीताप्रतिपादन आदि विषय वर्णित है।

—रा० ला० २१५१

(२) अपूर्ण। इसकी पुष्पिका मे लिखा है—'रासोल्लासतन्त्रे राधाकृष्णयो रासवर्णनम्।' —व० प० ७१३

रुद्रचण्डी या रुद्रचण्डिका

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत हर-गौरी सवादरूप यह चार अध्यायो मे है। छात्र-पुस्तकालय (कलकत्ता) द्वारा यह प्रकाशशित किया जा चुका है। —ए० व० ५८७२

(२) यह रुद्रयामल के अन्तर्गत हर-गौरी सवादरूप है। इसमे वर्णित विषय है—शिव-कार्तिकेय के सवादरूप मे रुद्रचण्डिका-कवच, हर-गौरी सवाद मे चण्डीरहस्य, शिव दुर्गा के सवाद से मावनरहस्य कथन, हर और गौरी के सवाद से भिन्न-भिन्न वारो मे रुद्र-चण्डिका की भैरवी आदि विभिन्न मूर्तियो के पूजन से भिन्न भिन्न फलो की प्राप्ति आदि।

—नो० स० ११३२२

(३) रुद्रयामलान्तर्गत, अपूर्ण। —व० प० ७२५

(४) श्लोक स० लगभग ७०, पूर्ण। —स० वि० २५२३१

रुद्रचण्डीकवच या रुद्रचण्डिकाकवच

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। पूर्ण। —व० प० ११४८

रुद्रजपसिद्धान्तशिरोमणि

लि०—राम अग्निहोत्री कृत, श्लोक स० ६४००। —अ० व० १३९७

रुद्रतन्त्र

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चौसठ आगमो मे अन्यतम है। (तन्त्रालोक-टीका)।

रुद्रयामल या रुद्रयामलतन्त्र

लि०—(१) भैरव-भैरवी (उमा-महेश्वर) सवादरूप यह अनुत्तरतन्त्र और उत्तर-तन्त्र भेद से दो भागो मे विभक्त है। दोनो मे कुल मिलाकर ५४ पटल हैं।

—ए० व० ५८६२, ५८६३

(२) यह भैरव-भैरवी सवादरूप है। भैरव प्रश्न-कर्ता और भैरवी उत्तर देनेवाली है। श्रीयामल, विष्णुयामल, शक्तियामल और ब्रह्मयामल इन सब यामलो का उत्तरकाण्ड रूप रुद्रयामल है। इसमे ९३ पटल हैं। —नें० द० २।२४६ (छ)

(३) भैरव-भैरवी सवादरूप यह ३२ पटलो मे पूर्ण है।

—नें० द० २।२४६ (ई)

(४) यह ६४ पटलो मे पूर्ण है। इसमें प्रतिपादित विषय—आनन्दभैरव के प्रति आनन्दभैरवी की उक्ति रूप यह निगम है यह कथन, यामल-शब्द की व्युत्पत्ति, तन्त्र

का माहात्म्य निरूपण भाव शब्द का निर्वचन, सुरा-पानविधि, दिव्य, वीर और पशुभाव के भेद से भाव तीन प्रकार का है, यह कथन आदि। —नो० स० १।३२३

(५) महादेव-पार्वती सवादरूप। इसमे गायत्री महाचक्र का प्रतिपादन है। श्लोक स० १३५। —ट्रि० कै० १००७ (ख)

(६) भैरव-भैरवी सवादरूप। इसमे ९००० श्लोक, ६७ पटल है। इनमे प्रतिपादित विषयो मे कतिपय मुख्य-मुख्य विषय है—सिद्धमन्त्र-प्रकरण, महागुरु-प्रकरण, भावनिर्णय-प्रकरण, चक्रानुष्ठान-प्रकरण, कुमारी-उपचर्या विन्यास प्रकरण, कुमारीपूजनादि निरूपण, कुमारीकवच, कुमारी के अष्टोत्तर शत और सहस्र नाम, पशुभाव-विचार, आज्ञाचक्र-सगतिसिद्धमन्त्र-प्रकरण, आज्ञाचक्रसारसकेत कथन, भरणी आदि सत्ताईस नक्षत्रो के फलाफल का कथन, वेद-प्रकरण, वेदभाषापरिच्छेद, अथर्ववेद-प्रकरण, चतुर्वेदोल्लास आदि। —रा० ला० २९२

(७) यह मौलिक तन्त्र है। इसमे प्राय सम्पूर्ण शाक्त-सिद्धान्त, ज्ञान, धार्मिक और सामाजिक रीतिरश्म, विधियाँ, जातियाँ, तीर्थ, व्रत, उत्सव आदि वर्णित है। —बो० कै० १३०९

(८) भैरव प्रोक्त, उत्तरकाण्ड सम्पूर्ण। —ज० का० १०७५

(९) श्लोक स० ६३२७, पूर्ण। —र० म० ४९५०

(१०) (क) श्लोक स० लगभग १०००, रसार्णवकल्पकथन पर्यन्त पूर्ण।

(ख) श्लोक स० लगभग ७५०, अपूर्ण।

(ग) श्लोक स० लगभग १४०, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २३८४८, (ख) २५५३६, (ग) २६००८

उ०—सौन्दर्यलहरी-टीका लक्ष्मीधरी, कुलप्रदीप, तारारहस्यवृत्ति, ताराभक्ति-सुधार्णव, आगमतत्त्वविलास, सर्वोल्लास, कालिकासपर्याविधि, तत्त्वबोधिनी (आनन्द लहरी की टीका) तथा तन्त्रसार मे।

रुद्रयामल (उत्तरषट्क)

लि०—(१) उमा-महादेव सवादरूप रुद्रयामल अनुत्तर और उत्तर दो षट्को मे विभक्त है जैसा पहले कहा गया है। उसका यह उत्तर षट्क छह पटलो मे पूर्ण है। उनके विषय ये है—षट्चक्र-ध्यान, त्रिपुरा के मन्त्रो का निर्णय, कामतत्त्वसाधन, त्रिपुरा का ध्यान, सिद्धियाँ और विद्याकोप। सुना जाता है कि रुद्रयामल सवा लाख श्लोकात्मक है। —म० द० ५७१०–११

(२)—रुद्रयामलतन्त्र। यह धातुकल्प का प्रतिपादक तन्त्र है। इसके अन्त मे सुवर्ण-प्रशसा दी गयी है।

[यह पूर्वोक्त रुद्रयामल से भिन्न प्रतीत होता है]। —तँ० म० ६५५

रुद्रयामलमतोत्सवतन्त्र

लि०—उमा-महेश्वर सवादरूप। —ए० व० ५८५८

रुद्रविधि

लि०—इसमे न्यासपूर्वक रुद्रकी जप-होम-पूजा-विधि वर्णित है।

—ए० व० ६४८६

रुद्रव्याख्यान

लि०—श्लोक स० ४२७, अपूर्ण। —अ० व० १३४३३ (घ)

रुद्राक्षकल्प

लि०—यह शिव-पार्वती सवादरूप है। इसमे रुद्राक्ष की उत्पत्ति, उसके धारण का फल आदि प्रतिपादित है। —ए० व० ५९९० (६)

रुद्राक्षफल

लि०—यह शिव-गौरी सवादरूप है। इसमे रुद्राक्ष-धारण से होने वाले फल आदि का कथन है। —नो० स० ३।२५७

रुद्राक्षोत्पत्ति

लि०—श्लोक स० ३५। —अ० व० ४०५१

रुद्रागम

(१) किरण के मतानुसार अष्टादश (१८) रुद्रागम—विजय, पारमेश, नि श्वास, प्रोद्गीत, मुखविम्व, सिद्धमत, सन्तान, नारसिह, चन्द्रहास, भद्र, स्वायभुव, विरज, कौरव्य, मुकुट, किरण, ललित, आग्नेय और पर।

(२) श्रीकण्ठी के अनुसार अष्टादश (१८) रुद्रागम—विजय, नि श्वास, मद्गीत, मुखविम्व, सिद्ध, सन्तान, नारसिंह, चन्द्राशु, वीरभद्र, आग्नेय, स्वायभुव, विसर रौरव, विमल, किरण, ललित और सौरमेय।

रुद्रादिमन्त्र

लि०—श्लोक स० ८४, अपूर्ण। —अ० व० ७३७२

रुरुतन्त्र

श्रीकण्ठ के मतानुमार यह चतु षष्टि (६४) आगमो मे अन्यतम है (तन्त्रालोक-टीका)

रुरुशासन

उ०—तन्त्रालोक मे।

रूपभेद

उ०—सौन्दर्यलहरी की लक्ष्मीधर रचित टीका मे।

रुरुभेद

यह श्रीकण्ठ के मतानुसार चतु षष्टि (६४) तन्त्रो मे अन्यतम है।

रेणुकाकवच

लि०—श्लोक स० ३८। —अ० व० ५६९९

रेणुकाम्बापूजा

लि०—श्लोक स० ३०, इसमे रेणुकाम्बा-मन्त्र भी है। —अ० व० ११७८५

रेणुकारानक

उ०—सौभाग्यभास्कर मे।

रोगशान्ति

लि०—बौधायन द्वारा उक्त, श्लोक स० १९८। इसमे प्रतिपदा आदि तिथियो और भिन्न नक्षत्रो के दिन रोग आदि की उत्पत्ति होने पर कितने दिनो तक रोग-भोग करना पडता है, इसका प्रतिपादन किया गया है और प्रत्येक रोग की शान्ति का प्रकार भी बतलाया गया है। —रा० ला० ४२१८

रोगहरचिन्तामणिमन्त्र

लि०—इसमे वे मन्त्र प्रतिपादित है जिनके जप से रोगो की निवृत्ति होती है। वे मन्त्र वामकेश्वरतन्त्र मे गृहीत है। —ए० व० ६५६०

रोगहरणमन्त्र

लि०—इसमे रोगो की निवृत्ति के लिए शावर मन्त्र प्रतिपादित है।

—ए० व० ६५६१

रौरवागम

यह अष्टाविंशति (२८) रुद्रागमो के अन्तर्गत है (तन्त्रालोक-टीका)।

लक्षणसारसमुच्चय

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

लक्ष्मीकुलतन्त्र

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

लक्ष्मीकौलार्णव

उ०—श्यामासपर्याविधि तथा सौभाग्यभास्कर मे।

लक्ष्मीचरित्र

लि०—लक्ष्मी-केशव सवादरूप। इसमे भगवान् केशव ने लक्ष्मीजी से प्रश्न किया है कि किस उपाय से तुम मनुष्य के लिए निश्चल होती हो ? भगवान् के प्रश्न का लक्ष्मीजी ने उत्तर दिया। इसमे साथ ही लक्ष्मीयुक्त और लक्ष्मीवियुक्त जीवो के लक्षण आदि भी दिये गये है। इसकी श्लोक स० ६७ है। —रा० ला० ५८६

लक्ष्मीतन्त्र

लि०—(१) यह नारदपञ्चरात्र के अन्तर्गत है। इसमे ५० अध्याय है एव नारायण विष्णु की शक्ति लक्ष्मी की पूजा और स्तुति विस्तार से वर्णित है। प्रत्येक अध्याय का विवरण इ० आ० कैटलाग मे देखा जा सकता है। —इ० आ० २५३३

(२) (क) श्लोक स० ३०००, पञ्चरात्र से गृहीत, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ३०००, पञ्चरात्र से गृहीत, पूर्ण। (ग) श्लोक स० ३०००, पञ्चरात्र से गृहीत, पूर्ण। (घ) श्लोक स० ३०००, पञ्चरात्र से गृहीत, ४९ अध्याय पूर्ण तथा ५० वाँ अध्याय चालू, अपूर्ण। —अ० व० (क) ६६३७, (ख) ६६५३, (ग) ७८४५, (घ) ११४८३

(३) यह लक्ष्मी की पूजा तथा स्तुति आदि का प्रतिपादक तन्त्र है।

—बी० कै० १२८९

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

लक्ष्मीनारायणपञ्चाङ्ग

लि०—रुद्रयामल के अन्तर्गत, श्लोक स० ५००, पूर्ण।

—र० म० ४८१२

लक्ष्मीनृसिंहमन्त्र

लि०—श्लोक स० लगभग ७२, पूर्ण। रामदुर्ग और मालामन्त्र भी इसमे सनिविष्ट है। —स० वि० २५३४३

लक्ष्मीनृसिंहविधान (सटीक)

लि०—श्लोक स० लगभग ५८६, अपूर्ण। —स० वि० २५९४०

लक्ष्मीनृसिंहसहस्राक्षरीमहाविद्या

लि०—श्लोक स० लगभग १००, अपूर्ण। —सं० वि० २६२६५

लक्ष्मीपञ्चाङ्ग

लि०—(१) ईश्वरतन्त्र मे उक्त। पन्ने ३१। —रा० पु० ४१६१

(२) श्लोक स० ६५८, पूर्ण। —र० म० ४८३०

लक्ष्मीपटल

लि०—श्लोक स० १४०। —अ० व० ९३११ (ग)

लक्ष्मीपद्धति

लि०—डामरतन्त्रान्तर्गत। श्लोक स० लगभग ७५, अपूर्ण।

—स० वि० २६०२०

लक्ष्मीपूजन

लि०—श्लोक स० ७० (लक्ष्मीयन्त्रसहित)। —अ० व० ९५८७

लक्ष्मीपूजाप्रयोग

लि०—श्लोक स० लगभग ३०। पुरश्चरणविधि भी इसमे सनिविष्ट है। पूर्ण।

—स० वि० २४८६३

लक्ष्मीपूजाविवेक

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

लक्ष्मीमत

श्रीकण्ठी के अनुसार अष्टादश (१८) रुद्रागमों में अन्यतम।

लक्ष्मीमन्त्र

लि०—श्लोक स० ४०। —अ० व० १३८९४

लक्ष्मीयन्त्र

लि०—श्लोक स० लगभग ५५, अपूर्ण। —स० वि० २६१५८

लक्ष्मीयामल

द्रष्टव्य, यामलाष्टक।

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

लक्ष्मीवासुदेवपूजापद्धति

लि०—श्लोक स० २००। —अ० व० ५८४९

लक्ष्मीव्रत या लक्ष्मीचरित्र

लि०—श्रीराम कविराज कृत। यह ५ अध्यायों मे पूर्ण है।

—ने० द० १।१३२० (ञ)

लक्ष्मीसंहिता

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

लक्ष्मीसपर्यासार

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

लक्ष्मीहृदय या लक्ष्मीहृदयस्तोत्र

लि०—(१) अथर्वरहस्य मे गृहीत, श्लोक स० १०६।

—अ० व० ९३११ (क)

(२) अथर्वणरहस्य से गृहीत, श्लोक स० १०७, पूर्ण।

—डे० का० ७६८ (१८८२-८३ ई०)

लघुचक्रपद्धति

लि०—पूर्ण। इसमे श्रीचक्रनिर्माण की विधि बतलायी गयी है।

—म० द० ५७१४

लघुचन्द्रिका

लि०—(१) सच्चिदानन्दनाथ विरचित। ग्रन्थकार ने स्वकृत ललितार्चनचन्द्रिका का लघुतर (संक्षिप्त) श्रीविद्याक्रम-पूजन लघुचन्द्रिका के नाम से प्रस्तुत किया। इसमे उपासक के आह्निक कृत्य, न्यासविधि, अर्घ्यसाधनादिविधि, आवरण पूजा से लेकर विसर्जनान्त पूजन विधान, आसनोत्थापनविधि आदि विषय वर्णित है। इसमे ५ प्रकाश है।

—ए० व० ६३४३

(२) (क) श्लोक स० ८००, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ८०० (मुद्रालक्षण-सहित)। (ग) श्लोक स० ८००।

—अ० व० (क) ६४७२, (ख) ९७२३, (ग) ११७७०(क)

(३) सच्चिदानन्द कृत, श्लोक स० १३०, पूर्ण (?)। —स० वि० २४७०४

लघुचन्द्रिकापद्धतिसंकेत

लि०—श्लोक स० १००। —अ० व० ११७७० (ख)

लघुदीपिका

लि०—आनन्दवन विरचित रामार्चनचन्द्रिका की टीका गदाधर विरचित।

—रा० सो० व०

लघुपद्धति

लि०—(१) विद्यानन्दनाथ विरचित, श्लोक स० १०००।

—अ० व० ९९०९ (ख)

(२) श्लोक स० २१२, अपूर्ण। कर्ता पूर्ववत्।

—डे० का० १७ (१८८३-८४ ई०)

लघुपूजापद्धति

लि०—विद्यानन्दनाथकृत, श्लोक स० लगभग २२०, पूर्ण।

—स० वि० २६१८०

लघुबृंहिणी

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

लघुमातंगीकल्प

लि०—इसमे मातङ्गी-पूजा सक्षेपत वर्णित है। —म० द० ५७१५

लघुवृत्ति या अनुत्तरत्रिंशिकाविमर्शिनी

लि०—यह अनुत्तरत्रिंशिका की लघुव्याख्या है। इसके रचयिता का नाम अज्ञात है। इसकी श्लोक स० ३०० है। —ट्रि० कै० १०७४ (ख)

लघुवृत्तिविमर्शिनी

लि०—यह अनुत्तरत्रिंशिका की व्याख्या है। इसके रचयिता श्रीकृष्णदास हैं। श्लोक स० ६००। —ट्रि० कै० १०७४ (घ)

लघुसूत्रपूजापद्धति

लि०—उमानन्दनाथ (?) कृत। श्लोक स० ७००। —अ० व० ५७९५

लतार्चन या लतार्चनतन्त्र

सर्वोल्लास के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) तन्त्रो मे अन्यतम है।

उ०—महामोक्षतन्त्र मे।

लम्पट

श्रीकण्ठी के अनुसार यह चतुःषष्टि (६४) रुद्रागमो मे अन्यतम है।

ललित

यह अष्टादश (१८) रुद्रागमो मे अन्यतम है।

लि०—ब्रह्माजी द्वारा प्रोक्त। इसकी श्लोक स० १६० है। यह ७ पटलो मे पूर्ण है। यह अपूर्व शास्त्रयाग पहले ब्रह्माजी के द्वारा कहा गया था। तदनन्तर शिवजी ने इसे कहा। यह सब भूतो के लिए ऐश्वर्य प्रदान करने वाला है। इसमे पहले भूतनाथ को स्नान कराने की विधि प्रतिपादित है। उससे पहले आचार्य-वरण आवश्यक कहा गया है। पूजा, बलिदान, होमविधि आदि विविध विषय इसमे वर्णित है।

—ट्रि० कै० ९८१ (ग)

ललितरहस्य

लि०—(१) राजेन्द्र तर्कवागीश भट्टाचार्य सकलित यह ग्रन्थ पुराण और तन्त्रो के वचनो का सग्रह कर रचा गया है। इसकी श्लोक सख्या १४६६ है और ९ पटलो मे यह पूर्ण है। इसमे निम्न निर्दिष्ट विषय प्रतिपादित हैं—गुरुतत्त्व, ब्रह्मतत्त्व, दुर्गा का त्रिगुणा-

त्मत्व आदि कथन, हसतत्त्व, उसके स्वरूप तथा ऋषि आदि का निरूपण, कामकलातत्त्व कथन, चित्शक्ति के स्वरूप आदि का निरूपण, कामकला के ध्यान आदि का प्रतिपादन, नादतत्त्व कथन, नाद, विन्दु आदि की उत्पत्ति का निरूपण, शब्दब्रह्म का निरूपण, योनि-मुद्रा, योगभावना का प्रकार, कुण्डलिनी-तत्त्व का निरूपण, उसके स्वरूप का निर्देश, ध्यान आदि, षट्चक्रो का निरूपण, महामुद्रा-लक्षण, महाबन्धमुद्रा, उड्डीयानमुद्रा, जालन्धर-मुद्रा, करणीमुद्रा, विपरीतमुद्रा, शक्ति-चालनमुद्रा, मन्त्रतत्त्व का विवेक, मन्त्रो मे स्त्री, पुम्, नपुसकत्व कथन, मन्त्रो का स्वापकाल आदि कथन, निशाचार, दिवाचार, पल्लव, वीज, सयोगाभाव, सयोगादि का निरूपण, वर्णमालातत्त्व कथन, अन्तर्याग का विवेचन, मालारहस्य, योगतत्त्व तथा कामेश्वरतत्त्व का निरूपण आदि। —रा० ला० १६७४

(२) राजेन्द्र तर्कवागीश कृत, अपूर्ण। —व० प० ७५३

ललिताकामेश्वरीप्रयोग

लि०—श्लोक स० लगभग ४२, अपूर्ण। —स० वि० २४१८२

ललिताक्रम

नामान्तर—ललितापद्धति।

लि०—श्लोक स० लगभग ७८०, अपूर्ण। लिपिकाल शक-सवत्सर १८४१।
—स० वि० २५२५३

ललिताक्रमदीपिका

लि०—(१) योगीश विरचित। इसमे ग्रन्थकार ने ललिता देवी की पूजा-विधि का विस्तारपूर्वक प्रतिपादन किया है। "योगीश कुरुते यत्नात् ललिताक्रमदीपिकाम्।" ग्रन्थारभ मे यह ग्रन्थकार की प्रतिज्ञा है। —वी० कै० १२८७

(२) योगीश कृत, श्लोक स० लगभग १०८०, पूर्ण। लिपिकाल १८१७ वि०।
—स० वि० २४८०२

ललितातन्त्र

उ०—सर्वोल्लास मे।

ललितातिलक (सटीक)

लि०— काशीनाथ विरचित, श्लोक स० लगभग १७९५। पूर्ण।
—स० वि० २५६५३

ललितात्रिशती

(श्रीशङ्कराचार्य कृत टीका सहित)

यह ग्रन्थ मुद्रित हो चुका है।

ललिता-ध्यानादि

लि०—श्लोक स० १३०। —अ० व० ५७९४

ललितानित्यपूजाविधि

लि०—सहजानन्दनाथ विरचित, श्लोक स० ५००। —अ० व० १७६

ललितानित्याह्निकविधि

लि०—श्लोक स० १६८, अपूर्ण। —स० वि०२६५७४

ललितानित्योत्सवनिबन्ध

लि०—उमानन्दनाथ विरचित। अपूर्ण। लिपिकाल १७३९ वि०

—स० वि० २३९५०

ललितापरशिवजयमालामन्त्र

लि०—श्लोक स० ३०। —अ० व० ११८२४ (ख)

ललितापरिशिष्ट

लि०—इसमे त्रिपुरा के मन्त्र और उनके ऋषि, देवता, विनियोग आदि का प्रतिपादन करते हुए मन्त्रो के नाम दिये गये हैं—मिथुन शुद्धमाला०, मिथुन नमो०, मिथुन स्वाहा०, मिथुनतर्पण०, मिथुनजप० आदि। —ए० व० ६३८०

ललितापूजन

पञ्चाक्षर ललिताबीजमन्त्र सहित।

लि०—श्लोक स० लगभग ७५, पूर्ण। —स० वि० २४२६९

ललितापूजनपद्धति

(कादिमतानुसार)

लि०—(१) श्लोक स० ४००। —अ० व० १२०६९

(२) कादिमतानुसारिणी। श्लोक स० ५४०, पूर्ण।

—स० वि० २४२८२

ललितापूजनविधि

लि०—श्लोक स० ५०० । —अ० व० १०४५०

ललितापूजा

लि०—उमानन्दनाथ कृत । श्लोक स० लगभग ४००, पूर्ण ।

—म० त्रि० २४०४५

ललितारहस्य

लि०—श्लोक स० लगभग ७०, पूर्ण । इसमे वीरतन्त्र के चतुर्दश पटलस्थ भद्रकाली-प्रयोग भी सनिविष्ट है । —स० वि० २५७५१

ललितार्चनचन्द्रिका

लि०—(१) सच्चिदानन्दनाथ अथवा सुन्दराचार्य कृत यह ग्रन्थ २५ प्रकाशो मे पूर्ण है। इसकी श्लोक स० ५००० है। जालन्धर पीठ पर शिष्यो की प्रार्थना से ग्रन्थकार ने सबको सुखप्रदायक चन्द्रिका (ललितार्चनयुक्त) का निर्माण किया जिसके अवलम्बन मे वे देवी के चरणयुगल का अर्चन कर नित्य धाम को प्राप्त हो।

इसमे प्रतिपादित विषय है—प्रात काल निष्क्रमण विधि, तान्त्रिक स्नान, सन्ध्या-वन्दन, सूर्यार्घ्यदान द्वारा पूजा आदि की विधि, पूजा प्रारम, भूतशुद्धि, प्राण-प्रतिष्ठा, मातृकान्यास, षड्विंश तत्त्वन्यास, श्रीचक्रन्यास आदि न्यासविधियाँ, करशुद्धि, मूल विद्या, महाषोढा न्यास, मुद्राविचार, पात्रासादन, आत्मपूजा, दूतीयजन, पञ्चायतन-पूजा आदि की विधि । —ने० द० ११९७

(२) ललितादेवी के पूजन के विषय मे यह चन्द्रिका रूप प्रकाश डालने वाला ग्रन्थ है। पन्ने २२५ । —त्री० कै० १२८६

(३) सच्चिदानन्दनाथ कृत, श्लोक स० लगभग २००, अपूर्ण ।—म० वि० २६०५६

(४) —रा० सो० व० ८७०

उ०—सेतुबन्ध मे ।

ललितार्चनचन्द्रिकारहस्य

लि०—श्लोक स० २५००, अपूर्ण । —अ० व० १२०४६

ललितार्चनदीपिका

लि०—श्लोक स० २५० । —अ० व० १०४५८

ललितार्चनपद्धति

लि०—(१) इसमे ललिता देवी की पूजाविधि प्रतिपादित है।

—ए० व० ६३७९

(२) श्लोक स० ३५००, प्रकाशानन्दनाथ (?) विरचित, पूर्ण।—अ० व० ५७९०

(३) श्लोक स० २५००, पूर्ण, सच्चिदानन्दनाथ विरचित।

—अ० व० ३५३८

(४) (क) श्लोक स० २५०। (ख) श्लोक स० ६००। (ग) श्लोक स० ६००। —अ० व० (क) ३४९१, (ख) १०३०१ (ख), (ग) १०३०४(ख)

(५) स्वय प्रकाशानन्दनाथ-शिष्य चिदानन्दनाथ विरचित, यह ग्रन्थ पूर्व और उत्तर दो परिच्छेदो मे विभक्त है। इसमे ललिता देवी की पूजाविधि वर्णित है। गन्थकार ने ग्रन्थ की ममाप्ति मे स्वय कहा है—'श्रीचिदानन्दनाथेन कृताया देशिकाज्ञया। ललितार्चनपद्धत्या परिच्छेदस्तथोत्तर ।' —म० द० ५७१६

ललितार्चनविधि (१)

लि०—भामुरानन्दनाथ विरचित। (क) श्लोक स० २८००। (ख) श्लोक स० २८००। (ग) श्लोक स० ४०० (कादिमत के अनुसार)।

—अ० व० (क) २४२२, (ख) ११४०७, (ग) ८९१५

ललितार्चनविधि

लि०—निरञ्जनानन्दनाथ विरचित, श्लोक स० १३२५, पूर्ण।

—स० वि० २४८०१

ललिताविलास

उ०—कुलप्रदीप मे।

ललितासपर्यापद्धति

लि०—इसमे ललिता देवी की पूजापद्धति प्रतिपादित है।

—वी० कं० १२८८

ललितासहस्रनाम (सटीक)

लि०—(१) ब्रह्मपुराण के अन्तर्गत। इसका एक सस्करण निर्णय सागर प्रेस, वम्वई से प्रकाशित हो चुका है। इस पर भास्करराय की व्याख्या है। —ए० व० ६६६६

(२) ललितासहस्रनाम की श्लोक स० २३१ है। पूर्ण।

—डे० का० (१८८२–८३ई०)

ललितासहस्राक्षरीमन्त्र

लि०—श्रीपुराण से गृहीत, श्लोक स० १००। —अ० व० १०७४२

ललितास्तवरत्न

लि०—दुर्वासा विरचित, रा० ला० १५०९ और म० द० १०८२७-२८ मे भी इसका निरूपण है। —ए० व० ६६७५

उ०—सौभाग्यभास्कर मे।

ललितास्वच्छन्द

(अन्यान्य तान्त्रिक ग्रन्थो सहित)

लि०—पूर्ण। —डे० का० १७) (१८८३–८४ ई०

ललितोपाख्यान (१)

लि०—ब्रह्माण्डपुराण से गृहीत, अपूर्ण। —रा० पु० ७०५४

ललितोपाख्यान (२)

लि०—महालक्ष्मीतन्त्रान्तर्गत। श्लोक स० ५४०, पूर्ण। लिपिकाल १८४७ वि०।

—स० वि० २५०८८

उ०—सौभाग्यभास्कर मे।

लवणमन्त्रप्रयोगविधि

लि०—गणेशनाथ विरचित, श्लोक स० ३२५, पूर्ण। लिपिकाल १९७१ वि०।

—स० वि० २३९४२

लिङ्गागम

उ०—कुलप्रदीप तथा आगमतत्त्वविलास मे।

लिङ्गार्चनचन्द्रिका

लि०—(१) सदाशिव दशपुत्र विरचित, श्लोक स० २५००।

—अ० व० ५५९१

(२) विष्णु-पौत्र गदाधर-पुत्र सदाशिव दशपुत्र विरचित, श्लोक स० ३३३२। इसमे प्रतिपादित विषय हैं—प्रमाणो द्वारा शिवजी की श्रेष्ठता का प्रतिपादन, मूर्ति के

भेद से देवता की मन्त्रव्यवस्था कथन, शिव के अतिरिक्त अन्य देवताओ के भजन मे दोष कथन, शिव-पूजा का माहात्म्य-प्रतिपादन, लिङ्ग-माहात्म्य, पद्मराग, काश्मीर, पुष्पराग, तथा विद्रुमादिमय लिङ्गो की पूजा का भिन्न-भिन्न फल कथन, पारद, बाण, हैम आदि लिङ्गो की क्रमश ब्राह्मण आदि के लिए मङ्गलप्रदता कथन, अधिकारी भेद से अन्य प्रकार के लिङ्गो की आवश्यकता का निरूपण, कलियुग मे पार्थिव लिङ्ग की प्रधानता, भिन्न-भिन्न कामनाओ से लिङ्गपूजा मे विशेष कथन आदि । —रा० ला० १९४४

लिङ्गार्चनतन्त्र

लि०—(१) शिव-पार्वती सवादरूप यह मूल तन्त्र १८ पटलो मे पूर्ण है। इसमे शिवजी ने देवी पार्वतीजी से शिवलिङ्ग की महिमा, पूजा-फल, पूजा न करने मे प्रत्यवाय आदि तथा पार्थिव लिङ्ग के भेद आदि विविध विषय कहे हैं। पुष्पिका मे यह ज्ञानप्रकाश के नाम से भी अभिहित हुआ है। सभवत इसका नामान्तर ज्ञानप्रकाश हो। जैसे—इति लिङ्गार्चनतन्त्रे ज्ञानप्रकाशे देवीश्वरसवादे अष्टादश पटल ।

—क० का० ८३

(२) केवल २ य पटल तक, अपूर्ण । —व० प० ५७०

(३) इसमे शिवलिङ्गपूजा तथा उसके उपकरणो का वर्णन है। यह १८ पटलो मे पूर्ण है। —ए० व० ६०२२

(४) इस प्रति मे १७ पटल हैं।

—ने० द० २।३४० (ग)

(५) (क) श्लोक स० लगभग ६६०, पूर्ण ।

—स० वि० २४८०१

सर्वोल्लासतन्त्र के अनुसार यह चतु षष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है।

(६) शिव-पार्वती सवादरूप इस प्रति मे १००० श्लोक और १८ पटल है। मुख्य रूप से लिङ्गार्चनविधि तथा लिङ्गपूजा-माहात्म्य इसमे वर्णित हैं। पटलो मे प्रतिपादित विषयो की सूची यो है—सब पूजाओ के पूर्व शिवलिङ्ग-पूजा की व्यवस्था, शिवलिङ्ग-पूजन आदि की विधि, भस्मादि के धारण की विधि, पूजाङ्ग की ध्यान आदि की विधि, पूजा के आधार मण्डल, यन्त्र आदि का वर्णन, उलूकोपाख्यान, अष्टमूर्ति आदि की पूजाविधि, भ्रामरी शक्ति का माहात्म्य आदि, षोडश उपचारो का निर्देश, प्रलय-आदि काल मे पूजा की व्यवस्था, बिल्वपत्र से लिङ्गपूजा की विधि आदि। —रा० ला० २८८

लोपामुद्रासंहिता

लि०—वार्तालितन्त्रान्तर्गत । श्लोक स० ५९ ।

—अ० व० १०२११ (ग)

वंशकवच

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, पूर्ण । —व० प० ४३३ (क)

वक्रतुण्डकल्प

उ०—मन्त्रमहार्णव तथा तारामक्तिसुधार्णव मे ।

वक्रतुण्डगणेशपटल

लि०—श्लोक स० लगभग ८०, पूर्ण । —स० वि० २६३०४

वक्रतुण्डपञ्चाङ्ग

लि०—(१) विश्वसारतन्त्र के अन्तर्गत, श्लोक स० ३९४, पूर्ण । इसका गणेश-पञ्चाङ्ग नामान्तर है । र० मं० ४८२१

(२) विश्वसारतन्त्र से गृहीत । —कैट् कैट् २।१२९

वगलाक्रमकल्पवल्ली

लि०—रेणुकापुरवासी अनन्तदेव विरचित । इसमे उपासक के प्रात कृत्यो के साथ वगलामुखी की पूजा-प्रक्रिया प्रतिपादित है। यह ग्रन्थ तीन स्तवको मे पूर्ण है।

—ए० वं० ६३९०

वगलापञ्चाङ्ग

लि०—श्लोक सं० लगभग १४५, पूर्ण । —सं० वि० २४१२८

वगलापटल

लि०—(१) इसमे संक्षेपत वगलामुखी की पूजाप्रक्रिया प्रदर्शित है। प्रतीत होता है कि इसका निर्माण कृष्णानन्द रचित तन्त्रसार के आधार पर हुआ है।

—ए० व० ६३९७

(२) श्लोक स० ७८, इसमे वगला के मन्त्र और पूजन-प्रकार प्रतिपादित है।

—रा० ला० ४६४

(३) श्लोक सं० ७०, पूर्ण । —सं० वि० २६२११

वगलामुखी

लि०—श्लोक स० ५००, अपूर्ण। —अ० व० १०८२२

वगलामुखीकवच

लि०—रुद्रयामल और जयद्रथयामल के अन्तर्गत, पूर्ण।

—ब० प० ८०१

वगलामुखीक्रम

लि०—श्लोक स० ९१, अपूर्ण। —स० वि० २५०८४

वगलामुखीजपविधि

लि०—श्लोक स० ५७, अपूर्ण। —स० वि० २६३६०

वगलामुखीदीपदान

रुद्रयामल के अन्तर्गत, शिव-पावती सवादरूप इसमे वगलामुखी देवी के लिए प्रज्वलित दीपदानविधि प्रतिपादित है। वी० कै० १३१७

वगलामुखीपञ्चाङ्ग

लि०—(१) (क) वगलामुखी पटल (ईश्वरमततन्त्र के अन्तर्गत)।
(ख) ,, नित्यपूजा।
(ग) ,, त्रैलोक्यविजयनामक कवच, रुद्रयामल तन्त्र से गृहीत।
(घ) ,, सहस्रनाम, ईश्वरमततन्त्र से गृहीत।
(ङ) ,, स्तोत्र।

—ए० व० ६३९१

(२) श्लोक स० ४१६, ईश्वरयामल और रुद्रयामल के अन्तर्गत, पूर्ण।

—र० म० ४८५१

(३) रुद्रयामलान्तर्गत वगलामुखी कवच, श्लोक स० २४। महाभय या विपत्ति प्राप्त होने पर जो भक्तिपूर्वक इसका स्वय पाठ करता है या अन्य द्वारा पाठ कराता है उसकी सकल मनोकामनाएँ सिद्ध हो जाती हैं और सकट मिट जाते हैं। मन्त्र आदि द्वारा आत्मरक्षण ही इसका मुख्य विषय है। —रा० ला० ४३७

(४) रुद्रयामलान्तर्गत श्लोक स० १५६७, पूर्ण।

—स० वि० २४२०५

वगलामुखीपद्धति (१)

लि०—(१) सन्तो के हित तथा आततायियो के स्तम्भन के लिए वगलामुखी देवी की पूजा-प्रक्रिया इसमे वर्णित है। —ए० व० ६३९५

(२) सर्वागमसारान्तर्गत शिव-पार्वती सवादरूप। वगलामुखी देवी की पूजा-प्रक्रिया तथा विविध प्रकार के स्तम्भन इसमे प्रतिपादित है। —वी० कै० १३६४

(३) श्लोक स० लगभग ८०, पूर्ण। —स० वि० २५७२३

वगलामुखीपद्धति (२)

लि०—अनन्तदेव विरचित। श्लोक स० ८८२, पूर्ण। —स० वि० २५१५३

वगलामुखीपरिच्छेद

लि०—श्लोक स० लगभग ७०, पूर्ण। —स० वि० २५०८५

वगलामुखीपूजनपद्धति

लि०—आगमसारान्तर्गत। श्लोक स० १६५, अपूर्ण। —स० वि० २३९९३

वगलामुखीपूजापद्धति

लि०—श्लोक स० ४००। —अ० व० १०६८०

वगलामुखीपूजाप्रयोग

लि०—श्लोक स० लगभग १००, अपूर्ण। —सं० वि० २६४६०

वगलामुखीप्रयोग

लि०—(क) श्लोक स० लगभग ४५, पूर्ण। (ख) श्लोक सं० लगभग ४५, पूर्ण। —स० वि० (क) २५७३४, (ख) २६१२६

वगलामुखीमन्त्र

लि०—(क) श्लोक स० लगभग १०, पूर्ण। (ख) कालीनाथ कृत, श्लोक स० लगभग ९, पूर्ण। (ग) श्लोक स० लगभग २०, अपूर्ण (?)।

—सं० वि० (क) २४१४४, (ख) २४४६६, (ग) २५१६५

वगलामुखीमन्त्रप्रयोग

लि०—श्लोक सं० लगभग ११०, अपूर्ण। —स० वि० २४३८०

वगलामुखीमूलविद्याविधि

लि०—श्लोक सं० १२०, अपूर्ण, इसमे यन्त्र-पूजा भी सनिविष्ट है।

—स० वि० २६२७५

वगलामुखीयन्त्रमन्त्रप्रयोग

लि०—ममिलित श्लोक स० लगभग ३०। अश्वारूढामन्त्रप्रयोग के साथ सबद्ध।

—सं० वि० २३८९०

वगलामुखीविधान

लि०—श्लोक स० लगभग ७८, पूर्ण। पीठपूजन, न्यास, यन्त्रविधि तथा मन्त्र सहित।

—स० वि० २५५१३

वगलामुखीसाधन

लि०—श्लोक स० लगभग १००, पूर्ण। —स० वि० २४९२४

वगलारहस्य

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक स० ६००।

—अ० व० १०६६१

(२) (क) श्लोक स० लगभग ६९६, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० लगभग २१२, अपूर्ण। —स० वि० (क) २४९६४, (ख) २४९६५

वगलार्चनपदी

लि०—राघवानन्दनाथ विरचित। श्लोक स० ४००। —अ० ब० १३९९

वज्रपञ्जरकवच

लि०—कालीकल्प से गृहीत, श्लोक स० २५। —अ० व० ३४३०

वज्रपञ्जरसूर्यकवच

लि०—रुद्रयामल के अन्तर्गत देवीरहस्यस्थ।

ए० व० ६७८६

वज्रयोगिनीमिश्रसंग्रह

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

वडवानलहनुमन्मालामन्त्र

लि०—श्लोक स० ४०। —अ० व० ५७३०

वनदुर्गाकल्प

लि०—(१) गुह-अगस्त्य सवादरूप । इसमे १६ पटल है । वनदुर्गा के यन्त्र, मन्त्र, मन्त्रोद्धार, पूजाविधि आदि का प्रतिपादन है । —ए० व० ६०६७

(२) गुह-अगस्त्य सवादरूप । इसमे अगस्त्य मुनि के इस प्रश्न पर कि वनदुर्गा का क्या रूप है, कौन अंग है, उनके मन्त्र का उद्धार कैसा है और उसका विनियोग किस प्रकार का है ? गुह ने उनका समाधान किया है । इसकी श्लोक स० ११०० और पटल स० १५ है । —ट्रि० कै० १०२५ (क)

वनदुर्गापूजा

लि०—(१) मार्कण्डेयपुराण के अनुसार इसमे वनदुर्गा की पूजाविधि प्रतिपादित है । श्लोक स० १२० । —अ० व० १०३८३ (घ)

(२) छाग-बलिदानविधि के साथ श्लोक स० लगभग ६५ पूर्ण ।

—स० वि० २५००१

वनदुर्गाप्रयोग

लि०—श्लोक स० ७९७, पूर्ण ।

—डे० का० १७ (१८८३–८४ ई०)

वनभोजनविधि

लि०—भारद्वाजसहिता के अन्तर्गत। भारद्वाजसहिता का ३५ वाँ अध्याय पूरा वन-भोजन-विधि रूप है । इसमे विशेष-विशेष तिथियो मे स्त्री, बालक और वृद्धो के साथ गृहस्थ को आँवले, आम, बेल, पीपल, कदम्ब, वट आदि वृक्षो से परिवृत वन मे प्रवेश कर पुण्याहवाचन पूर्वक आँवले के तले ब्राह्मण-भोजन कराकर स्वय भोजन करना चाहिए, यो वन-भोजनविधि वर्णित है । —म० द० ५८०२

वरणविद्यान्यास

लि०—महाषोढान्यास तथा षोडशमूल विद्यान्यास के साथ श्लोक स० लगभग १४४, पूर्ण । —स० वि० २५९३१

वरदगणेशपञ्चाङ्ग

लि०—(१) रुद्रयामल के अन्तर्गत, पत्रे २६ । —रा० पु० ५१२९

(२) श्लोक स० लगभग ४००, पूर्ण । —सं० वि० २५९७५

वरदतन्त्र

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से ।

वरदातन्त्र

लि०—पार्वती-ईश्वर सवादरूप इस तन्त्र मे काली देवी कैसे वरप्रदा होती है ? पार्वतीजी के इस प्रश्न पर शिवजी का उत्तर प्रतिपादित है। इसमे ८ पटल है। उनके विषय है—१ काली-मन्त्र और दक्षिणा विद्या के मन्त्रो का वर्णन, २ शाक्तो की दैनिक चर्या, ३ कलियुग मे काली-पुरश्चरण की प्रशसा, ४. कालीपुरश्चरण का समय निरूपण, ५ राज्यलाभ के लिए कालिका के त्र्यक्षर मन्त्र का साधन, ६ योनिमुद्रा कथन, ७ गुरु-पूजादिविधि, ८ कालिका-मन्त्र का काल और मन्त्रगुण कथन।

—रा० ला० २२८

उ०—सर्वोल्लास मे ।

वरिवस्यातिरहस्य (सटीक)

लि०—श्लोक स० लगभग १२६०, सुरा (भासुरा?) नन्दनाथ कृत, अपूर्ण।

—स० वि० २५५०६

वरिवस्याप्रकाश

भास्करराय विरचित ।

लि०—वरिवस्यारहस्य की टीका वरिवस्याप्रकाश या प्रकाश, भास्करराय कृत।

—कैट् कैट् १।५५३

उ०—सौभाग्यभास्कर मे ।

वरिवस्यारहस्य

लि०—(१) मूल तथा व्याख्या के रचयिता भास्करराय। इसके कई सस्करण प्रकाशित हो चुके है। इसमे त्रिपुराषोडशाक्षरमन्त्र वर्णित है। —ए० व० ६३४४

(२) भास्करराय उर्फ भासुरानन्दनाथ कृत मूल तथा टीका।

(क) श्लोक स० १३२०। (ख) श्लोक स० १३२०।

—अ० व० (क) ५५८७, (ख) ६२४० (घ)

(३) तान्त्रिक पूजा रहस्य का प्रतिपादक यह ग्रन्थ नरसिंहानन्दनाथ के शिष्य भास्करराय उर्फ भासुरानन्दनाथ द्वारा विरचित है। इस पर प्रकाश नामक टीका भी उन्ही की

रची हुई है। इसमे वामकेश्वरतन्त्र, योगिनी-हृदय आदि अनेक तन्त्रो से वाक्य उद्धृत किये गये है। —क० का० ८५

(४) वरिवस्यारहस्य या त्रिपुरावरिवस्यारहस्य (सटीक)। इसमे त्रिपुरसुन्दरी के ध्यान, जप, पूजाविधि, मुद्रा, न्यास आदि प्रतिपादित है। इसमे लिखा है 'गोविन्दाश्रम-पूज्यस्य कैवल्याश्रमसज्ञक। शिष्यस्तनोति त्रिपुरावरिवस्याविधि बुध ॥'

[सभवत यह दूसरा ग्रन्थ है] —बी० कै० १३६७

(५) नरसिहानन्दनाथ के शिष्य भास्करराय (नामान्तर भासुरानन्दनाथ) (इनके पिता का नाम गभीरराय भारती था) कृत यह ग्रन्थ श्रीचक्र और श्रीविद्या की पूजा का प्रतिपादक है। इस पर इन्ही की रची हुई, प्रकाश और वरिवस्या-प्रकाश नाम की टीका है। 'गुरुचरणसहायो भास्कररायो जगन्मातु। वरिवस्यातिरहस्य वीरनमस्य प्रणिजगाद ॥ उपदेष्टा जयतितरा नरसिहानन्दनाथगुरु।'

—म० द० ५७१७-१८

(६) भास्करराय कृत, श्लोक स० १३८५, पूर्ण।

—डे० का० ७३४ (१८८३–८४ ई०)

(७) (क) भासुरानन्दनाथ विरचित, सटीक, श्लोक स० ३२८४, पूर्ण।

(ख) नरसिह-शिष्य भासुरानन्दनाथ विरचित सटीक, श्लोक स० १८४०, पूर्ण। —म० वि० (क) २५११९, (ख) २४९२०

(८) भास्करराय विरचित। —कैट् कैट्. १।५५३

वरुणपद्धति या वारुणपद्धति

लि०—नामान्तर—सिद्धान्तदीप है। यह तान्त्रिक उत्सवो की प्रतिपादक पद्धति है। (क) श्लोक स० नही दी गयी है पन्ने २९९। (ख) पन्ने २६८ (१९ पन्ने कम है) अपूर्ण। —तै० म० (क) ११३९८, (ख) ११३९९

उ०—शतरत्नसग्रह मे।

वर्णकोष

लि०—(१) मन्त्रोद्धार के लिए अकार आदि ५० वर्णो का यह कोष है।

—ए० ब० ६२९३

(२) गोविन्दभट्ट विरचित, श्लोक स० ११५, पूर्ण। —स० वि० २४०४६

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

वर्णकोषवर्णन

लि०—भैरवयामल-पूर्वखण्डान्तर्गत। श्लोक स० लगभग २०८, पूर्ण। लिपिकाल १९४५ वि०। —स० वि० २३८४७

वर्णचक्र

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

वर्णभद्रकालीमन्त्र तथा मानसपूजास्तोत्र

लि०—अश्वारूढा-मन्त्रविधान के साथ श्लोक स० लगभग १०२, अपूर्ण।
—स० वि० २६३०८

वर्णभैरवतन्त्र

लि०—लक्ष्मीनारायण-पौत्र, रामनाथ-पुत्र रामगोपाल पञ्चानन विरचित। इसमे अकार से लेकर क्षकार तक के प्रत्येक वर्ण की उत्पत्ति, स्वरूप और माहात्म्य बतलाया गया है। यह ग्रन्थ ३९० श्लोकात्मक कहा गया है। —रा० ला० २००

वर्णमातृकान्यास

लि०—श्लोक स० १००। —अ० व० ८४३७

वर्णमाला

लि०—श्लोक स० लगभग २५, अपूर्ण। —स० वि० २४३६४

वर्णमालाजपप्रयोग

लि०—श्लोक स० लगभग १५, पूर्ण। —स० वि० २६४८८

वर्णविलास

उ०—मन्त्रमहार्णव तथा आगमतत्त्वविलास मे।

वर्णाभिधान

लि०—(१) श्रीविनायक शर्मा द्वारा विरचित। इसमे अकारादि वर्णों (अक्षरो) के तान्त्रिक अर्थ दिये गये है तथा बहुत-से बीजमन्त्रो के नाम भी बतलाये गये है।
—ए० व० ६२६३

(२) (क) श्लोक स० ११२, पूर्ण। (ख) श्लोक स० लगभग ९६, अपूर्ण।
—स० वि० (क) २३८७६, (ख) २४७३७

वर्णाभिधान

लि०—(१) यदुनन्दन भट्टाचार्य विरचित। रा० ला० ५६० तथा इ० आ० १०४६ मे इसके रचयिता का नाम क्रमश श्रीनन्दन भट्टाचार्य तथा श्रीनन्दनभट्ट वतलाया है। इनके कई सस्करण हो गये हैं। उनमे इसके कर्ता का नाम दिया है। तान्त्रिक टैक्स्ट Vol. I कलकत्ता १९१३ के संस्करण की भूमिका मे इसे रुद्रयामल के अन्तर्गत वतलाया है। इसकी श्लोक स० १९० है। —ए० व० ६२६२

(२) श्रीनन्दन भट्टाचार्य विरचित। इसमे अकारादि वर्णो के अभिधान एव अकार से लेकर क्षकार पर्यन्त वर्णो के विविध अर्थ प्रतिपादित हैं। श्लोक स० १७८।

—रा० ला० ५६०

(३) श्रीनन्दनभट्ट विरचित। —इ० आ० १०४६

(४) यदुनन्दनभट्ट विरचित, श्लोक स० २००, प्रथम पाद मात्र।

—अ० व० १०१८१

(५) यह वर्णो का कोष है। इसके रचयिता नन्दनभट्ट हैं।

—कैट् कैट् ११५५३

(६) श्लोक स० ४०, पूर्ण। रुद्रयामल-वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत।

—सं० वि० २४७४५

वर्णोद्धार

उ०—मन्त्रमहार्णव मे।

वशकार्यमञ्जरी

लि०—राजाराम तर्कवागीश भट्टाचार्य विरचित। इसका दूसरा नाम षट्कर्ममञ्जरी भी प्रतीत होता है। इसमे मन्त्रो की सहायता से शान्ति, वशीकरण, स्तंभन, विद्वेषण, उच्चाटन, मारण आदि षट्कर्मविधि वर्णित है। —ए० व० ६५५१

वशिष्ठतन्त्र

उ०—सौभाग्यभास्कर, ताराभक्तिसुधार्णव, शक्तिरत्नाकर तथा आगम-तत्त्व-विलास मे।

वशिष्ठसंहिता

लि०—(१) श्लोक सं० ३७, पूर्ण। —र० म० ११७०

(२) गायत्रीकल्पान्तर्गत, श्लोक सं० १७००। —अ० व० १०६७२

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, आगमकल्पलता, रघुनन्दन कृत तीर्थतत्त्व तथा दीक्षातत्त्व, सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी, आगमतत्त्वविलास तथा सौभाग्यभास्कर मे।

वशीकरणतिलकविधान

लि०—श्लोक स० लगभग ५, पूर्ण। —स० वि० २४२६०

वशीकरणप्रयोग

लि०—(१) इसमे वशीकरण की विभिन्न क्रियाएँ वर्णित हैं।

—ए० ब० ६५५६

(२) श्लोक स० १२, पूर्ण। —स० वि० २५३८४

उ०—मन्त्रमहार्णव मे।

वशीकरणमन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० २५। —अ० ब० ११८७७

(२) (क) श्लोक स० ३२, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ३२, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४६९५, (ख) २६४४७

वशीकरणमन्त्रप्रयोग

लि०—(क) श्लोक स० १२, पूर्ण। (ख) श्लोक स० लगभग ७५, पूर्ण।

—स० वि० (क) २५३८५, (ख) २६३०७

वशीकरणस्तोत्र

लि०—(१) यह वशीकरणोपायभूत स्तोत्र वाराही देवी के उद्देश्य से कहा गया है।

—ए० ब० ६७३०

(२) जगत् को वश मे करने की उपायभूत वाराहीदेवी की स्तुति इसमे प्रतिपादित है। श्लोक स० २५। —रा० ला० ३२४८

वशीकरणादिप्रयोग

लि०—श्लोक स० १९०, अपूर्ण। —स० वि० २५४०७

वशीकरणादिविधि

लि०—श्लोक स० १३९। इसमे तन्त्रोक्त विधि से वशीकरण, उच्चाटन, मारण, स्तभन, मोहन, विद्वेषण आदि के प्रकार प्रतिपादित है। —रा० ला० ४२४७

वश्याकर्षणादियन्त्र

लि०—श्लोक स० ३०० (प्रयोग सहित), अपूर्ण। —अ० व० १२३३१

वसन्तललितभैरवी

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

वसन्तललितायक्षिणीविधि

लि०—श्लोक स० २२, पूर्ण। —स० वि० २५८८८

वागीश्वरीकल्प

लि०—श्लोक स० १३०। —अ० व० १३४२२ (ङ)

वाङ्मयाकमल

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

वाञ्छाकल्पलता

लि०—(क) श्लोक स० ३०० (गणेशविषयक ग्रन्थ)। (ख) श्लोक स० २५। (ग) श्लोक स० १००। (घ) श्लोक स०१२५। (ङ) श्लोक स० २००।
—अ० व० (क) ५६०५, (ख) ५६८९, (ग) ८३३५, (घ) ११७२०, (ङ) ११७४६

वाञ्छाकल्पलताप्रयोग

लि०—(१) वुद्धिराज विरचित। श्लोक स० २००। —अ० व० ७५
(२) श्लोक स० लगभग १७५, पूर्ण। —स० वि० २६०१५

वाञ्छाकल्पलताविधि

लि०—श्लोक स० १२००। —अ० व० ५१५५

वाञ्छाकल्पलतासूक्तविवरण

लि०—गणपतिकल्पान्तर्गत २७ वाँ अध्याय। श्लोक स० ५७।
—अ० व० ८४१३ (क)

वाञ्छाकल्पलतोपस्थान

लि०—(१) श्लोक स० २००। —अ० व० ५६९१
(२) श्लोक स० १३५, अपूर्ण। —स० वि० २४३४२

वाञ्छाकल्पलतोपस्थानप्रयोग

लि०—व्रजराज-पुत्र बुद्धिराज विरचित, श्लोक स० ७२, पूर्ण।

—र० म० ४८८७

वाडवानलीय

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

वार्णीविलास

उ०—कालिकासपर्याविधि मे।

वातुलनाथसूत्र (सवृत्ति)

लि०—मूल के रचयिता—वातुलनाथ। वृत्तिकार—अनन्तशक्तिपाद।
श्लोक स० २००। —अ० व० १८४५

वातुलशुद्धागमसंहिता या वातुलशुद्धागम

लि०—(१) श्लोक स० ४००, अपूर्ण। —अ० ६८२७ (क)
(२) (क) शिवानुभवसूत्र अधिकरण १ से ८ तक। यह उत्तर तन्त्र से शुरू है।
(ख) पटल १ से १० तक, सदाशिव-षण्मुख सवादरूप।

—तँ० म० (क) ३६५०

वातुलशुद्धि

उ०—सौभाग्यभास्कर मे।

वातुलसूत्र (सवृत्ति)

लि०—(१) वृत्तिकार—नूतनशङ्कर स्वामी। वृत्ति-नाम—विद्यापारिजात। श्लोक स० १५०। —अ० व० १२५३३
(२) वातुलसूत्र सटीक, पूर्ण।

—डे० का० ८ (१८७५—७६ ई०)

वातुलोत्तर

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी, शारदातिलक की टीका राघवभट्टी, मायिदेवकृत अनुभवसूत्र, षट्स्थलब्रह्मनिर्णय तथा शतरत्न मे।

वातुलागम

उ०—वीरशैवानन्दचन्द्रिका तथा शैवपरिभाषा (शिवाग्रयोगीन्द्रज्ञान कृत) मे।

वामकेश्वरतन्त्र

लि०—(१) भैरव-भैरवी सवादरूप इस तन्त्र मे ५५ पटल हैं। इसके नित्या-षोडशिकार्णव और योगिनीहृदय—दो भाग हैं। योगिनीहृदय पर पुण्यानन्द-शिष्य अमृतानन्दनाथ की (दीपिका) टीका[1] है। यह प्रिंस आफ वेल्स सरस्वती भवन सीरीज मे पृथक् (दीपिका के साथ) छप चुका है। नित्याषोडशिकार्णव भी भास्करराय की टीका के साथ आनन्दाश्रम स० सीरीज मे छप गया है। इसमे चक्रसकेत, मन्त्रसकेत, पूजासकेत, अभिषेक, पूर्ण अभिषेक, यन्त्र आदि विविध विषयो का उल्लेख है।

—ए० व० ५९४२

(२) वामकेश्वर टिप्पन, इसके मङ्गलाचरण मे त्रिपुरा के मन्त्रो के प्रभाव की तुलना सूर्य, चन्द्र और अग्नि से की गयी है। —ने० द० २।३८० (क)

(३) श्लोक सं० ३७६। लिपिकाल १५९३ वि०। —अ० व० १०४३०

(४) (क) श्लोक स० २५६, पटल१ म से ५ म तक, पूर्ण। (ख)श्लोक स० ३६० पटल १म से ५ म तक, पूर्ण। नित्याषोडशिकार्णवान्तर्गत। (ग)श्लोक स० २७२, अपूर्ण। (घ) श्लोक स० २४८, अपूर्ण। (ङ) श्लोक स० ११२, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २४०१०, (ख) २४०११, (ग) २४६६६१, (घ) २४६६२, (ङ) २५४८३

(५) यह मौलिक तन्त्र है। इसमे तान्त्रिक पूजाविधियाँ, उत्सव आदि प्रतिपादित हैं। —वी० कै० १३६५

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, आगमकल्पलता, आनन्दलहरी की टीका तत्त्वबोधिनी तथा सर्वोल्लास मे।

वामकेश्वरतन्त्रटिप्पणी

लि०—(१) टिप्पणी का नाम—अर्थरत्नावली, विद्यानन्द विरचित, श्लोक सं० १६००। लिपिकाल १६२३ वि०। —अ० व० ३४४३

(२) वामकेश्वरतन्त्र-व्याख्या (अर्थरत्नावली), श्लोक स० ६५०, अपूर्ण। रत्नेश-शिष्य विमलस्वात्मशंभु विरचित। उन्होंने लिखा है—"त रत्नेश गुरुं भजे।" एवम्

१. नोट—नित्याषोडशिकार्णव पर भी अमृतानन्दनाथ की टीका है। टीका का नाम चन्द्रसंकेत है। वह बीकानेर में है। द्रष्टव्य, न्यू कैट्. कैट्. १।२६३।

"सम्प्रदायद्वयज्ञेन विमलस्वात्मशम्भुना। क्रियते टिप्पण सम्यग्वामकेश्वरशास्त्रके ॥"

—ट्रि० कै० १०४१ (ख)

(३) वामकेश्वरतन्त्र-विवरण—जयद्रथ विरचित श्लोक स० ७२५।

—डे० का० २५३ (१८८३-८४ ई०)

(४) (क) वामकेश्वरतन्त्रदर्पण विद्यानन्दनाथ विरचित।

(ख) वामकेश्वरतन्त्रटीका मुकुन्दलाल कृत।

(ग) ,, सदानन्द कृत।

(घ) ,, जयद्रथ कृत। —कैट् कैट् १।५६३

वामकेश्वरपञ्चाङ्ग

लि०—विश्वसारतन्त्रान्तर्गत, पत्रे ५०, श्लोक स० ६५०, पूर्ण।

—र० म० ४८२४

वामकेश्वरीपूजापद्धति

लि०— —ने० द० १।४९

वामकेश्वरीमतटिप्पन

लि०—विस्मृति हो जाने के भय या आशङ्का से वामकेश्वरीमत पर यह विषम टिप्पणी लिखी गयी है। यह ५ पटलो तक ही है। त्रिपुराप्रयोग, मुद्रापटल, वीजत्रयसाधन, त्रिपुरा-होमविधि आदि विषय इसमे वर्णित है।

—ने० द० १।१५५९ (ट) तथा २३८० (क)

वामकेश्वरीस्तुति-न्यास-पूजाविधि

लि०—(१) वामकेश्वरीस्तुति, इसके कर्ता है महाराजाधिराज विद्याधर चक्रवर्ती वत्सराज।

(२) न्यास-विधि।

(३) पूजा-विधि। —ने० द० १।१०७७ (घ)

वामजुष्ट

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी मे।

वामदेवसंहिता

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

वामपूजाविधान

लि०—वामाचार दृष्टिकोण के अनुसार शक्ति की पूजा इसमे वर्णित है।
—म० द० ५७१९

वामाचारमतखण्डन

लि०—(१) श्लोक स० २०६, पूर्ण। —सं० वि० २४४६९

(२) भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथभट्ट कृत। इस ग्रन्थ मे वामाचार द्विजो के लिए कदापि पालनीय (सेव्य) नही है अपितु शूद्रो को ही इसका पालन करना चाहिए, यह सिद्ध करने के लिए आकर ग्रन्थो के प्रमाण वचन उद्धृत किये गये है।
—ए० व० ६४४६

(३) श्लोक स० २०६, पूर्ण। —स० वि० २४४६९

वामाचारसिद्धान्त

लि०—विश्वेश्वर-पुत्र महेश्वराचार्य विरचित। इसमे कुलधर्मो के अनभिज्ञ शिष्य के लिए कुलधर्म-पद्धति प्रदर्शित की गयी है। —म० द० ५७२१

वामाचारसिद्धान्तसंग्रह

लि०—ब्रह्मानन्दनाथ विरचित। भडोपनामक काशीनाथ ने वामाचारमतखण्डन नाम का जो ग्रन्थ वामाचारखण्डन के विषय मे लिखा है उसका खण्डन करते हुए वामाचार-सिद्धान्त की पुष्टि इसमे की गयी है। —म० द० ५७२०

वाराहकल्प

लि०—श्लोक स० ५७, अपूर्ण। —स० वि० २६२७३

वाराहीकल्प

लि०—कुष्ठकल्प तथा स्वर्णकल्प सहित, श्लोक स० १६०, पूर्ण।
—स० वि० २५४१६

वाराहीक्रम

लि०—श्लोक स० ३५, पूर्ण। —स० वि० २५२५४

वाराहीतन्त्र (१)

लि०—(१) गुह्यकालिका-चण्डभैरव सवादरूप यह तन्त्र ३६ पटलो मे पूर्ण है। इसमे वाराही, महाकाली आदि देवी देवताओ के ध्यान, जप, पूजन, होम, आसन, साधन आदि विषय वर्णित है। यह तन्त्र दक्षिणाम्नाय से सवद्ध है। —ने० द० २।३१५ (क)

(२) यह मूलभूत तन्त्रो मे अन्यतम है और ५० पटलो मे पूर्ण है। इसकी श्लोक स० २५४५ है। इसमे आगम, यामल, कल्प और तन्त्रो की सख्या और उनके अवान्तर भेद, प्रत्येक की श्लोक सख्या, आगम, यामल, कल्प और तन्त्रो के लक्षण, दीक्षाविधि, अकडमहर चक्र, कौलचक्र, कामनाभेद से भिन्न-भिन्न देवताओ के मत्र-जप आदि का कथन, कलियुग मे शक्तिमन्त्र की प्रधानता कथन, मन्त्रोद्धारविधि, वैष्णव और शैवो के भेद से मन्त्रो मे प्रणव आदि जोडने का नियम,मन्त्रो की वाल्य,यौवन आदि अवस्थाओ का निरूपण,गृहस्थ और यतियो के लिए मन्त्रो की विशेष व्यवस्था, उपाशु और मानस के भेद से दो प्रकार के जप का वर्णन, जपविधि, स्तोत्र आदि के पाठ की विधि, विविध देव देवियो की पूजा, के मन्त्र, न्यास, स्तोत्र आदि, पीठ और उपपीठो के माहात्म्य आदि विषय वर्णित है। —रा० ला० २४८१

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, आगमकल्पलता, सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी, सौभाग्यभास्कर, तारारहस्यवृत्ति, आगमतत्त्वविलास तथा सर्वोल्लास मे।

वाराहीतन्त्र (२)

लि०—(१) श्रीकृष्ण-राधिका सवादरूप इस तन्त्र मे ५०० श्लोक और आठ पटल है। इन ८ पटलो मे ये विषय प्रतिपादित है—श्रीकृष्ण से राधा के गोपकुलवास आदि के विषय मे विविध प्रश्न और उनका उत्तर, ब्रह्मशिला आदि तथा ब्रह्मलिङ्ग आदि का तत्त्व कथन, सिद्धि के स्थान आदि का विशेष रूप से निर्णय, पञ्च कुण्डो से युक्त स्थान आदि का कथन, चन्द्रशेखर,महादेव की अवस्था आदि का निरूपण, चम्पकारण्य आदि का वर्णन, चण्डीस्तोत्र की एकावृत्ति पाठ आदि का कथन।

(२) (क) श्लोक स० ४६३१, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ५०८, पूर्ण।

—स० वि० (क) २३९१६, (ख) २४७१५

वाराहीविधान

लि०—श्लोक स० ३०, पूर्ण। —स० वि० २५३१८

वाराहीसंहिता

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

वाराहीसहस्रनाम

लि०—उड्डामर तन्त्र के अन्तर्गत, श्लोक स० ११४, पूर्ण। —र० म० ४४७६

वाराह्यादितन्त्र

लि०—केवल १७ यन्त्र, पत्रे १७। —अ० व० १२२८७

वारुणपूजा तथा वारुणयागविधि

लि०—नन्दिकेश्वरमतान्तर्गत प्रतिष्ठामन्त्रस्थ।
—ने० द० ११६३३ (ख), ११६३३ (घ)

वासुदेवरहस्य

उ०—मन्त्रमहार्णव मे।

वासुरीकल्प

उ०—मन्त्रमहार्णव मे।

वास्तुपूजन

लि०—श्लोक सं० १००। —अ० व० १४६८

वास्तुवेधटीका

लि०—श्रीकण्ठाचार्य विरचित, श्लोक स० ७००। —अ० व० १२९८५

वास्तुशान्ति

लि०—श्लोक सं० ११००। वासनाविधि पर्यन्त। —अ० व० ७०८६

विजयबलिकल्प

लि०—श्लोक स० १०७५। भगवान् शिव के लिए बलि देने की विधि इसमे वर्णित है। —ट्रि० कै० १०२६ (क)

विजययन्त्रकल्प

लि०—आदिपुराण से गृहीत, श्लोक स० ३६०
—डे० का० १८ (१८८३–८४ ई०)

विजयाकल्प

लि०—इसमे विद्याधिष्ठात्री वाग्वादिनी या सरस्वती देवी, जो दुर्गाजी की पुत्री कही गयी है, की पूजा-अर्चा आदि साङ्गोपाङ्ग (मन्त्र, जप, ध्यान आदि के साथ) वर्णित है। —बी० कै० १३६९

उ०—तन्त्रसार तथा तारामक्तिसुवार्णव मे।

विजयागम

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह अष्टादश (१८) रुद्रागमों में अन्यतम है।

विजयामालिनीतन्त्र

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव में।

विजयायन्त्रकल्प

आदिपुराण में गृहीत। श्लोक सं० ३६०। —डे० का० (१८८३-८४ ई०)

विज्ञानभट्टारक

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल तथा प्रत्यभिज्ञाहृदय में।

विज्ञानभैरव या विज्ञानभट्टारक

लि०—(१) रुद्रयामल के अन्तर्गत। यह रुद्रयामल से गृहीत लघु तन्त्र ज्ञानप्रतिपादक है। —ने० द० २।२४६ (डी)

(२) अपूर्ण। —डे० का० ४९० (१८७५–७६ ई०)

(३) श्लोक सं० १८९, पूर्ण। —डे० का० २४२ (१८८३–८४ ई०)

(४) सटीक। मूलकार क्षेमराज, टीकाकार शिवोपाध्याय, टीका नाम उद्योत-संग्रह, श्लोक सं० १४४०। —अ० ब० १२४४२

उ०—योगिनीहृदयदीपिका, आगमकल्पलता, महार्थमञ्जरी-परिमल, स्पन्दप्रदीपिका, शिवसूत्रविमर्शिनी तथा प्रत्यभिज्ञाहृदय में।

विज्ञानलतिका

उ०—आगमतत्त्वविलास में।

विज्ञानललित

उ०—आगमकल्पलता में।

विज्ञानेश्वर

उ०—आगमकल्पलता में।

विज्ञानोद्योत

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल में।

विद्याकल्पसूत्र

लि०—भगवत्परशुराम मुनि प्रोक्त, श्लोक स० ११२६, इसमे श्रीविद्यादीक्षा, पूजन आदि विपय वर्णित है। —रा० ला० १४६७

विद्यागणेशपद्धति

लि०—प्रकाशानन्दनाथ विरचित, (क) श्लोक स० ४००। (ख) श्लोक स० ४००। —अ० व० (क) ५५७५, (ख) ५६७४

विद्यागोपालमन्त्र

लि०—श्लोक स० ८। —अ० व० १३८६७

विद्याधिपति

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

विद्यापीठ

लि०—गुह्यकाली के विषय मे ३ परिच्छेदो का ग्रन्थ है। —नें० द० ३।१६९३ (घ)

विद्यामाहात्म्य

लि०—श्लोक स० ४०, दक्षिणकालिका का जो स्मरण करता है उसके लिए कुछ भी दुर्लभ नही है, यो आद्या विद्या का माहात्म्य इसमे प्रतिपादित है। —रा० ला० ३३६

विद्यारत्नसूत्र

गौडपाद कृत।

उ०—सौभाग्यभास्कर मे।

विद्यारत्नसूत्रदीपिका

लि०—विद्यारण्य विरचित, श्लोक स० ३८० पूर्ण। —स० वि० २५६५८

विद्यार्चनचन्द्रिका

लि०—नृसिंह ठक्कुर विरचित। श्लोक स० २०००। —अ० व० ८३२४

विद्यार्णव

लि०—(१) श्रीशङ्कराचार्यजी के चार शिष्यो मे अन्यतम विष्णु शर्मा के शिष्य प्रगल्भाचार्य द्वारा देवभूपाल की प्रार्थना पर निर्मित। इसमे ११ आश्वास (अध्याय) है। इसमे बहुत-सी शक्ति देवियो की पूजाविधियाँ वर्णित है। —ए० व० ६२०६

(२) विष्णुशर्माचार्य-शिष्य प्रगल्भाचार्य विरचित, श्लोक स० ८१३+४५, पूर्ण।
—र० म० ४९०६

विद्यार्णवतन्त्र

लि०—विद्यारण्यपति विरचित, (क) श्लोक स० नही दी गयी है। पन्ने ४०८, १ म भाग एव, (ख) पन्ने ६३३, २ य भाग।
—ज० का० (क) १०७७, (ख) १०७८

विद्यार्थप्रकाशिका

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका सौभाग्यवर्द्धिनी मे।

विद्युमत

श्रीकण्ठी के अनुसार यह चतु षष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है।

विद्युल्लेखा

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चतु षष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है।

विद्योत्पत्ति

लि०—इसमे कालिका, छिन्नमस्ता आदि विद्याओ की उत्पत्ति कही गयी है। इसकी श्लोक स० १३८ है।
—रा० ला० ४४८

विद्योत्पत्तिविधि

लि०—श्लोक स० ११२। इसमे नाना विद्याओ की उत्पत्ति कही गयी है।
—रा० ला० ३३४

विधानमाला

लि०—श्लोक स० २५० (१६ वी शताब्दी मे लिखित)।
—अ० व० ७२३५

विधानमुक्तावली

उ०—रुद्रयामलमतोत्सव मे।

विनायकशान्तिपद्धति

लि०—श्लोक स० १०००। —अ व ८९५३

विनायकसंहिता

लि०—भार्गव-ईश्वर सवादरूप इस तन्त्र मे विनायक-मन्त्रो द्वारा स्तभन, मोहन, मारण, उच्चाटन आदि तान्त्रिक षट्कर्मो की सिद्धि कही गयी है। यह आठ पटलो मे पूर्ण है। —ए० व० ६०८८

उ०—आगमतत्त्वविलास मे।

विपरीतप्रत्यङ्गिरा

लि०—महामहोपाध्याय श्रीमहादेव वेदान्तवागीश द्वारा सगृहीत। यह ७० लाख श्लोकात्मक मुरतन्त्र मे निर्दिष्ट है। कालिका की प्रलयकालीन मूर्ति के ध्यान, पूजा-पद्धति आदि विषय इसमे निर्दिष्ट हैं। विपरीत महाकाली सब प्राणियो को भयभीत करती है। उसकी चर्चा मे भी तीनो लोक काँप उठते हैं। —रा० ला० ९९७

विपरीतप्रत्यङ्गिराप्रयोग

लि०—(क) श्लोक स० ७५, पूर्ण। भैरवतन्त्रान्तर्गत, इसमे दुर्गापूजाप्रयोग भी समिलित है। (ख) भैरवतन्त्रान्तर्गत श्लोक स० ४०, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४५६२, (ख) २५३१३

विभूतिदर्पण

लि०—श्लोक स० ५००। —अ० व० १६९५

विमर्शदीपिका

विज्ञान भैरव टीका, शिव उपाध्याय कृत।

—मुद्रित।

विमर्शिनी

(तन्त्रसमुच्चय-व्याख्या)

लि०—(क) श्लोक स० १५००, अपूर्ण। (ख) श्लोक सं० ३५०, १म से ७म तक ७ पटल पूरे, ८ वाँ आरम है। —अ० व० (क) ७८८७(ख), (ख) ७८७६

विमलागम

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चतुःषष्टि (६४) आगमो मे अन्यतम है।

विमलातन्त्र

लि०—हर-गौरी सवादरूप यह ७ पटलो मे पूर्ण है। इसमे वीरो का नित्य कृत्य वर्णित है। ७ पटलो की विषय सूची यो दी गयी है—१ ग्राम्यव्यवहार से स्वकीय स्त्री द्वारा शक्ति साधना, २ परकीय स्त्री द्वारा शक्ति साधना, ३ योगाचार कथन, ४ गौरी-स्तवक्रम के सम्बन्ध मे प्रश्न और उत्तर, ५ प्रचण्डचण्डिका-कवच ६ कुलाचार के विषय मे प्रश्नोत्तर, ७ कुलाचारविवेक। —रा० ला० २३०

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव, तारारहस्यवृत्ति तथा कालिकासपर्याविधि मे।

विमलावती

लि०—पूजाविधि, होमविधि, पवित्रविधि, दामनविधि, दीक्षाविधि, प्रतिष्ठाविधि आदि विषय इसमे वर्णित है। —ने० द० १।१५३६ (ड)

विरूपाक्षपञ्चाशिका

लि०—(१) श्लोक स० ५०, स्कन्ध ८। —अ० व० १८१८

(२) श्लोक स० ६९, पूर्ण। —स० वि० २५५५९

उ०—सौभाग्यभास्कर तथा महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

विलोममातृकाकवच

लि०—पूर्ण। —ब० प० १४१५

विवेकाञ्जन

भास्कराचार्य (?) कृत।

उ०—भट्ट दिवाकर वत्स कृत। ईश्वरप्रत्याभिज्ञाविमर्शिनी मे अभिनव गुप्त ने इसका उल्लेख किया है। —कैट कैट. १।५८१

विंशत्यङ्कत्रिवर्गयन्त्रनिरूपण

लि०—श्लोक स० १००। —अ० व० ७१७१

विशुद्धेश्वरतन्त्र

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, तारारहस्यवृत्ति तथा आगमतत्त्वविलास मे।

विशेषदीक्षाविधि

लि०—क्रियाक्रमद्योतिका के अन्तर्गत अघोर शिवाचार्य विरचित, (क) श्लोक स० ५००। (ख) श्लोक स० ५००। —अ० व० (क) ७९५८, (ख) ७९७४

विश्वसार

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, आगमतत्त्वविलास, कालिकासपर्याविधि, शतरत्नसग्रह तथा सर्वोल्लास मे।

विश्वसारतन्त्र

लि०—(१) महाकाल विरचित यह सब तन्त्रो का सारभूत महातन्त्र है। इसकी श्लोक सं० ५१०८ है। ८ पटलो मे यह पूर्ण है। इसमे प्रतिपादित विषय है—आगमनाम-निरुक्ति, माया (मूल प्रकृति) का माहात्म्य, सृष्टि, महामाया की प्रसन्नता से हरि, हर आदि सबकी प्रसन्नता, विन्दु और नाद का स्वरूप, पीठपूजा का प्रकार, योगलक्षण आदि, गुरु-शिष्य-लक्षण, षोडश मातृकाएँ, विविध चक्रो का वर्णन, दीक्षा-भेद वर्णन पूर्वक दीक्षाविधि, गुरु और शिष्य के कर्तव्य, विद्याकथन, गायत्रीकथन, गायत्री-वीजकथन, पुरश्चरण, छिन्नमस्तामन्त्र, प्रचण्डचण्डिकास्तोत्र, मद्य, मास आदि का वलिदान पूर्वक रजस्वला के नानाविध साधनाओ का विधान, कालिकार्चनविधि, दुर्गामन्त्रकथन गुह्यकालिका के वीजमन्त्र कथन आदि, महिषमर्दिनी, त्रिपुरसुन्दरी के वीजमत्र आदि तथा पूजोपयोगी द्रव्यो का निरूपण आदि। —रा० ला० ३१९२

(२) (क) पत्रे १२५, पूर्ण। (ख) पत्रे ५८, अपूर्ण। (ग) पत्रे २३, अपूर्ण। (घ) पत्रे ५७, अपूर्ण।

—व० प० (क) १२९९, (ख) १३००. (ग) १३०१, (घ) १४१२

विश्वसारोत्तरतन्त्र

लि०—उत्तरखण्ड, केवल ११ पटल, पूर्ण। —व० प० ७७०

उ०—शतरत्नसग्रह मे।

विश्वरूपनिबन्ध

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

विश्वसंहिता

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

विश्वकर्मासिद्धान्त

उ०—आगमकल्पलता मे।

विश्वाद्य

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चतु षष्टि (६४) तन्त्रो मे अन्यतम है।

विश्वामित्रकल्प

लि०—(१) इसमे द्विजो के दैनिक कृत्यो का वर्णन है। भूतशुद्धि, गायत्री-मन्त्र की दीक्षा तथा पुरश्चरण का प्रतिपादन है। —ए० व० ६०६२

(२) श्लोक स० १६००, इसमे द्विजो के दैनिक कृत्यो का वर्णन प्रात काल उठकर आत्मचिन्तन का प्रकार, देवता ध्यान की रीति,दन्तधावनादि प्रात कृत्य, स्नानविधि,रुद्राक्ष-धारण, भूतशुद्धि आदि का प्रकार, त्रिकाल सन्ध्याविधि, वेदादि मन्त्र पाठरूप ब्रह्मयज्ञ-विधि, अन्नशुद्धि आदि के प्रकार, प्रस्तुतान्न होम प्रकार रूप वैश्वदेव विधि, गोग्रास आदि, भोजनविधि, भक्ष्य पदार्थो की विधि, अभक्ष्य पदार्थो का निषेध, दीक्षा के लिए वेदी का निर्माण, दीक्षाप्रकार, गायत्री के पुरश्चरण की विधि, नित्य कर्तव्य कर्मो की विधि,गायत्री-मन्त्र से होमविधि का कथन आदि विषय वर्णित हैं। —रा० ला० ८८५

(३) (क) श्लोक स० ५४। यह २ य अध्याय के अन्त से आरभ होता है ४ र्थ अध्याय के अन्त तक है। (ख) श्लोक स० १५००। (ग) श्लोक स० ७५०।

—अ० व० (क) १३३६२ (ढ), (ख) १०६६६, (ग) १०६९२

विश्वामित्रसंहिता

लि०—(१) श्लोक स० २८००। —अ० व० ६६४०

(२) यह गायत्री-मन्त्र-प्रयोग और माहत्म्य का प्रतिपादक ग्रन्थ है। इसमे १मसे १२ वें तक १२ अध्याय पूर्ण हैं और १३ वाँ अधूरा है। —म० द० ४५११, ४५१२

(३) श्लोक स० लगभग ३६२, अपूर्ण। —स० वि० २५५५८

विश्वालयैकतन्त्र

लि०—श्लोक स० १२० (?) पूर्ण। यह १९ पटलो मे पूर्ण है।

—र० म०५२९८

विश्वावसुगन्धर्वमन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० २०। —अ० व० १३८४९

(२) श्लोक स० २८, सम्पूर्ण। इसका नाम "विश्वावसुगन्धर्वमन्त्रविधि" है।

—र० म० ११७८

(३) श्लोक स० २५, पूर्ण। —सं० वि० २५१३२

विश्वावसुगन्धर्वमन्त्रविधि

लि०—श्लोक स० ३०, अपूर्ण। —स० वि० २६५६६

विश्वावसुगन्धर्वराजतन्त्र

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। श्लोक स० ४२५, पूर्ण। —सं० वि० २५४६१

विषयपञ्चिका

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

विष्णुकल्पलता

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

विष्णुपूजापद्धति

लि०—चैतन्यगिरि कृत। रचनाकाल स० १७७९ वि०।

—कैट् कैट् १।५९१, २।१४०

विष्णुयामल (ज्योत्स्नाटीकासहित)

लि०—(१) (क) सबसे अधिक श्रेष्ठ महादेव को उमा के साथ प्रणाम कर सब लोगो के हितार्थ मैं विष्णुयामल का वर्णन करता हूँ। पुराने समय मे नारदजी के पूछने पर महादेवजी ने सब दोषो की निवृत्ति करने वाला और सब पुरुषार्थो का साधन तथा परम रहस्य यह विष्णुयामल तन्त्र कहा। इसके प्रथम भाग मे परशुदान विधि वर्णित है। (ख) ऊपर लिखी प्रति की ही यह नूतन प्रतिलिपि है। —तँ० म० (क) ६५०,(ख) ६५१

(२) विष्णुयामले गायत्र्यष्टोत्तरसहस्रनाम।

—कैट् कैट् १।५९२, ३।१२४

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव, सर्वोल्लास तथा स्पन्दप्रदीपिका मे।

इनके अतिरिक्त रुद्रयामलतन्त्र,प्राणतोषिणी तथा आचारार्क मे भी इसका उल्लेख है। श्रीकण्ठी के अनुसार यह चतु षष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है।

विष्णुरहस्य

लि०—शौनक आदि ऋषि और सूत सवादरूप, श्लोक स० ३८२८, अध्याय ६०। इसका आरम्भ इस प्रकार है—'यतो भूतानि जायन्ते यत्र तिष्ठन्ति तान्युत। यो हन्ति

मोक्षदस्तेषा तं विष्णुं प्रणमाम्यहम् ।। नैमिषे निमिषक्षेत्रे ऋषय शौनकादय । दीक्षिता वैष्णवे यज्ञे सूतं पप्रच्छुरादरात् ।।' —तै० म० १७७१

उ०—सौभाग्यभास्कर तथा प्राणतोषिणी मे।

विष्णुसहस्रनाम

लि०—कुलानन्द-संहिता मे भैरव-भरवी सवादरूप। यह प्रसिद्ध विष्णुसहस्रनाम, जो महाभारतान्तर्गत है, से भिन्न है। —ए० व० ६७५८

विष्वक्सेनसंहिता

लि०— —कैट् कैट् १।५९४

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

विसर-आगम

श्रीकंठी के मतानुसार यह अष्टादश (१८) रुद्रागमो के अन्तर्गत है।

विहगेन्द्रसंहिता

(पञ्चरात्र)

लि०—(१) यह वैष्णव पूजा तथा तान्त्रिक षट्कर्म—वशीकरण, स्तभन, मारण, मोहन आदि पर है। (क) सुदर्शनकल्प २२ पटलो मे श्लोक स० १२५०। (ख) परमेश्वर-क्रियापाद तथा सुदर्शनकल्प। —तै० म० (क) १७४१, (ख) ११४२०

(२) —कैट् कैट् १।५९४, २।१४१

वीणाजुष्ट

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी मे।

वीणातन्त्र

उ०—आक्सफोर्ड १०९ (क) मे इसका उल्लेख है।

—कैट् कट् १।५९४

वीरकल्प

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव मे।

वीरकाम्यार्चनविधि

लि०—श्लोक स० ७५, पूर्ण। —स० वि० २४८४३

वीरचूड़ामणि

लि०—(१) श्लोक स० ८००, पटल स० ११, पूर्ण।

—र० मं० ४८६४ (क)

(२) पटल १ से ११ तक। —कैट् कैट् २।१४१

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे।

वीरतन्त्र (१)

लि०-(१) इसमे १४ पटल है, परन्तु रा० ला० २२९ मे इसके १५ पटल कहे गये है। इसमे सपर्यापटल, पुरश्चरणपटल, कामनाविधिपटल, सिद्धविद्यापटल, आचारपटल, कालिकापटल आदि विषय वर्णित हैं।

—ए० व० ५९२५, ६१४६

(२) ब्रह्मा-विष्णु सवादरूप, इसमे छिन्नमस्ता की पूजा वर्णित है। इसके विषय है—मन्त्र-माहात्म्य का कथन, करन्यास और अङ्गन्यास का निरूपण, १६ प्रकार के न्यासो का वर्णन, छिन्नमस्ता की पूजाविधि, जप आदि का प्रतिपादन, छिन्नमस्तास्तोत्र तथा च्छिन्नमस्तापटल आदि। —ने० द० २।२४६ (च)

(३) यह १५ पटलो मे पूर्ण है। इसमे प्रतिपादित विषय हैं—गुरुरहस्य, ताराप्रकरण, मन्त्रोद्धार, पूजा-क्रम, पुरश्चरणविधि काम्यकर्म का निर्णय, दक्षिणकालिकाप्रकरण, गुप्तविद्यारहस्य। व्यस्तसमस्तादि कथन, निग्रहकथन, महावीरक्रम, महाविद्यानुष्ठान, उग्रचण्डाप्रकरण, मन्त्रकोपादि कथन तथा रोग आदि का प्रतीकार।

—रा० ला० २२९

(४) १३ पटल तक पूर्ण। —ब० प० १४०९

(५) —कैट् कैट् १।५९४, १।१२५

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव, श्यामारहस्य, तन्त्रसार, शक्तिरत्नाकर, आगमतत्त्वविलास, तारारहस्यवृत्ति तथा श्यामारहस्य मे।

वीरतन्त्र (२)

लि०—हर-गौरी सवादरूप, श्लोक स० ४२०, इसमे वशीकरण, उच्चाटन, मोहन, स्तम्भन, शान्तिक, पौष्टिकादि विविध उपाय कहे गये हैं। (यह पूर्व वर्णित वीरतन्त्र से भिन्न है) —रा० ला० २६८

वीरतन्त्र (३)

लि०—ब्रह्म-विष्णु सवादरूप इस तन्त्र मे छिन्नमस्ता देवी की भोग-मोक्षप्रद पूजाविधि, छिन्नमस्तामन्त्र, मन्त्रोद्धार, ध्यान, आवाहन आदि तथा कवच वर्णित है। मन्त्र-माहात्म्य, करन्यास, अङ्गन्यास, छिन्नमस्ता-पूजा, जप आदि कथन, छिन्नमस्तापटल तथा ब्रह्मप्रोक्त छिन्नमस्तास्तोत्र। —ने० द० २।१२५

वीरतन्त्रयामल

उ०—प्राणतोषिणी तथा शिवराज कृत विज्ञानभैरव-टीका मे।

वीरतन्त्रसारसंग्रह

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

वीरभद्रतन्त्र

लि०—(१) शिव-पार्वती सवादरूप। यह उड्डीशकोषशास्त्र तथा उड्डीशमन्त्रसार भी कहा गया है। (देखिए, ए० व० ५८३९, ४०) इसमे मन्त्र, यन्त्र आदि वहुत वर्णित हैं। —ए० व० ५८३६

(२) पार्वती-ईश्वर सवादरूप। इसमे ४ पटल हैं। उनमे प्रतिपादित विपय हैं—भूतो का आकर्षण, मोहन आदि, विशोषण आदि, उच्चाटन, स्तभन, वशीकरण आदि। —नो० स० १।३३९

(३) १७ पटल पर्यन्त, पूर्ण। —व० प० १३९०

(४) —कैट् कैट् १।५९४, २।१४१, ३।१२५

(५) श्लोक स० २५१, पूर्ण। —स० वि० २४६०५

उ०—मन्त्रमहार्णव, आगमतत्त्वविलास तथा प्राणतोपिणी मे।

वीरभद्रतन्त्रोक्तप्रयोग

लि०—शिव-शिवा सवादरूप। इसमे वहुत-से मन्त्र, जिनका प्रयोग इन्द्रजाल आदिमे होता है, हिन्दी मे वर्णित हैं। उक्त मन्त्र वीरभद्रतन्त्र से लिये गये हैं। —ए० व० ६२८३

वीरभद्रमहातन्त्र

लि०—श्लोक स० ३३६, पूर्ण। —स० वि० २५३२५

वीरभद्रवाडवानलमन्त्र

लि०—शिवागमसार से गृहीत, श्लोक स० ५०। —अ० व० १३८५४

वीरभद्रागम

श्रीकण्ठी के अनुसार यह अष्टादश (१८) रुद्रागमो के अन्तर्गत है।

वीरभद्रकालीकवच

लि०—इसमे वीरभद्रतन्त्रान्तर्गत कालीकवच प्रतिपादित है।

—वी० कै० १३७०

वीरभद्रयामल

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

वीरभद्रोड्डीश

उ०—मन्त्रमहार्णव तथा सर्वोल्लास मे।

वीरबाहुमन्त्र आदि

लि०—श्लोक स० ८७५। इसमे वीरभद्रमन्त्र, वालास्तव और गरुडकवच है।

—अ० व० ७०६९

वीरयामल

उ०—विज्ञानभैरवटीका शिव उपाध्याय कृत मे।

वीररात्र्यादिनिर्णय

लि०—श्लोक स० १५, अपूर्ण। —स० वि० २६०९६

वीरसाधन

लि०—(क) श्लोक स० ४२, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ५८, चितासाधन भी इसमे सनिविष्ट है। पूर्ण। —स० वि० (क) २४०६६, (ख) २४६९८

वीरसाधनविधि

लि०—श्लोक स० ७८, पूर्ण। —स० वि० २६१३६

वीरसाधनाविधि

लि०—नृसिह ठक्कुर कृत। श्लोक स० १४८, पूर्ण। —स० वि० २५०९५

वीरागम

लि०—(१) मुद्रा और न्यास पर। पटल स० १ से २५ तक। नवीन, अतिशुद्ध परन्तु खण्डित (अपूर्ण)। —तै० म० ६७२१

(२) द्रष्टव्य, वीरशैवागम । —कैट् कैट् १।५९६, २।१४२

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव तथा वीरशैवानन्दचन्द्रिका मे ।

वीरातन्त्र

उ०—तन्त्रसार मे ।

वीरावली

उ०—तन्त्रालोक की टीका जयरथी मे ।

वीरेन्द्रकल्प

लि०—श्लोक स० ३६, अपूर्ण । —स० वि० २४५२२

वीरेश्वरसंवाद

लि०—(१) स्कन्द-पुराणकाशीखण्डान्तर्गत । वीरेश्वर शिवजी के पूजन, व्रत आदि पर यह ग्रन्थ है । पुत्रकामना से स्त्रियाँ इनकी पूजा, व्रत आदि करती हैं ।

—क० का० ८४

(२) स्कन्दपुराण-काशीखण्ड से गृहीत (अध्याय ८२,८३) ।

—कैट् कैट् ३।१२५

वृद्धगौतमतन्त्र

लि०—श्लोक स० लगभग १४०४, अपूर्ण । —स० वि० २३९५१

वृन्दावनरहस्य

लि०—श्लोक स० २११ । —अ० व० १२९००

वृषसारसंग्रह

लि०—यह शैव तन्त्रग्रन्थ है । —ने० द० १।३६ (ग)

वेतालकल्प

लि०— —कैट् कैट् २।१४४

वेतालतन्त्र

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चतु पष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है ।

वेदपारायणविधि

लि०—(१) श्लोक स० ३० । —अ० व० १२९२

(२) महार्णव से गृहीत । —कैट् कैट् १।६०४

वेदरहस्य

उ०—योगिनीहृदयदीपिका मे।

वैखानसतन्त्र

लि०—(१) मरीचि विरचित। पटल १म से ५० तक। महामुनिश्रेष्ठ मरीचि जब स्वशिष्यो द्वारा विछाये गये आसन पर विराजमान थे नाना लोक निवासी श्रेष्ठ-श्रेष्ठ ऋषियो ने उनके निकट आ उन्हे प्रणाम कर पूछा—'भगवन्, किन मन्त्रो से किस देव की पूजा कर रहे लोग स्वकीय लोक को जाते है?' मरीचि ने उत्तर दिया 'मानव प्रसन्न परमात्मा नारायण का ध्यान कर, उनका अभिवादन कर वैदिक मन्त्रो द्वारा भगवान् की पूजा करे, ऐसा करने से परमधाम की प्राप्ति होती है।' —तँ० म० ३६५२

(२) —कैट् कैट् १।६१०

वैखानसागम

लि०—(१) भृगुद्वारा प्रोक्त, (क) यज्ञाधिकार। श्लोक स० २४६०। इसमे भगवान् विष्णु के यज्ञ, पूजन आदि का विशद रूप से प्रतिपादन किया गया है। यह ग्रन्थ ४९ अध्यायो मे पूर्ण है।

(ख) क्रियाधिकार, श्लोक स० ३६९०, अध्याय स० ३५। इसमे भगवान् की प्रतिमा-प्रतिष्ठा तथा पूजा की विधि वर्णित है।

(ग) यज्ञाधिकार, नित्याग्निकार्य विशेष श्लोक स० ६२८०। इसमे ४८ अध्याय है।

(घ) श्लोक स० २३६०, अर्चनाधिकार इसमे ३८ अध्याय है।

—ट्रि० कै० (क) १०३७, (ख) १०३८, (ग) १०३९, (घ) १०४०

(२) —कैट् कैट्. १।६१०

उ०—परशुरामप्रकाश मे।

वैदिकतान्त्रिकाधिकारनिर्णय

लि०—भडोपनामक दक्षिणाचारमतप्रवर्तक काशीनाथ विरचित। इसमे उपासको या पूजको की रुचि के अनुसार उनके वैदिक, तान्त्रिक, वैदिकतान्त्रिक, तान्त्रिक-वैदिक आदि विभिन्न भेद दिखलाये गये हैं। —ए० व० ६२२५

वैदिकसर्वस्व

लि०—कृष्णानन्द विरचित। श्लोक सं० १०००। —अ० व० १०१९३

वैवस्वततन्त्र

(युगलाष्टकस्तोत्र मात्र)

लि०—पूर्ण। —व० प० १०१७

वैशम्पायनसंहिता

उ०—पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, आगमकल्पलता, तन्त्रसार, शाक्तानन्दतरङ्गिणी, आगमतत्त्वविलास तथा ललितार्चनचन्द्रिका मे।

वैश्वानरतन्त्र

उ०—मन्त्रमहार्णव मे।

वैष्णवतान्त्रिकपूजा

श्रीकृष्णपूजापद्धति सहित

लि०—पूर्ण। —व० प० १३८

वैनायकसंहिता

लि०—महेश्वर-भार्गव सवादरूप। श्लोक स० २२०। इसमे हरिद्रागणपतिप्रयोग, तत्सम्वन्धी मन्त्र तथा यन्त्रो के निर्माण का प्रकार प्रतिपादित है। यह सम्पूर्ण ग्रन्थ ८ पटलो मे विभक्त है। —ट्रि० कै० १०४१ (क)

वैष्णवपूजाध्यानादि

लि०—श्लोक स० ६७५०। इसमे वैष्णव और शैव पूजापद्धतियो का स्पष्टीकरण किया गया है। —ट्रि० कै० १०४३ (क)

वैष्णवरहस्य

लि०—यह ग्रन्थ ४ प्रकाशो मे पूर्ण है। इसमे नामोपदेश, गुरुपद का आश्रय, आराध्य का निर्णय, साध्य के साधन का निरूपण आदि विषय वर्णित हैं। ग्रन्थकार ने लिखा है—

गुरुणा कथित यद् यद् रहस्य वैष्णवान्वये।
तदेव लिखित किञ्चित् न तु स्वमतिवैभवात्॥

—नो० स० १।३४४

वैष्णवामृत

लि०—भोलानाथ शर्मा द्वारा विरचित, श्लोक स० १५७२। गुरु बनाने की आवश्यकता, सद्गुरु का लक्षण, निषिद्ध गुरु का लक्षण, गुरुशब्द की व्युत्पत्ति, शिष्य का लक्षण,

दीक्षा के अधिकारी का निर्णय, मन्त्र शब्द तथा दीक्षा शब्द की व्युत्पत्ति, दीक्षा अवश्य लेनी चाहिए यह कथन, आगम शब्द का अर्थ, नक्षत्र, राशिचक्र आदि का विचार, वैरी मन्त्र के परित्याग का प्रकार, दीक्षा मे मास, तिथि, वार आदि का कथन, जपमाला का निर्णय आदि,जपसख्या गणना करने मे विहित और अविहित द्रव्य आदि का निर्देश, विष्णुपूजा-विधि, विष्णु-पूजा मे दिशा का निर्णय, माला के सस्कार की विधि, आसनभेद, हरिनाम-ग्रहण की विधि, विष्णु-मन्त्रोपदेश, वैष्णवो की षट्कर्मविधि का निर्देश इत्यादि विषय प्रतिपादित है।
—रा० ला० ५६३

वैष्णवामृतसंग्रह

लि०—प्राणकृष्ण विरचित। श्लोक स० २११०, पूर्ण। लिपिकाल १७४८ शकाब्द।
—स० वि० २४४१४

वैष्णवीकल्प

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

वैष्णवीसंहिता

उ०—आगमकल्पलता मे।

वैहायसीमन्त्रकोष

उ०—शारदातिलक की टीका राघवभट्टी मे।

व्यावहारिक प्रज्ञापत्रिका

लि०—श्लोक स० ११। इसमे श्रीचक्र के निर्माण की विधि प्रदर्शित है।
—अ० व० ६१९२

व्योमकेशसंहिता

उ०—श्यामापूजाव्यवस्था मे।

शकुन

लि०—रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० ६७५, पूर्ण। —र० मं० ४०४१

शक्तिकागमसर्वस्व या शक्तयागमसर्वस्व

लि०—योनिकवचमात्र, पूर्ण। —व० प० ५२०

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे।

शक्तिचक्रतन्त्र

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चतु षष्टि (६४) तन्त्रो मे अन्यतम है।

शक्तितन्त्र

लि०—(१) पार्वती-ईश्वर सवादरूप, श्लोक स० ३०६। यह अपूर्ण (५ म पटल तक) है। इसमे वर्णित विषय हैं—महाकाली के अश से जगत् की उत्पत्ति, परा, पश्यन्ती, मध्यमा तथा वैखरी शक्तियो का निरूपण, दुर्गादि नामो का माहात्म्य, त्रिशक्तिके १०० नाम, त्रिशक्ति-भेद कथन पूर्वक दुर्गा-मन्त्र निरूपण, षडङ्गन्यास आदि कथन, पुरश्चरणविधि, पूजा सामग्री-निरूपण, बलिदान योग्य पशु तथा पक्षियो का निरूपण, ध्यान, यन्त्र आदि, नव शक्तियो की पूजादि-विधि, भुवनेश्वरी आदि शक्तियो का वर्णन, भुवनेश्वरी, विपुला, शूलिनी, वज्रप्रस्तारिणी, नित्या, महिषमर्दिनी, शक्तिगायत्रीके मन्त्र, ध्यान आदि, त्रिपुराके मन्त्र, ध्यान आदि, पुरश्चरणविधि, पश्यन्ती शक्ति गणना आदि। —रा० ला० २२०१

(२) पार्वती-ईश्वर सवादरूप यह तन्त्र १३ पटलो मे पूर्ण है। इसमे सिद्धियोग कथन, आकर्षण, स्तभन आदि कर्मो मे ऋतुभेद, दिशा आदि का नियम, मारण आदि मे माला-विधानकथन पूर्वक जपविधि, आसनादिविधि, शवसाधनविधि, कुलवृक्षादिविधि, दूती-यागविधि, सवित् और आसव की विधि, सवित् आदि के शोधन की विधि, पञ्चमकार-विधि, शक्ति का निरूपण, कुलीनो की पुरश्चरणविधि, कुमारीपूजनविधि, पञ्च मकार से अन्तर्यजन की विधि, शाक्ताभिषेकविधि आदि विषय वर्णित है।

—नो० स० ११३४८

(३) चतुर्थ पटल मात्र, श्लोक स० लगभग ९२, पूर्ण।

—स० वि० २६४७५

उ०—आगमन्ततत्त्व विलास मे।

शक्तिन्यास

लि०—(१) योगिनीमत से गृहीत, श्लोक स० १६०। —अ० ब० ८४९७

(२) इसमे देवी के मूल मन्त्र के पदो का उच्चारण करते हुए शरीर के विशेष-विशेष अवयवो की स्पर्शक्रिया, जो अङ्गन्यास नाम से प्रसिद्ध है, प्रतिपादित है।

—म० द० ५७२२

(३) श्लोक स० लगभग १००, अपूर्ण। —स० वि० २६२३९

शक्तिपूजन

लि०—कादिमतानुसार, श्लोक स० १४० । —अ० व० ७१५५

शक्तिपूजनविधि

लि०—रुद्रयामल से गृहीत, श्लोक स० १०० । —अ० व० ९५८०

शक्तिपूजा

लि०—(१) यह शक्ति पूजा पर विविध तन्त्रो से सगृहीत है।

—वी० कै० १३१९

(२) —कैट् कैट् १।६२३

शक्तिपूजातरङ्गिणी

लि०—काशीनाथ कृत, श्लोक स० लगभग ८७, पूर्ण। —स० वि० २५२९५

शक्तिपूजापटल

लि०—श्लोक स० ६२, पूर्ण। —स० वि० २६४२३

शक्तिपूजापद्धति

लि०—श्लोक स० लगभग ११५, शक्तिस्तोत्र के साथ। —स० वि० २४५५२

शक्तिपूजाविधि

(१) देवीपूजाविधि आदि ७ पुस्तकें इसमे सन्निविष्ट है। सबकी समिलित श्लोक स० ६४०, पूर्ण । —स०वि० २६२५४

शक्तिभैरवतन्त्र

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी मे।

शक्तियामल

उ०—पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, तन्त्रसार, रुद्रयामल, शक्तिरत्नाकर तथा शाक्तानन्द तरङ्गिणी मे।

शक्तिरत्नाकर

लि०—(१) राजकिशोर विरचित। यह ५ उल्लासो मे पूर्ण है। शक्ति की महिमा, महाविद्याओ की सूची (तालिका) आदि विषय इसमे वर्णित है।

—ए० वं० ६२१६

(२) यह ५ उल्लासो मे पूर्ण है। इसकी श्लोक स० ९३६ कही गयी है। उक्त पाँच उल्लासो मे प्रतिपादित विषय ये हैं—१म मे ब्रह्मनिरूपण, २य मे दुर्गास्वरूपनिरूपण, ३य मे भगवती के नाम का माहात्म्य, ४र्थ मे दुर्गाराधन-माहात्म्य, ५ म मे श्रीविद्या और महाविद्या का निरूपण। —रा० ला० २४२

(३) शक्ति का प्रतिपादक यह ग्रन्थ देवीपुराण, कालिकापुराण, कूर्मपुराण, वृहत्स्वयभू, मार्कण्डेय, स्कन्द आदि पुराणो तथा कुलचूडामणि, शक्तियामल, ज्ञानार्णव आदि तन्त्रो से सगृहीत है और ५ उल्लासो मे पूर्ण है। —क० का० ९४

(४) —कैट् कैट् १।६२३

(५) प्रथम और द्वितीय उल्लास मात्र, श्लोक स० लगभग ४००, अपूर्ण।
—स० वि० २६३८१

शक्तिरहस्य

उ०—सौभाग्यभास्कर मे।

शक्तिरहस्य (व्याख्यासहित)

लि०—व्याख्या का नाम-अर्थदीपिनी। व्याख्याकार—अरुणाचार्य, श्लोक स० ५०००, (२०००+३०००) वैराग्यखण्ड और ज्ञानखण्ड मात्र।
अ० व० ९६५८ (क)

शक्तिसंगमतन्त्र

लि०—(१) यह अक्षोभ्य-महोग्रतारा (शिव-पार्वती) सवादरूप है। इसमे चार खण्ड हैं—(१) कालीखण्ड, (२) ताराखण्ड, (३) सुन्दरीखण्ड और (४) छिन्नमस्ताखण्ड। पूर्ण तन्त्र मे ६०००० श्लोक हैं। इसके १ म और ३ य खण्ड मे २०–२० पटल है एव ४ थे खण्ड मे ११ पटल और २ य खण्ड मे ६५ पटलो का उल्लेख मिलता है। पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध भेद से इसके दो भाग हैं। पूर्वार्द्ध का नाम कादि और उत्तरार्द्ध का नाम आदि है। कादि मे ४ खण्ड और हादि मे ४ खण्ड। इस प्रकार इसके ८ खण्ड हैं। प्रत्येक खण्ड मे तीन हजार छह सौ श्लोक हैं। —इ० आ० २५८९

(२) इसमे चार खण्ड हैं। प्रत्येक खण्ड का नाम स्पष्ट रूप से कहा नही गया है। ३ य खण्ड के १० और ११ वें पटलो की पुष्पिका मे क्रमश तपस्याखण्ड और कालीखण्ड नाम प्राप्त होते हैं। —ए० व० ५९५१-५२ तथा ६१५९-६०

(३) अक्षोभ्य-तारा सवादरूप। (क) श्लोक स० १८०० (१० म पटल पर्यन्त)। (ख) श्लोक स० २००० (२० वे पटल तक)। (ग) श्लोक स० ७००० (चारो खण्ड)। (घ) श्लोक स० ७०० (६ पटल पूरे ७ वाँ आरम)।

अ० व० (क) १३७६३, (ख) १३७६४, (ग) ५६०३, (घ) १०४१८

(४) १ म खण्ड के ९ वे पटल के कुछ अश तक (८ पटल पूरे ९ वाँ अधूरा) अपूर्ण।

—व्र० प० १२२८

(५) श्रीमदक्षोभ्य-तारा सवादरूप। इसमे ४ खण्ड हैं। १म खण्ड मे २० पटल हैं। उनमे प्रतिपादित विषयो मे मुख्य-मुख्य हे—अकाराक्षर का तत्त्व कथन, भूगोल वर्णन, सत्य आदि युगो का निर्णय, देवीशक्ति आदि का अष्टगुण करण, पूजापात्र का निर्णय, ऋणी तथा धनी चक्रो का वर्णन, नाना देवताओ के नामो का विवरण, दीक्षा का विवरण, प्रदोप के समय करणीय कर्म, पूजा के द्रव्य आदि का निर्देश, साधक के पूर्णाभिषेक आदि का निरूपण, तारासिद्धिप्रयोग आदि।

२ य खण्ड मे ६५ पटल मिलते हैं। उनमे प्रतिपादित विषय जैसे—तन्त्र आदि ग्रन्थो के नाम, उनकी श्लोक सख्या, षोडश महाविद्याओ का साधन प्रकार आदि, तन्त्रोक्त विधि से साधक के सस्कार, शाक्त आम्नाय आदि का कथन, काली-मन्त्र और उनके साधन का प्रकार, यक्षिणी, गन्धर्व आदि के समूह का कथन, महाविद्या की सिद्धि का प्रकार आदि। ३ य खण्ड का आदि भाग खण्डित है। २० पटलो मे खण्ड की समाप्ति दिखलायी देती है। —रा० ल० ४०५

(६) यह मौलिक तन्त्र शाक्त सम्प्रदाय के सब विषयो का साकल्येन प्रतिपादक है। यह ६०००० श्लोकात्मक कहा गया है। यह ४ खण्डो मे विभक्त है। १ म खण्ड में २०, २ य मे ६५, ३ य मे १९ तथा ४ र्थ मे ११ पटल है। —व्री० कैं० १३२०

(७) शिवप्रोक्त, पूर्ण। —ज० का० १०८०

(८) (क) श्लोक स० १७३३, प्रथम खण्ड मात्र, पूर्ण। (ख) श्लोक स० १५३०, पूर्ण (सभवत यह द्वितीय खण्ड, तृतीय खण्ड या चतुर्थ खण्ड मे कोई एक खण्ड होगा)। (ग) श्लोक स० १२४८, पूर्ण। (घ) श्लोक स० २०७९, पूर्ण। (ङ) श्लोक स० १६३२, पूर्ण।

[यहाँ दी गयी श्लोक स० पृथक्-पृथक् खण्डो की है, पूर्ण ग्रन्थ की नही]।

—स० वि० (क) २३९३०, (ख) २३९३१, (ग) २४५२७, (घ) २४५३६, (ङ) २६१९१

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा प्राणतोषिणी मे।

शक्तिसंगमतन्त्रराज

लि०—श्लोक स० लगभग २५२५, पूर्ण ।

—स० वि० २४९२७

शक्तिसिद्धान्तमञ्जरी

लि०—श्लोक स० लगभग २००, पूर्ण । —स० वि० २३९५७

शक्तिसूत्र (१)

नामान्तर—नित्यनैमित्तिकविधि ।

लि०—इसमे शक्ति के उपासको के दैनिक कृत्य वर्णित है ।

—ने० द० १।६१९ (घ)

शक्तिसूत्र (प्रत्यभिज्ञाहृदय) (२)

उ०—सौभाग्यभास्कर मे ।

शक्तिसूत्र (३)

अगस्त्य कृत । द्रष्टव्य, सरस्वती भवन स्टडीज खण्ड १० ।

लि०—अगस्त्यकृत, श्लोक स० ५४४ पूर्ण । —स० वि० २६६७६

शक्त्यादिपञ्चतत्त्वनिरूपण

लि०—शारदातिलक का टिप्पण रूप । पूर्ण, श्लोक स० लगभग १०० ।

—स० वि० २६१४८

शतचण्डीपद्धति

लि०—(१) गोविन्द (कृत) सरलीकृत, (क) श्लोक स० ११०० (१ म और २ य खण्ड) । (ख) श्लोक सख्या ११०० (१ म और २ य खण्ड) गोविन्द दशपुत्र कृत । (ग) श्लोक सख्या ११०० (१ म और २ य खण्ड) गोविन्द दशपुत्र कृत । (घ) श्लोक सख्या ५०० ।

—अ० व० (क) १०५०, (ख) ५१५६, (ग) ५७९६, (घ) १०५५७

(२) श्लोक स० ९२८, पूर्ण । —डे० का० ३९९ (१८८२-८३ ई०) ।

(३) गोविन्द विरचित । —कैट् कैट् १।६३१, २।१४९, ३।१३१

शतचण्डीपूजन

लि०—श्लोक स० ३२० । —अ० स० ७६४३

शतचण्डीप्रयोग

लि०—(१) चित्पावनकर नृसिंहभट्ट-पौत्र नारायणभट्ट-पुत्र श्रीकृष्णभट्ट विरचित। यह मन्त्रमहोदधि के १८ वें तरङ्ग से आरम होता है। —ए० व० ६४०८

(२) (क) शिवराम विरचित, श्लोक स० ७५ । अपूर्ण ।
(ख) श्लोक स० ७५, अपूर्ण ।
—अ० व० (क) ९१२८, (ख) ८६३०

(३) मन्त्रमहोदधि के अन्तर्गत । नारायणभट्ट-पुत्र श्रीकृष्णभट्ट कृत, श्लोक स० १७५, पूर्ण । —र० म० ४६३४

(४) नारायणभट्ट-पुत्र कृष्णभट्ट विरचित ।
—कैट् कैट् २।१४९, ३।१३१

शतचण्डीविधान

लि०—(१) इसमे प्रतिपादित विषय ये है—चण्डिकातर्पण, सूर्यार्घ्यदान, वरुण, कलशस्थापन, प्राणप्रतिष्ठा, अन्तर्मातृका, वहिर्मातृका, एकादश न्यास, गणपतिपीठ-स्थापन, पूजन, वलिदान, ग्रहपूजन, योगिनीपूजन, खातपूजन, कुण्डपूजा, योनिपूजन, योगिनियो के निमित्त वलिदान आदि । —इ० आ० ६-१५

(२) (क) श्लोक स० ४५० । (ख) श्लोक स० ६०० । (ग) श्लोक स० ३५० । (घ) श्लोक स० ४०० । (ङ) श्लोक स० ५०० । (च) श्लोक स० १२०, अपूर्ण। (छ) श्लोक स० ३०० । (ज) श्लोक स० ४५० । (झ) श्लोक स० २०० ।
—अ० व० (क) १२३४, (ख) २३९७, (ग) १२०१, (घ) ९२६, (ङ) ३४९६, (च) ३४९७, (छ) ३४९८, (ज) ९७६२, (झ) १०४६५

(३) अपूर्ण । सप्तशतीविधान मे सनिविष्ट । —स० वि० २५४०२

शतचण्डीविधानपूजापद्धति

लि०—श्लोक स० ३८५, सम्पूर्ण । —र० म० ४७००

शतचण्डीसहस्रचण्डीपद्धति

लि०—नरहरि-पुत्र सामराज विरचित, (क) श्लोक स० १२००। (ख) श्लोक स० १२००। —अ० व० (क) ९६५६, (ख) ५७९८

शतचण्डीसहस्रचण्डीप्रयोगपद्धति

लि०—अपूर्ण। —रा० पु० ७१२९

शतचण्डीहोमविधि

लि०—श्लोक स० ९४, पूर्ण। —र० म० ४७९६।

शतचण्ड्यादिप्रदीप

लि०—भारद्वाज महादेव-पुत्र दिवाकर सूरि विरचित। इसमे शतचण्डी तथा सहस्र-चण्डी आदि के सम्बन्ध मे प्रमाण और प्रमेय का प्रतिपादन है, एव रुद्रयामल आदि के अनुसार शतचण्डी नियम दिये गये हैं। —ए० व० ६४०७

शतमङ्गला

लि०—श्लोक स० १००। —अ० व० ३५००

शतरत्नसंग्रह

उमापति शिवाचार्य (चिदम्बर के) कृत

यह मतङ्ग, मृगेन्द्र, किरण, देवीकालोत्तर, विश्वसार और ज्ञानोत्तर आगमो का सारसग्रह रूप है। इस पर सद्योज्योति, रामकण्ठ, नारायण और अघोर शिवाचार्य की टीकाएँ है।

शताङ्क

नामान्तर—यन्त्रश्लोकव्याख्या।

लि०—श्रीहर्ष कृत, श्लोक स० १५०। —अ० व० ९०८६

शत्रुनिग्रहप्रयोग

लि०—(क) श्लोक स० २०, पूर्ण। (ख) श्लोक स० १६, पूर्ण। (ग) पुरश्चरणविधि तथा शीतलाकवच के साथ सनिविष्ट। समिलित श्लोक स० १०८, पूर्ण।
—स० वि० (क) २४५४१, (ख) २५७६९, (ग) २६४६१

शत्रुविमोचन नामक वगलामुखीकवच

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत उमामहेश्वर सवादरूप। इसमे वगलामुखी के मन्त्रो से आत्मरक्षा प्रतिपादित है। देवी श्रीवगलामुखी के कवच पाठ से सव सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। श्लोक स० २८। —रा० ला० ९९०

शत्रूच्चाटनादिप्रयोग

लि०—उड्डामरतन्त्रान्तर्गत, श्लोक सं० लगभग १०५, अपूर्ण।
—स० वि० २४४९७

शनैश्चरकवच

लि०—दगरथ कृत यह स्तोत्र, जो शनि और दशरथ के मवादरूप मे है, स्तोत्र-रत्नाकर मे मुद्रित शनैश्चरस्तोत्र से मेल नही खाता। उसके अन्तिम अश मे यह दगरथ कृत वतलाया गया है। —ए० व० ६७८८

शब्दप्रकाश या दीपप्रकाशटिप्पन

लि०—(१) प्रेमनिधि शर्मा विरचित श्लोक स० ३२१०।
इसमे ग्रन्थकार ने स्वनिर्मित दीपप्रकाश मे आये कठिन पदो का अर्थ स्पष्ट किया है। —रा० ला० २०५६

(२) यह ग्रन्थकार द्वारा रचित स्वग्रन्थ दीपप्रकाश की टीका है।
—ए० व० ५६११ (क)

शम्भु-ऐक्यदीपिका

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

शम्भुनाथार्चन

लि०—शिव-पार्वती सवादरूप, श्लोक स० ४०। इसमे महादेवजी के ध्यान, मन्त्र आदि प्रतिपादित हैं। —रा० ला० ३६९

शय्याशुद्धि

लि०—श्लोक स० लगभग २०, पूर्ण। —स० वि० २४५५८

शय्याशोधन

लि०—श्लोक स० १६, पूर्ण। —स० वि० २४५४५

शय्यासाधन

लि०—श्लोक स० लगभग ४४। इसमे त्रिपथ-साधन, चतुष्पथ-साधन, विल्वमूल-साधन तथा त्रिमुण्डसाधन की विधि भी सनिविष्ट है। —स० वि० २४७७८

शरन्निशा

(बृहत् टीका)

यह नारायण कण्ठ कृत है।

शरभकल्प

लि०—श्लोक स० ४५०। —अ० व० ९८२० (डी)

शरभकवच

लि०—(क) आकाशभैरव तन्त्र के अन्तर्गत, श्लोक स० ११०।
(ख) श्लोक स० १०५। (ग) श्लोक स० १४०, अपूर्ण।
(घ) श्लोक स० ५०।
—अ० व० (क) ५१५७, (ख) ८१५९, (ग) ५७३८, (घ) ९८२०

शरभतन्त्र

लि०—(१) —कैट् कैट् ३।१३२
(२) श्लोक स० ४५०, अपूर्ण। —स० वि० २४८११

शरभदारुणसप्तक

लि०—श्लोक स० ३०। —अ० व० ६०४६

शरभपञ्चाङ्ग

लि०—(ग) आकाशभैरवकल्पान्तर्गत, (क) शरभपटल, (ख) शरभकवच, (ग) शरभपद्धति, (घ) शरभहृदय, (ङ) शरभ-सहस्रनामस्तोत्र आदि इसमे वर्णित हैं। —ए० व० ६४८५
(२) (क) शरभकवच, आकाशभैरवकल्पान्तर्गत, पूर्ण।
(ख) शरभसहस्रनाम, आकाशभैरवकल्पान्तर्गत, पूर्ण।
(ग) शरभसहस्रनाम, आकाशभैरवकल्पान्तर्गत, पूर्ण।
—र० म० (क) ४८६७, (ख) ४४९५, (ग) ४८५६

(३) आकाशभैरव कल्पान्तन्तर्गत, श्लोक स० २४२, अपूर्ण।

—स० वि० २५४४४

शरभपद्धति

लि०—(१) (क) मल्लारि कृत, श्लोक स० ८००, अपूर्ण।

(ख) श्लोक स० २४०, अपूर्ण।

—अ० व० (क) ५६७५, (ख) ५१५८

(२) श्लोक स० ११३, अपूर्ण। —स० वि० २६५३७

(३) —कैट् कैट् १।६३७

शरभपूजापद्धति

लि०—(१) आकाशभैरवतन्त्रार्गत, उमा-महेश्वर सवादरूप। इसमे पक्षिराज शरभ के पूजा-प्रकारो का वर्णन है। यह लगभग३२५ श्लोकात्मक ग्रन्थ है।

—नो० स० २।२०७

(२) मल्लारि कृत, श्लोक स० ८००। —अ० व० ५६३०

शरभमन्त्र

लि०—श्लोक स० ३०। अ० व० ५१६०

शरभमन्त्रराज

लि०—अपूर्ण। —र० म० ५००२

शरभमन्त्रविधि

लि०—श्लोक स० लगभग ५०, अपूर्ण। —स० वि० २६३०९

शरभविधान

लि०—(१) वर्तुलातन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० लगभग १००, पूर्ण।

—स० वि० २६१७२

(२) —कैट् कैट् १।६३७

शरभसालुव

लि०— श्लोक स० ३००। —अ० व० १०४२५

शरभशालुवपक्षिराजकल्प

लि०—श्लोक स० लगभग ४६०, अपूर्ण। —स० वि० २४६३७

शरभस्तोत्र

लि०—श्लोक स० ३१, पूर्ण। —र० म० ४४९४

शरभार्चनचन्द्रिका

लि०—सदाशिव विरचित। —कैट् कैट् १।६३७

शरभार्चापारिजात

लि०—(१) आपदेव-पुत्र रामकृष्ण विरचित, (क) श्लोक स० १००।
(ख) श्लोक स० ११००, आरम मे अपूर्ण।
(ग) प्रथम स्तवक मात्र।

—अ० व० (क) १२६१५, (ख) ५६३७, (ग) ९७०७

(२) नीलकण्ठवशीय आपदेव-सुत भवानीगर्भज रामकृष्ण दैवज्ञ विरचित।

—रा० पु० ५६४१

(३) रामकृष्ण विरचित, श्लोक स० २१७४, पूर्ण, तन्त्रसारोद्धार से सकलित।

—स० वि० २५८२७

शरभेशकवच या शरभेश्वरकवच

लि०—(१) आकाशभैरवकल्पान्तर्गत, उमा-महेश्वर सवादरूप। यह शरभेश-कवच भूत, प्रेत आदि के भय की निवृत्ति के लिए धारण किया जाता है और प्रत्यक्ष सिद्धि-प्रद है। —नो० स० २१२०८

(२) आकाशभैरवकल्प से गृहीत।

—कैट् कैट् १।६३७

शरभेश्वरतन्त्र

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

शरभेश्वरपूजा

लि०—इसमे शरभेश्वर देव की पूजा-प्रक्रिया प्रतिपादित है।

—ए० व० ६४८४

शरभेश्वरमन्त्रप्रकाश

लि०—श्लोक स० लगभग १९०, अपूर्ण, इसमे शरभेश्वराष्टक भी सनिविष्ट है।

—सं० वि० २५४७०

शरभेश्वरमन्त्रविधान

लि०—श्लोक स० लगभग ५०, अपूर्ण । —म० वि० २६५५७

शरभेश्वरमालामन्त्र

लि०—श्लोक स० ४० । —अ० व० ८६८४

शवरीतन्त्र

लि०—श्लोक स० ८३२, पूर्ण । —स० वि० २४३४०

शवसाधन

लि०—श्लोक स० ७०, अपूर्ण । —स० वि० २४१४७

शल्यतन्त्र

लि०—(१) (क) श्लोक स० २५० । (ख) श्लोक म० १६० । (ग) श्लोक स० ४०० । —अ० व० (क) ३४९९, (ख) ५६१५, (ग) ८२९३

(२) उमा-महेश्वर सवादरूप । विप, अपस्मार (मृगी) आदि की शान्ति के लिए विविध उपाय इसमे प्रतिपादित है। भूतवाधा और ग्रहवाधा दूर करने के उपाय भी निर्दिष्ट हैं। श्लोक स० ३८७ । —रा० ला० २२५२

शाक्तक्रम

लि०—(१) पूर्णानन्द परमहस विरचित । ग्रन्थकार पूर्णानन्द गिरि भी कहे गये हैं । रचनाकाल १४६३ शकाव्द । (कालाङ्गवेदेन्दुशाके) अर्थात् १५४१ ई० । पाठान्तर कालाङ्कवेदेन्दुशके तदनुसार १४९३ शकाव्द अर्थात् १५७१ ई०

—ए० व० ६१९७–६१९९

(२) पूर्णानन्द गिरि कृत, श्लोक स० ५०० । —अ० व० १०६२४

(३) श्लोक स० १५०३, अश स० ७। इसमे ये विपय वर्णित हैं—एकलिङ्गस्थान, कूर्मचक्र, कोमल चूडकादि शव का लक्षण, अन्तर्याग, महायज्ञविधि, दिव्यादि भावो का निरूपण , दिव्यभाव आदिके लक्षण आदि, श्रवण, मनन आदिके लक्षण कथन, आत्म-साक्षात्कार का उपाय, चीनाचार आदि का निरूपण, कौलिक कर्तव्य कथन, पञ्चमकार साधन, कुमारीपूजा आदि । —रा० ला० २०६७

(४) पूर्णानन्दगिरि कृत, श्लोक स० ९३५, पूर्ण । —स० वि० २४७२४

शाक्तसन्ध्याविधि

लि०—शक्ति देवीके उपासको द्वारा प्रात काल और सायकाल की जाने वाली एक प्रकार की प्रार्थना। —म० द० ५७२३

शाक्तसाधनसंग्रह अथवा साधनसंग्रह अर्थात् शय्या-त्रिपथ-चतुष्पथ-बिल्वमूल-त्रिमुण्ड-वीर-श्मशानसाधन

लि०—(क) श्लोक स० लगभग ११५, पूर्ण। (ख) श्लोक स० लगभग १३५, अपूर्ण। —स० वि० (क) २५७५८, (ख) २५७६१

शाक्तानन्दतरङ्गिणी (१)

लि०—(१) ब्रह्मानन्दगिरि पूर्णानन्द परमहस के गुरु द्वारा विरचित। इस ग्रन्थ मे १८ तरग(?) है, यह छप चुका है। —ए० व० ६१९४

(२) इसमे १८ उल्लास कहे गये हैं। इस प्रति मे श्लोक स० २८३८ निर्दिष्ट है। विषय—प्रकृति पुरुष का अभेद कथन, गर्भस्थ जीव की चिन्तन रीति, दीक्षा की आवश्यकता, दीक्षासम्बन्धी अन्यान्य विषय, प्रात कृत्य आदि, आसन-नियम आदि, नित्य पूजाविधि आदि, करमाला आदि, जपविधि आदि, महासेतु आदि, पुरश्चरणविधि, यन्त्रप्रकरण, अष्टादश उपचार आदि, समयाचार आदि, अग्नि उत्पादन, कुण्डनिर्माण आदि वर्णित हैं। —रा० ला० ३१८२

(३) (क) अठारह उल्लासो मे पूर्ण। (ख) अठारह उल्लासो मे पूर्ण। —व० प० (क) २३, (ख) ९१९

शाक्ताभिषेक

लि०—(१) राजराजेश्वरीतत्रान्तर्गत देवी-ईश्वर सवादरूप इसकी दूसरी हस्तलिखित प्रति व० प० (पे ४५) मे दिखो। —ए० व० ६०३४

(२) शाक्त धर्म मे दीक्षित होते समय आवश्यक विधियो, रीतियो का प्रतिपादक ग्रन्थ। —रा० ला० १११६

(३) (क) श्लोक स० लगभग २५२०, पूर्ण। लिपिकाल वङ्गाब्द १२१२। (ख) श्लोक स० ८५४, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० ४६१, अपूण। (घ) श्लोक स०

१७६८, १ से १६ वें उल्लास तक, अपूर्ण। (ङ) श्लोक स० २८०८, १म से १८ वें उल्लास तक, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४४६२, (ख) २४९०५, (ग) २५२५५, (घ) २६६७७ (ङ) २६३८०

शाक्ताभिषेकपद्धति

लि०—(क) राजराजेश्वरीतन्त्र के अन्तर्गत, श्लोक स० ५४, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ८२, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४७७२, (ख) २६४०६

शाक्ताभिषेकप्रयोग

लि०—(क) श्लोक स० १०३, पूर्ण। दक्षिणकालीस्तोत्र भी इसमे सनिविष्ट है। (ख) श्लोक स० ८२, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २४५३९, (ख) २६०९४

शाक्ताभिषेकविधि

लि०—(क) पूर्णाभिषेक विधि के साथ सनिविष्ट। समिलित श्लोक स० लगभग १४०, पूर्ण। (ख) श्लोक स० लगभग ४४४, पूर्ण। इसमे पञ्चतत्त्वशोधन, पात्र-वन्दना, पूर्णाभिषेक सस्कारविधि तथा शान्तिस्तोत्र भी सनिविष्ट हैं। (ग) कामाख्या-तन्त्र का १० म पटल रूप, श्लोक स० लगभग ७०, पूर्ण।

—सं० वि० (क) २५७३१, (ख) २५७६४, (ग) २६०३२

शाक्तामोद

लि०—(१) शङ्करद्रविडाचार्य कृत।

विषय—शक्तिपूजाविधि, पञ्चशुद्धि कथन, पूजासूत्र, जपसूत्र, मन्त्र, चौरमन्त्र, तथा दीपनीमन्त्र, मन्त्रसिद्धि-लक्षण, पूजाप्रयोग, जपादिनियम, मन्त्रो के स्वापकाल आदि, ब्राह्मण आदि वर्णो के भेद से सेतुकथन, महासेतु कथन, कामकलावर्णन, मन्त्रसकेतकथन, मन्त्र का स्थानकथन, भूतलिपिकथन, चौर मन्त्र के जप का स्थान, मन्त्र और साधक की एकता का कथन, जीवतत्त्वकथन, मत्रो के शिखादि अङ्ग कथन, पुरश्चरणविधि, पुरश्चरण का स्थान निर्देश, भक्ष्याभक्ष्य का प्रतिपादन, वर्ज्यावर्ज्य कथन आदि वर्णित है। —नो० स० १।३५८

शाक्तामोदतरङ्गिणी

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

शाङ्खायनतन्त्र

लि०—(क) षड्विद्यागमान्तर्गत, श्लोक स० ७६६, पूर्ण। (ख) श्लोक स० १०४०, अपूर्ण (?), लिपिकाल १९३६ वि०।(ग) षड्विद्यागमान्तर्गत, श्लोक स० लगभग २१५, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २३९३३, (ख) २४२०६, (ग) २६१७३

शातातपसंहिता

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे।

शान्तिकर्म

लि०—विविध ग्रन्थो से सगृहीत, श्लोक स० १५०।

—अ० व० १०१७८

शान्तिप्रयोग

लि०—यक्षिणी प्रयोगान्तर्गत। श्लोक स० २६, पूर्ण

—स० वि० २५५१०

शान्तिरत्न

उ०—मन्त्रमहार्णव मे।

शाबरचिन्तामणि

लि०—पार्वती-पुत्र आदिनाथ विरचित।

इसमे षट्कर्म देवताओ—रति, वाणी, रमा, ज्येष्ठा, दुर्गा और कालिका—के ध्यानो और मन्त्रो का प्रतिपादन है, तदनन्तर शान्तिक, वशीकरण आदि षट्कर्म कहे गये है। —ए० व० ६१००

उ०—सौभाग्यभास्कर मे।

शाबरतन्त्र

लि०—(१) गोरखनाथ विरचित यह तन्त्र ३ प्रकरणो मे पूर्ण है।

—ए० व० ६०९९

(२) आदिनाथ, अनादि, काल, अतिकाल, कराल, विकराल, महाकाल, काल-भैरवनाथ, वटुकनाथ, भूतनाथ, वीरनाथ और श्रीकण्ठ ये वारह कापालिक हैं। इनके शिष्य भी वारह है—नागार्जुन, जडभरत, हरिश्चन्द्र, सत्यनाथ, मीननाथ, गोरक्षनाथ, चर्पटनाथ, अवघटनाथ, वैरागी, कन्थाधारी, वलन्धरि और मलयार्जुन। ये सब शावर मन्त्रो के प्रवर्तक है। इस ग्रन्थ के मुख्य २ विषय हैं—शावर-सिद्धिविधि, सब विपत्तियों को दूर करनेवाले सिद्ध और वली मन्त्र आदि योगिनीमन्त्र, क्षेत्रपालमन्त्र, गणेशमन्त्र, कालीमन्त्र। वगलामन्त्र, भैरवीमन्त्र, त्रिपुरसुन्दरीमन्त्र हेलकीमन्त्र, मातङ्गीमन्त्र, डाकिनी, शाकिनी, भूत, सर्प आदि का भय निवारक मन्त्र, उच्चाटन, वशीकरण आदि के मन्त्र आदि। —नो० सं० १।३५९

(३) श्लोक स० ५८०, पूर्ण।

—डे० का० ७३५ (१८८३–८४ ई०)

(४) (क) श्लोक-स० ६९६, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ६५० अपूर्ण। (ग) श्लोक स० ५६, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २३८६७, (ख) २४५१५, (ग) २४५७९

शावरतन्त्रसर्वस्व

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

शावरमन्त्र

लि०—(१) इसमे शावर मन्त्र हिन्दी तथा अशुद्ध सस्कृत मे कहे गये हैं। इसका वहुत अश दिव्य शावर तन्त्र से मिलता-जुलता है। —ए० व० ६५५८

(२) श्लोक स० १००। —अ० व० ५६१४

(३) (क) श्लोक सं० १३६, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० लगभग १००, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २३८५६, (ख) २६२३२

शावरमन्त्रचिन्तामणि

लि०— —ए० व० ६१००

शाम्भव

लि०—श्लोक स० २००। इसमे शैवमतानुसार आह्निक क्रिया का स्पष्टीकरण किया है। —ट्रि० कै० ११२७ (छ)

शाम्भवकल्पद्रुम

लि०—माधवानन्द कृत। —कैट् कैट् १।६४२

शाम्भवदीपिका

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल, सौन्दर्यलहरी की टीका सौभाग्यवर्द्धिनी मे।

शाम्भवसूत्र

उ०—तारारहस्यवृत्ति मे।

शाम्भवाचारकौमुदी

लि०—(१) भडोपनामक जयराममट्ट-पुत्र काशीनाथ विरचित। इसमे शिवपूजा का विस्तार से प्रतिपादन किया गया है। —ए० व० ६४६१

(२) काशीनाथ कृत, श्लोक स० लगभग १८५, पूर्ण। —स० वि० २४७९२

शाम्भवीतन्त्र

लि०—(१) केवल १४ वाँ और १५ वाँ २ पटल, अपूर्ण। —व० प० ८९४

(२) शाम्भवीतन्त्र (ज्ञानसकुलीमात्र) उमा-महेश्वर सवादरूप। श्लोक स० २००, पूर्ण। —ए० व० ६०३५

उ०—उत्पत्तितन्त्र मे (रा० ला०) इसका उल्लेख है।

शाम्भवानन्दकल्पलता

उ०—सौभाग्यभास्कर मे।

शाम्भवीय

उ०—तारारहस्यवृत्ति मे।

शाम्भवीसंहिता

उ०—तारारहस्यवृत्ति मे।

शारदातन्त्र

उ०—कालिकासपर्याविधि मे।

शारदातिलक (सटीक)

लि०—(१) विजयाचार्य पण्डित के पौत्र, श्रीकृष्ण-पुत्र लक्ष्मण, देशिकेन्द्र विरचित। इसमे २५ पटल हैं। —इ० आ० २५४२

(२) मन्त्र-यन्त्र-प्रकाशिका शीरपाणि कृत तथा शारदातिलकटीका पूर्णानन्दाश्रम कृत। यह टीका सवत् १६७५ विक्रम मे रची गयी।

—ए० व० ६१७७ से ६१८४ तक

(३) शारदातिलक-प्रकाश (महाराजाधिराज पुण्यपालदेव कृत) टीका से विभूषित। —ने० द० १।२८७

(४) (क) श्लोक स० १२०० (१० वाँ और ११ वाँ पटल आरम्भ मात्र)। (ख) श्लोक स० १५० (३ य पटल)। (ग) श्लोक स० १६४ (८वाँ पटल)।

—अ० व० (क) ३५४१, (ख) २२५०, (ग) ७७

(५) (क) अपूर्ण। (ख) शारदातिलक-व्याख्या पदार्थादर्श से विभूपित, अपूर्ण।

—व० प० (क) १५७९, (ख) १४१९

(६) (क) श्लोक स० १२०००, हर्ष दीक्षित कृत टीका युक्त।

(ख) श्लोक स० ८०० (केवल ३ य पटल)।

(ग) श्लोक स० ४६०।

—अ० व० (क) ५५३४, (ख) ११५५, (ग) ९३०१

(७) शारदातिलक सव तन्त्रो का सार है एव धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का हेतु है। ग्रन्थकार कहते है—'सार वक्ष्यामि तन्त्राणा शारदातिलक शुभम्। धर्मार्थ काममोक्षाणा प्राप्ते परमकारणम् ॥' इसमे २५ पटल है। उनमे प्रतिपादित विपय है—देवदेवियो के अलग-अलग मंत्रो की अक्षर-सख्या का निर्देश आदि,देवता और उनकी शक्तियो के नाम और मन्त्रो का प्रतिपादन, दीक्षा के अङ्गभूत कर्मो का निरूपण, दीक्षादान के विविध प्रकारो का वर्णन, साधक के १८ अठारह सस्कारो का निर्देश, वर्ण-तनु आदि कथन, ४० अक्षरो की भूतलिपि का वर्णन, श्रीमन्त्र और उसके जप, ध्यान, पूजन आदि का निरूपण, जगद्धात्री का मन्त्र, उसके जप, ध्यान, पूजन आदि का कथन, त्रिपुरामन्त्र उसके जप, ध्यान, पूजन आदि, त्वरिता देवी के मन्त्र, उसके जप, ध्यान, पूजन आदि का कथन, दुर्गा देवी के मन्त्र, उनके जप, ध्यान, पूजन आदि। नृसिह, पुरुपोत्तम आदि के मन्त्र तथा उनके जप, पूजन, ध्यान आदि का प्रकार आदि। —रा० ला० ७३३

(८) विजयाचार्य के पौत्र, श्रीकृष्ण-पुत्र देशिकेन्द्र लक्ष्मण विरचित। इसमे २५ पटल है। विभिन्न देवियो के वीजमन्त्र, देवीदेवता, उनकी शक्तियाँ, दीक्षा, १८ सस्कार, वर्णमाला के अक्षर, तान्त्रिक मन्त्रो से पूजा, जगद्धात्री, त्वरिता, दुर्गा, त्रिपुरा,गणेश आदि के मन्त्र। —बी० कै० १३२३

(९) लक्ष्मण देशिकेन्द्र कृत। इसमे २० ही पटल है। —ट्रि० कै० १०४५

(१०) कृष्णात्मज लक्ष्मण देशिकेन्द्र कृत, पूर्ण। —ज० का० १०८७

(११) श्रीकृष्ण-शिष्य लक्ष्मणदेशिकेन्द्र कृत (क) श्लोक स० ४३३०, पूर्ण। (ख) अपूर्ण। —र० म० (क) ४९१७, (ख) ४९९१

(१२) २५ पटलो मे पूर्ण। कर्ता पूर्ववत्। इस सग्रह मे ४ प्रतियाँ है, ३ पूर्ण और १ अपूर्ण।

—तँ० म० (१) ६६९२, (२) ६६९३, (३) ६६९८, (४) ६६९५

(१३) (क) अपूर्ण। (ख) पूर्ण।

—डे० का० (क) ७३६, (ख) २५५ (१८८३-८४ ई०)

(१४) (क) श्लोक स० २११६, पूर्ण। (ख) लक्ष्मणाचार्य कृत, श्लोक स० ३५४०, पूर्ण (सटीक ?)। (ग) श्लोक स० ३१८६, पूर्ण। (घ) श्रीलक्ष्मण देशिकेन्द्र कृत श्लोक स० २५११। १ म से १७ वे पटल तक, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २३९७६, (ख) २४९५१, (ग) २५५३३, (घ) २५९५८

उ०—पुरश्चर्यार्णव, तन्त्रसार, ताराभक्तिसुधार्णव, आगमकल्पलता, तत्त्वबोधिनी (आनन्दलहरी की टीका) तथा मन्त्ररत्नावली मे।

शारदातिलक की टीकाएँ—

लि०—(१) गूढार्थदीपिका या सुगूढार्थदीपिका राम-भारती-शिष्य त्रिविक्रमज्ञ भट्टारक रचित। (क) श्लोक स० १४४०, पूर्ण। (ख) श्लोक स० १३७२, पूर्ण। (ग) शब्दार्थचिन्तामणि, प्रेमनिधिशर्मपन्त विरचित, श्लोक स० १५२०४, पूर्ण।

—र० म० (क) ४९५२, (ख) ३९१६, (ग) ४९५६

(२) हर्षकौमुदी श्रीहर्ष दीक्षित कृत, पटल १ से ५ और १० से २० तक। अपूर्ण। —तँ० म० ६६९४

उ०—सेतुबन्ध मे इसका उल्लेख है।

(३) (क) शारदातिलक-टीका, माधव कृत।
(ख) पदार्थादर्श टीका, राघवभट्ट कृत।

—बी० कै० (क) १३२५, (ख) १३२६

(४) शारदातिलक-टीका गूढार्थप्रकाशिका कामरूप पण्डित अथवा जगद्गुरु भट्टाचार्य सिद्धान्तवागीश कृत। लिपिकाल १८४६ वि०। —इ० आ० २५४५

शारदानवरात्रविधि

लि०—इसमे युद्ध-विजय के लिए यात्रार्थ आवश्यक विधि वर्णित है।

—इ० आ० २६३१

शारदापञ्चाङ्ग

लि०—रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत, पूर्ण। —र० म० ४८४७

शारदास्तव

लि०—पत्र ६, अक्षर नेवारी, सवत् (नेपाली) ५२० चैत्रवदी मे लिखित।

—ने० द० १।१३६३ (ण)

शारिकानित्यपूजापद्धति

लि०—इसमे उपासक के प्रात कृत्यो का वर्णन पूर्वक शारिका देवी की नित्यपूजा-विधि का प्रतिपादन है। —ए० व० ६४००

शारिकाभगवतीपञ्चाङ्ग

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत। —इ० आ० २५४९

(२) इसमे ये पाँच स्तोत्र वर्णित है—

(क) शारिकास्तव साहिव कौलानन्दनाथ विरचित।

(ख) भैरवनाथस्तोत्र अभिनव गुप्त विरचित।

(ग) स्तोत्र, अभिनव गुप्त विरचित।

(घ) स्तोत्र, उत्पलाचार्य विरचित।

(ङ) स्तोत्र, साहिव कौलानन्दनाथ विरचित। —ए० व० ६४००

(३) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक स० ५०५, पूर्ण। —र० म० ४८२०

शिरश्छेदतन्त्र

श्रीकण्ठी के अनुसार यह चतु षष्टि (६४) आगमो के अन्तर्गत है।

इस विषय मे विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, Studies in the Tantras, Part I, by Dr P. C Bagchi

शिवकवच

लि०—(१) यह कवच कई जगह छप चुका है। —ए० व० ६७५१

(२) भैरवतन्त्र के अन्तर्गत। —ने० द० १।१३७६ (च)

शिवचन्द्रिका

लि०—(१) वासुदेव दीक्षित कृत। श्लोक स० ३५००, अपूर्ण।

—अ० ब० ६९९४

(२) (क) श्लोक स० ३२५०। यह ११ पटलो मे पूर्ण है।
ग्रन्थकार कहते हैं—'श्रीवासुदेवेन विनिर्मिताया शिवावहाया शिवचन्द्रिकायाम्।
यथावदेकादशमुल्लसन्त्या तमो हरन्त्या पटल प्रणीतम्।।'

(ख) श्लोक स० ३३००, अपूर्ण। वासुदेव विरचित।

—ट्रि० कै० (क) १०४६, (ख) १०४७

शिवचूडामणि

दामोदर समावि सगृहीत। उमा-महेश्वर सवादरूप। यह १२ उल्लासो मे पूर्ण है।

—नो० स० ४।२९६

शिवज्ञानबोधसंग्रह

उ०—शतरत्नसग्रह मे।

श्रीसंहिता

उ०—आगमकल्पलता मे।

शिवज्ञानविद्याविधि

उ०—मन्त्रमहार्णव मे।

शिवतत्त्वरत्नाकर

(६–९ कल्लोल)

लि०—श्लोक स० १०६६६, पूर्ण। लिपिकाल १६३१ शकाब्द।

—स० वि० २६३२४

शिवतत्त्वविवेक

लि०—शिवजी की देवाधिदेवता के विषय मे प्रमाणो का उपन्यास करते हुए उनकी पूजा का प्रतिपादन इस पुस्तक मे किया गया है। —बी० कै० १३३३

शिवताण्डव (सटीक)

लि०—(१) पार्वती-ईश्वर सवादरूप। यह पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध भेद से दो भागो मे विभक्त है। पूर्वार्द्ध मे १४ और उत्तरार्द्ध मे १५ पटल हैं। राजा अनूपसिंह की प्रेरणा से गोविन्दराज-पुत्र श्रीनीलकठ ने इस पर अनूपाराम नामक टीका लिखी है।

श्रीघनश्याम-पुत्र की प्रेरणा से प्रेमनिधिपन्त रचित मल्लादर्श नाम की टीका भी इसपर है।

—ए० ब० ५९६६, ५९६७, ५९६८, ५९७१

(२) इस पर प्रथम भाग मे प्रेमनिधि की मल्लादर्श टीका है।

—ए० ब० ६८१७

(३) श्लोक स० ३८००। —अ० ब० १३०९८

(४) दक्षिणामूर्ति-पार्वती सवादरूप। अनूपसिंह की प्रेरणा से श्रीनीलकण्ठ रचित अनूपाराम नामक टीका सयुक्त, यह १४ पटलो का ग्रन्थ है।

—ने० द० २।३१७ (ख)

शिवताण्डव

लि०—(१) श्लोक स० २२६८, आदि और अन्त रहित, अपूर्ण।

—र० म० ४९३५

(२) नगेन्द्रप्रयाणमहातन्त्रान्तर्गत। श्लोक स० ५७८, अपूर्ण।

—स० वि० २४०३४

शिवताण्डवतन्त्र

लि०—(१) (क) श्लोक स० ३५०, श्रीनाथ कृत। (ख) श्लोक स० १३००। (ग) श्लोक स० १५००। (घ) श्लोक स० ३३०, यह अन्य प्रतियो से भिन्न है, पटल ८ से १४ तक पूर्ण १५ वाँ पटल चालू।

—अ० ब० (क) ५३२७, (ख) ५३२९, (ग) १०६८४, (घ) ११११९

(२) दक्षिणामूर्ति प्रोक्त (क) ६४ पन्ने। (ख) २५ पन्ने। (ग) गोविन्द सूरिपुत्र नीलकण्ठ कृत टीका सहित।

—रा० पु० (क) ५६९७, (ख) ६४४४, (ग) ६४९६

(३) (क) श्लोक स० लगभग १७१०, पूर्ण। लिपिकाल १९७१ वि०। (ख) श्लोक स० लगभग १२२०, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २३९४५, (ख) २४१९४

शिवताण्डवतन्त्रटीका

लि०—श्लोक स० लगभग ३१८। —स० वि० २३९९६

शिवताण्डवाभिनय

लि०—कामराज विरचित। यह शिवताण्डव पर टीका है। श्लोक स० ३५०, अपूर्ण।
—अ० व० ५१

शिवदृष्टि

शमानन्द कृत, इसमे प्राय ७०० श्लोक हैं और ७ अध्याय है।

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

शिवदृष्टिविवृति

शमानन्द कृत।

विवरण द्रष्टव्य, के सी पाण्डेय विरचित अभिनवगुप्त मे।

शिवद्युतितन्त्र

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

शिवधर्मशास्त्र

लि०—(१) नन्दिकेश्वर प्रोक्त। इसमे दुष्ट ग्रह आदि की शान्ति करने वाले विविध देवो के स्तवो का सग्रह आदि प्रतिपादित है। —ने० द० १।१६७६ (छ)

उ०—प्राणतोषिणी मे।

शिवधर्मसंग्रह

विवरण द्रष्टव्य—

Govt Collection in Asiatic Society Library Vol XI p. p 7–8 मे।
—ने० द० १।३६ (ख)

शिवधर्मोत्तर

लि०—(१) यह शैव सम्प्रदाय का ९४०० श्लोको का ग्रन्थ है।

विवरण देखे—रा० ला० २२०८ मे।

(२) श्लोक स० ३०००, अपूर्ण। —अ० व० ७९७१ (ख)

उ०—वीरशैवानन्दचन्द्रिका तथा शतरत्नसंग्रह मे।

शिवनृत्यतन्त्र

लि०—(१) दक्षिणामूर्ति-पार्वती सवादरूप। इसमे ९ पटल हैं। तान्त्रिक पूजा सम्बन्धी विविध यन्त्रो का प्रतिपादन है। —ए० व० ५९६५

(२) श्लोक स० १२४, अपूर्ण। —स० वि० २६४१३

शिवनेत्रतन्त्र

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

शिवपञ्चाक्षरविधि

लि०—श्लोक स० १२०, पूर्ण। —र० म० ४८७०

शिवपञ्चाक्षरी

लि०—इसमे शिवपूजक के प्रात कृत्यो के साथ शिवपूजापद्धति वर्णित है।

—ए० व० ६४७१

शिवपञ्चाक्षरीन्यासविधि

लि०— —रा० पु० ४४६९

शिवपञ्चाक्षरीमन्त्रपूजाविधि

लि०—नृसिह कृत, श्लोक स० ४००। —अ० व० ९२००

शिवपञ्चाक्षरीमन्त्रप्रयोग

लि०—सरस्वती प्रार्थना सहित, श्लोक स० लगभग ४०, पूर्ण।

—स० वि० २३९४४

शिवपञ्चाङ्ग

लि०—(१) (क) रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० ५०९, पूर्ण।

(ख) श्लोक स० ६६२, पूर्ण।

—र० म० (क) ४८२२, (ख) ४८३२

शिवपटल

लि०—श्लोक स० ५१, पूर्ण। —स० वि० २४६३४

शिवपूजा, अघोरपद्धति

लि०—अघोर रूप के अनुसार शिवजी की पूजा पर। यह पूजा रात्रि मे की जाती है मदिरा, महिला आदि द्वारा। —बी० कै० १३३१

शिवपूजातरङ्गिणी

लि०—काशीनाथ कृत। श्लोक स० २००, अपूर्ण।

—अ० व० ८४४४

शिवपूजानुक्रमणी

लि०—श्लोक स० ७००। —अ० व० ६८२६ (ख)

शिवपूजापद्धति

लि०—(१) (क) श्लोक स० १४००। (ख) श्लोक स० ४००। (ग) श्लोक म० २५। —अ० व० (क) ८६२, (ख) १७०८, (ग) ६९३०

(२) श्लोक स० ५००, इसमे शिवपूजाविधि वर्णित है।

(३) (क) श्लोक स० ३०, अपूर्ण। (ख) दक्षिणकालिका पूजापद्धति के साथ सलग्न, समिलित श्लोक स० लगभग ८२, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४०६५, (ख) २६२५०

शिवपूजाविधि

लि०—(क) श्लोक स० ३२०। यह पूजा श्रौत पद्धति के अनुसार है।

(ख) शिवपूजाविधि, पूर्ण। —अ० व० (क) ५५५६, —(ख) ४५४

शिवप्रसादसुन्दरस्तव

लि०—शङ्करकण्ठ कृत, श्लोक स० १०८, पूर्ण।

—डे० का २४३ (१८८३–८४ ई०)

शिवबोधज्ञानदीपिका

लि०—नवगुप्तानन्दनाथ विरचित। श्लोक स० ३८, पूर्ण। इसमे शिवस्वरूपज्ञान का प्रतिपादन किया गया है। —ट्रि० कै० ११२७ (ङ)

शिवभक्तिरसायन

लि०—मडोपनामक जयराम-पुत्र काशीनाथ विरचित।

इसके आदि के दो उल्लासो मे शिवपूजा की विधि वर्णित है। तीसरे उल्लास मे देवी की पूजापद्धति वर्णित है। आरम्भ मे पूजक के प्रात कृत्य वतलाये गये है। अन्त के दो उल्लासो मे देव की नैमित्तिक पूजा का वर्णन है। —ए० व० ६४५८

शिवभुजङ्गप्रयात

लि०— —ए० व० ६७५६

शिवमन्त्रजपविधि

लि०—श्लोक स० लगभग २४, पूर्ण। —स० वि० २४२६८

शिवमुक्तिप्रबोधिनी

लि०—भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथ विरचित। इसका मुख्य उद्देश्य यह दरमाना है कि मुक्ति ज्ञान से होती है और शिवपूजा से उसे शक्ति प्राप्त होती है।

—ए० बं० ६४६०

शिवरहस्य (१)

लि०—(१) यह स्कन्द-सदाशिव सवादरूप शैव तन्त्रग्रन्थ है। इसमे १२ अश है। शिवरहस्य का केवल सप्तम अश का, जिसमे २९ (किसी किसी के मत मे २५) अध्याय है, विषय विवरण इसमे यो है—शिवसहस्रनाम, काशी-प्रशसा, काशीमाहात्म्य, काशीवास-नियमविधि, ज्ञानवापी की प्रशसा, मुक्तिमण्डपाख्यान, वीरेश्वर का इतिहास, पशुपतीश्वर का इतिहास, दक्षिण-कैलास का वर्णन, वृद्धाचल की महिमा आदि। यह वडा विशाल ग्रन्थ है।

—इ० आ० २५९४

(२) इसमे शिवमाहात्म्य आदि वर्णित है। पुष्पिका मे ग्यारहवे अश के ५० अध्याय कहे गये हैं।

—नो० स० २।२१३

(३) श्लोक स० ७५००, अपूर्ण। —अ० व० ५९१३

(४) शिव-गौरी सवादरूप। इसमे २९ अध्याय है, उनमे शिवपूजा, जप, होम, पुरश्चरण, मन्त्रोद्धार, यन्त्रोद्धार, स्तव, कवच आदि प्रतिपादित है एव उनकी विचारपूर्ण व्यवस्था का भी प्रतिपादन किया गया है।

—रा० ला० २३३

(५) यह महान् तन्त्रग्रन्थ १००००० श्लोकात्मक है, इसमे शैव विधियाँ परिपूर्ण-रूप से वर्णित है। यह विविध मूल तन्त्रग्रन्थो से सगृहीत है, ऐसा प्रतीत होता है। इसका सायणाचार्य के शङ्करविलास मे उल्लेख आया है।

—ए० व० ५९०९

(६) (क) श्लोक स० १३६२५, पूर्ण। स० १७६४ वि० का लिखित। (ख) श्लोक स० २२९८, अपूर्ण। —डे० का० (क) ४००, (ख) ४०१ (१८७५–७६ ई०)

उ०—सौभाग्यभास्कर तथा वीरशैवानन्दचन्द्रिका मे।

शिवलिङ्गपूजापद्धति

लि०—शिवस्तोत्र सहित, पूर्ण। —व० प० ४१२

शिवविद्याप्रकाश

लि०—श्लोक स० ३५०, अपूर्ण ।

इसमे तीन प्रकाश है और शिवजी देवाधि-देव रूप मे वर्णित है ।

—ट्रि० कै० १०७४ (ङ)

शिवशक्तिपूजनविधि

लि०—श्लोक स० १९२ । —डे० का० (१८८३–८४ ई०)

शिवशतनामस्तोत्र

लि०—शिव-पार्वती सवादरूप । महालिङ्गेश्वरतन्त्रान्तर्गत ।

इसमे शिवशतनामस्तोत्र के ऋषि, छन्द, देवता, वीज, शक्ति, कीलक, विनियोग तथा फल प्रतिपादित है । —नो० स० ३।३०२

शिवसंहिता

लि०—(१) ईश्वर विरचित। यह ५ पटलो मे है। इसमे वर्णित विषय है—१ म पटल मे योगशास्त्र प्रतिपादन पूर्वक लयप्रकरण का वर्णन, २ य मे ज्ञानोपदेश, ३ य मे योगाभ्यासतत्त्व कथन, ४ र्थ मे मुद्रा कथन , ५ म मे साधक-लक्षण, प्रतीकोपासना आदि का निरूपण है। —नो० स० २।२१४

(२) शिव-नन्दी सवादरूप। नन्दी के यह पूछने पर कि भगवन्, आप सव देवो मे सर्वश्रेष्ठ है। आप भी वडे भक्तिभाव से रातदिन किस देवता की स्तुति करते है, इसका मुझे वडा सन्देह है, कृपया उसे निवृत्त करे। इस पर नन्दी के सन्देह की निवृत्ति करते हुए भगवान् शिव ने इसका प्रतिपादन किया । इसमे प्रकृति, पुरुष आदि का निरूपण, विष्णु, महादेव आदि के शरीर पदार्थो का निरूपण, प्राकृत जीवो की देह मे स्थित प्राण आदि का वर्णन, ब्रह्मचर्य आदि आश्रम और उनके धर्मो का प्रतिपादन, जीवात्मा और परमात्मा का परस्पर तारतम्य कथन इत्यादि विषय वर्णित है। इसमे ४१ परिच्छेद और २५११ श्लोक है।

—रा० ला० ४७४

शिवसद्भाव

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे ।

शिवसमयाङ्कमातृका

लि०—श्री शिङ्गक्षितिपति कृत। शक्ति कीपूजा से सवद्ध आवश्यक विविध विषयों का इसमे प्रतिपादन है।

—म० द० ५७२४, २५, २६

शिवसहस्रनाम

लि०—(स्कन्दसदाशिव सवादात्मक) शिवरहस्य के सप्तमाशान्तर्गत। मुक्ति के उपाय का प्रश्न पूछने पर जो शिवपूजा, शिवसहस्रनाम पाठ आदि करते है, वे ही धन्य और मुक्तिभाजन है, यह उत्तर। यह शिवस्तोत्र है। —रा० ला० २१९

शिवसहस्रनामस्तोत्र

लि०—(१) (रुद्रयामलान्तर्गत, हर-गौरी सवादरूप)। परमशिवसहस्रनाम भी इसका नामान्तर है, ऐसा ग्रन्थ की पुष्पिका से ज्ञात होता है। —नो० स० ३।३०३

(२) (क) शिवसहस्रनामस्तोत्र, रुद्रयामलान्तर्गत, (क) पूर्ण। (ख) पूर्ण।

—व० प० (क) ५१०, (ख) ४४९

शिवसहस्रनामावलि

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, यह स्तोत्र गद्यमय है। इसमे चतुर्थ्यन्त नाम (नम) शव्द के साथ कहे गये है। —ए० व० ६७४३

(२) रुद्रयामलीय शिव-पार्वती सवादरूप यह महास्तोत्र देवदुर्लभ तथा महापुण्य है। पूजा, ध्यान, आचार और जप के विना केवल इसके पाठमात्र से मनुष्य कल्याण प्राप्त करता है। —नो० स० २।२१५

शिवसार

उ०—सर्वोल्लास मे।

मर्वोल्लास के अनुमार यह चतु षष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है।

शिवसिद्धान्तमञ्जरी

लि०—भडोपनामक जयरामभट्ट-सुत काशीनाथ विरचित। विविध ग्रन्थो तथा मुख्यतया पुराणो के उद्धरणो द्वारा शिवजी की श्रेष्ठता तथा महत्त्व सिद्ध करने की इसमे चेष्टा की गयी है। देव-पूजक के आचार मम्वन्धी कृत्यो का भी उल्लेख है।

—ए० व० ६४५७

शिवसिद्धि

लि०—पञ्चमीरहस्य कृकलासतन्त्रान्तर्गत, कुलपूजामूत्र से सलग्न, श्लोक स० लगभग २०, पूर्ण। —स० वि० २६३७६

शिवसुन्दरीविवरण

लि०—श्लोक स० लगभग १६, पूर्ण। —स० वि० २५५२३

शिवसूत्र या स्पन्दसूत्र

लि०—वसु गुप्त कृत। —डे० का० ५१८, ५१९ (१८७५-७६ई०)

शिवसूत्रवार्तिक

भास्कराचार्य कृत।

शिवसूत्रविमर्शिनी

लि०—(१) श्री क्षेमराज कृत। यह शिवसूत्र का व्याख्यान है। ग्रन्थकार ने कहा है—इस शिवसूत्रविमर्शिनी व्याख्या द्वारा शिव प्रोक्त परम उज्ज्वल रहस्य शिव-सूत्रो का विचार करने से ससार सागर से बडी जल्दी पार हो जाओगे, परम पद मे प्रवेश हो जायगा एव नित्य प्रकाश और आनन्द से परिपूर्ण धाम मे अविचल पद प्राप्त हो जायगा। —नो० स० २।२१६

(२) श्री क्षेमराजकृत, (क) श्लोक स० लगभग ८९८, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ८५५, पूर्ण। —स० वि० (क) २५११७, (ख) २५,२९८

शिवागम

उ०—कुलप्रदीप मे।

शिवागमसार

उ०—मन्त्रमहार्णव मे।

शिवाद्वैतप्रकाशिका

(१) लि०—मडोपनामक जयरामभट्ट-सुत काशिनाथभट्ट विरचित। इसमे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप चतुर्विध पुरुषार्थो मे मोक्ष ही परम श्रेष्ठ पुरुषार्थ है और वह आत्म-तत्त्व ज्ञान के अधीन है तथा आत्मतत्त्व ज्ञान शिवाधीन है एव महाशक्ति की आत्मा शिव है जिनकी पूजा मोक्ष की ओर अग्रसर करती है यह निर्देश किया गया है। इसमे पूजा का वैदिक आकार-प्रकार निर्दिष्ट है जो तान्त्रिक पूजा के आकार-प्रकार से विशिष्ट है। इसकी दूसरी प्रति इ० आ० मे वर्णित है (स० २५१३)। —ए० व० ६४५४

शिवानन्दलहरी

उ०—सौभाग्यभास्कर मे।

शिवाग्निपद्धति

लि०—(क) श्लोक स० २००। (ख) श्लोक १५०।

—अ० व० (क) १०२८, (ख) ८०४४

शिवापराधभञ्जनस्तोत्र

लि०—शङ्कराचार्य कृत। पूर्ण। —व० प० १०९५

शिवाम्बुकल्प

लि०—(१) ईश्वर-पार्वती सवादरूप। मूत्र का पान के रूप मे तान्त्रिक उपयोग, जिससे सर्वविध रोगो का विनाश कहा गया है, इसमे वर्णित है। —ए० व० ६०६५

(२) —रा० पु० ६७३३

(३) रुद्रयामलान्तर्गत। श्लोक स० १०४, पूर्ण। —र० म० ११२३

(४) रुद्रयामलान्तर्गत। श्लोक स० १२५, पूर्ण। —स० वि० २४५५३

शिवाम्बुविधिकल्प

लि०—श्लोक स० १८०। —अ० व० २५०९

शिवाराधनदीपिका

लि०—(१) हरि विरचित, श्लोक स० १५००। —अ० व० ९०८१

(२) हरि विरचित, श्लोक स० १४६२, अपूर्ण।

—स० वि० २३९०७

शिवार्चनचन्द्रिका

लि०—(१) श्रीनिकेतन-पुत्र श्रीनिवासभट्ट विरचित। इस ग्रन्थ मे तान्त्रिकक्रिया—दैनिक पूजा, पुरश्चरण आदि तथा गणेश, शक्ति, विष्णु, सूर्य, शिव आदि की उपासना वर्णित है। —ए० व० ७२३१

(२) इसमे गुरुलक्षण, सत् और असत् शिष्यो के लक्षण, गुरु और शिष्य की परीक्षा, दीक्षा के काल आदि का निरूपण, दीक्षा के अधिकारी का निर्देश, ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि के विभिन्न मन्त्र, वर्णसङ्करो के दीक्षाधिकार का विवेचन, मन्त्रो के पुल्लिग, स्त्रीलिग आदि लिङ्गो का कथन इत्यादि विषय वर्णित है। —नो० स० २।३००

(३) सुन्दरराज-शिष्य श्रीनिवास विरचित। श्लोक स० ५८४०, १६ प्रकाशो मे पूर्ण। —तं० म० ६६९१

(४) (क) श्रीनिवासभट्ट कृत। श्लोक स०२०००। (ख) श्लोक स० १६००० ३ य प्रकाश से लेकर ४० प्रकाश तक पूर्ण तथा ४१ वाँ प्रकाश चालू। श्रीनिवासभट्ट विरचित। (ग) श्लोक म० ८००, अपूर्ण। मुन्दराचार्य-शिष्य श्रीनिवासभट्ट कृत। (घ) श्लोक स०५०००(१ म मे १४ वे प्रकाश तक) अपूर्ण। (ङ) श्लोक स० ५००, अपूर्ण। (च) श्लोक स० २७००, अपूर्ण। श्रीनिवास कृत। यह शिवपूजा पर निवन्ध ग्रन्थ है।

—अ० व० (क) १३७८, (ख) १२८७८, (ग) १०७२६, (घ) १२८५०, (ङ) ८१५५, (च) ५८५१

(५) श्रीनिवास कृत, यह शिवपूजा पर निवन्ध ग्रन्थ है।

—ओ० कै० १३३२

(६) श्रीनिकेत-पुत्र श्रीनिवास कृत (क) श्लोक स० १८३३०, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ११५००, अपूर्ण। —र० म० (क) ४९६१, (ख) ४९६९

(७) श्रीनिवासभट्ट कृत, श्लोक स० १८१८०, अपूर्ण।

—स० वि० २४९५९

उ०—मन्त्रमहार्णव मे।

शिवार्चनतत्त्व

लि०—पत्रे १७, पूर्ण। —व० प० १०१५

शिवार्चनदीपिका

लि०—अद्वैतानन्दनाथ विरचित। श्लोक स० २०००।

—अ० व० ३५०२

श्रीनिवासार्चनमहारत्न

लि०—(१) गौडभूमिनिवासी शङ्कराचार्य कृत। इसमे शिवपूजा के काल और अकाल, आधार, न्यास आदि का निरूपण करते हुए शिवपूजाविधि प्रतिपादित है।

—नो० स० ११३६२

(२) 'ससारार्णवमग्नाना समुद्धरणहेतवे। शिवार्चनमहारत्न शङ्करेण विरच्यते ॥' यो ग्रन्थ का आरम्भ करते हुए अन्तिम पुष्पिका मे लिखा है —'गौडभूमिनिवासिश्रीशङ्कराचार्य विरचिते शिवार्चनरत्ने सप्तम प्रकाश।' गौडभूमिनिवासी शङ्कराचार्य विरचित

यह ग्रन्थ ७ प्रकाशो मे पूर्ण है। इसकी श्लोक स० ७७७ है। इसमे वर्णित विषय है—शिवपूजा-माहात्म्य, पूजाविधि, लिङ्गनिर्माण आदि कथन, पुष्प आदि का विचार, होम आदि का निरूपण, पुरश्चरण, स्तव, कवच आदि का प्रतिपादन आदि।

—रा० ला० २३७९

शिवार्चनमहोदधि

लि०—(१) भद्रानन्द विरचित, (क) श्लोक स० १६०० (६ ष्ठ और ७ म परिच्छेदमात्र) अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ४२००, अपूर्ण।

—अ० व० (क) ५५३७, (ख) ५५४१

(२) (क) श्लोक स० ५४२, अपूर्ण, (ख) भद्रानन्द कृत, श्लोक स० लगभग १३०२, अपूर्ण। —स० वि० (क) २४०५७, (ख) २६०४७

शिवार्चनविधि

लि०—श्लोक स० ३५०। इसमे शिवपूजा-विधि प्रतिपादित है।

—ट्रि० कै० १०८४ (छ)

शिवार्चनशिरोमणि

लि०—(१) ब्रह्मानन्दनाथ विरचित, श्लोक स० ४०००, १ उल्लास पूरे १२ वाँ उल्लास चालू, अपूर्ण। —अ० व० १२१०२

(२) लोकानन्दनाथ-शिष्य ब्रह्मानन्दनाथ विरचित। उल्लास २१, अन्तिम २१ वे उल्लास की दो पुष्पिकाएँ दी गयी है—एक मे ग्रन्थकार को पूर्णविद्येश्वरीसविदानन्दनाथ-शिष्य नारायणानन्दनाथ कहा गया है और दूसरी मे श्रीलोकानन्दनाथ-शिष्य ब्रह्मानन्द कहा गया है। इसमे १ म पुष्पिका का लेख गलत हो या ग्रन्थकार और उनके गुरु का उपनाम क्रमश विद्येश्वरीसविदानन्दनाथ तथा नारायणानन्द हो। क्योकि अन्यत्र भी ब्रह्मानन्दनाथ ग्रन्थकार का नाम निर्दिष्ट है। —म० द० ५७२७

शिवार्चाक्रमकल्पवल्ली

लि०—(क) श्लोक स० लगभग १३६०, अपूर्ण। (ख) श्रीनिवासभट्ट कृत, श्लोक सं० २८३०, पूर्ण। —स० वि० (क) २४९५२, (ख) २६४२५

शिवार्चारत्न

लि०—श्लोक स० १२०। —अ० व० १०५०१

शिवोपनिषत्

लि०—विवरण द्रष्टव्य ए० व० १८१२ मे। —ए० व० ६१६२

शिष्यलक्षण

लि०—देवी-ईश्वर सवादरूप। देवी के यह प्रार्थना करने पर कि भगवन्, कृपा कर सत् शिष्य-लक्षण, उपदेशक्रम और दीक्षा-भेद मुझे बतलावे। भगवान् ने देवी से सदाचार-सम्पन्न, शमादि गुणयुक्त, गुरुभक्त, वेदाभ्यासरत शिष्य होना चाहिये यो सब प्रश्नो का इसमे समाधान किया है। —म० द० ५७२३

शीतलासाधनविधि

लि०—धूमपान विधि के साथ सलग्न। समिलित श्लोक स० लगभग ६६, पूर्ण।
—स० वि० २५८३५

शुकसंहिता

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी मे।

शुक्रोपासितमृतसंजीवनी

लि०—श्लोक स० १०३, पूर्ण। —स० वि० २५९६४

शुद्धविद्याम्बापूजापद्धति

लि०—श्लोक स० ४७२। पूर्ण। —र० म० १०४६

शुद्धशक्तिमालामन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० ३०। —अ० व० ८८१३ (ख)
(२) (क) श्लोक स० ४०, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ५४, पूर्ण। (ग) श्लोक स० ३५ अपूर्ण। —स० वि० (क) २४१४१, (ख) २४३३०, (ग) २४४२

शुद्धशक्तिमालास्तोत्र

लि०—श्लोक स० १२०। —अ० व० १८२

शूलिनीकल्प

लि०—श्लोक स० २००, अपूर्ण। —अ० व० ९८२० (ग)

शूलिनीकवच

लि०—'क्रियाभेदवर्णन' के साथ सनिविष्ट। समिलित श्लोक स० ८२, पूर्ण।
—स० वि० २५७२५

शूलिनीप्रयोग

लि०—श्लोक स० लगभग ७५, पूर्ण। —स० वि० २५४२०

शूलिनीमन्त्रप्रयोग

लि०—श्लोक स० ५, पूर्ण। —स० वि० २५९६५

शूलिनीविधान

लि०—(क) श्लोक स० लगभग ३०, अपूर्ण। (ख) आकाशभैरवकल्पान्तर्गत श्लोक स० लगभग २९०, अपूर्ण। —स० वि० (क) २४१९७, (ख) २६०२७

शूलिनीस्तोत्र

लि०—आकाशभैरवकल्प के अन्तर्गत, उमा-महेश्वर सवादरूप। श्लोक स० २८४०। इसमे शूलिनी देवी का यन्त्र, प्राणवीज, शक्तिवीज, नेत्रवीज, श्रोत्रवीज, जिह्वावीज, महा-वाक्य, मन्त्रगायत्री, यन्त्रगायत्री, अकारादि ५० वर्ण, दिक्पालवीज आदि यन्त्र के १० अङ्ग, जपमन्त्र, स्तोत्र आदि, पूजाविधि आदि प्रतिपादित है। यह ग्रन्थ २९ अध्यायो मे पूर्ण है। —ट्रि० कै० ११२२

शेषसमुच्चय

लि०—(१) इसमे श्लोक स० २००० और पटल स० १० है।

—अ० व० १३१२८

(२) (क) श्लोक स० १७५०, १० पटलो मे पूर्ण। इसमे देवताओ की प्रतिष्ठा, पूजा आदि वर्णित है। (ख) श्लोक स० १६००। (ग) श्लोक स० १२३५, यह ८ पटलो तक है। (घ) श्लोक स० १२२५, यह छह पटल पर्यन्त ही है।

—ट्रि० कै० (क) १०४८, (ख) १०४९, (ग) १०५०, (घ) १०५१ (क)

शेषसमुच्चयविमर्शिनी

लि०—(क) श्लोक स० ५००। यह शेषसमुच्चय की १० पटल पर्यन्त व्याख्या है, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० १८००, पूर्ण। (ग) श्लोक स० ७००, अपूर्ण। (घ) श्लोक स० १७००। —ट्रि० कै० (क) १०५१ (ख), (ख) १०५३ (ग) १०५४, (घ) १०५५

शेषार्या सव्याख्या

लि०—मूलकार, शेषनाग। व्याख्याकार, राघवानन्द मुनि। श्लोक स० ११५०। यह परमार्थसार के नाम से भी प्रख्यात है। —अ० व० ७७८१ (क)

शैवकल्पद्रुम

लि०—(१) प्रद्युम्न-पौत्र रामकृष्ण-पुत्र लक्ष्मीधर विरचित। इसमे ५ काण्ड है। यह जगत् किससे उत्पन्न हुआ, इसमे कौन-कौन कारण है उनमे से कौन पूज्यतम है इत्यादि वहुत विषय वर्णित है। —ए० व० ६४६३

(२) यह आठ ८ काण्डो मे पूर्ण है। इसकी श्लोक स० लगभग ३३०० है। आरम्भ मे जगत्कारणादि का निरूपण कर दीक्षा, जप, मण्डप आदि के लक्षण, गार्हस्थ्यविधि, प्रात कृत्य, न्यासविधि, पूजा आदि, पार्थिव लिङ्गार्चनविधि,भस्म-स्नान, व्रतविधि, शिव-स्तोत्र आदि, शिवमाहात्म्यादि विषय इसमे वर्णित है। यह भुवनेश्वर मे रचित हुआ है। —नो० स० ४।३०४

शैवचिन्तामणि

लि०—यह ८ पटलो मे पूर्ण है। इसमे शिवजी की पूजा विस्तार सेव णित है। रुद्राक्षधारण, मातृकान्यास, पञ्चाक्षरोद्धार, अन्तर्याग, मुद्रा, ध्यान, आसन, उपचार आदि उपवासनान्त शिवरात्रिव्रत वर्णन आदि विषय इसमे वर्णित है। —ए० व० ६४७०

शैवतत्त्वामृत

लि०—पन्ने २७७। —तँ० म० ११४००

शैवधर्मसंग्रह

लि०— —प्राप्त ग्रन्थसूची से।

शैवपरिभाषामञ्जरी

लि०—शिवयोगिशिष्य निगमज्ञानदेव विरचित। श्लोक स० १११६। १० पटलो मे पूर्ण। —ट्रि० कै० १०५६

शैवभूषण

लि०—श्लोक स० ४००, अपूर्ण। शैवसिद्धान्तानुसार पूजाविधि इसमे वर्णित है। ७ प्रकार के शैवो का निर्देश करते हुए शिवपूजा वर्णित है। —ट्रि० कै० १०५७

शैवरत्नाकर

लि०—ज्योतिर्नाथ कृत, श्लोक स० लगभग १९२५, पूर्ण।

—स० वि० २५१०५

उ०—वीरशैवानन्दचन्द्रिका मे।

शैवरश्मिमालामन्त्र

लि०—श्लोक स० लगभग ४१, पूर्ण। —स० वि० २५१३१

शैवसिद्धान्तमञ्जरी

लि०—श्रीकाशीनाथ कृत, श्लोक सं० लगभग १९०, पूर्ण।

—स० वि० २६२३५

शैवसिद्धान्तमण्डन

लि०—मडोपनामक जयराममट्ट-पुत्र काशीनाथमट्ट विरचित। इसमे प्रधानतः पौराणिक वाङमय के उद्धरणो द्वारा भगवान् शिव की सर्वश्रेष्ठता और महत्ता सिद्ध करने का यत्न किया गया है। —ए० व० ६४५६

शैवागम

लि०—श्लोक स० ७००। इसमे शिवपूजाविधि, मन्दिरोत्सव, ध्वजदण्ड-प्रतिष्ठा-विधि आदि विषय वर्णित है। —ट्रि० कै० १०५९

शैवागमनिबन्धन

लि०—मुरारिदत्त विरचित, श्लोक स० ४७००, मन्त्र प्रयोग, मन्त्रसिद्धि, मुद्रा, दीक्षा, अभिषेक, शैवमण्डल, प्रतिष्ठा, जीर्णसस्कार, सब प्रकार के स्नानो का निरूपण, उनके अङ्गभूत अन्यान्य कर्मो के साथ इसमे सक्षेपत वर्णित है। यह ग्रन्थ २७ पटलो मे पूर्ण है। —ट्रि० कै० १०५९-६०

शैवानुष्ठानकलापसंग्रह

लि०—गर्तवनशङ्कर कृत, श्लोक स० १०५००। इसमे शैवानुष्ठानसग्रह वर्णित है। देव-विग्रह की यथाविधि पूजा, अन्नदान आदि से सब की परितुष्टि, नवे दिन रात्रि में निशाहोम, विधिपूर्वक भूतबलिका विकिरण कर देवताओ को नमस्कार करना और क्षमा माँगना, तदुपरान्त उत्सवविधि आदि विषय वर्णित हैं। यह ग्रन्थ अति गोपनीय कहा गया है। —ट्रि० कै० १०६१

श्मशानकालीमन्त्र

लि०—इसमे श्मशान काली के बीजमन्त्र, पूजादि की पद्धति तथा प्रसङ्गत बगला-मुखी-ध्यान आदि विषय वर्णित है। श्लोक स० ११९।

—रा० ला० ९९६

श्मशानार्चनपद्धति

लि०—श्लोक स० ६०, अपूर्ण। —स० वि० २५४७१

श्यामलारहस्य

उ०—सौभाग्यभास्कर मे।

श्यामलाकल्पलतिका

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

श्यामलासहस्रनाम

उ०—सौभाग्यभास्कर मे।

श्यामाकल्पलता

लि०—(१) माधव कविकण्ठाभरण चक्रवर्ती के पुत्र रामचन्द्र कविचक्रवर्ती विरचित। यह ग्रन्थ अनिन्दित आचार मार्ग से साधको को तान्त्रिक सिद्धि प्रदान करनेवाला है। यह ११ स्तवको मे पूर्ण है। —ए० व० ६३०५

(२) यह लगभग ३००० श्लोकात्मक ग्रन्थ है। इसमे गुरु और शिष्य के लक्षण, दीक्षा की प्रशसा, नवचक्रो का वर्णन, दक्षिणादेवी की नित्य पूजा, आसनादि विधि, विजया-शुद्धि, विविध न्यास, अवगुण्ठनादि नानाविध मुद्राएँ, विविध स्तव, कुमारीपूजन, वीर-साधन, आकर्पण-प्रयोग आदि पचासो विषय वर्णित है। नौ० स० १।३७२

(३) श्लोक स० ३२४०, स्तवक स ११। इसमे वर्णित विषय है—विद्यामाहात्म्य, दीक्षा-प्रकरण का उपदेश, नित्यपूजा के प्रमाण, श्यामा की स्तुति, श्यामाकवच, पुरश्चरण-विधि, विशेप प्रकार की साधना, रहस्य साधनविधि, भावादिका निर्णय, होमविधान आदि। —रा० ला० २६७

श्यामाकल्प

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

श्यामाकल्पलतिका

लि०—(१) मथुरानाथ विरचित। इसके सस्करण वगलालिपि मे अनुवाद के साथ साथ प्रकाशित हो चुके है। इसका रचनाकाल १५१४ शकाब्द अथवा १५९२ ई० कहा गया है। —ए० व० ६६५७–५९।

(२) इस पर एक टीका भी उपलब्ध है। —ए० व० ६६६०

(३) महामहोपाध्याय मथुरानाथ कवि विरचित। श्लोक स० २७९। इसमे श्यामास्तोत्र वर्णित है। —रा० ला० १६१३

श्यामाकवच

लि०—(१) भैरवयामल से गृहीत, श्लोक स० ३६।

—अ० व० ३४२३ (ख)

(२) भैरवतन्त्रान्तर्गत भैरव-भैरवी सवादरूप यह कवच कालीकल्प, जो भैरव-तन्त्रान्तर्गत है, मे लिया गया है। इसमे कालिका की आरावना मे प्रवृत्ति कराने वाले प्रयोजन आदि वर्णित हैं। —रा० ला० ३८६

(३) (क) भैरवतन्त्रान्तर्गत, पूर्ण। (ख) भैरवतन्त्रान्तर्गत, जगन्मङ्गल नामक श्यामाकवच, पूर्ण। (ग) भैरवतन्त्रान्तर्गत। श्यामाकवच, पूर्ण।

—बं० प० (क) ८७७, (ख) ३९१, (ग) १०६८ (ख)

श्यामाचारतन्त्र

लि०—इसमे श्यामादेवी की पूजाविधि प्रतिपादित है। —बी० कै० १३४३

श्यामापद्धति

लि०—(१) स्वप्रकाश विरचित, श्लोक सं० १०००। —अ० व० १०४८३

(२) पन्ने ८, अन्त मे भैरवतन्त्रोक्त जगन्मङ्गलकवच भी है।

—रा० पु० ५८०९

(३) (क) श्लोक स० ६३६, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ७३०। लिपिकाल १८०२ शकाब्द। —सं० वि० (क) २६३२०, (ख) २६५२५

श्यामापद्धतिरत्नाकर

लि०— —ए० व० ६३०९

श्यामापूजा

लि०—इसमे श्यामादेवी की पूजाविधि वर्णित है। —बी० कै० १३४४

श्यामापूजापद्धति (१)

लि०—(१) विवरण द्रष्टव्य रा ला ७२६। —ए० व० ६३१३

(२) इसमे दक्षिणकाली की पूजापद्धति प्रतिपादित है। दक्षिणकालिका की पूजा की अङ्गभूत विधियाँ भी वर्णित हैं। श्लोक स० २५०। —रा० ला० ७२६

(३) श्लोक स० ३००, पूर्ण। —र० म० ४८७२

(४) श्लोक सं० १६२, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ९६, अपूर्ण। (ग) श्लोक सं० लगभग १४०, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४९०२, (ख) २६१२३, (ग) २६२४९

श्यामापूजापद्धति (२)

लि०—चक्रवर्ती विरचित। इसमे उपासक के प्रात कृत्य आदि तथा कालीपूजा वर्णित है। —ए० व० ६३०९

(२) (क) पत्रे १९, पूर्ण। (ख) पत्रे १३ पूर्ण।

—व० प० (क) ५६१ (क), (ख) ५६१ (ख)

श्यामापूजाप्रयोग

लि०—श्लोक स० ३७२, अपूर्ण। —स वि २४६१७

श्यामापूजाविधि

लि०—(क) श्लोक स० लगभग ६०, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० लगभग १२४, पूर्ण। (ग) श्यामारहस्यान्तर्गत, मुण्डमालातन्त्रोक्त कालीककारादिशतनामस्तोत्र भी इसमे सनिविष्ट है। समिलित श्लोक स० ८६४, पूर्ण। (घ) श्लोक स० लगभग ६५, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २४६८०, (ख) २४६८१, (ग) २५७६३, (घ) २५७८१

श्यामापूजाव्यवस्था

लि०—श्लोक स० लगभग १००, अपूर्ण। —स० वि० २५२५१

श्यामाप्रकरण

लि०—(क) श्लोक स० लगभग १४४, पूर्ण। (ख) श्लोक स० २४० (दो अपूर्ण पुस्तको की), अपूर्ण। —स० वि० (क) २४७५५, (ख) २६०९०

श्यामामन्त्र

लि०—इसमे दश महाविद्याओ के मन्त्र और बीजमन्त्र सगृहीत है तथा देवी की पूजा पद्धति भी सप्रमाण वर्णित है। इसकी श्लोक स० ४३२ है।

जो मन्त्रवान् पुरुष काली का चिन्तन करता है उसे सब ऋद्धि-सिद्धियाँ प्राप्त होतीहैं। उसके मुँह से सभा मे गद्यपद्यमयी वाणी अनायास अप्रतिहत रूप से प्रादुर्भूत होती है। उसके दर्शनमात्र से वादी हतप्रभ हो जाते है। राजा तक दासवत् उसकी सेवा करते है औरो की तो बात ही क्या ? अग्नि को शीतल बना देना, जलधारा को रोक देना, सूर्य की गति रुद्ध

कर देना, दिन को रात और रात को दिन कर देना उसके बाँये हाथ के खेल है। वह सबको वश करने मे समर्थ होता है, एव अन्त मे अत्यन्त दुर्लभ देवीगण होता है।

—रा० ला० ९३४

श्यामामानसार्चनविधि

लि०—शङ्कराचार्य विरचित, श्लोक स० १४२। —अ० व० १०६९४

श्यामामोदतरङ्गिणी

लि०—(१) महाभूत प्रोक्त, पार्वती-महाभूत सवादरूप। इसमे १२ पटल है। यह ग्रन्थ ककार मन्त्र, आकार मन्त्र लकारमन्त्र, ईकार मन्त्र इत्यादि रूप से काली के विभिन्न मन्त्रो का प्रतिपादक है। अति सूक्ष्म रूप से काली पूजाविधि भी इसमे वर्णित है।

—ए० व० ५९६४

(२) श्लोक स० २७५, पूर्ण। —स० वि० २५७२७

श्यामारत्न

लि०—यादवेन्द्र विद्यालङ्कार विरचित, श्लोक स० १२००। इसमे दश महाविद्याओ के मन्त्रोद्धार, पुरश्चरण, जप, होम, दक्षिणा आदि विषय वर्णित हैं। दक्षिणाकाली की पूजापद्धति भी इसमे सनिविष्ट है। —रा० ला० ३७७

श्यामारहस्य

लि०—(१) पूर्णानन्द परमहस विरचित। इसमे २२ परिच्छेद है। प्रतिपाद्य विषय है—न्यास-विवरण, अन्तर्यजन-विवरण, साधक का कुलवेप-निर्णय, रहस्यमाला, मन्त्र-सिद्धार्थविवरण, भिन्न-भिन्न मन्त्रो का विवरण, कालीतत्त्व-विवरण, पुरुषार्थसाधन विवरण, वीर्यमोचन, सामान्य-साधन, पुरश्चरणके विना मन्त्र सिद्धि के उपाय, पीठजपनिर्णय, कुलाचारनिर्णय, महानीलक्रम-वर्णन, पुरश्चरणविवरण आदि।

—इ० आ० २५९७

(२) विवरण, द्रष्टव्य रा० ला० ५९१ —ए० व० ६२९९

(३) पूर्णानन्द विरचित, (क) श्लोक स० २५००।(ख) श्लोक स० १५५० परिच्छेद ६ से १८ तक अपूर्ण, (ग) श्लोक स० २५००।

—अ० व० (क) १६४७, (ख) ३५०३, (ग) १२०१३

(४) पूर्णानन्द कृत, पत्रे १४५, पूर्ण। —त्र० प० ११८

(५) पूर्णानन्द गिरि कृत, (क) पत्रे १८५, पूर्ण । (ख) पत्रे ९६ ।

—ज० का० १०९०

(६) श्लोक स० २३०० ।

—डे० का० (१८८३–८४ ई०)

(७) पूर्णानन्दगिरि कृत (क) पत्रे १०४ । (ख) पत्रे २२ । (ग) पत्रे ६९ ।

—रा० पु० (क) ५६०५, (ख) ६२२१, (ग) ५६६२

(८) ब्रह्मानन्द गिरि-शिष्य वेदान्तागमतत्त्वविशारद, श्रीपूर्णानन्द परमहस परिव्राजकाचार्य विरचित । श्लोक स० २८३५, पटल स० २२ । इसमे प्रतिपादित विषय है—कालीमाहात्म्य, कालीमन्त्र, उसके जप की प्रशसा, प्रात काल के कर्म, तान्त्रिक सन्ध्या, कालीका ध्यान, पूजन आदि, कालीकवच, मन्त्रपुरश्चरण, शक्ति रूप स्त्रीसाधन, मद्य आदि मे घृणा करने मे दोष कथन, नीलसाधन, शवसाधन, ग्रहणकालीन पुरश्चरण, काम्य कर्म के लिए कुण्डविधान, शत्रुमारण, वशीकरण, उच्चाटन, वेतालादिसिद्धि, कौलप्रायश्चित्त आदि ।

—रा० ला० ५९१

(९) (क) श्लोक स० २६१०, पूर्ण । (ख) पूर्णानन्द कृत, श्लोक स० ३४९८, पूर्ण । (ग) श्लोक स० २९२५, पूर्ण ।

—स० वि० (क) २४०३७, (ख) २४८३१, (ग) २४९०४

उ०—सर्वोल्लास तथा कालीसपर्याविधि मे ।

श्यामार्चनचन्द्रिका

लि०—स्वर्णग्रामनिवासी गौडमहागमिक रत्नगर्भ सार्वभौम कृत, श्लोक स० ५२५० । इसमे छह पटल है । शक्ति-माहात्म्य, विद्यामाहात्म्य, सामान्य और विशेष पूजा, उनके अङ्गभूतन्यास, भूतशुद्धि आदि, पुरश्चरण, शाक्तो के आचार, वीरसाधन आदि साधनभेद प्रभृति बहुत-से प्रकरण इसमे वर्णित है ।

—रा० ला०/२२०

श्यामार्चनतरङ्गिणी

लि०—(१) श्री विश्वनाथ सोमयाजी विरचित । इसमे ११ वीचियाँ है । इसकी श्लोक स० लगभग ३५०० है ।

ब्राह्ममूहूर्त मे जाग कर गुरु नमस्कारपूर्वक, कुलवृक्षो को नमस्कार, कुल वृक्षो का निर्देश, प्रात कृत्य, स्थान-शुद्धि, द्वारपाल-पूजन का क्रम, अवरोह, सहार और आरोह रूपिणी भूतशुद्धि तथा प्राणायाम विवेचन, अन्तर्याग, मधुदान निषेध विवेचन, द्रव्यशुद्धि,

उपचार विवेचन, पूजाक्रमविवेचन, कुण्ड के १८ सस्कारो का विचार, होम प्रकार विचार तथा पगुप्रोक्षणविधि इत्यादि विपय इसमे वर्णित है। —नो० स० ४।३०५

(२) श्यामार्चनतरङ्गिणी विश्वनाथ सोमयाजी कृत। कैट् कैट् २।१५९

श्यामार्चनमञ्जरी

लि०—अनारगिरि-शिष्य लालभट्ट विरचित, पत्रे ९३।

—रा० पु० ५६२७

श्यामार्चापद्धति

लि०—श्लोक स० १५००। —अ० व० १०४५९

श्यामासंतोषणस्तोत्र

लि०—काशीनाथ तर्कपञ्चानन विरचित, निर्माणकाल १७५६ शकाब्द। यह चार उल्लासो मे पूर्ण है। इसके १ म उल्लास मे देवी की पूजा के नियम और अन्तिम ३ उल्लासो मे देवीमाहात्म्य वर्णित है। —ए० व०६६६१

श्यामासपर्यापद्धति

लि०—विमलानन्दनाथ विरचित, श्लोक स० ७००। —अ० व० ७१४९

श्यामासपर्याविधि

लि०—(१) काशीनाथ तर्कालङ्कार विरचित। इसमे कालीपूजा का विस्तार से विवरण दिया हुआ है। नो० स० २।२२४ मे इसके ७ विभाग (अध्याय) वतलाये गये है और इसका निर्माण-काल दिया है १६९९ शकाब्द (१७७७ ई०)। इसके विभागो के विपयो मे भी ऐकमत्य नही है। —ए० व० ६३०३

(२) निगमागम विद्याविद्योतित श्री काशीनाथ भट्टाचार्य ने वन्दनीय जनो के वार-वार प्रेरणा करने पर तीनो तन्त्रो का विचार कर श्यामासपर्या की रचना की। विष्णुसहस्र-नाम की तीन आवृत्ति पाठ करने मे मनुष्य को जो फल लाभ होता है उसे एक वार 'काली' कहने से मनुष्य प्राप्त करता है। काली नामोच्चारण मात्र से सव कुछ प्राप्त हो जाता है। इस ग्रन्थ की रचना शकाब्द १६९१ रविवार मार्ग कृष्ण ४ को काशी मे पूर्ण हुई। यह ग्रन्थ सकल पदार्थो का साधक है। यह ७ विभागो मे पूर्ण है। इसमे निम्न निर्दिष्ट विपय प्रतिपादित है—प्रात कृत्य, अन्तर्याग, वहिर्याग, महापीठपूजा, कुलाचारादि कथन, नैमित्तिक पूजन, काम्यसाधन, विद्यामाहात्म्य कथन आदि। —नो० स० २।२२४

(३) काशीनाथ भट्टाचार्य विरचित, श्लोक स० ५०००, अपूर्ण।

—अ० व० १०१२१

(४) (क) काशीनाथ शर्मा कृत, श्लोक स० २६८, अपूर्ण। (ख) काशीनाथ तर्कालङ्कार भट्टाचार्य कृत, श्लोक स० लगभग ३४४०, पूर्ण।

—स० वि० (क) २६४०५, (ख) २६५०४

श्यामास्तोत्र

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत भैरवतन्त्र से गृहीत। यह स्तोत्र 'महत्' विशेषण से विशिष्ट नामो का सग्रह है। यह अष्टोत्तरशतनामस्तोत्र कहा गया है।

—ए० व० ६६३५

(२) वीरतन्त्रान्तर्गत महाकाल कृत, श्लोक स० ५४, इसमे दक्षिणकाली की स्तुति वर्णित है। —रा० ला० ४२१

श्रीकण्ठन्यासप्रमाण

लि०—श्लोक स० लगभग ६०, इसमे 'श्रीविद्यासुन्दरीन्यास' भी सनिविष्ट है। अपूर्ण। —स० वि० २६४०१

श्रीकण्ठाचार्य (ग्रन्थकार)

उ०—ललितार्चनचन्द्रिका मे।

श्रीकण्ठीसंहिता

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल, तन्त्रालोक, स्वच्छन्दतन्त्र तथा श्यामासपर्याविधि मे

श्रीकान्तकल्पवल्ली

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

श्रीकापालेश्वरीभीमादेवीपूजापद्धति

लि०—पितृनिर्मोचनिका नामक। अक्षर नेवारी। पत्रे ५।

—नें० द० १।१५५९ (ङ)

श्रीकुल

उ०—योगराज कृत अभिनवीय परमार्थसार-टीका मे।

श्रीचक्रपूजाविधि

लि०—श्लोक सं० लगभग २५६, अपूर्ण। —स० वि० २५१६९

श्रीचक्रमयूखविवरण

लि०—श्लोक स० लगभग ११६, अपूर्ण। —स० वि० २३८६५

श्रीचक्रलक्षण

लि०—श्लोक स० लगभग २८, पूर्ण। —स० वि० २६२८२

श्रीचक्रलेखनप्रकार

लि०—इसमे श्रीचक्रलेखनविधि वर्णित है। —म० द० ५७३१

श्रीचक्र विवरण

लि०—इसमे श्रीचक्र या श्रीविद्याचक्र के लिखने के प्रकार का विवरण दिया गया है।
—म० द० ५७३२

श्रीचक्राधिष्ठानदेवताश्लोक

लि०—ये श्लोक श्रीचक्र के विभिन्न भागो मे स्थित देवियो के नाम का निर्देश करते है। —म० द० ५७३३

श्रीचक्रार्चनलघुपद्धति

लि०—यह पद्धति परशुराम कल्पसूत्रानुसारिणी है। श्लोक स० ४२०, पूर्ण।
—र० म० ४८८२

श्रीचक्रार्चनविधि

लि०—(१) जगन्नाथ-पुत्र हरपुरनिवासी शाण्डिलगोत्र पृथ्वीधर मिश्र विरचित परशुराम कल्पसूत्र के अनुसार। पन्ने छह। —रा० पु० ५८०५

(२) इसमे वरिवस्याप्रकाश के अनुसार चक्रार्चनविधि वर्णित है, श्लोक स० २४०।
—अ व १३४७०

श्रीचक्रोद्धारविधि

लि०—षोडशाक्षरी विद्या की दुर्बोध पदव्याख्या से समृष्ट समिलित श्लोक स० ७८, अपूर्ण। —सं० वि० २६५२८

श्रीतत्त्वचिन्तामणि

ब्रह्मानन्द-शिष्य पूर्णानन्द परमहस कृत। यह प्रकाशित हो चुका है।

लि०—(क) पूर्णानन्द कृत, श्लोक स० ७८, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० लगभग २००, पूर्ण। —स० वि० (क) २४०३९, (ख) २६३६४

श्रीतत्त्वबोधिनी

लि०—श्रीनाथ-शिष्य कृष्णानन्द विरचित। यह २५०० श्लोकात्मक ग्रन्थ १५ पटलो मे विभक्त है। उनमे प्रतिपादित विषय हैं—गुरुस्तोत्र, कवच आदि, नित्यकर्मानुष्ठान, पूजा आदि, शिवपूजा-विधि, पूजा के आधार आदि तथा न्यासो का विवरण, साधारण पूजा कथन, जपरहस्य, पञ्चाङ्ग, पुरश्चरणकथन, ग्रहणावसर के पुरश्चरण आदि का विवरण, होम, कुमारीपूजा आदि, षट्चक्रविधि, शान्ति, पुष्टि, वश्य आदि षट्कर्म कथन, शान्तिकल्पविधि, आथर्वणोक्त ज्वरशान्ति कथन इत्यादि। यह पुस्तक अपूर्ण प्रतीत होती है। —रा० ला० २८१

श्रीतन्त्र

लि०—देवी-महादेव सवादरूप। यह छह पटलो मे पूर्ण है। इसमे कुल ४२५ श्लोक हैं। —ए० व० ५८२०

श्रीतन्त्रसद्भाव

उ०—श्यामासपर्यापद्धति मे।

श्रीदेवीपूजाविधान

लि०—इसमे शक्ति देवी की पूजाविधि प्रतिपादित है। —म० द० ५७३४

श्रीनाथादिषडाम्नायक्रम

लि०—स्वयप्रकाशेन्द्र सरस्वती कृत, श्लोक स० लगभग ३२१, पूर्ण। लिपिकाल १७९२ वि०। —स० वि० २३८६८

श्रीनाथादिक्रमबलि

लि०—श्लोक स० ६०। —अ० व० ११९७३

श्रीपञ्चार्थक्रम

लि०—श्लोक स० १२५, इसमे शक्तिपूजा का विवरण दिया गया है।

—ट्रि० कै० ११२७ (ठ)

श्रीकृष्णकवच

लि०—सनत्कुमारतन्त्रान्तर्गत, यह कवच त्रैलोक्यमङ्गल नाम से ख्यात है।

—नो० सं० ३।३०९

श्रीकृष्णतन्त्र

लि०—गोशालाकल्पान्तर्गत, श्लोक स० ५९२०। इसमे ज्येष्ठातन्त्र, नागबलिकल्प, तृणगर्भविधि, शक्तिदण्डबलि, सर्पबलि, कुबेरकल्प और श्रीकृष्णतन्त्र इत्यादि विषय वर्णित है। इसलिए इसका नाम यदि इससे व्यापक होता तो उत्तम होता।

—ट्रि० कै० १०६२

श्रीक्रम

उ०—तन्त्रसार मे।

श्रीक्रमचन्द्रिका

लि०—रामभट्ट समारञ्जक विरचित, श्लोक स० १०००। ४ परिच्छेदो मे।

—अ० व० ९११४

श्रीक्रमसंहिता

लि०—पूर्णानन्द परमहस विरचित। यह २५ प्रकाश पर्यन्त है।

—व० प० १४०३

उ०—पुरश्चर्यार्णव, तन्त्रसार, मन्त्रमहार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव मे।

श्रीक्रमोत्तम

लि०—निजानन्द प्रकाशानन्द मल्लिकार्जुनयोगीन्द्र कृत (४ अध्यायो मे) इसकी एक हस्तलिखित पूरी प्रति (१–९७ पृष्ठ की) मैंने (सम्पादक ने) काशीवासी पण्डित अम्बिकादत्त व्यासजी के सग्रह मे श्री गिरिधारीलाल व्यास के सौजन्य से देखी थी।

श्रीगुरुकवच

लि०—पार्वती-महादेव सवादरूप यह निगमसार के अन्तर्गत है। कौलिको के कुलाचार और योगियो के योगसाधन का प्रतिपादक यह परम दिव्य कवच सर्वसिद्धि प्रदायक कहा गया है।

—रा० ला० ४७९

श्रीगुरुस्तोत्र

लि०—शिव-पार्वती संवादरूप। निगमसारान्तर्गत। भगवान् शिवजी ने पार्वतीजी से पूछा कि लोकहितार्थ ऐसा कोई कवच बतलाइए जिसके अनुष्ठानमात्र मे नर योगी हो

जाय। पार्वतीजी ने यही कवच बतलाया और कहा कि यह अत्यन्त दुर्लभ स्तोत्र है। विधिपूर्वक इसका अनुष्ठान करने से मनुष्य भवार्णव पार कर लेता है। श्लोक स० २०।
—रा० ला० ४०७८

श्रीचक्रकल्प

लि०—श्लोक स० २६६ (१ प्रकरण)। —अ० व० १३२६०

श्रीचन्द्रक्रमदर्पण

लि०—अनुभवानन्दनाथ-शिष्य प्रकाशानन्दनाथ कृत। श्लोक स० ५४००। इसमे कमलमन्त्र, लीलानिघण्टु और दारकरण मन्त्र हैं। —अ० व० १३३७५ (ख)

श्रीचक्रन्यास

लि०—श्लोक स० १२५, अपूर्ण। —अ० व० ५६८०

श्रीचक्रन्यासकवच

लि०—श्लोक स० ७७। —अ० व० ११७५९

श्रीचक्रपुष्पाञ्जलि

लि०—श्लोक स० लगभग ७२, पूर्ण। इसमे दिव्यौघ, गुरुपारम्पर्यक्रम, तत्त्वशोधन आदि विषय वर्णित है। —स० वि० २४२८३

श्रीचक्रपूजन

लि०—कमलजानन्दनाथ कृत, श्लोक स० १२००। —अ० व० ८३०६

श्रीचक्रपूजा

लि०—यह श्रीचक्र की पूजा का प्रतिपादक ग्रन्थ है। इसमे गुरु के उपदेशानुसार ऋष्यादि करन्यास, पञ्चाङ्गन्यास कर तथा देवी का ध्यान कर पूजा आरम करनी चाहिए। अपने दक्षिण भाग मे कलशाधार की प्रतिष्ठा कर तथा महात्रिपुरसुन्दरी के अर्घ्यपात्र के आधार को नमस्कार कर पूजा करे, यो पूजाविधि प्रतिपादित है। —म० द० ५७२९

श्रीचक्रपूजाविधान

लि०—इष्ट देवता के यजन का सकल्प कर हेतुकलशस्थापन विधि के उपरान्त चर्मान्वाक् पठन की विधि है। उसके पश्चात् योगिनी के हाथो मे स्थित कलश को लेकर वामदेवाय फ नम ७ वार अभिमन्त्रित कर स्वय पूर्णपात्र को स्वीकार कर सब पात्रो का प्रक्षालन कर यथासुख विहार करे इत्यादि विधि वर्णित है। —म० द० ५७३०

श्रीचक्रपूजाविधि

लि०—श्लोक स० लगभग २५६, अपूर्ण। —स० वि० २५१६९

श्रीचक्रमयूखविवरण

लि०—श्लोक स० लगभग ११६, अपूर्ण। —स० वि० २३८६५

श्रीचक्रलक्षण

लि०—श्लोक स० लगभग २८, पूर्ण। —स० वि० २६२८२

श्रीचक्रलेखनप्रकार

लि०—इसमे श्रीचक्रलेखनविधि वर्णित है। —म० द० ५७३१

श्रीचक्रविवरण

लि०—इसमे श्रीचक्र या श्रीविद्याचक्र के लिखने के प्रकार का विवरण दिया गया है।
—म० द० ५७३२

श्रीचक्राधिष्ठानदेवताश्लोक

लि०—ये श्लोक श्रीचक्र के विभिन्न भागो मे स्थित देवियो के नाम का निर्देश करते है। —म० द० ५७३३

श्रीचक्रार्चनलघुपद्धति

लि०—यह पद्धति परशुराम कल्पसूत्रानुसारिणी है। श्लोक स० ४२०, पूर्ण।
—र० म० ४८८२

श्रीचक्रार्चनविधि

लि०—(१) जगन्नाथ-पुत्र हरपुरनिवासी शाण्डिल्यगोत्र पृथ्वीधर मिश्र विरचित परशुराम कल्पसूत्र के अनुसार। पत्रे छह। —रा० पु० ५८०५

(२) इसमे वरिवस्याप्रकाश के अनुसार चक्रार्चनविधि वर्णित है, श्लोक स० २४०।
—अ व १३४७०

श्रीचक्रोद्धारविधि

लि०—षोडशाक्षरी विद्या की दुर्बोध पदव्याख्या से ससृष्ट समिलित श्लोक स० ७८, अपूर्ण। —स० वि० २६५२८

श्रीतत्त्वचिन्तामणि

ब्रह्मानन्द-शिष्य पूर्णानन्द परमहस कृत। यह प्रकाशित हो चुका है।

लि०—(क) पूर्णानन्द कृत, श्लोक स० ७८, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० लगभग २००, पूर्ण। —स० वि० (क) २४०३१, (ख) २६३६४

श्रीतत्त्वबोधिनी

लि०—श्रीनाथ-शिष्य कृष्णानन्द विरचित। यह २५०० श्लोकात्मक ग्रन्थ १५ पटलो मे विभक्त है। उनमे प्रतिपादित विषय है—गुरुस्तोत्र, कवच आदि, नित्यकर्मानुष्ठान, पूजा आदि, शिवपूजा-विधि, पूजा के आधार आदि तथा न्यासो का विवरण, साधारण पूजा कथन, जपरहस्य, पञ्चाङ्ग, पुरश्चरणकथन, ग्रहणावसर के पुरश्चरण आदि का विवरण, होम, कुमारीपूजा आदि, षट्चक्रविधि, शान्ति, पुष्टि, वश्य आदि षट्-कर्म कथन, शान्तिकल्पविधि, आथर्वणोक्त ज्वरशान्ति कथन इत्यादि। यह पुस्तक अपूर्ण प्रतीत होती है। —रा० ला० २८१

श्रीतन्त्र

लि०—देवी-महादेव सवादरूप। यह छह पटलो मे पूर्ण है। इसमे कुल ४२५ श्लोक हैं। —ए० व० ५८२०

श्रीतन्त्रसद्भाव

उ०—श्यामासपर्यापद्धति मे।

श्रीदेवीपूजाविधान

लि०—इसमे शक्ति देवी की पूजाविधि प्रतिपादित है। —म० द० ५७३४

श्रीनाथादिषडाम्नायक्रम

लि०—स्वयप्रकाशेन्द्र सरस्वती कृत, श्लोक स० लगभग ३२१, पूर्ण। लिपिकाल १७९२ वि०। —स० वि० २३८६८

श्रीनाथादिक्रमबलि

लि०—श्लोक स० ६०। —अ० व० ११९७३

श्रीपञ्चार्यक्रम

लि०—श्लोक स० १२५, इसमे शक्तिपूजा का विवरण दिया गया है। —ट्रि० कै० ११२७ (ठ)

श्रीपद्धति

लि०—(१) श्लोक स० २५०, अपूर्ण । —अ० व० १०७०४

(२) श्लोक स० लगभग ३९२, पूर्ण । —सं० वि० २६५६४

(३) पत्रे ९६, पूर्ण । —डे० का० ४९५ (१८७५—७६ ई०)

श्रीपराक्रम

उ०—योगिनीहृदयदीपिका मे ।

श्रीपरापूजन

लि०—ईश्वरयोगी चिद्रूपानन्द विरचित, श्लोक स० ९६९, पूर्ण ।

—डे० का० ४०२ (१८८३—८४ ई०)

श्रीपादुकानमस्कार

लि०—श्लोक स० लगभग ११९, अपूर्ण । —सं० वि० २५२५८

श्रीपूजनपद्धति

लि०—श्लोक स० लगभग १०७, अपूर्ण ।

—स० वि० २६०८५

श्रीपूजापटल

लि०—कालीकल्पान्तर्गत । श्लोक स० १५०, पूर्ण ।

—स० वि० २६२२२

श्रीपूजापद्धति

लि०—(१) श्लोक स० ५०० । —अ० व० ५७२७

(२) (क) श्लोक स० लगभग ११७, पूर्ण । (ख) श्लोक स० लगभग ३००, अपूर्ण (?) । —स० वि० (क) २५००६, (ख) २५२८९

श्रीपूजामहापद्धति

लि०—भूर्जपत्रलिखित । —डे० का० (१८७५-७६ई०)

श्रीपूजारत्नमयूख

लि०—सत्यानन्दकृत, श्लोक स० लगभग ८८०, पूर्ण । लिपिकाल संवत् १७९६ वि० ।

—स० वि० २६११०

श्रीपूर्वशास्त्र

उ०—जन्ममरणविचार मे ।

श्रीमतरहस्यतिलक

उ०—जन्ममरणविचार मे ।

श्रीमतसारटिप्पन

लि०—यह श्रीमतसार पर किये गये टिपनो Notes का सग्रह है। नौ सिद्ध, प्रत्येक सिद्ध की दो-दो शक्तियाँ तथा परमात्मा के शरीर की अकारादि वर्णो से रचना आदि विपय इसमे विस्तार से वर्णित है। यह ८ पटलो मे है। —ए० व० ५८०७

श्रीमतोत्तरतन्त्र

लि०—श्रीकण्ठनाथावतारित। यह २४००० श्लोको का तन्त्र ग्रन्थ २५ पटलो मे पूर्ण है। —ने० द० १।१४१२

श्रीमन्त्रविधान

लि०—श्लोक स० लगभग ३७, अपूर्ण। —स० वि० २५९२७

श्रीयन्त्रचिन्तामणि

लि०—दामोदर कृत, श्लोक स० १०२०, पूर्ण। लिपिकाल सवत् १८८० वि०। —स० वि० २६२०४

श्रीयन्त्रार्चन

लि०—श्लोक स० लगभग ३८, पूर्ण। —स० वि० २५८७७

श्रीराजिका

उ०—मन्त्ररत्नावली मे ।

श्रीरामपद्धति

लि०—सहजानन्दशिष्य विरचित। इसका पुरश्चरण छह लाख है। इसमे श्रीरामचन्द्र की पूजाविधि आदि विषय वर्णित है। श्लोक स० २५९। —रा० ला० ४२११

श्रीविद्यागोपालचरणार्चनपद्धति

लि०—गगनानन्दनाथ-शिष्य चिदानन्दनाथ विरचित। इसमे पूजक के दैनिक कृत्यो से आरम कर त्रिपुरा और गोपाल दो देवताओ की सयुक्त पूजापद्धति वर्णित है। —ए० व० ६३४६

श्रीविद्या

लि०—पन्ने ३२१, पूर्ण। —डे० का० ८ (१८७५-७६ ई०)

श्रीविद्या और भैरवप्रयोग

लि०—पन्ने २५, श्लोक स० ४३७। —डे० का० २५८ (१८८३-८४ ई०)

श्रीविद्याजपविधि

लि०—श्लोक स० लगभग ३०, अपूर्ण। —स० वि० २६६७९

श्रीविद्याटीका

लि०—(१) अगस्त्य कृत, (क) श्लोक स० १२०। (ख) श्लोक स० १२०।
—अ० व० (क) ६२०३, (ख) ७७९०

(२) अगस्त्यमुनि कृत, श्लोक स० १४४, पूर्ण। —स० वि० २५६५७

श्रीविद्यानित्यपूजापद्धति

लि०—साहिव कौलानन्दनाथ विरचित। —ए० व० ६३५४

श्रीविद्यानिरूपण

लि०—श्लोक स० १८, अपूर्ण। —स० वि० २६०८०

श्रीविद्यान्यासदीपिका

लि०—काशीनाथ रचित, लगभग २४८, पूर्ण। —स० वि० २५४७५

श्रीविद्यापञ्चाक्षरीमन्त्र

लि०—श्लोक स० ८०। —अ० व० ५७७

श्रीविद्यापटल

लि०—दक्षिणामूर्त्तिमहितोक्त। पन्ने १५। —रा० पु० ५७५५

श्रीविद्यापद्धति

लि०—(१) कादिमतानुसार, (क) श्लोक स० १०००। (ख) श्लोक स० १०००।
—अ० व० (क) १०५७०, (ख) १२०४५

(२) पट्चक्रो मे देवीपूजा के लिए इसमे निर्देश दिये गये हैं। श्री निजात्मप्रकाशानन्द योगीन्द्र विरचित। ये ज्ञानानन्द के शिष्य थे। यह ग्रन्थ दो खण्डो मे है। २य खण्ड मे ४ उन्लास है। —वो० कै० १३३५

(३) श्लोक स० ५५४, पूर्ण। —र० म० ४८७३

श्रीविद्यापरिवारपूजन

लि०—श्लोक सं० लगभग २००, अपूर्ण। मन्त्रमहोदधि के अन्तर्गत।

—स० वि० २५८६६

श्रीविद्यापूजनसंकेत

लि०—श्लोक स० ६०। —अ० व० ११८२४ (क)

श्रीविद्यापूजापद्धति (१)

लि०—श्रीकर विरचित, श्लोक स० ३०००, पटल सं० ८।

—अ० व० १०३५७

श्रीविद्यापूजापद्धति (२)

लि०—(क) रामानन्द रचित, श्लोक स० ६२१, पूर्ण। लिपिकाल शकाब्द १७४६। (ख) श्लोक स० ८२८, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २५२७७, (ख) २६५४१

श्रीविद्यापूजाविधान

लि०—इसमे श्रीचक्र की षोडशोपचार पूजाविधि प्रतिपादित है।

—म० द० ५७३५

श्रीविद्यामन्त्रदीपिका

लि०—भडोपनामक जयरामभट्ट-पुत्र काशीनाथ विरचित। इसमे त्रिपुरामन्त्र का अर्थ दिया गया है। देवता के यथार्थ स्वरूप के प्रतिपादक वाक्य विविध मूल तन्त्रों से इसमे उद्धृत है। —ए० व० ६३४५

श्रीविद्यामन्त्ररत्नसूत्र

लि०—(१) गौडपादाचार्य विरचित। श्लोक स० ४०। अपूर्ण।

—अ० व० १०३५७

(२) श्रीगुकयोगीन्द्र-शिष्य श्रीगौडपादाचार्य विरचित। इसमे श्रीविद्यामन्त्र के प्रत्येक वर्ण का तान्त्रिक तात्पर्य, उन वर्णो की प्रतिनिधि देवियां तथा शाक्त सम्प्रदाय के सिद्धान्त वर्णित है। —म० द० ५७३७ से ४०

श्रीविद्यामन्त्ररत्नसूत्रव्याख्या (दीपिका)

लि०—श्लोक स० ५००, अपूर्ण। —अ० व० १०६५१

श्रीविद्यामालामन्त्र

लि०—ललितापरिशिष्टतन्त्रोक्त, पन्ने १४। —रा० पु० ५७९८

श्रीविद्याम्नायोपनिषत्

लि०—इसमे श्रीविद्यामन्त्र का आम्नाय उपनिषत् की शैली मे वर्णित है।

—म० द० ५७३६

श्रीविद्यारत्नदीपिका

लि०—शङ्करारण्य विरचित। श्लोक स० ११०४, पूर्ण।

—स० वि० २५११८

श्रीविद्यारत्नसूत्र

लि०—श्रीशुकयोगीन्द्र के शिष्य श्रीगौडपादाचार्य विरचित। इसमे श्रीविद्यामन्त्र के प्रत्येक वर्ण का तान्त्रिक तात्पर्य, उन वर्णो की प्रतिनिधिभूत देवियाँ तथा शाक्त सम्प्रदाय के मूल सिद्धान्त वर्णित है, पूर्ण। —म० द० ५७३७ से ४० तक

श्रीविद्यारत्नसूत्रदीपिका

लि०—(१) विद्यारण्य विरचित, पन्ने ४४। —रा० पु० ५६६५

(२) (क) पन्ने २७, पूर्ण। परमहस परिव्राजकाचार्य श्रीविद्यारण्य विरचित श्रीविद्यारत्नसूत्रकी दीपिका नाम की व्याख्या। (ख) पन्ने ३७, इस प्रति की पुष्पिका मे दीपिकाकार का नाम परमहस परिव्राजकाचार्य श्रीमद्विद्यारण्य मुनिवर्य-शिष्य श्रीशङ्करारण्य मुनि दिया है। —म० द० (क) ५७४१, (ख) ५७४२

श्रीविद्यार्चनपद्धति

लि०—(१) श्लोक स० ५००, अपूर्ण। —अ० व० ५४३५

(२) मन्त्रमहोदधि के अनुसार, पन्ने ४७। —रा० पु० ७५०२

श्रीविद्यार्चनसंक्षेपपद्धति

लि०—मन्त्रमहोदधि मे उक्त, पन्ने ३७। —रा० पु० ५४६८

श्रीविद्यार्णव

लि०—श्लोक स० ५९६, अपूर्ण। —स० वि० २३९०१

श्रीविद्यार्थदीपिका

विद्यारण्य विरचित।

उ०—सौन्दर्यलहरी की सौभाग्यवर्द्धिनी टीका मे।

श्रीविद्यालघुपद्धति

लि०—श्लोक स० ५००, ४ प्रकाशो मे। —अ० व० १०८२०

श्रीविद्याविधान

लि०—श्लोक स० ९, अपूर्ण। —स० वि० २५०५५

श्रीविद्याविलास

लि०—श्रीशङ्कराचार्य-शिष्य मगनानन्दनाथ कृत, ७ उल्लासो मे श्रीविद्या के उपासक की दिनचर्या, सुन्दरीपूजा, प्राणायाम, श्रीचक्रपूजा, आवरणपूजा, पारायणक्रम तथा पुरश्चरणविधि इसमे वर्णित है। —म० द० ५७४३-४५

श्रीविद्याविशेषपद्धति

लि०—श्लोक स० ९४५, अपूर्ण। —र० म० ४८५७

श्रीविद्याविशेषपूजापद्धति

लि०—श्लोक स० लगभग ५२५, पूर्ण। —स० वि० २६२४७

श्रीविद्यासंक्षेपपद्धति

लि०—श्लोक स० ७५। —अ० व० १६८८

श्रीविद्योपासनापद्धति

लि०—श्लोक स० ५१८, पूर्ण, लिपिकाल सवत् १८७५ वि०।

—स० वि० २५०७४

श्रीसिद्धसूक्ति

लि०—श्रीसिद्धशाम्भवतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० ६५०। महेशादि सिद्धों ने जिस रस-शास्त्र को पहले प्रकाशित किया उसी से उद्धृत अनुभूतार्थ यह श्रेष्ठ सिद्धसूक्ति है। इसमे रसायनविधि वर्णित है। पारद के १८ सस्कार इसमे प्रतिपादित हैं। यह १३ पटलो मे है।

—ट्रि० कै० १०१९ (ग)

श्रीसूक्तपद्धति

लि०—श्लोक स० २२५। —अ० व० ११७१६

श्रीसूक्तविद्याचन्द्रिका

लि०—मामुरानन्द ? कृत, श्लोक स० ५२७। —अ० व० १२६९२

श्रीसूक्तविधान

लि०—(१) इसमे भाग्योदय के लिए श्रीसूक्त का तान्त्रिक प्रयोग वर्णित है। श्री-सूक्त के प्रत्येक सूक्त से विभिन्न न्यास करने का इसमे निर्देश किया गया है। उसके अनन्तर लक्ष्मी की सूक्त मन्त्रों से पूजा प्रतिपादित है। इसे ही तान्त्रिक भाषा मे पुरश्चरण कहते हैं। —ए० व० ६५००, ६५०१

(२) (क) श्लोक ६०। (ख) श्लोक २००। (ग) श्लोक २५। विद्यारण्यकृत बीज सहित। —अ० व० (क) ५५८४, (ख) ८२३६, (ग) ११७६१

श्रीसूक्तविधानकारिका

लि०—श्रीवैद्यनाथ पायगुण्डे कृत। श्लोक स० ७८६।

—अ० व० १३७८०

श्रीसूक्तविधि

लि०—श्लोक स० १५०। —अ० व० ८३४७

श्रुतिसारसमुद्धरणप्रकरण

लि०—त्रोटकाचार्य विरचित। इसमे देवी की तान्त्रिक पूजा प्रतिपादित है। पन्ने ६५। —बी० कै० १३३६

श्वेतकालीस्तोत्र

लि०—वाडवानलीयमहातन्त्रान्तर्गत, इसमे श्वेतकाली-कवच, श्वेतकाली-सहस्रनाम, श्वेतकाली-स्तवराज तथा श्वेतकाली-मातृकास्तोत्र वर्णित है। —ए० व० ६६४८

षट्कर्म

लि०—वशीकरण मात्र, श्लोक स० २५, अपूर्ण। —सं० वि० २५२३७

षट्कर्मदीपिका

लि०—(१) श्रीकृष्ण विद्यावागीश भट्टाचार्य विरचित। इसमे तन्त्र के स्तम्भन, मोहन, मारण, उच्चाटन आदि षट्कर्म वर्णित है। यह बंगला लिपि मे प्रकाशित हो चुका है। —ए० व० ६५२९

(२) ९ उपदेशो मे पूर्ण है। इसमे षट् कर्म देवियो—कृत्या देवी, महात्रिपुरसुन्दरी, भद्रकाली—को नमस्कार कर आभिचारिक षट् कर्मो के उपाय और विधि कही गयी है।
—नो० स० ४।३०९

(३) कृष्णानन्द कृत, अपूर्ण। —ज० का० १०९७

(४) (क) श्लोक स० लगभग ७५, अपूर्ण। (ख) कृष्णानन्द भट्टाचार्य कृत, श्लोक स० लगभग ९४०, अपूर्ण। (ग) श्रीकृष्ण विद्यावागीश भट्टाचार्य कृत, श्लोक स० ९२०, अपूर्ण। —स० वि० (क) २४३८४, (ख) २४७३४, (ग) २६३८२

षट्कर्मप्रदीपिका

श्रीकृष्ण विद्यावागीश भट्टाचार्य कृत, श्लोक स० १०००, उद्देश स० ९।
—अ० ब० १०६६२

(६) श्रीकृष्ण विद्यावागीश कृत (नवमोद्देशान्त)। पूर्ण।
—ब० प० ३६३

षट्कर्मप्रयोग

लि०—(१) श्लोक स० ५०, अपूर्ण। —अ० ब० ७३०६

(२) कालरात्रिकल्पान्तर्गत। इसमे, विशेष रात्रि मे (काल रात्रि मे), देवीजी की तान्त्रिक पूजा के सम्बन्ध मे निर्देश प्रतिपादित है। —बी० कै० १२७०

(३) श्लोक स० २२, पूर्ण। —स० वि० २४६४७

षट्कर्मलक्षण

लि०—(१) इसमे शान्तिक, वशीकरण, स्तभन, विद्वेषण, उच्चाटन और मारण इन तान्त्रिक कर्मो के लक्षण, इनके देवता, आवश्यक द्रव्य, स्थान, काल, प्रयोगविधि आदि विषय वर्णित हैं। —नो० स० ३।३१४

(२) श्लोक स० २८, अपूर्ण। —स० वि० २४१६३

षट्कर्मविधि

लि०—(१) कुलार्णवान्तर्गत, इसमे कुल ३० श्लोक हैं। तन्त्र के छह कलुष कर्मो—मारण, मोहन, उच्चाटन आदि कर्मो—की विधि वर्णित है। यह ग्रन्थ कुलार्णव का १६ वाँ पटल है। —ए० ब० ५९१४

(२) पत्ना १, मन्त्रमहोदधि मे उक्त षट्कर्मनिरूपणान्तर्गत।
—स० वि० २५८६५

षट्कर्मोल्लास

लि०—(१) ब्रह्मानन्द-शिष्य पूर्णानन्द परमहंस कृत। यह १२ उल्लासो मे पूर्ण है। इसमे विद्वेषण, उच्चाटन, वशीकरण, स्तभन, मारण तथा मोहन, इन षट्कर्मो के विषय मे तिथि, नक्षत्र तथा आसनो का नियम उक्त है। माला का नियम, कुण्डनिर्णय, नायिका-सिद्धि, वीरसाधना, शान्तिविधान और षट्क्रियाओ की पृथक्-पृथक् दक्षिणा ये विषय भी इसमे वर्णित है। —नो० स० ४।३०८

षट्क्रम

लि०—(१) उड्डीशमतान्तर्गत। इसमे मारण, मोहन, उच्चाटन, विद्वेषण, स्तम्भन, समोहन ये छह तन्त्रिक क्रूर कर्म ही नही कहे गये है, जलस्तम्भन, अग्निस्तभन, पादप्रचार, केशरञ्जन, रसायनाविकार, राज्यकरणयोग, स्त्रीयोगमाला आदि विविध विषय वर्णित है। यह लगभग दो दर्जन पटलो मे पूर्ण है। —ने० द० २।३६० (इ)

षट्चक्रक्रमदीपिका

लि०—श्रीतन्त्रचिन्तामणि के अन्तर्गत, पूर्णानन्द कृत नन्दराम तर्कवागीश कृत टीका सहित, पूर्ण। —ब० प० ३६२

षट्चक्रटीका (१)

लि०—(१) श्रीशङ्कर कृत। यह षट्चक्र नामक तन्त्र ग्रन्थ की व्याख्या है। ज्ञात होता है कि यह षट्चक्र पूर्णानन्द विरचित षट्चक्रनिरूपण से अतिरिक्त नही है।

—नो० स० १।३८२

(२) श्लोक स० लगभग ३०, अपूर्ण। —स० वि० २६०८९

षट्चक्रदीपिकाटीका (२)

(१) —नो० स० २।३८४

(२) पूर्णानन्द विरचित षट्चक्र पर यह रामनाथ सिद्धान्त कृत टीका है। इसका नाम षट्चक्रदीपिका है। यह कौलोपासना से सम्बद्ध तन्त्रग्रन्थ है।

—रा० ला० २१३०

षट्चक्रदीपिका

लि०—रत्नेश्वर तर्कवागीश कृत। श्लोक स० लगभग ४७०, पूर्ण।

—स० वि० २६००७

षट्चक्रनिरूपण (१)

लि०—(१) पूर्णानन्द विरचित। श्रीतत्त्वचिन्तामणि का एक अश। ये श्रीतत्त्व-चिन्तामणि के आरम्भिक छह अध्याय है। किसी-किसी ने इसे ब्रह्मानन्द गिरि विरचित कहा है। इस पर दो टीकाएँ है—(१) चक्रदीपिका, रामवल्लभ (नाथ ?) कृत, (२) पट्चक्रक्रमदीपिनी, श्रीनन्दराम कृत। यह ग्रन्थ किस ग्रन्थ का अश है और इसका कौन निर्माता है इस विषय मे बहुत वैमत्य दिखायी देता है।

—ए० ब० ६३५६ से ६३६०

(२) इस पर रामवल्लभ (रामदुर्लभ ?) कृत टीका है। —नो० स० १।३८५

(३) पूर्णानन्द कृत, श्लोक स० लगभग १२०, अपूर्ण। —स० वि० २५७६२

[यह कालीचरण, शङ्कर और विश्वनाथ विरचित टीकाओ के साथ प्रकाशित हो चुका है]

षट्चक्रनिरूपण (२)

लि०—कैवल्यकलिकातन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० लगभग १००, अपूर्ण।

—स० वि० २६३३५

षट्चक्रनिर्णय

लि०—योनिमुद्रा तथा अभिलाषाष्टक के साथ सनिविष्ट, समिलित श्लोक स० लगभग ६०, पूर्ण। —स० वि० २५०२८

षट्चक्रनिलय

लि०— —डे० का० २४४ (१८७५–७६ ई०)

षट्चक्रप्रकाश

लि०—(१) पूर्णानन्द कृत, पूर्ण। —ब० प० १३९१

(२) श्लोक स० लगभग १६०, पूर्ण —स० वि० २५५५४

षट्चक्रप्रपञ्च

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, पूर्ण। —ब० प० १२१२

षट्चक्रप्रभेद

लि०—पूर्णानन्द विरचित, इसमे मूलाधारादि पट्चक्रो के विवरण के साथ तन्त्रानुसार पट्चक्रादि के क्रम से नि सृत परमानन्द का निरूपण है। —रा० ला० २२७

षट्चक्रभेदटिप्पणी

लि०—गौडभूमिनिवासी श्रीशङ्कराचार्य कृत। इसमे शरीरस्थित मूलाधारादि पट् चक्र, उनके अधिष्ठाता देवता आदि का निरूपण करने वाले पट्चक्रप्रभेद ग्रन्थ का अर्थ विशद किया गया है। श्लोक स० ३३०। इस ग्रन्थ के कर्ता श्री शङ्कराचार्य ने विविध तन्त्र ग्रन्थ रचे हैं। —रा० ला० ४२८

षट्चक्रविचार

लि०—श्लोक स० लगभग १७५, अकथहचक्र आदि मे और अकडमचक्र अन्त मे है। पूर्ण। —स० वि० २५०३०

षट्चक्रविधि

लि०—(क) ऊर्ध्वाम्नायान्तर्गत, श्लोक स० लगभग ६५, पूर्ण। (ख) वीराचार-समत पूजाविधि के साथ, पूर्ण। —स० वि० (क) २४९९८, (ख) २६२५४

षट्चक्रविवरण (१)

लि०—(१) पूर्णानन्द विरचित। (क) पूर्ण, (ख) अपूर्ण।

—व० प० (क) १३११, (ख) १३१६

(२) (क) पूर्णानन्द कृत, श्लोक स० लगभग १४०, पूर्ण। (ख) श्लोक स० १४०, पूर्ण। (ग) श्लोक स० १२०, अपूर्ण। (घ) पूर्णानन्द कृत श्लोक स० लगभग १३६, पूर्ण। (ङ) दीपिका टीका सहित, श्लोक स० लगभग ८००, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २४४४२, (ख) २४४५७, (ग) २४८५७, (घ) २४८६४, (ङ) २५३०३

षट्चक्रविवरण (२)

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक स० लगभग ७५, पूर्ण। —स० वि० २४६४९

षट्चक्रविवृतिटीका

लि०—नारायण भट्टाचार्य-पौत्र, वामदेव भट्टाचार्य-पुत्र श्री विश्वनाथ भट्टाचार्य कृत, श्लोक स० ४६८। यह पट्चक्रविवृति नामक ग्रन्थ की टीका है। इसमे शरीर स्थित स्वाधिष्ठान आदि पट्चक्रों के विवरण आदि हैं। —रा० ला० ४२९

षट्चक्रविवेचन

लि०—इसमे षट्चक्रों का विवेचन है—

अथाधार गुदे चक्र स्वाधिष्ठान तु शेफसि ।
मणिपूर तथा नाभौ हृदि चक्रमनाहतम् ।
कण्ठे विशुद्धिचक्र च आज्ञाचक्र तु मस्तके । इत्यादि ।

—ए० व० ६६२३

षड्धातुसमीक्षा

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

षट्पद्यमाला

लि०—श्रीरामराम भट्टाचार्य कृत। इसमे १०८ शार्दूलविक्रीडित छन्दो से नाडियो के नाम, स्थान और वर्ण आदि का वर्णन किया गया है।

—नो० स० १।३८७

षट्शतीमत

उ०—ललितार्चनचन्द्रिका मे।

षट्शाम्भवरहस्य

लि०—श्लोक स० लगभग २२१०, पूर्ण। —स० वि० २४९७८

षट्साहस्रिका

लि०—कुलालिकाम्नायान्तर्गत। —ने० द० १।२८५ (ग)

उ०—शतरत्नसग्रह मे।

षडक्षरनिर्णय

लि०—इसमे शिव के षडक्षर मन्त्र का विनिर्णय किया गया है। श्लोक स० ५५।

—ट्रि० कै० ९७३ (ख)

षडन्वयमहारत्न

उ०—पुरश्चर्यार्णव, प्राणतोपिणी, ताराभक्तिसुधार्णव तथा शारदातिलक-टीका राघवभट्टी मे।

षडाम्नाय

लि०—(क) श्लोक स० ३००। (ख) श्लोक स० ३००।

—अ० व० (क) १०७१२, (ख) १३६५६

षडाम्नायमञ्जरी

लि०—श्लोक स० १५००। —अ० व० १००५९

षडाम्नायवर्णन

लि०—श्लोक स० लगभग ५०, अपूर्ण।

—स० वि० २५३५६

षड्दर्शन

लि०—श्लोक स० १०, इसमे गुरुपादुकाष्टक भी सलग्न है।

—अ० व० ५७६० (ग)

षड्योगिनी

लि०—श्लोक स० १०। लिपिकाल १८४० वि०, —अ० व० ५७६० (क)

षड्विद्यागमसांख्यायनतन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० १०००। यह तन्त्र ३३ पटलो मे पूर्ण है। इसमे विविध तन्त्र-क्रियाएँ प्रतिपादित हैं। उनकी सिद्धि मे उपयोगी मन्त्र भी वर्णित है।

—ट्रि० कै० १०६३

(२) इसमे ३२ पटल है। —तँ० म० ११४०८

षष्ठीविद्याप्रशंसा

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। रुद्रयामल १२५०६० श्लोकात्मक है। यह उसका एक अग १२ पटलो मे पूर्ण है, ऐसा पुष्पिका मे ज्ञात होता है। "षष्ठीविद्याप्रशसायाम् उत्तरषट्क समाप्तम्" लिखा है, तथा 'इति षष्ठ पटल' भी लिखा है। पूर्व षट्क के छह पटल+उत्तर षट्क के छह पटल=१२ पटल।

—ने० द० २।३६१ (डी)

षाड्गुण्यविचार (षाड्गुण्यविवेक ?)

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

षोडशनित्यातन्त्र

लि०—(१) देखिए, तन्त्रराजतन्त्र। —ए० व० ५८१७

(२) गणेश-शिव सवादरूप। यह ३६ अध्यायो मे पूर्ण है। प्रत्येक अध्याय मे १०० श्लोक हैं। कुल श्लोक ३६०० हैं। कुछ लोगो के मतानुसार इसमे ४००० श्लोक हैं।

१६ नित्यातन्त्र हैं—१ नित्यातन्त्र०, २ ललिता०, ३ कामेश्वरी०, ४ भगमालिनी०, ५ नित्यक्लिन्ना०, ६ भेरुण्डा०, ७ वज्रेश्वरी०, ८ दूती०, ९ त्वरिता०, १० कुलसुन्दरी०, ११ नित्यानित्या०, १२ नीलपताका०, १३ विजया०, १४ चित्रा०, १५. कुरुकुल्ला०, १६ वाराही०। कालीकादि कही जाती है, क्योकि उसका नाम 'क' से आरम होता है, इसलिए काली विषयक तन्त्रकादि कहे जाते हैं।

—ने० द० २।२६३

(३) श्लोक स० लगभग ५००, अपूर्ण।

—स० वि० २५९६७

षोडशनित्यातन्त्रव्याख्या (मनोरमा)

लि०—प्रपञ्चसार सिह राज प्रकाश सुभगानन्दनाथ विरचित। श्लोक स० १००००, अपूर्ण। इस ग्रन्थ की पूरी श्लोक स० १९९५१ वतलायी गयी है। काश्मीर राजगुरु श्री कण्ठेश कदाचित् रामसेतु के दर्शनो के निमित्त दक्षिण देश मे गये। वहाँ जाते हुए मार्ग मे उन्होने नृसिहराज पर अनुग्रह किया। नृसिह राज ने उनसे तन्त्र ग्रन्थ पढे। वही पर सुभगानन्द नाथ ने उक्त कादिमत पर मनोरमा टीका रची, २२ पटलो तक। शेष पटलो की टीका उनके शिष्य प्रकाशानन्द देशिक ने उनकी आज्ञा से रची।

—ट्रि० कै० १०६४

षोडशनित्यातन्त्रे कादिमतव्याख्या

लि०—सुभगानन्दनाथ कृत। श्लोक स० ७००, क्षत-विक्षत।

—अ० व० १३४०२ (क)

षोडशनित्यापूजाप्रकार

लि०—श्लोक स० २५०। —अ० व० १०७७४

षोडशमूलविद्या

लि०—श्लोक स० २०। —अ० व० ५७६० (ग)

षोडशमूलविद्यान्यास

लि०—महाषोढान्यास के साथ। समिलित श्लोक स० १४५, पूर्ण। वरणविद्यान्यास भी इसमे सनिविष्ट है। —स० वि० २५९३१

षोडशसंस्कारविधि

लि०—तन्त्रचिन्तामणि से गृहीत। श्लोक स० ७०। —अ० व० ५६१७

षोडशार्णव

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे।

षोडशार्णासरस्वतीपुरश्चरण

लि०—श्लोक स० लगभग १००, अपूर्ण। —स० वि० २६६०३

षोडशीत्रिपुरसुन्दरीपद्धति

लि०—श्लोक स० लगभग २२५, अपूर्ण।

—स० वि० २५२१४

षोडशीत्रिपुरसुन्दरीविधान

लि०—श्लोक सं० ६००, अपूर्ण। —स० वि० २५६३७

षोडशीपद्धति

लि०—(क) श्लोक स० लगभग ४३० अपूर्ण। (ख) श्लोक स० लगभग ८७५, पूर्ण। —स० वि० (क) २४३७६, (ख) २६६३४

षोडशीविद्या

लि०—श्लोक स० लगभग ४४, पूर्ण। —स० वि० २४९४४

षोढान्यास (१)

लि०—(१) रुद्रयामल से गृहीत, (क) श्लोक सं० ४००। (ख) श्लोक स० २३०। —अ० व० (क) ७१४१, (ख) ११७३०

(२) वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत। षोडशाक्षरी मन्त्र के उपयोगार्थ शक्तिपूजा का विवरण इसमे दिया गया है। —म० द० ५७४६

(३) श्लोक स० ९४, पूर्ण। —र० म० ४९४७

(४) (क) श्लोक स० लगभग ४३५, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ६४५, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २४६११, (ख) २४६२६

षोढान्यास (२)

लि०—(क) श्लोक स० १८, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० १९, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४७२५, (ख) २४७४६

षोढामकरन्दस्तवराज

लि०—डामरेश्वरतन्त्र से सगृहीत, श्लोक स० ६०। —अ० व० ५६२४

संकटासहस्रनामाख्यान

लि०—पद्मपुराणान्तर्गत। इसमे प्रत्येक श्लोक मे देवी के आठ नाम है।

—ए० ब० ६७३८

संकर्षणसूत्र

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

संकर्षिणीयामल

उ०—तन्त्रालोक की टीका जयरथी मे।

संकेतचन्द्रोदय

उ०—तन्त्रसार मे।

संकेततन्त्र

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा तारारहस्यवृत्ति मे।

संकेतपद्धति

उ०—योगिनीहृदयदीपिका, सौभाग्यभास्कर, सेतुबन्ध तथा ललितार्चनचन्द्रिका मे।

संकेतयामल

लि०—यह मारण, मोहन, उच्चाटन, विद्वेषण, स्तमन आदि तान्त्रिक षट्कर्मो की सिद्धि के उपायो का प्रतिपादक है। —वी० कै० १३२१

संकोचक्रिया विधि

लि०—(क) श्लोक स० १६००, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० २२००।

—अ० ब० (क) ६४२९, (ख) ६८२८

संक्षिप्ततृचार्घ्यपद्धति

लि०—भास्करराय कृत, श्लोक स० १५०।

—अ० ब० ५६८५

संक्षिप्तश्यामापूजापद्धति

लि०—पूर्णानन्द विरचित। इसमे श्यामादेवी की सक्षिप्त पूजा प्रतिपादित है। अन्त मे यन्त्रलेप-चन्दनादि और पुष्प शिर पर धारण कर, नैवेद्य साधको को बाँट कर और शेष स्वय भी ग्रहण कर अपने को देवीरूप जान (भावना द्वारा) सुखपूर्वक विहार करे, यो लिखा है। —वी० कै० १३२२

संक्षिप्तगायत्रीन्यासप्रयोग

लि०—इसमे अङ्ग, प्रत्यङ्ग आदि मे गायत्री के अक्षरो से सक्षिप्त न्यास तथा गायत्री का मानस पूजन आदि प्रतिपादित है। —रा० ला० ८९९

संक्षेपदीक्षापद्धति

लि०—श्लोक स० २००, अपूर्ण।

—र० म० २०७१

संक्षेपपुरश्चरणविधि

लि०—(१) नितान्ततन्त्रोक्त, शिव-पार्वती सवादरूप। इसमे १०० श्लोक है। समय-समय पर करणीय सक्रान्ति-पुरश्चरण आदि एव तिथि आदि के पुरश्चरणो का विवरण दिया गया है। —रा० ला० ३८७

(२) अपूर्ण। —व० प० १३०७

संक्षेपार्चनविधि

लि०—श्लोक स० ५८७, पूर्ण।

—डे० का० ४०३ (१८८२–८३ ई०)

संक्षेपार्चा

लि०—इसमे सब देवी-देवताओ की सक्षेप मे नित्य पूजाविधि निर्दिष्ट है तथा श्रीविद्या की सक्षेप मे नित्य पूजाविधि भी उसके लिए निर्दिष्ट है, जो विस्तारपूर्वक उसका अनुष्ठान कराने मे अक्षम है। अन्यथा श्रीवद्या का सक्षेपार्चन अनिष्टकारी होता है।

—ए० व० ६२६८

संगोपनतन्त्र

उ०—कालिकासपर्याविधि मे।

संजीवनीविद्या

लि०—ईश्वर-वसिष्ठ सवादरूप। इसमे १२ अध्याय है। मन्त्रोद्धार, अपस्मार-हरण, सालम्बयोग, अपूर्व सेवाविधि, होमविधि आदि विषय वर्णित है।

—ए० व० ६१३८

संतान

श्रीकण्ठी के अनुसार यह अष्टादश (१८) रुद्रागमो मे अन्यतम है।

संतानसंहिता

लि०—शिव-पार्वती संवादरूप। यह लिङ्गपूजा पर शैवतन्त्र है। अपूर्ण। ७८वाँ पटल खण्डित है।

आरम—

ॐ कैलास मध्यमत्ररन्ध्रर वरारोचितम्।
यक्षैश्च ऋषिभि साध्यदेवैर्भूतैरनेकश ॥
प्रणिपत्य जगन्नाथ देवी वचनमब्रवीत्।

—तै० म० ११४०८

संतानागम

यह श्रीकठी के मतानुसार अष्टादश (१८) रुद्रागमो के अन्तर्गत है।

(तन्त्रालोक-टीका)

संपुटितदीक्षाक्रम

लि०—परानन्दतन्त्र से गृहीत। १४ वाँ, १५ वाँ और १६ वाँ उद्रेक। अ०व०५६६२

संप्रोक्षणकुंभाभिषेकविधि

लि०—विविध आगमो से सगृहीत। श्लोक स० ७००।

—अ० व० ६८३१

संमोहनतन्त्र

यह श्रीकण्ठी के अनुसार चतुपष्टि (६४) भैरवागमो के अन्तर्गत है।

(तन्त्रालोक-टीका)।

संमोहनतन्त्र

लि०—(१) शिव-पार्वती सवादरूप। पुष्पिका मे लिखा है—'इति श्रीमदक्षोभ्य-महोग्रतारासवादे।' इसके अनुसार (अक्षोभ्यमहोग्रतारा सवादरूप) यह १० पटलो मे पूर्ण है। इसकी श्लोकस या १७०० कही गयी है। यह द्वितीय खण्ड का परिमाण है। इसके और भी खण्ड है, ऐसा इससे ज्ञात होता है। इसका विषय—४० प्रकार की भूत, ब्रह्मराक्षस आदि जातियो को तान्त्रिक मन्त्रो से वश मे कर उनसे दुष्टो का विनाश करना है। —ने० द० २।३१२ (क)

(२) शिव-पार्वती सवादरूप। पुष्पिका पूर्ववत्। श्लोक स० १८००। षोडश महाविद्या—काली, तारा, छिन्नमस्ता, सुन्दरी, वगला, रमा आदि—महाकाल-

मत मे ५१ कही गयी हैं। इसमे पीठ तथा वार्णो के भेद से और लिपि तथा भापा के भेद से शाभवो के विंशति (वीस) प्रकार की विद्या और पीठो का निर्णय, पुण्यनिर्णय, गौडादि देशो के भेद से तन्त्र आदि का भेदनिरूपण, १० महाविद्यानिरूपण, यन्त्रभेद आदि का निरूपण—ये विपय वर्णित हैं। —नो० स० ११४००

(३) श्लोक स० ४००। यह प्रति अपूर्ण है। इसमे केवल उत्तर तन्त्र का ही अपूर्ण वर्णन है। इसमे कुलकुण्डलिनी देवी के प्रात कृत्य, पोढामन्त्र, सर्वतोभद्र, कवच आदि प्रतिपादित हैं। —रा० ला० ३७१

उ०—मन्त्रमहार्णव, प्राणतोपिणी, आगमतत्त्वविलास तथा तन्त्रसार मे।

संवित्कल्प

लि०—पार्वती-शिव संवादरूप। इसमे भाँग या गाँजे की उत्पत्ति और तान्त्रिक उपयोग वर्णित है। —ए० व० ६०६८

संवित्प्रकाश

उ०—स्पन्दप्रदीपिका, विज्ञानभैरव टीका (क्षेमराज कृत) तथा महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

संविदुल्लास

गोरक्ष अथवा महेश्वरानन्द कृत।

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

संविन्मन्त्र

लि०—श्लोक स० ४०। —अ० व० ५७६० (च)

संविन्माहात्म्य

(त्रिपुरासिद्धान्त का १५ वाँ कल्प)

लि०—शिव-पार्वती संवादरूप। ब्रह्मज्ञानप्रद होने के कारण कलञ्ज संवित् कहलाता है। संवित् के सदृश न कोई धर्म है, न कोई तप और न कोई शास्त्र। इस प्रकार इसमे कलञ्ज-भक्षण की महिमा प्रतिपादित है। साथ ही कौलिक पुरुष, कौल ज्ञान और भगवती तथा शिव की उत्कृष्टता कही गयी है। —म० द० ५७४७

संवित्सेवनप्रकार

लि०—श्लोक स० १७, अपूर्ण। —म० वि० २६४१०

संवित्सेविनीमन्त्र

लि०—रुद्रयामल से गृहीत। श्लोक स० २५।

—अ० ब० ८३३४

संवित्स्तोत्र

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

संविदाशोधन

लि०—श्लोक स० २४। नित्यहोम भी इसमे सनिविष्ट है। पूर्ण।

—स० वि० २४७४४

संविदाशोधनविधि

लि०—(क) समयातन्त्रान्तर्गत। समयामाहात्म्य के साथ सनिविष्ट। समिलित श्लोक स० लगभग २१, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० लगभग ३५, पूर्ण। (ग) श्लोक स० लगभग १८, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २५०३६, (ख) २५७५३, (ग) २६०९७

संविन्मन्त्र

लि०—श्लोक स० लगभग ४५, पूर्ण। —स० वि० २४२७४

संहारसृष्टिश्रीचक्रन्यास

लि०—इसमे वामकेश्वरतन्त्र रुद्रयामल-मत के अनुसार सहार, सृष्टि और स्थिति रूप से श्रीविद्या मन्त्र के ऋषि आदि, करन्यास और पडङ्ग न्यास प्रतिपादित हैं। पूर्ण।

—म० द० ५७४८, ५७४९

सकलजननीस्तव

लि०—श्लोक स० ३२४।

—डे० का० २५९ (१८८३-८४ ई०)

सकलागमसंग्रह

लि०—इसमे आकर्पणादि प्रयोग वर्णित हैं।

—तँ० म० ३६४३, ११४२६

सकलागमसारसंग्रह

लि०—श्लोक स० १६००। —अ० ब० ७९७१

सज्जनतरङ्गिणी

लि०—रचयिता रामवल्लभ शर्मा। यह पूर्णानन्द कृत षट्चक्र प्रकरण पर टीका है। श्लोक स० ५७० । —रा० ला० २९३०

सत्कार्यसिद्धि

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे ।

सत्तर्करत्नाकर

लि०—श्री कालरात्रिपद्धति, कृष्णपुत्र अद्वयानन्दनाथ विरचित। इसमे कालरात्रि की पूजा का विधान वर्णित है। —वी० कै० १३३४

सत्त्वादिगुणनिर्णय

लि०—परमानन्दतन्त्रान्तर्गत। श्लोक स० लगभग २६, अपूर्ण।
—स० वि० २४४६४

सदाशिवकवच

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। पूर्ण। —ब्र० प० ८९२

सदाशिवनित्यार्चनपद्धति

लि०—श्लोक स० ६००। —अ० व० ८५९

सद्यःसिद्धिप्रदहृदय

लि०—श्लोक स० ७०। —अ० व० ११२८२ (क)

सनत्कुमारतन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० १०००। —अ० व० ९८१३ (क)

(२) सनत्कुमार-पुलस्त्य सवादरूप। श्लोक स० ५०४। यह ११ पटलों मे है। १ म मे विष्णुमन्त्र, २, ३ य और ४ र्थ मे श्रीकृष्ण-पूजा आदि, ५ म मे श्रीकृष्ण विषयक अन्य मन्त्रो का निरूपण, ६ष्ठ मे गोपालमन्त्र, ७ म मे गोपाल-पूजा, ८ म मे होमादि-निर्णय, ९ म मे त्रैलोक्य-मङ्गल कवच, १० म मे पुरश्चरणविधि और ११ श मे दीक्षाविधि वर्णित है। —रा० ला० २३२

(३) शिव प्रोक्त। पूर्ण।
—ज० का० १०९३

(४) (क) श्लोक स० लगभग ११५, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० २४०, पटल १–८ तक। अपूर्ण। —स० वि० (क) २५२५६, (ख) २६३२५

उ०—मन्त्रमहार्णव, तन्त्रसार तथा आगमकल्पलता मे।

सनत्कुमारसंहिता

लि०—(१) सनत्कुमार-पुलस्त्य सवादरूप। ११ पटलो मे पूर्ण यह वैष्णवतन्त्र है। सभवत. सनत्कुमारतन्त्र इसी का नामान्तर है।

—ए० व० ६०३१

(२) (क) श्लोक स० ९००। (ख) श्लोक स० ४१७६।

—अ० व० (क) ६६३९, (ख) ६६५४ (घ)

(३) केवल ३६ वाँ पटल मात्र। मन्तव्य इसका ३६ वाँ पटल होना विचारणीय है, क्योकि अन्य लोगो ने इसके ११ पटलो मे पूर्ण होने का उल्लेख किया है।

—व० प० २०६

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी मे।

सनत्कुमारीय

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव तथा तारामक्तिसुधार्णव मे।

सन्तानकामेश्वरीगोप्यविधान

लि०—श्लोक स० लगभग ७०, पूर्ण। इसमे विधान महाराष्ट्र भाषा मे है। एव मन्त्र आदि देवभाषा मे है। —स० वि० २५६५

सन्तानगोपालमन्त्रविधि

लि०—(क) श्लोक स० २०। (ख) श्लोक स० ४००।

—अ० व० (क) १३८०४, (ख) १०९०६

सन्ध्याविधिरत्नप्रदीप

लि०—आशाधर कृत। श्लोक स० ५००। चौथा और पाँचवाँ किरण नही है।

—अ० व० ९७३१

सन्ध्याप्रयोग

लि०—इसमे श्रुति और तन्त्र सम्मत त्रैकालिक सध्याविधि वर्णित है। श्लोक स० १३२। —रा० ला० ४२५७

सपर्याक्रमकल्पवल्ली

लि०—(१) (क) श्रीनिवास कृत। श्लोक स० १००० । (ख) श्लोक स० ४५०। केवल ५ वाँ स्तवक। —अ० व० (क) ७९८७, (ख) ८३१९

(२) श्री श्रीनिवास द्राविड कृत। 'श्रीदेशिकेन्द्र शिरसा प्रणम्य श्रीश्रीनिवासो द्रविडोद्भवोऽहम्। श्रीमत्सपर्याक्रमकल्पवल्या श्रीचण्डिकाया यजन प्रवक्ष्ये॥' इसमे श्रीचण्डिका देवी की पूजा का क्रम प्रतिपादित है। यह ५ स्तवको मे पूर्ण है।

—म० द० ५७५०

सपर्याचिन्तामणि

लि०—श्लोक स० ९९० पूर्ण। —स० वि० २४९७९

सपर्यासार

लि०—काशीनाथ भट्टाचार्य कृत। श्लोक स० लगभग ११३०, अपूर्ण।

—स० वि० २५९९०

सप्तपारायणविषय

लि०—(१) उत्तरज्ञानार्णव से गृहीत। श्लोक स० १८०।

—अ० व० ५६८१

(२) नाथपारायण, घटिकापारायण, तत्त्वपारायण, नित्यापारायण, मन्त्र-पारायण, नामपारायण, अङ्गपारायण के साथ ये ७ पारायण है। नौ गुरु, शक्ति का आविर्भाव, तत्त्व, देवीमन्त्र, शक्ति के नाम और सहायक मन्त्र इन सातो की पारायणविधि इनमे प्रतिपादित है। —म० द० ५७५१

सप्तविंशतिरहस्यमन्त्र

लि०—श्लोक स० १६०। —अ० व० ५७६० (ख)

सप्तशतिकाविधान

लि०—ताराभक्तितरङ्गिणीस्थ। श्लोक स० लगभग १७८१, पूर्ण।

—स० वि० २५२४७

सप्तशतीकल्प आदि

लि०—(१) मार्कण्डेयपुराण से गृहीत। श्लोक स० ३००। —अ० व० ५५८३

(२) श्लोक सं० ३६४, पूर्ण। लिपिकाल १८९३ वि०।

—स० वि० २४८१६

सप्तशतीकवचविवरण

लि०—रङ्गभट्ट-पुत्र नीलकण्ठभट्ट कृत । —र० म० ४९२८ (क)

सप्तशतीचण्डीस्तोत्रव्याख्यान में चण्डीस्तोत्रप्रयोगविधि

लि०—शिवभट्ट-पुत्र नागोजीभट्ट कृत । श्लोक स० ५९२, पूर्ण ।

—र० म० ४९२६

सप्तशतीचण्डी प्रयोग व्याख्यान मे चण्डीस्तोत्रविधि

लि०—शिवभट्ट पुत्र नागोजीभट्ट । श्लोक स० ९२५, पूर्ण ।

—र० म० ४९४५

सप्तशतीजपार्थन्यासध्यान

लि०—श्लोक स० १५ । —डे० का० ३६३ (१८७९-८० ई०)

सप्तशतीदीपदानविधि

लि०—तारामक्तितरङ्गिणी से गृहीत । श्लोक स० १७० । —अ० ब० ३५०५

सप्तशतीध्यान

लि०—श्लोक स० १३६० । —अ० व० १३७२१

सप्तशतीपूजा

लि०—श्लोक स० ७० । —अ० व० ११७३४

सप्तशतीप्रयोग

लि०— (क) श्लोक स० २०० । (ख) विमलानन्दनाथ कृत । श्लोक स० ३७० । —अ० व० (क) २०२४, (ख) ५६५४

सप्तशतीप्रयोगविधि

लि०—श्लोक स० लगभग ५५, पूर्ण । —स० वि० २५१२२

सप्तशतीपाठादिविधि

लि०—श्लोक स० १०० । —अ० व० ३५०६

सप्तशतीमन्त्रप्रयोग

लि०—कात्यायनीतन्त्रोक्त, श्लोक सं० २५, पूर्ण । —स० वि० २४२५६

सप्तशतीमन्त्रप्रयोगविधि

लि०—नागोजीभट्ट कृत। श्लोक स० ३००। —अ० व० ८५२६ (क)

सप्तशतीमन्त्रविभाग

लि०—(१) श्लोक स० १००, अपूर्ण। —अ० व० ९९८५

(२) (क) श्लोक स० लगभग ६२, पूर्ण। लिपिकाल १७७९ वि०। (ख) कात्यायनीतन्त्रोक्त, श्लोक स० लगभग ६२, पूर्ण। (ग) नागोजीभट्ट कृत, श्लोक स० लगभग ४६५, लिपिकाल १७६४ शकाब्द। इसमें कात्यायनीतन्त्रोक्त चण्डीस्तोत्रप्रयोगविधि भी सनिविष्ट है। —स० वि० (क) २३९८३, (ख) २५३१९, (ग) २६५६३

सप्तशतीमन्त्र व्याख्यासहित

लि०—व्याख्या कर्ता–शिवराम। श्लोक स० ३००। —अ० व० ८७४०

सप्तशतीमन्त्रहोमविभागकारिकाटीका

लि०—(१) मूल कण्व गोविन्द कृत। टीका भगीरथ कृत। श्लोक स० ५५०।
—अ० व० ३५०४

(२) कृष्ण (कण्व ?) गोविन्द कृत मूल तथा भगीरथ कृत जगच्चन्द्रिका टीका। श्लोक स० लगभग ६२०, पूर्ण। —स० वि० २५३९४

सप्तशतीमालामन्त्रजपविधि

लि०—मन्त्रमहोदधि के अन्तर्गत, नवार्णमन्त्रविधि भी इसमे सनिविष्ट है। श्लोक स० सम्मिलित ८०, पूर्ण। —स० वि० २६५७०

सप्तशतीविधान

लि०—(१) रहस्यतन्त्र मे उक्त गुरुकीलक, भास्करराय कृत गुरुकीलक-विवरण, चण्डीपाठप्रयोग, शतचण्डी-विधान, चण्डीपाठफल (वाराहीतन्त्र से गृहीत), चण्डी पाठ का काम्यफल प्रयोग (हरगौरीतन्त्र मे गृहीत), चण्डीपाठ-विधान (मारीचकल्प मे गृहीत) तथा कात्यायनीतन्त्र मे कहा गया सप्तशतीपाठप्रकार आदि विषय इसमे वर्णित है। —ए० वं० ६४१७

(२) (क) श्लोक स० १७५। (ख) श्लोक स० ३०००। वाराहीतन्त्र, कात्यायनीतन्त्र, योगिनीतन्त्र तथा ताराभक्तितरगिणी से सगृहीत सार।

—अ० व० (क) १७३०, (ख) १०६९९

(३) श्लोक स० ५१२, इसमे शतचण्डी विधान भी समिलित है। अपूर्ण।

—स० वि० २५४०२

सप्तशतीस्तोत्रपठनविधि

लि०—श्लोक स० १२२ । पूर्ण । —र० म० ४९२७

सप्तशतीहोम

लि०—श्लोक स० ३५ । —अ० व० ५०३०

सप्तशत्यङ्गषट्कव्याख्यान

लि०—भट्ट रङ्गनाथ-पुत्र शैव नीलकण्ठभट्ट कृत । इसमे सप्तशती के छह अङ्ग—कवच, अर्गला, कीलक तथा रहस्यत्रय की व्याख्या की गयी है । इसमे प्रारभ मे एक प्रस्तावना है, जिसमे शक्ति की पूजा का वास्तविक तत्त्व निर्दिष्ट है ।

—ए० व० ६४०९

समयाङ्क

उ०—तन्त्रसार मे ।

समयाचार

लि०—(१) गौरीयामलान्तर्गत । श्लोक स० २८६ । —अ० व० ५६६४

(२) श्लोक स० ५२, अपूर्ण । —र० म० १२०३

(३) श्लोक स० ३६०, पूर्ण । लिपिकाल १८५४ वि० । (ख) श्यामा-रहस्यान्तर्गत दशम परिच्छेद । श्लोक स० ४०, पूर्ण ।

—स० वि० (क) २५४४६, (ख) २५७७६

समयाचारतन्त्र

लि०—(१) ३०० या अधिक श्लोको का यह ग्रन्थ है । यह रा० ला० ७५५ मे वर्णित है, किन्तु उसमे यह गद्यमय कहा गया है। वास्तव मे इसका मन्त्रभाग तथा विधान अश ही गद्य मे है, शेष साराग्रन्थ पद्यमय है । —ए० व० ५९२०

(२) ९०० या अधिक श्लोको का यह ग्रन्थ है। इसमे 'शिवशक्त्यात्मक समयाख्यै परात्पर परब्रह्म, जो सब शास्त्रो मे गुप्त है जिनसे अतिरिक्त कुछ नही, उनके सम्बन्ध मे कहने की कृपा करे' यो देवी की शिव से प्रार्थना करने पर शिवजी द्वारा इसमे नित्यानन्द ज्ञान आदि का वर्णन, रहस्य योग आदि का वर्णन, परमा विद्या के बीज आदि, विद्या-साधन

के प्रकार आदि, पूजारहस्य आदि का कथन, मुद्रा कथन, कुण्ड-साधन, होम आदि, बीजादि के साधन का प्रकार तथा भावनिर्णय वर्णित है। यह १० या अधिक पटलों में पूर्ण है।

—नो० स० २।२४१

(३) (क) श्लोक स० ३००। (ख) श्लोक स० ३००।

—अ० व० (क) २०६, (ख) ५५४०

(४) उमा-महेश्वर संवादरूप। श्लोक स० ३००। विषय—'समयाचार' शब्द का अर्थ, वाग्वादिनीमन्त्र, विजयास्तोत्र, तन्त्रोक्त कर्म समय पर करणीय हैं यह कथन। खीर, दही, मट्ठा आदि १४ पदार्थ, उनका शोधन प्रकार, प्रातःकाल, मध्याह्न आदि पाँच जपकाल, शान्तिक, वश्य, स्तंभन, विद्वेषण, उच्चाटन, मारण आदि षट्कर्मों के अनुरूप मुद्रादि कथन, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तरादि आम्नाय कथन, पूर्व आदि तत्तत् आम्नायों के देवता आदि कथन, उक्त आम्नायों की भिन्न-भिन्न मालाएँ, शान्तिक आदि कर्मों में आसन भेद, जपस्थान, मन्त्रों के पुल्लिङ्ग, नपुंसक आदि कथन, वामाचार, दक्षिणाचार आदि, तन्त्र, यामल आदि की संख्या, मत्स्य,मांस, मुद्रा, मैथुन, मद्यादि पञ्च मकारादि का कथन, शक्तिसाधनादि।

—रा० ला० ७५५

(५) रुद्रयामलान्तर्गत, श्लोक स० लगभग ३८५, पूर्ण। लिपिकाल स० १८२२ वि०। (ख) श्लोक स० लगभग ३६०, पूर्ण। (ग) श्लोक सं० ७५, अपूर्ण। (घ) श्लोक सं० ३४४, पूर्ण। (ङ) श्लोक स० लगभग २८० पूर्ण।

—स० वि० (क) २३९८४, (ख) २४१०३, (ग) २४२०९, (घ) २४७९३, (ङ) २४८००

उ०—पुरश्चर्यार्णव, मन्त्रमहार्णव, कुलप्रदीप, प्राणतोषिणी, ताराभक्तिसुधार्णव, कौलिकार्चनदीपिका तथा सर्वोल्लासतन्त्र में।

समयाचारनिर्णय

लि०—महारात्र्यादिनिर्णय के साथ संलग्न। संमिलित श्लोक सं० ३४८, पूर्ण। लिपिकाल १९३५ वि०।

—स० वि० २४५०५

समयाचारपद्धति

लि०—श्लोक स० ५८८, अपूर्ण।

—स० वि० २६६३८

समयाचारसंकेत

लि०—श्लोक सं० लगभग २८८, पूर्ण।

—स० वि० २४७९६

समयातन्त्र

लि०—(१) देवी-ईश्वर सवाद रूप। इसमे १० पटल हैं। श्लोक स० १२००। १ म पटल मे गुरुक्रमवर्णन, २ य मे ताराप्रकरण, ३ दक्षिण कालिकाप्रकरण, ४ नित्यपूजा-प्रकरण, ५ शवसाधनप्रकरण, ६ उच्छिष्ट-चाण्डालिनी सिद्धि-साधनप्रकरण, ७ प्रचण्डा-सिद्धिविधिप्रकरण, ८ षट्कर्मविवरण। —ए० व० ५९२४

(२) श्लोक स० ५००। १ से ५ पटल है। —अ० व० ३५०७

(३) (क) श्लोक स० ३१२, अपूर्ण। लिपिकाल १७६१ वि०। (ख) श्लोक स० २३२, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० १२० प्रथम पटल मात्र, पूर्ण।

—स० वि० (क) २५८७९, (ख) २५९५१, (ग) २६४४२

उ०—पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, कौलिकार्चनदीपिका, तथा कालिका-सपर्याविधि मे।

समयापूजन

लि०—श्लोक स० १५०। —अ० व० १२०६३

समयाषट्कनिरूपण

लि०—देवीपूजाविधि के साथ सलग्न। समिलित श्लोक स० लगभग ६२५, पूर्ण। —स० वि० २६२५५

समयाष्टक

लि०—(१) श्लोक स० ६०। —अ० व० ४४८२

(२) रुद्रयामलोक्त। कौलाचारक्रम पञ्चचक्रसदाचारविधि के साथ सलग्न। समिलित श्लोक स० लगभग ९० पूर्ण। —स० वि० २५३८३

समाधिपञ्चदशी

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

सम्पत्करीसंवित्स्तुतिचर्चा

लि०—श्लोक स० ७५०। भगवती समग्रैश्वर्यसम्पन्ना सपत्करी सवित्स्तुति इसमे प्रतिपादित है। —ट्रि० कै० ११२७ (क)

सम्पत्करीसंवित्स्तोत्रचर्चोद्योत

लि०—श्लोक स० ७५०। यह ५ उदयो मे पूर्ण है। इसमे सम्पत्करी देवी की स्तुति का व्याख्यान है। —ट्रि० कै० ११२८

सम्पद्विमर्शिनी

लि०—प्रसन्न विश्वात्मा देशिकेन्द्र-शिष्य शम्भुदेवानन्दनाथ कृत। इसमे त्रिपुरा देवी की पूजापद्धति वर्णित है। —ए० बं० ६३४७

सम्प्रदायदीपिका

लि०—भट्ट नाग विरचित। श्लोक स० ४००। यह ग्रन्थ १०पटलो मे पूर्ण है। इसमे मन्त्रो के प्रतीक देकर उनकी व्याख्या की गयी है। अन्त मे स्तुति के मन्त्र सनिविष्ट किये गये है। —ट्रि० कै० १०१६ (ख)

सम्प्रदायसारोल्लास

लि०—कुलार्णवतन्त्रान्तर्गत, श्लोक स० ६००। —अ० व० १०६७७

सम्मीलनतन्त्र

लि०—इसमे नृसिहसुन्दरीकवच है। इसकी पुष्पिका मे लिखा है—इति श्रीसमीलनतन्त्र महासिद्धिप्रदे उमामहेश्वरसवादे नृसिहसुन्दरीकवचम्। —ने० द० २१४८

सरस्वतीतन्त्र

लि०—(१) इसमे ७ पटल है और उनमे तन्त्रानुसार योनिमुद्रा का विधान है। —ए० व० ६००७

(२) यह शिव-पार्वती सवादरूप है। इसमे ६ पटल और १५३ श्लोक है जिनमे निम्नलिखित विषय प्रतिपादित है—मूलाधार आदि चक्रो मे इष्ट देवता आदि के ध्यान का प्रकार, निर्वाणमुक्ति का प्रकार विशेष, कालिका आदि कतिपय देवियो के मन्त्राक्षरो की सख्या, विद्यामन्त्र का शोधन, यन्त्र मे प्राणप्रतिष्ठा का प्रकार आदि। —रा० ला० ४४७

(३) यह जपविधि का प्रतिपादक तन्त्र है। इसमे छह पटल हैं। शेष रा० ला० ४४७ मे द्रष्टव्य। —ए० ब० ६०६

(४) श्लोक स ५०। —अ० व० १०२४१

(५) श्लोक स० १४०। यह छह पटलो मे पूर्ण है। इसमे कहा गया है कि जो साधक मन्त्रार्थ, मन्त्रचैतन्य और योनि-मुद्रा नही जानता सैकडो करोड जप करने से भी उसकी विद्या (सरस्वती) सिद्ध नही होती। निम्ननिर्दिष्ट विषय इसमे प्रतिपादित है—मन्त्र का चैतन्य कथन, योनि मुद्रा का निरूपण, कुल्लुका कथन, महासेतु, शखादि का निरूपण, मुखशोधनविधि, प्राणयोग कथन आदि। —रा० ला० २६१

(६) श्लोक स० लगभग १६०। १ से ६ पटल तक, पूर्ण।

—स० वि० २६१३८

उ०—कालिकासपर्याविधि मे।

सरस्वतीपञ्चाङ्ग

लि०—श्लोक स० ४१६, पूर्ण। —र० म० ४८३४

सरस्वतीपूजापद्धति

लि०—श्लोक स० लगभग १०८, अपूर्ण। —स० वि० २६१२२

सरस्वतीमन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० ५०। —अ० व० ५१५४ (क)

(२) श्लोक स० लगभग २०, पूर्ण। —स० वि० २५०७८

सरस्वतीस्तोत्र

उ०—शारदातिलक की टीका राघवभट्टी मे।

सर्वकालिकागम

लि०—शिव-पार्वती सवादरूप। इसमे श्री कालीजी का माहात्म्य, यन्त्र, कवच आदि, जिनसे आपत्तियाँ, सकट आदि निवृत्त होते है, वर्णित है। —बी० कै० १३२७

सर्वज्ञभैरव

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

सर्वज्ञान

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीधरी मे।

सर्वज्ञानोत्तर

लि०—इसमे योगपाद और क्रियापाद—ये दो पाद है। निम्न निर्दिष्ट विषय प्रतिपादित है—स्वात्मसाक्षात्कारप्रकरण, विमलीकरण, स्थूलवर्णमन्त्रोद्घाटनप्रकरण, प्राणदमन्त्रोद्धारप्रकरण, अन्त्येष्टिप्रकरण, जीर्णोद्धारप्रकरण, प्रतिमादिप्रकरण, वारुणस्नानप्रकरण, भस्मस्नानप्रकरण आदि। यह पौष्करागम का ही एक भाग प्रतीत होता है।

—इ० आ० २६०६

इस ग्रन्थ का विद्यापाद हमारे दृष्टिगोचर हुआ। उसमे निम्नलिखित प्रकरण दृष्टिगोचर हुए। त्रिपदार्थविचार, शिवानन्दसाक्षात्कारप्रकरण, भूतात्मप्रकरण, अन्तरात्मप्रकरण, तत्त्वात्मप्रकरण, मन्त्रात्मप्रकरण, परमात्मप्रकरण। इसमे कुल पत्र स० २४१ है।

उ०—शैवपरिभाषा (शिवाग्रयोगीन्द्रशैवाचार्य कृत), शतरत्नसंग्रह तथा शिवसूत्र-विमर्शिनी मे।

सर्वज्ञानोत्तरटीका

शिवाग्रयोगीन्द्र शैवाचार्य विरचित।

उ०—शैवपरिभाषा (शिवाग्रयोगीन्द्र शैवाचार्य कृत) मे।

सर्वज्ञानोत्तरतन्त्र

लि०—शिव-षडानन संवादरूप। जैसे देवता और असुरो ने समुद्र का मन्थन कर अमृत प्राप्त किया वैसे ही सब तन्त्र शास्त्रो का मन्थन कर यह उत्तम तन्त्र उद्धृत किया गया है। वातुलतन्त्र के समाप्त होने पर षडानन ने शिवजी से यह पूछा।

—ने० द० ११६४८ (ख)

सर्वज्वरविपाक

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। शिव-पार्वती संवादरूप। इसमे ८ पटल हैं जिनमे विविध प्रकार के ज्वरो की चिकित्सा और निवृत्ति के उपाय निर्दिष्ट है।

—वी० कैं० १३१५

सर्वतोभद्रचक्र

लि०—श्लोक स० १००। —अ० व० १२२८२

सर्वतोभद्रचक्रटीका

लि०—गौरीकान्त चक्रवर्ती विरचित। इसमे तन्त्रोक्त सर्वतोभद्रचक्र आदि की व्याख्या की गयी है। —नो० स० ११४०१

सर्वतोभद्रपूजन

लि०—श्लोक स० १२०। —अ० व० ८५५

सर्वतोभद्रमण्डल

लि०—श्लोक स० २५। —अ० व० १३४४२ (ग)

सर्वदेवप्रतिष्ठा

लि०—(क) पद्मनाभ विरचित, श्लोक स० ११२०। (ख) प्रतिष्ठासारसंग्रह से गृहीत, श्लोक स० ८५०। —अ० व० (क) १४७९, (ख) २२६०

सर्वदेवप्रतिष्ठापद्धति

लि०—(क) श्लोक स० २५००, त्रिविक्रम विरचित। (ख) श्लोक स० ७५०, अपूर्ण।
—अ० ब० (क) २५७७, (ख) ५९१४ (क)

सर्वदेवप्रतिष्ठाविधि

लि०—(१) श्लोक न० २२००। —अ० ब० १२०७
(२) पत्र १५४। —रा० पु० ५००६

सर्वप्रतिष्ठाविधि

लि०—श्लोक स० ६५०। —अ० ब० २०२०

सर्वमङ्गलतन्त्र

यह श्रीकण्ठी के अनुसार चतु षष्टि (६४) भैरवागमो के अन्तर्गत है।
(तन्त्रालोक-टीका)

सर्वमङ्गलमन्त्रपटल

लि०—रुद्रयामल के अन्तर्गत। श्लोक स० १६८, पूर्ण। यह चण्डीसर्वस्वान्तर्गत भी कहा गया है। —र० म० ४९४४

सर्वमङ्गला

उ०—शिवसूत्रविमर्शिनी तथा परमार्थसार की योगराज कृत टीका मे।
श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चतु षष्टि (६४) भैरवागमो के अन्तर्गत है।

सर्वमन्त्रशापविमोचन

लि०—शिवरहस्य के अन्तर्गत। श्लोक स० ८०, पूर्ण। —र० म० १०२०

सर्वमन्त्रोत्कीलन

लि०—(क) श्लोक स० ३८, पूर्ण। लिपिकाल १९२५ वि०। (ख) श्लोक स० ५२, पूर्ण। इसमे गायत्री-ब्रह्मशापविमोचन यन्त्र भी सनिविष्ट है। (ग) गोपालपटल आदि अनेक ग्रन्थो के साथ सवद्ध।
—स० वि० (क) २४२१६, (ख) २४४०२, (ग) २६४४५

सर्वमन्त्रोत्कीलनमन्त्रप्रयोग

लि०—श्लोक स० ४२, पूर्ण। इसमे 'सर्वमन्त्रशापविमोचनमन्त्रविचार' भी सनिविष्ट है। —स० वि० २४४३०

सर्वमन्त्रोत्कीलनशापविमोचनस्तोत्र

लि०—शिवरहस्यान्तर्गत। श्लोक स० १६२, पूर्ण। —र० म० ४९४९

सर्वमन्त्रोपयुक्तपरिभाषा

लि०—स्वामी शास्त्री विरचित। प्रपञ्चसारसग्रह से नवीन सग्रह, श्लोक स० ४०००।
—तं० म० ७१४३

सर्ववीरभट्टारक

उ०—महार्थमञ्जरी की परिमल टीका, प्रत्यभिज्ञाहृदय तथा तन्त्रालोक की टीका मे।

सर्वशत्रुविनाशिनीविद्या

लि०—कुब्जिकातन्त्रान्तर्गत। श्लोक स० १२, अपूर्ण। —स० वि० २५१३९

सर्वसंमोहिनीतन्त्र

लि०—श्लोक स० २८८, पूर्ण। —स० वि० २४२७७

सर्वसाम्राज्यमेधानामसहस्रक

लि०—कालीरूप ककारात्मक सहस्रनाम, श्लोक स० १८३।
—अ० व० ११८२२

सर्वसार

लि०—श्री विष्णुचन्द्र विरचित। पुराण और तन्त्रो से उद्धरण लेकर इस ग्रन्थ का निर्माण हुआ है। इसकी श्लोक स० ५२६७२ है। रुक्मिणी श्रीकृष्ण के अष्टोत्तर सहस्रनाम, युगलस्तोत्र, सरस्वतीस्तोत्र, पञ्चवक्त्रशिवस्तोत्र, वगलामुखी-शतनाम, प्रतिमा-लक्षण, नृत्येश्वररूपवर्णन, अर्धनारीश्वररूपवर्णन, उमा-महेश्वररूपवर्णन, शिवनारायण, नृसिंह तथा त्रिविक्रम का रूप वर्णन, ब्रह्मा, कार्तिकेय, गणेश, दशभुजादेवी, इन्द्र, प्रभाकर, वह्नि, यम, वरुण, वायु, कुवेर आदि का रूप वर्णन, ववलेश्वर, ब्राह्मी आदि मातृकाओ तथा लक्ष्मी का रूप वर्णन आदि अनेक विपय इसमे वर्णित है। —रा० ला० १२४०

सर्वसारनिर्णय

लि०—श्लोक स० २००, (२१ प्रसग तक)। —अ० व० ७५७१

सवस्रोतःसिद्धान्तसार

उ०—शतरत्नसग्रह मे।

सर्वागमसार

लिउ—इसमे गुरु-शिष्य के लक्षण के साथ दीक्षा का विस्तार से प्रतिपादन है तथा साथ ही मन्त्रो के १० सस्कार भी वर्णित है। न्यास, जप, होम और मुद्राओ का वर्णन आदि विषय भी प्रतिपादित हैं।

—ए० व० ६२७१

सर्वाङ्गसुन्दरी

(प्रयोगसार-व्याख्या)

लि०—(क) श्लोक स० १८७५, यह ५४ पटलो तक है। इसके निर्माता श्री देवराज-गिरि-शिष्य श्रीवासुदेव विद्वान् है। प्रतीत होता है कि प्रयोगसार के ५४ पटल है। (ख) श्लोक स० १५००, इसमे उत्तर भाग के २७ वे पटल तक यह व्याख्या है। (ग) टीकाकार का नाम पुष्पिका मे 'वासुदेव' लिखा है परन्तु समाप्ति श्लोक मे लिखा है—'ईश्वरेण सुधीसार्थपादपद्मरजोजुषा प्रयोगसार-व्याख्येय लिखिता सदनुग्रहात्।'

[या वासुदेव का द्वितीय नाम ईश्वर होगा।]

—ट्रि० कै० (क) १००२, (ख) १००३, (ग) १००४७

सर्वाचार

उ०—शिवसूत्रविमर्शिनी तथा तन्त्रालोक मे।

सर्वानन्दतरङ्गिणी

लि० (१) सर्वानन्दनाथ-पुत्र शिवनाथ भट्टाचार्य विरचित। श्लो० स० ५००, पूर्ण। ग्रन्थकार सर्वानन्दनाथ के पुत्र तथा शिष्य थे। कहते हैं श्रीसर्वानन्दनाथ को भवानीचरण-युगल का साक्षात्कार था। वे जिला कुमिल्ला के अन्तर्गत मेहार राज्य के निवासी थे। उनको जन्मतिथि का ठीक-ठीक पता नही किन्तु जव दासनामक राजा मेहार का शासन करते थे तव सर्वानन्दनाथ विद्यमान थे।

—नो० स० ३।३३६

(२) (क) विश्वनाथ (?) विरचित, श्लोक स० ३२४, अपूर्ण। (ख) सर्वा-नन्दात्मज शिवनाथ भट्टाचार्य विरचित, श्लोक स० ३२५, पूर्ण।

—स० वि० (क) २६२२०, (ख) २६३९८

सर्वोक्तागम

लि०— प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

सर्वोपदेश

लि०—कुलार्णव से गृहीत, श्लोक स० २७६। —अ० व० ७१५०

सर्वोल्लासतन्त्र

लि०—(१) सर्वानन्दनाथ विरचित । इसमे ६३ उल्लास है ।

—ए० बं० ६२०४

(२) इसमे प्रतिपादित विषय—निगम और आगम के लक्षण, निगम और आगमो के प्रकाश का वृत्तान्त, आगमो की उत्पत्ति, शास्त्रो की उत्पत्ति, युगभेद से देशाचार, देवता-मूर्ति निरूपण, वेदोत्पत्ति कथन, "तन्त्र" नामकरण, सृष्टि की उत्पत्ति, पुन अन्य प्रकार से सृष्टि की उत्पत्ति कथन, पुन. प्रकारान्तर से सृष्टि की उत्पत्ति का निरूपण, कृत्यप्रकरण, भाव-प्रशसा विविध भावाचारो के लक्षण, दूसरे तन्त्रो के भावाचारो के लक्षण, गुरुतन्त्र का गुरुलक्षण, सद्गुरु-लक्षण, वैष्णवाचार, इष्टभक्ति, बलिदान, शैवाचार, शाक्ताचार, विभाव पशु-लक्षण, यन्त्र-प्रमाण, साधकलक्षण, श्रीचक्र का स्थान बोधन, जातिभेदक्रम मे श्रीचक्र का निरूपण इत्यादि ।

—रा० ला० १०७१

सहस्रचण्ड्यादिप्रयोगपद्धति

लि०—कमलाकर विरचित । श्लोक स० ५१८१

—डे० का० (१८८३-८४ ई०)

सहस्रनाममालाकला

लि०—सहस्रनाममाला के निर्माता तथा कला नामक उसकी व्याख्या के निर्माता तीर्थस्वामी है । तीर्थस्वामी ने स्वय सकलित ४० सहस्रनामो मे गूढार्थ नामो की कला नामक व्याख्या लिखी है। इसमे भुवनेश्वरी का १, अन्नपूर्णा के २, महालक्ष्मी का १, दुर्गा के ७, काली के ४, तारा के ५, त्रिपुरा के ३, भैरवी के २, छिन्नमस्ता का १, मातङ्गी का १, सुमुखी का १. सीता के २ शिव के ७, राम के २ और कृष्ण के २ सहस्र नाम है।

—रा० ला० १०३८

सहस्रागम

यह दश (१०) शिवागमो के अन्तर्गत है।

साङ्ख्यायनतन्त्र

लि०—(१) शिव-कार्तिकेय सवादरूप । श्लोक स० ११७६, पटल स० २४ । इसमे प्रतिपादित विषय — ब्रह्मास्त्रविद्या का निरूपण, उसमे अभिषेक आदि का निरूपण, एकाक्षरी विधि का निरूपण, महापाशुपत के प्रसग मे बगलामुखी आदि का प्रयोग, यन्त्र का प्रयोग, शताचार्य आदि का प्रयोग कथन, दूर्वाहोम की विधि, अन्य की विद्या भक्षण

करने आदि की विधि, वगलास्त्रविधि कथन, अस्त्रविद्याप्रयोग-विधि का निरूपण, स्तम्भिनीविद्या आदि का प्रयोग कथन। —रा० ला० २२५९

(२) षड्विद्यागमान्तर्गत। श्लोक स० ८३४, २४ वे पटल तक पूर्ण है।

—र० म० ४०९८

(३) नामान्तर—षड्विद्यागम। इसमे ३४ पटल हैं। प्रत्येक पटल का विवरण इ० आ० मे देखे। —इ० आ० २५३७

(४) यह तन्त्र वगलामुखी की पूजाविधि का प्रतिपादक है। यह षड्विद्यागम से सवद्ध प्रतीत होता है। किसी-किसी प्रति मे इसके ३८ पटल भी पाये जाते हैं।

—ए० व० ६०८४–८७ तथा ६१६१, ६८२३

(५) (क) श्लोक स० ८५०,पटल स० ३० । (ख) श्लोक स० १२००। (ग) श्लोक स० ८००, अपूर्ण। (घ) श्लोक स० १०५०, अपूर्ण।

—अ० व० (क) १०४, (ख) ३५०८, (ग) २१६१, (घ) ३५५५

(६) ३५ पटल । —रा० पु० ५५८५

सात्वततन्त्र

लि०—शिव-नारद सवादरूप। श्लोक स० ७८१, पटल स० ९। यह शिव प्रोक्त और गणेश लिखित है। भगवान् श्रीकृष्ण का विराड् रूप वर्णन, भक्तो की विभिन्न प्रकार की भक्तियाँ, उनके पृथक्-पृथक् लक्षण, भगवान् की सेवा से युग के अनुरूप मोक्ष साधन, भगवान् के सहस्र-नाम, नाम-माहात्म्य, भगवान् विष्णु के नामग्रहण से वैष्णवो की अपराधो से मुक्ति, सर्वसार-रहस्य, तन्त्रोत्पत्ति का कारण, प्रश्न के अनुसार हिसा की विधि और निषेध का कथन आदि विषय इसमे वर्णित है। —रा० ला० १०८६

सात्वतसंहिता

(पञ्चरात्र)

लि०—इसमे २५ अध्याय है। यह प्रधान रूप से वैष्णव पूजा का प्रतिपादक है। इसकी श्लोक स० लगभग ३००० है। —तँ० म० १७३५

उ०—शतरत्नसग्रह मे।

साधकाचारचन्द्रिका

लि०—वङ्गनाथ शर्मा द्वारा रचित, श्लोक स० ४००० और प्रकाश स० १४।

—अ० व० १०१८७

साधकसर्वस्व

लि०—शिवपार्वती संवादरूप, इसकी श्लोक सं० २८९, पटल २। यह प्राणनाथ मालवीय द्वारा संगृहीत है। इसमें प्रतिपादित विषय हैं—बटुकजी की वीर साधन-विधि, वीरसाधनविधि-प्रयोग, बटुकभैरव-दीपविधि, मुद्राविधि आसन आदि का निरूपण, पञ्चशुद्धिविधि कीर्तन। —रा० ला० १९५०

साधनदीपिका

लि०—(१) शङ्कर-शिष्य नारायणभट्ट विरचित। इसमें विष्णु-पूजा का विवरण दिया हुआ है। —ए० ब० ६४९३

(२) यह ७ प्रकाशों में पूर्ण है। इसमें विविध विषय वर्णित हैं जिनमें दीक्षा की आवश्यकता, गुरु-लक्षण, शिष्यलक्षण, मन्त्रोद्धार का प्रकार, दीक्षाविधि आदि मुख्य हैं। ग्रन्थकार के गुरु शङ्कर कान्यकुब्ज थे यह उनके मङ्गलाचरण श्लोक से स्पष्ट प्रतीत होता है—

शङ्कर शङ्कर नत्वा सर्वशास्त्रार्थवेदिनम्।
सेवित सर्वधर्माणा कान्यकुब्जकुलोद्भवम्॥

—रा० ला० १७२१

(३) पन्ने १२१। —डे० का० ४९८ (१८७५–७६ ई०)

साधनमुक्तावली

लि०—नव कवि शेखर विरचित। श्लोक सं० ११३२, इसमें प्रतिपादित विषय हैं—वशीकरण, आकर्षण आदि में ऋतु, तिथि, योग, नक्षत्र आदि का विचार, कैसे वृक्ष के मूल आदि ग्राह्य हैं यह निरूपण, वृक्ष-निमन्त्रण के लिए मन्त्र आदि, खोदना, काटना आदि के मन्त्र, वशीकरण तथा उसके साधन चक्र, विजय प्राप्त करना उसमें उपयोगी चक्र का निरूपण, सौभाग्य मिटाना, उसके अनुकूल चक्र, बिगड़े हाथी को अपने सामने से हटाना, उसके उपयुक्त चक्र, बाघ को हटाना, उसके उपयोगी चक्र, स्तंभनविधि, उसमें उपयोगी चक्र, वाजीकरण, वन्ध्या आदि के गर्भधारण के उपाय, विविध ओषधियाँ, चक्र आदि, शत्रु-कुलनाशन, स्त्री-सौभाग्यकरण आदि। —रा० ला० ३१८४

साधनसंग्रह

लि०—दे०, शाक्तसाधन संग्रह।

—स० वि० (क) २५७५८, (ख) २६०९१

साधनसमुच्चय

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे ।

साम्बपञ्चाशिका

लि०—साम्ब विरचित, पूर्ण ।

—डे० का० ४९९ (१८७५-७६ ई०)

साम्बपञ्चाशिकाविवरण

लि०—क्षेमराज विरचित, पूर्ण ।

—डे० का० ५०० (१८७५-७६ ई०)

साम्वसंहिता

लि०—श्लोक स० १२००, अपूर्ण । —अ० व० ६१६३

साम्राज्यषोडशीलघुमकरन्दस्तोत्र

लि०—रुद्रयामलतन्त्र के अन्तर्गत । दक्षिणामूर्ति विरचित । श्लोक स० ७२, पूर्ण ।

—र० म० १०६४

सारचिन्तामणि

लि०—भवानीप्रसाद विरचित । श्लोक स० ५५४४ । इसमे दीक्षा-व्यवस्था, अकडम आदि चक्रो की विधि, नित्यानुष्ठान पूजा, मन्त्रोद्धार आदि, विविध शक्ति विषयक अनुष्ठान आदि विषय वर्णित हैं । —रा० ला० २५३

सारशास्त्र

उ०—तन्त्रालोक मे ।

सारसंग्रह

लि०—भट्टारक अकुलेन्द्रनाथ विरचित । इसमे निम्ननिर्दिष्ट अनेक ग्रन्थो का सार वतलाया गया है, ऐसा प्रतीत होता है—इष्टोपदेशशिवधर्मोत्तरसार, अकुलनाथ द्वारा उद्धृत निर्वाण कारिका तथा नि श्वासकारिका का सार, वेदोत्तरसार, स्मृतिसार, कृष्णयोग-सार, कुलपञ्चाशिकासार, महाज्ञानसार, श्रीमतसार, श्रीमदुत्तरशङ्खसार, चिञ्चिणी-मतसार, महामायास्तोत्रसार, शखयोगमहाज्ञानसार, गीतासार आदि ।

—ए० व० ६६२०

उ०—पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव तथा तन्त्रसार मे ।

सारसमुच्चय

लि०—(१) हरिसेवक विरचित, इसका निर्माणकाल संवत् १७७० वि० (१७१३ ई०) वतलाया गया है तथा इसका विशुद्ध नाम योगसारसमुच्चय वतलाया गया है।

—ए० वं० ६६०४

(२) श्लोक स० ७५०। इसमे १० पटल है।

—ट्रि० कै० १०४३ (ग)

उ०—आगमकल्पलता तथा मन्त्ररत्नावली मे।

सारसमुच्चयपद्धति

लि०—श्लोक स० ६३८, पूर्ण। —र० म० ५२९७

सारस्वतमत

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव मे।

सारस्वतस्तव

लि०—वाष्कल-आश्वलायन मवादरूप। श्लोक स० ७५। इसमे सरस्वती की स्तुति प्रतिपादित है। —ट्रि० कै० ११२९ (क)

सारात्सारसंगह

लि०—रामगङ्कुरराय विरचित। इसकी श्लोक स० १९९७७ है। १२ परिच्छेदो मे यह पूर्ण है। इसमे प्रतिपादित मुख्य-मुख्य विषय है—शिवा और शिव की विभूतियो का वर्णन, अर्धनारीश्वर-मूर्ति का प्रतिपादन, अर्धनारीश्वर-स्तोत्र कथन, इन्द्र आदि का अभिमान भञ्जन, जो मुनि नही उन्हें मोक्ष प्राप्ति (नही ?) हो सकती, यह कथन, तन्त्रो की असत्यता का प्रतिपादन, ब्रह्मतत्त्व के विषय मे ब्रह्मा आदि का सन्देह निराकरण, सक्षेप मे दुर्गामाहात्म्य का वर्णन, प्रसिद्ध-प्रसिद्ध तन्त्रो के नामोका निरूपण, पीठो का निर्णय, महाविद्याओ का निरूपण, कुण्डलिनी के अगभूत मातृकाओ का वर्णन, महाकामिनी के ध्यान आदि का वर्णन, पञ्च वाणो का निर्णय, वेदोत्पत्ति-वर्णन, वर्णमाला-निरूपण, आद्या के एकाक्षर मन्त्र के अर्थादि का निर्देश, महादुर्गा, तारा, श्रीविद्या, भुवनेश्वरी, वाग्भवी, धूमावती, वगलामुखी, कमला, मातङ्गी आदि के एकाक्षर मन्त्रो के अर्थ आदि का निरूपण, विद्याओ के विशेष नामो का निर्देश, काली, तारा और दुर्गा के एक होने से परस्पर अविशेष वर्णन, गुरु, शिष्य आदि के लक्षण, दीक्षाकाल आदि का निरूपण, विविध देवदेवियो की पूजा आदि। —रा० ला० ५८९ और २४७१

सारावली

लि०—इसमे दीक्षित के अवश्य करणीय दैनिक कृत्यो तथा दीक्षाविधि का वर्णन, दीक्षा के सम्बन्ध मे आकर ग्रन्थो के प्रमाण वचनो का प्रतिपादन है एव प्रसङ्गत गुरु और शिष्य के लक्षण भी प्रतिपादित हैं। —ए० ब० ६२७०

सावित्रीकल्प

लि०—(१) ब्रह्मा द्वारा उक्त। ब्रह्मा और सनत्कुमार सवादरूप। इसकी श्लोक स० १२५ है। इसमे सन्ध्योपासनाविधि, गायत्री के ऋषि, छन्द और देवताओ का प्रतिपादन किया गया है। —ट्रि० कै० ९७४ (ग)

(२) श्लोक स० ८८, अपूर्ण। —स० वि० २४३६०

सिंहसिद्धान्तसिन्धु

लि०—(१) गोस्वामी श्रीनिवासभट्ट के पौत्र गोस्वामी जगन्निवास के पुत्र गोस्वामी शिवानन्द विरचित। इसमे १४ तरग हैं। उनमे प्रतिपादित विषय हैं—प्रात कृत्य, स्नान, सन्ध्या और तर्पण की विधि, सूर्यार्घ्यदान, शिवपूजा, ध्यान, आसन कथन, पूजा द्रव्योकी शुद्धि, करशुद्धि, दिग्बन्धन, अग्नि प्राकार का आश्रयण, प्राणायामविधि, भूतशुद्धि, प्राण-प्रतिष्ठा, मातृकान्यास, उनके विविध भेदो का निर्देश, न्यासो का फल कथन, स्वेष्टदेव के मन्त्रो के ऋषि आदि, षडङ्गन्यास, योगपीठन्यास, मूलमन्त्र के अङ्गभूत न्यासो का न्यसन, मुद्राप्रदर्शन, मुद्राओ के लक्षण, स्वेष्टदेव का ध्यान, अन्तर्यागविधि, पूजा, चक्र और प्रतिमा के निर्माण का निरूपण, शालग्रामशिलाओ के लक्षण, पूजा का फल आदि।

—ए० ब० ६१९३

(२) (क) श्लोक स० १३५००, तरग स० ३३। (ख) श्लोक स० ५०० केवल ८ तरग। (ग) श्लोक स० १२००, अपूर्ण। (घ) श्लोक स० ३८० केवल ३० वाँ तरङ्ग।

—अ० ब० (क) ५५३३, (ख) ८३१७, (ग) १२६८०, (घ) १२६९३

(३) गोस्वामी शिवानन्द विरचित, रचनाकाल स० १७३१ वि०।

—रा० पु० ४२०५

(४) यह वैष्णवो के धार्मिक कृत्य आदि विविध विषयो का प्रतिपादक ग्रन्थ है। शेष विवरण पूर्व मे दिया गया है। —बी० कै० १३३०

(५) (क) शिवानन्द कृत, श्लोक स० लगभग १२६०, अपूर्ण। (ख) शिवानन्द कृत, श्लोक स० १०५५४, अपूर्ण। (ग) शिवानन्दभट्ट कृत, श्लोक स० १५४५, अपूर्ण।

इस प्रति मे पुस्तक का नाम—"सिहसिद्धान्तसिन्धुतन्त्र" लिखा है। (घ) शिवानन्द-भट्ट कृत, श्लोक स० ३७०२५, पूर्ण। यह तन्त्रनिवन्ध ग्रन्थ है।

—स० वि० (क) २३९१८, (ख) २४८१९, (ग) २५११०, (घ) २६६३६

सिंहासनविद्यातन्त्र

लि०—त्रिपुरासिद्धान्तान्तर्गत। श्लोक स० १५४, अपूर्ण। —स० वि० २५४२१

सिद्धखण्ड

लि०—(१) (क) श्लोक स० ५००। (ख) श्लोक स० ६०० (उपदेश)। (ग) श्लोक स० ६५० (मन्त्रसार)।

—अ० व० (क) १०३५, (ख) ८३२२, (ग) १०३२९

(२) नित्यनाथ कृत, श्लोक स० लगभग ७७०, अपूर्ण। —स० वि० २४६६०

सिद्धघुटिका

उ०—सौन्दर्यलहरीव्याख्या (लक्ष्मीवर कृत) मे।

सिद्धज्ञान

लि०— —प्राप्त ग्रन्थसूची से

सिद्धनागार्जुनीय

लि०—(१) सिद्धनागार्जुन विरचित। श्लोक स० १८००। दे०, कक्षपुट।

—रा० ला० २५६

(२) दे०, नागार्जुनतन्त्र, सिद्धान्तनागार्जुनतन्त्र मे कक्षपुटी।

—कैट् कैट् १।७१७

सिद्धनाथ

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

सिद्धपञ्चाशिका

लि०—उमा-महेश्वर सवादरूप। मूलनाथ द्वारा स्वर्ग से भूमि पर अवतारित। यह पाँच पटलो मे समाप्त है तथा कुलालिकाम्नाय का एक अश है।

—ने० द० ११४७३ (घ)

सिद्धभैरवतन्त्र

उ०—सौन्दर्यलहरीव्याख्या (लक्ष्मीवर कृत) मे।

सिद्धमूलीकल्प

लि०—श्लोक स० लगभग १००, पूर्ण। —स० वि० २६३७१

सिद्धयामल (सिद्धियामल)

लि०—सिद्धयामलतन्त्र मे बालाकवच ।

—कैट् कैट् १।७१७, २।१७१

उ०—तन्त्रसार (कृष्णानन्द कृत), आगमतत्त्वविलास, मन्त्रमहार्णव, तथा ताराभक्तिसुधार्णव मे ।

सिद्धयोगेश्वरतन्त्र

उ०—फेत्कारिणीतन्त्र मे ।

सिद्धयोगीश्वरमत

उ०—तन्त्रालोक और उसकी टीका मे ।

सिद्धयोगेश्वरीतन्त्र

लि०—(१) सिद्धयोगेश्वरीमत अथवा भैरववीरसहिता भी यह कहलाता है । व्याप्तिपटल, शक्तित्रयोद्धार, विद्याङ्गोद्धार, लोकपालोद्धार आदि विषयो का इसमे विवरण है ।

—इ० आ०

(२) मत्स्येन्द्रनाथ अवतारित कामाख्यागुह्यक के अन्तर्गत, पुष्पिका मे कामाख्यागुह्यक २४००० श्लोकात्मक कहा गया है ।

—ने० द० २।३२

(३) श्लोक स० १३००, नेवारी लिपि । लिपिकाल ७९३ नेपाली सवत्, अपूर्ण । इसमे इसके ३२ पटलो के विषय भी दिये गये है, २ य व्याप्ति पटल, ३ य शक्ति-त्रयोद्धार पटल, ४ र्थ विद्याङ्गोद्धार पटल, ५ म लोकपालोद्धार पटल, ६ ष्ठ समयमडल, १० म विद्यान्नतपटल इत्यादि । किसी किसी पटल का विषय दिया ही नही गया है जैसे 'सिद्ध योगीश्वरीतन्त्रे प्रथम पटल' आदि ।

—ए० ब० ५९४८

सिद्धलहरीतन्त्र

लि०—(१) जातूकर्ण्य-नारद सवादरूप । इसमे मुख्य रूप से काली-पूजाविधि वर्णित है । ५० मातृका वर्णो की महिमा तथा द्वाविंशत्यक्षरी विद्या की महिमा वर्णित है ।

—ए० ब० ५९९९

(२) —कैट् कैट् ३।१४८

उ०—सर्वोल्लास मे ।

सिद्धविद्यादीपिका

लि०—जगन्नाथ-शिष्य श्रीशङ्कराचार्य विरचित । इसकी श्लोक स० ९७२ एव पटल

स० ९ है। प्रतिपाद्य विषय है—दक्षिणकालिकाकल्प, दक्षिणकाली-पूजाविधि, उनके विशेष साधनो का निर्देश, पुन पूजन कथन, मन्त्रोद्धार, पुरश्चरणविधि तथा नैमित्तिकानुष्ठान। —रा० ला० २६२

सिद्धवीरेश्वरीतन्त्र

लि०—इस प्रति मे केवल पाँच पटल है। १८५३ सवत् मे इसकी प्रतिलिपि की गयी थी। वगाक्षरो मे लिखित, अपूर्ण। —ए० व० ५९४७

सिद्धशाबरतन्त्र

लि०—(१) ईश्वरी-ईश्वर सवादरूप तथा महादेव दत्तात्रेय सवादरूप यह प्रथम, मध्यम और उत्तम इन तीन खण्डो मे विभक्त है। इसमे मारण, मोहन, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन, वशीकरण, आकर्षण, इन्द्रजाल आदि विविध विषय वर्णित है।

—ए० व० ६०९७

(२) शाबरतन्त्र दे०, सिद्धशाबर मे महाविद्यास्तव किरात ऋषि कृत।

—कैट्. कैट्. १।७१७

सिद्धसन्तान

उ०—तन्त्रालोक मे।

सिद्धसन्तानसाधनसोपानपङ्क्ति

लि०—गोपात्मज यशोराज विरचित। इसकी पुष्पिका मे लिखा है "इति श्री गोपात्मज श्री यशोराज विरचित सिद्धसन्तानसोपानपङ्क्ति नामक सिद्धमार्गप्रकाशिका मे दृष्टि विज्ञान-विनिर्णय नामक १८ वाँ पटल समाप्त" इससे ज्ञात होता है कि यह ग्रन्थ १८ पटलोमे पूर्ण है। यशोराज का पूरा नाम यशोराजचन्द्र था। वे बालवागीश्वर भी कहलाते थे। —ने० द० २।४०१

सिद्धसन्तानसाधनसोपानपद्धति

लि०—श्रीमतपद्धति भी इसका नामान्तर है। गोप-पुत्र यशोराज विरचित यह १५ पटलो मे पूर्ण है। इसमे गुरु और शिष्य का विचार, वेधदीक्षा विधान, अवस्थाभ्युदय विचार, वेध प्रवृत्ति विचार, परोक्षानुग्रह, समयवर्णन, सकेतनिर्णय, मन्त्रोद्धार आदि विषय वर्णित हैं। —ने० द० १।१५३६ (ट)

सिद्धसरस्वतीस्तोत्र

लि०—(१) श्रीसनत्कुमारसहिता के अन्तर्गत। इसमे प्रारभ मे मन्त्र और ध्यान वर्णित है। यह सरस्वतीस्तोत्र, जो वगाल मे वहुत प्रसिद्ध है, से मिलता है।

(२) सिद्धसारस्वतस्तोत्र। दे०, भुवनेश्वरीस्तोत्र। —कैट् कैट् १।७१७

सिद्धसारस्वत

उ०—मन्त्रमहार्णव, तन्त्रसार, तारारहस्यवृत्ति, नरसिहकृत ताराभक्तिसुधार्णव तथा आगमतत्त्वविलास मे।

सिद्धसिद्धाञ्जन

लि०—(१) यह विविध प्रकार के तान्त्रिक और ऐन्द्रजालिक प्रयोगो का प्रतिपादक ग्रन्थ है। —वी० कै० १३२९

(२) —कैट् कैट् १।७१७

सिद्धसिद्धान्तपद्धति

लि०—(१) गोरक्षनाथ विरचित, पन्ने २६। —रा पु ७७७३

(२) गोरक्षनाथ कृत इस निवन्ध मे मुख्यत यह दरसाया गया है कि देवी शक्ति ही प्राधान्येन पूजायोग्य है। उसी मे जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और सहार करने की असाधारण शक्ति है। यह ग्रन्थ छह उपदेशो मे पूर्ण है। ग्रन्थकार स्वय कहते हैं—

आदिनाथ नमस्कृत्य शक्तियुक्त जगद्गुरुम्।
वक्ष्ये गोरक्षनाथोऽह सिद्धसिद्धान्तपद्धतिम्॥

—म० द० ५७५२

(३) नित्यनाथ कृत। श्लोक स० २६४, पूर्ण। —स० वि० २५५२९

(४) —गोरक्षनाथ विरचित। योग विषयक।

—नित्यनाथ सिद्ध विरचित।

—नित्यानन्द विरचित। —कैट् कैट् १।७१७

सिद्धागम

लि०— —कैट् कैट्. २।१७१

उ०—क्षेमराज ने इसका उल्लेख किया है। —Hall पे० १९८

यह श्रीकण्ठ के मतानुसार अष्टादश (१८) रुद्रागमो के अन्तर्गत है।

(तन्त्रालोक-टीका)

सिद्धातन्त्र या सिद्धामत

उ०—अभिनव गुप्त ने इसका उल्लेख किया है। —इ० आ० पे० ८४०

उ०—महार्थमञ्जरी परिमल तथा तन्त्रालोक मे भी इसका उल्लेख है। इसका नामान्तर सिद्धमत या सिद्धयोगीश्वरमत है।

सिद्धान्तचक्र

नामान्तर—सिद्धारिप्रयोग अथवा सिद्धान्तचन्द्रिका।

लि०—(क) श्लोक स० ६६, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० लगभग १५०, पूर्ण।

—स० वि० (क) २५३८७, (ख) २५३८८

सिद्धान्तचक्रमालिनीविजय

उ०—मन्त्रमहार्णव मे।

सिद्धान्तचन्द्रिका

लि०—वसुगुप्त विरचित। शैव तन्त्र, पूर्ण।

—डे० का० ५०१ (१८७५–७६)

सिद्धान्तदीपिका

(सर्वात्मशम्भु कृत)

लि०—शाक्त ग्रन्थ। —कैट् कैट् १।७१७

उ०—शतरत्नसग्रह मे।

सिद्धान्तबोध

उ०—शैवपरिभाषा (शिवाग्रयोगीन्द्रज्ञान शिवाचार्य कृत) मे।

सिद्धान्तरहस्यसार

उ०—शतरत्नसग्रह मे।

सिद्धान्तशिखामणि

लि०—(१) विश्वेश्वर विरचित। शैव तान्त्रिक सिद्धान्त की एक झलक।

—तं० म० ३६४६

(२) विश्वेश्वर विरचित। —कैट् कैट् १।७२१

उ०—वीरशैवानन्दचन्द्रिका मे।

सिद्धान्तशेखर

उ०—शाक्तानन्दतरङ्गिणी, तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्णव, ताराभक्तिसुधार्णव, मन्त्रमहार्णव, प्राणतोषिणी, व्रतप्रकाश, कुण्डमण्डपसिद्धि, ललितार्चनचन्द्रिका, वीरशैवानन्दचन्द्रिका, प्रयोगरत्न, परशुरामप्रकाश, संस्कारकौस्तुभ, आचारमयूख, दानमयूख आदि मे।

सिद्धान्तसंग्रह

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

सिद्धान्तसार

उ०—इसका देवनाथ ने तन्त्रकौमुदी मे उल्लेख किया है। पुरश्चर्यार्णव, आगमकल्पलता, वीरशैवागम मे भी इसका उल्लेख आया है।

सिद्धान्तसारपद्धति

लि०—(१) महाराजाधिराज भोजदेव विरचित। इसमे सूर्यपूजा, नित्यकर्म, मुद्रालक्षण, प्रायश्चित्त, दीक्षा, साधक का अभिषेक, आचार्य का अभिषेक, पादप्रतिष्ठाविधि, लिङ्ग-प्रतिष्ठाविधि, द्वारप्रतिष्ठाविधि, हृत्प्रतिष्ठाविधि, जीर्णोद्धारविधि आदि विषय वर्णित हैं। —ने० द० १।१३६३ (ठ)

(२) महाराज भोजदेव विरचित। —कैट् कैट् ३।१४९

सिद्धान्तसारस्वत

लि०— —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

सिद्धान्तसारावली

लि०—(१) त्रिलोचन शिवाचार्य विरचित। शैव तन्त्र सिद्धान्त की एक झलक। (क) पूर्ण। (ख) अपूर्ण, क्रिया और योगपाद।

—तै० म० (क) ३६४५, (ख) ११४०५

(२) त्रिलोचन शिवाचार्य विरचित। —कैट् कैट् १।७२२

उ०—शैव-परिभाषा (शिवाग्रयोगीन्द्रज्ञान शिवाचार्य कृत) मे।

सिद्धामृत

उ०—शिवसूत्रविमर्शिनी मे।

सिद्धिखण्ड

लि०—(१) श्रीपार्वती-पुत्र विनायक रचित यह ८ उपदेशो (अध्यायो) मे पूर्ण

है। इसमे आर्कार्षिणी, वशीकरणी, मोहकारिणी, अमृतसचारिणी आदि के मन्त्र तथा उन मन्त्रो के साधकद्रव्य आदि का निरूपण है। —नो० म० २।२४७

(२) नित्यनाथ के मन्त्रसार से गृहीत। —कैट् कैट् ३।१४९

सिद्धिनाथसंग्रह

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे।

सिद्धिनाथसंहिता

उ०—नरसिंह कृत ताराभक्तिसुधार्णव मे।

सिद्धिभैरवतन्त्र

उ०—गौरीकान्त ने इसका उल्लेख किया है। —कैट् कैट्. १।७२२

सिद्धिलक्ष्म्यर्चन

लि०—इसमे सिद्धिलक्ष्मी की पूजा प्रतिपादित है।

—ने० द०- १।१५५९ (२)

सिद्धिविद्यारजस्वलास्तोत्र

लि०—श्यामारहस्य के अन्तर्गत। श्लोक स० २५८, पूर्ण।

—र० मं० ११२४

सिद्धिवीरेश्वरीतन्त्र

लि०—इस ग्रन्थ का केवल ५ वाँ ही पटल उपलब्ध है। —ए० व० ५९४७

सिद्धिसार

उ०—मन्त्रमहार्णव मे।

सिद्धीश्वरतन्त्र

उ०—मन्त्रमहार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव मे।

सिद्धेश्वरतन्त्र

लि०—सिद्धेश्वरतन्त्र मे जानकीसहस्रनाम स्तोत्र।

—कैट् कैट् १।७२२, २।१७३

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव, तन्त्रसार तथा सर्वोल्लासतन्त्र मे।

सिद्धेश्वरीतन्त्र

उ०—ताराभक्तिसुधार्णव मे।

सिद्धैकवीरतन्त्र

उ०—प्राणतोषिणी मे।

सुग्रीवतन्त्र (विषतन्त्र)

यह योगरत्नावली का आकर ग्रन्थ है। —ए० ब० ६६०२

सुग्रीववशीकरणविद्या

लि०—इसमे सुग्रीव तथा अन्य देवताओं के मन्त्र मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, स्तभन आदि के सम्बन्ध मे वर्णित है। —ए० ब० ६५५७

सुदर्शनचक्र

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। श्लोक स० ११०, पूर्ण। —र० म० २९७३

सुदर्शनमन्त्र

लि०—(१) इसमे सुदर्शन (नारायणास्त्र) का नाममाला मन्त्र है एव मन्त्रजप के लिए आवश्यक प्रारभिक क्रिया का भी निर्देश किया गया है।

—ए० ब० ६७७७

(२) —कैट् कैट् १।७२४

सुदर्शनसंहिता

लि०—(१) उमामहेश्वर सवादरूप यह पूर्व और उत्तर दो खण्डो मे विभक्त है। प्रस्तुत पुस्तक केवल उत्तर खण्ड मात्र है। श्लोक स० २६८९ तथा पटल स० १२।

इसमे विषय यो प्रतिपादित हैं— १-२ दो पटलो मे राज्यप्राप्ति, विजयप्राप्ति, वशीकरण आदि के विषय मे मन्त्रोद्धार आदि का निरूपण, ३रे पटल मे दत्तात्रेय, हनुमान् तथा सुदर्शन के मन्त्रो का निरूपण, ४थे पटल मे पूजाविधि, मन्त्र-सन्ध्या आदि, अन्तर्यागविधिकथन, ५वें मे विशेपरूप मे वहिर्याग विधि का प्रतिपादन, ६ठे मे वर्ण, चक्र, न्यास आदि का निरूपण, ७वें पटल मे कवच, न्यास आदि का निरूपण, ८वे मे विविध प्रकार के भिन्न-भिन्न मन्त्रो का निरूपण, मन्त्रसिद्धि का लक्षण तथा उसके उपायो का प्रतिपादन, ९ वे पटल मे जप, होम, तर्पण, मार्जन, तथा ब्राह्मण-भोजन रूप पञ्चाङ्ग पुरश्चरण का विस्तार, १०वे पटल मे दूसरे के चक्र के निवारण के लिए उपाय कथन, ११ वे मे विजयपताका यन्त्र निरूपण पूर्वक कवच के परिमाण आदि का निरूपण एव १२ वें पटल मे दीपदानविधि, महादीपदान, रक्षा, न्यास आदि की विधि वर्णित है। —रा० ला० २२८४

(२) सुदर्शनसहिता (हनुमत्कल्प मात्र), श्लोक स० २६४, पूर्ण।
—डे० का० २४६ (१८८३–८४ ई०)

(३) सुदर्शनसहिता मे कार्तवीर्यदीपदान कल्प।
,, पञ्चायुधस्तोत्र।
,, सरस्वतीस्तोत्र।
,, हनुमत्कल्प।
,, हनुमत्कवच।
,, हनुमत्पद्धति।
,, हनुमद्दीप।
,, हनुमद्बलि।
,, हनुमन्मन्त्रगह्वर।
—कैट् कैट् १।७२४

(४) (क) श्लोक स० ८०, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० लगभग ३२५, अपूर्ण।
—स० वि० (क) २५५२७, (ख) २५५२८

सुदर्शना

(तन्त्रराज-व्याख्या)

लि०—(१) प्रेमनिधि-पन्त विरचित। श्लोक स० ६६८२, खण्डित।
—र० म० ४८९१

(२) तन्त्रराजटीका, प्रेमनिधिपन्त विरचित। —कैट् कैट् १।७२४

सुधातरङ्गिणी

लि०—शक्तिवल्लभ भट्टाचार्य विरचित। गुरुजनो की सम्मति प्राप्त कर सबके हितार्थ ग्रन्थकार द्वारा यह तन्त्रग्रन्थ रचा गया। —ने० द० १।१५३९

सुन्दरप्रथमतन्त्र

लि०—श्लोक स० २२ —अ० व० १०२०९ (झ)

सुन्दरीकल्प

लि०—(१) सुन्दरी देवी की पूजा पर यह तान्त्रिक निवन्ध है।
—वी० कैं० १३४०

(२) —कैट्. कैट्. १।७२६

सुन्दरीचरणपूजनपद्धति

लि०—यह परशुरामकल्पसूत्र पर आधारित त्रिपुरा-पूजा का प्रकरण ग्रन्थ है।

—ए० ब० ६३७४

सुन्दरीपद्धति

लि०—श्लोक स० ६१२, पूर्ण। —स० वि० २६५९९

सुन्दरीपूजापद्धति

लि०—(१) कुलार्णवतन्त्रान्तर्गत। इसमे त्रिपुरसुन्दरी की पूजा, होम, दूतीयजन, सौभाग्यकवच आदि विषय वर्णित हैं। —ए० ब० ६३७३

(२) सुन्दरीमहोदयान्तर्गत, श्लोक स० ३९४, अपूर्ण। —र० म० ४८७४

(३) सुन्दरीमहोदयान्तर्गत, श्लोक स० ३९४, अपूर्ण।

—कैट् कैट् १।७२६, २।१७४

सुन्दरीपूजारत्न

लि०—(१) सामराजशर्म-प्रपौत्र, कामराज-पौत्र, व्रजराज दीक्षित-पुत्र श्रीबुद्धिराज विरचित। नानाविध सम्मत तन्त्रो का अवगाहन कर यह त्रिपुरार्चनविधि शकाब्द १८४३ मे श्रीबुद्धिराज द्वारा रची गयी। —म० द० ५७६३

(२) नित्यानन्द विरचित। —कैट् कैट् १।७२६

सुन्दरीमहोदय या त्रिपुरसुन्दरीमहोदय

लि०–(१) रामानन्दनाथ या रामानन्द सरस्वती के शिष्य शङ्करानन्दनाथ कविमण्डल शम्भु विरचित। यह ग्रन्थ ५ उल्लासो मे विभक्त है। दीक्षा विधि, उपोद्घात, न्यासादि खण्ड, नित्य पूजाविधि और विविध तिथियाँ इसमे वर्णित है। यह ज्ञानार्णव से सम्बद्ध है।

—इ० आ० २५९९

(२) इसके छठे उल्लास का मुख्य अश नित्य नैमित्तिक पूजा का प्रतिपादन करता है। इसके छह या उससे भी अधिक उल्लास होंगे, ऐसा प्रतीत होता है। —ए० ब० ६३४८

(३) शङ्करानन्दनाथ विरचित। इसकी श्लोक स० ३००० है।

—अ० ब० ९१६५

(४) शङ्करानन्दनाथ विरचित, श्लोक स० लगभग २४६२, पूर्ण।

—स० वि० २४०८१

उ०—सेतुबन्ध मे।

सुन्दरीमहोदयार्चनपद्धति

लि०—श्लोक स० १००० । —अ० व० ८९२९

सुन्दरीयजनक्रम

लि०—सच्चिदानन्द नाथ उर्फ रामचन्द्र भट्ट विरचित। श्लोक स० ३००० ।
—अ० व० १०५०३

सुन्दरीयन्त्र

लि०—शिवताण्डव यन्त्र से गृहीत, श्लोक सं० ३० (५ म पटल मात्र) ।
—अ० व० ८११२ (क)

सुन्दरीरत्नावली

इसमे द्रविड शिशु का आख्यान है ।

उ०—ज्ञानानन्द ने इसका तत्त्वप्रकाश मे उल्लेख किया है ।

दे०, नो० सं० (पे० १४०) ११३७ मे ज्ञानानन्द परमहस कृत तत्त्वप्रकाश ।

सुन्दरीरहस्यवृत्ति

लि०—मुकुन्द-पौत्र, नारायण-पुत्र रत्ननाभागमाचार्य विरचित । यह १० पटलो मे पूर्ण है। इसमे त्रिपुरा की पूजा का विस्तार से वर्णन किया गया है। ग्रन्थकार ने अपने अनेक गुरुओ तथा पूर्वजो का उल्लेख भी इसमे किया है। —ए० व० ६३५०

सुन्दरीविद्या

लि०—श्लोक स० लगभग २५, अपूर्ण। —स० वि० २५८९७

सुन्दरीशक्तिदानस्तोत्र

लि०—(१) आदिनाथ महाकाल विरचित महाकालसहिता के अन्तर्गत काली-काल सवादरूप यह सुन्दरीशक्तिदान नामक कालीस्वरूपमेवासाम्राज्यस्तोत्र है । इसमे काली की स्तुति की गयी हैं। श्लोक स० ५०० । —रा० ला० ३९२

(२) इसमे कालीस्वरूपमेवासाम्राज्यस्तोत्र के स्थान पर कालीस्वरूपसहस्रनाम-स्तोत्र लिखा है। शेप सब पूर्ववत् है। —रा० ला० ४७८

सुन्दरीशक्तिदानाख्यकालिकासहस्रनामस्तुतिरत्न टीका

लि०—पूर्णानन्द परमहस विरचित। ककारादि क्रम से पढे गये काली के सहस्र नामो का अर्थ इसमे है। देखिए, सुन्दरीशक्तिदान स्तोत्र रा० ला० ३९२
—रा० ला० ४७७

सुन्दरीसपर्या

लि०—श्रीकृष्णभट्ट-शिष्य सभारञ्जक रामभट्ट विरचित। —ए० ब० ६३४९

सुन्दरीस्तव

उ०—पुरश्चर्यार्णव मे।

सुप्रभेद

लि०—श्लोक स० ८०, पटल स० २। ये दो पटल ज्ञानपाद के अन्तर्गत है और इनका नाम है शिवसृष्टिपटल और पशुसृष्टिपटल। यह ग्रन्थ दस शिवागमो के अन्तर्गत है। —अ० ब० ६८२७ (ख)

उ०—शतरत्नसग्रह मे।

सुप्रभेदप्रतिष्ठातन्त्र

(बलिस्थापन आदि)

लि०—(१) श्लोक स० ३००। —अ० ब० ९८७७

(२) इसके चर्या, ज्ञान और क्रिया नाम के तीन पाद है। —तं० म० ११४०२

सुब्रह्मण्यमन्त्र

लि०—श्लोक स० १५। —अ० ब० ७२९७ (ग)

सुभगार्चनापद्धति

लि०—श्लोक स० १०००। —अ० ब० ९९४४

सुभगार्चापारिजात

उ०—सौभाग्यभास्कर और सेतुबन्ध मे।

सुभगार्चारत्न

लि०—(१) रामचन्द्र विरचित। इसमे ८ तरग है। उनमे लक्ष्मीपूजा, मन्त्र, मुद्रा आदि विषय वर्णित है। —ए० ब० ६३४२

(२) आगमी रामचन्द्र कृत, (क) श्लोक स० ५००। (ख) श्लोक स० ५००। (ग) श्लोक स० ५००। —अ० ब० (क) ९९३८, (ख) १०२९१, (ग) १०६१

(३) इसमे ८ मयूख (?) है। सुभगादेवी (दुर्गादेवी का एक रूप) की पूजा-विधि प्रतिपादित है। —बी० कै० १३३७

(४) श्लोक स० ४३८ (चतुर्थ मयूख तक) —र० म० ४८९९

(५) रामचन्द्र कृत, पूर्ण। —डे० का० ५०२ (१८७५–७६ ई०)

(६) (क) श्लोक स० ३४८, अपूर्ण। (ख) रामचन्द्र विरचित, श्लोक स० लगभग ६००, पूर्ण। लिपिकाल स० १७९६ वि०। (ग) श्लोक स० लगभग २९९। लिपिकाल १७६८ वि०। इसका नामान्तर—सुन्दरीपद्धति है। सभवत यह ऊपर लिखे दो ग्रन्थो (क) और (ख) से अतिरिक्त है।

—स० वि० (क) २५१९९, (ख) २५८९६, (ग) २६५९९

(७) —कैट्. कैट् १।७२७

उ०—सेतुवन्ध मे।

सुभगोदयदर्पण

लि०—(१) यह ललितादेवी की पूजा का प्रतिपादक है। ग्रन्थकार ने कहा है—'ललिताया समेदाया पूजाविधिरत्र वर्णित।' दस प्रकार के मातृकादि मन्त्र के न्यासादि का क्रम भी इसमे कहा गया है। तदनन्तर पुरश्चरण—१००० वार या १०० वार मन्त्र-जप—करने का विधान है। —बी० कै० १३३८

(२) श्रीनिवास राजयोगीश्वर विरचित, पूर्ण। यह शक्ति की पूजा का प्रतिपादक है।

—म० द० ५७५४

सुभगोदयवासना

उ०—चिद्वल्ली मे।

सुभगोदयटीका

लक्ष्मीवर विरचित।

उ०—सौन्दर्यलहरी की टीका लक्ष्मीवरी मे।

सुभगोदयस्तुति (सटीक)

शङ्कराचार्य के परम गुरु आचार्य गौडपाद विरचित।

लि०—(क) गौडपादाचार्य कृत, श्लोक स० लगभग २५०, पूर्ण। (ख) श्लोक स० २२०, पूर्ण। —स० वि० (क) २१९१९, (ख) २१९२१

उ०—योगिनीहृदयदीपिका, सौन्दर्यलहरी-टीका (लक्ष्मीधर कृत) और महार्थ-मञ्जरी-परिमल मे।

सुमुखीपञ्चाङ्ग

लि०—(१) रुद्रयामल के अन्तर्गत, पूर्ण। —रा० पु० परिशिष्ट ९६ (क)

(२) श्लोक स० ४४८, अपूर्ण। इसमे सुमुखीस्तोत्र नही है। शेष चार—सुमुखीकल्प, सुमुखीकवच, सुमुखीसहस्रनाम तथा सुमुखीहृदय—है। —र० म० ४८३७

सुमुखीपटल

लि०—(१) रुद्रयामल से उद्धृत। इसमे उच्छिष्ट मातङ्गी, वगलामुखी तथा श्रीविद्या की पूजा वर्णित है। —ए० ब० ६३०९ (२)

(२) नन्द्यावर्ततन्त्रान्तर्गत। श्लोक स० ९०। —अ० ब० १२४६२

सुमुखीकवच

लि०—श्लोक स० २०। —अ० ब० ३५११

सुमुखीपद्धति

लि०—(१) श्लोक स० १००। —अ० ब० ३५१२

(२) श्लोक स० लगभग ४००, पूर्ण। लिपिकाल १७५६ वि०। —स० वि० २५८९५

सुमुखीविधान

लि०—रुद्रयामल मे उक्त। —रा० पु० ७६९२

सुराशोधन

लि०—पूर्ण। —डे० का० ५०३ (१८७५-७६ ई०)

सुरेन्द्रसंहिता

लि०—उमा-महेश्वर सवादरूप। यह १४ पटलो मे पूर्ण है। श्री उमादेवी के यह निवेदन करने पर कि भगवन्, आपने श्यामला के विशेष मन्त्र और उनकी पूजा मुझे नही वतलायी। कृपया उन्हे मुझे वतलावे। भगवान् महेश्वर ने श्यामला के विभिन्न मन्त्र और उनकी पूजा का प्रतिपादन कर उनकी जिज्ञासा पूर्ण की। —म० द० ५७५५

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव मे।

सुवर्णतन्त्र

लि०—(१) शिव-परशुराम सवादरूप यह तन्त्र दो खण्ड और १६ पटलो मे पूर्ण है। इसमे ताँवे और पारे का सुवर्ण वनाने की विधि वर्णित है। —ए० ब० ६१०१

(२) (क) श्लोक स० लगभग ३४०, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ३६८, पूर्ण। लिपिकाल १७३५ वि०। —स० वि० (क) २५०९७, (ख) २५७२८

सुव्रततन्त्र

उ०—विष्णुपूजापद्धति (चैतन्यगिरि कृत) मे।

सूक्ष्मतन्त्र

लि०— —कैट् कैट् १।७३०, ३।१५०

उ०—वीरशैवानन्दचन्द्रिका मे।

सूक्ष्मस्वायंभुव

उ०—नारायणभट्ट कृत मृगेन्द्रवृत्ति (विद्यापाद) मे।

सूक्ष्मागम

यह दश (१०) शिवागमो के अन्तर्गत है।

लि०— —कैट् कैट् ३।१५०

उ०—वीरशैवानन्दचन्द्रिका मे।

सूर्यकवच

लि०—(१) यह कवच त्रैलोक्यमङ्गल कहा जाता है। यह वहुत प्रचलित है एव प्राय. सभी स्तोत्र-सग्रहो मे छपा हुआ है। —ए० व० ६७८७

(२) यह कवच वज्रपञ्जर नाम से प्रसिद्ध है। यह रुद्रयामल तन्त्र के अन्तर्गत है। इसकी श्लोक स० ५८ है, पूर्ण। —र० म० १००९

सूर्यपञ्चाङ्ग

लि०—(१) रुद्रयामल के अन्तर्गत भैरव-भैरवी सवादरूप।

(क) श्री सूर्यदेवपटल, (ख) श्री सूर्यदेवपूजा-पद्धति, (ग) श्री सूर्य-देव-सहस्रनाम, (घ) श्री सूर्यदेव-कवच तथा (ङ) श्री सूर्यदेव-स्तवराज इसमे वर्णित हैं।

—नो० स० २।२५१

(२) देवीरहस्यतन्त्र से गृहीत। श्लोक स० ५००। —अ० व० ९५१

(३) सूर्यकवच मात्र ब्रह्मयामलान्तर्गत, पूर्ण। —व्र० प० ४४६

(४) वज्रपञ्जर नामक सूर्यकवच देवीरहस्यान्तर्गत, पूर्ण। —र० म० ४९२०

(५) रुद्रयामलान्तर्गत। श्लोक सं० ६१२, पूर्ण। —स० वि० २५२२४

सूर्यपटल

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत। भैरवभैरवी सवादरूप। इसमे कौलमतानुसार सूर्यदेव की पूजा वर्णित है। इसमे दो पटल है—१ ले मे सूर्यदेव के मन्त्र और उनके विनियोग के नियम है और दूसरे पटल मे, जो गद्यमय है, सूर्यपूजा-पद्धति है।

—ए० ब० ५८८८

(२) श्लोक स० ११०, पूर्ण। देवीरहस्यान्तर्गत। लिपिकाल सवत् १८४१ वि०।

—स० वि० २५८९४

सृष्टिक्रमचक्रन्यास

लि०—श्लोक स० १०० । —अ० ब० ३५४४

सेतुबन्ध

लि०—वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत नित्याषोडशिका की टीका गभीरराय भारती दीक्षित-पुत्र भासुरानन्दनाथ दीक्षित उपनाम—भास्करराय विरचित। श्लोक स० ८१२६।८ विश्रामो मे पूर्ण। ग्रन्थकार का कहना है कि जो लोग नित्याषोडशिका रूप महासागर को पार करना चाहे वे आठ विश्रामो से युक्त सेतुबन्ध का सहारा अवश्य ले।

—रा० ला० २२६७

सोमभुजगावली

उ—ता० रामक्तिसुवार्णव तथा तारारहस्यवृत्तिका मे।

सोमराज

उ०—तन्त्रालोक-टीका मे ।

सोमशम्भुतन्त्र

उ०—पुरश्चर्यार्णव, आगमकल्पलता, ललितार्चनचन्द्रिका तथा शारदातिलक-टीका राघवभट्टी मे ।

सोमसिद्धान्त

उ०—शतरत्नसग्रह मे ।

सौत्रामणितन्त्र

उ०—शारदातिलक टीका राघवभट्टी, पुरश्चर्यार्णव तथा ताराभक्तिसुधार्णव मे।

सौन्दर्यलहरी या आनन्दलहरी (सटीक)

लि०—(१) श्रीशङ्कराचार्य कृत शक्ति की स्तुति १०१ या १०३ श्लोको मे। टीका—सौभाग्यवर्द्धिनी कैवल्याश्रम यति कृत। —इ० आ० २६२१

(२) भाषा व्याख्यायुक्त। (क) श्लोक सं० ८७५, इसमे देवी की स्तुति प्रतिपादित है। (ख) श्लोक स० ९००। (ग) श्लोक स० २३७५, टीका लक्ष्मीवर विरचित। (घ) श्लोक स० १४५० टीका सौभाग्यवर्द्धिनी कैवल्याश्रम कृत। (ङ) श्लोक स० ३००० अपूर्ण, टीका—सुधाविद्योतिनी।

—ट्रि० कै० (क) ११३५, (ख) ११३६, (ग) ११३७, (घ) ११३८, (ङ) ११३९

द्रष्टव्य, आनन्दलहरी।

उ०—सौभाग्यभास्कर आदि मे

सौन्दर्यलहरी की व्याख्याएँ—

लि०—(क) सुधाविद्योतिनी अरिजित् विरचित। श्लोक स० ११५०। सुधाद्योतिनीकार ने सौन्दर्यलहरी का कर्ता प्रवरसेन को माना है—'पूर्वजन्मसमयोपासनाह्लादितमत्या भगवत्या स्तन्यपानसमुल्लसितचित्तवृत्ति प्रवरसेनामिध स्तोत्रराजरचना चकार।' अन्य लोगो ने सौन्दर्यलहरी का कर्ता शकराचार्य को माना है।

(ख) लक्ष्मीवराभिधा (लक्ष्मीधर विरचित) श्लोक स० ३२७५।

—ट्रि० कै० (क) १०६५, (ख) १०९५ (ख)

सौभाग्यकल्पद्रुम

लि०—(१) माधवानन्दनाथ विरचित। इसमे दैनिक पूजाविधि का विस्तार से वर्णन है। —ए० व० ६३३८

(२) (क) श्लोक स० १४०० (केवल १म और ५ म से ७ म स्कन्ध तक) अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ४०००, पूर्ण। (ग) श्लोक स० ४०००, पूर्ण। (घ) श्लोक स० ९०० (केवल न्याम स्कन्ध)।

—अ० व० (क) १७७, (ख) ३५१७, (ग) ११७८७, (घ) ११७७८

(३) श्लोक म० ११५५, अपूर्ण। —र० म० ४८९६

(४) (क) श्लोक सं० लगभग २९९२, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० लगभग क्रमश. १७४७, २६३, अपूर्ण, ६५६ (२ स्कन्ध मात्र) पूर्ण। (ग) श्लोक सं० लगभग ३८५ षष्ठ स्कन्ध, माधवानन्दनाथ कृत श्लोक सं० ३२० (पञ्चम स्कन्ध मात्र) पूर्ण, लिपिकाल

१८८५। (घ) माधवानन्दनाथ कृत श्लोक स० १०४५ अष्टम स्कन्ध मात्र, पूर्ण। (ङ) माधवानन्दनाथ कृत। श्लोक स० ५६० सप्तम स्कन्ध मात्र, पूर्ण।

—स० वि० (क) २५२०४, (ख) २५६६० से २५६६२ तक, (ग) २५८९२–९३, (घ) २५९०१, (ङ) २५९१९

सौभाग्यकल्पद्रुमटीकासौरभ

लि०—क्षेमानन्द कृत, श्लोक स० २१५०, अपूर्ण —स० वि० २४९१८

सौभाग्यकल्पलता

लि०—क्षेमानन्द विरचित। श्लोक स० १२०० । —अ० ब० ५५४३

सौभाग्यकल्पलतिका

लि०—(१) क्षेमानन्दनाथ विरचित। इसमे प्रात स्मरण, स्नान, त्रैकालिक सन्ध्या, जप, भूतशुद्धि आदि, पाँच सामान्य मन्त्रो के न्यास, पाठ, मुख्य मन्त्र-जप, देवता-पूजन, स्तोत्र, कवच, निमित्त पूजा, प्रायश्चित्त, देवतात्मैक्यानुसन्धान आदि विषय वर्णित हैं। यह ८ पटलो मे (स्तवको मे) पूर्ण है । —ए० ब० ६३३९

(२) श्लोक स० १५००। —अ० ब० ९९४२

(३) (क) श्लोक स० १६८०, पूर्ण। (ख) क्षेमानन्द कृत, श्लोक स० १४५१, अपूर्ण। लिपिकाल १८८७ वि०। (ग) श्लोक स० ३०८, पूर्ण (सभवत यह ग्रन्थ क्षेमानन्द-नाथ कृत नही है)। (घ) श्लोक स० ६५८ क्षेमानन्द विरचित, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४१२३, (ख) २४९१७, (ग) २५६६३, (घ) २५८७०

सौभाग्यकवच

लि०—(१) नित्याषोडशिकार्णवान्तर्गत शिव-पार्वती सवादरूप । श्लोक स० ७० । इस कवच मे साधको को सौभाग्य-प्राप्ति के उपाय बतलाये गये हैं ।

—रा० ला० ४२१५

(२) विवरण ऊपर दिया जा चुका है। —ए० ब० ६६७१

(३) (क) वामकेश्वर तन्त्र से गृहीत। श्लोक स० ७०। (ख) श्लोक सं० १००। (ग) महारहस्य से गृहीत। श्लोक स० ७०

—अ० ब० (क) ३५१८, (ख) ६०२५ (ग) १०८११

(४) वामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत। श्लोक स० १०७, पूर्ण । —र० म० ४५१३

सौभाग्यगद्यवल्लरी

लि०—निजात्मप्रकाशानन्द (मल्लिकार्जुनयोगीन्द्र) कृत । श्लोक स० लगभग २९०, अपूर्ण । —स० वि० २५९५०

सौभाग्यतन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० ३००, पटल स० ११। इसमे प्रतिपादित विषय है—जप-समय, मन्त्र के पारायण का लक्षण, षोडशाङ्ग विधान मे उक्त बीजतत्त्व कथन आदि, पारायण के भेद, विद्यामन्त्रो के पारायण का निर्देश, नामपारायण कथन, तन्त्र-पारायण का प्रतिपादन, हस-पारायण-लक्षण कथन, चक्रपारायण-लक्षण कथन, रमापारायण-लक्षण कथनादि, आम्नाय-पारायण के लक्षण कथनादि । —रा० ला० ९०९

(२) (क) श्लोक स० ८०, पारायणविधि मात्र, अपूर्ण । (ख) श्लोक स० ३०० (केवल ३ य पटल से ११ पटल तक) । (ग) श्लोक स० ३००, पारायणविधि मात्र । —अ० व० (क) ५५, (ख) १०१४२, (ग) १०७९७

(३) श्लोक स० २९०, अपूर्ण । —र० म० १०४२

(४) —ए० व० ६८२५

(५) (क) श्लोक स० लगभग १०१०, अपूर्ण । (ख) श्लोक स० १३०, अपूर्ण । —स० वि० (क) २४५७५, (ख) २५१५४

सौभाग्यतरङ्गिणी

लि०—मुकुन्द विरचित, त्रिपुरसुन्दरी-पूजा का प्रतिपादक यह तान्त्रिक ग्रन्थ ४ लहरियो मे पूर्ण है । —ने० द० ११४५८

सौभाग्यभास्कर

लि०—यह भास्करराय विरचित ललितासहस्रनाम-भाष्य है। रचना काल १७२८ ई० । —कैट् कैट् ११७३८

सौभाग्यरत्नाकर

लि०—(१) सच्चिदानन्दनाथ-शिष्य विद्यानन्दनाथ विरचित, यह ३६ तरगो मे पूर्ण है। वी० कै० १३२८ तथा म० द० ५७५६ मे विशेष विवरण द्रष्टव्य । यह त्रिपुरा-पूजा-पद्धति का निर्देशक है । —ए० व० ६३४०

(२) यामल आदि सब तन्त्रो का आद्योपान्त पर्यालोचन कर तथा गुरुमुख से उनका

रहस्य यथार्थ रूप मे जानकर प्रयागराज मे विद्वन्मण्डली द्वारा प्रार्थित अधिकारी ग्रन्थकार ने सब लोगो के हितार्थ इसमे अशेष त्रैपुर विधान का प्रतिपादन किया।

—ने० द० ११४७२

(३) विद्यानन्दनाथ (श्रीनिवासभट्ट गोस्वामी) कृत। पन्ने २७२।

—रा० पु० २५६५८

(४) सच्चिदानन्दनाथ शिष्य विद्यानाथ (नन्दनाथ ?) विरचित, (क) श्लोक स० ५०००(२१ तरग पूरे २२ वाँ शुरू)। (ख) श्लोक स० २३०० (आरभ से २० वें तरग तक। (ग) श्लोक स० १०००० (केवल ५ पन्ने त्रुटित है)। (घ) श्लोक स० २५०० (आदि और अ त मे अपूर्ण। (ङ) श्लोक स० २०० (केवल छठा तरग)। (च) श्लोक स० १००००, ३६ तरगो मे। (छ) श्लोक स० १००, अपूर्ण।

—अ० ब० (क) ८६, (ख) ७०६७, (ग) ९१६७, (घ) ९९०९, (ङ) १०४४, (च) १०६९७, (छ) ११८५८

(५) ग्रन्थ की समाप्ति मे ग्रन्थकार ने स्वय अपना परिचय दिया है—

सच्चिदानन्दनाथाङ्घ्रिसरोरुहयुग भजे ।
यत्कटाक्षलवोल्लासात् शिवोऽह पञ्चकृत्यकृत् ।।
श्रीविद्यानन्दनाथेन शिवयो प्रियसूनुना ।
कृते सिन्धावगादेष षट्त्रिश सत्तरङ्गक ।।

इसमे तान्त्रिक पूजा प्रतिपादित है। ३६ तरङ्गो मे यह पूर्ण है। —बी० क० १३२८

(६) श्रीविद्यातत्त्ववेत्ता जगति करुणयोपात्तकाय शिवो य
श्रीमान् सौसुन्दराख्यक्षितिसुरतिलक सच्चिदानन्दनाथ ।
तच्छिष्यश्रीनिवासो द्रविडविषयजस्तत्प्रसादात्ततत्त्व
श्रीविद्यानन्दनाथ परशिववचसा भाववेत्ता विधेय ।।
श्रीविद्याया सभेदाया नित्यनैमित्तिकार्चनम् ।
काम्यार्चन च दीक्षाङ्गभूत प्राच्याङ्गसाधनम् ।।
दीक्षाभेद पुरश्चर्या तत्कर्म नियमादिकम् ।
काम्यहोमविधिश्चैव लिख्यते रत्नवारिधौ ।।
क्षेत्रेऽविमुक्ते शिवराजधान्यामास्ते निजाराध्यनिदेशवर्ती
श्रीविद्यानन्दनाथेन शिवयो प्रियसूनुना ।
कृते सौभाग्यरत्नाब्धौ षट्त्रिशोऽगात्तरङ्गक ।।

यह ३६ तरगो का ग्रन्थ, जिसमे श्रीविद्या की साङ्गोपाङ्ग सर्वविध पूजा वर्णित है, काशी मे श्रीविद्यानन्दनाथ द्वारा रचा गया। —म० द० ५७५६, ५७५७

(७) सच्चिदानन्दनाथ-शिष्य विद्यानन्दनाथ विरचित, (क) श्लोक सं० ९४००, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ६९१६, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० ३५८५ (१४ वे तरग तक)। —र० म० (क) १०३९, (ख) ४९२१, (ग) ४८९२

(८) यह तान्त्रिक पूजापद्धति ३६ तरगो मे पूर्ण है। (क) ४४० पन्ने, सवत् १५७५ वि० मे लिखित, श्लोक सं० १५०००। (ख) अभिनव लिखित। (ग) पन्ने २४८। —तै० म० (क) ६७०४, (ख) ६७०५, (ग) ६७०६

(९) विद्यानाथ कृत। पूर्ण। —डे० का० (१८७५,७६ ई०)

(१०) विद्यानन्दनाथ विरचित।

—कैट् कैट् १।७३८, २।१७७, ३।१५१

(११) (क) विद्यानन्दनाथ कृत, श्लोक स० ८३८४, अपूर्ण। लिपिकाल सवत् १७८९ वि०। (ख) विद्यानन्दनाथ कृत, श्लोक स० लगभग ११६५८, पूर्ण। (ग) विद्यानन्दनाथ कृत, श्लोक सं० ३८७, अपूर्ण। लिपिकाल स० १६३० वि०। (घ) विद्यानन्दनाथ कृत, श्लोक स० लगभग १४८२, अपूर्ण। (ङ) विद्यानन्दनाथ कृत, श्लोक स० लगभग १९३५, अपूर्ण। —स० वि० (क) २४९५४, (ख) २५१०४, (ग) २५९४६, (घ) २६५३८, (ङ) २६६७३

उ०—पुरश्चर्यार्णव, सेतुबन्ध तथा सौभाग्यभास्कर मे।

सौभाग्यरहस्य

लि०—सच्चिदानन्दनाथ-शिष्य विद्यानन्दनाथ विरचित। ज्ञानार्णव से सकलित। —अ० व० ५५८० (ख)

सौभाग्यवर्द्धिनी

लि०—गोविन्दाश्रम के शिष्य कैवल्याश्रम विरचित आनन्दलहरी की व्याख्या। —कैट् कैट् १।७३८

सौभाग्यविद्या

गौतमीय तन्त्र का उत्तर भाग।

लि०— —कैट् कैट्. २।१७७

सौभाग्यसुधोदय

लि०—(१) सच्चिदानन्दनाथ-शिष्य विद्यानन्दनाथ कृत। (क) श्लोक स० ६००, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० २०००। (ग) श्लोक स० ६००, अपूर्ण।

—अ० व० (क) ५३९१, (ख) १०५३७, (ग) १०६१५ (ख)

(२) पुण्यानन्दनाथ-शिष्य अमृतानन्द योगिप्रवर विरचित। श्लोक स० १७५। देवी की स्तुतिरूप सौभाग्यलहरी की यह व्याख्या है। —ट्रि० कै० ११२७ (झ)

(३) विद्यानन्दनाथ विरचित, श्लोक स० २३७६, पूर्ण। —स० वि० २४९१४

सौभाग्यसुभगोदय

अमृतानन्दनाथ कृत।

उ०—योगिनीहृदयदीपिका मे।

सौभाग्यहृदय

लि०—गोरक्ष या महेश्वरानन्द के परम गुरु विरचित। —कैट् कैट् २।१७७

उ०—महार्थमञ्जरी की परिमल नामक टीका मे।

सौभाग्यानन्दसन्दोह

उ०—कौलमतरहस्य मे।

सौरकल्पविधि

लि०—श्लोक स० ५००। —अ० व० १०३१५

सौरभेयतन्त्र

यह श्रीकण्ठ के मतानुसार अष्टादश (१८) रुद्रागमो के अन्तर्गत है।

उ०—सर्वदर्शनसग्रह मे।

सौरसहिता

लि०—(१) शिव-कार्तिकेय सवादरूप। यह मौलिक तन्त्र ग्रन्थ है तथा १० पटलो मे पूर्ण है। यह तन्त्र शिव या शक्ति का प्रतिपादन न कर सूर्य का प्रतिपादक है।

—ने० द० १।१२३० (झ)

(२) श्लोक स० ५५०। —अ० व० १३२५५

स्कन्दयामल

यह यामलाष्टको मे अन्यतम है।

उ०—रघुनन्दन तथा प्राणतोषिणी मे प्राणतोषण मिश्र द्वारा।

स्कन्दसद्भाव

लि०—शिवप्रोक्त, (क) श्लोक स० १३००, पूर्ण। स्कन्द की उत्पत्तिकथा से युक्त यह अठारह अध्यायो मे पूर्ण है। यह सर्वार्थसाधक है। इसमे १ म अध्याय मे शास्त्रसंग्रह है, २ य मे उत्पत्ति, ३ य मे तन्त्रोद्धार, ४ र्थ मे पूजनविधि, ५ म मे अग्निकार्य, ६ ष्ठ मे दीक्षाविधि, ७ म मे आचार आदि विपय वर्णित हैं।

(ख) श्लोक स० १३००। इसमे स्कन्द-पूजा आदि विषय प्रतिपादित है।

—ट्रि० कै० (क) १०७१, (ख) १०७२ (क)

स्कन्दानुष्ठानसंग्रह

लि०—ग्रन्थकार—क्रियासग्रहकार के पौत्र है। श्लोक स० ४७७५, अपूर्ण। इसमे स्कन्द की पूजा विस्तार से वर्णित। —ट्रि० कै० १०७३

स्तवचिन्तामणि (सवृत्ति)

लि०—मूलकार—भट्टनारायण तथा वृत्तिकार—क्षेमराज, शैव तन्त्र, (क) पूर्ण, (ख) पूर्ण। —डे० का० (क) ५०५, (ख) ५०६ (१८७५–७६ ई०)

उ०—रत्नकण्ठ द्वारा स्तुतिकुसुमाञ्जलि-टीका मे।

स्तोत्रभट्टारक

उ०—महार्थमञ्जरी-परिमल मे।

स्तोत्रमाला

लि०—शितिकण्ठ कृत। —प्राप्त ग्रन्थ-सूची से।

स्तोत्रावली

लि०—उत्पलाचार्य विरचित। देखिए, परमेशस्तोत्रावली।

—कैट्. कैट् १।७४४

उ०—योगिनीहृदयदीपिका मे।

स्त्रीवशीकरण

ल०—श्लोक स० लगभग २६ २, पूर्ण। —स० वि० २३९४३

स्त्रीसौभाग्यकवच

लि०—वामकेश्वरतन्त्र से गृहीत। श्लोक स० ८१।

—डे० का० २६१ (१८८३–८४ ई०)

स्पन्दकारिका

लि०—वसुगुप्त विरचित, पूर्ण।

उत्पल वैष्णव के मतानुसार वसुगुप्त से उपदेश प्राप्त कर कल्लट ने इसकी रचना की। नामान्तर—स्पन्दसूत्र।

स्पन्दकारिकाविवरण

लि०—राजानक रामकण्ठ विरचित। दो पूर्ण प्रतियाँ

—डे० का (१) ५०८, (२) ५०९ (१८७५–७६ ई०)

स्पन्दनिर्णय

लि०—(१)क्षेमराज विरचित। श्लोक स० ८००। इसमे शिवजी की विश्वसृष्टि-शक्ति का विवरण दिया गया है। —ट्रि० कै० १०७४ (क)

(२) पूर्ण। —डे० का० ५११ (१८७५–७६ ई०)

स्पन्दप्रदीपिका

लि०—उत्पल देव विरचित। पूर्ण।

—डे० का० ५१२ (१८७५–७६ ई०)

स्पन्दप्रदीप

लि०—विद्योपासक भट्टारक स्वामी कृत। अपूर्ण।

—डे० का० ५१३ (१८७५–७६ ई०)

स्पन्दविवरणसारमात्र

उत्पलदेव-शिष्य राजानक रामकण्ठ कृत्।

स्पन्दसन्दोह

लि०—क्षेमराज विरचित। पूर्ण। —डे० का० ५१७ (१८७५–७६ ई०)

उ०—महार्थमजरी-परिमल मे।

स्पन्दसर्वस्व

लि०—कल्लट विरचित, (क) पूर्ण। (ख) पूर्ण। (ग) पूर्ण।

—डे० का० (क) ५१४, (ख) ५१५, (ग) ५१६ (१८७५–७६ ई०)

स्पन्दसूत्र (सटिप्पण) या शिवसूत्र

लि०—वसुगुप्त विरचित। टिप्पण के निर्माता अज्ञात। (क) पूर्ण। (ख) पूर्ण।

—डे० का० (क) ५१८, (ख) ५१९ (१८७५–७६ ई०)

स्पन्दामृत

वसुगुप्त कृत (द्रष्टव्य Kashmır Shaıvısm, पृ० ३७)। किसी-किसी के मत से यह स्पन्दकारिका का नामान्तर है।(द्रष्टव्य Abhınava Gupta, पृ० ९२ और ९३)।

स्वच्छन्दतन्त्र

लि०—इसमे ९ पटल हैं। यह काश्मीर स० सीरीज मे ७ भागो मे छप चुका है। इसकी श्लोक स० ११०० है। —ए० व० ५८२२

स्वच्छन्दपद्धति

लि०—(१) विमलानन्द-शिष्य चिदानन्द विरचित। (क) श्लोक सं० ४०० । (ख) श्लोक सं० ४००, अपूर्ण। (ग) श्लोक स० ६०० (अन्त मे खण्डित)।

—अ० व० (क) ८२५६, (ख) १०८१९ (ग) ९०११

(२)काशीवासी श्री नीलकण्ठाश्रम यति के शिष्य माधवात्मज चिदानन्द विरचित। श्रीविद्याराधन मे वालको के प्रवेश के निमित्त सिद्धसरणि की यह सक्षिप्त पद्धति चिदानन्द द्वारा रची गयी है। पन्ने ४३। १९ स्पन्दो मे यह पूर्ण है। —म० द० ५७५८

स्वच्छन्दभट्टारकबृहत्पूजापत्रिकाविधि

लि०—(१) श्लोक स० २८८।

—डे० का० २६३ (१८८३–८४ ई०)

(२) —कैट् कैट् १।७४९

स्वच्छन्दभैरव या कौलस्वच्छन्दभैरव

लि०—(१) इसमे स्वच्छन्दभैरव की पूजा का विवरण दिया गया है विविध प्रकार की मुद्राओ के साथ। —बी० कै० १३४१

(२) पूर्ण। —डे० का० ५२० (१८७५–७६ ई०)

यह चतु षष्टि (६४) भैरवागमो के अन्तर्गत आठ भैरवतत्रो मे है—श्रीकण्ठ।

उ०—पुरश्चर्यार्णव तथा योगिनीहृदयदीपिका मे।

स्वच्छन्दयामलतन्त्र

श्रीकण्ठी के मतानुसार यह चतु षष्टि (६४) तन्त्रो के अन्तर्गत है।

—तन्त्रालोक-टीका

उ०—योगिनीहृदय, सौभाग्यभास्कर, सुभगोदय, योगिनीहृदयदीपिका तथा महामोक्षतन्त्र मे।

स्वच्छन्दोद्योत (स्वच्छन्दनयटीका)

लि०—(१) राजानक अभिनवगुप्त के शिष्य राजानक क्षेमराज विरचित। (क) श्लोक स० ११९४, पूर्ण। (ख) श्लोक स० १३२८, पूर्ण।

—डे० का० (क) ५२१, (ख) ५२२ (१८७५–७६ ई०)

(२) क्षेमराज कृत। —कैट् कैट् १।७४९

स्वच्छन्दतन्त्र

उ०—तन्त्रसार, सौभाग्यभास्कर, महार्थमञ्जरीपरिमल, चिद्वल्ली, तन्त्रालोक, आगमतत्त्वविलास, शतरत्नसग्रह तथा प्राणतोपिणी मे।

स्वच्छन्दसंग्रह

उ०—योगिनीहृदय, सौभाग्यभास्कर, सुभगोदय, योगिनीहृदयप्रदीपिका तथा महामोक्ष मे।

स्वतन्त्रतन्त्र

लि०—(१) —ए० व० ५८२२

(२) (क) श्लोक स० ३३२, अपूर्ण। (ख) श्लोक स० ५२, अपूर्ण।

—स० वि० (क) २४०६१, (ख) २४०६२

उ०—तन्त्रसार, श्यामारहस्य, तारारहस्यवृत्ति, कालिकासपर्याविधि तथा शतरत्नसग्रह मे।

स्वप्नवाराहिकाकल्प

लि०—श्लोक स० लगभग १२४, पूर्ण। —स० वि० २६१६७

स्वप्नवाराहीकल्प

लि०—(१) इसमे स्वप्नो के शुभाशुभ फल का निरूपण है तथा दु स्वप्नो की निवृत्ति के लिए जगन्मयी की पूजा आदि उपाय प्रतिपादित है। —वी० कै० १३४२

(२) आगमकल्पद्रुमसग्रह से गृहीत। श्लोक स० लगभग १४०, पूर्ण।

—स० वि० २४४४

स्वप्नवाराहीप्रयोग

लि०—श्लोक स० लगभग २५, पूर्ण। —स० वि० २६५९८

स्वप्नाध्याय

लि०—उत्तरतन्त्र मे उक्त। पार्वती-महादेव सवादरूप, इसमे स्वप्नो के फलाफल का वर्णन किया गया है। —ए० व०५८९६

स्वबोधोदयमञ्जरी

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

स्वरूपाख्यस्तोत्र (फेत्कारिणीतन्त्रान्तर्गत)

लि०—फेत्कारिणीतन्त्र के अन्तर्गत ताराखण्ड मे महाकाल भाषित। इसमे माया वीजोद्धार पूर्वक भगवती की पूजाविधि और स्तुति प्रतिपादित है। —रा० ला० ९९४

स्वरूपाख्यस्तोत्रटीका (आनन्दोद्दीपिनी)

लि०—ब्रह्मानन्द सरस्वती कृत। यह फेत्कारिणीतन्त्र मे उक्त प्रकृति के स्वरूप के निरूपक स्तोत्र का व्याख्यान है। —नो० स० ३।३६१

स्वरूपाख्यानस्तवटीका

लि०—नन्दराम विरचित, पूर्ण। —व० प० १३५६ (क)

स्वर्गलक्षण

लि०—श्लोक स० २५०। —अ० व० ९६८७

स्वर्णतन्त्र

लि०—(१) श्लोक स० १०००। —अ० व० १०६६३
(२) —ए० व० ६३२४

स्वर्णतन्त्रकल्प

लि०—कुण्ठकल्प तथा वाराहीकल्प भी इसमे सनिविष्ट हैं। समिलित श्लोक स० १६२, पूर्ण। —स० वि० २५४१६

स्वर्णाकर्षणभैरवकवच

लि०—श्लोक स० ११४, पूर्ण। —स० वि० २५९४७

स्वर्णाकर्षणभैरवतन्त्र

लि०—श्लोक स० ३८२, पूर्ण। लिपिकाल सवत् १९१२ वि०। —स० वि० २४४११

स्वर्णाकर्षणभैरवदीपप्रकाश

लि०—रुद्रयामलान्तर्गत। श्लोक स० ५६, पूर्ण। —स० वि० २५८७५

स्वर्णाकर्षणभैरवपटल

लि०—(क) श्लोक स० ७३, पूर्ण। (ख) श्लोक स० ११२, पूर्ण ।

—स० वि० (क) २४१६७, (ख) २५९४७

स्वर्णाकर्षणभैरवमन्त्र

लि०—(क) श्लोक स० ३७, अपूर्ण । लिपिकाल स० १९४१ वि० । (ख) श्लोक स० १५, पूर्ण ।

—स० वि० (क) २४१६८, (ख) २५३९८

स्वर्णाकर्षणभैरवमन्त्रविधि

लि०—त्रिपुरसिद्धान्त के अन्तर्गत। श्लोक स० ४१, पूर्ण। —स० वि० २४३२५

स्वर्णाकर्षणभैरवी

लि०—श्लोक स० १००, पूर्ण।

—डे० का० (१८८३-८४ ई०)

स्वस्वभावसंबोध

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे।

स्वात्मसंबोध

इसका नामान्तर—आत्मसवोध है।

उ०—स्पन्दप्रदीपिका मे ।

स्वामिवश्यकरीमन्त्र

लि०—श्लोक स० ११, अपूर्ण।

—स० वि० २६१६८

स्वायंभुव आगम

श्रीकण्ठी-मत से यह दश (१०) रुद्रागमो मे अन्यतम है। इस पर खेटपाल विरचित व्याख्या है।

उ०—तन्त्रालोक-टीका जयरथी तथा शतरत्नसग्रह मे।

स्वायम्भुववृत्ति

(१) नारायणकण्ठ कृत । यह शैव तन्त्र है । इसका श्रीरामकण्ठ ने नरेश्वर-परीक्षाप्रकाश मे उल्लेख किया है। इस पर एक वृत्ति भी है जिसका उल्लेख हैमाद्रि ने चतुर्वर्गचिन्तामणि के व्रतखण्ड तथा दानखण्ड मे किया है एव रघुनन्दन ने भी तीर्थतत्त्व मे किया है।

—कैट् कैट् १।५५

उ०—रामकण्ठ कृत परमोक्षनिरासकारिका तथा अघोरशिवाचार्य कृत रत्नत्रय-टीका मे।

हनुमत्कवच

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, ईश्वर-पार्वती सवादरूप।

—ए० व० ६७८०

(२) श्लोक स० ६०। —अ० व० ५४२७

हनुमत्कवचादि (१)

लि०—श्लोक स० २१८। इसमे पञ्चमुखी हनुमत्कवच तथा पञ्चमुखी हनुमन्महामन्त्र है।

हनुमत्कवच (२) तथा मालामन्त्र

लि०—(क) नाम–हनुमत्कवचादि। श्लोक स० ५०। इसमे पञ्चमुखी हनुमत्कवच और पञ्चमुखी हनुमन्महामन्त्र ये दो ग्रन्थ हैं। (ख) हनुमत्कवच और मालामन्त्र ये दो ग्रन्थ है। श्लोक स० ५०। —अ० व० (क) १३३८२, (ख) ९४४६

हनुमच्छान्तिक

लि०—फेत्कारिणीतन्त्रान्तर्गत। इसमे हनुमान् जी का कौलमार्ग प्रदाता के रूप मे उल्लेख किया गया है। —ए० व० ६७७८

हनुमत्पञ्चमन्त्रपटल

लि०—सुदर्शन सहितान्तर्गत। श्लोक स० २२०, पूर्ण।

—स० वि० २४८९२

हनुमत्पञ्चाङ्ग

लि०—(१) हनुमत्सहस्रनाम (हनुमत्स्तोत्र इसमे नही है) अपूर्ण।

—र० म० ४८४९

(२) (क) श्लोक स० ७५६, अपूर्ण। (ख) सुदर्शनसहितान्तर्गत। श्लोक स० ४२९, पूर्ण। (ग) सुदर्शनसहितान्तर्गत, श्लोक स० ७४२, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४०४९, (ख) २४८९१, (ग) २४८९३

(३) —कैट् कैट् १।७५३

हनुमत्पञ्चाध्यायी

लि०—

—कैट् कैट् ३।१५६

हनुमत्पटल

लि०—सुदर्शनसंहिता से गृहीत। —कैट् कैट् २।१८१

हनुमत्पताकासिद्धि

लि०— —रा० पु० ६३७१

हनुमत्पद्धति

लि०—श्लोक स० २५०। —अ० ब० ५१६३

हनुमत्पुरश्चरणविधि

लि०— —र० म०

हनुमत्सहस्रनाम

लि०—सुदर्शनसंहिता के अन्तर्गत। —कैट् कैट् २।१८१, ३।१५६

हनुमदुपासना

लि०—यन्त्रसहित, श्लोक स० लगभग १०, पूर्ण। —स० वि० २५०४३

हनुमदेकमुखकवच

लि०— —कैट् कैट् १।७५४

हनुमद्गायत्री

लि०—ब्रह्माण्डपुराण से गृहीत। श्लोक स० २८। —अ० ब० ७४४८

हनुमद्दीपदान

लि०—सुदर्शनसंहिता के अन्तर्गत। श्लोक स० ७०। —अ० ब० ५४७९

हनुमद्दीपपद्धति

लि०—हरि आचार्य विरचित। —कैट् कैट् ३।१५६

हनुमद्दुर्ग

लि०—(१) इसमे हनुमान् का मालामन्त्र है और उसके जप की विधि बतलायी गयी है। —ए० ब० ६५०३

(२) वीरता के साधन हनुमन्मन्त्र आदि इसमे कहे गये है। यह अथर्ववेदोक्त कहा गया है। —नो० स० २।२६४

(३) (क) श्लोक स० ५०। अथर्ववेद से गृहीत। (ख) श्लोक स० १००।

—अ० ब० (क) ५६१२, (ख) ९४१

हनुमत्कवच

लि०—(१) रुद्रयामलान्तर्गत, ईश्वर-पार्वती सवादरूप।

—ए० वं० ६७८०

(२) श्लोक स० ६०। —अ० व० ५४२७

हनुमत्कवचादि (१)

लि०—श्लोक स० २१८। इसमे पञ्चमुखी हनुमत्कवच तथा पञ्चमुखी हनुमन्महा-मन्त्र है।

हनुमत्कवच (२) तथा मालामन्त्र

लि०—(क)नाम–हनुमत्कवचादि। श्लोक स० ५०। इसमे पञ्चमुखी हनुमत्कवच और पञ्चमुखी हनुमन्महामन्त्र ये दो ग्रन्थ हैं। (ख) हनुमत्कवच और मालामन्त्र ये दो ग्रन्थ है। श्लोक स० ५०। —अ० व० (क) १३३८२, (ख) ९४४६

हनुमच्छान्तिक

लि०—फेत्कारिणीतन्त्रान्तर्गत। इसमे हनुमान् जी का कौलमार्ग प्रदाता के रूप मे उल्लेख किया गया है। —ए० व० ६७७८

हनुमत्पञ्चमन्त्रपटल

लि०—सुदर्शन सहितान्तर्गत। श्लोक स० २२०, पूर्ण।

—स० वि० २४८९२

हनुमत्पञ्चाङ्ग

लि०—(१) हनुमत्सहस्रनाम (हनुमत्स्तोत्र इसमे नही है) अपूर्ण।

—र० म० ४८४९

(२) (क) श्लोक स० ७५६, अपूर्ण। (ख) सुदर्शनसहितान्तर्गत। श्लोक स० ४२९, पूर्ण। (ग) सुदर्शनसहितान्तर्गत, श्लोक स० ७४२, पूर्ण।

—स० वि० (क) २४०४९, (ख) २४८९१, (ग) २४८९३

(३) —कैट् कैट् १।७५३

हनुमत्पञ्चाध्यायी

लि०— —कैट् कैट् ३।१५६

हनुमत्पटल

लि०—सुदर्शनसंहिता से गृहीत। —कैट् कैट्. २।१८१

हनुमत्पताकासिद्धि

लि०— —रा० पु० ६३७१

हनुमत्पद्धति

लि०—श्लोक स० २५०। —अ० ब० ५१६३

हनुमत्पुरश्चरणविधि

लि०— —र० म०

हनुमत्सहस्रनाम

लि०—सुदर्शनसंहिता के अन्तर्गत। —कैट् कैट् २।१८१, ३।१५६

हनुमदुपासना

लि०—यन्त्रसहित, श्लोक स० लगभग १०, पूर्ण। —स० वि० २५०४३

हनुमदेकमुखकवच

लि०— —कैट् कैट् १।७५४

हनुमद्गायत्री

लि०—ब्रह्माण्डपुराण से गृहीत। श्लोक स० २८। —अ० ब० ७४४८

हनुमद्दीपदान

लि०—सुदर्शनसंहिता के अन्तर्गत। श्लोक स० ७०। —अ० ब० ५४७९

हनुमद्दीपपद्धति

लि०—हरि आचार्य विरचित। —कैट् कैट् ३।१५६

हनुमद्दुर्ग

लि०—(१) इसमे हनुमान् का मालामन्त्र है और उसके जप की विधि बतलायी गयी है। —ए० ब० ६५०३

(२) वीरता के साधन हनुमन्मन्त्र आदि इसमे कहे गये है। यह अथर्ववेदोक्त कहा गया है। —नो० स० २।२६४

(३) (क) श्लोक स० ५०। अथर्ववेद से गृहीत। (ख) श्लोक स० १००।

—अ० ब० (क) ५६१२, (ख) ९४१

[ह]यग्रीवपञ्चर त्र का प्रामाण्यकथन, अन्य.न्य पञ्चरात्रो का नामोल्लेख, आचार्य और [ग]ुरु का लक्षण, जैमिनि आदि तार्किको के मत आदि विविध विषय इसमे वर्णित है।

—रा० ला० २०३४

उ०—तन्त्रसार, पुरश्चर्यार्गव, प्रागनोपिगी तथा त राभक्तिसुवार्णव मे।

हरगौरीसंवाद

उ०—प्राणतोपिणी मे।

हरमेखला

लि०—(१) इसमे ऐन्द्रजालिक क्रियाएँ वर्णित है। रा० ला० ९८९ मे उड्डीशतन्त्र हरमेखला कहा गया है। उन ग्रन्थो मे से भी एक हरमेखला कहा गया है जिनपर कक्षपुट आधारित है।

—ए० व० ६५५५

(२)

—ने० द० २।१६

(३) श्लोक स० ४००। १३ पटलो मे पूर्ण। इस ग्रन्थ मे मन्त्र तथा ओपधियो का माहात्म्य और प्रयोग वतलाया गया है एव तान्त्रिक पट्कर्म—मारण, मोहन, उच्चाटन, स्तंभन, विद्वेपण तथा वशीकरण—के उपाय प्रतिपादित है। —ट्रि० कै० ९९९ (ख)

हरिलीलामृततन्त्र

लि०—श्लोक स० १८२, पूर्ण।

—स० वि० २५५५०

हर्षकौमुदी (शारदातिलककी टीका)

लि०—शारदातिलक की टीका हर्षदीक्षित विरचित।

—तै० म०

हारकतन्त्र

लि०—शकर-पार्वती सवादरूप। इसमे पञ्चाग्निसाधन, धूमपानविधि, शीत-साधन-विधि आदि तान्त्रिक विधियाँ निर्दिष्ट है।

—ए० व० ६०४१

हारावलीतन्त्र

लि०—यह तन्त्र १५ पटलो मे पूर्ण है। इसमे महामाया तथा मातृका की पूजा, होम और पूजाविधि का फल विशेष रूप से वर्णित है। नित्य, नैमित्तिक और काम्य परस्पर पूर्व की अपेक्षा रखते है, अतएव मन्त्री को पहले नित्य उसके सिद्ध होने पर नैमित्तिक तदुपरान्त काम्य अर्चन करना चाहिए, यह भी वर्णन इसके प्रारम्भ मे किया गया है।

—ने० द० २।१३३५

हारीतस्मृति

लि०—यद्यपि यह स्मृति कही गयी है, पर विभिन्न देवियों के तान्त्रिक मन्त्रों से पूर्ण है। मुद्रित हारीतसंहिता से यह पृथक् है, किन्तु वृद्धहारीतस्मृति से मिलती-जुलती है।

—ए० व० ६१३७

हृदयामृत

लि०—उमानन्द कृत। रचनाकाल १७४२ ई०।

हृल्लेखातन्त्र

यह श्रीकण्ठी के मतानुसार से चतुःषष्टि (६४) तन्त्रों के अन्तर्गत है।

(तन्त्रालोक-टीका)

होममन्त्रविभाग

लि०—कात्यायनीतन्त्रान्तर्गत। यह सप्तशती का मन्त्र-विभाग प्रतीत होता है।

—र० म० ४६५३

होमविधि

लि०—(१) इसमें होमविधि वर्णित है। यह होम वैष्णवों का विशेष होम है। सर्वसाधारण होम नहीं है। —ए० व० ६५३७

(२) गौडवासी शङ्कराचार्य विरचित। श्लोक सं० १००। यह तारारहस्यवृत्ति के अन्तर्गत १४ वाँ अध्याय है। —अ० व० ५७१२

होमकर्मपद्धति

लि०—हरिराम कृत, श्लोक सं० २००। —अ० व० १०५७२

होमसार

उ०—पुरश्चर्यार्णव में।

होमसारोद्धार

उ०—ललितार्चनचन्द्रिका में।

परिशिष्ट

सर्वविद्यानिधान कवीन्द्राचार्य सरस्वती[1] के ग्रन्थसग्रह के तान्त्रिक ग्रन्थो की सूची—

पुराणागम

१ नारदीयपञ्चरात्रागम, सम्पूर्ण
२ हयशीर्षपञ्चरात्र
३ कामिकाख्यागम
४ कारणागम
५ अजितागम
६ अचिन्त्या ह्वयागम
७ योगन्याख्यागम
८ दीप्त्यागम
९ सहस्राख्यागम
१० अनुमताख्यागम
११ सुप्रभेदागम
१२ वामदेवाख्यागम
१३ प्रपञ्चयोगागम
१४ स्वायभुवाख्यागम
१५ विश्वासकाख्यागम
१६ अनलाख्यागम
१७ कौरवाख्यागम
१८ मुकुरागम
१९ विम्बागम व चन्द्रज्ञानागम
२० विमलाख्यागम
२१ प्रोज्झिताख्यागम
२२ सिद्धागम

१. कवीन्द्राचार्य सरस्वती मुगलसम्राट् शाहजहाँ के समकालिक थे। वे काशीनिवासी संन्यासी एव महान् विद्वान् थे। दिल्ली-सम्राट् के भी वे विशेष अनुग्रह-भाजन थे। प्रसिद्धि है कि उन दिनो तीर्थयात्रियो पर सम्राट् ने तीर्थ-कर लगाया था। काशी आने-वाले तीर्थयात्रियो को उससे बडा कष्ट होता था। यात्री-कर से तीर्थयात्रियो को मुक्ति दिलाने के लिए काशी तथा उत्तर भारत के विद्वानो का एक शिष्टमण्डल कवीन्द्राचार्य सरस्वतीजी के नेतृत्व में सम्राट् शाहजहाँ से मिला। कवीन्द्राचार्यजी ने अपना पक्ष इस प्रकार प्रभावोत्पादक ढग से उपस्थित किया कि बादशाह अत्यन्त प्रभावित हुए। उन्होंने तीर्थयात्री-कर उठा लिया और कवीन्द्राचार्य को सर्वविद्यानिधान पदवी से विभूषित किया एवं दरबार से उनके लिए पेन्शन नियत कर दी।

कवीन्द्राचार्य सरस्वती का एक विशाल पुस्तकालय था जिसमें भारतीय संस्कृति के विविध विषयो के बहुत दुर्लभ ग्रन्थ सगृहीत थे। कवीन्द्राचार्य ने अपने संग्रह के सभी ग्रन्थो के आवरण पृष्ठ पर पुस्तक का नाम तथा 'सर्वविद्यानिधानकवीन्द्राचार्यसरस्वतीना पुस्तक-मिदम्' यह वाक्य अपने हाथ से मोटे अक्षरो में लिखा था।

२३ ललितागम
२४ सन्तानाख्यागम
२५ पारमेश्वरागम
२६ सर्वोत्तरागम
२७ किरणागम
२८ वालुकाख्यागम

उपागम

१ नारसिंहागम
२ भैरवोत्तरागम
३ उत्तराख्यागम
४ कारणाख्यागम
५ पापनाशागम
६ मारणागम
७ महेशानागम
८ चन्द्राह्वयागम
९ भीमतन्त्रागम
१० परोद्भूतागम
११ प्रश्नसहितागम
१२ पार्वतीयागम
१३ प्रभूतागम
१४ वामतन्त्रागम
१५ पापनाशनागम
१६ सूत्राख्यागम
१७ चिन्त्याख्यागम
१८ सर्वोद्भवाख्यागम
१९ अमृताख्यागम
२० वेणूत्तरागम
२१ सौत्यागम
२२ शान्त्यागम
२३ तुलागम
२४ अनन्ताख्यागम
२५ प्रभूतागम
२६ भागाख्यागम
२७ माधवोद्भूतागम
२८ वस्वागम

उनके देहावसान के बाद उनके सग्रह के सब ग्रन्थ इधर-उधर विभिन्न स्थानो में बिखर गये ।

काशी के किसी मठ से उनके ग्रन्थो की एक सूची प्राप्त हुई। जिसे म० म० पं० गङ्गानाथ झा तथा प० अनन्तकृष्णशास्त्रीजी ने गायकवाड ओरिएण्टल सीरीज में प्रकाशित किया। प्र ीत होता है कि यह सूचीपत्र उनके देहावसान के बाद बनाया गया, क्योंकि इसमें परवर्ती कार्य के ग्रन्थ लेखको के ग्रन्थो का भी उल्लेख किया गया है। यह उनके सम्पूर्ण सग्रह के ग्रन्थो का सूचीपत्र है, यह भी निश्चय-पूर्वक नहीं कहा जा सकता। फिर भी यह बहुत मूल्यवान् है। इससे बहुत दुर्लभ ग्रन्थो का पता चलता है। इस सूचीपत्र मे श्रेणीगत विषय विभाग किया गया है किन्तु सर्वत्र विषयानुसार विभाग नहीं हुआ है। इसीलिए अन्य विषयों की पुस्तकें अन्य विषयो में दृष्टिगोचर होती है।

इसमें अन्याय विषयो के ग्रन्थो के साथ तान्त्रिक ग्रन्थो का भी अच्छा संग्रह है। इसमें उपलब्ध तान्त्रिक ग्रन्थ जिस शीर्षक के अन्तर्गत दिये गये हैं उनका यहाँ उल्लेख किया जाता है।

२९ अमिताख्यागम
३० सविदागम
३१ शुद्धागम
३२ ललितागम
३३ श्यामलागम
३४ हस्त्यागम
३५ जातिभेदागम
३६ विबुधागम
३७ अलङ्कारागम
३८ प्रमेयागम
३९ सुप्रशुद्धागम
४० अजितागम
४१ विद्यागम
४२ पुराणार्थागम
४३ भास्वरागम
४४ सुतीर्थाख्यागम
४५ वैकृतागम
४६ श्रीकराख्यागम
४७ शिवभेदागम
४८ रुद्रभेदागम
४९ सुवर्धनागम
५० शूलागम
५१ नन्दागम
५२ रूपभेदागम
५३ पञ्चभेदागम
५४ प्रापञ्चिकागम
५५ सकीर्णाख्यागम
५६ लिङ्गागम
५७ सौम्यतन्त्रागम
५८ अघोरतन्त्रागम
५९ नीललोहिततन्त्रागम
६० प्रकरणागम
६१ महाघोरागम
६२ मृत्युनाशकागम
६३ कुवेराशागम
६४ वैनायकागम
६५ प्रस्तराख्यागम
६६ प्रस्फुरागम
६७ वन्धनागम
६८ प्रवोधाख्यागम
६९ समयागम
७० अमोहसज्ञागम
७१ शालाख्यागम
७२ विलेखनागम
७३ वीरागम
७४ शकटागम
७५ हल सज्ञागम
७६ भद्रागम
७७ निश्वासकार्यागम
७८ निश्वासनयनागम
७९ गुह्यागम
८० निश्वासागम
८१ निश्वाससारागम
८२ सौख्यागम
८३ सौम्यागम
८४ अनलागम
८५ स्वयभूतागम
८६ प्रश्नतन्त्रागम
८७ प्राजापत्यागम
८८ कालागम
८९ महाकालागम
९० महारुद्रागम
९१ कौमारागम
९२ कालदहनागम
९३ मुकुटाख्यागम
९४ मुकुटोत्तारकाख्यागम
९५ चतुर्मुखाख्यागम
९६ विम्वागम
९७ अर्थालङ्कारागम
९८ महायोगागम
९९ स्तोभागम
१०० मन्यागम

१०२ वायुतन्त्रागम
१०३ वर्गशिखरागम
१०४ तुलायोगागम
१०५ कौतुकागम
१०६ सारागम
१०७ कुतुपनिकरागम
१०८ तुलावृत्तागम
१०९ वीरभद्रतन्त्रागम
११० नीलभद्रतन्त्रागम
१११ कालभेदागम
११२ नन्दीसहितागम
११३ पुराणाख्यागम
११४ देवीमतागम
११५ नन्दीश्वरागम
११६ स्थाणुसहितागम
११७ स्थिरतन्त्रागम
११८ प्रवुद्धागम
११९ त्रैविक्रमाख्यागम
१२० कालसज्ञागम
१२१ वायुलोकोत्तरागम
१२२ प्ररोचितागम
१२३ वाधुलागम
१२४ विश्वकागम
१२५ सिद्धागम
१२६. महानागागम
१२७. विश्वात्मकागम
१२८ सर्वारिष्टकागम
१२९ सर्वागम
१३० नित्यागम
१३१ श्रेष्ठागम
१३२. वैष्णवागम
१३३ पाशुपतागम
१३४ भागवतपञ्चरात्रागम
१३५ लोकमोहनपञ्चरात्रागम
१३६ अन्ते यागाख्यागम (?)
१३७ अप्रमेयाख्यागम (?)

सहिताप्रकरण

१ हयग्रीवसहिता
२. गर्गसहिता
३. शौनकसहिता
४ वौधायनसहिता
५ मानवसहिता
६ जावालिसहिता
७ व्याससहिता
८ वार्हस्पत्यसहिता
९ वाधलसंहिता
१०. सुमन्तुसहिता
११. यमसहिता
१२ गौतमसहिता
१३ प्राजापत्यसहिता
१४ मौद्गल्यसहिता
१५ वसिष्ठसहिता
१६ भार्गवीसहिता
१७ वामदेवीसहिता
१८ कौशिकीसहिता
१९ सोमसहिता
२० जामदग्न्यसहिता
२१ जातूकर्ण्यसहिता
२२ जैमिनिसहिता
२३. जावालिलघुसहिता
२४ जैलनृत्यसहिता
२५ नान्दीसहिता
२६ जाजलिसहिता
२७ जानुसहिता
२८ ज्योतिष्मतीसहिता
२९ जनकसहिता
३० वीतिहोत्रसहिता
३१ शालिहोत्रसहिता
३२ मुहोत्रसहिता
३३ वसुहोत्रसहिता
३४ दशहोत्रसहिता

३५ शतहोत्रसहिता
३६ यज्ञहोत्रसहिता
३७ लिप्तहोत्रसहिता
३८ प्राणहोत्रसहिता
३९ अत्रिसहिता
४० अगस्त्यसहिता
४१ अनुसहिता
४२ अष्टावक्रसहिता
४३ प्रगाथसहिता
४४ पिङ्गलसहिता
४५ सुयज्ञसहिता
४६ विश्वामित्रसहिता
४७ मतङ्गसहिता
४८ यमसहिता
४९ राजलीसहिता
५० वृन्दावनीसहिता
५१ अलुकसहिता
५२ वात्स्यायनीसहिता
५३ रुचकसहिता
५४ मृकुण्ड (मृकण्डु) सहिता
५५ पितृलादसहिता
५६ च्यवनसहिता
५७ सूतसहिता
५८ पिप्पलादसहिता
५९ कपिलसहिता
६० नैध्रुवसहिता
६१ काश्यपसहिता
६२ फणीयसहिता
६३ शुन शेप सहिता
६४ दीर्घतमासहिता
६५ आर्ग्यसहिता
६६ कुण्डन्यसहिता
६७ मेधातिथिसहिता
६८ लौगाक्षिसहिता
६९ कालप्रदीपिका
७० शुद्धप्रदीपिका
७१ विष्णुवृद्धसहिता
७२ वत्ससहिता
७३ नाद्रियसहिता
७४ सात्वतिसहिता
७५ सहयुक्तसहिता
७६ कपिलसहिता
७७ हारीतसहिता
७८ कुत्ससहिता
७९ जयसहिता
८० वभ्रुसहिता
८१ मनुसिद्धिसहिना
८२ वृद्धवाष्कलसहिता
८३ लघुवाष्कलसहिता
८४ कक्षीवान्सहिता
८५ पूतिमाषसहिता
८६ शतादिसहिता
८७ नारायणीसहिता
८८ नकुलसहिता
८९ कालिकासहिता
९० मन्त्रदीपिका
९१ योगनारायणसहिता
९२ सनत्कुमारसहिता
९३ भूमिसहिता
९४ वालखिल्यसहिता
९५ पवनसहिता
९६ रत्नमाला
९७ ज्ञानकौमुदी
९८ सुधासार

अन्य सहिताएं

१ महाकालसहिता
२ व्योमसहिता
३ सामसहिता
४ शकरसहिता
५ वायुसहिता
६ लक्ष्मीसहिना

७ विद्येश्वरसहिता
८. नारदसहिता
९. मच्छसहिता

वैदिक तन्त्र

१ सर्वोन्नियानतन्त्र
२ ज्ञानार्णवतन्त्र
३ अरुणेश्वरतन्त्र
४ विशुद्धेश्वरतन्त्र
५ त्रैपुर तन्त्र
६ महादेवतन्त्र
७ न्यायोत्तरतन्त्र
८ उत्तराम्नायतन्त्र
९ अनुत्तराम्नायतन्त्र
१० कुण्डीश्वरीतन्त्र
११ गुह्यागुह्यतन्त्र
१२ कुलासारतन्त्र
१३ मातृभेदतन्त्र
१४ वातुलोत्तरतन्त्र
१५ सर्ववीरातन्त्र
१६ त्रोतलतन्त्र
१७ कलासारतन्त्र
१८ कलावादतन्त्र
१९ योगीश्वरीतन्त्र
२० सर्वाम्नायतन्त्र
२१ दक्षिणाम्नायतन्त्र
२२ पश्चिमाम्नायतन्त्र
२३ ऊर्ध्वाम्नायतन्त्र
२४ वीणातन्त्र
२५ कुलचूडामणितन्त्र
२६ हृद्भेदतन्त्र
२७ वातुलतन्त्र
२८ वहुरूपाष्टकतन्त्र
२९ यामलाष्टकतन्त्र
३०. किरणाख्यतन्त्र

अवैदिक तन्त्र

१. महामायाशम्वरतन्त्र
२ योगिनीज्वालाशम्वरतन्त्र
३. कुलार्णवतन्त्र
४ महासमोहनतन्त्र
५ रूपिकामततन्त्र
६ विरूपिकामततन्त्र
७ षोडशिका ह्वयतन्त्र
८ परिशिष्टानन्दतन्त्र
९ अमरेश्वरतन्त्र
१० वामजुष्टतन्त्र
११ कामिकतन्त्र
१२ रूपभेदतन्त्र
१३ पञ्चामृततन्त्र
१४ कल्याणतन्त्र
१५ भूताख्यतन्त्र
१६ भैरवाष्टकतन्त्र
१७ राजिकतन्त्र
१८ गारुडतन्त्र
१९ वालातन्त्र
२० वासुकी (कि?) तन्त्र
२१ महाकालीमततन्त्र
२२ महावीरावतीतन्त्र
२३ महालक्ष्मीमततन्त्र
२४ महायोगाख्यतन्त्र
२५ मन्त्रोत्तराख्यतन्त्र
२६ विमलामततन्त्र
२७ वीरावतीसखतन्त्र
२८ ललिताज्ञानतन्त्र
२९ महाकालीश्वरीतन्त्र
३०. ललितामततन्त्र
३१ चूडामणितन्त्र

उपतन्त्र

१ मन्त्रार्णवाख्यतन्त्र
२ मन्त्रसाराख्यतन्त्र

३ महाकालतन्त्र
४ शाम्भवतन्त्र
५ षट्कलामततन्त्र
६ मालशातन्त्र
७. मूलकालेश्वरीतन्त्र
८ औड्डामहेश्वरतन्त्र
९ कालकेश्वरतन्त्र
१० मृगमुखीतन्त्र
११ सौभाग्यवल्लरीतन्त्र
१२ ताल्चण्डेश्वरतन्त्र
१३ हरमेखलतन्त्र
१४ चण्डरुद्रेश्वरतन्त्र
१५ कौतुकतन्त्र

अन्यतन्त्र

१ भूतडामरतन्त्र
२ शक्तिसगमतन्त्र
३ गौतमीतन्त्र
४ राजतन्त्र
५ मेरुतन्त्र
६ दत्तात्रेयतन्त्र

मन्त्रशास्त्रप्रकरण

१ सिद्धशावरग्रन्थ
२ मेरुतन्त्रग्रन्थ
३ प्रपञ्चसार
४ बीजकोश (लघु)
५ ,, ,, (गुरु)
६ मातृकाकोश
७ शारदातिलक सटीक
८ ,, पदार्थादर्श टीकायुत
९ ,, गूढार्थदीपिका टीकायुत
१० श्यामारहस्य
११ विद्यारहस्य
१२ शक्तिसङ्गमरहस्य
१३ सौभाग्यरत्नाकर
१४ कुलार्णव
१५ परशुरामसूत्र (भाषा)
१६ सिंहसिद्धान्त
१७ ,, ,, तन्त्र
१८ मन्त्रमहोदधि (सटीक)
१९ सुन्दरीमहोदय
२० कालीतन्त्र
२१ लक्ष्मीतन्त्र
२२. सरस्वतीतन्त्र
२३ जनार्दनमहोदधि
२४ रामार्चनचन्द्रिका
२५ तृचभास्कर
२६ पूर्णचन्द्रोदय
२७ परशुरामार्चनचन्द्रिका
२८ लिङ्गार्चनचन्द्रिका
२९ दुर्गाभक्तितरङ्गिणी
३० सौन्दर्यलहरी (सटीक)
३१ वरिवस्यारहस्य
३२ त्रिपुरारहस्य
३३ तन्त्रसार
३४ दुर्गोत्साह
३५ लोकमोहनपञ्चरात्र
३६ मन्त्रयोगरत्न
३७ घण्टाकर्ण
३८ इन्द्रजाल
३९ स्वच्छन्दपद्धति
४० ताराभगवती
४१. आकाशभैरवतन्त्र
४२ वटुकभैरवतन्त्र
४३ गणेशतन्त्र
४४ क्षेत्रपालतन्त्र
४५ डामरतन्त्र
४६ वाराहीतन्त्र
४७ कात्यायनीतन्त्र
४८ सप्तशती टीका
४९ ,, गुप्तवती
५० ,, नागोजिभट्टी

५१ सप्तशती टीका शान्तनवी
५२ ,, लालमणि
५३ ,, नागार्जुनी
५४ ,, गौंडपादाचार्य कृत
५५ चण्डीसपर्याक्रमकल्पवल्ली
५६ रुद्रयामलतन्त्र
५७ विष्णुयामलतन्त्र
५८ ब्रह्मयामलतन्त्र
५९ शिवयामल
६० देवीयामल
६१ शिवार्चनचन्द्रिका
६२ नृसिंहार्चनचन्द्रिका
६३ नरसिंहपरिचर्या
६४ दुर्गार्चाचन्द्रोदय
६५ कृष्णभक्तिचन्द्रिका
६६ ज्ञानवल्ली स्कन्ध ५ (वापुदीक्षित कृत)
६७ विश्वामित्रकल्प
६८ पुरश्चरणचन्द्रिका
६९ श्रीसूक्तविधान
७० मन्युसूक्तविधान
७१ भास्कररायचन्द्रदीपिका
७२ नवरत्नेश्वर
७३ गायत्री (भाषा)
७४ वसिष्ठकल्प
७५ दत्तशावर
७६ उड्डीशशावर
७७ पद्मावती
७८ त्रिपुरसुन्दरी
७९ एकादशपञ्चाङ्ग
८० अष्टभैरवपञ्चाङ्ग
८१ पिशाचाद्युपद्रवनिरास ग्रन्थ
८२ ,, यक्षव्यान मूल
८३ शतचण्डी-सहस्रचण्डी-
विधान (कात्यायनोक्त)
८४. ज्योतिष्मतीकल्प
८५ शारदातिलकोक्त श्याम-
भट्टकृत गायत्रीपुरश्चरण
८६ भीमसेनविरचित सप्तशतीटीका
८७ मन्त्रशास्त्रचन्द्रिका
८८ सुदर्शनसंहितोक्त शावरकल्प
हनुमन्त मन्त्रव्याख्या